

सूरह अत्-तूर

५२. सूरह अत्-तूर

नाम :- बिल्कुल शुरू ही में “अत्-तूर” (तूर पर्वत) की क्रसम खाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तूर है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह मक्का के मध्यकाल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- रसूल क्रियामत के आने और कर्मों का बदला दिये जाने कि जो ख़बर दे रहा है वह निश्चित रूप से पेश आने वाली हक़ीक़त है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १६ में कर्मफल के दिन को झुठलाने वालों को ख़बरदार किया गया है कि अल्लाह का अज़ाब उन पर आ कर रहेगा। इस का विश्वास पैदा करने के लिए साक्ष्य भी प्रस्तुत किया गया है और यातना का चित्रण भी।

आयत १७ से २८ में झुठलाने वालों की तुलना में अल्लाह का डर अपनाने वालों और कर्तव्य बोध के साथ जीवन बिताने वालों को जिस इनाम और उपहार से अलंकृत किया जाएगा उस

का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

आयत २९ से ४७ में एतिराज़ जड़ने वालों के सामने ऐसे प्रश्न रख दिए गए हैं जिन से उन की आशंकाओं अथवा संदेहों का आप से आप निदान हो जाता है।

आयत ४८ और ४९ सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब्र की तल्कीन और अपने सब्र की प्रशंसा और पाकी बयान करने की हिदायत दी गई है।

हदीस :- “हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मैं बीमार हूँ। (अतः तवाफ़ कैसे करूँ) आप ने फ़रमाया सवार हो कर लोगों के पीछे से तवाफ़ कर लो। अतः मैं ने तवाफ़ किया।

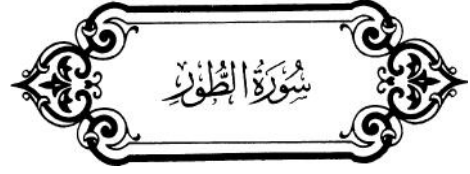
उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुल्लाह के एक तरफ़ नमाज़ पढ़ रहे थे जिस में सूरह तूर की क़िर्अत (तिलावत) फ़रमा रहे थे।”

(बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर)

५२.सूरह अत्-तूर

आयतें : ४९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है ¹ तूर की ।²
2. और एक ऐसी किताब की जो लिखी हुई है।
3. झिल्ली के खुले पन्नों में ।³
4. और आबाद घर की।⁴
5. और बुलंद छत की ।⁵
6. और भरे पूरे समुद्र की ।⁶
7. कि तुम्हारे रब का अज़ाब (प्रकोप) आ कर रहेगा ।⁷
8. कोई उसे दफा करने वाला नहीं।⁸
9. जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा।
10. और पहाड़ चलने लगेंगे।⁹
11. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।
12. जो बहस में पड़े खेल रहे हैं।¹⁰
13. जिस दिन उन्हें जहन्नम की तरफ़ धक्के दे दे कर ले जाया जाएगा।
14. यह है वह जहन्नम जिस को तुम झुठलाया करते थे ।
15. क्या यह जादू है, या तुम्हें सूझ नहीं रहा है ?¹¹

وَالطُّورِ ١

وَكُنْطٍ مَّسْطُورٍ ٢

فِي رَقٍّ مَّنْشُورٍ ٣

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ٤

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ٥

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ٦

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ٧

مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ٨

يَوْمَ تَنفُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ٩

وَتُسِيرُ الْجِبَالُ سِيرًا ١٠

قَوْلٍ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ١١

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ١٢

يَوْمَ يَدْعُونَ إِلَىٰ تَارِيهِمْ دَعَاً ١٣

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ١٤

أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ١٥

1. यहाँ क्रसम साक्ष्य के अर्थ में है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर नोट १४

2. तात्पर्य तूर पर्वत है जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम को नुबुवत से अलंकृत किया गया और शरीअत प्रदान हुई।

3. मुराद तौरात है जिस की प्रतियाँ चमड़े की बारीक झिल्ली पर लिखी जाती थीं फिर उन के पन्नों को खोल कर पढ़ा जाता था।

4. तात्पर्य खाना-ए-काबा है जो तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों और उमरा व हज्ज करने वालों से भरा रहता है। बैतिलमामूर जैसा कि हदीस में आता है आसमान पर है किन्तु यह मक्का के खाना-ए-काबा के लिए भी प्रयुक्त होता है। और चूँकि यहाँ इसे एक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है इस लिए इस से तात्पर्य देखने में आने वाला बैतिलमामूर (खाना-ए-काबा) ही हो सकता है।

5. मुराद आसमान है जिस की छत बेहद बुलंद है।

6. अर्थात् पानी से भरे हुए समुद्र की।

7. यह है वह बात जिस की गवाही में उक्त चीजें प्रस्तुत की गई हैं। कुर्आन का पैगम्बर कर्मफल के दिन से जो सावधान कर रहा है तो यह कोई नई बात नहीं है जिसे कवि की कल्पना या उस की दीवानगी समझा जाए। बल्कि एक ऐसी वास्तविकता है जो नबियों की शिक्षा का अनिवार्य अंग रहा है और इतिहास इस पर साक्षी है अतः तूर पर्वत की चोटियों से यही आवाज़ बुलन्द हुई थी और तौरात के खुले पन्नों पर यही शिक्षा मौजूद है। इसी तरह खाना-ए-काबा जो प्राचीनतम इबादत गाह है और इबादत करने वालों से हमेशा भरा रहा है उस की आधारशिला, तौहीद और मरने के बाद मिलने वाले कर्मफल की धारणा ही पर रखी गई थी। अतः हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की शिक्षा के यह अत्याधिक रौशन पहलू थे। अतः यह आबाद घर कर्मफल की धारणा को निरंतरता के साथ लोगों तक स्थानांतरित करता रहा है।

तो यह हैं कर्मफल (अर्थात् बदले) के दिन के समर्थन में इतिहास के साक्ष्य। रही बात उस के भय की तो वह अल्लाह की महानता की कल्पना से ही पैदा होता है और उस की महानता की कल्पना कायनात के चिन्हों को देखने परखने से सुदृढ़ होती है। मिसाल के तौर पर आसमान की विशाल छत जिस की बुलन्दी का कोई अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता

अल्लाह की अथाह कुदरत पर प्रमाण प्रस्तुत करती है और उस को देखने परखने से दिलों में उस की महानता का ख्याल बैठता है। इसी तरह ज़मीन पर पानी से भरे ठाठें मारते समुद्र सारे जहान के रब की ज़बरदस्त हैबत पैदा करते हैं। मतलब यह कि इस कायनात का पूरा माहौल मनुष्य के लिए एक तरबियत गाह (प्रशिक्षण स्थल) है जहाँ अल्लाह की कुदरत और उस की महानता का विश्वास पैदा होता है। और उस की हैबत दिलों पर छा जाती है किन्तु मनुष्य है कि इस प्रशिक्षण स्थल में रह कर भी कुछ नहीं सीखता, कोई सच्ची बात ग्रहण नहीं करता और खुदा से निर्भय हो कर और बदले के दिन से बेपरवाह हो कर जीवन गुज़ारता है।

8. अर्थात् क्रियामत का आना बिलकुल अटल है और कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो बदले के दिन को आने से रोक सके।

9. पहाड़ ज़मीन से उखड़ कर हवा में बिखर जाएंगे।

मकान को जब नये सिरे से बनाना होता है तो पुराने मकान की इमारत ढा दी जाती है। इसी प्रकार इस दुनिया की तोड़ फोड़ इस लिए की जाएगी ताकि एक नई दुनिया अस्तित्व में लाई जा सके। ऐसी दुनिया जिस में इन्सान उस फसल को जो उस ने इस दुनिया में बोई थी, काट सके और अपने कर्मों का फल पा सके। इसी का नाम आखिरत है।

जो लोग यह समझते हैं कि ज़मीन और आसमान सदा सर्वदा इसी हाल में रहेंगे वे ख़ाम ख़्याली में पड़े हुए हैं। वैज्ञानिक इस कायनात की लम्बी आयु बताते हैं किन्तु इस बात से वे इन्कार नहीं कर सकते कि किसी समय भी यह कायनात आकस्मिक दुर्घटना से दोचार हो सकती है। ज़मीन पर ऊपर से शांत वातावरण प्रतीत होता है किन्तु ज़मीन के अन्दर की गैस हरकत में आती है और ज़मीन भूकम्प से दो चार हो जाती है।

10. अर्थात् आखिरत के बारे में उन्होंने ने भाँत भाँत की बहसें खड़ी कर दी हैं, और जन्नत दोज़ख का मज़ाक उड़ा रहे हैं।

11. जब पैगम्बर तुम्हारे सामने जहन्नम का नक्शा खींचता था तो तुम उसे शब्दों की जादूगरी बताते थे। अब देख लो जहन्नम एक सच्चाई के रूप में मौजूद है या नहीं? क्या अब भी तुम्हें इस के जादू होने या कुछ सुझाई न देने का भ्रम हो रहा है?

16. दाखिल हो जाओ इस में। अब सब करो या न करो, तुम्हारे लिए एक जैसा है।¹² तुम्हें वही बदले में दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।¹³

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

17. निस्संदेह मुत्तक्री¹⁴ (परहेजगार) बागों और नेमतों में होंगे।¹⁵

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعَيْمٍ ﴿١٧﴾

18. मजे उठा रहे होंगे उन नेमतों का जो उन के रब ने उन्हें प्रदान किया होगा। और उन के रब ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब (यातना) से सुरक्षित रखा होगा।¹⁶

فَكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

19. खाओ और पियो मजे से अपने कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

20. वे कतार दर कतार तख्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे।¹⁷ सुन्दर आखों वाली हूरों से हम उन का ब्याह कर देंगे।¹⁸

مُتَكِّينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

21. और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद भी ईमान के साथ उन के पीछे चली, हम उन की औलाद को भी उन से मिला देंगे।¹⁹ और उन के कर्मों में से कुछ भी कम न करेंगे।²⁰ प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाई के बदले रहन (गिरवी) है।²¹

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ
كُلُّ أَمْرٍ ئِنَّا كَاسِبٌ رَّهِيْنٌ ﴿٢١﴾

22. और वे जिस प्रकार के मेवों और गोश्त की ख्वाहिश करेंगे हम उन को बराबर देते रहेंगे।²²

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِكُلِّهَا وَلَهُمْ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾

23. वे आगे बढ़ कर एक दूसरे से ऐसी शराब के जाम ले रहें होंगे जिस में न बेहूदगी होगी और न गुनाह की कोई बात।²³

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

24. ऐसे खूबसूरत लड़के उन की सेवा में लगे हुए होंगे जो गोया छिपाये हुए मोती हैं।²⁴

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

25. ये लोग एक दूसरे की ओर संबोधित हो कर हाल पूछेंगे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

26. कहेंगे इस से पहले हम अपने घर वालों में (अल्लाह से) डरते रहते थे।²⁵

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

12. अर्थात् अब खामोशी के साथ अज़ाब (यातना) सहते रहो या चीख पुकार करते रहो। तुम्हारी कोई सुनवाई होने वाली नहीं।

13. अर्थात् जो तुम ने बोया था वही आज काट रहे हो ये तुम्हारे कर्मों के फल ही हैं जिन को तुम्हें भुगतना है।

14. झुठलाने वालों की तुलना में अब मुत्तकी और परहेज़गार लोगों का वर्णन हो रहा है जिस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो जाती है कि मुत्तकी से तात्पर्य वे लोग हैं जो अल्लाह और बदले के दिन पर ईमान ला कर उस दिन की जवाबदेही से डरते रहे और परहेज़गारी का रास्ता अपनाया।

15. अर्थात् जन्नत के बागों और नेमतों में होंगे।

16. जहन्नम की यातना से सुरक्षित रखा जाना अपने आप में स्वयं एक बहुत बड़ी नेमत है।

17. अर्थात् उन के सिंहासन (अथवा उन के बैठने के स्थान) एक दूसरे के सामने होंगे ताकि वे परस्पर बात चीत कर सकें। और बैठने के ये तख्त बहुत ही आरामदायक होंगे।

18. इस की व्याख्या सूरह दुखान नोट ५५ में गुज़र चुकी।

19. यह ईमान वालों के लिए अतिरिक्त खुशखबरी है कि उन की वे संतानें जो ईमान लाईं और उन के पीछे चल कर इस्लाम की अनुपालक बनीं उन को जन्नत में उन के साथ मिला दिया जाएगा ताकि उन की आँखें ठण्डी हों और उन्हें हार्दिक संतोष प्राप्त हो।

इस मिलन की सूरत क्या होगी वह जन्नत में पहुँच कर ही मालूम होगी। इस सिलसिले में अटकल की बातें करना दुरुस्त नहीं।

रह गई बात ईमान वालों की नाबालिग औलाद जिन की मृत्यु बालिग होने से पहले हुई हो तो हदीस में यह इशारा मिलता है कि वह जन्नत में होगी। (देखिए बुखारी किताबुल जनाइज़ बाब मा क़ाल फ़ी औलादिलमुस्लिमीन)

यह आयत ईमान वालों को इस बात की ओर भी ध्यान दिलाती है कि अगर वे अपनी संतानों को अपने साथ जन्नत में देखना चाहते हैं तो उन के अन्दर ईमान की ज्योति उत्पन्न करने और उन्हें इस्लाम का अनुयायी बनाने की कोशिश करें। मौजूदा दौर का मुसलमान अपनी औलाद के सांसारिक भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए तो सब कुछ कर गुज़रता है किन्तु उन की आखिरत बनाने की कोई चिन्ता नहीं करता। और कुछ लोग यदि अपने बच्चों को दीन सिखाते हैं तो मात्र खाना पूरी की हद तक। और इस बात की ओर से लापरवाही बरतते हैं कि उन में दीनदारी की सूझ बूझ पैदा की जाए तथा उन की ऐसी तरबियत

की जाए की वे अल्लाह से डरने लगे और दीन को पूरी तरह अपना लें।

20. अर्थात् औलाद से मिलाने के लिए उन के दर्जे को घटाया नहीं जाएगा बल्कि वे अपने कर्मों के अनुरूप जिस दर्जे के पात्र होंगे उन को उस में रखा जाएगा।

21. अर्थात् कोई व्यक्ति इस भ्रम में न पड़ा रहे कि औलाद चाहे निकम्मी ही क्यों न हो माता पिता यदि नेक हैं तो वे भी उन के सदक़े में जन्नत में प्रवेश पा जाएगी, नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के लिए रहन हैं और अपने किये का आप जिम्मेदार है। छुटकारा इसी सूरत में हो सकता है जब कि वह अच्छे कर्मों के साथ उपस्थित हो और नेक कर्मों के लिए ईमान आवश्यक है। अगर ईमान और अच्छे कर्मों से उस का जीवन खाली रहा है तो क्रियामत के दिन वह अपने को छुड़ा न सकेगा और जहन्नम की यातना से मुक्ति न पा सकेगा।

22. अर्थात् यह उत्तम आहार हम उन्हें देते ही चले जाएंगे। और जिस प्रकार के गोश्त और मेवे वे पसंद करेंगे उन को दिया जाएगा। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि गोश्त जन्नत में भी खाया जाएगा।

23. अर्थात् संकोच से परे हो कर एक दूसरे से शुद्ध शराब के जाम लेंगे जिस से उन के पारस्परिक प्रेम और लगाव का अन्दाज़ा होता है। जन्नत की यह शराब अपने कुप्रभावों से बिलकुल پاک होगी। इस को पी कर आदमी न तो बकवास करेगा और न गुनाह का कोई काम। दुनिया की शराब से वह बिलकुल भिन्न होगी और इस से वह आनंद आएगा जिस का अन्दाज़ा इस दुनिया में नहीं किया जा सकता।

24. अर्थात् जिस प्रकार सुरक्षित मोती साफ़ और आबदार होते हैं उसी प्रकार ये लड़के पाक साफ़ और अति सुन्दर होंगे जो जन्नत वालों के लिए लगाव का कारण होंगे।

जन्नत का यह विस्तृत चित्रण जो कुर्आन ने प्रस्तुत किया है उस के सच्चे होने का विश्वास उत्पन्न करता है और यह कुर्आन ही की विशेषता है कि उस ने इस स्पष्टीकरण और तपस्वील के साथ जन्नत के हालात बयान किये हैं जब कि जन्नत का ऐसा विस्तृत और दिल लगता परिचय न बाइबिल प्रस्तुत करती है और न दूसरे धर्मों की वे किताबें जो मुकद्दस समझी जाती हैं।

25. अर्थात् आखिरत की जवाबदेही से ग़ाफ़िल हो कर अपने घर वालों में नहीं लग गए थे बल्कि अपनी और अपने घर वालों की आखिरत संवारने में लगे हुए थे तथा सावधानी के साथ जीवन बिताते थे कि किसी शरअी आदेश का उल्लंघन न होने पाये।

27. तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें झुलसा देने वाले अज़ाब (यातना) से बचा लिया।²⁶

فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقْنَا عَذَابَ السَّوْمِ ②٦

28. इस से पहले हम उस को पुकारते थे।²⁷ वास्तव में वह बड़ा ही मोहसिन (परोपकारी) और रहीम (दयावान) है।²⁸

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ②٧

29. तो (ऐ पैगम्बर !) तुम समझाओ, अपने रब के फ़ज़ल (अनुग्रह) से न तुम काहिन हो, और न दीवाने ।²⁹

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ②٨

30. क्या ये लोग कहते हैं कि यह शायर है जिस के लिए हम कालचक्र (गर्दिशे-अय्याम) की प्रतीक्षा कर रहे हैं।³⁰

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ تَتَّبِصُ بِهِ رَيْبَ الْمُنُونِ ③٠

31. (इन से) कहो तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।³¹

قُلْ تَرْتَبِصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُرْتَبِصِينَ ③١

32. क्या इन की अकलें इन को ऐसी ही बातें सिखाती हैं, या हैं ही यह उद्दण्ड लोग ?³²

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ③٢

33. क्या ये कहते हैं कि इस (कुर्आन) को इस ने खुद ही गढ़ लिया है? वास्तविकता यह है कि ये ईमान नहीं लाना चाहते ।³³

أَمْ يَقُولُونَ تَقُولُهُ بَلْ لَأَيُّومُونَ ③٣

34. अगर ये सच्चे हैं तो इस जैसा कलाम लाएं।³⁴

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ③٤

35. क्या ये किसी के पैदा किये बग़ैर पैदा हो गए हैं, या यह खुद ही (अपने) पैदा करने वाले हैं ?³⁵

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ③٥

36. क्या आसमानों और ज़मीन को इन्होंने पैदा किया है ? वास्तविकता यह है कि ये विश्वास नहीं रखते ।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَأَيُّوقُونَ ③٦

37. क्या तुम्हारे रब के ख़ज़ाने इन के पास हैं, या उन पर इन का क़ब्ज़ा है ?³⁶

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضِيِّطُونَ ③٧

38. क्या इन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़कर वे (आसमान की बातें) सुन लेते हैं ? अगर ऐसा है तो सुनने वाला स्पष्ट तर्क प्रस्तुत करे।³⁷

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْمَعُونَ فِيهِ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُبِينٍ ③٨

26. अर्थात् जहन्नम के अज़ाब से जिस का झुलसा देने वाला अज़ाब भी बहुत बड़ा अज़ाब है।

27. अर्थात् अल्लाह को एक मात्र पूज्य समझकर पुकारते थे। उसी की इबादत करते थे। और उसी से दुआएँ माँगते थे।

28. जन्नत में ईमान वाले अल्लाह की नेमतों की क़द्र करेंगे जिन से उस ने अलंकृत किया होगा। और उन के एहसान मानने के कारण उन की ज़बान पर ये कलिमे जारी होंगे।

29. यह बहुदेववादियों के आरोपों का खण्डन है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काहिन और दीवाना कहते थे।

व्याख्या के लिए देखिए सूरह शुअरा नोट १८० और सूरह हिज़्र नोट ८

30. अर्थात् हम देखना चाहते हैं कि हालात क्या रुख अपनाते हैं और इस व्यक्ति ने रिसालत का जो दावा किया है इस का क्या अन्जाम होता है।

31. कुर्आन ने यह बात पूरी दृढ़ता और अन्तिम रूप से कही थी कि अगर तुम इस प्रतीक्षा में हो कि रसूल का दुनिया में क्या अन्जाम होता है तो प्रतीक्षित रहो। इस की सत्यता सिद्ध हो कर रहेगी और झुठलाने वाले बुरे अन्जाम को पहुँच कर रहेंगे। इस एलान को कुछ ही वर्ष बीते थे कि कुर्आन की यह भविष्यवाणी शब्द शब्द पूरी हुई। रसूल को सम्मान, विजय एवं प्रभुत्व प्राप्त हुई और उस को झुठलाने वाले अपमान की मौत मरे।

32. अर्थात् रसूल के व्यक्तित्व को काहिन, मजनुं और शायर कह कर जिस प्रकार दागदार करने की ये लोग कोशिश कर रहे हैं तो क्या वास्तव में इन की अक्रलें इन को यही सुझाती हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं हैं क्योंकि सदबुद्धि ऐसे व्यक्ति पर दीवाने का हुक्म नहीं लगा सकती जिस की ज़बान से हिकमत से भरी बातें (तत्वपूर्ण बातें) अदा हो रही हों। और न दिल लगती सच्चाइयों को प्रस्तुत करने वाले व्यक्तित्व को काहिन क्रार दे सकती है। और न ही रसूल के मिशन को जिस के साथ स्पष्ट तर्क होते हैं शायरी कह सकती है। मतलब यह है कि इन्कार करने वालों के ये आरोप बुद्धि के ग़लत मार्गदर्शन के कारण नहीं हैं बल्कि उन के अन्दर का बिगाड़, उन की उपद्रवी मानसिकता उन को ये बातें कहने पर उकसा रही है और वह अपनी ग़लत भावनाओं वा इच्छाओं से पराजित हो कर अवज्ञा तथा उद्दण्डता पर तुल गए हैं।

33. अर्थात् कुर्आन का अल्लाह का कलाम होना एक खुली हक़ीक़त है किन्तु चूँकि ये ईमान लाना नहीं चाहते इस

लिए इस को पैग़म्बर का स्वःरचित कलाम कह रहे हैं।

आज भी कितने ही लोग कुर्आन को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रचना इस लिए कहते हैं कि इस को अल्लाह की किताब मानने की सूरत में उन्हें ईमान लाना और इस्लाम की जीवन व्यवस्था में दाखिल होना पड़ेगा।

34. यह चैलेन्ज था जो कुर्आन के मनगढ़त होने का दावा करने वालों को दिया गया और इस चैलेन्ज को बाद में भी कई सूरतों में दोहराया गया किन्तु इस चैलेन्ज का जवाब न उस समय कोई दे सका और न बाद के किसी दौर में। और यह सच्ची वास्तविकता है कि कुर्आन एक ऐसी किताब है जिस का कोई उदाहरण और कोई नज़ीर न मौजूद है और न पेश की जा सकती है। शब्दों का रख रखाव, आयतों का क्रम, कलाम का प्रवाह, शैली का अनोखापन, आवाज़ का तालमेल और दिलों को जीत लेने वाला, तथा आत्मा को जागृत करने वाला बयान, उस के चमत्कार होने के खुले प्रमाण हैं। कुर्आन के चमत्कारिक गुणों के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट ३०

35. यह बड़ा चुभता हुआ प्रश्न है कि मनुष्य बग़ैर किसी पैदा करने वाले के पैदा हो गया है या वह स्वयं अपना रचयिता है? ज़ाहिर है इन दोनों बातों में से कोई बात भी सही नहीं। इन्सान का सृष्टि होना एक सच्चाई (Fact) है और कोई भी रचना बिना रचयिता के कैसे अस्तित्व में आ सकती है? रही दूसरी सूरत कि मनुष्य आप अपना रचयिता हो तो यह बात कल्पना से परे और सत्य के विरुद्ध है। जब इन्सान का वजूद ही नहीं था तो वह अपना रचयिता कैसे बना। और यदि मनुष्य अपना रचयिता है तो वह अपनी रचना में अपने स्वभावनुकूल नयापन अर्थात् भिन्नता क्यों नहीं पैदा करता। क्या एक साँचे में अपने आप को ढाल देने के बाद उस की रचना शक्ति समाप्त हो गई है?

स्पष्ट हुआ कि समस्त ईश्वरीय गुणों के साथ एक सृष्टा का अस्तित्व एक अखण्डनीय वास्तविकता है और प्रत्येक व्यक्ति के ज़मीर की पुकार भी। इसी लिए कुर्आन की ये आयतें दिलों में उतरती चली गई। बुखारी में जुबैर बिन मुत्दम रज़ियल्लाहु अन्हु का क्रिस्सा बयान हुआ है। वे फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मरिब की नमाज़ में सूरह तूर की क़िर्अत (तिलावत) फ़रमा रहे थे। जब आप इन आयतों पर पहुँचे तो दिल की यह हालत हुई कि जैसे वह उड़ा जा रहा है। (बुखारी किताबुत्तप्सीर)

36. अर्थात् जब ये न अल्लाह के खज़ानों के मालिक हैं और न उन पर इन का हुक्म चलता है कि जिस को जितना

चाहें दे तो फिर इन का गुरुर और घमण्ड किस बात पर है। जब वे ईश्वरीय योजना के अनुसार ही अपने हिस्से की रोजी पा रहे हैं तो उन में अल्लाह की रूबूबिय्यत का एहसास जागना चाहिए।

37. अर्थात् क्या इन के पास कोई ऐसा साधन है कि वे

आसमानी जगत की बातें मालूम कर सकें। अगर कोई इस का दावेदार है और उस ने आसमानी जगत की बातें जान ली हैं तो इस की स्पष्ट दलीलें प्रस्तुत करे, और अगर ऐसा नहीं है और सत्य यही है कि ऐसा नहीं है, तो फिर ये खुदा, फ़रिश्ते और धर्म से सम्बन्धित जो बातें करते हैं उन का स्रोत क्या है।



क्या उस के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे ?
क्या तुम इन से कोई मुआवज़ा (मज़दूरी) माँगते हो
कि वे इस तावान के बोझ तले दबे जा रहे हैं? क्या
इन के पास ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है कि ये लिख
रहे हैं ? क्या ये कोई चाल चलना चाहते हैं। अगर
ऐसा है तो कुफ़्र करने वाले ही इस चाल में गिरफ़्तार
होंगे। क्या अल्लाह के सिवा इन के लिए कोई
और पूज्य है ? पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन
को ये उस का शरीक ठहराते हैं। (अल-कुर्आन)

39. क्या उस के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे ?³⁸

أَمْلَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ۖ

40. क्या तुम इन से कोई मुआवज़ा (मज़दूरी) माँगते हो ³⁹ कि वे इस तावान के बोझ तले दबे जा रहे हैं ?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ۖ

41. क्या इन के पास ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है कि ये लिख रहे हों ?⁴⁶

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۖ

42. क्या ये कोई चाल चलना चाहते हैं। अगर ऐसा है तो कुफ़्र करने वाले ही इस चाल में ग़िरफ़्तार होंगे।⁴¹

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ
الْمُكِيدُونَ ۖ

43. क्या अल्लाह के सिवा इन के लिए कोई और पूज्य है ? पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन को ये उस का शरीक ठहराते हैं।

أَمْ لَهُمْ آلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ

44. ये लोग आसमान का कोई टुकड़ा भी गिरते हुए देख लेंगे तो कहेंगे तह दर तह बादल हैं।⁴²

وَأَنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ۖ

45. तो इन को छोड़ दो यहाँ तक कि ये अपने उस दिन को पहुँच जाएँ जिस में इन के होश उड़ जाएँगे।⁴³

فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۖ

46. जिस दिन न इन की कोई चाल इन के काम आएगी। और न इन को कोई मदद मिल सकेगी।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۖ

47. और ज़ालिमों के लिए इस से पहले भी अज़ाब है,⁴⁴ मगर इन में से अधिकतर जानते नहीं हैं।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ

48. (ऐ पैग़म्बर !) तुम सब्र के साथ अपने रब के फैसले का इन्तिज़ार करो,⁴⁵ तुम हमारी निगाह में हो।⁴⁶ और अपने रब की हम्द (अर्थात् प्रशंसा) के साथ पाकी बयान करो जब तुम उठते हो।⁴⁷

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۚ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۖ

49. और रात में भी उस की पाकी बयान (अर्थात् तस्बीह) करो ⁴⁸ और उस समय भी जब सितारें डूबते हैं।⁴⁹

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۖ

38. व्याख्या के लिए देखिए सूरह साफ़ात नोट १३१
39. व्याख्या के लिए देखिए सूरह शुअरा नोट ९८
40. अर्थात् क्या इन पर वह्य नाज़िल होती है जिस को वे लिख लिख कर किताब का रूप दे रहे हों। अगर ऐसा नहीं है और सत्य यही है कि ऐसा नहीं है तो फिर किस आधार पर वे उस हिदायत से विमुख हो रहे हैं जो कुआन के रूप में उन के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है?
41. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिर नोट १७८ और सूरह तलाक़ नोट १७
42. अर्थात् उन की हद्दधर्मी ऐसी है कि वह किसी मोज़े (ईश्वरीय चमत्कार) पर भी विश्वास करने वाले नहीं। अगर आसमान का कोई टुकड़ा गिरते हुए उन्हें दिखाया जाए तो ये उस की अपनी व्याख्या यह करेंगे कि यह तह दर तह बादल है। ये उसी समय विश्वास करेंगे जब कि अज़ाब उन को अपनी लपेट में ले लेगा।
43. अर्थात् जब ये तुम्हारी नसीहत सुनने के लिए तैयार नहीं है तो इन्हें उन के हाल पर छोड़ दो क्रियामत के दिन इन्हें पता चलेगा जब उस की हौलनाकी से इन के होश उड़ जाएंगे। काफ़िरों को उन के हाल पर छोड़ देने का यह हुक्म नसीहत से संबन्धित है वरना जिहाद के मरहले में उन का सर कुचलना ज़रूरी है। अतः मदनी दौर में ताक़त का जवाब ताक़त से दिया गया।
44. अर्थात् क्रियामत के अज़ाब से पहले इस दुनिया में

भी अज़ाब (प्रकोप) है जो रसूल को झुठलाने वाली क़ौम पर आता है। अतः अरब के बहुदेववादियों पर अल्लाह का अज़ाब मुसलमानों की तलवार के द्वारा टूट पड़ा और वे अपमान की मौत मरे।

45. ये सूरह की अन्तिम आयतें हैं और इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली भी दी गई है और अल्लाह की तस्बीह व तम्जीद अर्थात् गुणगान करने तथा उस की पाकी बयान करने में तल्लीन रहने की हिदायत भी।

फ़ैसले से तात्पर्य अल्लाह का वह फैसला है जो काफ़िरों को सजा देने के लिए प्रकट होगा।

46. अर्थात् ऐ पैग़म्बर अल्लाह तआला तुम्हारी निगरानी कर रहा है अतः तुम इन की चालों की कोई चिन्ता न करो।

47. अर्थात् जब तुम सो कर उठो तो अल्लाह को याद करो और उस की पाकी तथा उस की हम्द (तारीफ़) बयान करो। इस में इशारा है तहज्जुद की नमाज़ की तरफ़।

48. इस में मगरिब और इशा की नमाज़ें भी शामिल हैं और रात के क्षणों में तस्बीह के कलिमात कहना भी, कि यह इबादत है और इस से दिल अल्लाह की तरफ़ लगा रहता है।

49. मुराद फ़ज़्र का वक्त है जब कि सितारे डूब रहे होते हैं। आसमान की महफ़िल सूनी पड़ जाती है। यह समय मनुष्य के अन्तर्मन और उस की आत्मा को जगाने वाला होता है इस लिए उस समय तस्बीह का आदेश दिया गया है जिस में फ़ज़्र की नमाज़ भी शामिल है।



सूरह अन्-नज्म

५३. सूरह अन्-नज्म

नाम :- सूरह की शुरुआत नज्म (तारे) की क्रम से हुई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अन्-नज्म” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है। इस सूरह में मेराज का महत्वपूर्ण पहलू बयान हुआ है। इस लिए यह सूरह बनी इस्त्राईल के बाद ही का अवतरण हो सकती है। अर्थात् सन १२ नबवी की।

बुखारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह मत उद्धृत किया है कि सब से पहली सूरह जिस में तिलावत के सज्दे का हुक्म दिया गया है वह सूरह नज्म है। अतः जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद-हराम में इस सूरह की सज्दे वाली आयत पढ़ते हुए सज्दा किया तो बहुदेववादी भी वेग में आ कर सज्दे में गिर गए। (बुखारी किताबुत-प्सीर) इस रिवायत को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि सूरह इकरा इस से बहुत पहले नाज़िल हो चुकी थी जिस में सज्दे वाली आयत है। और हब्शा की हिजरत से पहले सूरह मरयम भी नाज़िल हुई थी जिस में सज्दे वाली आयत है। संभवतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का मंशा यह रहा होगा कि सूरह नज्म वह पहली सूरह है जिस की सज्दे वाली आयत पर बहुदेवादियों ने भी सज्दा किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उन के इस बयान को उद्धृत करने में उल्लेख कर्ताओं से कुछ असावधानी हो गई है।

उन मुफ़स्सिरीन के मतों से भी सहमति व्यक्त नहीं की जा सकती जो सूरह नज्म को सन ५ नबवी का अवतरण बताते हैं। उन के मत का विरोधाभास इस से स्पष्ट है कि वे एक तरफ़ तो इस सूरह को मेराज की घटना से सम्बन्धित मानते हैं जो उन के नज़दीक मदीना की हिजरत से कुछ पहले की घटना

है। और दूसरी तरफ़ सूरह नज्म को जिस में मेराज का वर्णन है सन ५ नबवी का अवतरण बताते हैं।

केन्द्रीय विषय :- वह्य और रिसालत से सम्बन्धित उन वास्तविकताओं को प्रस्तुत करना है जिन से ईमान और विश्वास पैदा होता है और कहानत (ज्योतिष) के आरोप का खण्डन होता है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १८ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उन संदेहों को दूर किया गया है जो वह्य से सम्बन्धित इन्कारी लोग प्रस्तुत किया करते थे और आप की आँखों देखी वास्तविकताओं को जो आसमानी जगत से सम्बन्धित हैं एक सच्चाई के तौर पर प्रस्तुत किया गया है।

आयत १९ से ३० में अल्लाह की वह्य को छोड़ कर इच्छाओं के पीछे चलने और इस के फलस्वरूप शर्क में लिप्त होने तथा कर्म फल से इन्कार करने पर पकड़ की गई है इस तरह से कि उन की धारणा का ग़लत होना बिलकुल सिद्ध हो जाता है।

आयत ३१ और ३२ में सुकर्मियों को क्षमा और इनाम की खुशख़बरी सुनाई गई है।

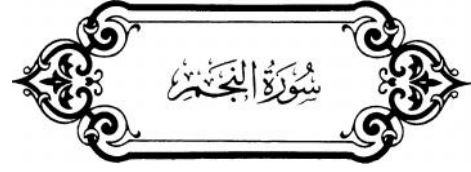
आयत ३३ से ५५ में इन्कारी लोगों को सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण दिया गया है।

आयत ५६ से ६२ सूरह की अन्तिम आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के डराने वाला (नज़ीर) होने की हैसियत को स्पष्ट करते हुए क्रियामत के दिन से ख़बरदार किया गया है। और अल्लाह ही को सज्दा करने तथा उस की इबादत करने का आदेश दिया गया है।

५३. सूरह अन्-नज्म

आयतें : ६२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्रसम है ¹ तारे की ² जब कि वह डूब जाए ³।
2. तुम्हारा साथी न गुमराह हुआ है और न बहका है।⁴
3. वह अपनी ख्वाहीश से नहीं बोलता।
4. यह तो एक वह्य है जो उस पर की जाती है।⁵
5. उसे ज़बरदस्त शक्ति वाले ने तालीम दी है।⁶
6. जो बड़ा शक्तिशाली है।⁷ वह सीधा खड़ा हो गया।⁸
7. और वह ऊपरी क्षितिज पर था।⁹
8. फिर करीब आ गया और अंतरिक्ष में रूक गया।¹⁰
9. यहाँ तक कि दो कमानों के बराबर बल्कि उस से भी कम फासला रह गया।¹¹
10. तब उस ने वह्य की उस के (अल्लाह के) बन्दे की तरफ़ जो कुछ वह्य की।¹²
11. जो कुछ उस ने देखा दिल ने उसे झूठ न कहा।¹³
12. तो क्या तुम उस चीज़ पर उस से झगड़ते हो जिस को वह अपनी आँखों से देखता है।¹⁴
13. और उस ने एक बार और भी इस को नाज़िल होते हुए देखा है।¹⁵

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ①

مَاضٍ صَاحِبِكُمْ وَمَا غَوَىٰ ②

وَيَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ③

إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ④

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ⑤

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ⑥

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ⑦

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ⑧

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ⑨

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ⑩

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ⑪

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ⑫

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ⑬

1. क्रसम यहाँ गवाही के अर्थ में है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर नोट १४

2. नज्म (तारा) यहाँ तारों की जाति के अर्थ में है इस लिए मुराद तारे हैं न कि कोई एक तारा ।

3. तारों के डूबने का दृश्य मनुष्य को सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण देता है। तारे जब डूब जाते हैं तो आसमान की सजी सजाई महफ़िल सिमट जाती है। इस से एक तरफ़ तो इन सितारों के रब होने उन के भाग्य पर प्रभावित होने और दुनिया में घटित होने वाली घटनाओं में उन के हस्तक्षेप होने का खण्डन होता है। क्यों कि जब वे स्वयं एक नियम के पाबन्द और एक व्यवस्था में जकड़े हुए हैं तो वे रब और दुनिया के संचालक अथवा संचालन में भागीदार कैसे हो सकते हैं। अतः न सितारों को पूजने का कोई औचित्य है और न उन अंधविश्वासों की कोई सच्चाई है जिन के आधार पर सितारों को शुभ या अशुभ कहा जाता है और ज्योतिष का कारोबार चला कर लोगों को गुमराह किया जाता है। यह गोरखधंदा आज भी जारी है। अतः समाचार पत्रों के कालमों में सितारे अथवा नक्षत्र क्या कहते हैं नामक शीर्षक के अन्तर्गत भविष्य का हाल बताया जाता है तथा झूठी भविष्यवाणियाँ की जाती हैं।

दूसरी तरफ़ सितारों के डूबने का यह मन्ज़र कायनात के रब का परिचय प्रदान करता है कि इस कायनात पर एक ऐसी हस्ती का शासन है जिस की महानता के आगे सब तुच्छ हैं और वह अत्यंत नीतिपूर्ण ढंग से तथा पूरी तत्त्वदर्शिता के साथ इस कायनात की व्यवस्था चला रहा है किसी और रब, पूज्य अथवा संचालक का इस कायनात में कोई अस्तित्व नहीं।

4. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे लिए अजनबी नहीं हैं बल्कि तुम्हारे साथ ही उन्होंने ने उम्र गुजारी है इस लिए तुम अच्छी तरह जानते हो कि वे ग़लत राह पर चलने वाले और बहकी बहकी बातें करने वाले आदमी नहीं हैं। उन को मात्र इस कारण ग़लत राह पर पड़ा हुआ अथवा बहका हुआ कहते हो कि वह तुम्हें तौहीद और आख़िरत पर ईमान लाने की दअवत देता है और अपने को अल्लाह के रसूल की हैसियत से पेश करता है। हालाँकि कायनात के आसार से इन बातों की सत्यता स्पष्ट होती है जिस का उदाहरण सितारों का डूब जाना है।

ध्यान रहे कि गुमराही, हिदायत की तुलना में और गवायत (बहकना) रूशद (सूझ बूझ) की तुलना में बोला जाता है।

5. यहाँ बहस में कुर्आन है, इस लिए उस के बारे में इर्शाद हुआ है कि यह कुर्आन इस व्यक्ति ने अपनी इच्छा और अपनी मर्जी से संकलित नहीं किया है बल्कि यह सरासर वह्य है जो कुर्आन के रूप में उस पर उतरी है।

इस से यह बात आप से आप स्पष्ट होती है कि जब नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पद रिसालत का पद है तो आप की ज़बान से निकली हुई कोई बात भी अपनी इच्छाओं के आधार पर नहीं हो सकती बल्कि उस ज्ञान के आधार पर ही हो सकती है जो अल्लाह तआला ने आप को प्रदान किया था।

6. मुराद हज़रत जिब्रील हैं जो फ़रिश्तों के सरदार हैं (देखिए सूरह तकवीर नोट २१ और २३)

7. अर्थात् हज़रत जिब्रील अपनी संरचना में मज़बूत और शक्ति शाली हैं और उन्हें अल्लाह तआला ने ऐसी शक्ति प्रदान की है कि देखते देखते आसमान से ज़मीन पर नाज़िल होते हैं और उन के काम में जिन्न और शैतान कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकते।

8. हज़रत जिब्रील नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने इस तरह प्रकट हुए कि बिल्कुल सीधे खड़े थे ताकि आप उन को अच्छी तरह देख लें।

9. वह आसमान के ऊपरी क्षितिज पर प्रकट हुए थे ताकि आप उन्हें अधिक उजले वातावरण में देख सकें।

10. फिर हज़रत जिब्रील नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीब आए और आसमान में रुक गए अर्थात् उन को ज़मीन पर पाँव रखने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वह फ़रिश्ते थे इस लिए हवा में लटक कर खड़े हो गये।

11. “दो कमानों के बराबर या उस से भी कम” अरबी का मुहावरा है। मतलब यह है कि हज़रत जिब्रील क्षितिज पर प्रकट हुए थे किन्तु फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इतने निकट आ गये कि मुश्किल से दो कमानों के बराबर फासला रह गया होगा। इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हज़रत जिब्रील को अपने असली रूप में स्पष्टतः देखने का अवसर मिला और इस में शक और संदेह की कोई गुन्जाइश नहीं रही।

ध्यान रहे कि अरबी में “औ” (یا) अर्थात् (या) “बल” (बल्कि) के अर्थ में भी आता है। (लिसानुल अरब जिल्द १४ पृष्ठ ५४) इस लिए हम ने आयत में “औ” का अनुवाद “बल्कि” कर दिया है।

हज़रत जिब्रील सब से पहले हिरा की गुफ़ा में वह्य ले कर नाज़िल हुए थे और इस के बाद कई बार आप के पास वह्य ले कर आते रहे किन्तु जिस घटना का यहाँ वर्णन किया गया है वह जिब्रील को अपने असली रूप में उड़ने की शक्ति के साथ देखने का है। अतः हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को देखा कि उन के ६ सौ पर हैं। (मुस्लिम किताबुल ईमान)

12. अर्थात् जिब्रील ने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इतने नज़दीक आ कर वह्य करना थी कि। अबदहु

से मुराद अल्लाह के बन्दे रसूलुल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है। और यहाँ यह शब्द इसी अर्थ के लिए उचित हैं।

13. अर्थात् जिब्रील के प्रत्यक्ष दर्शन की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल ने पुष्टि की। आप को पूरा विश्वास हो गया कि यह फ़रिश्ता जिब्रील ही हैं जिन को वे अपनी खुली आँखों से देख रहे हैं। इस में नज़र का धोखा होने की मामूली आशंका भी नहीं थी।

14. अर्थात् एक आम आदमी न फ़रिश्तों का प्रत्यक्ष दर्शन

करता है और न उसे अल्लाह की वह्य का अनुभव होता है किन्तु अल्लाह तआला अपने रसूल को फ़रिश्ते भी दिखा देता है तथा उस पर वह्य भी नाज़िल करता है और अल्लाह के रसूल की सत्यता पर उस का पूरा व्यक्तित्व और मूल कलाम जिस की वह्य की गई दलील होता है।

15. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को दूसरी बार भी अपने असली रूप में देखा जिस से पहले अनुभव की और पुष्टि हो गई। दूसरी बार जिब्रील को अपने असली रूप में देखने की घटना मेराज के अवसर पर घटी।



सिद्दरतुलमुन्तहा (परली सीमा की बेर) के पास। जिस के पास जन्नतुल मावा (ठिकाने वाली जन्नत) है। जब कि सिद्दरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह न चुँधियाई न हद से आगे बढ़ी। उस ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखी। क्या तुम ने लात और उज़्ज़ा को देखा ? और एक और, मनात को जो तीसरा है ? क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और उस के लिए बेटियाँ ? यह तो बड़ी भोंडी बाँट हुई ? (अल-कुर्आन)

14. सिद्दरतुलमुन्तहा (परली सीमा की बेर) के पास।¹⁶

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ⑬

15. जिस के पास जन्नतुल मावा (ठिकाने वाली जन्नत) है।¹⁷

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ⑭

16. जब कि सिद्दरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था।¹⁸

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ⑮

17. निगाह न चूँधियाई न हद से आगे बढ़ी।¹⁹

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ⑯

18. उस ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखी।²⁰

لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ⑰

19. क्या तुम ने लात और उज़्ज़ा को देखा ?

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ⑱

20. और एक और मनात को जो तीसरा है ?²¹

وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْآخَرَى ⑲

21. क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और उस के लिए बेटियाँ ?

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَى ⑳

22. यह तो बड़ी भोंडी बाँट हुई ?²²

تِلْكَ إِذْ أَسْمَتُ ذُرِّيَّتِي ㉑

23. ये तो बस नाम है जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह ने उन के लिए कोई सनद (प्रमाण पत्र) नहीं उतारी।²³ ये लोग मात्र गुमान और अपने मन की इच्छाओं की पैरवी कर रहे हैं।²⁴ हालाँकि उन के पास उन के रब की तरफ़ से हिदायत आ चुकी हैं।²⁵

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ الْهُدَى ㉒

24. क्या इन्सान जिस चीज़ की भी तमन्ना करे वह उसे मिलेगी ?

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّى ㉓

25. दुनिया और आख़िरत तो अल्लाह ही के इख़्तियार में है।²⁶

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى ㉔

26. आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर इस के बाद कि अल्लाह इजाज़त दे, जिस को चाहे और जिस के हक़ में पसंद करे।²⁷

وَكَمْ مِنْ مَّالِكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى ㉕

16. सिद्दह का अर्थ बेरी के वृक्ष के हैं और मुन्तहा का अर्थ है अन्तिम सीमा। अर्थात् बेरी का वह वृक्ष जो इस कायनात के अन्तिम छोर पर स्थित है। हदीस में आता है कि उस वृक्ष को आपने मेराज के अवसर पर सातवे आसमान पर देखा।

बेरी का वृक्ष घना और छायादार होता है और उस के पत्ते खुशबूदार होते हैं। इस से उस वृक्ष के बारे में जो इस कायनात की आखिरी सरहद पर है एक हल्की सी काल्पनिक झलक ज़ेहन में आती है वरना आसमानी जगत की चीजें हमारे लिए मुशाबिहात में से हैं जिन की असल हकीकत न हमारे ज़ेहन की सीमा में आ सकती हैं और न इस को मालूम करने के पीछे पड़ना हमारे लिए सही है।

17. जन्नतुल मावा का मतलब वह जन्नत जो मोमिनों का ठिकाना होगी। अतः सूरह सज्दा में इरशाद हुआ है :-

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ
الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ - (السجدة: १९)

अर्थ :- “ जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उन के लिए जन्नतुलमावा (रहने के बाग) हैं, सत्कार स्वरूप उन के कर्मों के सिले में ” (अस्सज्दा १९)

कुर्आन की यह आयत पुष्टि करती है कि जन्नत आसमान पर सिद्दरातुलमुन्तहा के पास मौजूद है। सिद्दरातुलमुन्तहा के पास जन्नतुलमावा के होने से यह बात समझ में आती है कि जहाँ इस जगत की सरहदें समाप्त होती हैं वहीं से जन्नत की सरहदें शुरू हो जाती हैं और मेराज में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहुँच उस स्थान तक हुई थी।

18. ये अल्लाह के भेद थे जो प्रकट हो गए थे जैसा कि आगे आयात १८ से इशारा मिलता है। और यह बात कि “छा रहा था, जो कुछ उस पर छा रहा था, उन भेदों के महानतम होने को प्रकट करती है।

19. अर्थात् पैगम्बर की निगाहें ठीक ठीक उन-चीजों पर जमी रही जो अल्लाह ने आप को दिखाई और आपने उन चीजों को पूरी सत्यता के साथ देखा। आप को न तो नजर का धोखा हुआ और न निगाहें चुंधियाई बल्कि पूरी एकाग्रता के साथ देखा।

इस से स्पष्ट हुआ है कि मेराज में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने जो कुछ देखा वह आप का आँखों देखा था न कि ख्वाब। और यह मेराज केवल रूहानी नहीं बल्कि शारीरिक भी थी।

20. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमानी जगत में कुदरती करिशमों को आँखों से देखा जिन में हज़रत ज़िब्रील को उन के असली रूप में, उन के बुलन्द तरीन पहुँच

सिद्दरातुलमुन्तहा पर देखना भी शामिल है। मेराज की इस घटना की तफ़सील हदीस में बयान हुई है। सूरह बनी इस्राईल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक रात में मस्जिदे-हराम से मस्जिदे-अक्रसा ले जाने का मक़सद यह बयान हुआ है कि :-

لَنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا - (بنی اسرائیل: १)

अर्थ :- “ताकि उन्हें हम अपनी निशानियाँ दिखाएँ” (बनी इस्राईल - १)

और यहाँ इर्शाद हुआ है:-

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ

अर्थ :- “निस्संदेह उस ने अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखी”

इन निशानियों का प्रत्यक्ष दर्शन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस लिए कराया गया ताकि आखिरी रसूल होने की हैसियत से क्रियामत तक के लिए लोगों पर अल्लाह की हुज्जत (तर्क स्पष्टीकरण) पूरी हो जाए कि रसूल ने जो बातें वह्य के आधार पर प्रस्तुत की हैं उन में मामूली शक के लिए भी गुन्जाइश नहीं है। वह सुदृढ़ एवं विश्वस्नीय ज्ञान के आधार पर हैं और रसूल ने आसमानी जगत का अवलोकन अपनी आँखों से किया है इस लिए कायनात के रहस्यों पर से वह पर्दा उठा रहा है जिस से तौहीद का पहलू और उजागर हो कर सामने आ रहा है और आखिरत के साक्ष्य भी। यह वह हस्ती है जिस की पहुँच सातवें आसमान (सिद्दरातुल मुन्तहा) तक हुई। इस लिए उस के ज्ञान से तुम अपने ज्ञान का मुकाबला नहीं कर सकते। अतः वह अपने असाधारण ज्ञान की रौशनी में तुम्हारी जो रहनुमाई कर रहा है उस को स्वीकार करना अपनी मन्ज़िल को पा लेना है।

इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने रब को देखने का कोई वर्णन नहीं है। बल्कि उस की आयतों (निशानियों) को देखने का वर्णन है। जिन लोगों का यह मत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज के मौक़े पर अल्लाह तआला को देखा था वह सही नहीं। अगर ऐसा होता तो इस का वर्णन इन आयतों में ज़रूर होता क्यों कि इतनी महत्वपूर्ण बात से यह बयान किस तरह ख़ाली हो सकता था। और हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने इस का जोरदार खण्डन किया है। अतः बुखारी की रिवायत है:-

“हज़रत आइशा ने मसरूक़ से फ़रमाया कि तीन बातें ऐसी हैं कि जो उस का क़ायल हो उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा झूठ बाँधा। मसरूक़ कहते हैं कि मैं ने पूछा वे क्या हैं, हज़रत आइशा ने फ़रमाया (उन में एक यह है कि) जो व्यक्ति यह समझे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को देखा उस

ने अल्लाह पर बहुत बड़ा झूट बाँधा।” (मुस्लिम किताबुलईमान)

21. ये बहुदेववादियों के बुतों के नाम हैं जिन को वे पूजते थे। कुआन ने नाम लेकर बहुदेववाद के इन प्रतीकों पर विचार करने का निमंत्रण दिया ताकि उन का असत्य होना स्पष्ट हो जाये और उन के भक्त होश के नाखून लें।

ये तीनों कुरैश और अन्य कबीलों के बड़े बुत थे और उन को वे स्त्रीलिंग समझते थे अर्थात् ये उन की देवियाँ थी। सूरह निसा में इर्शाद हुआ है।

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا - (नساء: ८८)

अर्थ :- “ये लोग उस को छोड़ कर देवियों को पुकारते हैं।” (निसा - ११७)

और जैसा कि आगे आयत २१ और २६ से स्पष्ट है ये फ़रिश्तों के बुत थे जिन के बारे में बहुदेववादियों की धारणा थी कि वे ख़ुदा की बेटियाँ हैं। इन नामों की मौलिकता तथा इन की असल के बारे में दृढ़तापूर्वक कुछ कहना मुश्किल है फिर शब्दकोष के अनुसार अन्दाज़ा होता है कि “अल-लात” शब्द “अल-इलाह” अर्थात् ख़ुदा, पूज्य से कुछ अक्षर निकाल कर के और “त” जो स्त्रीलिंग का चिन्ह है, बढ़ा कर बनाया गया है। इस शब्द के बारे में यह समझना सही नहीं कि वह शब्द “अल्लाह” का स्त्रीलिंग है क्योंकि यह संज्ञा ख़ास और अद्वितीय है और इस से कोई शब्द भी उत्पन्न नहीं होता। कुआन में है

هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا (سورة مريم: १५)

अर्थ :- “क्या तुम्हारे ज्ञान में उस का हमनाम कोई है?” (मरयम-६५)

और अरब के बहुदेववादियों के नज़दीक भी अल्लाह का नाम उस हस्ती के लिए ख़ास था जो कायनात के रचयिता और सारी सृष्टिों का पूज्य है। वे उस के लिए देवी शब्द जो कि पत्नी के भावार्थ में था के क़ायल नहीं थे अलबत्ता वे फ़रिश्तों को उस की बेटियाँ (देवियाँ) बताते थे।

“الْعَزَى، الْأَعْزَى”

अल-उज़्ज़ा, शब्द अल-अऊज़्ज़ा का स्त्रीलिंग है जिस का अर्थ है इज़्ज़त और प्रभुत्ववाला। उन के नज़दीक इज़्ज़त और विजय की देवी थी जिस का उन्होंने ने बुत बना लिया था। उहद की जंग में अबू सुफ़ियान ने इसी की जय पुकारते हुए कहा था।

لَنَا الْعَزَى وَلَا عَزَى لَكُمْ

अर्थ :- “हमारे लिए उज़्ज़ा (देवी) है और तुम्हारे लिए कोई उज़्ज़ा नहीं”

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस का जवाब इस

तरह देने के लिए फ़रमाया था

اللَّهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَى لَكُمْ

अर्थ :- “हमारा मौला अल्लाह है और तुम्हारा कोई मौला नहीं” (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ २५३)

अल-मनात, यह मक्का और मदीना के बीच कदीद नामक स्थान पर बुत था जिस के पास बहुदेववादी एहराम बाँधा करते थे। (बुखारी किताबुतफ़सीर)

यह तीसरा बहुत बड़ा बुत था और कुआन ने इस को तीसरा कह कर तीन ख़ुदाओं (त्रीश्वरवाद) की तरफ़ इशारा किया है। त्रीश्वरवाद की धारणा ईसाइयों में थी अतः एवं उन्होंने ने बाप, बेटा, और रूहुल कुदुस के नाम से तीन ख़ुदा बना लिए थे। और अरब के बहुदेववादियों ने लात, उज़्ज़ा और मनात के बुत स्थापित कर के तीन देवियों की धारणा गढ़ ली थी।

भारत के बहुदेववादी भी इस मामले में पीछे नहीं हैं बल्कि अधिक गुमराह करने वाली धारणा में लिप्त हैं अतः उन के यहाँ तीन विशिष्ट देवताओं ब्रह्मा, विष्णु और महेश की धारणा पाई जाती है जिस ने त्रिमूर्ति का रूप धार लिया है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के अवसर पर, अपने साथियों को भेज कर लात, उज़्ज़ा और मनात इन तीनों बुतों को तुड़वा दिया था यहाँ तक कि उन का निशान भी बाक़ी नहीं रहा। इन बुतों के अन्दर यदि वास्तव में देवियों की आत्मा थी तो वे अपना बचाव क्यों नहीं कर सके?

22. अर्थात् प्रथम तो किसी को अल्लाह का साझीदार ठहराना एक सत्य के विरुद्ध बात है। द्वितीय इस की नामाकूलियत इस से भी स्पष्ट है कि तुम जिस चीज़ को अपने लिए नापसंद करते हो उसी को ख़ुदा से सम्बन्धित बताते हो। तुम अपने लिए लड़के पसंद करते हो और जब कोई लड़की तुम्हारे यहाँ पैदा हो जाती है तो तुम अपने लिए उसे निम्नता एवं लज़्ज़ा का कारण समझने लगते हो किन्तु अल्लाह के लिए इस बात के क़ायल हो कि फ़रिश्ते उस की बेटियाँ हैं और लात, उज़्ज़ा और मनात के स्त्रीलिंग नामों से उन की मूर्तिया बना ली हैं। यह ऐसी भोंडी बात है कि हर बुद्धि रखने वाला आदमी इस को महसूस कर सकता है।

23. अर्थात् ये बस नाम ही नाम हैं। इन का कोई संज्ञात्मक अस्तित्व नहीं है। ये बुत वास्तव में देवियाँ नहीं हैं। इन के अन्दर पूज्य होने के कोई गुण भी मौजूद नहीं हैं। फिर इन को पूज्य बनाने का क्या अर्थ?

भारत के बहुदेववादियों ने भी बहुत से देवताओं और देवियों की मूर्तियाँ बना ली हैं और वे समझते हैं कि उन को पूजने से वे ख़ुश हो जाते हैं और उन की आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

परन्तु सच्चाई यह है कि ये बस मनगढ़त नाम हैं जिन को पुकारा जाता है न कहीं किसी देवता का अस्तित्व है और न देवी का और न इन मूर्तियों में खुदा अथवा पूज्य होने के कोई गुण हैं।

24. जो लोग मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं उन के पास इसे सही सिद्ध करने का कोई औचित्य नहीं? उन्हें कैसे ज्ञात हो गया कि उन के अपने हाथ के बनाए हुए बुतों में पूज्य होने के गुण मौजूद हैं? और उन्हें इस बात का पता कैसा चला कि देवी देवताओं का भी अस्तित्व है? इन्सान का और पूरी कायनात का पैदा करने वाला तो अल्लाह ही है और उस ने इस की सनद नाज़िल नहीं की। खुदा की किसी किताब में और नबियों की शिक्षाओं में कदापि इस की निशानदेही नहीं की जा सकती। अतः बुत परस्ती के लिए कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है बल्कि ये मात्र गुमान और अटकल की बातें हैं और अपने मन की इच्छाओं के पीछे अंधे बन कर चल पड़ना है।

धारणा वास्तव में किसी ठोस ज्ञान के आधार पर ही बन सकती है किन्तु बहुदेववादियों ने देवी देवताओं का जो दर्शन गढ़ा है वे मात्र अंधविश्वास तथा अटकल पच्चू बातें हैं और चूँकि इस पर उन्होंने अपने धर्म की आधारशिला रखी है इस लिए उन की इच्छाओं ने उन्हें उन का चाहने वाला बना दिया है। इसी कारण वे उन में आस्था व्यक्त करते हैं।

25. अर्थात् जब उन के रब की तरफ से स्पष्ट हिदायत कुर्आन के रूप में आ गई तो अब बुत परस्ती से ये क्यों चिमटे रहना चाहते हैं?

26. अर्थात् मनुष्य यदि तमन्नाओं और मनोकामनाओं की दुनिया में जीना चाहता है तो उसे मालूम होना चाहिए कि किसी के अधिकार में कुछ नहीं है। दुनिया और आखिरत के सारे

अधिकार अल्लाह के हाथ में हैं इस लिए उसी से अशाएँ बाँधी जा सकती हैं और ये आशाएँ उस की हिदायत को स्वीकार करते हुए उस से रखी जानी चाहिए।

27. अर्थात् आसमानों में बहुतेरे फ़रिश्ते हैं किन्तु उन की सिफ़ारिश किसी के पक्ष में भी लाभदायक नहीं हो सकती। यह और बात है कि अल्लाह तआला उन में से किसी को सिफ़ारिश करने की अनुमति दे और जिस के पक्ष में सिफ़ारिश करना पसन्द फ़रमाए।

बहुदेववादी फ़रिश्तों को अल्लाह के समक्ष सिफ़ारिशी समझते थे। अर्थात् वे समझते थे कि हम अगर इन की पूजा करेंगे इन्हें भोग लगाएंगे तो वे अपने भक्तों एवं श्रद्धालुओं के पक्ष में अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगे कि वह हमें अज़ाब का भागीदार न बनाए। अतः यदि वास्तव में आखिरत बरपा हो गई तो ये फ़रिश्ते जिन की हम पूजा करते हैं हमें अज़ाब से मुक्ति दिला कर रहेंगे। उन की इसी ग़लत धारणा का यहाँ खण्डन किया गया है और स्पष्ट किया गया है कि किसी फ़रिश्ते का भी अल्लाह के आगे ज़ोर नहीं है कि वह अपनी बात मनवा कर रहे। क्रियामत के दिन वही फ़रिश्ते ज़बान खोल सकेंगे जिन को अनुमति दी जाएगी और उन ही के पक्ष में वे सिफ़ारिश करेंगे जिन के लिए सिफ़ारिश करना अल्लाह ने पसन्द फ़रमा लिया हो। यह एक अपवादिक दशा होगी जिस का लाभ बहुदेववादियों और काफ़िरों को हरगिज़ नहीं पहुँच सकता क्यों कि अल्लाह का साझीदार ठहराना एक ऐसा अपराध है जिस की कोई क्षमा नहीं।

सिफ़ारिश की अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट १११



27. जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वे फ़रिश्तों को औरतों के नाम की संज्ञा देते हैं।²⁸

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَوْفُونَ الْمَلَائِكَةَ

تَسْمِيَةَ الْأُنثَى ۚ

28. हालाँकि उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं।²⁹ वे मात्र गुमान के पीछे चल रहे हैं। और गुमान सत्य की जगह कुछ भी लाभदायक नहीं।³⁰

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ

لَا يَغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ

29. तो उन लोगों की तरफ़ से ध्यान हटा दो जिन्होंने हमारे ज़िक्र³¹ (कुर्आन) की तरफ़ से मुँह फेरा है और जिन का मक़सद केवल संसार का जीवन है।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ

الدُّنْيَا ۚ

30. उन के ज्ञान की पहुँच यहीं तक है।³² तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है कि कौन उस के रास्ते से भटक गया है और वही बेहतर जानता है कि कौन सीधी राह पर है।

ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ

ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى ۚ

31. और जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है।----- (और उस ने इस लिए पैदा किया है) ताकि जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं उन को उन के किये का बदला दे और जिन लोगों ने अच्छे काम किये हैं उन को अच्छा बदला (इनाम) दे।³³

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَيَجْزِيَ الَّذِينَ

أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۚ

32. जो बड़े बड़े गुनाहों³⁴ और खुली बेहयाई के कामों³⁵ से बचते हैं, यह और बात है कि कुछ कुसूर उन से हो ही जाए।³⁶ निस्संदेह तुम्हारे रब का क्षमा का दामन बहुत विशाल है।³⁷ वह तुम्हें ख़ूब जानता है, जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया³⁸ और जब तुम अपनी माताओं के पेट में भ्रूण (बच्चे) थे।³⁹ तो अपने आप को पाकीज़ा न ठहराओ, वही बेहतर जानता है कौन मुत्तक़ी (परहेज़गार) है।⁴⁰

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَاتِ إِنَّ رَبَّكَ

وَاسِعُ الْغَفْرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ

فِي بُطُونٍ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى ۚ

33. क्या तुम ने उस को देखा जिस ने मुँह मोड़ा।⁴¹

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى ۚ

34. और थोड़ा सा दिया और रुक गया।⁴²

وَأَعْطَى قَلِيلًا وَأَكْدَى ۚ

35. क्या उस के पास ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान है कि उसे देख रहा है।⁴³

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوَّيَرَى ۚ

28. जैसे लात, उज्जा और मनात ये सब स्त्रीलिंग की संज्ञाएँ हैं जैसे कि संदर्भ से स्पष्ट है कि ये फ़रिश्तों के बुत थे।

29. अर्थात् उन की यह बात कि फ़रिश्ते स्त्रीलिंग हैं और देवियाँ हैं ज्ञान पर नहीं बल्कि अज्ञान पर आधारित हैं। उन्हें आखिर कैसे ज्ञात हो गया कि फ़रिश्ते स्त्रीलिंग और देवियाँ हैं।

30. “जन ظن” अरबी में कई अर्थ में आता है। यहाँ यह अंधविश्वास के अर्थ में है। बहुदेववादियों के पूज्य अंधविश्वास की पैदावार हैं जब कि कुर्आन एक खुदा की जो धारणा प्रस्तुत कर रहा है वह एक अखण्डनीय वास्तविकता है और इन का मूल सत्य की तुलना में अंधविश्वास को स्वीकार करना व्यर्थ और बेफ़ादया है।

स्पष्ट हुआ कि धारणा का मामला अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादि मामला है जो सच्चे ज्ञान पर आधारित होना चाहिए न कि अनुमान, अंधविश्वास तथा गुमान पर। और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति का माध्यम अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) अर्थात् कुर्आन है। परन्तु मुसलमानों के विभिन्न फ़िर्क़ों ने अक़ीदे वा धारणा के बारे में कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों का सहारा लिया है। और उन्हीं के अनुसार कुर्आन की आयतों की व्याख्या करते हैं। इस प्रकार शिर्क ने कब्र परस्ती, और औलिया परस्ती के रूप में मुसलमानों के अन्दर राह पा ली है। अगर वे अक़ीदे के मामले में कुर्आन पर आश्रित होते जिस की हर बात मुकम्मल और आखिरी (Final) है और उन कमज़ोर रिवायतों को जो उस से मेल न खातीं रद्द कर देते तो शिर्क (बहुदेववाद) में लिप्त न होते क्यों कि कुर्आन में अक़ीदे की बातें बड़े ही स्पष्ट रूप से बयान की गई हैं और खुद कुर्आन ने इन को “बय्यिनात” अर्थात् स्पष्ट निशानियाँ कहा है।

31. मुराद कुर्आन है।

32. अर्थात् वे नहीं जानते कि दुनिया के बाद आखिरत भी है। उन्हीं ने दुनिया के खेल में अपने को ऐसा बन्द कर लिया है कि वे एक दूसरे जगत का जहाँ कर्म फल सामने आएँगे, कल्पना भी नहीं कर पाते। आखिरत (परलोक) की जो झलक कुर्आन इन्हें दिखा रहा है उस को देखने से इन की अन्जान निगाहें असमर्थ हैं। यही कारण है कि आज भी बड़े बड़े वैज्ञानिक और आधुनिक ज्ञान एवं टेकनॉलाजी के विशेषज्ञ आखिरत के बारे में बिलकुल कोरे सिद्ध हो रहे हैं।

33. अर्थात् उस ने इस कायनात को जिस का वह अकेला मालिक है, इस लिए पैदा किया है ताकि उस के न्याय तथा दया के गुणों की पूरी तरह से अभिव्यक्ति हो। अतः ज़रूरी है कि वह एक ऐसा दिन लाए जब मनुष्य अपने किये का फल पाये।

34. कबीरा अर्थात् बड़े बड़े गुनाहों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट ७९

35. खुली बेहयाई के कामों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २७७

36. असल में शब्द “लमम” प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ गुनाह के करीब होना। लिसानुल अरब में हैं :-

وَاللَّمَمُ :- مقاربة الذنب (لسان العرب ج १२ ص ५३९)

अर्थ :- “लमम” अर्थात् गुनाह के करीब होना ” (लिसानुल अरब जिल्द १२ पृष्ठ ५४९)

तात्पर्य ग़लती और छोटे छोटे कुसूर हैं जो अन्जाने और अनचाहे या भावावेग में हो जाएँ। आयत का मतलब यह है कि अच्छे कर्म करने वाले जिन को अल्लाह अच्छा बदला देगा वे लोग हैं जो बड़े गुनाहों और बेहयाई के कामों में लिप्त नहीं होते बल्कि अपने दामन को इन गुनाहों से पाक रखते हैं। यह तो संभव है कि असावधानी में गुनाह के कुछ छींटे उन पर पड़ जाएँ लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि वे गुनाहों की गन्दगी में लत पत हो जाएँ।

37. अर्थात् बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से बचने वालों से जो छोटे छोटे कुसूर हुए होंगे अल्लाह तआला उन के साथ सख्त मामला नहीं करेगा बल्कि उन को अपने क्षमा की छत्र छाया में ले लेगा कि उस की क्षमा का दामन बहुत विशाल है। यह ईश-भय रखने वाले मुत्तक़ियों के लिए बहुत बड़ी खुशख़बरी है।

यहाँ यह बात भी सामने रहे की कुर्आन और सुन्नत में स्पष्ट रूप से यह नहीं बतलाया गया है कि ये और ये गुनाह छोटे हैं, यह और बात है कि कहीं कोई इशारा निकलता हो और इस का स्पष्टीकरण न करना ही हिकमत का तक्राज़ा था वरना लोग उन को हल्का समझ कर गुनाहों में पड़े रहते अतः छोटे गुनाहों की बहस में पड़ना और उन का निर्धारण करना बुद्धिमानी की बात नहीं है।

38. अर्थात् मिट्टी से पैदा किया? तौरात में भी इस का वर्णन है :-

“और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और मनुष्य जीवन प्राणी बन गया।” (उत्पत्ति २:७)

39. अर्थात् जब तुम माताओं के पेट में जीवन के आरम्भिक अवस्था में थे, तुम्हें कोई होश नहीं था और एक अन्धेरी कोठरी में बन्द थे। उस समय तुम्हारी जो हालत थी उस को अल्लाह ही जानता था।

40. यह तंबीह है कि कोई व्यक्ति भी अपनी पवित्रता पर न इटलाए बल्कि अपने को दोषी समझते हुए विश्वास रखे कि अल्लाह ही उस के हाल से अच्छी तरह परिचित है। वह उस के

हाल से उस समय भी परिचित था जब कि मिट्टी से इन्सानों की पैदाइश की शुरुआत हुई थी और फिर वह गर्भवस्था में माँ के पेट में होता है तो वह स्वयं अपनी हालत को नहीं जानता फिर वह किस आधार पर अपने को निर्दोष और मासूम होने का दावा कर सकता है। अल्लाह ही उस के हाल से उस की पैदाइश के समय भी अच्छी तरह परिचित था। मनुष्य की कमजोरियों को भी वह अच्छी तरह जानता है और हर हर व्यक्ति की प्रत्यक्षित एवं आंतरिक, हार्दिक एवं व्यवहारिक परिस्थितियों से भी वह अच्छी तरह भिन्न है अतः उसे खूब मालूम है कि कौन मुत्तक़ी (ईश-भय रखने वाला) है और किस दर्जे का तक्क़वा उस के अन्दर है।

41. अर्थात् कुर्आन और पैग़म्बर की हिदायत को स्वीकार करने से उस ने मुँह मोड़ा ।

42. अर्थात् मोहताजों को कुछ दिया और फिर हाथ रोक लिया । यह ऐसे व्यक्ति का आचरण है जो अपना माल मिस्कीनों पर अपनी हैसियत के अनुसार खर्च नहीं करता बल्कि कुछ

ख़ैरात कर के पिंड छुड़ाने का काम करता है। अन्तर्मन की यह कंजूसी उसे ईमान लाने पर आमादा नहीं करती जो कि कुर्बानी और त्याग चाहता है।

मालूम हुआ कि कंजूसी एक मानसिक रोग है जो मनुष्य को तंग नज़री में लिप्त कर देता है और यह तंग नज़री हक़ स्वीकारने से रोकती है।

43. अर्थात् ऐसा व्यक्ति यह समझता है कि अगर आख़िरत बरपा हुई तो उस की दिखावटी धार्मिकता उस की मुक्ति का कारण होगी। ऐसे लोगों को इस बात की दअवत दी जा रही है कि वे खुलेमन से सोचें कि उन का यह दावा किस बुनियाद पर है। क्या उन्होंने ने ग़ैब (परोक्ष) में झाँक कर देखा है कि क्रियामत के दिन सफलता किस बात पर निर्भर करेगी । अगर ऐसा नहीं है तो ये सारे धार्मिक दावे खोखले हैं और हक़ (सत्य) वही है जो कुर्आन और उस का पैग़म्बर प्रस्तुत कर रहा है। क्योंकि कि पैग़म्बर जो कुछ प्रस्तुत कर रहा है वह उस वह्य के आधार पर है जो अल्लाह तआला उस पर उतार रहा है। और यह वह्य ही है जो ग़ैब के ज्ञान का साधन है।



क्या उसे उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची जो सहीफ़ों में है मूसा के। और इब्राहीम के जिस ने अपना कहना पूरा कर दिखाया। (सहीफ़ों की) यह बात कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि मनुष्य के लिए वही है जिस की उस ने कोशिश की। और यह कि उस की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी। फिर उस को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (अल-कुआन)

36. क्या उसे उन बातों की खबर नहीं पहुँची जो सहीफ़ों में है मूसा के।⁴⁴

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى

37. और इब्राहीम के⁴⁵ जिस ने अपना कहना पूरा कर दिखाया।⁴⁶

وَأِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّى

38. (सहीफ़ों की) यह बात कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।⁴⁷

أَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى

39. और यह कि मनुष्य के लिए वही है जिस की उस ने कोशिश की।⁴⁸

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى

40. और यह कि उस की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी।⁴⁹

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَى

41. फिर उस को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوَّلَى

42. और यह कि आखिरकार पहुँचना तुम्हारे रब ही के पास है।⁵⁰

وَأَنَّ إِلَى رَبِّكَ الْمُنْتَهَى

43. और यह कि वही हँसाता और रूलाता है।⁵¹

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى

44. और वही मारता और ज़िन्दा करता है।⁵²

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا

45. और वही है जिस ने मर्द और औरत का जोड़ा पैदा किया।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى

46. एक बूँद से जब वह डाली जाती है।⁵³

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى

47. और यह कि दूसरी बार पैदा करना भी उसी के ज़िम्मे है।⁵⁴

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخَرَى

48. और यह कि उसी ने सम्पन्न किया और माल बख़्शा।⁵⁵

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ

49. और यह कि वही शिअ्रा (तारे) का रब है।⁵⁶

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ

50. और यह कि उसी ने अगले आद को विनष्ट किया।⁵⁷

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ

44. मूसा के सहीफो से तात्पर्य तौरात है।

45. हजरत इब्राहीम के सहीफे प्राचीनतम सहीफे हैं जिन का कुआन ने वर्णन किया है। इन से पहले जो नबी गुजरे हैं उन पर वह्य तो जरूर नाज़िल होती रही और उन्होंने ने अपनी शिक्षाएँ भी अपने मानने वालों में छोड़ी किन्तु सहीफे के तौर पर उन को कोई चीज़ दी गई थी इस का वर्णन कुआन में नहीं मिलता। इस से स्पष्ट होता है कि हजरत इब्राहीम के सहीफों ही को प्राथमिकता प्राप्त रही है। इस से धार्मिक लोगों के उस दावे का खण्डन होता है जो मुकद्दस किताबों को हजरत इब्राहीम से भी पहले की आसमानी किताबें होने का दावा करते हैं।

हजरत इब्राहीम के सहीफे तो अब बाक़ी नहीं रहे और न तौरात अपने मूल रूप में बाक़ी है। किन्तु कुआन ने उन की मौलिक शिक्षाओं को अपने अन्दर सुरक्षित कर लिया। आगे उन शिक्षाओं का वर्णन बहुत ही आकर्षक एवं प्यारी शैली में किया गया है जिस को पढ़ते हुए ऐसा महसूस होता है कि जैसे इब्राहीम और मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफे ही पढ़ रहे हैं।

46. अर्थात् जो क्रौल-व-क्रार (प्रतिज्ञा) इब्राहीम ने अपने खब से किया था वह उस ने उत्तम ढंग से पूरा किया। उन की असंख्य कुर्बानियाँ उन की वफ़ादारी का सबूत हैं।

47. अर्थात् क्रियामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुनाहों का बोझ उठाना होगा। उस रोज़ कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा। लोग इस भ्रम में न रहें कि वे जिन धार्मिक पेशवाओं और लीडरों के पीछे चल रहे हैं वे अगर उन्हें गुमराह कर रहे हैं तो इस गुमराही का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा और उन के अनुयायी लोग सज़ा से बच जाएंगे। नहीं बल्कि उन गुमराह पेशवाओं और लीडरों के पीछे चलने वाले अपनी गुमराही के ज़िम्मेदार होंगे और उस की सज़ा पायेंगे क्यों कि उन को अल्लाह तआला ने आँखें भी दी थीं, बुद्धि भी दी थी और उन पर हिदायत की राह भी स्पष्ट कर दी थी। फिर वे क्यों अंधे बन कर गुमराही की तरफ बुलाने वालों के पीछे चलते रहे।

48. यह आयत इस बारे में प्रमाणिक सबूत है कि मनुष्य को उसी काम का बदला मिलेगा जो उस ने किया होगा। किसी दूसरे के कामों का बदला वह नहीं पा सकता। सवाब (पुण्य) उस व्यक्ति को मिलेगा जिस ने अच्छे काम किये होंगे और उस के प्रभाव जहाँ तक भी पहुँचेंगे उन सब पर वह इनाम का अधिकारी ठहरेगा। अतः एवं दूसरी जगह इर्शाद हुआ है :-

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا

अर्थ :- “जो अच्छी बात की सिफ़ारिश करेगा वह उस में से एक हिस्सा पायेगा।” (निसा-८५)

और हदीस में आता है :-

مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلُ أُجُورِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا. (مسلم کتاب العلم)

अर्थ :- “जिस ने लोगों को हिदायत की तरफ बुलाया तो उसे उन लोगों की तरह (अच्छा) बदला मिलेगा जो उस का अनुपालन करेंगे, उन के बदले में किसी कमी के बग़ैर” (मुस्लिम-किताबुल इल्म)

और एक हदीस में स्पष्ट रूप से कहा गया है :-

إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ وَوَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُو لَهُ. (مسلم کتاب الوصية)

अर्थ :- “जब मनुष्य मर जाता है तो उस का अमल रुक जाता है सिवाय तीन चीज़ों के। एक जारी रहने वाला सदका, दूसरे इल्म जिस से लोग लाभ उठाएँ और तीसरे नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करे।” (मुस्लिम किताबुल वसीया)

ये तीनों चीज़ें वे हैं जिस में मनुष्य के अपने कर्मों का हाथ है। जारी रहने वाला सदका उस का अपना अमल है। ज्ञान विज्ञान की सेवाएँ जिन से लोग उस के मरने के बाद लाभ उठाएँ उसी के प्रयासों का फल है और नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करती है उसी के पढ़ाएँ और समझाएँ हुए हैं। इस के अलावा किसी और सूरत में वह कैसे अच्छे बदले का अधिकारी होगा।

कुआन की इस उसूली शिक्षा के बावजूद जो बिलकुल स्पष्ट और खुली हुई है और जिस के सिलसिले में इब्राहीम और मूसा के सहीफों का भी हवाला दिया गया है मुसलमानों में सवाब स्थानांतरित करने (ईसाले-सवाब) की रस्म जो सरासर इस उसूली शिक्षा के विरुद्ध है चल पड़ी है और दावा यह किया जाता है कि कोई व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों का सवाब किसी मुसलमान को बख़्श सकता है। मगर यह दावा बिना दलील के है क्यों कि ऐसी कोई बात न कुआन में कही गई है और न हदीस में। जिन हदीसों से तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं उन से ईसाले-सवाब हरगिज़ साबित नहीं होता बल्कि जो बात साबित होती है वह यह है कि मरने वाले के वारिसों को ऐसे कामों को पूरा करने की इजाज़त दी गई जिस में उस की नीयत और अमल का दखल था। जैसे वसीयत, नज़्र आदी। ये ईसाले-सवाब अर्थात् कर्म फल का स्थानांतरण नहीं बल्कि वकालत है उस व्यक्ति की तरफ़ से जो एक फ़र्ज (अनिवार्य कर्तव्य) को अदा करने में असमर्थ रहा। वरना अगर सवाब के स्थानांतरण को अपने आप में जायज़ करार दिया जाए तो फिर ज़िन्दों के लिए भी ईसाले-सवाब

जायज ठहरेगा।

आश्चर्य है कि तफ़हीमुल कुर्आन के संकलन कर्ता ने भी ईसाले सवाब के सिलसिले में अलग अलग बातें कही हैं। एक तरफ़ विद्वान मुफ़स्सिर आयत की यह तफ़सीर करते हैं कि :-

“इस इर्शाद से भी तीन अहम उसूल निकलते हैं। एक यह कि हर शख्स जो कुछ भी पायेगा अपने अमल का फल पाएगा। दूसरे यह कि एक शख्स के अमल का फल दूसरा नहीं पा सकता, इल्ला यह कि अमल में उस का अपना कोई हिस्सा हो। तीसरे यह कि कोई शख्स सअी व अमल (प्रयासों) के बग़ैर कुछ नहीं पा सकता।” (तफ़हीमुल कुर्आन जिल्द ५ पृष्ठ २१५)

और दूसरी तरफ़ वे कुछ हदीसों को तर्क स्वरूप प्रस्तुत कर के ईसाले-सवाब को जायज ठहराते हैं। हम बात को लंबी खींचने से बचते हुए यहाँ संक्षिप्त रूप से उन की पेश की गई हदीसों का जायजा (समीक्षा) प्रस्तुत करते हैं।

1) बुखारी मुस्लिम आदि में उल्लिखित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो मेंढे ले कर एक अपनी तरफ़ से और अपने घर वालों की तरफ़ से कुर्बान किया और दूसरा अपनी उम्मत की तरफ़ से। मगर इस में ईसाले-सवाब के लिए कोई तर्क नहीं है। क्यों कि पूरी उम्मत की तरफ़ से मेंढा कुर्बान करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ख़ास था। और उम्मत के वली होने की हैसियत से आपने यह कुर्बानी पेश की थी जो जिन्दों की तरफ़ से भी थी और आगे पैदा होने वाले उम्मतियों की तरफ़ से भी। अगर इस को ईसाले-सवाब अर्थात् सवाब स्थानांतरण के लिए दलील बनाया जाए तो फिर असंख्य जिन्दा और मुर्दा तथा आगे पैदा होने वाले मुसलमानों की तरफ़ से एक मेंढे (दुंबे) की कुर्बानी वैध ठहरेगी जब कि इस का क़ायल कोई भी नहीं।

2) बुखारी, मुस्लिम आदि में रिवायत है कि एक व्यक्ति ने निवेदन किया कि मेरी माँ का अकस्मात निधन हो गया है। मेरा ख़याल है कि अगर उन्हें बात करने का मौक़ा मिलता तो वह ज़रूर सदक़ा करने के लिए कहतीं। अब अगर मैं उन की तरफ़ से सदक़ा करूँ तो क्या उन के लिए बदला है? फ़रमाया हाँ।

इस हदीस के अल्फ़ाज़ खुद बता रहे हैं कि उस व्यक्ति की माँ को अगर मौक़ा मिलता तो वह अपने माल में से सदक़ा करने की वसीयत करतीं। और चूँकि इस का मौक़ा नहीं मिला इस लिए उस की नीयत को उस की वसीयत समझकर सदक़ा करने की अनुमति दी गई इस से जिस बात की वैधता उभर कर सामने आती है वह यह कि अगर किसी का अकस्मात निधन हो गया हो और अन्दाज़ा यह हो कि अगर उसे मौक़ा मिलता तो वह अपने माल में से सदक़ा करने की वसीयत करता तो उस के उत्तराधिकारी उस की ओर से सदक़ा कर सकते हैं। क्यों कि इस

में मरने वाले की नीयत और उस का छोड़ा हुआ माल दोनों शामिल हैं। मगर इस से ईसाले-सवाब (सवाब स्थानांतरित करने) का सबूत नहीं मिलता।

3) मुसनद, अहमद में अब्दुल्लाह बिन उमरू बिन अल्आस से रिवायत है कि उन के दादा आस बिन वायल ने अज्ञानता काल में सौ ऊँट ज़बह करने की नज़्र मानी थी। उन के चचा हिशाम बिन अल्-आस ने अपने हिस्सा के पचास ऊँट ज़बह कर दिए। हज़रत उमरू बिन अल्-आस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मैं क्या करूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया अगर तुम्हारे बाप ने तौहीद का इक़रार कर लिया था तो तुम उन की तरफ़ से रोज़ा रखो या सदक़ा करो वह उन के लिए लाभदायक होगा।

यह हदीस भी यदि प्रमाणिकता की शर्त पूरी करती है तो नज़्र से तअल्लुक़ रखती है और इस को लाभ यही है कि बेटा बाप के मरने पर उस की नज़्र को पूरा कर सकता है, अगर वह तौहीद पर मरा था इस में पहली बात तो नज़्र मानने वाले की नीयत का दख़ल है। दूसरे इस नज़्र को उस का वारिस पूरा कर रहा है जब कि वह अपने मर जाने के कारण अपनी नज़्र को पूरा न कर सका। इस का ईसाले-सवाब से क्या जोड़? फिर यह हदीस प्रमाणिकता की दृष्टि से भी कमज़ोर है। मुसनद अहमद में (जिल्द २ पृष्ठ १८२) यह रिवायत अम्र बिन शुऐब से है और अम्र बिन शुऐब के सिक़ा (विश्वसनीय) होने के बारे में मुहद्दिसीन में मतभेद है। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने इन के बारे में कई बातें लिखी हैं। इब्ने मुईन कहते हैं वे अपने आप में तो सिक़ा (विश्वसनीय) हैं लेकिन जब वे अपने बाप और उन के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं तो वह तार्किक (लायक़े-हुज्जत) नहीं होती और न मुत्तसिल (मुतवातिर) होती है बल्कि कमज़ोर होती है जो मुर्सल की तरह से है। (तहज़ीबुतहज़ीब जिल्द ८ पृष्ठ ५४) इस लिए इस हदीस से तर्क प्रस्तुत करना सही नहीं।

4) मुसनद अहमद, अबूदाऊद, नसई और इब्ने माजा में हज़रत हसन बसरी की रिवायत है कि हज़रत सअद बिन इबादह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरी माँ का देहांत हो गया है। क्या मैं उस की तरफ़ से सदक़ा करूँ? आप ने फ़रमाया हाँ।

यह रिवायत हसन बसरी की है और हसन बसरी सअद बिन इबादह की मृत्यु के बाद पैदा हुए हैं इस लिए बीच का एक उल्लेखकर्ता छूट गया है। अतः यह हदीस मुर्सल है जो हुज्जत (स्पष्ट तर्क) नहीं बन सकती। अलबत्ता सही बुखारी में हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मेरी माँ का अचानक

देहांत हो गया है और मैं समझता हूँ कि अगर वह बोलती तो जरूर सदका (दान) करती। अब यदि मैं उस की ओर से सदका करूँ तो क्या उसे अन्न (बदला) मिलेगा? आपने फ़रमाया हाँ। (बुखारी किताबुलजनाइज़)

इस हदीस पर इमाम बुखारी ने

مَوْتُ الْفَجَاءَةِ بَغْتَةً

अर्थ:- (अचानक मौत) का बाब बाँधा है न कि एसाले सवाब का। इसी तरह उन्होंने ने किताबुल वसाया में बाब बाँधा है।

مَا يُسْتَحَبُّ لِمَنْ يُتَوَفَّى فَجَاءًا

يَتَصَدَّقُوا عَنْهُ وَقَضَاءِ النُّذُورِ عَنِ الْمَيِّتِ

अर्थ:- “जिस का अचानक निधन हो गया उस की तरफ़ से सदका करना और मरने वाले की तरफ़ से नज़रें पूरी करना मुस्तहब (पसन्दीदा) है।”

इस अध्याय के अन्तर्गत इमाम बुखारी ने दो हदीसों उद्धृत की हैं। एक तो वही हज़रत आइशा की हदीस है जिस का वर्णन ऊपर हुआ और दूसरी इब्ने अब्बास से कि :-

“सअद बिन उबादह ने रसूलुल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़तवा पूछा कि मेरी माँ का देहान्त हो गया और उस के ज़िम्मे नज़्र है। आप ने फ़रमाया तुम उस की तरफ़ से नज़्र पूरी करो।”

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इमाम बुखारी ने इन हदीसों पर ईसाले-सवाब की बातें नहीं कीं बल्कि मैय्यत की तरफ़ से नज़्र आदि पूरी करने की बातें कहीं। सार यह कि इन हदीसों को ईसाले-सवाब के पक्ष में पेश नहीं किया जा सकता।

5) दारक्रिन्नी में हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत कि है जिस में वे बयान करते हैं कि हुज़ूर ने फ़रमाया जिस व्यक्ति का क़ब्रस्तान पर गुजर हो और वह ग़यारह बार “कुल हुवल्लाहु अहद” पढ़ कर उस का अन्न मरने वालों को बख़्श दे तो जितने मुर्दे हैं उतना ही अन्न प्रदान कर दिया जाएगा।

यह हदीस दारक्रिन्नी में मुझ को कहीं नहीं मिली और अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी ने भी सिलसिलातुल अहादीस अज़-ज़ीअफ़ा में हाफ़िज़ सखावी का यह बयान उद्धृत किया है कि “दार क्रिन्नी की सुन्नत में इस का कोई वजूद नहीं है।”

अल्लामा अलबानी कहते हैं कि वैलमी और अबू यअला ने इसे रिवायत किया है। लेकिन यह हदीस गढ़ी हुई है। इस का एक उल्लेखकर्ता अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन आमिर है जिस के बारे में “मीज़ानुल एतिदाल” में है कि वह हदीसों गढ़ लिया करता था। सुयूती ने भी इसे गढ़ी हुई बताया है और हाफ़िज़

सखावी ने लिखा है कि इस के उल्लेखकर्ता अब्दुल्लाह और उस के वालिद दोनों झूठे हैं और अगर इस हदीस में कोई असल होती तो वह इस विवादित मसले में हुज्जत होती और कोई मतभेद बाक़ी न रहता। (सिलसिलातुल अहादीस अज़-ज़ीअफ़ा लिल अलबानी जिल्द ३ पृष्ठ ४५२)

अल्लाह तआला मज़िफ़रत फ़रमाए मौलाना मौदूदी की, उन्होंने ने ईसाले-सवाब (सवाब स्थानांतरित करने) को सिद्ध करने के लिए एक गढ़ी हुई हदीस अपनी तफ़सीर में नक्ल की और उस की प्रामाणिकता के बारे में अधिक जाँच पड़ताल करने का कष्ट न उठाया। ईसाले-सवाब के बारे में उन्होंने सूरह बक्ररह आयत २८६ की तफ़सीर करते हुए लिखा था :-

बहरहाल यह मुमकिन नहीं है कि जिस भलाई या जिस बुराई में आदमी की नीयत और सअी-व-अमल (प्रयासों) का कोई हिस्सा न हो उस की जज़ा या सज़ा उसे मिल जाए। मुकाफ़ातेअमल (कर्मफल) कोई क़ाबिले इन्तिक़ाल (स्थानांतरित योग्य) चीज़ नहीं है। (तफ़हीमुल कुर्आन जिल्द १ पृष्ठ २२४) किन्तु सूरह नज़्म की तफ़सीर में उन्होंने ने बड़ी उदारता से ईसाले-सवाब को जायज़ बताया।

ईसाले-सवाब की एक सूरत “कुर्आन ख़वानी” है जिस का प्रचलन आजकल बहुत ही सामान्य है कुर्आन की सीख हासिल करने और उस की याददेहानी तथा उस की हिदायत से लाभ उठाने से मुसलमानों को उतनी दिलचस्पी नहीं है जितनी कि कुर्आन ख़वानी की मजालिस का आयोजन कर के मुर्दों को बख़्शवाने से है। काश कि वे इस रस्मी दीनदारी को छोड़ कर इस्लाम की सच्चे मन से पैरवी करते।

“ईसाले-सवाब” पर कुछ और बहस के लिए देखिए सूरह “हा-मीम अस्सज्दा” नोट ७१

49. मनुष्य के लिए यह संभव हो गया है कि वह अपनी या किसी की गतिविधियों को वीडियो कैसेट में सुरक्षित कर ले और फिर उसे देखे तो अल्लाह तआला ने तो इस से अधिक अच्छे और उत्तम तरीक़े पर प्रत्येक व्यक्ति की गतिविधियों को फ़िल्माने की तैयारी की होगी और क्रियामत के दिन ज़रूर उस के कर्मों की जाँच होगी।

50. अर्थात् मनुष्य की आखिरी मन्ज़िल अल्लाह के पास पहुँचना है। इस लिए मनुष्य को इसी की चिन्ता करनी चाहिए। इस से उस बहुदेववादी धारणा का खण्डन होता है कि मनुष्य मरने के बाद अल्लाह के अस्तित्व में विलीन हो जाता है। अल्लाह इस से पाक है कि उस के अन्दर कोई चीज़ जा मिले।

51. अल्लाह तआला ने पशु की तुलना में मनुष्य को यह प्रमुखता प्रदान की कि वह हँसता भी है और रोता भी है वह एक विवेक रखने वाली सृष्टि है। इस लिए जब वह ख़ुश होता है तो

हँसने लगता है और जब वह शोक से भरा होता है तो उस की आँखें भर जाती हैं। यह सूझ बूझ अल्लाह की ही प्रदान की हुई है किसी अन्य की नहीं। परन्तु देवी देवताओं को मानने वालों की धारणा बहुत ही विचित्र है। निम्न लिखित उदाहरण से उन की विकृत धारणा का अन्दाज़ा होगा :-

There is a Deva for every organ for every function, for every limb and for every disease. Infact as we have said the whole of the body will be found to have been exhaustively partitioned among the Devas." (Out lines of Vedhta by R. Krishna swamy Aiyar chetna Publication Bombay. P.152)

अर्थात् :- "उस के हर अंग, उस के हर कर्म, हर बाजू और बीमारी के लिए एक अलग देव है और इन देवों के बीच पूरा शरीर बँटा हुआ है।"

سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ-

"अल्लाह पाक है इस से जो ये बहुदेववादी करते और कहते हैं।"

52. ज़िन्दगी और मौत उसी के हाथ में है। इन्सान ऐसा बेबस है कि

अपनी खुशी न आए न अपनी खुशी चले

फिर वह घमंड किस बात पर करता है।

53. अर्थात् मनुष्य केवल एक बूँद गर्भ में टपकाने का कार्य करता है और वह अल्लाह ही है जो उस पानी की तुच्छ बूँद से मनुष्य जैसी सर्वच्च सृष्टि उत्पन्न करता है।

54. अर्थात् मनुष्य को दोबारा पैदा करना अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले रखा है अतः वह निश्चित रूप से अपना वादा पूरा करेगा।

55. अर्थात् मोहताजी की दशा से निकालने वाला भी वही है और धन संसाधन प्रदान करने वाला भी वही।

56. शिअ्रा एक सफेद चमकदार सितारे का नाम है जिसे अंग्रेज़ी में (Sirius) और हिन्दी में लुब्धक कहते हैं। सितारों की पूजा करने वाली जातियाँ अपनी विकृत धारणा के चलते उस की पूजा करती चली आ रही थीं। और अरब के कुछ बहुदेववादी कबीले भी उस की पूजा करते थे। इस लिए कुर्आन ने विशेष रूप से इस का वर्णन किया कि यह सितारा खब नहीं है कि इसे पूज्य बना लिया जाए बल्कि उस का ख भी अल्लाह ही है और वही सबका वास्तविक पूज्य है। मूसा और इब्राहीम के सहीफों में भी यही हक़ीक़त बयान की गई थी।

57. तात्पर्य हूद की जाति है जो अल्लाह के प्रकोप द्वारा विनष्ट हुई।

(व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहकाफ़ नोट ४०, ४१)



यह ख़बरदार करने वाला है उन ख़बरदार करने वालों में से जो पहले आ चुके हैं। आने वाली घड़ी क़रीब आ लगी है। अल्लाह के सिवा इस को ज़ाहिर करने वाला कोई नहीं। क्या इस बात पर तुम आश्चर्य करते हो? हँसते हो और रोते नहीं ? और ग़फ़लत में पड़े हो। तो (सुनो) अल्लाह को सज्दा करो और उस की इबादत करो। (अल-कुआन)

51. और समूद को कि किसी को बाक़ी न छोड़ा।⁵⁸

وَتَشُودُ أَفْئِدَةً بَاقِيَةً ۝٥٨

52. और इन से पहले नूह की क़ौम को।⁵⁹ वे अत्यंत ज़ालिम और उद्दण्ड थे।

وَقَوْمُ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَى ۝٥٩

53. और उलटी हुई बस्तियों को भी गिरा दिया।⁶⁰

وَالْبُؤْتُفِكَاهُوهِي ۝٦٠

54. तो उन पर छा दिया, जो कुछ कि छा दिया।⁶¹

فَغَشَّاهَا مَا عَشِيَ ۝٦١

55. तो अपने रब की किन किन निशानियों में तुम शक करोगे?⁶²

فَبِأَيِّ آيَاتِ رَبِّكَ تَتَمَارَى ۝٦٢

56. यह ख़बरदार करने वाला है उन ख़बरदार करने वालों में से जो पहले आ चुके हैं।⁶³

هَذَا نَذِيرٌ مِنَ النُّذُرِ الْأُولَى ۝٦٣

57. आने वाली घड़ी करीब आ लगी है।⁶⁴

أَبْرَزَتِ الْأَرْزَقَةُ ۝٦٤

58. अल्लाह के सिवा इस को ज़ाहिर करने वाला कोई नहीं।⁶⁵

لَيْسَ لَهُمَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝٦٥

59. क्या इस बात पर तुम आश्चर्य करते हो?⁶⁶

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝٦٦

60. हँसते हो और रोते नहीं ?⁶⁷

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۝٦٧

61. और ग़फ़लत में पड़े हो।⁶⁸

وَأَنْتُمْ سَاهُونَ ۝٦٨

62. तो (सुनो) अल्लाह को सज्दा करो और उस की इबादत करो।⁶⁹

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۝٦٩

58. समूद की तबाही का वर्णन विस्तार से सूरह हूद और अन्य कई सूरतों में हुआ है।

59. नूह की जाति के विनाश का भी वर्णन सूरह हूद और अन्य कई सूरतों में गुजर चुका है।

60. तात्पर्य लूत की जाति की बस्तियाँ हैं जो ज़लज़ले के द्वारा उलट दी गई थीं और ज़मीन के अन्दरूनी धमाके ने जो लावे की सूरत में फट पड़ा था बस्ती को ऊपर उठाकर नीचे गिरा दिया। अब यहाँ समुद्र है जिसे मृत सागर कहते हैं।

61. अर्थात् पके हुए पत्थरों की बारिश हुई। देखिए सूरह हूद नोट ११९

62. “आला” ءالا का अनुवाद आम तौर से नेमतें किया जाता है परन्तु ऊपर जातियों के विनाश का वर्णन हुआ है इस लिए यह अनुवाद यहाँ उचित नहीं। हम ने अरबी शायरी में इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल और जिस संदर्भ में वह इस्तेमाल किया गया उसे ध्यान में रखते हुए इस का अनुवाद “निशानियाँ” किया है। इस शब्द की अतिरिक्त व्याख्या सूरह रहमान में इन्शाअल्लाह की जाएगी। इस आयत पर हज़रत मूसा और हज़रत इब्राहीम के सहीफों का बयान समाप्त हुआ।

63. अर्थात् यह रसूल भी उन रसूलों ही की तरह है जो पहले गुजर चुके, ख़बरदार करने वाला है और उन “नज़ीरो” (ख़बरदार करने वालों) के ही समूह से सम्बन्ध रखता है।

64. मुराद क्रियामत की घड़ी है जिस के बारे में कोई यह न समझे कि यह घड़ी अभी बहुत दूर है। नहीं बल्कि उस का समय करीब आ लगा है और दिन प्रतिदिन और निकट होता जा रहा है। दुनिया के मौजूदा हालात तो ऐसे हैं कि हर तरफ़ से क्रियामत का आलर्म (Alarm) सुनाई दे रहा है।

65. अर्थात् क्रियामत उसी समय प्रकट होगी जब कि अल्लाह उस को सामने लाना चाहे। उस के सिवा किसी के बस

की बात नहीं कि उस को ला सके।

66. अर्थात् क्रियामत के घटित होने पर तुम्हें आश्चर्य हो रहा है। आश्चर्य तो इस का इन्कार करने वालों पर होना चाहिए क्योंकि क्रियामत का घटित होना उचित भी है और न्याय एवं इन्साफ़ का तक्राज़ा भी।

67. अर्थात् क्रियामत की ख़बर सुनकर तुम हँसी दिल्लगी करते हो हालाँकि तुम्हें इस पर रोना चाहिए कि मालूम नहीं उस रोज़ तुम्हारी क्या हालत होगी।

कुर्आन दिलों में करुणा भरता है और विशेष रूप से वह क्रियामत के जिस हौलनाक हालात से आगाह करता है उन पर अगर इन्सान कान धरे तो उस के अन्दर एक विचलन तथा व्याकुलता उत्पन्न हो और अपने बचाव की चिन्ता में उस की आँखों से बेसाख़्ता आँसू जारी हो जाएँ।

68. अर्थात् तुम्हारी ग़फ़लत की भी इन्तिहा है कि दिलों को दहला देने वाली बातों को सुनकर भी तुम टस से मस नहीं होते।

69. अर्थात् होश के नाख़ुन लो और अल्लाह के समक्ष दिल से झुको। सज़्दे में जा पड़ो, नत मस्तक हो जाओ और उस की उपासना करो केवल उसी की उपासना। इन्ज़िल में भी यह बात बयान हुई है :-

“यीशु ने उसे उत्तर दिया, लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर।” (लूका ४:८)

यह आयत सज़्दे की आयत है इस लिए इस की तिलावत पर सज़्दा करना चाहिए। बुख़ारी की रिवायत है “नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह नज़्म की क्रिअत (तिलावत) पर सज़्दा किया और आप के साथ मुसलमानों, बहुदेववादियों, जिन्नों और इन्सानों ने भी सज़्दा किया।”

(बुख़ारी किताबुतत्तप्सीर)





५४. सूरह अल-क्रमर

नाम :- पहली आयत में क्रमर (चाँद) के फट जाने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-क्रमर है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है। हज़रत आइशा का बयान है कि आयत

بل الساعة موعدهم والساعة ادهى وامر

अर्थ : “बल्कि इन से क्रियामत का वादा है और क्रियामत बड़ी सख्त और बड़ी कड़वी है”। (आयत - ४६) नाज़िल हुई तो मैं कमसिन लड़की थी और खेल रही थी। (बुखारी किताबुत्तफ़सीर) इस से अन्दाज़ा होता है कि इस सूरह का अवतरण सन १० नबवी के लगभग ज़माने में हुआ होगा।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत और अल्लाह के अज़ाब से ख़बरदार करना और रसूल को झुठलाने वालों को डराना और

सचेत करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में काफ़िरों को झंझोड़ा गया है कि अब जब कि क्रियामत की निशानी सामने आ चुकी और वह ऐतिहासिक घटनाएँ भी जिन में इब्रत का पाठ है उन के ज्ञान में आ चुके हैं तो वे अपने कुफ़्र पर किस तरह जमे हुए हैं।

आयत ६ से ८ में स्पष्ट किया गया है कि ये कट्टर काफ़िर उसी समय होश में आएँगे जब क्रियामत सामने आ जाएगी।

आयत ९ से ४२ में संक्षेप में उन जातियों का अन्जाम बयान किया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया था कि वे किस तरह दुनिया ही में अज़ाब (प्रकोप) की चपेट में आ गई।

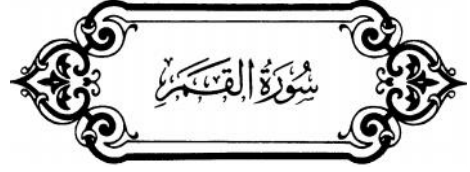
आयत ४३ से ५३ में कुरैश से सम्बोधन कर के उन्हें क्रियामत की कड़वाहटों से ख़बरदार किया गया है।

आयत ५४ और ५५ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में मुत्तकियों को जन्नत की खुशख़बरी दी गई है।

५४. सूरह अल-क्रमर

आयतें : ५५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्रियामत की घड़ी करीब आ गई और चाँद फट गया ।¹

إِقْرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

2. और इन लोगों का हाल यह है कि कोई निशानी देख लेते हैं तो उस से विमुखता बरतते हैं और कहते हैं यह तो जादू है जो चला आ रहा है।²

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسَمَّرٌ ②

3. इन्होंने ने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले। और हर मामले के लिए एक समय निर्धारित है ।³

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ ③

4. इन के पास उन ऐतिहासिक घटनाओं की खबरें पहुँच चुकी हैं जिन में झंझोड़ने के लिए काफ़ी सामान मौजूद है।⁴

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ④

5. बेहद असरकारक हिकमत, किन्तु तंबीहें इन पर कारगर नहीं हो रही हैं।⁵

حِكْمَةٌ بِالْغَةِ فَمَا تَغْنِ التَّنْذِيرُ ⑤

6. तो इन से रूख फेर लो ⁶ जिस दिन पुकारने वाला उन्हें एक बड़ी ही अप्रिय चीज़ की तरफ़ पुकारेगा।⁷

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَى شَيْءٍ نُّكْرٍ ⑥

7. उन की निगाहें अपमान से झुकी हुई होंगी ⁸ और इस तरह क़ब्रों से निकलेंगे कि जैसे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं।⁹

حُشَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ

مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ⑦

8. पुकारने वाले की तरफ़ सहमे हुए दौड़ रहे होंगे।¹⁰ उस समय काफ़िर कहेंगे, यह बड़ा कठिन दिन है।¹¹

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧

1. चाँद के फटने की घटना जो मक्का से करीब मिना में लगभग ८ नववी में घटी, कुर्आन और सही हदीस दोनों से साबित है और सभी मुफस्सरीन इस पर एक मत हैं। कुर्आन की यह आयत इस बारे में बिलकुल खुली और स्पष्ट है कि चाँद फट गया और जो इस बात का प्रतीक है कि क्रियामत करीब आ लगी है और यह चिन्ह क्रियामत का चिन्ह बन कर प्रकट हुआ है। किन्तु इस खुली और स्पष्ट निशानी को देख कर काफ़िरों ने सत्य स्वीकारने से विमुखता बरती और सच्चाई की व्याख्या इस तरह की कि यह इस व्यक्ति (पैगम्बर) का जादू है जिस ने हमारी नज़रें बाँध दी हैं और यह जादू हमेशा से चला आ रहा है।

और जहाँ तक सही हदीस की बात है, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और दूसरी हदीस की किताबों में बहुतेरी रिवायतें मौजूद हैं जो इस घटना की पुष्टि करती हैं। बुखारी की हदीस है :-

عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: اِنْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَرَفَّتَيْنِ فِرْقَتَيْنِ فَوْقَ الْجَبَلِ وَفِرْقَةٌ دُونَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ اِشْهَدُوا. (صحیح البخاری کتاب النّبی)

अर्थ : “हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया एक पहाड़ के ऊपर रहा और दूसरा उस के पीछे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, गवाह रहो।” (सही बुखारी किताबुत्तफ़सीर)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद इस के चश्मदीद गवाह हैं। इस तरह इस घटना को हज़रत अली, हज़रत हुज़ैफ़ा और जुबैर बिन मुतइम ने बयान किया है जिन्होंने इस घटना को अपनी आँखों से देखा था। अन्य सहाबा के उल्लेखों से भी जो यद्यपि उस के चश्मदीद गवाह नहीं हैं किन्तु उन के बयान पर संदेह करने का भी कोई कारण नहीं है, इस घटना का अनुमोदन होता है।

ध्यान रहे कि अल्लाह तआला जब किसी रसूल को भेजता है तो ऐसी निशानियाँ प्रकट होती हैं जो उस की सत्यता पर तर्क प्रस्तुत करने वाली होती हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति के ज़माने में आसमान पर विशेष सुरक्षा प्रबन्ध और शहाब साक्रिब की बाहुल्यता की व्यवस्था की गई जिस का वर्णन सूरह जिन्न में जिन्नों की जबानी हुआ है।

इस लिए यह कोई विचित्र बात नहीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में चाँद के दो टुकड़े हो जाने की घटना घटी। इन्कार करने वाले लोग क्रियामत को असंभव समझते थे अल्लाह तआला ने घड़ी भर के लिए चाँद के दो

टुकड़े कर के उन्हें क्रियामत की एक झलक दिखा दी और यह बात स्पष्ट हो गई कि जब चाँद फट सकता है तो आसमान के तारे भी तितर बितर हो सकते हैं। इस लिए क्रियामत के इन्कार का कोई कारण नहीं, और चाँद के फट जाने से इस का भाग करीब तर हो गया। मालूम होता है कि क्रियामत की हौलनाकियों का आरम्भ भी चाँद के ग्रहण से होगा। सूरह क्रियामा में है :-

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَإْدَابِرِقْ
الْبَصْرُ وَخَسَفَ الْقَمَرُ. (القيامة: ८-९)

अर्थ :- “मनुष्य पूछता है क्रियामत का दिन कब होगा? तो जब आँखें चूंधिया जाएंगी और चाँद ग्रहण ग्रस्त होगा।” (अल-क्रियामा: आयत ६ से ८)

जहाँ तक चाँद की सतह की बात है वैज्ञानिकों का कहना है कि उस पर बहुतेरे ज्वालामुखी गढ़े (Craters) मौजूद हैं और चाँद की सतह की जो तस्वीरें सामने आई हैं उन से भी यह बात ज़ाहिर होती है इस लिए असम्भव नहीं कि किसी ज्वालामुखी के धमाके के फ़लस्वरूप चाँद के दो टुकड़े हो गए हों और फिर गुरुत्वाकर्षण नियम द्वारा दोनों को फ़ौरन मिला दिया हो।

यहाँ यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि चाँद के फट जाने की यह घटना अल्लाह तआला ने मोज़े (चमत्कारिक) से दिखाई थी और जो चीज़ मोज़े के रूप में होती है वह बिलकुल असाधारण होती है अर्थात् वह साधारण भौतिक नियमों के अनुसार नहीं होती। मिसाल के तौर पर बिल्लीस का तख़्त हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की आँख झपकने से पहले उन के दरबार में पहुँच गया था। (सूरह नमल आयत ४०) जब कि उस को अन्तरिक्ष में उड़ते हुए किसी ने नहीं देखा। हम नहीं कह सकते कि इस की सूरत क्या रही होगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी साँप बन जाया करती थी, मगर उस साँप ने किसी को काटा नहीं अलबत्ता जादूगरों के मायाजाल को वह निगल गया। और साँप की तो एक नस्ल होती है परन्तु लाठी के साँप बन जाने और उस साँप के फिर लाठी बन जाने की घटना स्पष्ट है भौतिक नियमों (Physical Laws) से अलग एक अपवादिक (Exceptional) सूरत थी। इसी तरह चाँद का फट जाना असाधारण तरीक़े पर भौतिक नियमों के प्रतिकूल हुआ था। इस लिए न दुनिया में इस का कोई धमाका सुनाई दिया और न दुनिया भर के लोगों को समय पर इस की ख़बर हुई। चाँद की रफ़तार में भी कोई अन्तर नहीं आया और न इस का असर दुनिया की भौतिक परिस्थितियों पर पड़ा। चमत्कारिक रूप से क्रियामत की यह निशानी उन लोगों को दिखाना अभिप्रेत थी जिन के बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति हुई

थी। अतः मुसलमानों और काफ़िरों दोनों ने देखा कि चाँद का एक टुकड़ा हिरा पहाड़ के ऊपर है और दूसरा टुकड़ा उस के पीछे चला गया है। ईमान वालों के ईमान में तो इस से वृद्धि हुई किन्तु काफ़िरों ने इसे जादू बताया। यह बात भी स्पष्ट रहे कि चाँद फट जाने का मोज़ा काफ़िरों की माँग पर नहीं दिखाया गया था क्योंकि कुर्आन ने बहुत सी जगहों पर उन की माँगों को पूरा करने से इन्कार किया है और जवाब दिया है कि ईमान लाने के लिए कुर्आन का मोज़ा ही काफी है। यह मोज़ा लाठी के साँप बन जाने जैसा नहीं था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों वह सामने आ जाता। बल्कि इस की दशा नबियों के मोज़ों से भिन्न थी। यह मोज़ा आसमानी जगत में घटा था और इस का उद्देश्य क्रियामत की जल्द ही जाहिर होने वाली भयावह घटना को निकटतम बताना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता को स्पष्ट करना था। इस निशानी के सामने आने और कुर्आन की उन आयतों के बीच कोई तज़ाद नहीं है जिन में काफ़िरों के इस मुतालबे को कि पैगम्बर कोई मोज़ा (चमत्कार) दिखाए रद्द कर दिया गया है।

2. अर्थात् चाँद के फट जाने की इतनी बड़ी निशानी से भी इन्होंने कोई सीख न ली बल्कि इस को जादू बताया।

3. अर्थात् इन के झुठलाने का अन्जाम वक्त पर सामने आएगा। अल्लाह तआला ने हर मामले के लिए जो वह बन्दों के साथ करता है समय निर्धारित कर रखा है अतः विलम्ब को देख कर कोई यह न समझे कि यह दुनिया अन्धेर नगरी है और अच्छे या बुरे परिणाम कभी सामने आने वालें नहीं हैं।

4. अर्थात् उन जातियों के बुरे अन्जाम की खबरें जिन्होंने ने उद्घण्डता बरती थी। इशारा है नबियों को झुठलाने वाली जातियों की तरफ़।

5. अर्थात् कुर्आन उन विनष्ट हुई जातियों की घटनाओं को ऐसी प्रभावशाली शैली में बयान कर रहा है कि दिल और दिमाग़ के दरिचे खुल जाएँ और बुद्धिमत्ता की बातें उस में बैठ जाएँ। परन्तु उन की हठधर्मी ऐसी है कि यह हिकमत से भरी तंबीहें भी उन पर कारगर नहीं हो रही हैं। ऐसे काफ़िर तो अज़ाब (यातना) को देख कर ही होश में आएँगे।

6. अर्थात् जब वे समझना नहीं चाहते तो उन को उन के हाल पर छोड़ दो।

7. अर्थात् उन को उसी समय होश आएगा जब वे क्रियामत के दिन हश्र के मैदान में जमा होने के लिए पुकारने वाले फ़रिशते की पुकार सुनेंगे। हश्र के मैदान में उन्हें अपने व्यवहारिक जीवन का हिसाब प्रस्तुत करना होगा जो उन के लिए बड़ी ही अप्रिय चीज़ होगी।

8. अपने कुफ़्र एवं कुकर्मों के कारण।

9. जिस प्रकार टिड्डी दल वातावरण में फैल जाता है उसी प्रकार ये लोग क़ब्रों से-----अर्थात् जहाँ भी वे मर खप गए थे-----निकल निकल कर हर तरफ़ फैल जाएँगे। यह इन्सानों का ठाटें मारता समुद्र होगा जो हर तरफ़ दिखाई देगा।

10. पुकारने वाले से तात्पर्य फ़रिशता है जो उन्हें खड़े होने की जगह की तरफ़ बुला रहा होगा और वे सहमे हुए पुकारने वाले की तरफ़ दौड़ रहे होंगे। आज वे हक़ की ओर बुलाने वाले की पुकार सुनने के लिए आमादा नहीं हैं किन्तु क्रियामत के दिन अपने कर्मों का हिसाब देने के लिए अपने ठिकाने की तरफ़ बुलाने वाले की तरफ़ दौड़ने के लिए विवश होंगे।

11. क्रियामत के दिन उन लोगों को जो इस का इन्कार करते रहे हैं और इस के लिए कोई तैयारी नहीं की, वे महसूस करेंगे कि यह तो बड़े कठिन दिन का सामना है। मगर उस समय इस भावना के पनपने का क्या लाभ?



इन से पहले नूह की जाति ने झुठलाया था। उन्होंने ने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा वह दीवाना है और वह झिड़क दिया गया। तो उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मगलूब (दबा लिया गया) हूँ अब तू इन से इन्तिक्राम ले। तब हम ने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और ज़मीन पर स्रोत बहा दिए तो पानी उस काम के लिए मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था। और हम ने ऐसे नौका में सवार कर दिए जो तख़्तों और मेखों (किलों) वाली थी। (अल-कुआन)

9. इन से पहले नूह की जाति ने झुठलाया था।¹²
उन्होंने ने हमारे बन्दे को ¹³ झुठलाया और कहा
यह दीवाना है और वह झिड़क दिया गया।¹⁴

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا
مَجْنُونٌ وَازْدَجِرَ ①

10. तो उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मगलूब
(दबा लिया गया) हूँ अब तू इन से इन्तिक्राम
ले।¹⁵

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ②

11. तब हम ने आसमान के दरवाजे मूसलाधार
बारिश से खोल दिए।¹⁶

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَرٍ ③

12. और ज़मीन पर ख़ोत बहा दिए ¹⁷ तो पानी उस
काम के लिए मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका
था।¹⁸

وَنَجَرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ④

13. और हम ने उसे ऐसी नौका में सवार कर दिया
जो तख़्तों और मेखों (किलों) वाली थी।¹⁹

وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ الْأَوَّارِ وَدُسِّرَ ⑤

14. वह हमारी निगरानी में चल रही थी। यह सिला
था उस व्यक्ति के लिए जिस की नाक़्द्री (निरादार)
की गई थी।²⁰

تَجَرَّيْ بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ⑥

15. हम ने उस (नौका) को एक निशानी बना कर
छोड़ दिया।²¹ तो है कोई इबरेत हासिल करने
वाला ?

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ ⑦

16. देख लो कैसा था मेरा अज़ाब (प्रकोप) और
कैसी थी मेरी तंबीहें।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ⑧

17. और हम ने कुर्आन को नसीहत लेने के लिए
आसान बना दिया है, तो है कोई नसीहत हासिल
करने वाला ?²²

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ ⑨

18. आद ²³ ने झुठलाया तो देखो कैसा रहा मेरा
अज़ाब और कैसी रही मेरी तंबीहें।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ⑩

19. हम ने एक निरंतर नहूसत के दिन ²⁴ उन पर
प्रचण्ड हवा भेज दी।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ⑪

12. नूह की जाति का वृत्तांत सूरह हूद और अन्य कई सूरतों में गुजर चुका। यहाँ संक्षेप में इस के उस पहलू को बयान किया गया है कि किस तरह इस जाति ने अल्लाह के रसूल का निरादर किया और इस के फल स्वरूप उसे कैसा प्रकोप झेलना पड़ा आगे दूसरी उदंड जातियों के वृत्तांत भी इसी पहलू से संक्षिप्त रूप से बयान हुए हैं।

13. अल्लाह तआला ने हज़रत नूह का ज़िक्र “अब्दना” अर्थात् हमारा बन्दा के शब्द से किया है जिस से उन की निष्ठ उपासना का भी पता चलता है और अल्लाह की तरफ से बन्दा नवाज़ी का भी।

14. यह उस जाति की अत्यंत उदण्डता थी कि हज़रत नूह की महान हस्ती को खातिर में नहीं लाई और उन को धमकियाँ दिं यहाँ तक कि उन्हें संगसार (पत्थरवाह) करने की धमकी भी दी गई जिस का वर्णन सूरह शुअरा आयत ११६ में हुआ है।

15. अर्थात् ये उपद्रव पर उतारू हो गए हैं और मेरे बस में नहीं हैं कि इन का जोर तोड़ सकूँ अतः तू इन पर अज़ाब भेज कर मेरी मुक्ति का सामान कर।

यह उदाहरण है इस बात का कि रसूलों को भी ऐसे संगीन हालात से गुजरना पड़ा है कि वे अपने को मग़लूब महसूस करते रहे हैं लेकिन इस से न उन की दृढ़ता में कोई अन्तर आया और न उन के हौसले पस्त हुए बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हुए उस से मदद की दुआ की। इस में उन मुसलमानों के लिए रहनुमाई का सामान है जो काफ़िरों की सत्ता में रहते हुए अपने को दबा हुआ पा रहे हैं।

16. यह सारगर्भिता की शैली है मतलब यह है कि बादलों से अधिकता के साथ और जोरदार बारिश हुई।

17. अर्थात् पानी ज़मीन के नीचे से भी उबल पड़ा और हर तरफ़ स्रोत फूट बहे।

18. अर्थात् पानी उस मात्रा को पहुँच गया जो इस काम के लिए नियत कर दिया था।

19. अर्थात् यह नौका बहुत सादा थी लकड़ों और मेखों (अर्थात् कीलों) से बनी हुई जिस का इस प्रचण्ड तूफ़ान में सलामत रहना मुश्किल था लेकिन अल्लाह तआला ने उसी को हज़रत नूह के लिए मुक्ति का साधन बनाया। असल चीज अल्लाह तआला का इरादा और उस की मदद है न कि बाह्य लक्षण एवं संसाधन।

20. अर्थात् काफ़िरों ने नूह का निरादर किया था हालाँकि वे अल्लाह के रसूल और अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। अल्लाह तआला ने उन को यह जज़ा (बदला) दी कि जहाँ उन की काफ़िर जाति डूब रही थी वहाँ उन की नौका सुरक्षित

रह कर मुक्ति का साधन बनी।

21. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनकबूत नोट २६

22. कुर्आन शब्द शब्द अल्लाह का कलाम है जिस में अर्थ की गहराई भी है और तत्त्वदर्शिता के दुर्लभ मोती भी। वह कायनात के भेदों पर से भी परदा उठाता है और मानव में निहित रहस्यों को भी उजागर करता है। संपूर्ण मार्ग निर्देशिका है इस लिए इस के विषय बहुत ही व्यापक और विस्तीर्ण हैं। इस में ज्ञान ध्यान के अनमोल खज़ाने भी हैं और अन्तर्मन के विकास तथा आत्मा को संवारने की सामग्री भी। इन विविध विशेषताओं के बावजूद वह अपने उद्देश्य का स्पष्टीकरण और मानव पर हिदायत का मार्ग स्पष्ट करने की दृष्टि से ऐसी सरल किताब है कि हर साधारण व असाधारण व्यक्ति इस से लाभान्वित हो सकता है। समझाने और नसीहत करने की दृष्टि से गुढ़ एवं जटिल विषयों को अत्यंत सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस किताब का संबोधी प्रत्येक व्यक्ति है और यह समझना कि इसे आलिम लोग ही समझ सकते हैं, सरासर गलत है। कुर्आन प्रत्येक व्यक्ति को उस का सीधा अध्ययन करने, उस पर चिन्तन मनन करने और उस की नसीहत को स्वीकार करने का निमंत्रण देता है। जो लोग अरबी न जानते हों वे किसी विश्वस्नीय अनुवाद से लाभ उठा सकते हैं परन्तु कुर्आन का अर्थ और भावार्थ को समझने के प्रयास न करना उस से बड़ी दूरी और बड़ी महरूम की बात है। अफ़सोस कि मुसलमानों में यह ग़फ़लत सामान्य रूप से रचा बचा हुआ है और उलमा ने जहाँ अनुवाद और तफ़्सीर की मूल्यवान सेवा की है और कुर्आन के पाठ का सिलसिला चलाते रहे हैं वहीं कुछ उलमा ऐसे भी हैं जो अनुवाद की सहायता से कुर्आन को समझना पसंद नहीं करते और तिलावते-कुर्आन तथा हिफ़ज़े-कुर्आन की फ़ज़ीलतें बयान कर कर के उन्हें केवल इसी में लगाए रखना चाहते हैं। फ़ज़ीलत से जो कि सही हदीसों से साबित हैं हरगिज़ इन्कार नहीं किया जा सकता, लेकिन ये उलमा इस बात पर जोर क्यों नहीं देते कि लोग कुर्आन की सीख हासिल करें। और आश्चर्य है कि कुछ लोग तो इस आयत का मतलब ही यह बताते हैं कि नसीहत की जगह हिफ़ज़ (कण्ठ करने) पर ध्यान केन्द्रित हो कर रह जाता है। अतः एक बुज़ुर्ग ने सूरह क्रमर की इस आयत का अनुवाद इस तरह किया है :-

“हम ने कलाम पाक को हिफ़ज़ (कण्ठ) करने के लिए सरल कर रखा है, कोई है हिफ़ज़ करने वाला ” (तब्लीगी निसाब फ़ज़ाइले कुर्आन पृष्ठ ५५)

इस आयत में “ज़िक्र” का शब्द नसीहत के अर्थ में और शब्द “मुदकिर” नसीहत हासिल करने वाला के अर्थ में

प्रयुक्त हुआ है न कि हिफ़ज़ अर्थात् ज़बानी याद करने के अर्थ में। इस पर इस का संदर्भ भी तर्क प्रस्तुत करता है और इस तरह की अन्य आयतें भी। सूरह “क्रमर” में संबोधन काफ़िरों से है उन्हें क्रियामत के इन्कार पर कड़ी चेतावनी सुनाई गई है और कुआन की नसीहत पर कान धरने का निमंत्रण दिया गया है। इसी सिलसिले में नूह की क्रौम और अन्य उद्दंड जातियों का अन्जाम पेश किया गया है ताकि इन्कारी लोग इबरत हासिल करें। अतः फ़रमाया :-

“हम ने कुआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला”।

अगर “ज़िक्र” का अनुवाद नसीहत की जगह “हिफ़ज़” कर दिया जाए तो मतलब यह होगा कि काफ़िरों से यह कहा जा रहा है कि कुआन हिफ़ज़ करने के लिए आसान बना दिया गया है तो है कोई हिफ़ज़ (कण्ठ) करने वाला। मतलब यह निकला कि कुआन काफ़िरों को हिफ़ज़ करने का निमंत्रण दे रहा है जब कि उन्होंने ने अभी न इस की नसीहत को स्वीकार किया है और न ईमान लाए हैं। जाहिर है ऐसी बेतुका बात कुआन की तरफ़ हरगिज़ मंसूब नहीं की जा सकती। इस सिलसिले में शब्दकोष का सहारा भी लिया जाता है कि इस का एक अर्थ हिफ़ज़ करना (कण्ठ करना) भी है। अतः लिसानुल अरब में हैं।

الذكر الحفظ لشي تذكرة

अर्थ : “ज़िक्र का अर्थ किसी चीज़ को सुरक्षित कर लेने के हैं जिस को तुम याद रख सको।”

लेकिन पहली बात तो शब्दकोष के संकलनकर्ता ने हिफ़ज़ का शब्द अर्थ से अलग कर हिफ़ज़ (कण्ठ) करने के अर्थ में इस्तेमाल नहीं किया है इस लिए इस को उर्दू के शब्द हिफ़ज़ के सीमित अर्थों में लेना सही नहीं। दूसरे यह कि यदि शब्दकोष में ज़िक्र के कई अर्थों में से एक अर्थ बस हिफ़ज़ करने के अर्थ में हो तो भी इस आयत में ज़िक्र के विस्तीर्ण भावार्थ में यह बात मात्र एक कोष्ठक के रूप में ही शामिल हो सकती है वरना इस का उभरा हुआ भावार्थ नसीहत ही है और इस का अनुमोदन इस बात से भी होता है कि दूसरी जगह कुआन को ज़िक्र कहा गया है इस कारण वह सरासर नसीहत हैं :-

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَاحْفَظُونَهُ. (الحجر: १)

अर्थ : “निस्संदेह हम ने यह ज़िक्र (याददेहानी) नाज़िल किया है और हम ही इस की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (हिज़्र - ९) सूरह दुखान में है

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ. (دुखान- ५८)

अर्थ : “हम ने (ऐ पैगम्बर !) तुम्हारी ज़बान में इसे आसान बना दिया है, ताकि लोग नसीहत हासिल करें।” (दुखान- ५८)

इस आयत में कुआन को आसान बनाने का मतलब, स्पष्ट रूप से याददेहानी और नसीहत हासिल करना बयान हुआ है। इस लिए सूरह क्रमर की इस आयत को भी इस अर्थ में लेना सही होगा। इब्ने ज़रीर तबरी ने भी इस का यही अर्थ बयान किया है।

وَلَقَدْ سَهَّلْنَا الْقُرْآنَ بَيْنَاهُ وَفَصَّلْنَاهُ لِلذِّكْرِ

لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يَتَذَكَّرَ وَيَعْتَبِرَ وَيَتَعَطَّ

وَهُوَ نَاهُ. (تفسير طبری جلد २ ص ५८)

अर्थ :- “हम ने कुआन को सरल बनाया, इस को स्पष्ट किया: खोल कर बयान किया और आसान बनाया नसीहत के लिए अर्थात् उस के लिए जो नसीहत, इबरत और सीख हासिल करना चाहे। (तफ़सीर तबरी जिल्द २७ पृष्ठ ५७)

कुआन की परिभाषाओं का अर्थ मात्र शब्दकोष के द्वारा निर्धारित नहीं किये जा सकते। बल्कि कुआन में इस के प्रयोगों तथा इस्तेमालों को ध्यान में रखना भी आवश्यक हैं। मिसाल के तौर पर इबादत के शब्द ही को लीजिए। लिसानुल अरब में इस का एक अर्थ “आज्ञापालन” बयान हुआ है।

والعبادة: الطاعة (لسان العرب ج ३ ص २८२)

अर्थ : इबादत अर्थात् आज्ञापालन (लिसानुल अरब जिल्द ३ पृष्ठ २७२)

जब कि कुआन में इस का भावार्थ परस्तिश है अतः बुतों की परस्तिश के लिए यही शब्द इस्तेमाल हुआ है। परन्तु यह बात सही न होगी कि हम इबादत के उभरे हुए भावार्थ परस्तिश पर ज़ोर न दें या इस से बिलकुल नज़र फेर कर इस शब्द को “अनुपालन” के अर्थ में लेने लें। इस का दूसरा उदाहरण शब्द “सलात” है जिस का अर्थ शब्दकोष में दुआ के हैं। किन्तु कुआन में इस को शरअी तरीक़े पर अदा की जाने वाली एक ख़ास इबादत के लिए जिसे है उर्दू में नमाज़ कहते हैं इस्तेमाल किया है तो क्या केवल शब्दकोष के सहारे “अक्रिमुस्सलात” اقيموا الصلوة का अर्थ “दुआ क़ायम करो” लिखना सही होगा? अगर नहीं तो ज़िक्र का अर्थ भी कुआन के प्रयोगों एवं इस्तेमाल को नज़रन्दाज़ कर के मात्र शब्दकोष के सहारे निर्धारण करना सही न होगा। और यह बात भी दृढ़ता से कही जा सकती है

कि कुर्आन में ज़िक्र का शब्द कहीं भी अर्थ से बिल्कुल अलग हट कर मात्र ज़बानी याद (कण्ठ) करने के अर्थ में इस्तेमाल नहीं हुआ है।

यह आयत इस सूरह में बार बार दोहराई गई है और इस से अभिप्रेत इस बात की ताकीद करना है कि लोग कुर्आन से नसीहत हासिल करें।

23. आद का वृत्तांत भी विस्तार से सूरह हूद में तथा अन्य कई सूरतों में गुज़र चुका है।

24. नहूसत के दिन से तात्पर्य अज़ाब का दिन है और यह अज़ाब जैसा कि सूरह हाक्का में बयान हुआ है आठ दिनों

तक निरंतर रहा। दिन कोई भी हो वह अपने आप में मन्हूस (अशुभ) नहीं। अंधविश्वासी लोग दिनों के शुभ और अशुभ होने की ग़लत धारणा रखते हैं मगर कुर्आन के नज़दीक मन्हूस दिन (अशुभ दिन) वह है जिस में उस का प्रकोप फूट पड़े। आद की जाति पर आठ दिन प्रचण्ड हवा का अज़ाब मुसल्लत रहा जब कि एक हफ़्ता सात दिन का होता है। स्पष्ट हुआ कि उस जाति के लिए हफ़्ते का हर दिन अज़ाब का दिन होने की हैसियत से मन्हूस था और जब पूरा हफ़्ता मन्हूस क्रार पाया तो अंधविश्वासियों के लिए कौन सा दिन अशुभ ठहराने के लिए बाक़ी रहा?



20. जो लोगों को उखाड़ कर इस तरह फेंक रही थी कि जैसे वे उखड़ी हुई खजूर के तने हैं।²⁵

تَنَزَّعُ النَّاسُ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ①

21. तो देखो कैसा रहा मेरा अज़ाब और कैसी रही मेरी तंबीहे।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ②

22. और हम ने कुर्आन को नसीहत लेने के लिए आसान बना दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला ?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ③

23. समूद²⁶ ने भी तंबीहो को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ④

24. कहने लगे क्या हम एक मनुष्य की पैरवी करेंगे जो हम ही में से है ? अगर हम ने ऐसा किया तो हम ग़लत राह पर जा पड़े और दीवानगी में मुब्तिला हुए।²⁷

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّثْلَ أَحَدَاتِنَا إِذْ أَلْفَيْ ضَلِيلٍ وَسُعِيرٍ ⑤

25. क्या हमारे अन्दर से इसी पर ज़िक्र (नसीहत) नाज़िल किया गया ?²⁸ नहीं बल्कि यह बड़ा झूठा और घमण्डी है।²⁹

ءَالِقَى الذِّكْرِ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ ⑥

26. कल इन्हें मालूम हुआ जाता है कि कौन बड़ा झूठा और घमण्डी है।³⁰

سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْأَشْرُ ⑦

27. हम ऊँटनी को इन के लिए आजमाइश बना कर भेज रहे हैं³¹ तो इन को देखते रहो और सब्र करो।

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ⑧

28. और इन को बता दो कि पानी इन के बीच विभाजित होगा। हर एक को अपनी बारी के दिन पानी पर आना है।

وَنَبِّئُهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شَرْبٍ مُّخْتَصِرٌ ⑨

29. मगर इन्होंने अपने साथी को बुलाया और उस ने आगे बढ़ कर उस की कूँचे काट दीं।³²

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ⑩

30. तो देखो कैसा रहा मेरा अज़ाब और कैसी रही मेरी तंबीहें।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ⑪

31. हम ने उन पर एक ही हौलनाक आवाज़ भेजी तो वे बाढ़ वाले की बाढ़ के चूरे की तरह हो कर रह गए।³³

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُخْتَطِرِ ⑫

25. अर्थात् उस प्रचण्ड हवा ने उस जाति को बिलकुल जड़ से उखाड़ फेंका। हर तरफ़ उन की लाशें ही लाशें थीं।

26. समूद का वृत्तांत सूरह आराफ़, सूरह हूद तथा अन्य कई सूरतों में गुजर चुका।

27. उन के नज़दीक रसूल को मनुष्य नहीं बल्कि फ़रिश्ता होना चाहिए था। यही सोच मक्का के बहुदेववादियों की भी थी। समूद का कहना था कि यह व्यक्ति हिदायत के नाम पर हमें ग़लत राह पर डालना चाहता है और यह बुद्धि का दीवालियापन होगा कि हम इस की बात को मान कर इस का अनुपालन करने लगे।

28. वे कहते हैं कि अगर अल्लाह की तरफ़ से नसीहत उतरती तो इसी व्यक्ति पर क्यों उतरती जब कि हमारे बीच और अच्छे लोग मौजूद हैं। उन के नज़दीक अच्छे होने की कसौटी चरित्र और आचरण नहीं बल्कि सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य था।

29. उन्होंने एक रसूल पर जो सच्चाई का आदर्श नमूना होता है और जिस की निष्ठा एवं सत्यता पर संदेह नहीं किया जा सकता, झूठा और घमण्डी होने का आरोप लगाया।

30 कल से तात्पर्य अज़ाब का दिन भी है और क्रियामत

का दिन भी जो इतना निकट है कि जैसे बस कल ही आने वाला है। उस रोज़ उन लोगों को जो रसूल पर दोषारोपण करते रहे हैं मालूम हो जाएगा कि झूठा और घमण्डी कौन था, अल्लाह का रसूल या वे स्वयं ।

31. यह ऊँटनी एक मोज़े (चमत्कार) के रूप में प्रकट हुई थी और उस जाति के लिए परीक्षा का साधन थी कि वे उस के पानी पीने का ख़ियाल रखते हैं या नहीं और उस को कोई चोट तो नहीं पहुँचाते।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह शुअरा नोट १३१

32. असाधारण क्रद की ऊँटनी को मारना भी आसान न था। इस लिए उस दुष्ट ने उस के पाँव काट डाले ताकि वह मर जाए। समूद ने इस काम के लिए एक व्यक्ति को आगे बढ़ाया था इस लिए इस गुनाह की अपराधी पूरी जाति हुई और उस ने अल्लाह के अज़ाब को दअवत दी।

33. बाड़ वाला अपने जानवरों की सुरक्षा के लिए झाड़ु शंकाड़ की बाड़ लगाता है जो एक वक्ती चीज़ होती है और फिर सूख कर चूरा चूरा हो जाती है। यही हाल समूद का हुआ कि उन को अल्लाह के अज़ाब ने इस तरह रौंद डाला कि उन का सारा दम खम निकल गया।



32. और हम ने कुआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया है, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝۳۲

33. लूत³⁴ की जाति ने भी तंबीहों को झुठलाया।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِينَ ۝۳۳

34. हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेज दी।³⁵ केवल लूत के सम्बन्धी उस से बचे।³⁶ हम ने उस को सहर (अरुणोदय) के समय मुक्ति दी।³⁷

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۝۳۴

35. अपने खास फ़ज़ल से इस तरह हम जज़ा (बदला) देते हैं उन को जो शुक्र करते हैं।³⁸

نِعْمَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝۳۵

36. उस ने उन को हमारी पकड़ से ख़बरदार कर दिया था। मगर वे तंबीहों में शक करते रहे।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالَّذِينَ ۝۳۶

37. और उन्होंने ने उस को अपने मेहमानों की इज़्जत बचाने से बाज़ रखना चाहा तो हम ने उन की आँखें अन्धी कर दीं।³⁹ कि चखो मेरे अज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذِرٍ ۝۳۷

38. सुबह सवेरे उन को क़ायम रहने वाले अज़ाब ने आ लिया।⁴⁰

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ ۝۳۸

39. तो चखो मेरे अज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذِرٍ ۝۳۹

40. और हम ने कुआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान बनाया है, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला ?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝۴०

41. और आले फ़िरऔन (अर्थात् फ़िरऔन की संतानों) के पास भी तंबीहें आई थीं।

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝۴१

42. परन्तु उन्होंने ने हमारी सारी निशानियों को झुठलाया तो हम ने उन को पकड़ा जो एक प्रभुत्वशाली और सामर्थ्यवान की पकड़ थी।⁴¹

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝۴२

34. लूत की जाति का वृत्तांत सूरह हूद और अन्य कई सूरों में गुज़र चुका।

35. लूत की जाति पर पत्थरों की बारिश हुई थी। व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९.

36. लूत के सम्बन्धि जो ईमान लाए थे।

37. सहर (अरुणोदय) रात के आखिरी हिस्से को कहते हैं। लूत के मानने वालों को रात के आखिरी हिस्से में मुक्ति मिली। हदीस में आता है कि रात का आखिरी हिस्सा रहमतों के अवतरण और दुआ कुबूल होने का समय होता है और कुर्आन में ईमान वालों की यह विशेषता बयान हुई है कि :

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ (الذारيات: १८)

अर्थ : “वे सहर (अरुणोदय) के समय में क्षमायाचना करते हैं।” (अज़ारियात - १८)

38. अर्थात् जो अल्लाह की नेमतों और उस की हिदायत की कद्र करते हैं।

39. मेहमान फ़रिश्ते थे जो लूत की जाति के लिए आजमाइश बन कर इन्सानों के रूप में आए थे। हज़रत लूत ने उन को अपने यहाँ ठहराया था मगर पापियों ने कुकर्म हेतु उन को अपहरण करने की कुचेष्टा की। जब उन्होंने ने बुरे इरादे से हज़रत लूत के घर में घुसने की कुचेष्टा की तो अल्लाह तआला ने उन की आँखें ही अन्धी कर दी। वासना भरी दृष्टि उन मेहमानों पर डालने का जो जाहिर है सुन्दर रहे होंगे यह तत्कालिक दण्ड उन्हें मिल गया।

40. इस के बाद सुबह होते ही उस उपद्रवी जाति पर खुदा का प्रकोप टूट पड़ा।

41. अर्थात् ऐसी ज़बरदस्त पकड़ थी कि फ़िरऔन वालों का सारा दमखम जाता रहा और वे अल्लाह के प्रकोप के आगे बिलकुल बेबस हो कर रह गए ।



43. क्या तुम्हारी जाति के काफ़िर लोग, इन जातियों के काफ़िरों से बेहतर हैं ⁴² या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है। ⁴³ ④
44. या वे कहते हैं कि हम सब मिल कर उस का मुकाबला करेंगे। ④
45. शीघ्र ही इन का जत्था परास्त होगा और ये पीठ फेर कर भागेंगे। ⁴⁴ ⑤
46. बल्कि इन से असल वादा तो क्रियामत का है ⁴⁵ और क्रियामत की घड़ी बड़ी कड़वी होगी। ⁴⁶ ⑥
47. मुजरिम गुमराही और अक्ल की खराबी में पड़े हैं। ⁴⁷ ⑥
48. उस दिन ये अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएंगे। अब चखो जहन्नम ⁴⁸ की लपट का मज़ा। ⑦
49. हम ने हर वस्तु एक तक्रदीर (योजना) के साथ पैदा की है। ⁴⁹ ⑦
50. और हमारा आदेश तो बस एक बार में पलक झपकने की तरह लागू हो जाएगा। ⁵⁰ ⑧
51. हम तुम्हारे तरीकों पर चलने वालों ⁵¹ को विनष्ट कर चुके हैं। तो है कोई सबक लेने वाला। ⑧
52. जो कुछ उन्होंने ने किया है वह सब रिकार्ड में सुरक्षित है। ⑧
53. और हर छोटी बड़ी बात लिख ली गई है। ⁵² ⑨
54. निस्संदेह मुत्तक़ी (अल्लाह का डर रखने वाले) बाग़ों और नहरों में होंगे। ⁵³ ⑨
55. सच्ची जगह में ⁵⁴ एक सत्तावान शासक के पास। ⁵⁵ ⑩
- ④ الْكَافِرُ خَيْرٌ مِّنْ أَوْلِيَّكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ
- ⑤ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ
- ⑥ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ
- ⑦ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذًى وَأَمْرٌ
- ⑧ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ
- ⑨ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ
- ⑩ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ
- ⑪ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ
- ⑫ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدْكِرٍ
- ⑬ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ
- ⑭ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَقَرٌّ
- ⑮ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ
- ⑯ فِي مَقْعَدِ صَدِّقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ

42. सम्बोधन अरब की जाति से है कि तुम में जो लोग काफ़िर हैं उन का रवैया भी वही है जो गुज़री हुई काफ़िर जातियों का था। फिर इन की कौन सी प्रमुखता है कि इन का अन्जाम वह न हो जो गुज़री हुई काफ़िर जातियों का हो चुका। काफ़िर तो अल्लाह का विद्रोही और पहले दर्जे का अपराधी होता है अतः एक काफ़िर जाति अनिवार्य रूप से दण्ड की पात्र होती है।

43. अर्थात् क्या आसमानी किताबों में यह लिखा हुआ है कि तुम्हारे कर्म कैसे ही हो तुम्हें दण्डित नहीं किया जाएगा। अगर ऐसा नहीं है और मुक्ति का परवाना तुम्हें मिल नहीं गया है तो फिर अल्लासह के बताये हुए सत्यमार्ग से मुँह मोड़ने का दुस्साहस कैसे करते हो।

44. कुर्आन ने यह बात मक्का में कही थी जब कि कुरैश के पराजय पाने के यूँ कोई आसार नहीं थे किन्तु कुर्आन की यह भविष्यवाणी बस कुछ ही वर्ष के बाद बद्र में सच हो गई। हदीस में आता है बद्र की जंग सन २ हिजरी के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सैन्य वस्त्र पहने हुए थे और यह आयत पढ़ते हुए बाहर तशरीफ़ लाए।

سَيَهْزِمُ الْجَمْعُ وَيُؤَلِّقُونَ الدُّبُرَ

अर्थ :- “शीघ्र ही इन का जत्था परास्त हो जाएगा और ये पीठ फेर कर भागेंगे।”

और थोड़ी ही देर में काफ़िरों के क़दम उखड़ गए और उन्हें बुरी तरह की हार का सामना हुआ इसी प्रकार खंदक की जंग (सन ५ हिजरी) में भी वे भाग खड़े हुए।

45. अर्थात् दुनिया में इन को अल्लाह के रसूल के मुक़ाबले में जो हार होगी वह तो होगी ही, इस के अलावा असली सज़ा तो उन्हें क़ियामत के दिन मिलेगी जो अत्यंत भयावह और हमेशा हमेशा की सज़ा होगी।

46. अर्थात् क़ियामत बहुत बड़ी मुसीबत और बहुत सी कड़वाहटों को अपने अन्दर लिये हुए होगी। अतः ख़बरदार हो

जाओ और उस दिन की मुसीबत से बचने का सामान करो।

47. यह उत्तर है काफ़िरों की उस बात का जो आयत २४ में बयान हुई है।

48. असल में शब्द “सकर” प्रयुक्त हुआ है जो जहन्नम का नाम है और जिस का अर्थ है अत्यंत तापमानवाली।

49. अर्थात् अल्लाह तआला ने प्रत्येक वस्तु को योजनाबद्ध तरीक़े पर पैदा किया है। उसे क्या काम करना है, किस समय तक करना है और किस लक्ष्य को उसे पहुँचना है, इस तरह पूरी कायनात की एक तक्रदीर, एक नियतन अथवा एक योजना है और अपने निर्धारित समय पर ही उस में वह क्रान्ति आएगी जिस का नाम क़ियामत है। किसी के जल्दी मचाने से क़ियामत समय से पहले नहीं आ सकती।

50. अर्थात् क़ियामत के बरपा करने में अल्लाह तआला को कुछ देर नहीं लगेगी। उस का आदेश होगा और वह पलक झपकते बरपा हो जाएगी। आँख इस तेज़ी से झपकती है कि तनिक भी समय नहीं लगता। इसी प्रकार क़ियामत का आदेश होते ही वह फ़ौरन बरपा हो जाएगी।

51. अर्थात् तुम्हारे रवैये पर चलने वालों को विनष्ट कर चुके हैं। मुराद काफ़िर और उद्दण्ड ताक़तें।

52. व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ७०

53. यहाँ मुत्तक़ीयों (सूकरमियों) का कण्ठ अपराधियों के मुक़ाबले में हुआ है अर्थात् वे लोग जो अल्लाह के समक्ष जबानदेही से डरते रहे, उस की हिदायत को स्वीकार किया और गुनाहों से परहेज़ करते रहे। उन का सिला यह बयान किया गया है कि वे आख़िरत में जन्नत के बाग़ों में होंगे जहाँ नहरें बह रही होंगी।

54. अर्थात् ऐसी जगह में जहाँ वे सच्चा इनाम पाएँगे और उन्हें सच्ची इज़्ज़त और बुलन्दी हासिल होगी।

55. अर्थात् उन्हें अल्लाह का जो वास्तविक शासक है और जिस की सामर्थ्य शक्ति तथा जिस की सत्ता सब पर छाई हुई है, सामीप्य प्राप्त होगा और यह सब से बड़ा इनाम होगा।





५५. सूरह अर-रहमान

नाम :- सूरह की शुरुआत संसार के सृष्टा एवं पूज्य जो कि अत्यंत दयावान (रहमान) है उस के नाम से हुई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अर-रहमान है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के मध्य काल में सूरह अहकाफ़ के बाद नाज़िल हुई होगी। क्यों कि सूरह अहकाफ़ में जिन्नों के एक समूह के कुर्आन सुनने और अपनी जाति के लोगों में जा कर उन को खबरदार करने का वर्णन है। और इस सूरह में जिन्नों से सम्बोधन कर के उन्हें झंझोड़ा गया है। इस लिए यह चेतावनी इस के बाद की ही हो सकती है।

केन्द्रीय विषय :- नई व्यवस्था के साथ नये जगत के अस्तित्व में आने और उस में कर्म फल स्वरूप इनाम और दण्ड का मामला पेश आने की जो खबर कुर्आन दे रहा है उस को असंभव समझने और इस का इन्कार करने वाले इन्सानों और जिन्नों को कुदरत के कमाल वा उस के चमत्कार की ओर ध्यानकर्षित करना है ताकि उन का आश्चर्य समाप्त हो और वे इस खबर पर विश्वास करने लगें।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ भूमिका पर आधारित आयतें हैं जिन में खुदा-ए-रहमान (दयावान सृष्टा) की सब से बड़ी रहमत का जिक्र हुआ है वह यह कि उस ने मनुष्य

को हिदायत की किताब (कुर्आन) का ज्ञान प्रदान किया और यह उसी के दया की देन है कि मनुष्य को बोलने और अपनी बात कहने की शक्ति प्राप्त हुई, जो कि इस रचना का एक प्रमुख गुण है।

आयत ५ से १३ में ज़मीन तथा आसमान के अजाइबाते कुदरत का जिक्र कर के, यह प्रश्न कायम किया गया है कि तुम अपने रब के किन किन कमालाते कुदरत का इन्कार करोगे?

आयत १४ से ३० में इन्सान और जिन्न की पैदाइश, दो पूरबों और दो पश्चिमों की दूरी, दो समुद्रों का मिलना, और इस तरह की दूसरी आश्चर्यचकित कर देनेवाली निशानियों तथा अल्लाह की शाने-करीमी (उस के कृपालु होने) की तरफ़ ध्यानाकर्षित किया गया है।

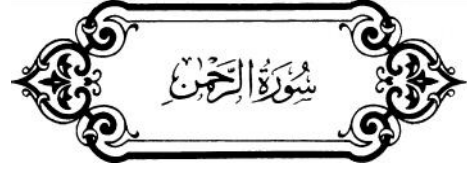
आयत ३१ से ४५ में इन्सानों और जिन्नों को उन के अपराधिक रवैये पर कड़ी तंबीह की गई है कि वह दिन बस आ ही रहा है जब तुम्हें अपने किये की सज़ा मिलेगी और सज़ा अत्यंत दुखदायिनी होगी।

आयत ४६ से ७८ में उन लोगों का सुखद अन्जाम बयान हुआ है जो अल्लाह के समक्ष जवाबदेही से डरते रहे। इस सिलसिले में जन्नत की नेमतों की एक झलक दिखाई गई है जिस से उस की चाहत पैदा होती है।

५५. सूरह अर्-रहमान

आयतें : ७८

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. रहमान ने ¹ الرَّحْمَنُ ①
2. कुआन की तालीम दी।² عَلَّمَ الْقُرْآنَ ②
3. उस ने इन्सान को पैदा किया।³ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ③
4. और उस को बोलना सिखाया।⁴ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ④
5. सूरज और चाँद एक हिसाब के पाबन्द हैं।⁵ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ⑤
6. और सितारे और वृक्ष सज्दा करते हैं।⁶ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ⑥
7. आसमान को उस ने बुलन्द किया ⁷ और मीज़ान (तुला) रख दी।⁸ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ⑦
8. कि तुम मीज़ान (तुला) में उल्लंघन न करो।⁹ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ⑧
9. और ठीक तौलो इन्साफ़ के साथ और वज़न में कमी न करो।¹⁰ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ⑨
10. ज़मीन को उस ने सृष्टि के लिए बिछाया।¹¹ وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ⑩
11. इस में मेवे हैं और खजूर हैं, ग़िलाफ़ चढ़े हुए।¹² فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ⑪
12. और ग़ल्ले हैं भूस वाले ¹³ और खुशबूदार फूल भी।¹⁴ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ⑫
13. तो (ऐ जिन्न एवं इन्सानों के समुहों!) ¹⁵ तुम अपने रब के किन किन एहसानों का इन्कार करोगे? ¹⁶ فَإِنِّي الْآءُ رَبِّكُمْ أَتَكْذِبُونَ ⑬

1. शब्द अर-रहमान की व्याख्या सूरह फ़ातिहा नोट ५ और सूरह बनी इस्राईल नोट १४५ में गुजर चुकी ।

अल्लाह के लिए रहमान नाम की संज्ञा इब्रानी ज़बान में भी मौजूद है जो प्राचीन काल में यहूदियों की ज़बान रही है इब्रानी में इसे इस तरह लिखा जाता है :-

अर-रहमान

ارحمٰن

(देखिए अल-मुअज्जमुल हदीस इबरी अरबी दारुलमलाईन-बैरूत पृष्ठ ४४६)

मतलब यह कि प्राचीन काल से रहमान अल्लाह के लिए एक प्रसिद्ध नाम चला आ रहा है।

इस सूरह की शुरुआत अल्लाह तआला की दयावान (रहमान) होने के गुण से हुई है जिस के वर्णन से इन्सान के अन्दर उस की दया का एहसास उभरता है और इस एहसास ही के नतीजे में वह अपने रब की नेमतों का गुण-ग्राहक तथा क़दरदान बनता है।

2. खुदा-ए-रहमान की रहमत ने इस बात का तक्राज़ा किया कि वह इन्सान की हिदायत के लिए अपनी तरफ़ से एक तत्वपूर्ण किताब अवतारित करे और मनुष्य को उस का ज्ञान तथा उस की सीख का सूझ बूझ प्रदान करे अतः उस ने अपने पैग़म्बर पर कुर्आन उतारकर मनुष्य की शिक्षा और हिदायत का प्रबन्ध किया। यह कुर्आन उस की बहुत बड़ी रहमत है और जहाँ वह रहमत है वहाँ वह ज्ञान का भण्डार भी है और मनुष्य पर उस का यह बड़ा एहसान है कि उस ने मनुष्य को अल्लाह के कलाम का ज्ञान प्रदान करने की क्षमता प्रदान की तथा उस की सूझ बूझ प्रदान की ।

3. कुर्आन की शिक्षा का वर्णन पहले किया गया और मनुष्य की पैदाइश का वर्णन बाद में किया गया ताकि स्पष्ट हो जाए कि कुर्आन की शिक्षा ही वह चीज़ है जो उस के पैदा किये जाने के मक़सद को पूरा करती है।

4. इन्सान को बोलने की शक्ति प्रदान कर के अपने बहुत बड़े अनुग्रह से सम्मानित किया है। बोलने की शक्ति उस के अर्न्तमन के भावों को व्यक्त करने वाली है और इस का सम्बन्ध उस के विवेकी होने से है। मनुष्य की प्रमुख विशेषता यह है कि वह सूझ बूझ रखने वाली सृष्टि है जिसे बोलने तथा भावाभिव्यक्ति की श्रेष्ठता प्रदान की गई है जिस का तक्राज़ा है कि मनुष्य अपने रब का कृतज्ञ बने और इस उच्च एवं मूल्यवान शक्ति एवं क्षमता को कुर्आन सीखने के लिए इस्तेमाल करे। उस की ज़बान पर अल्लाह का कलाम जारी हो और वह हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहे। ये और इस प्रकार के उच्च उद्देश्य ही हैं जिस के लिए उसे बोलने और बयान करने की क्षमता प्रदान की गई है।

5. फिर मनुष्य ने जिस कायनात में आँखें खोली हैं उस में

हर तरफ़ वह अपने रब के करिशमों का जलवा देख सकता है सूरज और चाँद जैसे विशाल नक्षत्र को किस तरह उस ने एक हिसाब का पाबन्द बना रखा है कि वे अपनी सीमा से तनिक भी उल्लंघन नहीं कर सकते। उन को ज़मीन से जिस दूरी पर रखा गया है, इस दूरी पर रहने ही से मनुष्य का जीवन पृथ्वी पर संभव हुआ है। यदि सूरज पृथ्वी से करीब आ जाए या अधिक दूर चला जाए तो पृथ्वी पर तापमान का संतुलन बिगड़ जाएगा और मनुष्य एवं पशु जीवित नहीं रह सकेंगे। इसी तरह चाँद के भी अपनी परिधि से हटने का भारी प्रभाव समुद्र के ज्वार भाँटे पर पड़ेगा जिस से भाँत भाँत की समस्याएँ उत्पन्न होंगी। तो मनुष्य देखे कि सूरज और चाँद का अपनी अपनी परिधि में रहना और समय से निकलना और डूबना चाहे वह पृथ्वी के घूमने के फलस्वरूप उदय व अस्त हो रहा हो अल्लाह कि कुदरत का कितना विचित्र नमूना है।

6. सितारे अत्यंत ऊँचाई पर हो कर भी अल्लाह के समक्ष झुके हुए हैं और उन का झुकना बाह्य रूप से अल्लाह के आदेश के आगे झुकना है। उदाहरण के तौर पर उन को आसमान में जिस जगह पर और जिस तरह से रखा है उस जगह पर और उसी तरह से रहना तथा निरंतर चक्कर काटते रहना इस की स्पष्ट दलील है। इसी प्रकार पृथ्वी पर वृक्ष उस के आदेश के आगे झुके हुए हैं यहाँ तक कि कोई पत्ता उस के आदेश के बग़ैर नहीं हिलता और उन के साथे उस के आगे झुके होने का द्योतक है। यह उस की कुदरत की कैसी विचित्र निशानी है।

सितारों और वृक्षों के सज्दा करने का ज़िक्र सूरह हज्ज आयत १८ में भी हुआ है।

7. आसमान को अल्लाह तआला ने ऐसा बुलंद कर दिया है कि आधुनिक विज्ञान भी अपने विकसित संसाधनों के बावजूद इस की बुलन्दी को छू नहीं सकी है। यह उस की कुदरत के चमत्कार का ऐसा सबूत है कि प्रत्येक व्यक्ति इसे खुली आँखों से देख सकता है।

8. मीज़ान (तुला) न्याय के अर्थ में आता है और वही यहाँ अभिप्रेत है। आसमान की बुलन्दी की तरफ़ जब निगाहें उठती हैं तो आसमानी नक्षत्रों की एक ऐसी व्यवस्था की अनुभूति होती है जो अत्यंत संतुलित है और कोई चीज़ भी रत्ती भर संतुलन से हटी हुई नहीं है। अगर कोई चीज़ असंतुलित हो जाए या अपने संतुलन से हट जाए तो यह व्यवस्था एक भयावह दुर्घटना का शिकार हो जाए इस से ज़ेहन कायनात के रब के संतुलन एवं न्याय प्रिय होने के गुण की ओर चला जाता है कि वह न्याय करने वाला है और न्याय को पसंद करता है। इसी लिए उस ने कायनात की इस व्यवस्था में कमाल दर्जे का संतुलन रखा है मतलब यह कि देख सकने वाली आँखें रखने वाले, आसमान

और ज़मीन के बीच एक न्याय तुला को लटकता हुआ देख सकते हैं। और यह अभौतिक तुला अर्थात् आध्यात्मिक तुला भी अल्लाह की करिश्मा साज़ी ही है।

9. यह न्यायिक तुला जो ज़मीन और आसमान के बीच स्थापित है और अतर्दृष्टि से देखा जा सकता है मनुष्य को न्याय का पाठ दे रहा है कि वह सत्य मार्ग पर जमा रहे और न्याय के विरुद्ध कोई काम न करे, न अपने प्रभु के प्रति और न प्रभु के बन्दों के प्रति।

10. जब न्याय तुला का वर्णन हुआ तो उस की मुनासिबत से उस तुला की स्थापना इस लिए की है ताकि तुम अपने रोज़ाना की ज़िन्दगी में इस से रहनुमाई हासिल करो और न्याय के साथ तौलो तथा तौलने में डंडु न मारो कि यह बहुत बड़ी हक़ तल्फ़ी भी है फ़रेब देना भी है और बड़ा गुनाह भी।

सूरह मुतफ़्फ़िरीन में नाप तौल में कमी करने वालों को बड़े अज़ाब की धमकी सुनाई गई है।

11. अर्थात् ज़मीन को इस क़ाबिल बनाया कि इन्सान और समस्त जीव जन्तु इस पर आबाद हो सकें। विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को चाँद पर पहुँचा दिया किन्तु वास स्थल बनाने के लिए उसे उचित एवं अनुकूल नहीं पाया यही हाल दूसरी नक्षत्रों का भी है कि वे इस क़ाबिल नहीं कि मनुष्य वहाँ जीवन गुज़ार सके। किन्तु पृथ्वी एक ऐसा मण्डल है जहाँ जीवन गुज़ारने की सारी सहूलतें और आराम उपलब्ध है जो इस बात का सबूत है कि सृष्टा ने पृथ्वी को अपनी सृष्टि (जीवों) के लिए विशेष रूप से बनाया है।

12. ज़मीन पर मनुष्य को रोज़ी मितली है वह भी उस की मेहरबानी ही का परिणाम है और इस में उस की खूबियत, उस की पालनहारी, और संपूर्ण कुदरत की भव्य निशानियाँ हैं। यहाँ मिसाल के तौर पर कुछ नेमतों का वर्णन हुआ है। मेवे कैसे स्वादिष्ट, रंगबिरंगे और कई नमूनों के पैदा किए गए हैं। खजूर ही को लीजीए उस का गुदा इस तरह झिल्ली में लिपटा हुआ है कि साफ़ नज़र आता है कि उसी राज़िक़ (रोज़ी देने वाले) ने यह सब तैयारी इस लिए की है ताकि गूदा सुरक्षित रहे और मनुष्य को यह नेमत अच्छे रूप में मिल जाए।

13. अनाज के एक एक दाने पर बारीक पत्ती का कवर चढ़ा हुआ होता है जिस के अन्दर वह सुरक्षित रहता है। और यह पत्ती या छिलका भुस का काम देता है जो जानवरों का खाना है। मिसाल के तौर पर गेहूँ के दाने पर जो तह चढ़ी हुई होती है वह पीसने पर भुस बन जाती है और चावल के दाने पर तो छिलका होता है इसी तरह चने पर भी। मतलब यह कि अनाज के एक एक दाने को पैक कर के सुरक्षित रूप में मनुष्य को पहुँचाया जा रहा है। यह तैयारी कितनी चकित कर देने वाली

है। और आजीविका का यह सामान कितना उत्तम है।

14. “रेहान” खुशबूदार वनस्पति को भी कहते हैं और फूल को भी। मनुष्य को अल्लाह तआला ने एक विचित्र चाह यह भी प्रदान की है कि खुशबू से वह मुग्ध होता है। उस की इस चाह को पूरा करने के लिए खुशबूदार वनस्पति जैसे लौंग दारचीनी आदि और तरह तरह के फूल, जैसे गुलाब चमेली आदि पैदा किये गए हैं। ये फूल कैसे नर्म, नाज़क और खूबसूरत होते हैं और इन की खुशबू किस तरह दिमाग़ को ताज़गी प्रदान करती है, मनुष्य के सौंदर्यबोध की पूर्ति कैसी खूबी के साथ की गई है।

15. संबोधन दो समूहों अर्थात् इन्सान और ज़िन्नो से है जैसा कि आगे आयत ३३ में स्पष्ट रूप से “ऐ इन्सान और ज़िन्न के समूहो।” कह कर संबोधन किया गया है।

16. “आला” को आम तौर से नेमतों के अर्थ में लिया जाता है जो शब्दकोष की दृष्टि से सही है किन्तु यह इस शब्द का मूल भावार्थ नहीं है। मूलरूप से यह शब्द जैसा कि अरब की कविताओं में प्रयुक्त हुआ है उन कामों के लिए इस्तेमाल होता है जो खूबी के हों और हिकमत और उत्तम ढंग से अन्जाम देने के कारण अचम्भे में डालने वाले हों। अतः तफ़्सीर तबरी में इस का एक अर्थ कुदरत भी उद्धृत किया गया है। (देखिए तफ़्सीर तबरी जिल्द २७, पृष्ठ ७३)

और इमाम राज़ी ने भी आयत की एक व्याख्या यह बयान की है कि :

“मज़क़ूरा (वर्णित) आयत कुदरत के बयान में है न कि नेमत के बयान में।” (तफ़्सीर राज़ी जिल्द २९ पृष्ठ ९८)

और अल्लामा फ़राही ने इस पर वैज्ञानिक बहस की है तथा इस का अर्थ करिश्मों और प्रशंसनीय कार्य के बयान किये हैं। (देखिए मुफ़रदातुल कुर्आन फ़राही, पृष्ठ ११)

इस सूरह में यह आयत ३१ बार दोहराई गई है और हर जगह नेमतों ही का ज़िक्र नहीं है बल्कि अज़ाब का भी ज़िक्र हुआ है तथा सूरह का केन्द्रीय विषय भी क्रियामत के घटित होने से सम्बन्धित है इस लिए कुदरत की करिश्मा साज़ीयो की तरफ़ बार बार ध्यानाकर्षित किया गया है। अतः इस आयत के अनुवाद में इस का अधिक ख़्याल रखा गया है।

तक्रज़ीब (झुटलाने) का तअल्लुक़ जब किसी चीज़ से हो तो उस का अर्थ इन्कार करने के होते हैं कामूस में है :-

وَكَذَّبَ بِالْأَمْرِ تَكْذِيبًا وَكَذَّابًا أَنْكَرَهُ

“किसी बात की (या किसी चीज़) की तक्रज़ीब की अर्थात् उस का इन्कार किया”। अलक़ामूस लिलफ़ीरोज़ाबादी जिल्द १ पृष्ठ १२७)

मनुष्य को उस ने ठीकरी की तरह खनखनाती मिट्टी से पैदा किया । और जिन को आग के शोले से पैदा किया। तो (ऐ मनुष्यों एवं जिनों के समूह) तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे? वह दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का रब है । तो तुम अपने रब की किस किस कुदरत का इन्कार करोगे? (अल-कुआन)

14. मनुष्य को उस ने ठीकरी की तरह खनखनाती मिट्टी से पैदा किया।¹⁷

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٣﴾

15. और जिन्न को आग के शोले से पैदा किया।¹⁸

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَّارٍ ﴿١٤﴾

16. तो (ऐ मनुष्यों एवं जिन्नों के समूह) तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे?¹⁹

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾

17. वह दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का रब है।²⁰

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٦﴾

18. तो तुम अपने रब की किस किस कुदरत का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٧﴾

19. उस ने दो समुद्रों को छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएँ।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَنِ ﴿١٨﴾

20. उन के बीच एक परदा बाधक रहता है जिस से वे आगे नहीं निकलते।²¹

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَنِ ﴿١٩﴾

21. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन चमत्कारों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٠﴾

22. इन से मोती और मरजान निकलते हैं।²²

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢١﴾

23. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन कमालात का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٢﴾

24. उसी के इस्त्रियार में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊँचे उठे हुए जहाज़।²³

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٣﴾

25. तो तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾

26. ज़मीन पर जो भी है फ़ना होने (मिट जाने) वाले हैं।²⁴

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٥﴾

27. और तुम्हारे रब ही की हस्ती बाक़ी रहने वाली है जो प्रतापवान और उदार स्वरूप है।²⁵

وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٦﴾

17. अर्थात् ऐसी मिट्टी से जो ठीकरी की तरह पकी हुई हो। मनुष्य का ढाँचा जब कि दूसरी जगहों पर पुष्टि है सड़ी हुई मिट्टी से तैयार किया गया था। इस के बाद उस को सुखा कर के पकी हुई मिट्टी की तरह कठोर बना दिया गया और जब उस में रह फूँक दी गई तो वह गोश्त पोस्त का इन्सान बन गया। अल्लाह की कुदरत का कितना अजीब नमूना है इन्सान। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट २४)

18. जिस प्रकार मनुष्य को ज़मीन की मिट्टी से पैदा किया गया है उसी प्रकार जिन्न को इसी ज़मीन पर पाई जाने वाली आग से पैदा किया गया है अर्थात् उस की लू से। इसी लिए जिन्न एक सूक्ष्म सृष्टि है जो दिखाई नहीं देती और जिन्न की रफ़्तार बहुत तेज होती है। जिन्न की इस तरह पैदाइश अल्लाह की कुदरत का करिश्मा ही है। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट २५)

19. यह आयत इस सूरह में बार बार दोहराई गई है जो मात्र पुनरावृत्ति के लिए नहीं बल्कि ध्यान को अल्लाह के एहसानों, कमालों और करिश्मों पर केन्द्रित करने और दिल एवं रूह को जागृत करने के लिए है। इस पुनरावृत्ति का उदाहरण ज़बूर (भजन संहिता) में भी मिलता है जिस के अध्याय १३६ में वाक्य “उस की करुणा सदा की है” २६ बार दोहराया गया है :-

“यहोवा का धन्यवाद करो, क्यों कि वह भला है

कि उस की करुणा सदा की है

.....उस को छोड़ कर कोई बड़े बड़े आश्चर्य कर्म नहीं करता

कि उस की करुणा सदा की है

उस ने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया

कि उस की करुणा सदा की है

उस ने पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया है

कि उस की करुणा सदा की है

उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियाँ बनाई

कि उस की करुणा सदा की है

दिन पर प्रभुता करने के लिए सूर्य को बनाया

कि उस की करुणा सदा की है

और रात पर प्रभुता करने के लिए चन्द्रमा और तारागण को बनाया

कि उस की करुणा सदा की है

(भजन संहिता अध्याय १३६)

इस से अन्दाज़ा होता है कि ऐसी शैली आसमानी किताबों की विशेषताओं में से है। और शिक्षा एवं प्रशिक्षण की दृष्टि से इस का बड़ा महत्व है।

20. साधारण अर्थों में तो ज़मीन पर एक ही पूरब और एक ही पश्चिम हैं किन्तु सर्दियों के मौसम में सूरज का उदय एवं अस्त स्थल क्षितिज के सिरे को पहुँच जाता है और गर्मियों के मौसम में दूसरे सिरे को जिस से मौसम के परिवर्तन सामने आते हैं और यह सब कुछ एक नियम के साथ होता है इस मुनासिबत से सूरज के उदय और अस्त के दो पूरब और दो पश्चिम हुए। और यह भी अल्लाह की कुदरत की बड़ी निशानी है।

एक और पहलू से भी दो पूरबों और दो पश्चिमों का होना सिद्ध होता है। उत्तरी ध्रुव में जहाँ ६ महिने दिन रहता है, सूरज सर पर नहीं रहता बल्कि एक किनारे पर चलता है, पूरब से निकल कर जब पश्चिम में पहुँचता है तो डूबता नहीं बल्कि फिर पूरब की ओर चलता है, इसी प्रकार वह एकदिशा से दूसरी दिशा में चक्कर काटता है। उत्तरी ध्रुव के करीबी इलाके में जहाँ इन्सानों का आना जाना है, यह दृश्य दिखाई देता है उन दिनों में पश्चिम भी पूरब बन जाता है। इसी प्रकार दक्षिणी ध्रुव पर भी ६ महिने दिन और ६ महिने रात रहती है। तो कैसा कमाल है कुदरत का।

21. इस की व्याख्या सूरह फुरक़ान नोट ७१ में गुजर चुकी।

22. मरजान (Coral) एक पानी का वृक्ष होता है जिसे समुद्र में कीड़े बनाते हैं, पत्थर की तरह कठोर होता है और रंग खूबसूरत गुलाबी और कुछ दूसरे रंग भी होते हैं। इस की गिन्ती जवाहरात में होती है और यह भव्यता एवं वैभव के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अल्लाह तआला ने यह तैयारीयाँ इस लिए की है ताकि मनुष्य की सौंदर्य भावना की तृप्ति का साधन हो और जिस विचित्र तरीके से किया है वह उस का करिश्मा ही है।

इस आयत के बारे में एक उलझन यह प्रस्तुत की जाती है कि मोती और मरजान केवल समुद्र से निकलते हैं जब कि आयत में समुद्र और दरया दोनों से निकलने का वर्णन है इस लिए कुछ मुफ़स्सिरिन ने इस का यह मतलब बयान किया है कि दोनों के संग्रह से ये चीज़ें निकलती हैं। बच्चा यद्यपि माँ के पेट से निकलता है लेकिन वह माँ और बाप दोनों की औलाद होता है। किन्तु यह दावा सही नहीं कि मोती केवल समुद्र से निकलते हैं बल्कि दरया से भी निकलते हैं जिस का पानी मीठा होता है। नीचे हम इन्साइक्लोपीडीया आफ़ मिनरल्स एन्ड जेम स्टोन की कुछ पंक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिस से इस दावे का खण्डन होता है।

“They are found in both sea water and fresh water Pearls are found in the Persian Gulf, the Gulf of Manaar between

Ceylon and India, the Red Sea, the Gulf of Mexico and Panama and the waters of Australia and Venezuela. Fresh water pearls are found in many rivers including those of Scotland and North America in particular the Mississippi river."

(The Encyclopedia of Minerals and Gen Stones by Michal O' Donaghne Orbis Publication, London, P.286)

अर्थ :- "मोती दोनों में पाये जाते हैं, समुद्र के पानी में भी और दरया के पानी में भी..... मोती फारस की खाड़ी मनार की खाड़ी जो कि भारत और सिरीलंका के बीच में है। लाल सागर, मेक्सिको और पनामा की खाड़ी और आस्ट्रेलिया तथा वेन्जुएला से दूर पानी में। मीठे पानी के मोती बहुत से दरयाओं में पाये जाते हैं। स्काटलैंड सहित और उत्तरी अमरीका के दरयाओं के और विशेष रूप से मिसिसिप्पी के दरिया में जवाहरात की इस इंसाइक्लोपीडीया के पृष्ठ १२७ पर भी यह स्पष्टीकरण मौजूद है कि :-

"Pearls may be obtained from both fresh water and sea water molluses."
(P. 127).

अर्थ :- मोती मीठे पानी के सीपों से भी प्राप्त किए जा सकते हैं और खारे पानी के सीपों से भी।"

23. पानी में कितनी ही चीजें डूबती हैं लेकिन बड़े बड़े जहाज जो पहाड़ों की तरह ऊँचे उठे हुए होते हैं। समुद्र में खड़े हो जाते हैं। क्या यह अल्लाह की कुदरत का जलवा नहीं है? उन जहाजों पर उस का कन्ट्रोल ऐसा है कि जब वह चाहता है जहाज को डुबो देता है।

आयत से यह बात भी ज्ञात हुई कि कुर्आन के अवतरण के समय में भी बड़े बड़े जहाज होते थे।

24. अरबी में "मन " अर्थात् "जो" प्राणधारियों के लिए आता है। मतलब यह है कि ज़मीन पर जो सृष्टि भी जीवित है उस को एक दिन मरना और मिट कर रह जाना है। यह और बात है कि अल्लाह क्रियामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और जिन्नों तथा इन्सानों के दोनों समुदायों को वह अपने समक्ष जवाब देही के लिए हाज़िर करेगा। बाद की आयतों में यह बात स्पष्ट रूप से बयान हुई है।

25. अर्थात् अल्लाह की हस्ती जो महान, प्रभुत्वशाली, और प्रतिष्ठा प्राप्त है हमेशा बाक़ी रहने वाली है। वह अपने को बाक़ी रखने के लिए न किसी का मोहताज है न उस की महानता, संप्रभुता एवं प्रतिष्ठा में कभी कोई अंतर आ सकता है। वह अपने आप में स्वयं बाक़ी है। रही बात सृष्टि की तो उस का रहना उस के रब की मर्जी पर ही निर्भर है।



आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब उस से माँगते हैं। हर रोज़ वह एक नई शान में है। तो तुम अपने रब के किन किन कमालात का इन्कार करोगे? ऐ दो बड़े समूहो। हम तुम्हारे लिए निवृत्त हुए जाते हैं। तो तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे ? ऐ इन्सान और जिन्न के समूह !अगर तुम आसमान और ज़मीन की सरहदों से निकल सकते हो तो निकल जाओ, नहीं निकल सकते बग़ैर इख्तियार के। (अल-कुआन)

28. तो तुम अपने रब की किन किन खूबियों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾

29. आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब उस से माँगते हैं।²⁶ हर रोज़ वह एक नई शान में है।²⁷

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

30. तो तुम अपने रब के किन किन कमालात का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٠﴾

31. ऐ दो बड़े समूहों।²⁸ हम तुम्हारे लिए निवृत्त हुए जाते हैं।²⁹

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيَّهَ الثَّقَلَيْنِ ﴿٣١﴾

32. तो तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे ?³⁰

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٢﴾

33. ऐ इन्सान और जिन्न के समूह ! अगर तुम आसमानों और ज़मीन की सरहदों से निकल सकते हो तो निकल जाओ, नहीं निकल सकते बग़ैर इख्तियार के।³¹

يَمْعَشَرُ الْجِنُّ وَالْإِنْسُ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾

34. तो तुम अपने रब की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

35. तुम पर आग के शोले और धुँवा ³² छोड़ दिया जाएगा। फिर तुम अपना बचाव न कर सकोगे।³³

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْاِظٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرِينَ ﴿٣٥﴾

36. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन कमालों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

37. (क्या हाल होगा) जब आसमान फट जाएगा और चमड़े की तरह लाल हो जाएगा।³⁴

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

38. तो तुम अपने रब के किन किन करिश्मों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٨﴾

39. उस रोज़ किसी इन्सान या जिन्न से उस के अपराध के बारे में पूछा नहीं जाएगा ?³⁵

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌ ﴿٣٩﴾

40. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन कमालों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

26. अर्थात् फ़रिश्ते हों, इन्सान हों या जिन्न सब उस के मोहताज हैं और उस के समक्ष अपनी आवश्यकताएं और हाजतें रखते हैं।

27. अर्थात् वह हर घड़ी एक नई शान में है कि वह अपनी सृष्टियों की तरह तरह की हाजतें पूरी करता है। उन की दुआएँ सुनना, बिमारों को अच्छा करना, कमजोरों की सहायता करना, मजलूमों की फ़रियादें सुनना, बेकसों की मदद करना, खतरों में घिरे हुए लोगों को बचाना, कष्टों से मुक्ति देना और मुश्किलें आसान करना। गुनाहों को माफ़ करना बन्दों को हिदायत देना और उन्हें अपनी रहमत और उदार अनुग्रह से अलंकृत करना, विजय एवं सफलता और प्रतिष्ठा एवं प्रभुता प्रदान करना, सार यह कि असंख्य काम हैं जिन को अन्जाम देने में वह ऐसा लगा हुआ है कि कोई दिन इस से ख़ाली नहीं।

28. “सक़ल **ثقل**” वज़नी भारी भरकम और उत्तम चीज़ को कहते हैं। अरबी की मशहूर डिक्शनरी क्रामूस में है :-

وَالثَّقْلُ كُلُّ شَيْءٍ نَفِيسٍ مَّصُونٍ وَمِنْهُ الْحَدِيثُ
إِلَى تَارِكٍ فِيكُمْ الثَّقَلَيْنِ - (القاموس جلد ३ ص २५२)

अर्थ :- **ثقل** सक़ल अर्थात् हर उत्तम और सुरक्षित वस्तु। इसी अर्थ में वह हदीस है जिस में बयान किया गया है कि मैं तुम्हारे बीच दो भारी चीज़ें छोड़ रहा हूँ।” (अल क्रामूस जिल्द ३ पृष्ठ २५२) इन्सान और जिन्न ज़मीन पर दो बड़े और महान गिरोह हैं जो अन्य सभी सृष्टियों से प्रमुख हैं। इस लिए उन को “सक़लान” कहा गया है।

29. यह बात चेतावनी स्वरूप है। अर्थात् हम अतिशीघ्र तुम्हारी ओर हिसाब किताब के लिए निवृत्त होते हैं और तुम्हारी ख़बर लेते हैं।

30. क्रियामत के दिन जब अल्लाह तआल अपनी अदालत बरपा करेगा और दोनों गिरोहों की पेशी होगी तो तुम उस की करिशमा साज़ियों को अपनी आँखों से देखोगे यद्यपि कि आज तुम उन का इन्कार कर रहे हो।

31. आसमानों और ज़मीन की सरहदों से तात्पर्य इस जगत की सीमाएँ हैं और इन्सान और जिन्न विवश हैं कि इसी जगत में रहे। आसमान में जिन्न अपनी चलत फिरत रखते हैं और अब इन्सान भी अंतरिक्ष में आ जा रहा है। परन्तु यह आना जाना इस जगत की सहरदों से बाहर नहीं है। वे इस जगत के बाहर कहीं नहीं जा सकते। अगर जा सकते हैं तो इस सूरत में जब कि उन्हें अल्लाह तआला इस का इख्तियार प्रदान करे। दूसरे

शब्दों में अल्लाह की तरफ़ से इस का पासपोर्ट मिल जाए। अभिप्रेत यहाँ इन्सानों और जिन्नों की बेबसी को ज़ाहिर करना है कि जब वे अल्लाह की बनाई हुई इसी दुनिया में रहने के लिए विवश हैं तो फिर इस से बगावत कर के उन्हें कहाँ पनाह मिल सकती है?

यहाँ इस भ्रम का निदान भी होना चाहिए कि मनुष्य ने अंतरिक्ष में पहुँच कर ज़मीन की **اقطار** (सीमाओं) से निकलने में सफलता प्राप्त की है। आयत में ज़मीन से पहले आसमानों का जिक्र हुआ है इसी लिए **اقطار السموات والارض** (आसमानों और ज़मीन की सरहदों) कहा गया है और इस से तात्पर्य कुल मिलाकर अपना यह जगत है वरना अगर ज़मीन के आकर्षण से बाहर अंतरिक्ष में निकल जाना अभिप्रेत होता तो यह चैलेंज जिन्नों को कैसे किया जा सकता था जो पहले ही से आसमानों में चलते फिरते रहे हैं।

32. “नुहास” का अर्थ लिसानुलअरब में धुवाँ दिया हुआ है। और अधिकतर मुफ़स्सिरीन ने धुआँ ही मुराद लिया है और वही यहाँ उचित भी है।

33. यहाँ क्रियामत के दिन का हाल बयान हो रहा है कि उदहण्ड इन्सानों और जिन्नों पर आसमान से आग के शोले बरसाए जाएंगे और धुआँ छोड़ दिया जाएगा। फिर अल्लाह के कोड़ों का किस तरह इन्कार करोगे?

34. अर्थात् क्रियामत के दिन ऐसा मालूम होगा जैसे आसमान पर आग लग गई है और यह नील गगन लाल आसमान में परिवर्तित हो गया है। यह इशारा है आसमान में होने वाले ज़बरदस्त परिवर्तन की तरफ़। जब आसमान आग का समा दिखला रहा होगा तो मनुष्य को होश कहाँ रह जाएगा। अल्लाह की क्रुदरत का यह प्रत्यक्ष दर्शन भी एक दिन मनुष्य कर ही लेगा परन्तु आज वह इस का इन्कार कर रहा है और समझ रहा है कि ये आसमान और यह ज़मीन हमेशा इसी तरह रहेंगे।

35. इस का यह मतलब नहीं कि अपराधियों से पूछ गछ नहीं होगी। उन से जैसा कि कुर्आन ने दूसरी जगहों पर स्पष्ट किया है कि कड़ी पूछ ताछ होगी। यहाँ जो बात अभिप्रेत है वह यह है कि अपराधियों से हथ्र के मैदान में किसी को भी उन के अपराधों के बारे में पूछने की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि उन के गुनाह के लक्षण उन के चेहरे मोहरे से ज़ाहिर हो रहे होंगे। और उन का हुलिया देखते ही उन्हें अपराधी की हैसियत से पहचाना जाएगा। अतः आगे आयत ४१ में इस को और स्पष्ट रूप से बयान कर दिया गया है।

41. मुजरिम अपने चेहरों से पहचान लिए जाएंगे और उन्हें माथे के बाल और पाँव पकड़ कर घसीटा जाएगा।

يَعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي
وَالْأَقْدَامِ ۝۴۱

42. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन कमालों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۴۲

43. यह वही जहन्नम है जिस का मुजरिम इन्कार करते रहे।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝۴۳

44. वे उस के और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगाते रहेंगे।³⁶

يُطَوَّفُونَ فِيهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ ۝۴۴

45. तो तुम अपने रब की कुदरत के किन किन कमालों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۴۵

46. और उस के लिए जो अपने रब के समक्ष खड़े होने से डरा, दो बाग होंगे।³⁷

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَيْنِ ۝۴۶

47. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे ?³⁸

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۴۷

48. दोनो बहुत सी डालियों वाले होंगे।³⁹

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝۴۸

49. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۴۹

50. दोनों में दो ख़ोत जारी होंगे।⁴⁰

فِيهِمَا عَيْنٌ تَجْرِي ۝۵۰

51. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۵۱

52. उन में हर मेवे की दो क्रिस्में होंगी।⁴¹

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَيْنِ ۝۵۲

53. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝۵۳

54. वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए बैठेंगे जिन के अस्तर मोटे रेशम के होंगे।⁴² और बागों के फल झुके पड़े होंगे?⁴³

مُتَكِّينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَاتٍ
الْجَنَّتَيْنِ دَارٍ ۝۵۴

36. अर्थात् जहन्नम में जलते हुए जब उन्हें जोर की प्यास महसूस होगी तो वे पानी की तरफ दौड़ेंगे मगर पानी भी ऐसा गर्म होगा कि बिल्कुल खौलता हुआ। इस प्रकार वे जहन्नम में आग और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर काटते रहेंगे।

अल्लाह ने जहन्नम को अपने प्रकोप का कैसा प्रतीक बनाया है और उस में कैसी दुखदायिनी यातनाएँ रखी हैं यह भी अल्लाह की कुदरत के अजायब ही में से है।

37. अपने रब के समक्ष हाज़िरी का डर गुनाहों से बचाता और अपने अनिवार्य कर्तव्यों तथा ज़िम्मेदारियों को अदा करने पर आमादा करता है। यह डर जितना अधिक होगा उतना ही चरित्र व आचरण अच्छा होगा।

अल्लाह के समक्ष पेशी से डरने वाले जन्नत में दाखिल होंगे जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को दो बाग़ दिये जाएंगे। दो बाग़ दो किस्म के होंगे। ताकि वे ख़ूब लाभान्वित हों।

38. अल्लाह की नवाज़िशों का इन्कार करने वाले इन्कार करते रहें मगर सुन लो कि अल्लाह कैसी कैसी

नवाज़िशों से अपने बन्दों को जो उस से डरते रहे नवाज़ने वाला है।

39. जब वृक्ष और उन की डालियाँ बहुत सी होंगी तो फल भी भरपूर मात्रा में होंगे तथा बाग़ों की रौनक में भी वृद्धि होगी।

40. अर्थात् प्रत्येक बाग़ में एक स्रोत होगा जो उस को हरा भरा रखेगा।

41. जिस तरह बाग़ दो प्रकार के होंगे उसी तरह उन के मेवे भी दो प्रकार के होंगे अपने स्वाद और अपनी अन्य विशेषताओं की दृष्टि से।

42. जब अस्तर मोटे रेशम का होगा तो ऊपर का हिस्सा कितना नज़ीस होगा।

43. अर्थात् उन बाग़ों की डालियों में फल झुके पड़े होंगे ताकि आसानी से उनको तोड़ा जा सके। दुनिया में कितने ही वृक्षों के फल ऊँचाई पर होते हैं और उन को हासिल करने के लिए मेहनत करना पड़ती है। मगर जन्नत के वृक्षों और उन के फलों की शान ही निराली होगी।



55. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٥﴾

56. उन में शर्मिली निगाहों वाली (हूरे) होंगी जिन को उन से पहले किसी इन्सान या जिन ने छुआ न होगा ।⁴⁴

فِيهِنَّ قِصِرُتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾

57. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٧﴾

58. जैसे कि वे याकूत और मरज़ान हैं।⁴⁵

كَانَهُنَّ لَيَالِقُوتٌ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

59. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٩﴾

60. भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या होगा ?⁴⁶

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾

61. तो तुम अपने रब की किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦١﴾

62. इन के अलावा दो बाग़ और भी होंगे।⁴⁷

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ﴿٦٢﴾

63. तो तुम अपने रब के किन किन इनामों का इन्कार करोगे ?⁴⁸

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٣﴾

64. दोनों गहरे हरे।⁴⁹

مُدْهَامَتَيْنِ ﴿٦٤﴾

65. तो तुम अपने रब के किन किन करिशमों⁵⁰ का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٥﴾

66. उन में दो खोत होंगे जोश मारते हुए।⁵¹

فِيهِمَا عَيْنَتَيْنِ نَضَّاحَتَيْنِ ﴿٦٦﴾

67. तो तुम अपने रब के किन किन कमालात का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٧﴾

68. उन में मेवे और खजूर और अनार होंगे।⁵²

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

69. तो तुम अपने रब के किन किन इनामों का इन्कार करोगे?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٩﴾

44. नीची निगाहें रखना शर्म और हया का प्रतीक है तथा शर्म और हया औरतों का प्रमुख स्वभाव और उन की शोभा है। जन्नत की हूरें बिल्कुल पाकदामन, आबरूमन्द तथा शर्म और हया की मूरत होंगी। इन्सान के लिए जो हूरें होंगी उन्हें उन जन्नतियों को मिलने से पहले किसी इन्सान ने छुआ तक न होगा। वे बिल्कुल कुवाँरी होंगी। उसी प्रकार जिन्नों को जो हूरें मिलेंगी उन को उन जन्नती जिन्नों से पहले किसी जिन्न ने हाथ न लगाया होगा। ये हूरें इन्सान के लिए इन्सानों की जाति की हूरें और जिन्नों के लिए जिन्न हूरें होंगी। क्यों कि इन्सान और जिन्न दो अलग अलग जातियाँ हैं हर जाति अपनी ही जाति की ओर आकर्षित होती है।

इन आयतों से यह बात भी स्पष्ट हुई कि जन्नत जिस तरह अल्लाह से डरने वाले इन्सानों को मिलेगी उसी तरह उस से डरने वाले जिन्नों को भी मिलेगी।

45. जन्नत की हूरों को याकूत और मरजान की उपमा दी गई है।

याकूत (Ruby) हिन्दी में उसे “माणिक” कहते हैं, एक बहुत ही क्रीमती हीरा होता है जिस का रंग लाल होता है। यह हीरा बहुत साफ़, उज्ज्वल और बहुत ही सुन्दर होता है। मरजान भी जवाहरात में से है और ज़ेवरों में गुलाबी रंग का मरजान इस्तेमाल होता है। मतलब यह कि जन्नत कि हूरें अपनी नफ़ासत अपनी गोरी और गुलाबी रंगत, तथा अपने हुस्न और खूबसूरती में याकूत और मरजान होंगी।

46. अर्थात् अच्छे कर्मों का बदला अल्लाह के यहाँ अच्छा

है। ऐसा नहीं हो सकता कि नेकी का खैया अपनाने वालों का अन्जाम बुरा हो। सुकर्मों को अच्छा सिला ही मिलेगा।

47. ऊपर जिन दो बागों का वर्णन हुआ वे इन दो बागों पर श्रेष्ठता रखते होंगे जिन का वर्णन अब हो रहा है। इस से अन्दाज़ा होता है कि अल्लाह के समक्ष पेशी से डरने वालों को उन के स्टेटस के लिहाज़ से जन्नत में बाग़ प्रदान किये जाएंगे। पहले दो बाग़ निकटतम लोगों के लिए होंगे और दूसरे दो बाग़ साधारण अच्छे लोगों के लिए। इस का अनुमोदन सूरह वाक्रिआ के स्पष्टीकरण से होता है जिस में निकटस्थ लोगों तथा दाहिने हाथ वालों (अस्हाबे यमीन) के लिए अलग अलग इनामात बयान हुए हैं।

48. अर्थात् जो जज़ा (बदले के दिन) के क़ायल नहीं हैं वे इन इनामों के भी जिन से अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को अलंकृत करने वाला है इन्कार ही करेंगे।

49. गहरे हरे रंग के बाग़ से इशारा उन के हरे भरे होने तथा वहाँ कि हरियाली और सुन्दरता की ओर है।

50. जन्नत के इन बागों का हमेशा हरा भरा रहना अल्लाह की कुदरत का कितना बड़ा करिश्मा होगा।

51. अर्थात् जन्नत के इन बागों में पानी की कोई कमी नहीं होगी। ऐसे स्रोत होंगे जिन से पानी उबल रहा होगा और यह वास्तव में अल्लाह की रहमत होगी जो उबल रही होगी।

52. खजूर और अनार मेवों में शामिल हैं लेकिन इन का वर्णन ख़ास तौर से किया गया है क्यों कि खजूर सर्वाधिक मीठा और स्वादिष्ट मेवा है और अनार मन को तृप्त करता है।



70. उन में अच्छे आचरण की हसीनाएँ होंगी।⁵³

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝٤٠

71. तो तुम अपने रब के किन किन नवाज़िशों का इन्कार करोगे !

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝٤١

72. हूरें खेमों में ठहरी हुई।⁵⁴

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝٤٢

73. तो तुम अपने रब के किन किन इनामों का इन्कार करोगे ?⁵⁵

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝٤٣

74. उन को उन (जन्नतियों) से पहले न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी ज़िन्न ने।

لَمْ يَطْبِئْهُمْ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝٤٤

75. तो तुम अपने रब के किन किन इनामों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝٤٥

76. बहुत ही नफ़ीस और हरे सिंहासनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।⁵⁶

مُتَكِّينَ عَلَى رُفُوفٍ خَضِرٍ وَعَبَقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝٤٦

77. तो तुम अपने रब के किन किन इनामों का इन्कार करोगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝٤٧

78. बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो प्रतापवान और उदार स्वरूपी है।⁵⁷

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝٤٨

53. अर्थात् इन में कुछ अन्दरूनी खूबी भी होगी और बाह्य सुन्दरता भी।

54. हूर की व्याख्या सूरह दुखान नोट ५५ में गुजर चुकी। जन्नत के खेमों बहुत ही शानदार होंगे। उन को दुनिया के खेमों जैसा नहीं समझा जा सकता। इन खेमों में हूरें ठहरी होंगी जो अपने पतियों ही से वास्ता रखेंगी। रही जन्नत वालों की पत्नियाँ तो वे अपने पतियों के साथ उन के महल में होगी।

55. आज भी आखिरत का इन्कार करने वाले जब जन्नत की हूरों का जिक्र सुनते हैं तो मज़ाक उड़ाते हैं। वे समझते हैं कि वह मात्र दिल बहलाने की बातें हैं हालाँकि मानव स्वभाव ऐसी ही जन्नत का इच्छुक है। और अल्लाह का वादा है कि वह अपने मुत्तक़ी और परहेज़गार बन्दों को नेमतों भरी जन्नत में दाखिल करेगा जहाँ उस की समस्त इच्छाएँ एवं मनोकामनाएँ पूरी होगी।

56. हरा रंग सुन्दर और आँखों की ठंडक का कारण

होता है। जन्नत के सिंहासन उस की सुन्दरता का उच्च उदाहरण प्रस्तुत कर रही होंगी और उन पर जन्नत वालों का तक़िया लगाए बैठना उन की बादशाही शान का द्योतक होगा।

57. अल्लाह जलाल वाला (प्रतापवान) है इस लिए उस के समक्ष पेशी से तुम्हें डरना चाहिए। और वह बुजुर्गी वाला (उदार स्वरूपी) है इस लिए उस के कमालात और उस की करिश्मा साजियों पर भी विश्वास रखना चाहिए।

उस के नाम की यह बरकत है कि जब उस का जिक्र किया जाता है तो रहमतों का अवतरण होने लगता है। उस के हाथ में ख़ैर और भलाई ही भलाई है। और उस ने अपने नेक बन्दों के लिए आखिरत में जो ख़ैर और बरकतें रखी हैं वे ऐसी हैं कि सब के सब निहाल को जाएँगे। उस के कमालात और उस के करिश्मों की कोई हद नहीं है। और इस का इन्कार वही लोग करते हैं जिन को उस की सही पहचान ही नहीं हो पाई है और जो उस के एहसानों के क्रद्रदान और गुण ग्राहक नहीं हैं।





५६. सूरह वाक्रिआ

नाम :- पहली आयत में “अल-वाक्रिआ” अर्थात् घटित होने वाली घटना क्रियामत का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-वाक्रिआ” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्यकाल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत और कर्म फल स्वरूप इनाम और दण्ड के चित्रण को प्रस्तुत करना और उस का विश्वास पैदा करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में क्रियामत की हौलनाक घटना से खबरदार किया गया है।

आयत ७ से ५६ में आगाह किया गया है कि क्रियामत के दिन लोगों को तीन गिरोहों में विभक्त कर दिया जाएगा। फिर हर

गिरोह का अन्जाम स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

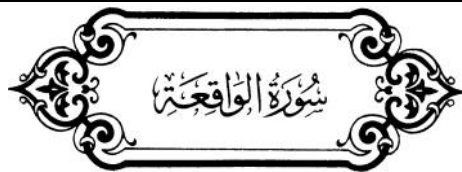
आयत ५७ से ७४ में वे वास्तविकताएँ बयान की गई हैं जिन से कर्मफल स्वरूप इनाम और दण्ड का विश्वास पैदा होता है।

आयत ७५ से ९६ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में कुर्आन से विमुखता बरतने वालों को झंझोड़ा गया है कि होश में आओ और देखो कि कुर्आन जो तुम्हें क्रियामत के अहवाल तथा इनाम और दण्ड से आगाह कर रहा है वह सरासर अल्लाह की वह्य (उस की प्रकाशना) है जिस में शैतान के लिए हस्तक्षेप का कोई मौक़ा नहीं है।

अंत में मौत के समय की बेबसी का हाल बयान करते हुए आखिरी अन्जाम से आगाह किया गया है।

५६. सूरह अल्-वाक्रिआ

आयतें : १६



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब घटित होने वाली (घटना) घटित होगी।¹
2. उस के घटित होने में कोई झूठ नहीं।²
3. नीचे कर देने वाली और ऊपर कर देने वाली।³
4. जब ज़मीन तीव्र विचलन के साथ लरज़ने लगेगी।⁴
5. और पहाड़ रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे।
6. और वे गुबार बन कर उड़ने लगेंगे।⁵
7. और तुम तीन गरोहों में बंट जाओगे।⁶
8. तो दाहिने हाथ वाले,⁷ क्या हैं दाहिने हाथ वाले !
9. और बाएँ हाथ वाले,⁸ क्या हैं बाएँ हाथ वाले !
10. और आगे निकलने वाले, तो हैं ही आगे निकलने वाले।⁹
11. वे मुकर्रब (निकटस्थ) हैं।¹⁰
12. नेमत के बाग़ों में।¹¹
13. बड़ा गरोह अगलों में से होगा।
14. और थोड़े से पिछलों में से।¹²

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ①

لَيْسَ لَوْعَتَيْهَا كَاذِبَةٌ ②

خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ ③

إِذَا رَجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ④

وَبَسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ⑤

فَكَانَتْ هَبَاءً مُتَّبِنًا ⑥

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ⑦

فَأَصْحَبُ الْيَمِينَةِ ⑧ مَا أَصْحَبُ الْيَمِينَةِ ⑧

وَأَصْحَبُ الْمَشْأَمَةِ ⑨ مَا أَصْحَبُ الْمَشْأَمَةِ ⑨

وَالسَّيْقُونِ السَّيْقُونَ ⑩

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ⑪

فِي جَنَّاتٍ التَّعِيمِ ⑫

ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ⑬

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ⑭

1. तात्पर्य क्रियामत है जो निश्चित रूप से घटित होगी।
 2. क्रियामत के घटित होने में न कोई चीज बाधक हो सकती है और न कोई शक्ति उसे टाल सकती है। इस का घटित होना बिलकुल सत्य और अटल है।

क्रियामत केवल संभव ही नहीं बल्कि एक सच्चाई बन कर सामने आने वाली है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए। मगर मौजूदा दौर की शैक्षणिक सांस्कृतिक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था मनुष्य को दुनिया ही में उलझाए रखना चाहती है इस लिए जब तक क्रियामत के प्रकट होने का तेज़ एहसास नहीं उभरता उस का दृष्टिकोण बदल नहीं सकता।

३. अर्थात् क्रियामत कितनों को नीचा कर देगी और कितनों को ऊँचा कर देगी। जो लोग दुनिया में उच्च कहलाते थे हालाँकि वे उस के योग्य पात्र नहीं थे उन्हें क्रियामत नीचा कर देगी। और जो लोग दुनिया में उच्चता प्राप्त नहीं कर सके थे हालाँकि वे उस के योग्य पात्र थे उन्हें क्रियामत उच्चता एवं बुलंदी प्रदान करेगी। इस तरह क्रियामत की घड़ी अपने साथ मानव समाज के लिए एक ज़बरदस्त इन्किलाब लाएगी तथा अपमान और सम्मान के नये पैमाने और नये मेयार कायम होंगे।

4. क्रियामत का ज़लजला ज़मीन को इस तरह हिला देगा कि वह लरज़ने लगेगी और बेपनाह घबराहट का आलम होगा। सूरह हज्ज की शुरू की आयतों में इस विचलन का नक्रशा प्रस्तुत किया गया है तथा सूरह “ज़िलज़ाल” में भी ज़लजले के फलस्वरूप घटित होने वाली घटनाएँ बयान हुई हैं।

5. बड़े बड़े पहाड़ों को देख कर तंग नज़र इन्सान यह समझने लगता है कि ज़मीन हमेशा इसी तरह रहेगी लेकिन कुर्आन एक बड़े इन्किलाब एक बड़े परिवर्तन की खबर दे रहा है जो इस ज़मीन पर सामने आएगा। क्रियामत की घड़ी जब आएगी तो पहाड़ रेज़ा रेज़ा (चूर्ण विचूर्ण) हो कर गुबार की तरह हवा में उड़ने लगेंगे। पहाड़ों को इस लिए हटाया जाएगा ताकि ज़मीन एक चटियल मैदान बन जाए और हथ्र बरपा हो।

6. ये तीन ग़रोह कौन से होंगे इन का वर्णन आगे हुआ है।

7. तात्पर्य अच्छे नेक ईमान वाले हैं जिन के दाहिने हाथ में उन का कर्म पत्र (आमाल नामा) दिया जाएगा। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिकाक़ नोट ७) ध्यान रहे कि कुर्आन ने यहाँ इस बात की पुष्टि नहीं की है कि अवज्ञाकारी अथवा उल्लंघनकारी (फ़ासिक़) मुसलमानों के साथ क्या मामला

किया जाएगा। क्यों कि पहली बात जिस ज़माने में इस सूरह का अवतरण हुआ है उस समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों में बुरे और अवज्ञाकारी मुसलमानों का कोई ग़रोह मौजूद नहीं था। दूसरी बात समझाने बुझाने और इस्लाम को अपने ऊपर लागू करने की दृष्टि से सच्चे ईमान वालों को मिलने वाले इनाम और अपराधी काफ़िरों को मिलने वाले दण्ड को एक दूसरे की तुलना में बयान करना हिकमत का तक्राज़ा था कुर्आन ने दूसरी जगहों पर कुछ ख़ास शर्तों के साथ सिफ़ारिश कुबूल किये जाने का वर्णन किया है। और ऐसे लोगों का मामला बिलकुल अलग है। और नहीं मालूम कि क्रियामत के दिन कैसे कठिन हालात और सज़ाओं से गुज़रने के बाद इन लोगों के लिए सिफ़ारिश का मरहला आ जाएगा।

8. तात्पर्य काफ़िर और अपराधी लोग हैं जिन के बाएँ हाथ में उन का आमाल नामा (कर्म पत्र) दिया जाएगा।

9. अर्थात् जो लोग ईमान लाने के बाद नेकी में आगे निकल गए और दीन के लिए कुर्बानियाँ देने में आगे आगे रहे। वे इनाम पाने वालों में भी सब से आगे अर्थात् अव्वल दर्जे पर होंगे। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट १८०

10. अर्थात् उन लोगों को सब से अधिक अल्लाह का सामीप्य प्राप्त होगा और निकटस्था होने का सम्मान सब से बड़ा सम्मान होगा।

11. अर्थात् जन्नत के नेमत भरे बाग़ों में वे ऐश और आराम के साथ रहेंगे।

12. निकटस्थ लोगों का वर्णन हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुयायियों को इस बात की खुशख़बरी सुना दी गई कि इस उम्मत के प्रथम चरण के लोगों में से एक बड़ी संख्या निकटस्थ लोगों की होगी और बाद के लोगों में भी निकटस्थ होंगे, किन्तु संख्या में कम। अतः सहाबा किराम में अपने सच्चे होने, अच्छे चरित्र एवं आचरण के होने तथा दीन के लिए कुर्बानियाँ देने की दृष्टि से उच्च श्रेणी के लोग अधिक थे और बाद वाले लोगों में इस स्तर के लोग कम होते चले गए। एक हदीस से भी इस की पुष्टि होती है :-

خَيْرُ الْقُرُونِ قُرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ
الَّذِينَ يَلُونَهُمْ.

अर्थ :- “बेहतरीन लोग मेरे दौर के हैं। फिर वे जो इन के बाद आएँगे, फिर वे जो उन के बाद आएँगे।

15. मुरस्सा (जड़े हुए) तख्तों पर।¹³

عَلَى سُرُرٍ مَوْصُونَةٍ ۝

16. आमने सामने तकिया लगाए हुए।¹⁴

مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝

17. उन के पास गर्दिश करेंगे ऐसे लड़के जो हमेशा उसी हालत में रहेंगे।¹⁵

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ۝

18. प्याले और जग और बहती हुई शराब के जाम लिए हुए।¹⁶

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝

19. जिस से न सिर दर्द हो, और न बुद्धि जाती रहे।¹⁷

لَّا يَصَدَّدُونَ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ ۝

20. और मेवे जो वे पसन्द करें।¹⁸

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝

21. और परन्दों के गोश्त जो उन को भाते हों।¹⁹

وَالْحَوِطَرِ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝

22. और उन के लिए हसीन आँखों वाली हूरें होंगी।²⁰

وَحُورٍ عِينٍ ۝

23. जैसे हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती।²¹

كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

24. बदला उन के कर्मों का जो वे करते रहे।²²

جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

25. वे वहाँ न तो कोई बेकार की बात सुनेंगे और न गुनाह की कोई बात।²³

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝

26. बस सलामती ही सलामती की बातें होंगी।²⁴

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝

27. और दाहिने हाथ वाले, तो (क्या शान है) दाहिने हाथ वालों की।²⁵

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ هُمْ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝

28. वे बिन काँटों वाली बेरियों में होंगे।²⁶

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝

29. और तह दर तह केलों।²⁷

وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ۝

30. और फैली हुई छाँव।²⁸

وَقَطْرِ مَسْكُودٍ ۝

31. और बहता हुआ पानी।²⁹

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۝

32. और बहुत सारे फलों में।

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝

13. अर्थात् ये तख्त शाही होंगे जो जवाहरात से जड़े हुए होते हैं।

14. अर्थात् शाही ठाठ के साथ उन तख्तों पर टेक लगाए एक दूसरे के सामने बैठे होंगे। इस से अन्दाज़ा होता है जन्नतियों की मजलिसें कैसी सुव्यवस्थित, शिष्ट और सुसभ्य होंगी। कोई किसी से न मुँह फेरेंगा और न पीठ। बल्कि सब हँसी खुशी दोस्ताना माहौल में रह रहे होंगे।

15. व्याख्या के लिए देखिए सूरह तूर नोट २४

16. अर्थात् उन की सेवा, सत्कार के लिए ये लड़के स्वादिष्ट शर्बतों एवं पेय पदार्थों से भरे जग लिए उपस्थित होंगे और प्यालों में उन्हें पेश करेंगे और छलकते हुए जाम भी जो बिना किसी मिलावट की शराब से भरे होंगे।

17. व्याख्या के लिए देखिए सूरह साफ़ात नोट ३९

18. अर्थात् जन्नत में हर प्रकार के मेवे होंगे जिन में से वे अपने मन पसन्द के मेवे चुन लेंगे। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह तूर नोट २२)

19. अर्थात् जिन परिन्दों के गोशत की उन्हें चाह और रुचि होगी वह उन को मिल जाएगा।

20. व्याख्या के लिए देखिए सूरह तूर नोट १८

21. अर्थात् ऐसे मोती जिन को किसी ने छुआ न हो। बहुत ही साफ स्वच्छ और चमकदार।

22. यह सब कुछ उन को कर्मफल स्वरूप इनाम में दिया जाएगा। और जब वे अपने कर्मों के फल स्वरूप जन्नत की इन नेमतों को पायेंगे तो खुशी से झूम उठेंगे कि हमारी मेहनत ठिकाने लगी।

23. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नबा नोट २२

24. अर्थात् हर तरफ़ से उन्हें सलाम का तोहफ़ा पेश किया जाएगा और जो बातें भी वहाँ होंगी सलामती ही की बातें होंगी।

कोई बात भी ऐसी नहीं होगी जो बुरी लगने वाली हो या जिस से किसी को कष्ट पहुँचे। यह बहुत बड़ी नेमत होगी, जब कि दुनिया में ऐसा माहौल किसी को भी मयस्सर नहीं।

25. दाहिना हाथ बाएँ हाथ कि अपेक्षा मज़बूत होता है। इसे सौभाग्य की निशानी बताया गया है। क्रियामत के दिन जिन लोगों को उन के दाहिने हाथ में आमाल नामा (कर्म पत्र) दिया जाएगा वे बड़े मुबारक लोग और बधाई के पात्र होंगे।

26. बेरी के जिस वृक्ष के काँटे कम होते हैं उन का फल अधिक मीठा होता है। और बेर की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उस की खुशबू बहुत मीठी होती है। और जन्नत के बिन काँटों वाले बेर के वृक्षों का क्या कहना। दुनियाँ के बेरों से तो उन की हल्की सी कल्पना भर ही की जा सकती है।

27. केला एक मीठा और स्वादिष्ट फल है और जन्नत के केलों के स्वाद का क्या कहना। और उन का तह दह तह होना उन के पैदा करने में सलीक़ामन्दी को ज़ाहिर कर रहा होगा और नज़रों में ख़ूब जँच रहा होगा।

28. जन्नत के वृक्ष का साया कितना लम्बा होगा इस का अन्दाज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस हदीस से होता है जिस में इरशाद हुआ है :-

إِنَّ فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةً يَسِيرُ الرَّائِبُ فِي

ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لَا يَقْطَعُهَا. (بخاری کتاب التفسیر)

अर्थ :- “जन्नत में एक वृक्ष ऐसा है कि अगर सवार उस के साये में सौ साल तर चलता रहे तो उस का साया ख़त्म न होगा।” (बुख़ारी किताबुतफ़सीर)

29. अर्थात् जन्नत में पानी की कोई कमी न होगी। वहाँ हमेशा पानी बहता रहेगा।



33. जो न कभी समाप्त होंगे और न उन से रोका जाएगा ।³⁰

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

34. और ऊँचे बिस्तरों में होंगे ।³¹

وَفُشٍّ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

35. उन (की पत्नियों) को हम ने ख़ास उठान पर उठाया होगा ।

إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾

36. और उन को कुंवारी बनाया होगा ।³²

فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

37. प्यारी ³³ और हम उम्र (समसामयिक) ।³⁴

عُرْبًا أَرْبَابًا ﴿٣٧﴾

38. दाहिने हाथ वालों के लिए ।³⁵

لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

39. वे अगलों में से भारी संख्या में होंगे ।

ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأُولَىٰ ﴿٣٩﴾

40. और बाद वालों में से भी भारी संख्या में ।³⁶

وَتِلْكَ مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

41. और बाएँ हाथ वाले ! क्या हाल होगा बाएँ हाथ वालों का ।³⁷

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ هُمَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾

42. वे लू की लपट, ख़ौलते हुए पानी ।

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾

43. और काले धुँएँ के साए में होंगे ।

وَظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُومٍ ﴿٤٣﴾

44. जो न ठंडा होगा और न लाभकारी ।³⁸

لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾

45. ये लोग इस से पहले ख़ुशहाल थे ।³⁹

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾

46. और बहुत बड़े गुनाह पर हट् करते रहे ।⁴⁰

وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْهَنَةِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾

47. और कहते थे क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जाएंगे तो फिर उठाए जाएंगे ? ⁴¹

وَكَانُوا يَقُولُونَ هَٰذَا بَدَأَ مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ إِنَّا إِلَهُ مَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾

48. और क्या हमारे बाप दादा भी ?

أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾

49. कहो निश्चय ही, अगले और पिछले ।

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾

30. जन्नत के फलों का सिलसिला कभी टूटेगा नहीं। दुनिया में फल अपने अपने मौसम में पैदा होते हैं लेकिन जन्नत में सदाबहार वृक्ष होंगे और उन के फल हर समय मिलते रहेंगे। फिर वहाँ फल हासिल करने के लिए कोई रोक टोक भी नहीं होगी। उन को प्राप्त करने के लिए न कोई क्रानूनी बाधा होगी और न मिल्कियत वा संपत्ति का कोई सवाल ही पैदा होगा। हर जन्नती किसी भी रूकावट के बगैर जितना चाहे फल प्राप्त कर सकेगा।

31. जिन से उन की ऊँची शान झलक रही होगी।

32. अर्थात् जन्नत की स्त्रियों को बिल्कुल उचित शरीर प्रदान किये जाएंगे। उन को कुर्वारी बनाया जाएगा चाहे वे दुनिया में औलाद वाली क्यों न रही हों।

33. अर्थात् अपने पति से प्यार करने वाली और प्यारी सूरत वाली, पति की प्रियतमा।

34. व्याख्या के लिए देखिए सूरह सौद नोट ७६

35. अर्थात् ये हसीन और सुन्दर औरतें दाहिने हाथ वालों के लिए होंगी। जो नेक औरतें नेक मर्दों के निकाह में थीं वे जन्नत में भी उन को मिलेंगी और जिन मर्दों की औरतें नेक नहीं थीं उन के विवाह में दूसरी नेक औरतें दी जाएँगी।

तफ्सीलात और व्याख्या में गए बगैर समझने के लिए इतनी बात काफी है।

36. अर्थात् दाहिने हाथ वाले इस उम्मत के शुरू के लोगों में से भी भारी संख्या में होंगे और बाद वालों में से भी भारी संख्या में। यह इशारा है इस बात की तरफ कि इस उम्मत में क्रियामत तक नेक लोग पैदा होते रहेंगे जो जन्नत के अधिकारी बनेंगे। यह बात भी ध्यान में रहे कि कुर्आन ने जन्नत की खुशखबरी मुत्तकियों अर्थात् अल्लाह का डर रखने वालों को सुनाई है। और दाहिने हाथ वाले मुत्तकरी ही होंगे।

37. अर्थात् जिन के बाएँ हाथ में उन का कर्म पत्र (आमाल नामा) दिया जाएगा उन का हाल बहुत बुरा होगा।

38. साया टंडा और आरामदह होता है। किन्तु यह साया काले धुँएँ का होगा जिस से न टंडक ही मिलेगी और न आराम। सूरह मुर्सलात में फ़रमाया गया है :-

لَا ظِلِّيلٌ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ (المرسلات- ३१)

अर्थ :- “ ऐसा साया जो सायादार न होगा और न शोलों से बचा सकेगा।” (मुर्सलात ३१)

39. अर्थात् दुनिया में यह खुशहाल थे इस लिए चाहिए था कि वे अल्लाह की इस नेमत का शुक्र अदा करते लेकिन उन्होंने ने अपनी खुशहाली को कुफ़्र का साधन बनाया।

40. बड़े गुनाह से तात्पर्य शिर्क (बहुदेववाद) है। ये लोग बहुदेववाद और मूर्तिपूजा से बाज आने के लिए किसी तरह न माने बल्कि उसे सही ठहराने पर हठी रहे और इस पर मरते दम तक जमे रहे।

41. क़ब्र में दफ़न हो जाने के बाद शरीर का गोश्त कुछ ही दिनों में मिट्टी में मिल जाता है और केवल हड्डियाँ रह जाती हैं। इस अवस्था को देखते हुए उन लोगों को आश्चर्य होता था कि जब मरने वाले का शरीर बाक़ी नहीं रहा तो फिर उसे किस तरह क्रियामत के दिन उठा खड़ा किया जाएगा। उन्होंने ने अल्लाह की कुदरत की ग़लत धारणा मन में बिठा रखी थी। और अल्लाह अपने रसूल के द्वारा उन के दोबारा उठाये जाने की जो ख़बर दे रहा था उस को भी वे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए। इस तरह व जुर्म पर जुर्म करते गए। बाएँ हाथ वालों के दो संगीन अपराधों का यह वर्णन किया गया है। एक शिर्क और कुफ़्र और दूसरे आखिरत से इन्कार।



50. सब एक नियत समय पर जमा किये जाएंगे।⁴²

لَجَجُوا عَوْنَ ۚ إِلَىٰ مِيقَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾

51. फिर ऐ पथ भ्रष्टों और झुठलाने वालों !

ثُمَّ إِنَّا كُفِّرْنَا عَنْهَا الضَّالِّينَ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٥١﴾

52. तुम ज़क्कूम⁴³ (थूहड़) के वृक्ष का भोजन खाओगे।

لَا تَكُونُونَ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زُقُومٍ ﴿٥٢﴾

53. उसी से पेट भरोगे।

فَمَا لُؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾

54. फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे !

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾

55. इस तरह पियोगे जिस तरह तौंसे (प्यासे) ऊँट पीते हैं।⁴⁴

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ﴿٥٥﴾

56. यह है उन की सत्कार सामग्री⁴⁵ बदले के दिन।

هَذَا نَزَلْنَاهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾

57. हम ने तुम्हें पैदा किया है तो तुम सच क्यों नहीं मानते ?⁴⁶

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ﴿٥٧﴾

58. क्या तुम ने गौर किया जो वीर्य तुम डालते हो।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾

59. उस को (इन्सान का) रूप तुम देते हो या हम देते हैं ?⁴⁷

ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾

60. हम ने तुम्हारे बीच मौत मुकद्दर (नियत) की है⁴⁸ और हम (आजिज़) असमर्थ नहीं हैं।

نَحْنُ قَدْ زَيَّنَّا لَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾

61. इस बात से कि तुम्हारे रूप बदल दें और तुम्हें ऐसी सृष्टि बना दें जिन को तुम नहीं जानते।⁴⁹

عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

62. अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते हो, फिर क्यों याद देहानी हासिल नहीं करते ?⁵⁰

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

63. क्या तुम ने गौर किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो ?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْنَثُونَ ﴿٦٣﴾

64. उस से खेती तुम उगाते हो या उस के उगाने वाले हम हैं ?⁵¹

ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾

65. हम चाहें तो उसे चूरा चूरा कर के रख दें और तुम बातें बनाते ही रह जाओ।

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾

42. अर्थात् आदम से ले कर क्रियामत तक पैदा होने वाले समस्त मनुष्य जन दूसरे शब्दों में पूरी मानव जाति को क्रियामत के दिन उठा खड़ा किया जाएगा ताकि अपने पहले जीवन में किये कर्मों का वे फल पाएँ।

43. जक्कूम (थूहड़) की व्याख्या सूरह साफ़फ़ात नोट ५१ में गुजर चुकी।

44. **هَيِّمٌ** “हीम” उन ऊँटों को कहते हैं जो तेज़ प्यास के रोगी हों। ऐसा ऊँट कितना ही पानी पिये उस की प्यास बुझती नहीं है। यही हाल उन जहन्नमियों का होगा, वे गर्म गर्म पानी पियेंगे मगर उन की प्यास बुझने वाली नहीं।

45. अर्थात् इन अपराधियों का स्वागत, सत्कार क्रियामत के दिन इन सज़ाओं से किया जाएगा। यह कटाक्ष है इस बात को स्पष्ट करने के लिए कि इन लोगों के अपराध इतने संगीन थे कि इन के इनाम पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। इन को कड़ी सजाएँ ही भुगतना होंगी।

46. अर्थात् जब यह एक अखण्डनीय वास्तविकता है कि तुम्हारा सृष्टा अल्लाह ही है तो फिर वह उस दिन से कि जिस दिन सब को अपने किये का बदला मिलना है, ख़बरदार करते हुए तुम्हारी रहनुमाई के लिए जो वह्य नाज़िल कर रहा है उस को सच क्यों नहीं मानते ?

इस आयत से आयत ७१ तक एक अल्लाह का और बदले के दिन का इन्कार करने वालों से कई प्रश्न किये गए हैं ताकि वे सोच विचार करें और उस के बाद सही नतीजे पर पहुँच जाएँ।

47. अर्थात् तुम तो केवल गर्भ में तुच्छ पानी की बूँदें डालते हो इस के बाद उस बूँद को जिन मरहलों से गुज़ार कर बच्चे का रूप दिया जाता है और फिर उस में जिस तरह प्राण फूँक कर उसे सुक्ष्म मनुष्य बना दिया जाता है वह क्या तुम्हारी अपनी कारीगरी है या तुम्हारे रब की ?

48. मौत निश्चित रूप से प्रत्येक मनुष्य को आती है जो उस की बेबसी और अल्लाह की कुदरत और प्रभुत्व का स्पष्ट सबूत है।

49. अर्थात् जो हस्ती तुम्हारी मौत पर पूरी तरह समर्थ है वह तुम्हारे रूप और आकार को बदलने तथा तुम्हें एक दूसरी ही सृष्टी का रूप देने पर भी पूरी तरह समर्थ है।

50. अर्थात् पहली बार इन्सान को पैदा करना अल्लाह के लिए संभव हुआ तो दूसरी बार पैदा करना क्यों असंभव होगा ? अगर मिट्टी से इन्सान पैदा किया जा सकता है तो दोबारा इसी मिट्टी से उसे क्यों नहीं उठा खड़ा किया जा सकता।

51. अर्थात् तुम केवल बीज बोने का काम करते हो। उस से लहलहाती फसल पैदा करना अल्लाह ही का काम है।



66. कि हम तो तावान (क्षतिपूर्ति) में पड़ गए।

إِنَّا لَمُعْرَمُونَ ۝

67. बल्कि हम महसूस हो कर रह गए।⁵²

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝

68. क्या तुम ने इस पानी पर गौर किया जो तुम पीते हो?

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝

69. क्या तुम ने इस को बादल से उतारा है या इस के उतारने वाले हम हैं ?⁵³

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۝

70. अगर हम चाहें तो इस को कड़वा बना कर रख दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते ?⁵⁴

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝

71. तुम ने उस अग्नि पर भी गौर किया जिस को तुम सुलगाते हो।

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝

72. उस का वृक्ष⁵⁵ तुम ने पैदा किया है या उस के पैदा करने वाले हम हैं ?

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۝

73. हम ने उस को याददेहानी का साधन⁵⁶ और मुसाफ़िरों के लिए लाभदायक चीज़ बनाया है।⁵⁷

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ۝

74. तो ऐ नबी, तुम अपने महान रब के नाम की तस्बीह (गुणगान) करो।⁵⁸

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

75. नहीं⁵⁹ मैं क्रसम खाता हूँ सितारों के डूबने के जगहों की।⁶⁰

فَلَا أُقْسِمُ بِوَقَعِ النُّجُومِ ۝

75. और यह बहुत बड़ी क्रसम है अगर तुम जानो।⁶¹

وَأِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَتَّعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝

76. निस्संदेह यह एक इज़्ज़त वाला कुआन है।⁶²

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝

77. एक सुरक्षित किताब में।⁶³

فِي كِتَابٍ مُّكْنُونٍ ۝

78. इस को नहीं छूते, मगर पाकीज़ा।⁶⁴

لَّا يَسُئُهُ إِلَّا الظَّالِمُونَ ۝

80. यह सारे जहान के रब (रब्बुल आलमीन) का नाज़िल किया हुआ है।

تَنْزِيلٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

81. फिर क्या तुम इस कलाम से काहिली बरतते हो।⁶⁵

أَفَبِمَا هَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُّدْهِنُونَ ۝

52. अर्थात् फसल को नष्ट कर दें तो फिर तुम अफ़सोस करने लगे कि हम इस नुक़सान से दब गए। बल्कि लाभ से बिलकुल वंचित हो कर रह गए।

53. बादलों से पानी बरसाना ताकि पीने के काम आए अल्लाह ही का काम है। मौजूदा ज़माने में विज्ञान की प्रगति से मनुष्य यदि इस योग्य हुआ है कि किसी जगह पर बादलों से पानी बरसाए तो यह भी अल्लाह ही की प्रदान की हुई क्षमता है और इस का यह मतलब नहीं है कि बादलों को समुद्रों से उठाने, तथा उन को हवाओं पर सवार कर के वातावरण में फैलाने और फिर दुनिया के विभिन्न भू-भागों में बरसाने पर इन्सान समर्थ हो गया है। यह व्यवस्था मनुष्य की पहुँच से बिलकुल बाहर है। उस को अपनी कोशिश में जो सफलता मिली है वह ऐसी ही है जैसे कोई गुब्बारे में हवा भर दे और फिर यह दावा करे कि हवा पर उसे नियंत्रण प्राप्त हो गया है।

54. समुद्र का पानी खारा और कड़वा होता है किन्तु जब भाप बन कर उठता है और बादलों का रूप धार लेता है तो उस में नमक के अंश नहीं होते। इस लिए बादलों से जो पानी बरसता है वह ख़ालिस होता है। यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है जिस की अनुभूति मनुष्य दिन रात करता रहता है। फिर उस में अपने रब के लिए शुक्र एवं कृतज्ञता का भाव क्यों नहीं पैदा होता? अगर अल्लाह चाहे तो समुद्र से उठने वाले बादलों में नमक के अंश को घोल सकता है और खारे अथवा कड़वे पानी की बारिश हो सकती है।

55. उस ज़माने में “मर्ख” और “इफ़ार” के नाम से दो वृक्ष पाये जाते थे जिन की टहनियों को रगड़ देने से आग पैदा होता थी। हरे वृक्ष से आग पैदा करना अल्लाह की कुदरत का करिशमा ही है।

56. आग जहन्नम की आग को याद दिलाती है। इन्सान को चाहिए कि आग को देख कर अल्लाह के अज़ाब से डरे।

57. उस ज़माने में आग सुलगाने के लिए माचिस आदि ईजाद नहीं हुई थी इस लिए इन वृक्षों की टहनियों को मुसाफ़िर आग सुलगाने के लिए इस्तेमाल करते जो पकाने के भी काम आती और इस से वे गर्मी भी प्राप्त करते। मुसाफ़िरों के लिए यह कितनी बड़ी नेमत थी। मौजूदा दौर में आग सुलगाने के लिए तरह तरह की चीज़ें ईजाद हुई हैं। वे भी नित नई नेमतें ही हैं और इस पर अल्लाह का शुक्र वाजिब है।

58. यह हिदायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आप के मानने वालों को दी गई है, कि इन खुली वास्तविकताओं से यदि लोग आँखें बन्द किये रहते हैं तो बन्द किए रहें। तुम अपने महान रब की पाकी बयान करो कि वह हर तरह के दोष और शिर्क से پاک है, और उस के नाम की तस्बीह

करो। अल्लाह के नाम की तस्बीह, जैसे

سُبْحَانَ اللَّهِ يَا سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

“सुब्हानल्लाह या सुब्हान रब्बीयल अज़ीम” कहना अक्रिदे की धारणा के सही होने का प्रतीक भी है और बेहतरीन इबादत भी।

59. क्रसम से पहले जो “ला ” (अर्थात् नहीं) आता है वह ग़लत बात के खण्डन के लिए आता है। यहाँ इन्कार करने वालों की ग़लत धारणाओं का खण्डन अभिप्रेत है।

60. सितारों के डूबने की जगह से तात्पर्य उन का अपने अस्त स्थल पर डूबना है।

61. सुबह के समय सितारे डूबने लगते हैं तो आसमान की सजी महफिल के उठ जाने का एलान होता है। यह दृश्य प्रत्येक अन्तर्दृष्टि रखने वाले को सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण देता है। इस लिए इस को एक अल्लाह के होने तथा बदले के दिन की ताईद में प्रस्तुत किया गया है। कुर्आन की दअवत इन्हीं बुनियादी बातों की दअवत है इस लिए इस से भी सच्चाई स्पष्ट हो जाती है। सूरह “नज़्म में” भी तारों के डूबने की क्रसम इसी बात पर खाई गई है। और सूरह तकवीर में भी तारों की रफ़्तार उन के छिप जाने, रात के रुख़सत हो जाने और सुबह के प्रकट होने को बदले के दिन के साक्ष्य के रूप में जिस से कुर्आन की सत्यता भी स्पष्ट होती है, प्रस्तुत किया गया है। यहाँ इस क्रसम को बहुत बड़ी क्रसम कहा गया है। मतलब यह है कि आसमान के ये चिन्ह तौहीद अर्थात् एक मात्र अल्लाह के होने तथा बदले के दिन के पक्ष में बहुत बड़ी दलील हैं। क्यों कि इन चिन्हों को प्रत्येक व्यक्ति अपनी आँखों से देख कर के बहुत आसानी से सही नतीजे पर पहुँच सकता है। इस के लिए मन्तिक़ लड़ाने और सुगरा एवं कुबरा (अर्थात् छोटे और बड़े) को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे अन्दर यदि सत्य को पा लेने की लगन है तो तुम इन चिन्हों को देखने में सत्य का दर्शन कर लोगे और तारों के डूबने में भी तुम को अल्लाह का बहुत बड़ा करिशमा दिखाई देगा।

62. कुर्आन का अर्थ अधिकता के साथ पढ़ी जाने वाली किताब के हैं। कुर्आन अल्लाह का कलाम होने और अपने उत्तम गुणों के चलते इस लायक़ है कि उसे बार बार पढ़ा जाए। और इस की तैयारी शरीअत ने इस तरह की है कि हर नमाज़ में बल्कि उस की हर रकअत में कुर्आन को पढ़ा जाता है। इस के अलावा भी इस की तिलावत इतनी अधिकता के साथ होती है कि दुनिया की कोई किताब इस के मुकाबले में पेश नहीं की जा सकती। इस की तिलावत का बहुत ही लुभावना एवं रूह को भाने वाला दृश्य रमज़ान की रातों में देखा जा सकता है।

कुआन की विशेषता “करीम” बयान हुई है जिस का अर्थ इज्जत वाला भी होता है और फ़ैज़ (लाभ) प्रदान करने वाला भी। कुआन बहुत ही महान, महत्वपूर्ण, और ऊँचा कलाम है। इस में जो बात भी कही गई है, बुलन्द सतह से कही गई है। इस कलाम की एक शान है और वह हर दृष्टि से आदरणीय है। इस के अलावा उस के लाभों (फ़ैज़) का मामला ऐसा है कि जैसे ख़ैर और भलाई के स्रोत बहा दिए गए हैं। बड़े निर्लज्ज हैं वे लोग जो इस का आदर न करें।

63. “किताब मकनून” (सुरक्षित किताब) से तात्पर्य लौहे-महफूज़ है जैसा कि सूरह बुरुज में इर्शाद हुआ है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ -

अर्थ :- “बल्कि यह बुजुर्ग कुआन है जो लौहे-महफूज़ में अंकित है।” (बुरुज २१-२३)

अर्थात् आसमान में यह किताब पूरी आन बान के साथ सुरक्षित कर दी गई है जहाँ फ़रिश्तों के सिवा किसी की पहुँच नहीं है।

64. “مُطَهَّرِينَ” पाकीज़ा से मुराद फ़रिश्ते हैं जो हर प्रकार के गुनाह और बुराई से बिल्कुल پاک हैं। तबरी और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने भी इस से फ़रिश्ते ही मुराद लिए हैं। सूरह अबस में स्पष्टीकरण है:-

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ
بِأَيْدِي سَفَرَةٍ كَرَامٍ بَرَّةٍ. (अबस १३)

अर्थ :- “यह ऐसे सहीफ़ों (पत्रों) में है जो अत्यन्त आदरणीय हैं, उच्च और पाकीज़ा हैं। ऐसे लिखने वालों के हाथों में हैं जो प्रतिष्ठित और वफ़ादार हैं।” (अबस १३ से १६)

और यहाँ स्पष्ट करना यह अभिप्रेत है कि कुआन के बारे में इन्कार करने वालों का यह संदेह कि वह शैतान का उतारा हुआ है बिल्कुल ग़लत और सरासर झूठ है। कुआन कलामे इलाही है। और इस का स्रोत (Source) लौहे-महफूज़ है जो आसमान में है। वहाँ किसी शैतान की पहुँच संभव ही नहीं है कि इस को ले कर उड़े और इस में मिलावट करें। वहाँ पाकीज़ा फ़रिश्ते ही पहुँचते हैं और वही इस किताब को छूते हैं और वही अल्लाह के आदेशानुसार कुआन की आयतों को ज्यों का त्यों ले कर नाज़िल होते हैं, उन के सरदार जिब्रील, पैग़म्बर पर वह्य करते हैं। कुआन के उतरने का यह काम पाकीज़ा गुणों से सुसज्जित फ़रिश्तों द्वारा अन्जाम पाता है इस लिए इस में न फ़रिश्तों के अपने कलाम की मिलावट हो सकती है और न शैतान की किसी बात की।

आयत का असली भावार्थ वही है जो ऊपर बयान किया

गया। लेकिन फ़ुक्रहा ने इस आयत से कुआन को बग़ैर वुजू छूने के हराम होने का तर्क प्रस्तुत किया है और इस के पक्ष में वे मुअता की यह हदीस भी पेश करते हैं कि :-

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ بْنِ حَزْمٍ أَنَّ فِي الْكِتَابِ
الَّذِي كَتَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِعُمَيْرِ بْنِ حَزْمٍ أَنَّ
لَا يَمَسُّ الْقُرْآنَ إِلَّا طَاهِرٌ -

अर्थ :- “अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बिन हज़म से रिवायत है कि उस पत्र में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमर बिन हज़म को लिख कर दिया था यह हुक्म था कि कुआन को वही छुए जो ताहिर (पाक) हो।”

यहाँ इस पर विस्तृत फ़िक्रही बहस का मौक़ा नहीं है इस लिए हम संक्षिप्त रूप से कुछ बातें रखेंगे।

(A) इस आयत में कोई हुक्म नहीं दिया गया है बल्कि यह सच्चाई बयान की गई है कि कुआन का अवतरण ठीक ठीक उस किताब के अनुरूप हो रहा है जो आसमान पर सुरक्षित है और जिस को केवल फ़रिश्ते जो पवित्र और अमानतदार हैं छूते हैं और उसी के अनुसार वह्य ले कर पैग़म्बर पर नाज़िल होते हैं। शैतानों का न वहाँ गुज़र है और न इन नापाकों के हाथ उस को लग सकते हैं और न ही वे फ़रिश्तों के काम में कोई हस्तक्षेप कर सकते हैं। इस से यह हुक्म निकालना कि बग़ैर वुजू कुआन को हाथ न लगाया जाए एक अलग ही बात है। “ताहिर” और “मुतहहर” के अन्तर को भी ध्यान में रखना चाहिए। अगर कुआन को हाथ लगाने के लिए वुजू से होना तात्पर्य होता तो “ताहिरीन” का शब्द प्रयोग किया जाता न कि “मुतहहरीन” का। इस आयत से जिस तरह फ़रिश्तों के कुआन को छूने का वर्णन है उसी तरह सूरह अबस में उन के लिखने का भी :-

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ كَرَامٍ بَرَّةٍ -

अर्थ :- “ऐसे लिखने वालों के हाथ से जो इज्जत वाले और नेक हैं?”

तो क्या इस पर क्रियास कर के कुआन या उस की किसी आयत के लिखने के लिए इज्जत वाला और नेक होने की शर्त लगाई जा सकती है? अगर यह अर्थ निकालना सही नहीं है तो मुतहहरीन वाली आयत से जो अर्थ निकाला जाता है वह भी सही नहीं।

(B) और जहाँ तक मुअता की इस हदीस की बात है कि

أَنَّ لَا يَمَسُّ الْقُرْآنَ إِلَّا طَاهِرٌ -

“कुआन को केवल वही छुए जो पाक हो”

तो पहली बात तो यह हदीस मुर्सल है (औनुल माबूद शरह

सुनन अबी दाऊद जिल्द १ पृष्ठ ३८४)

दूसरे यह कि “ताहिर” से तात्पर्य अनिवार्य रूप से वुजू वाला व्यक्ति नहीं है। बल्कि इस से तात्पर्य वह व्यक्ति है, जो जनाबत (अर्थात् समागम के कारण होने वाली नापाकी) से पाक हो। अतः इस का अनुमोदन उन हदीसों से होता है जिन में जुनुबी (अर्थात् जिस ने समागम के बाद गुस्ल न किया हो) को कुर्आन पढ़ने से मना किया गया है। यद्यपि इन हदीसों में भी कलाम की गुनजाइश है।

وَفِي كُلِّهَا مَقَالٌ

(औनुल माबूद जिल्द १ पृष्ठ ३८३) और जुनुबी को गुस्ल कर के पाक होने का आदेश दिया गया है।

وَأِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا-

अर्थ :- “ अगर जनाबत की हालत में हो तो गुस्ल कर के पाक हो जाओ । (माइदा -६)

कुर्आन और हदीस के इन स्पष्ट अहकाम को देखते हुए मुअता की उक्त वर्णित हदीस का यही भावार्थ सुनिश्चित होता है कि कोई ऐसा व्यक्ति जिस ने जनाबत से और किसी औरत ने हैज से पाकी हासिल न की हो वह कुर्आन को हाथ न लगाए।

(C) कुछ फुक्रहा ने कुर्आन को बगैर वुजू हाथ न लगाने का आदेश देते हुए इस में इतनी सख्ती पैदा कर दी है कि जिन किताबों में कुर्आन की आयतें लिखी हों, उस को हाथ लगाना नाजायज़ बताया। इस का मतलब यह हुआ कि आदमी बगैर वुजू न किसी पत्र पर बिस्मिल्लाह लिख सकता है और न उस में कोई आयत दर्ज कर सकता है, क्योंकि बिस्मिल्लाह भी कुर्आन की एक आयत ही है। इसी प्रकार उन रिसालों (पत्रिकाओं) को भी हाथ नहीं लगा सकता जिन में कुर्आन की आयतें दर्ज होती हैं। इस सख्ती का खण्डन बुखारी के उस अध्याय से होता है जिस में उन्होंने ने इब्राहीम नखई का यह मत उद्धृत किया है कि “ बगैर वुजू के खत लिखने में कोई हरज नहीं।” (बुखारी

किताबुल वुजू बाब क्रिर्अतुल कुर्आन बअद-अल-हदीस आदि) जाहिर है खत में बिस्मिल्लाह भी लिखी जाएगी और अगर ज़रूरत हुई तो आयतें भी लिखी जाएंगी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोम के शासक (कैसर) को खत लिखा था। उस में कुर्आन की कुछ आयतें भी लिखी थीं। तो क्या जो व्यक्ति उस खत को ले गया था उस को इस बात की ताक़ीद की गई थी कि वह बगैर वुजू उसे हाथ न लगाए।

(D) हज़रत इब्ने अब्बास, शेबी, ज़हहाक, जैद बिन अली मुवैय्यिद बिल्लाह, दाऊद, इब्ने हज़म और हम्माद बिन सुलैमान इस बात के क़ायल हैं कि बगैर वुजू कुर्आन को हाथ लगाया जा सकता है। (फ़िक्हुस्सुन्न- अस्सैय्यिद साबिक जिल्द १ पृष्ठ ५७)

(E) कुर्आन की तिलावत और उस के अध्यन के लिए वुजू से होना निश्चय ही अच्छी और भलाई की बात है क्योंकि वुजू से होने की सूरत में पाकीज़गी का अधिक एहसास होता है और विचारों तथा ख़ियालों को पवित्र रखने में बड़ी सहायता मिलती है किन्तु वुजू के बगैर कुर्आन को हाथ लगाने को हराम बताना फ़िक्रही सख्ती के सिवा कुछ भी नहीं। ये सख्तीयाँ मौजूदा ज़माने में लोगों को बड़ी कठिनाइयों एवं संकट में डालने वाली हैं क्योंकि कुर्आन की प्रतियों का क्रय विक्रय करना और उन को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना, उन को छापना और उन की जिल्दबन्दी करना सब के लिए वुजू की शर्त कोई व्यवहारिक बात नहीं है। यह शर्त अथवा यह पाबन्दी कुर्आन के प्रकाशन के सिलसिले में बड़ी रूकावट है। यह किताब खूबसूरत जुज़दान में बन्द रखने के लिए नहीं है बल्कि इस लिए है कि इस से क्रदम क्रदम पर रहनुमाई हासिल की जाए और इस को भारी मात्रा में खूब खूब फैलाया जाए। रही बात यह है कि दीन में जो आसानियाँ थीं वे फ़िक्रही सख्ती के कारण बरकरार नहीं रह सकीं ।

65. अर्थात् उस की महानता को महसूस नहीं करते और उस को ख़ातिर में नहीं लाते।



82. और (इस नेमत में) अपना हिस्सा यह रखते हो कि इसे झुठलाओ?

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكْذِبُونَ ①

83. तो क्यों नहीं (कुछ कर पाते) जब जान हलक तक पहुँचती है।⁶⁶

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُقُوفَ ②

84. और तुम उस समय देख रहे होते हो।⁶⁷

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ③

85. और हम तुम्हारी बनिस्बत उस के अधिक निकट होते हैं लेकिन तुम देख नहीं पाते।⁶⁸

وَعَنْ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ④

86. तो अगर तुम महकूम (बंधे हुए) नहीं हो तो क्यों नहीं,

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ عَيْرَ مَدِينِينَ ⑤

87. उस जान को लौटा लेते अगर तुम सच्चे हो ?⁶⁹

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑥

88. फिर अगर वह हुआ निकटस्थों⁷⁰ (जिन को अल्लाह से करीब होने का दर्जा प्राप्त हुआ) में से।

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ⑦

89. तो उस के लिए राहत, ख़ुशबू और नेमत भरी जन्नत है।⁷¹

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ⑧

90. और अगर वह दाहिने हाथ वालों में से हुआ।⁷²

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْخَبِ الْيَمِينِ ⑨

91. तो सलामती है तेरे लिए कि तू अस्हाबे-यमीन (दाहिने हाथ वालों) में से है।⁷³

فَسَلَامٌ لَكَ مِنْ أَصْخَبِ الْيَمِينِ ⑩

92. और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हुआ।

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ⑪

93. तो उस की ख़ातिरी गर्म पानी से होगी।

فَنُزْلٌ مِنْ حَيْثُ ⑫

94. और उस का दाख़िला जहन्नम में होगा।⁷⁴

وَتَصْلِيَةٌ جَهِيمٌ ⑬

95. यह सब विश्वस्त सत्य है।⁷⁵

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ⑭

96. तो (ऐ नबी !) अपने महान रब के नाम की तस्बीह करो।⁷⁶

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ⑮

66. अर्थात् प्राण निकलने के समय तुम्हारी जो बेबसी होती है उस पर भी तो सोचो ।

67. अर्थात् तुम्हारी नज़रों के सामने मरने वाले के प्राण निकाले जा रहे होते हैं।

68. मतलब यह कि मरने वाले से तुम्हारी बनिस्बत अल्लाह अधिक निकट होता है। (व्याख्या के लिए देखिए सूरह काफ़ नोट २१)

69. अर्थात् अगर तुम अपने रब के अधीनस्थ उस के महकूम नहीं हो तो मौत के बाद रूह को वापस क्यों नहीं ले आते? जब यह वास्तविकता है कि रूह (आत्मा) को जब कि वह शरीर से निकल चुकी हो कोई व्यक्ति भी लौटा नहीं सकता, न अपनी रूह को न किसी दूसरे व्यक्ति की रूह को । तो फिर वह इस वास्तविकता को स्वीकार क्यों नहीं करता कि वह अपने रब का महकूम तथा उस का अधीनस्थ है और जब वह उस का महकूम और उस के अधीन है तो उस की बन्दगी और अनुपालन करना चाहिए, फिर उस से कुफ़्र और उद्वेगता कैसी?

70. मुकर्रबीन (निकटस्थों) की व्याख्या ऊपर नोट १० में गुज़र चुकी।

71. अर्थात् मरने वाला अगर मुकर्रबीन में से होता है तो उस की रूह के लिए राहत ही राहत होती है और ऐसी खुशबू पेश की जाती है जो उस के लिए ताज़गी और आनन्द का कारण होता है और उसे नेमत भरी जन्नत की खुशख़बरी दी जाती है। सूरह “हा मीम अस्सज्दा” आयत ३० में भी गुज़र चुका कि जो लोग दृढ़ता (इस्तिस्क्रामत) का परिचय देते हैं उन पर फ़रिश्ते जन्नत की खुशख़बरी लिए हुए नाज़िल होते हैं।

72. दाहिने हाथ वालों से तात्पर्य आम नेक लोग हैं जिन का आमाल नामा (कर्म पत्र) दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

73. अर्थात् अगर मरने वाला नेक है तो उसे फ़रिश्ते रूह

निकालते समय खुशख़बरी देते हैं कि तेरे लिए सलामती ही सलामती है, तुझे किसी आफ़त और तकलीफ़ से वास्ता नहीं पड़ेगा।

74. अर्थात् अगर मरने वाला तौहीद और आख़िरत को झुठलाने वाला और गुमराह था तो उस का स्वागत गर्म पानी से किया जाता है और उसे यह बुरी ख़बर सुनाई जाती है कि क्रियामत के दिन उस का दाख़िला जहन्नम में होगा।

75. अर्थात् ये सब बातें जो बयान हुई बिल्कुल सच्ची हैं। इन में रती भर शक की गुन्जाइश नहीं।

76. व्याख्या के लिए देखिए नोट ५८

हदीस में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसे अपने रूकू में रखो और जब आयत

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى

“सब्बिहिस्मा रब्बिकल अअला” नाज़िल हुई तो आपने फ़रमाया इसे अपने सज्दे में रखो। (अबूदाऊद किताबुस्सलात)

अतः रूकू में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

“सुबहान रब्बियल अज़ीम”

(पाक है मेरा रब्बे-अज़ीम) और सज्दे में

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

“सुबहान रब्बियल अअला”

(पाक है मेरा सर्वोच्च रब) इसी आदेशानुपालन के अन्तर्गत कहा जाता है।

इस से यह बात स्पष्ट हुई कि नमाज़ के अज़्कार कुर्आन के संकेतानुसार हैं।





५७. सूरह अल्-हदीद

नाम :- आयत २५ में हदीद (लोहे) के उतारे जाने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अलहदीद है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और आयत १० में फ़तह (विजय) से पहले इन्फ़ाक़ करने अर्थात् अल्लाह के रास्ते में खर्च करने और जिहाद करने वालों के दर्जों की बुलन्दी का जो वर्णन हुआ है उस से यह इशारा मिलता है कि यह सूरह मक्का विजय से पहले अवतरित हुई थी संभवतः सन ५ या ६ हिजरी में।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में सच्चे मन के साथ ईमान लाने की दअवत दी गई और इस का उभरा हुआ तक्काज़ा यह पेश किया गया है कि अल्लाह की खातिर जिहाद के लिए अपना माल खर्च किया जाए।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में अल्लाह की पाक़ीज़गी और उस की खूबियाँ बयान हुई हैं।

आयत ७ से ११ में सत्य निष्ठा अर्थात् सच्चे मन के साथ

ईमान लाने और उस के तक्काज़ों को पूरा करने का न्योता दिया गया है।

आयत १२ से १५ में सच्चे ईमान वालों को यह खुशख़बरी देते हुए कि उन का ईमान क्रियामत के दिन उन के लिए नूर (प्रकाश) होगा। मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) के इस नूर से महरूमी और उन के यातना से दोचार होने का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

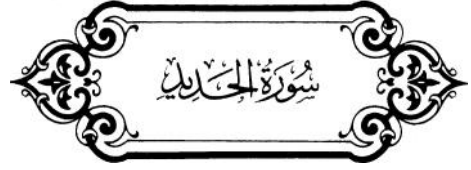
आयत १६ से २४ में ईमान के तक्काज़े पेश किये गए हैं और दुनिया के मुक़ाबले में आख़िरत को लक्ष्य बनाने को प्रेरित किया गया है।

आयत २५ से २७ में न्याय की स्थापना के लिए बल प्रयोग को आवश्यक बताते हुए जिहाद के लिए उत्प्रेरित किया गया है और दीन की सन्यासी धारणा का खण्डन किया गया है।

आयत २८ और २९ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में परहेज़गार और सच्चे ईमान वालों के लिए रौशनी और महान अनुग्रह से अलंकृत किये जाने की खुशख़बरी दी गई है।

५७. सूरह अल् हदीद

आयतें : २९



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की तस्बीह (अर्थात् पाकी बयान) करती हैं सारी चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं।¹ और वह प्रभुत्वशाली है।² तत्वदर्शी।³

سُبْحَنَ اللَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

2. आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी की है।⁴ वही ज़िन्दा करता और मारता है। और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

3. वही अक्वल भी है और आखिर भी, ज़ाहिर भी है और पोशीदा भी।⁵ और वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।⁶

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ③

4. वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को ६ दिनों में पैदा किया फिर वह सिंहासन पर बुलन्द हुआ⁷ वह जानता है जो चीज़ भी ज़मीन में दाखिल होती है⁸ और उस से निकलती है⁹ और जो कुछ आसमान में से उतरता है और जो कुछ उस में चढ़ता है।¹⁰ वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो।¹¹ और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देखता है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُعَلِّمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ④

5. आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और सारे मामले उसी की तरफ़ लौटते हैं।¹²

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

6. वही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में¹³ और वह दिलों के राज़ तक जानता है।¹⁴

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑥

7. ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल पर¹⁵ और खर्च करो उस माल में से जिस पर उस ने तुम को अधिकार प्रदान किया है।¹⁶ जो लोग तुम में से ईमान लाएंगे और खर्च करेंगे उन के लिए बड़ा अन्न है।

أَمْؤَا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

1. “सब्बह” एक भूतकालिक शब्द है जिस का शाब्दिक अर्थ है तस्बीह की, पाकी बयान की, और दूसरी सूरी में “युसब्बिहु” भी प्रयुक्त हुआ है जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए है अर्थात् तस्बीह करती है और तस्बीह करेगी। इन दोनों प्रकार के इस्तेमाल से इस वास्तविकता को ज़ाहिर करना अभिप्रेत है कि कायनात की हर चीज़ किसी स्थान की बन्दिश से परे अल्लाह की तस्बीह में लीन। अपने हाल और अपनी ज़बान दोनों से अल्लाह की पाकी बयान करती है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट ५८

2. अर्थात् उस की सत्ता और उस का प्रभुत्व हर चीज़ पर है। कोई भी उस के क़ाबू से बाहर नहीं।

3. वह अपने शासन और अपनी प्रभुत्व को तत्वदर्शिता के साथ इस्तेमाल करता है। इस लिए ब्राह्मण्ड व्यवस्था एक संजीदा हकीकत है। न वह निरुद्देश्य है और न उस के राज्य में अन्धेर नगरी है।

4. अर्थात् वह कायनात का शासक है। उस की बादशाही में कोई साज़ीदार नहीं। वह पूरी शाही शान के साथ अपनी सलतनत पर शासन कर रहा है।

5. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की व्याख्या इस तरह की है:-

أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ - (مسلم کتاب الزّکر)

अर्थ :- “तू अव्वल (सर्व प्रथम) है तुझ से पहले कोई नहीं। तू आखिर है तेरे बाद कोई नहीं। तू ज़ाहिर है तुझ से ऊपर कोई नहीं तू बातिन है और तुझ से ज़्यादा पोशीदा (अगोचर) कोई नहीं।” (मुस्लिम किताबुज्ज़िक्र)

मतलब यह है कि अल्लाह हमेशा से है और हमेशा रहेगा हर चीज़ का अस्तित्व उस के अस्तित्व के बाद है और हर चीज़ मिट जाने वाली है, कभी न मिटने वाली और सदैव बाक़ी रहने वाली हस्ती उसी की है और उस के बाक़ी रखने से ही कोई चीज़ बाक़ी रह सकती है उस के अस्तित्व से अधिक किसी चीज़ का अस्तित्व भी ज़ाहिर नहीं है। पूरी कायनात उस के अस्तित्व को ज़ाहिर कर रही है और वह हर जगह दृष्टिगोचर है मगर वह ऐसा पोशीदा (अगोचर) है कि दिखाई नहीं देता। विवेक समेट नहीं सकता, बुद्धि उस की तह को नहीं पा सकती। अतः उस की हस्ती और उस की ख़ूबियों के बारे में जो पहचान अल्लाह की वहय (प्रकाशना) ने प्रदान की है उस पर संतोष करना चाहिए और ऐसे प्रश्नों में मास्तिष्क को उलझाना नहीं चाहिए जो हमारी पहुँच की सीमा से बाहर हैं।

जो लोग वहदतुल वजूद (अर्थात् अल्लाह और सृष्टि सब का

अस्तित्व एक ही है) (अल्लाह की पनाह ऐसी बातों से) के क़ायल हैं उन्होंने ने यहीं ठोकर खाई है। उन्होंने ने अल्लाह की हस्ती में बुद्धि और स्वभाव की सीमाओं से आगे निकल कर चिन्तन किया जिस के फलस्वरूप उन की धारणा विकृत हो गई और गुमराही उन के हिस्से में आई। आदमी जब तक पानी में तैरता है सलामत रहता है किन्तु जब ज़मीन पर तैरना शुरू करता है तो घुटने फूटने लगते हैं। अक़ल के धोड़े के लिए लगाम बहुत ज़रूरी है।

6. मनुष्य अपने ज्ञान पर अल्लाह के ज्ञान को गुमान नहीं कर सकता। अल्लाह का ज्ञान असीम समुद्र और मनुष्य का ज्ञान समुद्र के एक कतरे के बराबर भी नहीं।

7. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ८२, ८३ में गुज़र चुकी।

8. जैसे अनाज के दाने, पानी और मुँदें जो उस में दफ़न होते हैं।

9. जैसे कोंपलें, पानी के स्रोत, धातुएँ, अमूल्य पत्थर, और तेल, पेट्रोल, गैस आदि।

10. इस की व्याख्या सूरह सबा नोट ५ में गुज़र चुकी।

11. तुम जहाँ कहीं हो अल्लाह तुम्हें जानता है देखता है। तुम्हारी बातें सुनता है। तुम पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है और तुम्हारी जानें निकालता है। उस के हाज़िर और नाज़िर होने की धारणा ही मनुष्य को कपकपा देने के लिए काफ़ी है।

12. वह बादशाह है इस लिए आसमानों और ज़मीन में उसी के आदेश जारी होते हैं। और वह मरजअ (प्रत्यागमन हस्ती) है इस लिए सभी मामले उसी की तरफ़ लौटते हैं।

13. इस की व्याख्या सूरह आले-इमरान नोट ३९ में गुज़र चुकी।

14. वह छोटी से छोटी (सुक्ष्मतम) और सर्वाधिक छिपी बातों को भी जानता है यहाँ तक कि दिलों में छिपे हुए भेद भी उस पर उजागर हैं।

15. यह ईमान लाने वालों से संबोधन है कि केवल कलिमा पढ़ लेना काफ़ी नहीं बल्कि सच्चे दिल से अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ। ईमान वही विश्वस्नीय एवं मान्य है जो दिल की आमादगी के साथ हो और उस में शक एवं असमंजस का भाव न हो बल्कि उस के सत्य होने पर दृढ़ विश्वास हो।

16. अर्थात् जो माल उस ने अमानत स्वरूप तुम्हारे हवाले किया है और तुम को शरअी सीमा में रहते हुए खर्च करने का अधिकार प्रदान किया है। खर्च करने से तात्पर्य अल्लाह की राह में खर्च करना है। और इस सूरह में इन्फ़ाक़ (खर्च करने) का जो आदेश दिया गया है वह जिहाद की ज़रूरतों को सामने रखते हुए है। ताकि कुफ़्र और इस्लाम की कशमकश में इस्लाम को सरबुलंदी हासिल हो।

8. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालाँकि रसूल तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने की द'अवत दे रहा है और वह तुम से प्रतिज्ञा ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो।¹⁷

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ
وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

9. वही है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें नाज़िल कर रहा है ताकि तुम्हें अंधेरी से निकाल कर रौशनी में ले आए। निस्संदेह अल्लाह तुम पर करुणाशील और दयावान है।¹⁸

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ①

10. तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते हालाँकि आसमानों और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही के लिए है।¹⁹ समान नहीं, तुम में से जिन लोगों ने फ़तह से पहले खर्च किया और लड़े, उन का दर्जा उन लोगों से बड़ा है जो बाद में खर्च करेंगे और लड़ेंगे। यद्यपि कि अल्लाह ने दोनों से ही अच्छा वादा किया है।²⁰ और तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह अवगत है।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ
أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقَاتَلُوا
وَكُلًّا وَّعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ①

11. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे, अच्छा क़र्ज़? कि वह उस के लिए उस को कई गुना कर दे। और उस के लिए बेहतरीन अज़्र है।²¹

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فِيضَعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ①

12. जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के आगे और उन के दाहिनी तरफ़ दौड़ रहा होगा।²² आज तुम्हारे लिए खुशखबरी है जन्नतों की, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में हमेशा रहोगे। यही है बड़ी कामयाबी।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَبَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ①

13. उस रोज़ मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे ज़रा रुको, कि हम तुम्हारे नूर से फ़ायदा उठा लें।²³ उन से कहा जाएगा कि पीछे पलटो और वहाँ नूर तलाश करो।²⁴ फिर उन के बीच एक दीवार आड़ कर दी जाएगी²⁵ जिस में एक दरवाज़ा होगा। उस के अन्दर की ओर रहमत होगी और उस के बाहर की तरफ़ अज़ाब (यातना) होगा।²⁶

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَسِسْ مِنْ نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا
فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورَةٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنَةٌ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهَرُهُ
مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ①

17. यह उन मुसलमानों से सम्बोधन है जिन्होंने ऊपर से तो इस्लाम स्वीकार कर लिया था किन्तु ईमान अभी उन के दिल में नहीं उतरा था। उन को समझाया गया कि जब रसूल स्वयं तुम्हें ईमान लाने का निमंत्रण दे रहा है तो आखिर क्या कारण है कि सच्चे मन से ईमान नहीं लाते? जब की रसूल तुम से प्रतिज्ञा ले चुका है। प्रतिज्ञा इस बात की कि तुम अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करोगे। जब कोई व्यक्ति शहादत का कलिमा पढ़ कर इस्लाम में दाखिल होता है तो वह वास्तव में इस की प्रतिज्ञा उठाता है कि अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करेगा। सूरह माइदा आयत ७ में इर्शाद हुआ है:-

وَاذْكُرُوا انْعَمَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَ مِيثَاقَهُ الَّذِي
وَأَتَقْتُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا (मائدة: ८)

अर्थ :- “और अल्लाह ने जो फ़ज़ल (अनुग्रह) तुम पर किया है उसे याद रखो और उस की उस प्रतिज्ञा को भी जो उस ने तुम से ली है, जब तुम ने कहा था हम ने सुना और अनुपालन किया।”

अतः अगर तुम अपने ईमान के दावे में सच्चे हो तो इस के तक्राजे हो पूरा करो।

18. अर्थात् अल्लाह नहीं चाहता कि उस के बन्दे जिहालत और इच्छाओं के अन्धेरो में भटकते रहें इस लिए उस ने साफ़ और स्पष्ट आयतें नाज़िल कर के उन को रौशनी में लाने की तैयारी की। वह अपने बन्दों के हित में ममतामयी है इस लिए उन्हें बुरे अन्जाम से बचाना चाहता है। और वह दयावान है इस लिए चाहता है कि वे उस की दया के पात्र बने।

19. अर्थात् तुम को जो माल प्रदान हुआ है अन्ततः अल्लाह के क़ब्जे में जाने वाला है, तुम्हारे साथ हमेशा रहने वाला नहीं है। फिर तुम अपने हाथ से अल्लाह की राह में खर्च क्यों नहीं करते कि तुम्हारे लिए अज़्र (इनाम) का कारण बने।

20. फ़तह से तात्पर्य फ़तह-मक्का (मक्का विजय) है। मक्का विजय से पहले हालात कठिन और धैर्य की परीक्षा लेने वाले रहे हैं। उस समय इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए जान और माल की कुर्बानियाँ देने की आत्याधिक आवश्यकता थी। इन हालात में वही लोग कुर्बानियाँ देने के लिए आगे बढ़े जो बुलंद हौसला थे। इस लिए उन का दर्जा भी अल्लाह के यहाँ बुलन्द है उन लोगों के बनिस्बत जो इस्लाम की महान विजय----विजय मक्का----के बाद जब कि हालात इतने सख़्त नहीं रहे, जान और माल की कुर्बानियाँ पेश कीं। दर्जे

की दृष्टि से दोनों समान नहीं हो सकते किन्तु दोनों ही की कुर्बानियाँ क़द्र के लायक हैं और अल्लाह ने अच्छे बदले का वादा दोनों ही से किया है।

इस आयत से यह इशारा भी निकलता है कि इस्लाम के लिए जब कभी हालात प्रतिकूल हो कर रह जाएँ और उस की सर बुलन्दी के लिए अपना माल खर्च करना और अपनी जानें लड़ा देना बड़े हौसले का काम हो तो जो लोग इन ख़तरों को मोल ले कर आगे बढ़ेंगे उन का रुत्बा बुलन्द होगा बनिस्बत उन लोगों के जो आम हालात में इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए इन्फ़ाक़ और जिहाद करेंगे।

21. क़र्जे-हसन से तात्पर्य वह इन्फ़ाक़ (खर्च) है जो अपनी जायज़ कमाई में से ख़ालिस अल्लाह की प्रसन्नता के लिए किया जाए। न उस में दिखावा हो और न इस के बाद एहसान जताने और पीड़ा पहुँचाने की कोई बात। यह इन्फ़ाक़ जिहाद के उद्देश्यों के लिए विशेष रूप से वांछित है इस लिए इस का मुतालबा दिल को अपील करने वाले अन्दाज़ में किया गया है। और अल्लाह तआला की यह शाने-करीमी है कि वह इस इन्फ़ाक़ को अपने ज़िम्मे क़र्ज़ करार दे रहा है जिस को वह आख़िरत में कई गुना कर देगा और बहुत बड़े अज़्र (इनाम) से नवाज़ेगा।

22. यह नूर (प्रकाश) ईमान और अच्छे कर्मों का होगा। हदीस में नमाज़ को नूर बताया गया है।

الصّلوة نور (مسلم کتاب الطهارة)

अर्थ:- “नमाज़ नूर है।” (मुस्लिम किताबुतहारत)

यही नूर है जो क्रियामत के दिन मोमिनों पर जन्नत की राह रौशन करेगा। यह सौभाग्य जिस तरह मोमिन मर्दों को प्राप्त होगा उसी प्रकार मोमिन औरतों को भी प्राप्त होगा।

23. मुनाफ़िक़ अर्थात् वे पाखण्डी लोग जो ऊपर से तो मुसलमान हो गए थे किन्तु अपने ईमान में सच्चे न थे। आगे आयत १४ में इस का स्पष्टीकरण हुआ है। ये लोग चूँकि मुसलमानों के समूह में शामिल थे इस लिए क्रियामत के दिन भी वे ईमान वालों के पीछे पीछे होंगे लेकिन चूँकि उन का जीवन ईमान और अच्छे कर्मों से खाली था इस लिए क्रियामत के दिन उन को नूर से महरूम रखा जाएगा। वे अपने आपको इस हाल में देख कर कि इस नूर से हम महरूम हैं, ईमान वालों को आवाज़ देंगे कि ज़रा ठहरो ताकि तुम्हारे नूर की रौशनी से हम भी लाभ उठा लें परन्तु उन की सुनवाई नहीं होगी।

24. अर्थात् दुनिया जिस को तुम पीछे छोड़ कर आए हो नूर हासिल करने की जगह थी। अब अगर तुम पलटकर

दुनिया में जा सकते हो तो जाओ और वहाँ नूर तलाश करो। मगर यह किसी तरह संभव नहीं। आखिरत में नूर उसी के साथ होगा जो दुनिया से ईमान और अच्छे कर्म का नूर ले कर आया होगा।

25. अर्थात् मोमिनों और मुनाफ़िकों के बीच एक दीवार आड़ कर दी जाएगी। इस तरह दोनों समूह अलग अलग हो

जाएँगे ताकि अपनी अलग अलग मन्ज़िल को पहुँच जाएँ।

26. उस दीवार के दरवाज़े से मोमिन अन्दर दाखिल होंगे जहाँ रहमत ही रहमत होगी। अर्थात् जन्नत और यह दरवाज़ा वास्तव में रहमत का दरवाज़ा होगा।

उस दरवाज़े के बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा जो मुनाफ़िकों को अपनी जकड़ में ले लेगा।



क्या ईमान लाने वालों के लिए वह समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह के ज़िक्र और उस के उतारे हुए हक़ के आगे झुक जाएँ। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन को इस से पहले किताब दी गई थी फिर उन पर लम्बी अवधि गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए और उन में से अधिकतर फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं। (अल-कुर्‌आन)

14. वे उन को पुकार कर कहेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे ? वे जवाब देंगे हाँ, मगर तुम ने अपने को फ़ितने में डाला ²⁷ (हमारे लिए बुरे अन्जाम का) इन्तिज़ार करते रहे। ²⁸ शक में पड़े रहे ²⁹ और झूठी तमन्नाओं ने तुम्हें धोखे में रखा ³⁰ यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया। ³¹ और उस फ़रेबी ने ³² तुम्हें अल्लाह के मामले में फ़रेब ही में रखा ।

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ
وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانُ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ
وَعَزَّكُمُ بِاللَّهِ الْغَوْرُ ۝۱۴

15. तो आज न तुम (मुनाफ़िकों) से फ़िदयः (मुक्ति प्रतिदान) स्वीकार किया जाएगा। ³³ और न उन लोगों से जिन्होंने ने कुफ़्र किया। ³⁴ तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है। वही तुम्हारी रफ़ीक़ (संगिनी) है ³⁵ और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

فَالْيَوْمَ لَا يُوْخِذُكُمْ مِنْكُمْ فَدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَوْلَاكُمْ
النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝۱۵

16. क्या ईमान लाने वालों के लिए वह समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह के ज़िक्र और उस के उतारे हुए हक़ के आगे झुक जाएँ। ³⁶ और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन को इस से पहले किताब दी गई थी फिर उन पर लम्बी अवधि गुजर गई तो उन के दिल सख़्त हो गए और उन में से अधिकतर फ़ासिक् (उल्लंघनकारी) हैं। ³⁷

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ
عَلَيْهِمُ الرَّمَدُ فَنَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝۱۶

17. जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। ³⁸ हम ने निशानियाँ तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दी हैं ताकि तुम अक्ल से काम लो।

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝۱۷

18. निस्संदेह सदक़ा (दान) देने वाले मर्द और औरतें और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया उन को कई गुना कर के दिया जाएगा ³⁹ और उन के लिए बेहतरीन अज़्र (बदला) है।

إِنَّ الْمَصْدِقِينَ وَالْمَصْدَقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَاعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝۱۸

19. और जो लोग अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए वही अपने रब के निकट सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद हैं। ⁴⁰ उन के लिए उन का अज़्र भी होगा और नूर भी। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे जहन्नमी हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ
وَالشّٰهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِالآيَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْعَابُ الْجَحِيمِ ۝۱۹

27. मोमिनों को अपनी रौशनी के साथ जुदा होते देख कर मुनाफ़िक़ उन को पुकारेंगे कि हम को पीछे छोड़ कर कहाँ जा रहे हो। क्या हम दुनिया में तुम्हारे साथ न थे? वे जवाब देंगे तुम हमारे साथ ज़रूर थे----- (अर्थात् मुस्लिम सोसाइटी में शामिल थे)----- किन्तु तुम ने दोगली पॉलीसी अपना कर के अपने को बड़े फ़ित्ने में डाल दिया। एक तरफ़ मुसलमान होने का दावा भी करते रहे और दूसरी तरफ़ काफ़िरों से भी साठ गाँठ करते रहे। ऊपर से ईमान और अन्दर से कुफ़्र वह बदतरीन ख़राबी थी जिस में तुम ने अपने को डाले रखा था।

28. इस प्रतिक्षा में रहे कि कब मुसलमानों पर ऐसी विपदा पड़ती है कि फिर वे उठ ही न सकें।

يَتَرَبَّصُّ بِكُمْ الدَّوَّائِرُ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ. (توبه: १८)

अर्थ :- “वे इस बात के प्रतीक्षित हैं कि तुम किसी न किसी गर्दिश में आ जाओ (और सच्चाई यह है कि बुरी गर्दिश में वे खुद ही आ गए हैं)” (सूरह तौबा १८)

29. अर्थात् तुम्हें न रसूल की रिसालत पर विश्वास था और न आख़िरत पर। इन बातों पर तुम शक ही करते रहे।

30. अर्थात् इस भ्रम में लिप्त रहे कि हमारी यह पॉलीसी सफल रहेगी। हम अपना स्वार्थ और अपना लाभ इसी तरह प्राप्त कर सकेंगे और यदि आख़िरत बरपा हुई तो हम मुसलमानों में शामिल होने के आधार पर क्षमा कर दिए जाएंगे और इनाम के अधिकारी ठहरेंगे।

31. अल्लाह के हुक्म से तात्पर्य मौत है। अर्थात् मरते दम तक तुम निफ़ाक़ (पाखण्ड) ही में पड़े रहे।

32. मुराद शैतान हैं जो कुफ़्र और गुनाह पर आमादा करता है और हरा हरा सुझाता है।

33. अर्थात् अगर तुम्हारे पास दुनिया भर की दौलत हो और तुम अपनी मुक्ति के लिए उसे मुक्ति प्रतिदान स्वरूप देना चाहो तो भी स्वीकार नहीं की जाएगी। दुनिया में तो जो माल तुम्हें प्राप्त था उस का एक मात्र भाग अल्लाह की राह में सच्चे मन और सच्चे मोमिन बन कर खर्च करते तो आज तुम्हारे लिए वह ज़रूर मुक्ति का साधन बन सकता था। परन्तु अब इस का कोई विकल्प नहीं।

34. अर्थात् न खुले काफ़िरों से कोई मुक्ति प्रतिदान स्वीकार किया जाएगा।

35. अर्थात् अब तुम्हारा यदि कोई साथी है तो जहन्नम, देखो अब वह तुम्हारी कैसी ख़बर लेती है और कैसी ख़ातिर करती है।

36. संबोधन उन ईमान लाने वालों से है जिन के दिल खुशू (ईश-भय) से ख़ाली थे। खुशू अन्तर्मन का वह भाव है

जो अल्लाह की महानता और उस के समक्ष जवाबदेही के ख़याल से उत्पन्न होता है और जो प्रतीक है, तुच्छता, विनम्रता और दासता भाव का यह चीज़ सच्चे ईमान की विशेष उपलब्धि है इस आयत में उन लोगों को जिन का ईमान मात्र ज़बानी जमा खर्च की हद तक था और जिन के दिलों में वह अन्दर तक नहीं समा गया था, झंझोड़ा गया है कि इस्लाम और कुफ़्र की इस लम्बी कशमकश में जो कई साल से चली आ रही है और जिस के दौरान वे ईमान वालों की मज़लूमी भी देखते रहे हैं और इस्लाम तथा पैग़म्बर की सत्यता भी, उन के दिल अब भी नहीं पसीजते और अल्लाह को याद कर के अपने आप को तुच्छ नहीं समझते न झुकते ही हैं और उस सत्य को देखते हुए जो कुर्आन के रूप से उस ने नाज़िल किया है, उन के अन्दर उस के समक्ष जवाबदेही का एहसास नहीं उभरता और उस के प्रति उन के अन्दर विनीत भाव उत्पन्न नहीं होता।

37. अहले किताब (अर्थात् ईसाइयों और यहूदियों) पर जब किताब के नाज़िल होने और रसूल के रुख़सत हो जाने के बाद एक लम्बी अवधि गुज़र गई तो उन का रिश्ता अल्लाह की किताब से कमज़ोर पड़ता चला गया जिस का परिणाम यह निकला कि दिल का खुशू अर्थात् तुच्छता, विनम्रता और दासता भाव ही रुख़सत हो गया और इस अनमोल वस्तु के रुख़सत हो जाने से दिल सख़्त हो गए। और फिर उन के जीवन उल्लंघन कार्यों में डूब कर रह गए। यहाँ उन की इस हालत से इब्रत दिलाई गई है।

अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि अभी कुर्आन नाज़िल हो रहा है और अल्लाह का रसूल तुम्हारे बीच मौजूद है फिर तुम्हारा हाल इन अहले किताब जैसा नहीं होना चाहिए।

मौजूदा ज़माने के मुसलमानों का हाल भी एक छोटी तादाद को छोड़ कर वैसा ही है जैसा कि अहले किताब का बयान हुआ। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया से रुख़सत हुए चौदह सदियाँ गुज़र चुकी हैं। इस लम्बी अवधि में उन का सम्बन्ध अल्लाह की किताब से कमज़ोर होता चला गया जिस की बहुत बड़ी वजह बिदअतों और ख़ुराफ़ातों से उन का लगाव है और वास्ता एवं वसीला की ग़लत धारणा है जिस ने उन को झूठी इच्छाओं तथा मनोकामनाओं में लिप्त कर दिया अतः वे अपनी मुक्ति के बारे में बड़े भुलावे और बहलावे में हैं जब कि उन का जीवन खुले तौर उल्लंघन कार्यों से भरा पड़ा है। उन पर नसीहत का असर इस लिए नहीं होता कि पापाचार में निरंतर पड़े रहने के फलस्वरूप उन के दिल सख़्त हो गए हैं।

38. यह मरने के बाद जी उठने पर जिस के बारे में मुनाफ़िक़ (पाखण्ड) लोग शक़ में पड़े थे, दलील भी है और इस बात की तरफ़ इशारा भी कि मुर्दा दिलों को भी अल्लाह

ज़िन्दा कर सकता है और वह हिदायत पा सकते हैं। बशर्ते कि वे अल्लाह की निशानियों पर गौर करें जिन में से एक बहुत बड़ी निशानी ज़मीन का मुर्दा अर्थात् सूख जाने के बाद ज़िन्दा होना अर्थात् लहलहा उठना है।

39. सदक़े से तात्पर्य सामान्य सदक़ा और इन्फ़ाक़ है और क़र्ज़े हसन से तात्पर्य वह इन्फ़ाक़ है जो इस्लाम की जंगी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाए और जिस में रियाकारी अर्थात् दिखावा आदि न हो। चूँकि यह सामने आई आवश्यकता के अनुसार मुतालबे के रूप में था इस लिए इसे क़र्ज़ कहा गया है। जिस को कई गुना बढ़ा कर आखिरत में लौटा देने का अल्लाह तआला ने वादा कर रखा है। इस तरह सदक़ा देने वालों को भी अल्लाह तआला बढ़ा कर देगा।

40. अर्थात् अल्लाह के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद का रुत्बा पाने वाले सच्चे ईमान वाले ही होंगे। नाम मात्र के मुसलमान जो अपने दिलों में कुफ़्र को छिपाये रहे वे अल्लाह के यहाँ कोई

स्थान न पा सकेंगे आयत के इस भावार्थ को इस का अन्तिम वाक्य स्पष्ट कर रहा है जिस में कुफ़्र करने वालों का ठिकाना जहन्नम बताया गया है। सिद्दीक़ अर्थात् बहुत ही सच्चा, सत्यकामी और शहीद अर्थात् गवाह। मुराद इस्लाम की सत्यता की गवाही देने वाला। सूरह बक्रर: में इर्शाद हुआ है।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ - (بقره: १४३)

अर्थ :- “इस तरह हम ने तुम को बेहतरीन उम्मत बनाया ताकि लोगों पर गवाह रहो।” (बक्रर: १४३)

इस अर्थ में सच्चे दीन की गवाही देने वाला हर मोमिन शहीद है और शहादत का ऊँचा स्थान वह है जो एक मोमिन अल्लाह की राह में अपनी जान कुर्बान कर के प्राप्त करता है।



जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी खेल और लहव (अर्थात् विलास) जीनत, एक दूसरे पर गर्व करना, और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ जाने की चाह है। इस की मिसाल ऐसी है जैसे बारिश, जिस की वनस्पति को देख कर काफ़िर खुश हो जाते हैं फिर वह लहलहाने लगती है और तुम देखते हो कि पीली हो गई है। फिर वह चूरा चूरा हो कर रह जाती है। और आख़िरत में कठोर यातना भी है और अल्लाह की तरफ़ से क्षमा और खुश्नूदी भी। और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है। (अल-कुआन)

20. जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी खेल और लहव (अर्थात् विलास) जीनत, एक दूसरे पर गर्व करना, और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ जाने की चाह है।⁴¹ इस की मिसाल ऐसी है जैसे बारिश, जिस की वनस्पति को देख कर काफ़िर खुश हो जाते हैं फिर वह लहलहाने लगती है और तुम देखते हो कि पीली हो गई है। फिर वह चूरा चूरा हो कर रह जाती है।⁴² और आखिरत में कठोर यातना भी है और अल्लाह की तरफ़ से क्षमा और खुशनुदी भी।⁴³ और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है।

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ دَرَجَاتٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَتَكَاسُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْعُرُورِ ۝

21. एक दूसरे से आगे बढ़ो अपने रब की क्षमा और उस की जन्नत की तरफ़ जिस का फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव जैसा है।⁴⁴ वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है⁴⁵ जो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान रखते हैं।⁴⁶ यह अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) है जिसे चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़ल (महान अनुग्रह) वाला है।

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

22. कोई मुसीबत भी ज़मीन पर नाज़िल नहीं होती और न तुम्हारे नफ़्स (प्राणों) को पहुँचती है, मगर यह कि वह एक किताब में लिखी हुई है इस से पहले कि हम इस को पैदा करें,⁴⁷ यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।⁴⁸

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

23. (इस हकीकत से तुम्हें आगाह कर दिया गया है) ताकि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम से जाती रही है और उस चीज़ पर इतराओ नहीं जो तुम्हें प्रदान करे।⁴⁹ अल्लाह इतराने वालों और गर्व करने वालों को पसंद नहीं करता।⁵⁰

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝

24. जो कन्ज़ूसी करते हैं और दूसरों को कन्ज़ूसी करने के लिए कहते हैं।⁵¹ (इस नसीहत से) जो मुँह फेरेंगे तो (वह याद रखे कि) अल्लाह बेनियाज़ और खूबियों वाला है।⁵²

الَّذِينَ يَخْتَلُونَ وَيَاْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

41. इस आयत में दुनिया की ज़िन्दगी को जब कि उसे आखिरत की सफलता का साधन न बनाया जाए निर्मूल बताया गया है। जो लोग दुनिया को अपना लक्ष्य बनाते हैं उन के जीवन मात्र खेल तमाशा बन कर रह जाते हैं। वे दुनिया को मनोरंजन स्थान समझते हैं और तफ़रीह का सामान मुहैया करने में लग जाते हैं।

“लइब्” अर्थात् खेल जो दिल के बहलाने के लिए होता है।

“लहव्” अर्थात् मूल उद्देश्य से ग़ाफ़िल कर देने वाली वस्तु। दुनिया के समस्त कार्य जो आखिरत से ग़ाफ़िल कर देने वाले हों लहव् हैं चाहे वे सुख विलास के लिए हों या उच्च पदों की प्राप्ति या मानव जाति को दुनिया परस्ती में तल्लीन रखने के लिए हों।

“ज़ीनत” से तात्पर्य दुनिया की बाह्य चमक दमक और सांसारिक मोह माया है जिस की चाहत गुनाह में लिप्त करती है और जिस का आकर्षण इच्छाओं का गुलाम बनाती है।

“तफ़ाखुर” (परस्पर गर्व करना) गर्व यह है कि आदमी वंश कुल, धन दौलत, प्रतिष्ठा एवं ऊँचे पदों आदि के चलते अपनी बड़ाई दूसरों पर झाड़ता है। एक कलाकार अपनी कला पर। एक शायर अपने दाव वाही मिलने वाले कलाम पर एक पत्रकार अपनी पत्रकारी क्षमता पर, एक लेखक अपनी योग्यता पर, और एक राजनीतिज्ञ अपनी चतुरता पर गर्व करता है, और यह नहीं सोचता कि यह अपनी बड़ाई कि अभिव्यक्ति जो उसे शोभा नहीं देता। नेमतें और क्षमता आदि समस्त चीज़ें अल्लाह की प्रदान की हुई हैं और परीक्षा का सामान हैं इस लिए इन के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास उभरना चाहिए न कि अपनी बड़ाई का।

“तकासुर” (अर्थात् एक दूसरे से माल और औलाद में बढ़ जाने की इच्छा) वह प्रलोभन है जो सांसारिक उद्देश्य के लिए अधिक से अधिक दौलत कमाने पर आदमी को आमादा करती है। और उस ज़माने में जब कि संतान की अधिकता एक शक्ति और जल्ये का काम देती थी, उद्देश्य बन जाया करता था औ इस के चलते मर्द बहुत सी औरतों से शादियाँ भी कर लेता था। मगर मौजूदा ज़माने में स्वार्थी मनुष्य चाहता है कि उस के बच्चे कम से कम हों। (तकासुर की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकासुर नोट १)

42. अर्थात् सांसारिक जीवन का आकर्षण जिस पर लोग रीझते हैं ऐसी है जैसे खेती की रौनक जो बारिश होने पर खिल उठती है। परन्तु यह बहार कुछ ही दिन की होती है उस के बाद वह चूरा चूरा हो कर रह जाती है। इस लिए यह कोई बुद्धिमानी नहीं है आदमी सांसारिक जीवन की बाह्य चमक दमक से ऐसा

प्रभावित हो जाए कि इस के बाद क्या पेश आने वाला है उस को भूला दें।

यह मिसाल (उदाहरण) दूसरी जगहों पर भी बयान हुई है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ६३

ध्यान रहे कि सांसारिक जीवन का तुच्छ और निर्मूल होना इस पहलू से है कि उसे आखिरत पर वरीयता दी जाए और अपना मुख्य लक्ष्य बना लिया जाए। कुर्आन में इसी पहलू से निन्दा की गई है। चुनांचे सूरह इब्राहीम आयत ३ में इर्शाद हुआ है :-

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ.

अर्थ :- “ जो आखिरत के मुकाबले में दुनिया की ज़िन्दगी पसंद करते हैं।” (सूरह इब्राहीम)

और सूरह आला में फ़रमाया :-

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا.

अर्थ :- लेकिन तुम दुनिया की ज़िन्दगी को वरीयता देते हो।” (सूरह अअला - १६)

और सूरह नज्म आयत २९ में स्पष्ट किया गया है कि काफ़िर सांसारिक जीवन को अपना लक्ष्य बनाते हैं।

وَلَمْ يُرْدِ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا.

अर्थ:- “और उस ने सांसारिक जीवन को ही लक्ष्य बनाया।”

किन्तु इस के विपरीत जो लोग सांसारिक जीवन को आखिरत की सफलता का माध्यम बना लेते हैं और शरीअत की बाँधी सीमा में रह कर जीवन गुज़ारते हैं उन का सांसारिक जीवन बहुत ही संजीदा होता है न कि खेल तमाशा और वे इस परीक्षा स्थल से सफलता का प्रमाण पत्र ले कर निकलते हैं।

43. अर्थात् आखिरत में दो तरह के अन्जाम सामने आने वाले हैं। एक कठोर यातना अर्थात् जहन्नम की सज़ा जो उन लोगों को हमेशा हमेशा के लिए भुगतना होगी जिन्होंने ने सांसारिक जीवन को अपना लक्ष्य बना लिया था और जो आखिरत के इन्कारी थे।

दूसरा अन्जाम अल्लाह की क्षमा और उस की प्रसन्नता के रूप में सामने आयेगा और यह उन लोगों का अन्जाम होगा जिन्होंने दुनिया को परीक्षा स्थल समझ लिया था और जो आखिरत की सफलता को अपना जीवन लक्ष्य बनाए हुए थे। अल्लाह की प्रसन्नता का प्रतीक जन्नत है जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट है।

44. अर्थात् दुनिया की दौलत की प्राप्ति के लिए एक दूसरे पर बाज़ी ले जाने के प्रयास के बजाए अल्लाह की क्षमा और

जन्नत के लिए बाज़ी ले जाने का प्रयास करो। क्यों कि असल चीज़ अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित रहना और जन्नत में प्रवेश पा जाना है।

जन्नत की विशालता तथा उस के फैलाव से तात्पर्य उस के छोर हैं जो आसमान और ज़मीन के छोरों की तरह होंगे। अर्थात् जन्नत कोई सीमित जगह नहीं होगी बल्कि एक विशाल जगह होगी जिस की सैर आसानी के साथ जन्नत वाले कर सकेंगे। और अल्लाह की कुदरत और उस की रहमत के जलवे उन्हें हर जगह दिखाई देंगे जो उन के लिए आनन्द और आँखों की ठण्डक का कारण होंगे।

45. कुर्आन यह नहीं कहता कि जन्नत तैयार की जाएगी बल्कि कहता है कि जन्नत तैयार की गई है जिस से उस के मौजूद होने का विश्वास पैदा होता है।

46. अर्थात् यह जन्नत ईमान वालों ही के हिस्से में आएगी। काफ़िरों को इस की हवा भी नहीं लग सकेगी।

47. ज़मीन पर मुसीबत नाज़िल होने की मिसाल, अकाल, सैलाब, तूफ़ान आदि है और नफ़्स (प्राणों) को मुसीबत पहुँचने की मिसाल रोग, शारीरिक व हार्दिक कष्ट और मृत्यु है।

इस आयत में तक्रदीर से सम्बन्धित बहुत ही महत्वपूर्ण बात बयान हुई है और वह यह कि मुसीबत वही पहुँचती है जो पहले से लिख दी गई है अर्थात् ठीक अल्लाह की योजना के अनुसार। अतः किसी मुसीबत के पहुँचने पर कोई व्यक्ति यह न समझे कि यह अकस्मात उतर पड़ी है और इस से बचना मेरे बस में था।

जो व्यक्ति तक्रदीर पर विश्वास रखता होगा वह अपनी दीनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने से पहले घबराएगा नहीं और जिहाद के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देने में संकोच न करेगा।

48. अर्थात् सारी मुसीबतों को पहले से दर्ज कर लेना अल्लाह के लिए कोई मुश्किल काम नहीं है। जिस हस्ती के इशारे पर मुसीबतें नाज़िल होती हों उस के लिए वह काम क्या

मुश्किल है कि उन की पहले से योजना बना कर के उन को एक किताब में लिख दिया जाए।

49. अर्थात् इस वास्तविकता से जो मुसीबत से सम्बन्धित बयान हुई तुम्हें इस लिए आगाह कर दिया गया है ताकि किसी मुसीबत के पहुँचने पर तुम अफ़सोस न करने लगो कि इस को टाला जा सकता था और किसी नेमत के मिल जाने पर इतराने लगो कि यह हमारी अपनी योग्यता का फल है बल्कि मुसीबत में सब्र करो और नेमत पा जाने पर शुक्र करो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है। यह भरोसा ही मनुष्य में हौसला पैदा करता है और उसे अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने पर आमादा करता है।

किसी मुसीबत के पहुँचने पर मनुष्य को स्वभाविक रूप से दुख होता है किन्तु यदि वह इस को शिकवा शिकायत का बहाना नहीं बनाता और धैर्य एवं संयम का दामन थाम लेता है तो मात्र इस दुख के पहुँच जाने पर कोई पकड़ नहीं है।

इसी प्रकार किसी नेमत के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य को स्वाभाविक रूप से खुशी होती है। किन्तु अगर यह खुशी इतराने के रूप में सामने आती है तो वह निंदनीय है।

50. इस की व्याख्या सूरह लुक़मान नोट २९ और ३० में गुज़र चुकी।

51. इतराना और गर्व करना छोटी मानसिकता का परिचायक है। ऐसा व्यक्ति न दूसरों के अधिकार अदा कर पाता है और न उन्हें उन से सही हमदर्दी होती है। वह माल जमा कर के रखता है ताकि उसे दूसरों पर वर्चस्वता प्राप्त हो और वह अपनी दौलत पर गर्व कर सके।

52. अर्थात् इस नसीहत में तुम्हारा अपना लाभ है वरना अल्लाह तुम्हारी किसी चीज़ का भी मोहताज नहीं है। और उस का शुक्र अदा करो या न करो वह उत्तम गुणों से सुसज्जित और प्रशंसा योग्य ही है।



हम ने अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा और उन के साथ किताब और मीज़ान नाज़िल की ताकि लोग न्याय पर जमें और लोहा उतारा जिस में ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक़ी है और लोगों के लिए दूसरे लाभ भी। यह सब इस लिए किया गया है ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस को देखे बग़ैर उस की और उस के रसूलों की मदद करता है। निस्संदेह अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। (अल-कुआन)

25. हम ने अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा ⁵³ और उन के साथ किताब ⁵⁴ और मीज़ान ⁵⁵ नाज़िल की ताकि लोग न्याय पर जमें, ⁵⁶ और लोहा उतारा जिस में ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक़ी है और लोगों के लिए दूसरे लाभ भी। ⁵⁷ यह सब इस लिए किया गया है ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस को देखे बग़ैर उस की और उस के रसूलों की मदद करता है। ⁵⁸ निस्संदेह अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। ⁵⁹

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ
فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ
وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ٥٩

26. हम ने नूह और इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा और इन दोनों की नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। ⁶⁰ तो उन में से कुछ लोगों ने हिदायत (सीधी राह) अपना ली। और बहुत से फ़ासिक (उल्लंघनकारी) हो गए। ⁶¹

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النَّبُوَّةَ
وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ٦٠

27. फिर हम ने उन के पदचिन्हों पर और भी रसूल भेजे। और फिर ईसा इब्ने मरयम को भेजा और उस को इन्ज़ील प्रदान की ⁶² और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में ममता और दया डाल दिया। ⁶³ और सन्यास का नया तरीक़ा इन्होंने ने ख़ुद निकाला। हम ने इसे इन के ऊपर फ़र्ज़ नहीं किया था। मगर अल्लाह की प्रसन्नता की चाह में उन्होंने ने यह बिदअत (नई गुमराही) निकाली फिर इस की रिआयत न कर सके जैसा कि रिआयत करने का हक़ था। ⁶⁴ तो उन में से जो लोग ईमान लाए थे उन का अज़्र हम ने उन्हें प्रदान किया ⁶⁵ परन्तु उन में अधिकतर लोग उल्लंघनकारी (फ़ासिक) हैं। ⁶⁶

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاتَّبَعَتْهُ
الْإِنجِيلُ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً
وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ
اللَّهِ فَمَنْ رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ٦١

28. ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो अल्लाह से डरो और उस के रसूल पर ईमान लाओ। ⁶⁷ वह तुम्हें अपनी रहमत में से दो हिस्से देगा ⁶⁸ और तुम्हें नूर प्रदान करेगा जिस के साथ तुम चलोगे और तुम्हें क्षमा प्रदान करेगा। अल्लाह बहुत ही क्षमाशील और अत्यंत दयावान है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ يُؤْتِكُمْ
كَفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٦٨

53. ऐसी निशानियाँ जिन से भली भाँति स्पष्ट होता था कि वे अल्लाह के रसूल हैं। निशानियाँ उन के चरित्र उन के आचरण, उन के जीवन और उन की शिक्षाओं में भी थीं और उन मोज़ाओं (चमत्कारों) में भी जो उन को दिए गए थे।

54. आसमानी किताब जो हिदायत का प्रमुख साधन थी। किताब का शब्द एक वचन है जो जाति के तौर पर प्रयुक्त हुआ है। इस से तात्पर्य समस्त आसमानी किताबें हैं।

55. मीज़ान अर्थात् शरीअत जो व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में न्याय स्थापित करने का साधन है और जिस से व्यावहारिक जीवन में संतुलन पैदा होता है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह रहमान नोट ८

56. न्याय पर जमने का मतलब इन्साफ़ और ठीक बात अपनाने का तरीका है। आदमी अपनी धारणा और आचरण में भी यही तरीका अपनाए और दूसरों के साथ व्यवहार करने में भी।

इस आयत से सामाजिक जीवन में न्याय स्थापित करने का महत्व स्पष्ट होता है। क्योंकि यह बात रसूलों की नियुक्ति के खास उद्देश्यों में से है और इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि इस्लाम मानव समाज के लिए न्यायिक व्यवस्था स्थापित करने का दावेदार है जो अल्लाह की शरीअत (संविधान) को स्थापित किये बग़ैर संभव नहीं है। राज्य, राजनीतिक, अर्थ, अदालत सब को अल्लाह के न्याय विधान का पाबन्द होना चाहिए। यह बात इस्लाम के सामाजिक पहलू को भी स्पष्ट करती है और उस की विस्तृत दीनी धारणा को भी।

57. लोहा उतारा, लोहा पैदा करने के अर्थ में है, जिस तरह चौपायों के बारे में इर्शाद हुआ है कि “हम ने चौपाये उतारे” जो पैदा करने ही के अर्थ में है। पैदा करने को नाज़िल करना या उतारा इस लिए कहा गया है ताकि मनुष्य में यह एहसास उभरे कि लोहा अल्लाह के हुक्म से पैदा हुआ है और उस के प्रदान करने से मनुष्य को यह नेमत मिली है :-

लोहे में ज़बरदस्त ख़ौफ़नाकी (بأس شديد) होने का मतलब यह है कि इस में वह शक्ति है जो जंगी उद्देश्यों के लिए ज़रूरी थी। इस से तलवार, तोप और टैंक जैसे अस्त्र तैयार किये जा सकते हैं, जो दुश्मन को भयभीत करने वाले और उस का ज़ोर तोड़ देने वाले हैं। इस तरह अपराधियों को दण्डित करने के लिए भी इस शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है। इस के अलावा लोहा सार्वजनिक लाभ की चीज़ है अतः उद्योग कला में इस का उपयोग प्रचुर है।

58. अर्थात् अल्लाह ने लोहा जिस से युद्ध उपकरण तैयार किये जाते हैं इस लिए मुहैया कर दिया है ताकि वह देखे कि कौन है जो इस को सच्चे उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करता है,

अर्थात् अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और उस के रसूलों के समर्थन एवं सहयोग में। गोया इस जंगी शक्ति का सदुपयोग जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है जिस के द्वारा न्यायिक व्यवस्था स्थापित होती है।

59. इन गुणों को बयान करने से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि अल्लाह तुम्हारी मदद का मोहताज नहीं है वह अपने दीन को चाहे तो अपने आदेश अथवा अपनी कुदरत के द्वारा भी ग़ालिब कर सकता है लेकिन वह इस बात का मौक़ा दे रहा है कि उस की प्रसन्नता प्राप्त करो कि यह असली सफलता है।

60. अर्थात् रिसालत के इस क्रम में हज़रत नूह और हज़रत इब्राहीम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं कि इन की नस्ल में नबी भी आए और किताबें भी अवतरीत हुई। यह आयत पुष्टि करती है कि नुबुव्वत और किताब का सिलसिला इन दो रसूलों ही की नस्ल में रहा। अतः हज़रत हूद, हज़रत स्वालेह, हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत सब हज़रत नूह ही की नस्ल से थे। फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह सम्मान प्रदान किया गया कि इन की नस्ल की दो शाखाएँ हुई। एक बनी इस्राईल जिन में कई नबी नियुक्त हुए और तौरात, ज़बूर और इन्जील भी इन्हीं में नाज़िल हुई। दूसरे बनी इस्माईल जिन में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी की हैसियत से नियुक्त हुए और जिन पर कुर्आन अवतरित हुआ।

कुर्आन की इस पुष्टि को ध्यान में रखते हुए वे अन्दाज़े ग़लत क्रार पाते हैं जो विभिन्न हस्तियों के नबी होने के बारे में की जाती है जब कि उन हस्तियों का ज़माना हज़रत इब्राहीम के बाद का रहा है और उन का हज़रत इब्राहीम की नस्ल से होना साबित भी नहीं।

61. अर्थात् इन दोनों रसूलों की नस्ल में हिदायत की राह अपनाने वाले कम ही निकले और भारी संख्या उल्लंघन कार्यो में ही लिप्त रही।

आज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का भी यही हाल है। इन में हिदायत की राह पर चलने वाले कम हैं और भारी संख्या पाप और उल्लंघन कार्यो में मस्त हैं जब कि कुर्आन की रौशनी इन की रहनुमाई के लिए मौजूद है।

62. अर्थात् अन्त में ईसा अलैहिस्सलाम को भेजा और उन्हें इन्जील प्रदान की ताकि उस के द्वारा हिदायत पायें। स्पष्ट रहे कि वह इन्जील अब अपने मूल रूप में मौजूद नहीं है। अलबत्ता उस के कुछ बिखरे अंश चारों इन्जील (मती, लूका, मरकूस और यूहन्ना) में पाये जाते हैं।

63. राफ़ः अर्थात् दिल की नर्मी, ममता और रहमः अर्थात् मेहरबान होना। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की जीवनी में ये दो विशेषताएँ स्पष्ट थीं। उन की मसीहाई से सृष्टियों के प्रति हमदर्दी

बरतने और उस पर दया करने की भावना उभरती थी इस के प्रभाव उन के अनुयायियों पर भी पड़े और उन में भी ममता और दया का भाव उत्पन्न हुआ। ये भावनाएँ अपनी उचित सीमा में वंछित थीं मगर उन्होंने ने सीमा लाँघ कर सन्यास अपना लिया जिस के फल स्वरूप जिहाद लुप्त हो गया।

हुदूद (अर्थात् इस्लामी दण्ड संहिता) को लागू करने के मामले में नर्मी बरतने से मना कर लिया गया है।

وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ - (नूर: २)

अर्थ :- “और अल्लाह के दीन के मामले में तुम को उन पर तरस न आए।” (नूर - २)

और लोहे (अस्त्र-शस्त्र) का इस्तेमाल न्याय स्थापित करने के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार इस्लाम दुश्मन शक्तियों का मुकाबला करने के लिए जिहाद भी बहुत ज़रूरी है। यह सब काम सख्ती के हैं इन जिम्मेदारियों से कतरा कर नर्मी और रहम की सीमा में अपने को कैद कर लेना और बीच के संतुलित मार्ग से हट जाना है। दीन (इस्लामी जीवन प्रणाली) ने एक तरफ स्वभाविक भावनाओं की परवरिश का सामान भी किया है और दूसरी तरफ सामाजिक मसलहतों और दीन को ग़ालिब करने के तकाज़ों को भी सामने रखा है। इस के एक पहलू को लेने और दूसरे पहलू को नज़रंदाज़ करने से संतुलन बिलड़ जाता है और गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

64. संयास से तात्पर्य इबादत गुजारी (पूजा भक्ति) का वह तरीका है जो ईसाइयों ने ईजाद किया था अर्थात् दुनिया की व्यस्तताओं और उस के लाभों को त्याग कर सब से कट कर गंज की राह लेना या किसी हुजरे में बैठे रहना। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने संयासी ब्रह्मचार्य का (गैर विवाहिक) जीवन अपनाया और पहाड़ों, गुफाओं और खानकाहों में रहने लगे। पूजा भक्ति में इतने आगे बढ़ गए कि फिर इस ने उन्हें अपने जीवन के स्वाभाविक तकाज़ों को भी पूरा करने से रोका। विशेष रूप से अल्लाह के रास्ते में जिहाद और कुफ़्र और इस्लाम की कशमकश में अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने से मुँह चुराया। कुआन उन के इसी तरीके को बिदअत (गुमराही) बता रहा है। और साफ़ कह रहा है कि ईश भक्ति का यह तरीका अल्लाह ने उन पर फ़र्ज नहीं किया था। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए यह नया तरीका निकाला। इस प्रकार उन्होंने ईश-भक्ति के मामले में अपने को ऐसे कष्ट में डाल दिया जिस को वे सहार न सके। यद्यपि कि उन्होंने ने यह तरीका अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति की चाह में अपनाया था। किन्तु बिदअत, बिदअत है चाहे वे नेक इरादे के साथ क्यों न की गई हो। कुआन सन्यास को बिदअत बताता है और इस की अतिरिक्त भर्त्सना इस पहलू से भी करता

है कि इस को वे पूरी तरह निभा न सके। अर्थात् दुनिया से कटने का यह तरीका ईजाद करने को तो उन्होंने ने ईजाद कर लिया लेकिन फिर वे इस पर जमे न रह सके। ज़ाहिर है जब प्राकृति एवं स्वभाव के विरुद्ध जब कोई लड़ाई शुरू करता है तो प्राकृति उस से जगं करती है। और सन्यास का इतिहास बताता है कि शादी ब्याह से नफ़रत करने वाले कुकर्मों का शिकार हो गए। और संयासियों तथा संयासिनियों के मेल जोल ने मठों, आश्रमों को कुकर्म के अड्डों में परिवर्तित कर दिया। इसी प्रकार जब जीविका उपार्जन के जायज़ तरीके उन्होंने ने त्याग दिये तो हराम खोरी उन में फैल गई। सूरह तौबा आयत ३४ में अहले-किताब के विद्वानों और संयासियों की इस निंदनीय हरकत का वर्णन हुआ है कि वे ग़लत तरीके से लोगों का माल खाते हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं।

भारत के बहुदेववादियों में भी संसार त्याग और तपस्या की धारणा चली आ रही है। इस तरीके को जिन्होंने ने अपनाया वे साधू और जोगी कहलाएँ। शोभा श्रंगार से ऐसा परहेज किया कि अपने वस्त्र ही उतार फेंके। फिर मन्दिरों में उन की सेवा के लिए देवदासियाँ भी रहने लगीं। परिणाम यह कि वे बुरी तरह बेहयाई कुकर्म, और हराम खोरी में लिप्त हो गए। संसार त्याग की आड़ में यह खुली दुनिया परस्ती है।

मुसलमानों में भी तसव्वुफ़ की राह से खानकाहियत आ गई, जिस में गोशा नशीनी, मुराक़बे, रियाज़तें और नप़्स कुशी जैसी चीज़ें शामिल थी। फिर जब उन्होंने ने तरीक़त को ईजाद किया तो उस ने शरीअत की जगह ले ली। इस प्रकार दीन में बिदआतों की भरमार हुई और इस का हुलिया ही बिगड़ कर रह गया।

हालाँकि हदीस में हर नई बात को जो दीन में निकाली जाए मरदूद और गुमराही क़रार दिया था।

مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ
فَهُوَ رَدٌّ - (بخاری کتاب الصلح)

अर्थ :- जो हमारे इस दीन में कोई नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मरदूद है। ” (बुखारी, किताबुस्सलह)

وَشَرُّ الْأُمُورِ مُحَدَّثَاتُهَا وَكُلُّ بَدْعَةٍ
ضَالَّةٌ - (مسلم کتاب الحجّة)

अर्थ :- “और बदतरीन बातें वे हैं जो नई निकाली जाएँ और हर बिदअत गुमराही है।” (मुस्लिम किताबुलजुमुआ)

इस हदीस में हर बिदअत को गुमराही क़रार दिया गया है

मगर उलमा के एक वर्ग ने बिदअत की दो क्रिसमें अच्छी और बुरी बता कर बहुत सी बिदअतों के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया और आज उम्मत का बहुत बड़ा वर्ग बिदअतों की गुमराही में फँसा हुआ है।

65. अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में जो लोग सही अक्रीदा रखने वाले और अपने ईमान में सच्चे थे उन को उन के कर्मानुसार अच्छा बदला दिया गया।

आगे के वाक्य से स्पष्ट होता है कि ये लोग जिन्हें अच्छा बदला दिया गया उल्लंघनकारी (फ़ासिक्र) नहीं थे बल्कि ईमान के तक्राजों को पुरा करने वाले थे।

66. अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों की भारी तादाद पाप और उल्लंघन कार्यों (फ़िस्क्र) में लिप्त है जिस का बड़ा कारण दीन का सच्चे मन से अनुपालन न करना और उस में नित नई बातें (बिदअतें) निकालना हैं।

आज मुसलमानों का हाल भी यही है कि जिन में से अधिकतर फ़िस्क्र में मुब्तिला हैं और दीन की सच्चे मन से पैरवी करने वाले कम ही हैं।

67. यह उन लोगों से सम्बोधन है जो हज़रत ईसा पर ईमान लाए हुए थे। उन से कहा जा रहा है कि जब तुम ईमान के दावेदार हो तो इस रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर भी ईमान लाओ। तभी तुम्हारा ईमान मान्य एवं स्वीकार्य होगा।

68. रहमत का एक हिस्सा इस कारण कि तुम पहले भी ईमान लाये थे और दूसरा हिस्सा इस लिए कि कुर्आन के पैगम्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर भी ईमान लाए सूरह

क्रसस आयत ५३, ५४ में है :-

وَإِذْ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا مَنَآبِهَ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ۔

अर्थ :- “और जब (कुर्आन) इन को सुनाया जाता है तो कहते हैं हम इस पर ईमान लाए निस्संदेह यह हमारे रब की तरफ़ से हक़ है। हम पहले ही से मुस्लिम हैं।”

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرُهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَإِذْ رَأَوْنَا بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ۔

अर्थ :- “ये वे लोग हैं जिन को उन का अज़्र (बदला) दोबारा दिया जाएगा इस कारण से कि वे साबित क़दम रहे। वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और जो रिज़क़ हम ने उन को दिया है उस में से वे खर्च करते हैं।”

और हदीस में आता है कि तीन आदमी ऐसे हैं कि उन के लिए दोहरा अज़्र (बदला) है जिन में से एक :-

رَجُلٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمَنَ بِنَبِيِّهِ
وَآمَنَ بِمُحَمَّدٍ۔ (بخاری، مسلم)

अर्थ :- “अहले-किताब में से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर भी ईमान लाया था और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाया।” (बुखारी मुस्लिम)



29. ताकि नहीं ⁶⁹ अहले-किताब जान लें कि वे अल्लाह के फ़ज़ल (अनुग्रह) पर कुछ भी अधिकार नहीं रखते। और यह कि फ़ज़ल अल्लाह ही के हाथ में है जिसे चाहता है प्रदान करता है ⁷⁰ और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ الْأَيْقِدُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ
وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

69. यह “ला ” (अर्थात् नहीं) खण्डन और प्रभावी बताने के लिए है जैसे कि उर्दू में नहीं नहीं का इस्तेमाल।

70. आयत का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जो बनी इस्राईल में से हैं इस लिए रसूल बना कर भेजा है ताकि अहले-किताब पर स्पष्ट हो जाए कि इस से पहले बनी इस्राईल में रिसालत का जो सिलसिला चला तो इस का यह मतलब नहीं कि इस कुल की कोई इजारादारी है। वास्तविकता यह है कि रिसालत का पद

अल्लाह का फ़ज़्ल है और वह पूरी तरह उसी के कंट्रोल में है वह जिसे चाहे प्रदान करे। इस से पहले उस की मर्जी बनी इस्राईल में नबी भेजने की हुई और जब उस की मर्जी यह हुई कि बनी इस्राईल में से रसूल उठाया जाए। उस की मर्जी पर किसी को आपत्ति जड़ने का कोई अधिकार नहीं। वह जिसे चाहे रिसालत के महान पद पर नियुक्त करे और जिस समूह को चाहे अपने इस फ़ज़्ल से नवाज़े कि रसूल उस के अन्दर से बरपा किया गया।



सूरह अल्-मुजादलह

५८. सूरह अल्-मुजादलह

नाम :- सूरह की शुरूआत एक स्त्री की तक्रार की घटना से हुई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-मुजादलह” (तक्रार) है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और सूरह अहज़ाब के बाद अर्थात् सन ५ हिजरी के बाद नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- अर्थात् ईमान वालों को उन के वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित फँसे मसले में अल्लाह के क़ानून को स्पष्ट करते हुए तथा मजलिस के आदाब से सम्बन्धित निर्देश देते हुए सच्चे ईमान और पाखण्ड (निफ़ाक़) के अन्तर को स्पष्ट किया गया है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में ज़िहार (अर्थात् पत्नी को अपनी माँ की पीठ कहकर अपने ऊपर हराम कर

लेना) के शरअी अहक़ाम बयान किए गए हैं।

आयत ५ और ६ में अल्लाह के शरअी अहक़ाम (संवैधानिक आदेश) से इन्कार करने वालों को कठोर दण्ड की चेतावनी सुनाई गई है।

आयत ७ से ११ में मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों व विश्वासघातियों) के षडयंत्रों तथा उन की उपद्रवी कानाफूसियों का ज़िक़र करते हुए ईमान वालों को मजलिसी आदाब की तलक़ीन की गई है।

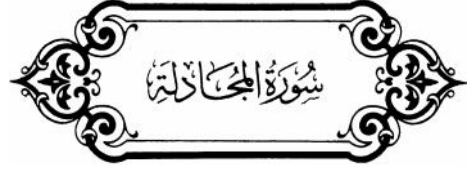
आयत १२ और १३ में रसूल से कानाफूसी के बारे में एक ख़ास हुक्म दिया गया है।

आयत १४ से २२ में मुनाफ़िक़ों पर पकड़ करते हुए सच्चे मोमिनों की पहचान बता दी गई है।

५८. सूरह अल्-मुजादलह

आयतें : २२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो (ऐ नबी !) तुम से अपने पति के बारे में झगड़ती थी और अल्लाह के सामने शिकवा कर रही थी। और अल्लाह तुम दोनों की बातें सुन रहा था। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने और देखने वाला है।¹

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ①

2. तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार कर बैठते हैं² (अर्थात् उन को माँ की पीठ से उपमा देते हैं) वे उन की माएँ नहीं हैं। उन की माएँ तो वही हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है।³ ये लोग एक अत्यंत अप्रिय और झूठी बात कहते हैं।⁴ और निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और बख्श देने वाला है।⁵

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مِنْ نِسَائِهِمْ ثَأْمَنَ أُمَّهَاتِهِمْ إِنْ أُمُّهُمْ إِلَّا إِلَهٌ وَكَذَلِكَ يَقُولُونَ مَنْكُرًا مِمَّنَ الْقَوْلِ وَذُورًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ②

3. जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार कर बैठें फिर अपनी कही हुई बात (अर्थात् जिस को उन्होंने ने हाराम कहा) उस की तरफ लौटें उन्हें एक गर्दन (गुलाम या दासी) को आज़ाद करना होगा, इस से पहले कि दोनों एक दूसरे को हाथ लगाएँ⁶। इस बात की तुम को नसीहत की जाती है।⁷ और तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह अवगत है।

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا ذَٰلِكُمْ تَوْعَظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ③

4. और जो व्यक्ति गुलाम न पाये वह दो महीने के लगातार रोज़े रखे⁸ इस से पहले कि दोनों एक दूसरे को हाथ लगाएँ और जो इस का सामर्थ्य न रखता हो वह साठ मिसकीनों को खाना खिलाए।⁹ यह इस लिए कि तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान रखो।¹⁰ यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं¹¹ और काफ़िरो के लिए दुखदायिनी यातना है।

مَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا مَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ذَٰلِكَ لَكُمْ لَكُمْ مِنْ اللَّهِ رَسُولُهُ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ④

1. इस आयत में जिस घटना की ओर इशारा किया गया है उस की तफ़सील रिवायतों में बयान हुई है जिन का सार यह है कि ख़ौला बिनत सोअलबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुई और अपना यह दुखड़ा सुनाया कि उन के पति औस बिन सामित ने उन की जवानी से तो फ़ायदा उठाया, किन्तु अब जब कि वे बुढ़ी हो गई हैं और उन के बच्चे भी हैं, भावना में आ कर कह दिया कि तुम मेरे लिए ऐसी हो जैसे माँ की पीठ (अर्थात् तुम मुझ पर हराम हो) अब मुझे कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। विशेष रूप से अपने बच्चों के कारण। इस लिए मैं अल्लाह के समक्ष अपनी यह शिकायत रखती हूँ। उन्होंने ने अपना यह मुक़दमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष जोरदार तरीक़े से प्रस्तुत किया और यह स्पष्टीकरण करते हुए कि उन के पति की नीयत तलाक़ देने की नहीं थी, इस बात के लिए जोर दिया कि उन के पति के लिए रूजू (अर्थात् मुझ अपने विवाह में वापस लेने) की सूरत निकाली जाए। आप ने इस पर ख़ामोशी अपनाई और कुछ ही देर में यह सूरह नाज़िल हुई जिस की शुरुआत ही इस तरह होती है कि अल्लाह ने उस औरत की फ़रियाद सुन ली जो तुम से अपने पति के बारे में झगड़ रही थी और अल्लाह के सामने अपनी शिकायत प्रस्तुत कर रही थी। और अल्लाह तुम दोनों की बातें सुन रहा था और बाद की आयतों में कफ़़ारा (प्रायश्चित) का हुक्म दे कर मिलाप की इजाज़त दे दी गई बशर्ते कि कफ़़ारा पहले ही अदा कर दिया जाए। इन रिवायतों के लिए देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर (जिल्द ४ पृष्ठ ३१९, ३२०)

उस औरत ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष अपने मुक़दमों को जिस अन्दाज़ में पेश किया उस को “मुजादलह” (झगड़ना) कहा गया है। यह झगड़ना ईमान के निष्ठा के साथ सुलह के उद्देश्य से था और इस में अल्लाह से फ़रियाद की गई थी इस लिए उस पर अल्लाह की कृपा दृष्टि हुई और उस की मुश्किल को दूर करने के लिए अल्लाह की वहय का अवतरण हुआ जिस ने “ज़िहार” के सिलसिले में शरीअत के आदेश स्पष्ट कर दिए और “ज़िहार” कर बैठने वालों के लिए ख़लासी की सूरत निकाली।

और यह जो फ़रमाया कि “अल्लाह तुम्हारी बातें सुन रहा था” तो इस से यह एहसास दिलाना अभिप्रेत है कि अल्लाह अपने शब्दों की ओर निरंतर ध्यानाकर्षित किये रहता है और उन की एक एक बात सुनता है और उन की फ़रियाद को पहुँचता है। वह अपने बन्दों की सहायता के लिए हर समय और हर जगह मौजूद है।

2. “ज़िहार” यह है कि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कह दे कि तू मेरे लिए माँ की पीठ जैसी है। अरबों में यह प्रथा

(Custome) चली आ रही थी कि जो व्यक्ति यह शब्द कह देता उस की पत्नी उस पर हमेशा के लिए हराम हो जाती और इसे वे तलाक़- मुगल्लज़: (Final Divorce) बताते।

“ज़िहार” (पीठ) का शब्द सवारी के अर्थ में है जिसे सांकेतिक शब्द के रूप में प्रयुक्त करते।

3. अर्थात् पत्नी को माँ कह देने से वह माँ नहीं बन जाती। उस की माँ तो वही है जिस ने उस को जना है।

4. पत्नी को माँ कहना अत्यंत अप्रिय बात भी है और झूठ भी। अप्रिय इस लिए कि यह एक अनुचित बात है और औरत को मानसिक एवं हार्दिक पीड़ा पहुँचाने का कारण भी। तथा झूठ इस लिए कि यह सत्य के विरुद्ध बात है।

5. अर्थात् जो व्यक्ति पत्नी को अपने ऊपर हराम करार देने के गुनाह का अपराधी होता है वह अल्लाह से क्षमा याचना करे क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला तथा बख़्श देने वाला है।

क्षमा उस गुनाह की जो हुआ और बख़्शिश सारे गुनाहों से।

6. यह “ज़िहार” का कफ़़ारा (प्रायश्चित) है जो इस आयत में और इस के बाद वाली आयत में बयान हुआ है। ज़िहार के बाद यह कफ़़ारा अनिवार्य रूप से अदा करना होगा ताकि उस गुनाह का प्रायश्चित अर्थात् समाप्ति हो जाए जिस का वह अपराधी हुआ है अर्थात् कि पत्नी से सम्बन्धित एक खुले झूठ का।

“अपनी कही हुई बात की तरफ़ लौटते हैं” का मतलब यह है कि पहले उन्होंने अपनी पत्नी को अपने ऊपर हराम ठहराया इस के बाद वह उस से पत्नी का सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं। यहाँ शब्द **يُؤَدُّونَ** (लौटाते हैं) लौटना चाहते हैं के अर्थ में हैं (शब्द के इस अर्थ के लिए देखिए अल्लामा इब्ने क़य्यिम की ज़ादुलमिआद जिल्द ४ पृष्ठ ८५)

“ज़िहार” के बाद औरत को अधर में नहीं छोड़ा जा सकता। क्यों की शरीअत ने इस से मना किया है तथा जो झूठी बात उस ने ज़बान से निकाली उस पर जमे रहना भी सही नहीं इस लिए लामुहाला उसे कफ़़ारा अदा करना ही होगा ताकि वह अपनी पत्नी को वास्तव में पत्नी बना कर रख सके।

कफ़़ारा एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले अदा करना होगा। एक दूसरे को हाथ लगाने से तात्पर्य सहवास है और शब्द “**يَتَمَسَّسَا**” इस के लिए सांकेतिक शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

कफ़़ारा के तीन तरीक़े बयान किये गए हैं। एक यह कि जिस ने “ज़िहार” किया हो वह एक गर्दन अर्थात् गुलाम या दासी को आज़ाद करे कि उस को आज़ाद करना गुलामी से उस की गर्दन छुड़ाना है।

दूसरे तरीक़े आगे की आयत में बयान हुए हैं।

7. अर्थात् तुम्हें नसीहत की जाती है कि शरीअत के इन आदेशों पर अमल करो। अहकाम बयान करते हुए बीच में यह कहना ताक़ीद के तौर पर कि तुम्हारी अपनी भलाई इन आदेशों पर नेक नीयती के साथ अमल करने ही में है। इन का उल्लंघन करना या इन को खेल बना लेना विनाश का कारण हो सकता है।

8. अर्थात् अगर आज़ाद करने के लिए गुलाम या लौंडी (दासी) न हों तो फिर लगातार दो महीने रोजे रखे।

मौजूदा ज़माने में गुलामों का अस्तित्व नहीं रहा इस लिए कफ़ारा अदा करने की दूसरी सूरत अर्थात् निरंतर दो महीने के रोजे और तीसरी सूरत जो आगे बयान हो रही है बाक़ी रह गई है। लगातार रोजे रखने का मतलब यह है कि रोज़ों का क्रम अकारण टूटने न पाये।

9. कफ़ारा अदा करने की तीसरी सूरत यह है कि साठ मिस्कीनों को खाना खिलाया जाए। कुर्आन ने इस के लिए कोई मात्रा निर्धारित नहीं की। अलबत्ता क्रसम के कफ़ारे के सिलसिले में यह स्पष्टीकरण है :-

مِنْ أَوْسَطِ مَا تَطْعُمُونَ أَهْلِيكُمْ. (मार्क: १९)

अर्थ :- “औसत दर्जे का खाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो।” (माइदा - ८९)

इस लिए आदमी वह खाना जो अपने घर वालों को खिलाता है उस जैसा खाना मिस्कीनों को पेट भर खिलाता है तो हुक्म का मंशा पूरा हो जाता है। हदीस से यह भी साबित है कि खाने की वस्तुओं में कोई वस्तु आधा साउ (१ किलो ८८ ग्राम) प्रति मिस्कीन के हिसाब से दी जा सकती है।

मौजूदा ज़माने में नक्रद की अदायगी कफ़ारा देने वाले की सहूलत का बाइस (कारण) है। और मसाकीन भी इसी को पसन्द करते हैं। इस लिए इस मिक्कदार की क़ीमत भी मिसकीन को अदा की जा सकती है। ताकि वे अपनी पसंद का खाना खा सकें।

ज़िहार के सिलसिले में कुछ मुफ़स्सिरीन ने कुछ दूर की फ़िक़ही बहसें भी की हैं। इस तरह की बहसें कुर्आन का अध्ययन करने वाले के लिए मस्तिष्क उलझाव का कारण बनती है। अमल की स्पिरिट धूमिल हो जाती है। फ़िक़ही जकड़बन्दियों में वृद्धि हो जाती है और मस्तिष्क एवं विचार की सही तरबियत नहीं हो

पाती क्यों कि ध्यान उन बुनियादी बातों की ओर से हट जाता है जो सम्बन्धित आयतों में बयान हुई होती हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम का मानसिक प्रशिक्षण इस तरह किया था कि वे न बेकार की फ़िक़ही बहसें छेड़ते थे और न व्यर्थ के प्रश्न खड़े कर देते थे बल्कि जब कोई मामला सामने आ जाता तो वे उस का हल तलाश करते इस में बड़ी सलामती थी। लेकिन बाद में फ़िक़ही मानसिकता बढ़ गई और वे मसलों को कुरेदने लगे। इस मौक़े पर बनी इस्त्राईल के गाय को वध करने की वह घटना भी सामने रखना चाहिए जो सूरह बक्रर: में बयान हुई है। कि जब उन को एक गाय को ज़बह (वध) करने का आदेश दिया गया तो बजाय इस के कि सीधे सीधे इस आदेश का अनुपालन करते उन्होंने तरह तरह के प्रश्न कर के जैसे कि उस का रंग कैसा हो, उस की आयु कितनी हो, इस काम को अपने लिए मुश्किल बना दिया। मालूम हुआ कि जो लोग दीन में सख़्तियाँ पैदा करते हैं उन को सख़्तियों में मुब्तिला किया जाता है।

इस आयत के अन्तर्गत यह बात भी समझ लेना चाहिए कि कुर्आन ने ज़िहार को तलाक़ नहीं कहा है बल्कि इसे अप्रिय और झूठ कहा है जब कि अज्ञानता काल में ज़िहार को आखिरी तलाक़ (तलाक़ मुग़ल्लज़ा या Final Divorce) समझा जाता था। मालूम हुआ कि जिस तरीक़े को शरीअत का प्रमाण प्राप्त नहीं वह मान्य एवं स्वीकार्य नहीं। यह नज़ीर है इस बात की कि इकट्ठी तीन तलाक़े भी तीन तलाक़ों के हुक्म में नहीं हैं क्यों कि तलाक़ के इस तरीक़े को शरीअत की सनद प्राप्त नहीं है।

10. अर्थात् ये आदेश अज्ञानता के अंधकार को दूर कर के हिदायत का मार्ग रौशन कर रहे हैं। हिदायत का यह मार्ग अल्लाह अपने रसूल के द्वारा रौशन कर रहा है। इस रौशनी में चलने के लिए आवश्यक हैं कि अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान और विश्वास रखो।

11. अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं से तात्पर्य शरअी आदेश और क़ानून हैं जिन की हिफ़ाज़त और पाबन्दी ईमान का तक्राज़ा है। इस के मुकाबले में अज्ञानता काल की प्रथाएँ या स्वःरचित क़ानून को प्राथमिकता देना ईमान के बिल्कुल विरुद्ध है।

जो लोग अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करते हैं वे उसी प्रकार अपमानित होंगे जिस प्रकार इन से पहले के लोग अपमानित हुए। हम ने अत्यंत स्पष्ट आयतें उतारी हैं। और काफ़िरों के लिए अपमानजनक यातनाएँ हैं। जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा और उन्हें बताएगा कि उन्होंने ने कैसे कर्म किये थे। अल्लाह ने सब कुछ शुमार कर रखा था और ये लोग इस को भुला बैठे थे। अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। (अल-कुआन)

5. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करते हैं¹³ वे उसी प्रकार अपमानित होंगे जिस प्रकार इन से पहले के लोग अपमानित हुए।¹⁴ हम ने अत्यंत स्पष्ट आयतें उतारी हैं। और काफ़िरों के लिए अपमानजनक यातनाएँ हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُنْتُوا كَمَا كُتِبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَذَلِكَ أَتَيْنَا إِلَيْكُمْ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ⑤

6. जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा और उन्हें बताएगा कि उन्होंने ने कैसे कर्म किये थे। अल्लाह ने सब कुछ शुमार कर रखा था और ये लोग इस को भुला बैठे थे। अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

يَوْمَ يَجْعَلُ اللَّهُ جَمِيعًا فِتْنَةً لِمَنْ يَمَّا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑥

7. क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह जानता है हर चीज़ को जो आसमानों में और ज़मीन में है।¹⁵ ऐसा नहीं होता कि तीन आदमियों में कानाफूसी हो और उन के बीच चौथा अल्लाह न हो और न पाँच आदमियों में कानाफूसी हो और उन के बीच छट्ठा अल्लाह न हो। कानाफूसी करने वाले इस से कम हों या अधिक वह उन के साथ होता है जहाँ कहीं भी वे हों।¹⁶ फिर क्रियामत के दिन वह उन को बता देगा कि उन्होंने ने क्या कुछ किया है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدْنَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرُ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ إِنْ مَا كَانُوا ثُمَّ يَنْبِئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑦

8. क्या तुम ने उन लोगों को देखा नहीं जिन्हें कानाफूसी करने से मना किया गया था फिर भी वे वही काम कर रहे हैं, जिन से उन्हें मना किया गया था।¹⁷ ये लोग गुनाह, ज़्यादती और रसूल की अवज्ञा की बातें ख़ुफ़िया तरीक़े से करते हैं।¹⁸ और जब (ऐ नबी!) तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें उस कलिमे से सलाम करते हैं जिस से अल्लाह ने तुम पर सलाम नहीं भेजा।¹⁹ और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमे अज़ाब क्यों नहीं देता।²⁰ उन के लिए जहन्नम ही काफ़ी है।²¹ वे उस में पड़ेंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَهَوُا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نَهَوْا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحْيِكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑧

9. ऐ ईमान वालो ! जब तुम सरगोशी करो तो गुनाह, ज़्यादती, और रसूल की अवज्ञा की बातें न करो, बल्कि नेकी और तक्रवा की बातें करो।²² और अल्लाह से डरो जिस के समक्ष तुम सब इकट्ठा किये जाओगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَنَاجَوْا بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ⑨

12. अंत में यह चेतावनी है कि जो लोग अल्लाह के आदेश और क़ानून को मानने से इन्कार करेंगे उन के लिए दुखदायनी यातना है और इसी मुनासिबत से आगे की आयतों में काफ़िरों और मुनाफ़िकों का चरित्र और उन का अन्जाम बयान हुआ है।

13. आज मुसलमानों में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो शरीअत के क़ानून के विरोध में उठ खड़े होते हैं। उन की ये हरकतें अल्लाह और उस के रसूल के विरोध के समानार्थ हैं।

14. मुराद वे गुजरी हुई जातियाँ हैं जिन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया था।

15. अर्थात् अल्लाह के ज्ञान का सार्वभौमिक होना एक स्पष्ट वास्तविकता है जिस को प्रत्येक व्यक्ति स्वभावतः जानता है।

16. अर्थात् कानाफूसी करने वाले चाहे तीन हों या अधिक या उस से कम, अल्लाह अपने ज्ञान, और अपने सुनने, देखने और अपने सामर्थ्य की दृष्टि से वहाँ मौजूद रहता है इस लिए गुप्त रूप से की हुई बातें उस से छिपी नहीं रह सकती।

17. “नजवा” का अर्थ चुपके से कहने और किसी मजलिस में कुछ आदमियों के आपस में कानाफूसी करने के हैं ताकि दूसरों को ख़बर न हो। यह काम उसी सूरत में सही हो सकता है जब कि वह किसी भले उद्देश्य के लिए जैसे कि किसी बुराई को दूर करना, लोगों के बीच सुलह कराना आदि के लिए हो वरना यह तरीक़ा अच्छा नहीं है क्योंकि कानाफूसी आम तौर से ग़लत उद्देश्यों के लिए होती है जैसे किसी पर हँसने या किसी के विरुद्ध साज़िश करने आदि के लिए। सूरह निसा आयत ११४ में इर्शाद हुआ है।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنَ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ
أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ - (नساء: ११४)

अर्थ :- “इन की अधिकतर कानाफूसियों में कोई भलाई नहीं होती। हाँ जो व्यक्ति गुप्त रूप से सदक़ा, या भली बात या लोगों के बीच सुलह सफ़ाई की बात करे तो उस में ज़रूर भलाई है।”

18. तात्पर्य मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डी लोग) हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में शरीक हो जाते और फिर आपस में ही कानाफूसियाँ करने लगते। उन की ये

कानाफूसियाँ दीन में शक संदेह उत्पन्न करने, ईमान वालों के विरुद्ध साज़िशें करने और रसूल की अवज्ञा पर उकसाने के लिए होती थीं।

19. सूरह अहज़ाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया गया है :-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ

وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا - (अहज़ाब: ५६)

अर्थ :- “ऐ ईमान वालों ! तुम भी नबी पर दरूद और सलाम भेजो।” (अहज़ाब ५६)

इस सलाम के लिए “अस्सलामुअलैक” और “अस्सलामु अलैकुम” के शब्द शरीअत ने नियत किये लेकिन यहूदी और उन के गुर्गे मुनाफ़िक़ सलाम का उच्चारण कुछ इस तरह करते कि वह साम हो जाता जिस का अर्थ मौत। अतः हज़रत आइशा का बयान है कि :-

“यहूदियों की एक जमाअत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए आई, उन्होंने ने कहा “अस्सामु अलैकुम” अर्थात् तुम पर मौत हो। हज़रत आइशा कहती हैं, मैं समझ गई और जवाब में कहा “वालैकुमस्साम वल्लअनः” (तुम पर मौत और लानत हो) रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फ़रमाया, जाने दो आइशा। अल्लाह हर काम में नरमी पसंद फ़रमाता है मैं ने निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल ! आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ने कह दिया था वालैकुम। “तुम पर हो” (अर्थात् ऐसे मौक़े पर जवाब में वालैकुम कह देना काफ़ी है।) (बुख़ारी किताबुल अदब)

उन की इस हरकत पर इस आयत में पकड़ की गई है।

20. अर्थात् यदि वास्तव में यह व्यक्ति पैग़म्बर है तो हमारी इस बददुआ पर हम पर अज़ाब क्यों नहीं आ जाता। यह उन की भयावह ग़लती थी। वरना हक़ीक़त यह है कि अल्लाह अपराधियों को मोहलत देता है और अज़ाब समय पर ही आता है।

21. अर्थात् उन की इन हरकतों पर दुनिया में अज़ाब आए या न आए असली अज़ाब तो जहन्नम का है जो निश्चित रूप से इन्हें भुगतना होगा। और वह बहुत काफ़ी है।

22. अर्थात् कानों में कुछ कहना लोगों की भलाई और दीनी मसलहतों की ख़ातिर होना चाहिए न कि उपद्रव, बिगाड़ और गुनाह के कामों के लिए।

10. ये कानाफूसियाँ शैतान की तरफ़ से हैं ताकि ईमान रखने वाले दुखी हों।²³ हालाँकि अल्लाह की इज़्ज (मर्जी) के बग़ैर वे उन्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।²⁴

إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑩

11. ऐ ईमान वालो ! जब तुम से कहा जाए कि अपनी मजलिसों में कुशादगी पैदा करो तो कुशादगी पैदा करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी प्रदान करेगा।²⁵ और जब तुम से कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो ²⁶ अल्लाह तुम में से उन लोगों को जो ईमान रखने वाले हैं और जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है, दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा।²⁷ और जो कुछ तुम करते हो उस से अल्लाह अवगत है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑪

12. ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हें रसूल से सरगोशी करना हो तो अपनी सरगोशी से पहले सदका दो।²⁸ यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़्यादा पाकीज़ा है।²⁹ किन्तु अगर (सदका देने के लिए) कुछ न पाओ तो अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।³⁰

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَاجَعْتُمْ الرُّسُولَ فَخُذُوا بِأَيْدِي نَجْوِكُمْ صَدَقَةٌ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑫

13. क्या तुम डर गए इस बात से कि अपनी सरगोशियों से पहले सदक़े दो।³¹ तो जब तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम को क्षमा कर दिया ³² तो नमाज़ तैयारी के साथ अदा करते रहो और ज़कात देते रहो और अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करते रहो।³³ तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह अवगत है।

ءَأَسْفَقْتُمْ أَنْ تَخُذُوا بِأَيْدِي نَجْوِكُمْ صَدَقَاتٍ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑬

14. क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ऐसी जाति को दोस्त बनाया है जिस पर अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) हुआ।³⁴ ये लोग न तुम में से हैं और न इन में से।³⁵ ये जानते बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं।³⁶

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ⑭

15. अल्लाह ने उन के लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है। बहुत बुरा है जो कुछ ये कर रहे हैं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑮

23. अर्थात् ये कानाफूसियाँ जो बुरे उद्देश्यों के लिए की जा रही हैं शैतान की उकसाहटों के फलस्वरूप हैं। ईमान वाले जब मुनाफ़िकों को कानाफूसी करते हुए देखते हैं तो उन्हें दुख होता है कि ये मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने के लिए कैसी कैसी हरकतें कर रहे हैं।

24. अर्थात् ईमान वाले निश्चित रहें कि ये बुराई से भरी कानाफूसियाँ उन का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं। उन्हें उसी सूरत में नुकसान पहुँच सकता है जब कि अल्लाह की मर्जी हो यह भरोसा ही है जो साहस बना रखता है।

25. नबी की मजालिस में लोगों की भारी संख्या आ जाती और जगह भर जाती। इस लिए आदेश दिया गया कि मजलिस में इस तरह बैठें कि बाद में आने वाले लोगों के लिए गुन्जाइश निकल आए। और इस का यह इनाम भी बयान किया गया कि कुशादगी पैदा करने वालों को अल्लाह कुशादगी प्रदान करेगा। अल्लाह की तरफ से कुशादगी में ख़ैर और भलाई में वृद्धि भी शामिल है और जन्नत के विशाल बाग़ भी।

कुशादगी पैदा करना मजलिस के आदाब में से है इस लिए इस आदेश को नबी की मजलिस के लिए ख़ास नहीं रखा गया। बल्कि सार्वजनिक रूप से मुसलमानों की सभी मजलिसों के लिए यह आदेश दिया गया चाहे वह दीनी इज्तिमा आदि हो या सलाह मन्त्रिण की सभाएँ हों या अन्य कल्याणकारी कामों के लिए मजलिसें।

26. अर्थात् जब महफ़िल समाप्त होने का एलान कर दिया जाए तो उठ जाया करो, तथा अगर सभाध्यक्ष पंक्तियों में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करे तो तुम्हें अनुशासन का पाबन्द हो जाना चाहिए।

27. इशारा है इस बात की तरफ़ कि कोई व्यक्ति अपने ज्ञान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से चाहे कितने ही ऊँचे पद का क्यों न हो महफ़िल के आदाब और अनुशासन की पाबन्दी उसे हर हाल में करना चाहिए। मजलिस में जगह चाहे किसी कोने में मिल जाए या सभाध्यक्ष के निर्देश पर उसे उठ कर जाना पड़े तो उसे वह अपना अपमान न समझे। इस विनम्रता में ही दर्जों की बुलन्दी है। हदीस में इर्शाद हुआ है :-

مَاتُوا ضِعَاحًا لِلَّهِ الْارْفَعَةُ اللَّهُ - (مسلم کتاب البر)

अर्थ :- “जो बन्दा अल्लाह की खातिर विनम्रता अपनाता है अल्लाह उस का दर्जा बुलन्द करता है।” (मुस्लिम किताबुल बिर)

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने उन लोगों पर कड़ी अलोचना की है जो कुर्सी के लालची होते हैं। मरकुस में है :-

“उस ने अपने उपदेश में उन से कहा, शास्त्रियों से चौकस

रहो जो लम्बे लम्बे वस्त्र पहन कर फिरना और बाजारों में नमस्कार और आराधनाओं में मुख्य मुख्य आसन और मेहमानदारी में मुख्य स्थान भी चाहते हैं वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। ये अधिक दण्ड पायेंगे।” (मरकुस १२ : ३८ ता ४०)

और मौजूदा ज़माने में लीडर कुर्सी के पीछे दौड़ रहे हैं और उलमा का भी आम तौर से हाल यह है कि वे मजलिसों में ऊँचा स्थान चाहते हैं जिस के कारण वे अपना सम्मान खो रहे हैं परन्तु उन्हें इस का एहसास नहीं।

28. सदक्रा करने का यह आदेश इस लिए दिया गया ताकि जो लोग एकान्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात चीत करना चाहें उन्हें वह एहसास हो कि वे एक महान व्यक्ति से बातचीत कर रहे हैं। यह एहसास उन्हें ग़लत बात कहने से भी बाज़ रखेगा और अनावश्यक तथा समय नष्ट करने वाली बातों से भी।

29. बेहतर इस दृष्टि से कि तुम्हें इस का बदला मिलेगा और ज़्यादा पाकीज़ा इस लिहाज़ से कि रसूल की ख़िदमत में तुम पाकीज़ा जज़्बात ले कर आओगे।

30. अर्थात् यदि समय पर सदक्रा देने के लिए तुम्हारे पास कुछ न हो तो बग़ैर सदक्रा दिये हुए रसूल से एकान्त में वार्ता कर सकते हो इस आशय के साथ कि अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

यह रिआयत केवल निर्धनों के लिए नहीं थी क्योंकि यदि निर्धनों ही के लिए होती तो शब्द “फ़मल्लम यजिद” (अर्थात् जो व्यक्ति सदक़े के लिए कुछ न पाये) होता। परन्तु आयत में सार्वजनिक रूप से फ़रमाया गया कि “फ़इल्लम तजिदू” (अर्थात् लेकिन यदि तुम सदक्रा देने के लिए कुछ न पाओ) जिस का प्रत्यक्ष भावार्थ यही है कि जिस व्यक्ति को भी समय पर सदक्रा देने के लिए कुछ न मिले उस को अल्लाह क्षमा करने वाला है।

31. यद्यपि कि सदक़े के उक्त आदेश में काफ़ी लचक रखी गई थी फिर भी इस हिदायत पर अमल करने में सहाबा ने कठिनाई महसूस की। जिस समय बात करना आवश्यक है उस समय सदक़े का प्रबन्ध करना मुश्किल है और बग़ैर सदक्रा किये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एकान्त में वार्ता करना उचित नहीं। उन के इसी एहसास को डरना कह कर व्यक्त किया गया है वरना यह बात कन्जूसी के कारण नहीं थी।

32. अर्थात् अल्लाह ने सदक्रा देने के उक्त आदेश को तुम्हारे लिए कुछ और नर्म कर दिया कि ऐसा न करने की सूरत में तुम्हारी कोई पकड़ नहीं होगी। इस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो गई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एकान्त में बात करने से पहले सदक्रा देना ख़ैर और ज़्यादा पाकीज़ा तरीक़ा

जरूर है किन्तु इस की पाबन्दी अनिवार्य नहीं।

मुफ़स्सिरीन ने यहाँ नासिख और मन्सूख की बहस छेड़ दी। वे पहली आयत को जिस में सरगोशी से पहले सदका करने का आदेश दिया गया है, इस दूसरी आयत से जिस में क्षमा करने की बात है मन्सूख (निरस्त) मानते हैं, हालाँकि दूसरी आयत में पहली आयत के मन्सूख किये जाने की कोई पुष्टि नहीं है और न कुर्आन की कोई आयत मन्सूख हुई है। सही बात यह है कि दूसरी आयत ने पहले आदेश में रिआयत कर दी है न कि उसे निरस्त कर दिया। निरस्त उस सूत्र में किया जा सकता था जब कि दूसरा आदेश सरगोशी से पहले सदका देने को निरस्त कर देता। परन्तु इस दूसरी आयत ने इसे निरस्त नहीं किया बल्कि रिआयत कर दी और रिआयत का यह आदेश उस समय नाज़िल हुआ जब कि पहले आदेश के द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एकान्त में गुप्त वार्ता का असाधारण महत्व स्पष्ट हो चुका था और इस का एहसास भी सहाबा को हो गया

था। रह गई बात उस रिवायत की जिस में बयान हुआ है कि दूसरा आदेश कुछ घंटों के बाद अवतरित हुआ तो यह रिवायत अविश्वसनीय है।

33. अर्थात् इस रिआयत के बाद तुम्हें अपने स्थाई अनिवार्य कर्तव्यों की अच्छी तरह पाबन्दी करनी चाहिए कि यही चीज़ें ईमान में खुलूस और निष्ठा पैदा करती हैं।

34. अल्लाह का प्रकोप यहूदियों पर हुआ। इस जाति को मुनाफ़िकों ने अपना दोस्त बना लिया था। वे ईमान वालों के मुकाबले में यहूदियों के हितों को वरीयता देते थे।

35. अर्थात् ये मुनाफ़िकीन (पाखण्डी लोग) तो न अपने ईमान में सच्चे हैं कि ईमान वालों के गरोह में से हों और न यहूदियों ही के वफ़ादार हैं कि उन में से हों। बल्कि वे स्वार्थ के बन्दे हैं इस लिए उन से भी सम्बन्ध रखे हुए हैं और तुम से भी।

36. अर्थात् झूठी क्रसमें खा कर अपने मुसलमान होने का दावा करते हैं और मुसलमानों के हितैषी होने का विश्वास दिलाते हैं।



शैतान उन पर मुसल्लत हो गया है। और उस ने अल्लाह की याद उन से भुला दी है। ये लोग शैतान की जमाअत (पार्टी) के हैं। सुन लो कि शैतान की जमाअत (पार्टी) ही तबाह होने वाली है। जो लोग अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करते हैं वे अपमानित होने वालों में होंगे। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ग़ालिब हो कर रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। (अल-कुआन)

16. इन्होंने ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है³⁷ और अल्लाह की राह से रोकते हैं।³⁸ इन के लिए अपमान की यातना है।³⁹

لَا تُغْنِي عَنْهُمْ آيَاتُهُمْ مِنْ جَبَّةٍ قَصَدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ⑭

17. न इन के माल इन को अल्लाह की यातना से बचा सकेंगे और न इन की औलाद। ये दोज़ख वाले हैं। हमेशा इसी में रहेंगे।⁴⁰

لَنْ نَغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑮

18. जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा वे उस के सामने भी इसी तरह क़समें खाएंगे जिस तरह तुम्हारे सामने खाते हैं।⁴¹ और समझेंगे कि वे किसी बुनियाद पर हैं।⁴² सुन लो कि वे बिलकुल झूठे हैं।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ إِلَّا أَنَّهُمْ هُمُ الْكَذِبُونَ ⑯

19. शैतान उन पर मुसल्लत हो गया है।⁴³ और उस ने अल्लाह की याद उन से भुला दी है।⁴⁴ ये लोग शैतान की जमाअत (पाटी) के हैं।⁴⁵ सुन लो कि शैतान की जमाअत (पाटी) ही तबाह होने वाली है।

اسْتَحْذَرُوا الشَّيْطَانَ فَإِنَّهُمُ ذُرِّيَّةُ اللَّهِ ⑰ وَلَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ⑱ الْإِنَّا حِزْبُ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑲

20. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करते हैं वे अपमानित होने वालों में होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ يُعَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ⑳ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ⑳

21. अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ग़ालिब हो कर रहेंगे।⁴⁶ निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ⑳ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ㉑

22. जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं उन को तुम कभी उन लोगों से दोस्ती रखते हुए न देखोगे जो अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी रखते हैं,⁴⁷ चाहे वे उन के बाप हों या उन के बेटे, या उन के भाई या उन के ख़ानदान के लोग।⁴⁸ यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान अंकित कर दिया है और अपनी तरफ़ से रूह के द्वारा उन की मदद की है।⁴⁹ वह उन्हें ऐसी ज़न्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें प्रवाहित होंगी। उन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए।⁵⁰ ये लोग अल्लाह की जमाअत (पाटी) के हैं।⁵¹ सुन रखो कि अल्लाह की जमाअत (पाटी) वाले ही सफल होने वाले हैं।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ⑳ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ㉒ الْإِنَّا حِزْبُ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ㉓

37. अर्थात् बात बात पर झूठी क्रसमें खा कर अपना बचाव करने की कोशिश करते हैं।

38. अर्थात् ऐसी हरकतें और ऐसी साजिशें करते हैं जो इस्लाम की राह को रोकने वाली हैं।

39. ऊपर कहा गया था उन के लिए सख्त यातना है और यहाँ फ़रमाया उन के लिए अपमान की यातना। सख्त यातना उन की नीच हरकतों के चलते जो वे इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध करते रहे।

40. मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) भी जहन्नम में उसी तरह हमेशा यातना भुगतते रहेंगे जिस तरह कि खुले काफ़िर।

41. अर्थात् क्रियामत के दिन भी वे अपने आप को निर्दोष सिद्ध करने के लिए झूठी क्रसमें खाएँगे। सूरह अन्आम में है कि वे शिर्क से अपने संबन्ध का इन्कार क्रसम खा कर करेंगे :-

وَاللّٰهُ رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ۔ (انعام: २३)

अर्थ :- “अल्लाह हमारे रब की क्रसम हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं थे।” (अन्आम - २३)

42. अर्थात् वे समझेंगे कि झूठी क्रसमें खा कर वे अपने को मोमिन सिद्ध कर सकेंगे और उन की मुक्ति हो सकेगी।

शैतान केवल वस्वसे डालता है किन्तु जब मनुष्य उस से प्रभावित हो कर अपनी बाग़ डोर उस के हाथ में दे देता है तो वह उस पर काबू पा लेता है और उसे गुमराह कर के छोड़ता है। यही है शैतान का मुसल्लत होना।

44. शैतान किसी को गुमराह करने के लिए जो बुनियादी काम करता है वह है दिल से अल्लाह की याद भुला देना और उस की ओर से ध्यान हटा देना। इस ग़फ़लत में पड़ जाने के बाद किसी भी बुराई को स्वीकार करना मनुष्य के लिए आसान हो जाता है।

45. अर्थात् ये मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डी) शैतान के साथ हैं और उस के इशारे पर काम करने वाले हैं।

46. अर्थात् अल्लाह फ़ैसला कर चुका है कि जो लोग अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध उठ खड़े होंगे उन को निश्चित रूप से हारना और दबना पड़ेगा। या तो आसमानी अज़ाब के द्वारा उन की समाप्ति कर दी जाएगी या जिहाद के मैदान में रसूल और उन के साथियों के द्वारा उन को बुरी तरह शिकस्त दी जाएगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

विरोधियों के साथ यह दूसरी सूरत ही पेश आई। (अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट ७५)

47. अर्थात् कोई सच्चा मोमिन अल्लाह के दुश्मन को अपना दोस्त नहीं बनाता। एक ही दिल में अल्लाह की मुहब्बत और वफ़ादारी और उस के दुश्मन से मुहब्बत और वफ़ादारी एकत्र नहीं हो सकती।

मौजूदा ज़माने में सेक्यूलिज़्म से प्रभावित हो कर कितने ही मुसलमानों ने मुनाफ़िक़त (पाखण्ड) का रास्ता अपना लिया है परन्तु सेक्यूलिज़्म का नारा हकीकत को बदल नहीं सकता।

48. आयत का मंशा यह है कि कुफ़र और इस्लाम की जंग में ईमान वालों को काफ़िरों से निर्भीकतापूर्वक और निःसंकोच लड़ना चाहिए चाहे उन की ज़द में उन के निकट सम्बन्धी ही क्यों न आएँ। वे जब अल्लाह और उस के रसूल के विरोध पर उतर आए हैं और उस के दीन के विरुद्ध संग्राम छेड़ रहे हैं तो उन की मुहब्बत ईमान वालों के दिलों में कहाँ जगह पा सकती है और वे उन से किस प्रकार मित्रता और सहयोग का सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। ईमान का तक्राज़ा यही है कि अल्लाह और उस के रसूल के दुश्मन को अपना दुश्मन समझा जाए चाहे वह कोई हो। सहाबा किराम ने इस का उत्तम आदर्श स्थापित किया। अतः बद्र की जंग में उन्होंने ने अपने निकटतम सम्बन्धियों को मारने में संकोच नहीं किया जब कि उन्होंने ने इस्लाम और पैगम्बर इस्लाम के विरुद्ध सैन्याक्रमण किया।

49. अर्थात् जब उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल से सच्ची वफ़ादारी का रवैया अपनाया तो बहुत ही नाज़ुक अवसर पर उन को ग़ैबी मदद (परोक्ष समर्थन) प्राप्त हुआ। अल्लाह तआला ने उन के अन्दर ऐसी स्पिरिट पैदा की कि किसी को खातिर में लाए बग़ैर अल्लाह के शत्रुओं का मर्दानगी के साथ मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। जिहाद की इस स्पिरिट को “رُوحٌ مِنْهُ” (अर्थात् अपनी तरफ़ से रूह) कहा गया है।

50. जिन से अल्लाह राज़ी हुआ उन्होंने ने सब कुछ पाया। उन के लिए कोई चीज़ भी बाक़ी नहीं रही। जन्नत अल्लाह के राज़ी होने ही की निशानी है और वे अल्लाह से राज़ी हुए कि उस ने उन को जन्नत की राह दिखाई।

51. आयत १९ में शैतान की पार्टी का वर्णन था। यहाँ उस के बिलमुकाबिल अल्लाह की पार्टी का वर्णन हुआ है जो सफल होने वाली है।



५९. सूरह अल्-हशर

नाम :- दूसरी आयत में यहूदी कबीला “बनी नज़ीर” को देश निकाला के रूप में उन के पहले हशर (अन्जाम) का वर्णन हुआ है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “ अल-हशर” है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और सन ४ हिजरी में नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध उठ खड़े होने वालों को बनी नज़ीर के अपमानजनक अन्जाम से इबरत दिलाना है और ईमान वालों को उन मामलों में जो बनी नज़ीर से जंग में पेश आए थे हिदायत देना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ भूमिका पर आधारित आयत है जिस में कहा गया है कि आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह करती है।

आयत २ से ४ में अहले किताब के एक काफ़िर गरोह बनी नज़ीर का, जो अल्लाह और उस के रसूल के विरोध पर उतर आया था इबरतनाक अन्जाम बयान किया गया है।

आयत ५ से १० में सामने आने वाले मसलों में ईमान वालों को निर्देश दिये गए हैं।

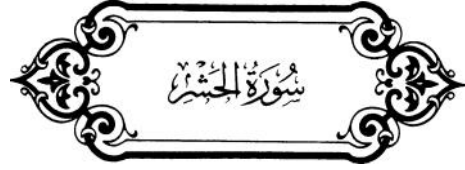
आयत ११ से १७ में मुनाफ़िकों (पाखण्डियों) के रवैये पर आलोचना की गई है जो इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध यहूदियों से साँठ गाँठ कर रहे थे।

आयत १८ से २४ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में प्रभावकारी नसीहत और अल्लाह का डर पैदा करने वाली बातें बयान हुई हैं।

५९. सूरह अल्-हशर

आयतें : २४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करती हैं वे सारी चीजें जो आसमानों और ज़मीन में हैं।¹ और वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।²

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

2. वही है जिस ने उन लोगों को जो अहले-किताब में से काफ़िर हुए उन के घरों से पहले हशर के लिए निकाल बाहर किया।³ तुम्हें गुमान न था कि वे निकल जाएंगे।⁴ और वे समझ रहे थे कि उन के क़िले उन को अल्लाह (की पकड़) से बचा लेंगे।⁵ मगर अल्लाह की पकड़ उन पर उस तरफ़ से हुई जिधर उन को गुमान भी नहीं हुआ था। और उस ने उन के दिलों में रोब डाल दिया।⁶ वे स्वयं अपने हाथों से अपने घरों को उजाड़ रहे थे और मोमिनों के हाथों भी।⁷ तो इब्रत हासिल करो ऐ आँखें रखने वालो !⁸

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ تَانِعْتُمْ حُصُونَهُمْ مِنْ اللَّهِ فَآتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يُحْتَسِبُوا وَقَدْ فَرَّقَى قُلُوبَهُمُ الرَّحْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ②

3. अगर अल्लाह ने उन के लिए देश निकाला न लिख दिया होता तो वह दुनिया में उन को अज़ाब देता।⁹ और आख़िरत में उन के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है।¹⁰

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③

4. यह इस लिए कि वे अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध उठ खड़े हुए। और जो अल्लाह के खिलाफ़ उठ खड़ा हो¹¹ तो अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख्त है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④

5. खज़ूरो के जो वृक्ष तुम ने काटे या जिन को अपनी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से हुआ।¹² और (उस ने यह हुक्म इस लिए दिया) ताकि वह फ़ासिकों (उल्लंघनकारियों) को अपमानित करे।

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِىَ الْفَاسِقِينَ ⑤

1. इस की व्याख्या सूरह हदीद नोट १ में गुजर चुकी।
2. अतः बनी नज़ीर की जंग में अल्लाह के प्रभुत्व तथा उस की तत्वपूर्ण तदबीर प्रकट हुई।

3. तात्पर्य बनी नज़ीर हैं जिन को मदीने से देश निकाला मिला। यह यहूदी क़बीला था जो मदीना के किनारे किनारे आबाद था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हिज़रत कर के मदीना तशरीफ़ ले गए तो आपके और इस क़बीले के बीच सुलह संधि हुई थी परन्तु वे उस का खुला उल्लंघन करते रहे। उन के लीडर कअब बिन अशरफ़ ने मक्का जा कर बहुदेववादियों को मुसलमानों के विरुद्ध उकसाया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी करता रहा और मुसलमान औरतों के विरुद्ध शर्मनाक प्रोपैगन्डा करता रहा। आख़िरकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश से उसे क़त्ल कर दिया गया। इस के बाद भी यह लोग अपने उपद्रवी गतिविधियों से बाज़ नहीं आए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने यहाँ बुलाकर दीवार के ऊपर से बड़ा पत्थर आप पर गिराने और आप को क़त्ल करने की साज़िश की तो आप को अल्लाह तआला ने समय पर ख़बरदार कर दिया और आप बाल बाल बच गए। वहाँ से मदीना वापस आ कर आदेश दिया कि बनी नज़ीर बीस दिन के अन्दर मदीना से निकल जाएँ परन्तु उन्होंने ने इस से इन्कार किया। आख़िर कार आपने अपने सहाबियों के साथ उन का घेराव कर लिया। वे रोब में आ गए और लड़ाई का हौसला खो बैठे और इस बात पर आमादा हो गए कि अपने घर बार छोड़ कर मदीना से निकल जाएँगे अलबत्ता जितना कुछ सामान वे ले जा सकते हैं उन्हें ले जाने की इजाज़त दी जाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की इजाज़त दी। अतः उन्होंने ने स्वयं अपने हाथों अपने घरों को तोड़ फोड़ डाला ताकि दरवाज़े आदि अपने साथ ले जा सकें। बनी नज़ीर के देश निकाला की यह घटना रबीउलअव्वल सन ४ हिजरी में घटी।

आयत में उन के इस निकलने को पहला हशर कहा गया है। हशर का अर्थ इकट्ठा करने के हैं। चूँकि उन को मदिने से निकाल कर अपने अन्जाम को पहुँचने के लिए इकट्ठा किया गया था इस लिए इसे हशर कहा गया है। और पहला हशर कह कर इस बात की तरफ़ इशारा किया गया है कि उन का दूसरा हशर भी होने वाला है। अतः हज़रत उमर रज़ि. ने अपने ख़िलाफ़त काल में उन को अरबद्वीप से निकाल दिया।

4. अर्थात् ज़ाहिरी हालात के रहते तुम सोच नहीं सकते थे कि वे इतनी आसानी से मदीना छोड़ कर निकल जाएँगे।

5. अर्थात् उन का विश्वास अपने धन संसाधनों पर था और वे समझ रहे थे कि उन के मज़बूत क़िले उन की रक्षा के लिए पर्याप्त होंगे।

6. अल्लाह तआला ने यह तदबीर की कि उन के दिलों में ऐसा रोब डाल दिया कि वे लड़ाई का हौसला न कर सके। वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने साथियों के इस दिलेर क़दम को देख कर भयभीत हो गए और मुकाबले का साहस न कर सके।

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ईमान वालों की असाधारण सहायता इस तरह भी करता है कि उन के दुश्मनों के दिलों में रोब डाल कर उन के हौसलों को उध्वस्त कर देता है विशेष रूप से ऐसे मौक़ों पर जब कि शत्रु शक्तिशाली हो और ईमान वालों के पास धन संसाधन की कमी हो परन्तु इस के बावजूद आदेशानुपालन में जान की परवाह न करते हुए जिहाद के लिए निकल खड़े हुए हों।

7. वे अपने हाथों अपने घरों को इस लिए उजाड़ रहे थे कि अपने घरों के दरवाज़े आदि निकाल कर अपने साथ ले जाएँ तथा इस लिए भी कि मुसलमानों को उन के घर अच्छी हालत में न मिलें। रहा मुसलमानों का उन के घरों को उध्वस्त करना तो वह युद्ध की आवश्यकता थी।

8. बनी नज़ीर के इस अन्जाम से समस्त आखें रखने वालों को इबरत लेने की दअवत दी गई है। वे अपनी शक्ति और अपने वैभव आदि के बावजूद रसूल के मुकाबले में टिक न सके और उन्हें अपमान का सामना करना पड़ा। अल्लाह की मदद रसूल के साथ होती है अतः जो ग़रोह भी रसूल से टक्कर लेने की कुचेष्टा करता है, मुँह की खाता है।

9. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ से यह फैसला हो चुका था कि बनी नज़ीर को देश निकाला दे दिया जाए जिस में उन के लिए यह मौक़ा बाक़ी है कि इस घटना से सीख लें और अल्लाह के समक्ष तौबा कर के अपना सुधार कर लें वरना अल्लाह उन्हें ऐसा दण्ड दे सकता था कि वे क़त्ल कर दिए जाते जैसा कि बाद में बनी कुरैज़ा के मामले में हुआ कि उन के सारे पुरुष क़त्ल कर दिए गए।

ध्यान रहे कि बनी नज़ीर अहले किताब (यहूदी) थे जिन्होंने अल्लाह के नबी के साथ समझौता किया था और फिर ग़दारी की। इस लिए उन को इस ग़दारी की सज़ा यह दी गई कि उन्हें देश निकाला दे दिया गया ताकि मदीना जो इस्लाम का केन्द्र था उस की साज़िशों से सुरक्षित रहे। जिज़िया लेने का जो आदेश दिया गया है यह आम यहूदियों के लिए है और यह आदेश बाद में उतरा जो सूरह तौबा में है।

10. अर्थात् आख़िरत में तो उन को अपने कुफ़्र की सज़ा भुगतने के लिए जहन्नम में जाना ही है।

11. अल्लाह के विरुद्ध उठ खड़े होने का मतलब इस्लाम दुश्मनी में उठ खड़े होना है। क्योंकि कि इस्लाम अल्लाह का

नाज़िल किया हुआ दिन है जो सारे इन्सानों के लिए उस का आदेश है। इस आदेश के विरुद्ध इस्लाम का मुक़ाबला करने के लिए उठ खड़े होना अल्लाह के विरोध में खड़े होना है।

12. बनी नज़ीर के बाग़ में खज़ूर के जो वृक्ष थे उन में से कुछ वृक्षों को युद्ध की ज़रूरत के तहत मुसलमानों ने काट डाला और कुछ वृक्षों को बाक़ी रहने दिया। यह सब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में और आप के निर्देशानुसार हुआ। इस लिए यह काम अल्लाह ही के आदेश से अन्जाम पाया था। अतः कोई कारण नहीं कि इस विध्वंसकार्य के

सिलसिले में जो जंगी मसलहतों के चलते किया गया था कोई खटक दिलों में महसूस की जाए।

मौजूदा ज़माने में तो बहुत बड़े पैमाने पर दुश्मन के ठिकानों पर बमबारी करनी पड़ती है, उस के हवाई जहाज़ गिराना पड़ते हैं और उस की सप्लाई लाइन को काट देना पड़ता है। इस सिलसिले में इस आयत से यह रौशनी मिलती है कि जिहाद के उद्देश्यों के लिए ये सारी कार्रवाईयाँ की जा सकती हैं। अगर ऐसा न किया जाए तो जिहाद ही ख़त्म हो कर रह जाएगा और दुश्मन हावी हो जाएगा।



और अल्लाह ने जो माल उन के क़ब्ज़े से निकाल कर अपने रसूल को दिलवाया तो उस पर तुम ने न अपने घोड़े दौड़ाये थे और न ऊँट। बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान करता है। और अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है। जो कुछ अल्लाह बस्तियों वालों की तरफ़ से अपने रसूल को दिलवाए । वह अल्लाह और रसूल और नातेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरो के लिए है। ताकि यह (माल) तुम्हारे धनवानों ही के बीच न घूमता रहे। और रसूल जो तुम्हें दे उस को लो और जिस से रोक दे उस से रुक जाओ और अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (अल-कुआन)

6. और अल्लाह ने जो माल उन के क़ब्जे से निकाल कर अपने रसूल को दिलवाया ¹³ तो उस पर तुम ने न अपने घोड़े दौड़ाये थे और न ऊँट।¹⁴ बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान करता है।¹⁵ और अल्लाह को हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسْطِرُّ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥

7. जो कुछ अल्लाह बस्तियों वालों की तरफ़ से अपने रसूल को दिलवाए।¹⁶ वह अल्लाह और रसूल और नातेदारों और यतीमों और मस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है।¹⁷ ताकि यह (माल) तुम्हारे धनवानों ही के बीच न घूमता रहे।¹⁸ और रसूल जो तुम्हें दे उस को लो और जिस से रोक दे उस से रुक जाओ ¹⁹ और अल्लाह से डरो। निस्संदेह अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ لَا يَكُنْ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا اتَّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَكَمُ عَنْهُ فَاتَّهُوا وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑦

8. यह (माल) उन मोहताज मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों और अपने माल से निकाले गए हैं, ²⁰ जो अल्लाह का फ़ज़ल और उस की प्रसन्नता चाहते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की मदद करते हैं। यही लोग सत्यवादी हैं।²¹

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ⑧

9. और जो लोग इन से पहले ही (मदीना को) ठिकाना बनाए हुए और ईमान लाए हुए थे वे उन लोगों से मुहब्बत करते हैं जो हिजरत कर के उन के पास आए हैं और जो कुछ भी उन को दिया जाए उस की कोई आवश्यकता वे अपने दिलों में महसूस नहीं करते और वे उन को अपने ऊपर वरीयता देते हैं यद्यपि कि वे स्वयं ज़रूरतमंद हों।²² और जो लोग अपने दिल की तंगी से बचा लिए गए वही सफलता (और मुक्ति) पाने वाले हैं।²³

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑨

10. और जो लोग इन के बाद आए ²⁴ वे दुआ करते हैं कि ऐ हमारे रब हमें भी क्षमा कर दे और हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पहले ईमान लाए हैं। और हमारे दिलों में अहले ईमान के लिए कोई द्वेष न रख।²⁵ ऐ हमारे रब तू बड़ा ममतामय और दयावान है।

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ⑩

13. इस माल को परिभाषिक शब्द में “फ़ै” कहते हैं जिस का अर्थ लौटाने के हैं और जिस का मतलब यह है कि माल काफ़िरों के क़ब्ज़े से निकाल कर मुसलमानों को दे दिया गया।

14. बनी नज़ीर का संग्राम बग़ौर लड़ाई के सर हुआ था। इस में मुसलमानों को अपने घोड़ों और ऊँटों से काम नहीं लेना पड़ा बल्कि मदीना के बहुत करीब होने के कारण पैदल चल कर आए थे। इस लिए उन का जो माल मुसलमानों के हाथ लगा उस का मामला माले-गनीमत (परिहार-सामग्री) से तनिक अलग था। माले-गनीमत उस माल को कहते हैं जो लड़ कर दुश्मन के क़ब्ज़े से प्राप्त किया गया हो और जिस में मुसलमान मुजाहिदीन को अपने घोड़े, ऊँट आदि इस्तेमाल करना पड़े हों। माले-गनीमत का ४/५ हिस्सा जैसा कि सूरह अन्फ़ाल आयत ४१ में इरशाद हुआ है सिपाहियों में वितरित करने के लिए है। किन्तु फ़ै का माल सिपाहियों के बीच वितरित नहीं किया जाएगा। इस का इस्तेमाल आगे की आयत में बयान हुआ है।

15. अर्थात् अल्लाह की ख़ास मदद से रसूलों को अपने दुश्मानों पर विजय प्राप्त होती रही है और इस मौक़े पर भी उस की ख़ास तरह की मदद ज़ाहिर हुई। यह मदद रोब के रूप में प्रकट हुई जो बनी नज़ीर के दिलों में डाल दिया गया। और जिस के फलस्वरूप लड़ाई की नौबत नहीं आई।

16. अर्थात् जो बस्तियाँ भी विजयित हों और उन के माल “फ़ै” के रूप में तुम्हारे क़ब्ज़े में आ जाएँ तो उन का हुक्म वह है जो आगे बयान किया जा रहा है।

17. “फ़ै” के माल का पहला इस्तेमाल यह है कि उसे अल्लाह के लिए खर्च करना है और अल्लाह के लिए खर्च करने से तात्पर्य उस के दीन के प्रसार और जिहाद के लिए खर्च करना है।

दूसरा इस्तेमाल यह है कि रसूल का उस में हक़ है ताकि वह अपनी जिन ज़रूरतों या जिन मसलहतों पर खर्च करना चाहे कर सकता है। ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत के दायित्व के चलते अपनी कमाई के लिए न दौड़ धूप कर सकते थे और न आपने अपने और अपने परिवारजनों के लिए ज़कात को जायज़ रखा था। इस लिए अल्लाह तआला ने “फ़ै” के माल में आप का हिस्सा निर्धारित किया। यह हिस्सा नबी के पद के कारण था इस लिए आप के बाद यह बाक़ी न रहा। यह भी ध्यान रहे कि नबी हज़रात जायदादें नहीं छोड़ते, उन की जायदाद सदक़ा होती है। आप का इर्शाद है :-

لَا نُورُثُ مَا تَرَ كُنَّا صَدَقَةً. (بخاری کتاب النّس)

अर्थ :- “हमारा वारिस कोई नहीं। हम जो कुछ छोड़ें वह सदक़ा है।”

तीसरा इस्तेमाल नातेदारों पर खर्च करना है और इस से मुराद रसूल के नातेदार हैं। ये बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब हैं जिन पर आपने ज़कात को मना कर दी थी। इन ख़ानदान वालों ने आप का साथ दिया था इस लिए अल्लाह तआला ने “फ़ै” के माल के द्वारा उन को लाभ प्रदान करने का सामान किया।

चौथा, पाँचवा और छठवाँ इस्तेमाल यतीमों मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर खर्च करना है और यह खर्च उन के फ़ुक़रा और उन की ज़रूरतों को दूर करने के लिए है। यह असहाय और निर्धन वर्ग है जो हर तरह से मदद का अधिकारी है इस लिए फ़ै के माल में इन का हिस्सा रखा गया।

18. यह बहुत बड़ी उसूली बात है जो इस मौक़े पर कही गई। वह यह कि दौलत का बहाव धनवानों की तरफ़ हो कर न रह जाए। इस्लामी अर्थ व्यवस्था (Islamic Economy) का रूख़ दौलत के फैलाव की तरफ़ है न कि उसे कुछ हाथों में केन्द्रित करने की तरफ़। ज़कात और सदक़े कफ़़राओं की अदायगी और गनीमत तथा “फ़ै” के माल में निर्धन वर्ग को भागीदार बनाकर उस की पोजीशन को बेहतर बनाने का सामान किया है। तथा सूद को हराम ठहरा कर ग़रीबों का खून चूसने से मालदारों को रोका है। इस के अलावा जायदादों के बटवारे के द्वारा दौलत के फैलाव का तरीक़ा अपनाया है। यह और इस प्रकार की दूसरी हिदायतों के द्वारा इस्लाम ने एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था (Economic System) का विस्तार किया है जिस में संतुलन भी है सामाजिक न्याय भी और सभी वर्गों के साथ इन्साफ़ भी। उस ने उन तौर तरीक़ों का उन्मूलन किया है जिन से ग़रीब ग़रीबतर तथा अमीर और अमीर होते हैं उस की आर्थिक व्यवस्था न पूंजीपति व्यवस्था है और न किसी के अधिकार हनन पर आधारित है। न इस में यक़रुखापन है और न ही अति, बल्कि वह सत्य और न्याय का संपूर्ण नमूना है।

19. यह एक और उसूली हिदायत है जो इस मौक़े पर दी गई। संद्रभ के अनुसार तो इस का मतलब यह है कि “फ़ै” के माल में से रसूल जिस को जो कुछ दे उस को वह स्वीकार कर ले और जिस को न दे वह रुक जाए, न माँग करे और न एतिराज़। लेकिन इस वाक्य का मतलब इस हद तक सीमित नहीं है बल्कि इस के विस्तृत भावार्थ में यह अर्थ भी शामिल है कि रसूल जो आदेश दे उस का अनुपालन करो और जिस बात से मना करे उस से रूक जाओ। हदीस में भी इस की पुष्टि है :-

إِذَا أَمَرْتُكُمْ بِأَمْرِ فَاتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ

وَمَا نَهَيْتُكُمْ عَنْهُ فَاجْتَنِبُوهُ. (بخاری-مسلم)

अर्थ :- “जब मैं तुम्हें किसी बात का हुक्म दूँ तो जहाँ तक

तुम्हारा सामर्थ्य हो करो और जिस बात से रोक दूँ उस से बचो।” (बुखारी-मुस्लिम)

अब यह बात कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किन कामों के करने का आदेश दिया है और किन बातों से रोका है आप की सुन्नत (तरीक़े) से ही मालूम की जा सकती है। और आप की सुन्नत को जानने का माध्यम सही हदीसों हैं इस लिए सही हदीसों की ज़रूरत और उस के महत्व तथा हुज्जत (तर्क) होने से इनकार नहीं किया जा सकता वरना कुर्आन के इस आदेश का उल्लंघन करने के अपराधी हम ठहरेंगे। यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि हुज्जत सही हदीसों ही हैं न कि कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों और अल्लम और ग़ल्लम रिवायतों। परन्तु इस उम्मत के अन्दर बेसिर पैर की रिवायतों ने जड़ पकड़ ली है जिस ने दीन का हुलिया बिगाड़ कर रख दिया है। यह कदापि रसूल का अनुपालन नहीं है कि हर प्रकार की रिवायतों को जो रसूल के नाम से मन्सूब कर दी गई हों स्वीकार कर लिया जाए चाहे वे कुर्आन और सुन्नत के खिलाफ़ ही क्यों न हों। ऐसी रिवायतों का इन्कार रसूल का अनुपालन है न कि इकरार।

20. अर्थात् निर्धन मुहाज़िर (जो मक्का से हिज़रत कर के मदीना आए हैं) इस बात के खास हक़दार हैं कि “फ़ै” के माल में से उन पर खर्च किया जाए क्यों कि हिज़रत पर विवश हो जाने के कारण से उन्हें अपने घर बार और अपने धन संसाधन छोड़ देना पड़े। और ख़ाली हाथ वे मदीना चले आए।

21. अर्थात् ये मुहाज़िर मात्र देश त्यागने वाले नहीं हैं बल्कि ऊँचे चरित्र के लोग हैं। इन के सामने केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का उद्देश्य है। अल्लाह उस के रसूल की सहायता में वे आगे आगे रहते हैं और सत्य को पकड़े रहना उन का स्वभाव है। जब उन्होंने दीन के लिए ये कुर्बानियाँ दी हैं तो वे इस बात के हक़दार हैं कि अल्लाह के इस असाधारण तोहफ़े से जो “फ़ै” के माल की सूरत में इस्लामी हुकूमत को प्राप्त हुआ है उन की भरपूर सहायता की जाए। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी नज़ीर से प्राप्त किए गये धन का भारी हिस्सा मुहाज़िरिन में बाँट दिया।

22. यह मदीना के अन्सार का मान रखना है कि मुहाज़िरों के मदीना आ जाने से पहले ही वे ईमान लाकर इस शहर को अपना निवास स्थान बनाए हुए थे जो बाद में दारुलहिज़रत करार पाया। उन्होंने ने उन मुहाज़िरों को अपने ऊपर भार महसूस नहीं किया बल्कि उन का स्वागत किया और उन्हें अपने दिल में जगह दी। बनी नज़ीर के फ़ै में से अन्सार को छोड़ कर मुहाज़िरिन को जो कुछ दिया गया उस पर उन्होंने ने न अपने दिल में तंगी महसूस की और न कोई मामूली शिकवा भी ज़बान पर लाया। जब कि फ़ै के माल में उन को भी शरीक किया जा

सकता था। किन्तु उन्होंने ने अपने ऊपर उन निर्धन मुहाज़िरों को वरीयता दी और यह उन का बहुत बड़ा त्याग है।

23. दिल की तंगी पूरे व्यावहारिक जीवन को प्रभावित करती है और मनुष्य को विनाश के मार्ग पर डाल देती है इस लिए दिल की तंगी से बचने की जिस को तौफ़ीक़ मिली उस को समझो कामयाबी की ज़मानत मिल गई।

24. अर्थात् जो लोग अन्सार और मुहाज़िरिन के बाद आए उन में इस सूरह के अवतरण के समय से ले कर क्रियामत तक के ईमान वाले शामिल हैं। उस का वर्णन यहाँ जिस तरह से हुआ है उस से यह इशारा निकलता है कि फ़ै के माल का लाभ उन को भी पहुँचना चाहिए। अतः हज़रत उमर रज़ि. ने अपने खिलाफ़त काल में जब इराक़ और शाम (सीरिया) जीते तो उन की ज़मीनों को जीतने वालों में वितरित नहीं किया बल्कि इसी आयत से तर्क प्रस्तुत करते हुए उन को सारे मुसलमानों के लिए फ़ै बताया ताकि आने वाली नस्लें भी इस से लाभान्वित हों। इस उद्देश्य के तहत आपने वे ज़मीनें उन के वासियों के कब्ज़े में रहने दीं और उन पर ख़िराज (Text) लागू किया। ख़िराज की इस आमदनी का बहुत बड़ा लाभ यह भी हुआ कि उस से सरहदों की सुरक्षा व्यवस्था में सहूलत हो गई और जिहाद के लिए माल भी उपलब्ध हो गया। (तफ़सील के लिए किताबुलख़िराज, अबू यूसुफ़ अध्याय-३)

25. यह प्रोत्साहन है इस बात का कि बाद के आने वालों को अपने उन पूर्वजों का आभारी होना चाहिए क्यों कि यह उन ही की अनमोल कुर्बानियाँ थीं जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से इस्लाम की सरबुलंदी का कारण बनीं। और यह उन ही की जद्दोज़हद थी जिस के फलस्वरूप दीन के प्रसार का दायरा फैलता चला गया और आगे की नस्लों तक पहुँचा।

यह शिक्षा है इस बात की, कि मुसलमानों को सहाबा किराम का आभारी होना चाहिए तथा उन की क़द्र करनी चाहिए और उन के प्रति कोई द्वेष भाव अपने दिल में नहीं रखना चाहिए यद्यपि उन की कोई कोताही जानकारी में आई हो। इस में रहनुमाई हैं सहाबा के मतभेदों तथा विवादों के बारे में जो बाद के दौर में पैदा हुए कि उन को बुरा भला कहने से परहेज़ करना चाहिए। परन्तु मुसलमानों का एक वर्ग जो हज़रत अली रज़ि. की इमामत की धारणा रखता है ख़ुलफ़ा-ए-राशदीन को खिलाफ़त का हननकर्ता बताकर सहाबा किराम को बुरा भला कहता है और उन के लिए अपशब्दों का प्रयोग करता है। अर्थात् कुर्आन ने जिन के हक़ में दुआ करने के लिए कहा था इस वर्ग के लोग उन को बुरा भला कहते हैं। वैमनस्य एवं ईर्ष्या ने उन्हें ऐसा अन्धा कर दिया है कि कुर्आन की स्पष्ट आयतों से भी उन्हें रौशनी नहीं मिलती।

तुम ने इन मुनाफ़िकों को नहीं देखा जो अपने उन भाईयों से जो अहले किताब में से काफ़िर हुए कहते हैं कि अगर तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे मामले में हम हरगिज़ किसी की बात न मानेंगे, और अगर तुम लोगों से जंग की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाही देता है कि ये लोग बिलकुल झूठे हैं। (अल-कुआन)

11. तुम ने इन मुनाफ़िकों को नहीं देखा ²⁶ जो अपने उन भाईयों से जो अहले किताब में से काफ़िर हुए कहते हैं ²⁷ कि अगर तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे मामले में हम हरगिज़ किसी की बात न मानेंगे, और अगर तुम लोगों से जंग की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाही देता है कि ये लोग बिलकुल झूठे हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ⑪

12. अगर वे निकाले गए तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे, और अगर इन से जंग की गई तो ये उन की सहायता नहीं करेंगे ²⁸ और अगर सहायता करेंगे भी तो पीठ फेर जाएंगे। फिर इन की मदद नहीं ²⁹ की जाएगी।

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُولَيَنَّ الْأَدْبَارُ ثُمَّ لَا يَنْصُرُونَ ⑫

13. तुम्हारा भय इन के दिलों में अल्लाह से अधिक है। इस लिए कि ये लोग समझ नहीं रखते। ³⁰

لَا نُنَمِشُ رَبَّهُمْ فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ⑬

14. ये कभी इकट्ठे हो कर तुम से नहीं लड़ेंगे बल्कि क़िलाबन्द बस्तियों में या दीवारों के पीछे से लड़ेंगे। ³¹ इन की लड़ाई आपस में बड़ी सख्त है, तुम समझते हो कि इन में बड़ा एका है, मगर इन के दिल फटे हुए हैं। ³² इस का कारण यह है कि ये लोग बुद्धि से काम नहीं लेते। ³³

لَا يِقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّى ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ⑭

15. इन का हाल वही होगा जो उन लोगों का हुआ जो इन से कुछ ही पहले अपने किये का मज़ा चख चुके हैं। ³⁴ और इन के लिए दुखदायिनी यातना है। ³⁵

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاتُ أَوْبَالٍ أَمْرُهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑮

16. इन की मिसाल शैतान की जैसी है जो मनुष्य से कहता है कि कुफ़र कर और जब वह कुफ़र कर बैठता है तो कहता है मैं तुझ से बरी हूँ। मुझे सारे जहान के रब अल्लाह (रब्बुलआलमीन) से डर लगता है। ³⁷

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ⑯

17. तो दोनों का अन्जाम यह होना है कि वे जहन्नम में जाएंगे जिस में वे हमेशा रहेंगे। ³⁸ और ज़ालिमों का यही बदला है।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ⑰

26. मदीना के मुनाफ़िक़ीन (अर्थात् पाखंडी तथा विश्वासघाती लोग) जिन के सम्बन्ध यहूदियों से मित्रतापूर्ण चले आ रहे थे, गुप्त रूप से उन को अपना सहयोग और समर्थन दे रहे थे। इस लिए इस अवसर पर उन का हाल बयान कर के मुसलमानों को इस से सचेत किया गया है और उन्हें डारस दिलाई गई है कि ये बुजदिल लोग हैं तुम से लड़ने का कभी साहस नहीं करेंगे।

27. मुराद मदीना के किनारे बसे यहूदी हैं, बनी नज़ीर, बनी कुरैज़ा आदि। इन को मुनाफ़िक़ीन के भाई इस लिए कहा गया कि यहूदी और मुनाफ़िक़ दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

28. बनी नज़ीर की तो इन्होंने कोई सहायता नहीं की। रहे बनी कुरैज़ा तो कुर्आन ने भविष्यवाणी की कि ये उन की सहायता के लिए भी नहीं आएंगे। अतः बाद में जब बनी कुरैज़ा से मुसलमानों का सामना हुआ तो यह भविष्यवाणी भी सच्ची सिद्ध हुई।

29. अर्थात् यहूदियों की।

30. यह मदीना के यहूदियों का हाल बयान हुआ है कि वे अल्लाह से अधिक मुसलमानों से डरते हैं क्यों कि वे अल्लाह को भुला बैठे हैं और मुसलमान चूँकि सरफ़रोशी के लिए आमादा रहते हैं इस लिए उन के मुकाबले में आने से डरते हैं हालाँकि वास्तविक भय अल्लाह का ही होना चाहिए जिस की सामर्थ्य शक्ति में सब कुछ है। किन्तु नासमझ लोग इतनी बड़ी वस्तविकता को समझ नहीं पाते।

31. अतः ये यहूदी क़बीले मुसलमानों के मुकाबले के लिए कभी नहीं आए। मैदान में आ कर लड़ने की उन्हें कभी हिम्मत नहीं हुई। बनी नज़ीर क़िले में घिर कर रह गए। और बाद में बनी कुरैज़ा और ख़ैबर के यहूदियों पर मुसलमानों ने हमला किया तो उन्होंने ने भी मैदान में निकल कर जंग नहीं की बल्कि अपने क़िलों ही में बन्द हो कर मुसलमानों को क्षति पहुँचाने के प्रयास किये जिस में वे बुरी तरह असफल रहे और कुर्आन के बयान की सत्यता बिलकुल उजागर हो गई।

32. अर्थात् तुम्हें यहूदी ऊपर से आपस में एक नज़र आते हैं परन्तु परस्पर विद्वेष के कारण इन के दिल फटे हुए हैं। उन्होंने ने जब अल्लाह की किताब को एक किनारे डाल दिया और दीन की मौलिक धारणाओं में नई नई बातें निकालीं तो वे फ़िरकाबन्दी

(सम्प्रदायवाद) का शिकार हो गए और इस सम्प्रदायवाद के फलस्वरूप एक दूसरे के विरुद्ध विद्वेष की भावना उभरी जिस ने उन के दिलों को एक दूसरे से अलग कर दिया और उन की एकता विखंडित हो कर रह गई।

33. अर्थात् बुद्धि से काम लेने तथा सूझ बूझ का परिचय देने के बजाए उन्होंने ने अपने को भावनाओं और इच्छाओं का दास बना लिया। और जब कोई समूह दीन के मामले में सूझ बूझ का परिचय नहीं देता तो इच्छाओं का दास बनकर उस का हुलिया ही बिगाड़ देता है। फिर मतभेद एवं विभेद इतनी तेज़ी से उभरते हैं कि पूरे समुदाय की एकता विखंडित हो कर रह जाती है।

34. अर्थात् यहूदियों का हथ्र भी वही होगा जो मक्का के बहुदेववादियों का हुआ। इशारा बद्र की जंग की ओर है जिस में बहुदेववादियों के कितने ही लीडर मार दिये गए थे और उन की बुरी तरह पराजय हुई। यह घटना सन २ हिजरी में घटी थी जो यहूदियों के लिए बिलकुल निकट ही में घटी घटना थी।

35. अर्थात् आखिरत की दुखदायिनी यातना।

36. अभिप्रेत मुनाफ़िक़ लोग हैं जो यहूदियों को मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने पर उकसा रहे थे।

37. अर्थात् शैतान मनुष्य को कुफ़्र पर उकसाता है किन्तु उस के कुफ़्र करने के बाद उस की कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता। अतः क्रियामत के दिन शैतान अपने बरी होने को जाहिर करेगा और कहेगा कि मैं ने कुफ़्र पर मजबूर नहीं किया था।

रहा शैतान का यह बहकाना कि मुझे सारे जहान के रब अल्लाह रब्बुलआलमीन से डर लगता है तो वह यह बात उस अज़ाब से बचने के लिए कहता है जिस की लपेट में कुफ़्र करने वाला आता है। वह यदि वास्तव में अल्लाह से डरता है तो शैतान क्यों बनता। यह भी ध्यान रहे कि शैतान की ये बातें संकेतों में अर्थात् वस्वसा डालने के रूप में होती हैं। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्फ़ाल नोट ७३

38. अर्थात् शैतान भी जहन्नम में जाएगा और उस के कहने पर कुफ़्र करने वाला मनुष्य भी। इसी प्रकार ये मुनाफ़िक़ लोग भी जहन्नम में जाएंगे और उन के इशारों पर कुफ़्र करने वाले यहूदी भी।

18. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो ।³⁹ और प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि देख ले, उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है।⁴⁰ अल्लाह से डरते रहो ।⁴¹ निस्संदेह अल्लाह उस से अवगत है जो तुम करते हो।⁴²

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ①

19. उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन को अपने नफ़्स के भुलावे में डाल दिया ।⁴³ यही लोग फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं ।⁴⁴

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ②

20. दोज़ख में जाने वाले और जन्नत में जाने वाले समान नहीं हो सकते। जन्नत में जाने वाले ही सफल होने वाले हैं।⁴⁵

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ③

21. यदि हम इस कुआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह अल्लाह के भय से दबा जा रहा है और फट रहा है । ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे चिन्तन करे।⁴⁶

لَوْ أَنزَلْنَاهُذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ④

22. वह अल्लाह ही है⁴⁷ जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं,⁴⁸ ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला।⁴⁹ वह रहमान और रहीम है।⁵⁰

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ⑤

23. वह अल्लाह ही है जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं,⁵¹ वह बादशाह है,⁵² बेहद मुक़द्दस,⁵³ सरासर सलामती,⁵⁴ अमन देने वाला,⁵⁵ रक्षा करने वाला,⁵⁶ प्रभुत्वशाली,⁵⁷ ज़बरदस्त,⁵⁸ किबरियाई वाला⁵⁹ (अर्थात् बड़ा हो कर रहने वाला) पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन को लोग उस का साझी ठहराते हैं।⁶⁰

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑥

24. वह अल्लाह ही है पैदा करने वाला,⁶¹ अविष्कारक,⁶² सूरतगरी करने वाला ।⁶³ उस के लिए बेहतरीन नाम हैं।⁶⁴ असमानों और ज़मीन की सारी चीज़ें उस की तस्बीह (पाकी बयान) करती हैं⁶⁵ और वह प्रभुत्वशाली है तत्वदर्शी ।⁶⁶

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑦

39. ऊपर मुनाफ़िकों के रवैये पर पकड़ की गई थी और अब संबोधन ईमान वालों की ओर मुड़ रहा है। उन्हें अल्लाह का डर (तक़वा) परहेज़गारी अपनाने की ताक़ीद की जा रही है। और साथ ही तक़वा की परवरिश का सामान भी किया जा रहा है। यह नुस्खा मुनाफ़िक़ के रोग का निवारक है और ईमान वालों के चरित्र एवं आचरण को भी सुदृढ़ बनाने वाला है।

40. क्रियामत के दिन को “कल” कहा गया है। मतलब यह दुनिया की ज़िन्दगी बस आज है और क्रियामत कल ही प्रकट होने वाली है। जो लोग क्रियामत को दूर समझकर के उस से ग़फलत बरतते हैं वे बहुत बड़े धोखे में हैं। जब क्रियामत आन टपकेगी तो हर व्यक्ति महसूस करेगा कि वह बहुत करीब थी और बहुत जल्दी प्रकट हो गई।

क्रियामत के बरपा होते ही हिसाब और किताब का मामला पेश आने वाला है इस लिए प्रत्येक व्यक्ति को आज ही अपना जायज़ा ले लेना चाहिए कि उस ने आख़िरत के लिए क्या सामान किया है। उसे अपने भविष्य (आख़िरत की ज़िन्दगी) को सफल बनाने के प्रयास करने चाहिए। यदि उस से अपने परलोक (आख़िरत) की चिन्ता नहीं की और दुनिया के मायाजाल में उलझ कर रह गया तो उस का भविष्य अंधकारमय होगा और उस समय उसे एहसास होगा कि वह दुनिया से गुनाहों का ही पार्सल अपने लिए भेजता रहा है।

41. एक ही आयत में तक़वा (ईश-भय) अपनाने की दो बार ताक़ीद की गई है ताकि तक़वा पर जो कि मुश्किल से पैदा होता है निगाहें जम जाएं।

तक़वा का मतलब अल्लाह से डरना तथा उस की अवज़ा से बचना है। इस में अल्लाह की महानता का भाव भी है और वह भाव भी जो गुनाहों से बाज़ रखता है और दायित्व की पाबन्दी पर आमादा करता है।

42. तक़वा का पोषण इस विचार से होता है कि अल्लाह हमारे कर्मों को देख रहा है।

43. अल्लाह को भूल जाने का मतलब उस से ग़ाफ़िल हो जाना उस के आदेशों की परवाह न करना और उस के समक्ष पेशी की धारणा से मुक्त हो जाना है। खुदा को भुलाने का अनिवार्य परिणाम यह है कि मनुष्य स्वयं को भुला दे और स्वयं को भुला देना यह है कि मनुष्य अपनी उस हैसियत को भूल जाए कि वह अल्लाह का बन्दा है, वह अपनी मन मानी करने के लिए आज़ाद नहीं है, अपने पैदाइशी मक़सद को भुला दे और अपने बुरे अन्जाम की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो जाए।

यहूदियों का यही हाल था जिस की तरफ़ इस आयत में इशारा कर के ईमान वालों को सचेत किया गया है कि वे उन की तरह न बन जाएं। इस चेतावनी और ताक़ीद के बावजूद

आज मुसलमानों की भारी संख्या यहूदियों ही के पद चिन्हों पर है। वे मुसलमान होने के दावेदार हैं किन्तु वे अल्लाह को ऐसा भुला बैठे हैं कि उन के जीवन ईश-भय से बिलकुल खाली हो गए हैं यहाँ तक कि उन्होंने ने नमाज़ें भी छोड़ रखी हैं।

44. कुर्आन ईमान के ऐसे दावेदारों को जो अल्लाह को भूल बैठे हों उल्लंघनकारी (फ़ासिक़) बताता है। और फ़ासिक़ों का अन्जाम मालूम ही है।

45. जो लोग जन्नत और जहन्नम को खातिर में लाए बग़ैर जीवन यापन करते हैं वे समझते हैं कि उन का जीवन बड़ा सफल है और धर्म की संकीर्णता से निकलने के बाद उन पर प्रगति के मार्ग खुल गए हैं हालाँकि वे इस जीवन परीक्षा में असफल होने वाले लोग हैं। जिन पर वास्तविक प्रगति की सारी राहें बन्द हो जाती हैं और जिन का अन्जाम जहन्नम में सज़ा भुगतने के लिए खड़े रहना है। इस के विपरीत जो लोग जन्नत को अपना लक्ष्य बना कर अपने को उस का योग्य पात्र बनाते हैं वे इस जीवन परीक्षा से सफल हो कर निकलते हैं और मरने के बाद वे जन्नत में दाख़िल हो कर सफल होने तथा अपने लक्ष्य को पाने वाले लोग हैं।

46. यह कुर्आन के प्रभाव की मिसाल बयान हुई है कि वह अल्लाह का कलाम होने के कारण ऐसा प्रभावकारी है कि यदि किसी पहाड़ को विवेक प्रदान कर के उस पर अवतरित किया जाता तो अल्लाह के डर से वह दब जाता और फट पड़ता किन्तु इन्सान की संगदिली का हाल यह है कि इस कलाम को सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता। मतलब यह कि इन्कारियों के दिल पत्थर से भी अधिक कठोर हैं। यहूदियों के दिल भी पत्थर से अधिक कठोर हो गए थे जिस का वर्णन सूरह बक्रर: में हुआ है।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ
كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً. (بقره: ८४)

अर्थ :- “फिर तुम्हारे दिल सख्त हो गए पत्थरों की तरह, बल्कि उस से भी अधिक सख्त ” (बक्रर: ७४)

और पत्थरों का अल्लाह के डर से गिरना भी एक सच्चाई है :-

وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ. (بقره: ८४)

अर्थ :- “ और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। ” (बक्रर : ७४)

इस अवसर पर सूरह हदीद आयत १६ और इस की व्याख्या भी सामने रहे।

47. यह सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिस में अल्लाह

के अच्छे नाम व्यापक रूप से और अच्छी तरीक़ा के साथ बयान हुए हैं जिस से अल्लाह की महानता का भाव पैदा हो जाता है और दिल में उस का डर पनपने लगता है। इन आयतों का प्रभाव इतना ज़बरदस्त है कि इन की तिलावत ही से अल्लाह की हैबत दिल पर छाने लगती है। और यह कुर्आन के चमत्कारी कलाम होने का सबूत है।

शब्द अल्लाह की व्याख्या सूरह फ़ातिहा नोट ३ में गुज़र चुकी।

48. अर्थात् इबादत अल्लाह के लिए ख़ास है। उस के सिवा कोई नहीं जो इबादत अथवा पूजा व अराधना का अधिकारी हो और इस योग्य हो कि उस के समक्ष पूजा के कर्म किये जाए।

49. अर्थात् जो चीज़ें मनुष्य और अन्य सृष्टियों से छिपी हुई हैं उन को भी वह जानता है और जो उन पर ज़ाहिर हैं। उन को भी। उस को अतीत, वर्तमान और भविष्य सब का ज्ञान है और उस के ज्ञान से स्थान और समय बाहर नहीं हैं।

50. रहमान और रहीम शब्द की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट ५

51. इलाह का मूल अर्थ पूज्य के हैं। और पूज्य वास्तव में वही हो सकता है जो सामर्थ्य और सत्ता शक्ति रखता हो। अतः कुर्आन में यह शब्द शासन वाला अर्थात् खुदा के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है। सूरह बनी इस्राईल में है :-

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ إِلَهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا الْأَبْغَاوُ

إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا. (بنی اسرائیل: ۲۲)

अर्थ :- “कहो यदि उस के साथ दूसरे खुदा भी होते जैसे कि ये लोग कहते हैं तो वे सिंहासन वाले की तरफ़ राह ज़रूर निकाल लेते।” (बनी इस्राईल - ४२)

ज़ाहिर है सिंहासन वाले की तरफ़ राह निकालने का सम्बन्ध सत्ता शासन से है।

इस लिए इलाह के अर्थ में यहाँ सत्ता शक्ति का पहलू उभरा हुआ है। इस लिए यहाँ अनुवाद में पूज्य के बजाय “खुदा” का लफ़्ज़ अधिक उचित है। क्योंकि खुदा शब्द से सामर्थ्य और सत्ता शक्ति वाला होने की धारणा बनती है।

कुछ उलमा “खुदा” लफ़्ज़ को अल्लाह के लिए इस्तमाल करने पर एतिराज करते हैं क्योंकि उन के नज़दीक इस फ़ारसी शब्द का मूल अर्थ कुछ और ही है। किन्तु यह एतिराज कोई महत्व नहीं रखता क्योंकि यह शब्द लम्बी अवधि से अच्छे अर्थों में इस्तेमाल हो रहा है और उलमा और अवाम सब की ज़बान पर है तथा कुर्आन के उर्दू अनुवादों में भी यह शब्द अधिकता के साथ प्रयुक्त हुआ है और अल्लामा फ़ख़रूद्दीन राज़ी

ने अपनी किताब “लवामिउल बैय्यिनात” में जो अल्लाह के मुबारक नामों पर अरबी में एक प्रमुख और शोध पुस्तक है, अल्लाह के लिए खुदा शब्द के इस्तेमाल को जायज़ कहा है। (देखिए लवामिउल बैय्यिनात पृष्ठ २१)

52. الْمَلِكُ “अलमलिको” अर्थात् बादशाह, सुलतान, शासनाधिकारी। अल्लाह इन्सान का और पूरी कायनात का वास्तविक शासनाधिकारी है। उस का शासन सब पर छाया हुआ है वही शरीअत (संविधान) देने वाला और हाकिम (Sovereign) है। मनुष्य का बादशाह और हाकिम होना बनावटी तथा सशर्त और सीमित है। जो लोग अपनी बादशाहत या आदेश को अल्लाह की बादशाहत व आदेश के मातहत होने की धारणा नहीं रखते और उस के दिए हुए संविधान (शरीअत) से आज़ाद हो कर क़ानून गढ़ते हैं वे अल्लाह के विद्रोही और उद्दंड हैं और उन की बादशाहत वे आदेश के दावे बिलकुल ग़लत हैं।

53. الْفَدُوسُ “अल-कुदूस” अर्थात् हर प्रकार के दोष से پاک तथा उस में बरकत वाला होने का भावार्थ भी शामिल है अतः लिसानुलअरब में इस का अर्थ “मुबारक” भी बताया गया है। मालिक के साथ कुदूस की सिफ़त इस बात को ज़ाहिर करती है कि वह ऐसा शासक है जो ग़लती और दोष से پاک है और उस का कोई आदेश ग़लत नहीं हो सकता।

54. السَّلَامُ “अस्सलाम” अर्थात् सरासर सलामती। वह ऐसी सलामती वाला है कि उस पर कभी कोई आफ़त नहीं आ सकती। वह हमेशा बाक़ी रहने वाला है। वही है जो अपने बन्दों को सलामती प्रदान करता है।

55. الْمُؤْمِنُ “अल-मोमिन” यहाँ अमन देने वाले के अर्थ में है। वही है जो भय को दूर करने वाला और अमन प्रदान करने वाला है।

56. الْمُهَيْمِنُ “अल-मुहैमिन” अर्थात् देख रेख करने वाला। वही है जो अपनी सृष्टियों की देख रेख और रक्षा करता है।

57. الْعَزِيزُ “अल-अज़ीज़” का सर्वाधिक उभरा हुआ अर्थ तो प्रभुत्वशाली है। दूसरा अर्थ अद्वितीय है, तीसरा अर्थ सख़्त और शक्तिशाली है और चौथा अर्थ इज़्ज़त देने वाला है। (देखिए लवामिउल बैय्यिनात इमाम राज़ी पृष्ठ १४७ तथा लिसानुल अरब जिल्द ५ पृष्ठ ३७५)

अल्लाह के ग़ालिब होने का अर्थ यह है कि सारी कायनात पर उस का प्रभुत्व ऐसा है कि कोई चीज़ भी उस के क़ाबू से बाहर नहीं। सारी सृष्टियों की नकेल उसी के हाथ में है और जिस किसी को भी उस ने किसी प्रकार का अधिकार दे रखा है तो उसे वह जब चाहे छीन सकता है। उस से विद्रोह तथा उद्दंडता कर के कोई व्यक्ति भी उस की पकड़ से अपने को बचा नहीं

सकता।

58. الْجَبَّارُ “अल-जब्बार” अर्थात् जबरदस्त अपने आदेश सृष्टियों पर बलपूर्वक लागू करने वाला। अल्लाह तआला की महान शक्ति के आगे सृष्टि बिल्कुल बेबस है। किसी की मजाल नहीं की उस की मंशा और मर्जी के खिलाफ कुछ कर सके। उदाहरण स्वरूप मनुष्य नाक से साँस लेने के लिए विवश है आँख से साँस लेने का काम नहीं कर सकता और न कान से देखने का काम कर सकता है। मनुष्य की यह बेबसी इस बात का सबूत है कि उस पर एक जबरदस्त हस्ती का आदेश चल रहा है जिस पर उस ने अपने आदेश बलपूर्वक लागू कर रखे हैं। इस लिए मनुष्य को चाहिए कि अपनी बेबसी को महसूस करते हुए उस के आगे नत मस्तक हो जाए और विनम्रता का रवैया अपनाए।

59. الْمُتَكَبِّرُ “अल-मुताकब्बिर” अर्थात् किबिरियाई या बड़ाई वाला। उस के लिए बड़ाई ही बड़ाई है। और सृष्टि में से कोई नहीं जिस को बड़ाई का अधिकार पहुँचता हो और बड़ाई करना उस को शोभा देता हो क्यों कि अपने आप में कोई भी बड़ा नहीं है। इस लिए किसी का बड़ाई करना निन्दनीय है और अल्लाह ही है जिस के लिए बड़ाई ही बड़ाई है।

60. अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व तथा उस के इस गुणों वा विशेषताओं में कोई साझीदार नहीं है। इस लिए वही एक मात्र खुदा और वास्तविक पूज्य है।

61. الْخَالِقُ “अल-खालिक” अर्थात् अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला। पदार्थ पहले मौजूद नहीं था। अल्लाह ही उसे अस्तित्व में लाया और सारी कायनात उसी ने पैदा की। उस के सृष्टा होने की विशेषता भारत के बहुदेववादियों की उस धारणा का खण्डन करती है कि पदार्थ आदि कालिक अर्थात् हमेशा से है। इस को किसी ने पैदा नहीं किया। कुर्आन इस धारणा को गलत बताता है।

62. الْبَارِئُ “अल-बारी” का अर्थ पैदा करने वाले के हैं किन्तु इस में आविष्कार का पहलू उभरा हुआ है अर्थात् किसी पिछले उदाहरण के बगैर पैदा करने वाला। अल्लाह तआला की रचना शक्ति का कमाल यह है कि उस ने कायनात की सारी चीजें इस तरह पैदा कीं कि किसी चीज का भी कोई नमूना पहले से मौजूद नहीं था। सारी चीजें उस की पैदाईश और उस का आविष्कार हैं।

“बरा” जिस का कर्ता बारी है अरबी और इबरानी दोनों भाषाओं में इस का अर्थ पैदा करने के हैं। इबरानी भाषा में जो तौरात में मौजूद है उस की पहली ही आयत में बरा **بَرَأَ** का शब्द आया है।

“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।”

(उत्पत्ति १:१)

63. الْمَصَوِّرُ “अल-मुसव्विर” अर्थात् सूरत गरी करने वाला, रूप बनाने वाला। वही है जो अपनी सृष्टि की सूरतगरी करता है जिस रूप में चाहता है बनाता है और उस ने मनुष्य को एक खास रूप प्रदान किया है।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ
كَيْفَ يَشَاءُ. (آل عمران: ५)

अर्थ :- “वही है जो गर्भशयों में जिस तरह चाहता है सूरत गरी करती है।” (आले इमरान आयत ६)

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ. (اعراف: ११)

अर्थ :- “हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे रूप बनाए।” (आराफ़ : ११)

तथा फ़रमाया

وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ. (المؤمن: ५२)

अर्थ :- “और तुम्हारी सूरत गरी की तो अच्छी सूरतें बनाई।” (अल-मोमिन - ६४)

और उस की सूरत गरी का कमाल यह है कि अरबों इन्सानों की सूरतें एक दूसरे से भिन्न हैं। वह रोज़ाना पैदा होने वाले असंख्य बच्चों को नये नये रूप प्रदान करता रहता है। उस के पास रूप और आकार की कोई कमी नहीं है। वह एक डिजाइन को उसी तरह दोहराता नहीं बल्कि उस में अन्तर करता है ताकि लोग एक दूसरे को पहचान सकें और उस की रचना शक्ति की निशानी ठहरे।

64. الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى “अल-अस्माउल हुस्ना” अर्थात् अच्छे और बेहतरीन नाम। व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २७८, २७९, २८०

अस्मा-ए-हुस्ना की तफ़्सील तिर्मिजी की एक हदीस में बयान हुई है जिस में अल्लाह तआला के निन्यान्वे नाम गिनाए गए हैं और अवाम में यह हदीस मशहूर है। (देखिए तिर्मिजी अब्बाबुद्दावात) लेकिन यह हदीस कुछ कारणों से प्रमाण को नहीं पहुँचती।

पहली बात तिर्मिजी ने इस हदीस का उल्लेख कर के कहा है **هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ** कि यह ग़रीब हदीस है और ग़रीब हदीस कमज़ोर हदीस की ही एक क्रिस्म है।

दूसरी बात इस के एक रावी (उल्लेखकर्ता) वलीद बिन मुस्लिम हैं जिस के बारे में मीज़ानुल एतिदाल में विभिन्न मत आए हैं। कुछ मुहद्दीसीन का कहना है कि वे तदलीस कर के झूठे उल्लेख कर्ताओं से रिवायत करते हैं। उन्होंने ने इमाम मालिक से

दस हदीसें ऐसी बयान की हैं जिन की कोई असल नहीं। (मीज़ानुल एतिदाल-इमाम ज़हबी जिल्द ४ पृष्ठ ३४७)

तीसरी बात निन्यान्वे नामों की जो तफ़सील तिर्मिज़ी की इस हदीस में बयान हुई है, उस में रब, मौला, और नसीर जैसे नामों का कोई उल्लेख नहीं है और न नामों के बयान में सुन्दर क्रम पाया जाता है जैसे “अल-हैय्यु” (वह ज़िन्दा है) से पहले अलमुह्यी (वह ज़िन्दा करने वाला है) का ज़िक्र हुआ है।

इस के अलावा यह भी कि इब्ने माज़ा आदि की हदीस में नामों की जो तफ़सील बयान हुई है उस में और तिर्मिज़ी की इस हदीस में नामों का अन्तर है। सार यह कि जिन हदीसों में भी नामों की तफ़सील बयान हुई हैं वे कमज़ोर हैं और चूँकि अकसर रिवायतें जिन के रावि अबू हुरैरा हैं नामों की तफ़सील से ख़ाली हैं और उन में सिर्फ़ इस क्रम बयान हुआ है कि अल्लाह के निन्यान्वे नाम हैं! इस लिए मुहद्दीसीन के एक ग़रोह ने नामों की इस तफ़सील को मुद्रज़ माना है अर्थात् असल हदीस बयान करके उल्लेख कर्ता ने अपनी ओर से उस की व्याख्या के तौर पर ये नाम बयान किये हैं। यह तफ़सील नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़रमाई हुई नहीं है। (इस बहस के लिए

देखिए “फ़तहुलबारी जिल्द ११ पृष्ठ २६९)

65. इस की व्याख्या सूरह हदीद नोट १ में गुज़र चुकी।

अल-हकीम अर्थात् हिकमत वाला। हिकमत (तत्वदर्शिता) की बुनियाद मूल ज्ञान (तत्वज्ञान) पर होती है। और अल्लाह के हकीम होने का अर्थ यह है कि उस के फैसले तत्वपूर्ण और समझदारी के होते हैं। उस की तदबीरें सुदृढ़ एवं स्थायी होती हैं और उस ने अपनी अच्छी तदबीरों से हर चीज़ को मसलहत के अनुसार ठीक और उचित जगह पर रखा है।

66. सूरह के शुरूआत में भी अल्लाह के प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी होने की विशेषताओं का वर्णन हुआ था और सूरह की समाप्ति भी इन ही पर हो रही है। यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि इस सूरत में जो मज़मून बयान हुए हैं वे इन दो व्यापक गुणों पर ध्यान को केन्द्रित कराते हैं। अल्लाह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस के फैसले लागू हो कर रहते हैं और वह तत्वदर्शी है इस लिए उस के फैसले तत्वपूर्ण (हिकमत से भरे) होते हैं। अतः इन्सान को अल्लाह से हर हाल में अच्छी आशाएँ बाँधनी चाहिए और उस के प्रति अच्छे विचार रखने चाहिए चाहे उस को कैसे ही कठिन हालात से दोचार होना पड़े।



६०. सूरह अल्-मुम्तहिनः

नाम :- आयत १० में हिजरत कर के मदीना आने वाली औरतों के बारे में आदेश दिया गया है **فَامْتَحِنُوهُنَّ** “फ़मतहिनुहुन्ना” अर्थात् उन का इम्तिहान लो कि वास्तव में वे ईमान लाई हैं या नहीं। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-मुम्तहिनः अर्थात् इम्तिहान लेने वाली है। तात्पर्य वह सूरह है जिस में इम्तिहान लेने की आदेश दिया गया है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और सुलह हुदैबियः के ज़माने में (संभवतः सन ७ हिजरी में) नाज़िल हुई जब कि औरतें मक्का से हिजरत कर के मदीना आ रही थीं और उन के मेहर वापसी आदि की समस्याएँ उत्पन्न हो गई थीं जैसा कि आयत १० और ११ से स्पष्ट है।

केन्द्रीय विषय :- इस्लाम के शत्रुओं से मित्रता गाँठने और निजी स्वार्थों की खातिर उन्हें जंगी राज आदि की बातों से आगाह करने से मुसलमानों को रोकना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में इस्लाम के दुश्मनों से मित्रता की पेंगें बढ़ाने की सख्त मनाई की गई है और

उन मुसलमानों को कड़ी चेतावनी दी गई है जो अपने निजी स्वार्थों की खातिर उन से गुप्त मित्रता बढ़ाते हैं और राज की बातें उन तक पहुँचाते हैं।

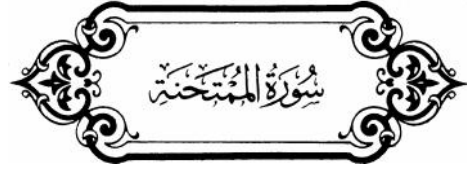
आयत ४ से ७ हिजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन के साथियों का अपनी काफ़िर जाति से अपने सम्बन्ध तोड़ लेने की घोषणा को आदर्श कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आयत ८ और ९ में स्पष्ट किया गया है कि वे काफ़िर जिन से युद्ध नहीं है उन के साथ न्याय और अच्छे बर्ताव की मनाही नहीं है।

आयत १० से १२ में मक्का से हिजरत कर के आने वाली औरतों तथा उन औरतों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थीं और उन के मदीना हिजरत कर जाने के बाद मक्का ही में रह गई थीं, हिदायतें दी गई हैं।

आयत १३ सूरह की समाप्ति की आयत है जिस में इसी बात की ताल्लूक दी गई है जिस की हिदायत सूरह की शुरूआत में दी गई थी।

६०. सूरह अल्-मुम्तहिनः



आयतें : १३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ लोगों जो ईमान लाए हो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।¹ तुम उन से दोस्ती के सम्बन्ध बढ़ाते हो² हालाँकि वे उस सत्य का इन्कार कर चुके हैं जो तुम्हारे पास आया है। उन्होंने रसूल को और तुम को इस कारण (अपने देश से) निकाल दिया कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाए हो।³ अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी प्रसन्नता प्राप्ति हेतु निकले हो (तो इन को दोस्त न बनाओ)⁴ तुम छिपा कर इन से दोस्ती की पेंगें बढ़ाते हो,⁵ हालाँकि तुम जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो आलानिया करते हो उसे मैं जानता हूँ। और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा वह सीधे मार्ग से भटक गया।⁶

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمُ بِالْمُودَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ حَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُيْرُونَ إِلَيْهِمُ بِالْمُودَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

2. अगर वे तुम को पा लें तो तुम्हारे साथ दुश्मनी करेंगे और बुरी तरह तुम पर दस्त दराज़ी और ज़बान दराज़ी करेंगे और चाहेंगे कि तुम काफ़िर हो जाओ।⁷

إِنْ يَتَّقَوْكُمْ يُكُونُوا أَعْدَاءً وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَالسِّنَنُ لَهُمْ بِالْشُّوْءِ وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ②

3. तुम्हारी रिश्तेदारीयाँ और तुम्हारी औलाद क्रियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आएगी।⁸ वह तुम्हारे बीच फ़ैसला फ़रमाएगा। और तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा है।

لَنْ تَفْعَلَكَ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَفْصَلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ③

1. अल्लाह का दुश्मन से अभिप्रेत अल्लाह की प्रदान की हुई सच्ची जीवन प्रणाली (इस्लाम) का दुश्मन है। मतलब यह है कि जो लोग इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन बने हुए हैं उन को अपना दुश्मन ही समझना चाहिए और उन के साथ वही मामला करना चाहिए जो एक शत्रु जाति के साथ उचित हो। न तो इस्लाम दुश्मन लोगों के साथ दिली मुहब्बत रखी जा सकती है और न उन की उग्र एवं आतंकवादी गतिविधियों के मुकाबले में नर्मी बरती जा सकती है और न कोई ऐसा काम किया जा सकता है जो इस्लाम और मुसलमानों के मुकाबले में काफ़िरों के हित में जाता हो। खास तौर से जंगी कार्रवाई के दौरान मुसलमानों को उन के मामले में बहुत सावधान होना चाहिए।

काफ़िरों को दोस्त न बनाने के निर्देश की व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट ४१ और सूरह माइदा नोट १६४

2. यह उन मुसलमानों की पकड़ है जो इस मसलहत से कि मक्का में उन के नातेदारों की सुरक्षा हो सकेगी, मक्का के बहुदेववादियों के साथ ऊपर ऊपर से मित्रता के सम्बन्ध बनाए हुए थे। ये मामला यद्यपि वे बुरी नीयत से नहीं कर रहे थे मगर वह उन की कमजोरी थी और इस का असर काफ़िरों के विरुद्ध की जाने वाली कार्रवाइयों पर पड़ सकता था इस लिए सख्ती के साथ इस से रोका गया।

3. यह मक्का के काफ़िरों की दुश्मनी का हाल बयान हुआ है कि वे सच्चे जीवन प्रणाली इस्लाम के इन्कार हैं और जुल्म और ज़्यादती पर ऐसे उतर आए हैं कि रसूल को तथा मुसलमानों को मक्का से हिजरत कर जाने पर विवश किया। इस का कारण केवल यह हुआ कि मुसलमान अल्लाह ही को अपना रब मानते थे और उन्होंने उस के सिवा किसी को अपना रब मानने से इन्कार कर दिया था। यह ईमान उन की नज़रों में अपराध था। और जो लोग ईमान को अपराध बताएँ वे किस तरह दोस्ती के लायक हो सकते हैं।

4. अर्थात् जब तुम अल्लाह की राह में जिहाद के लिए उठ खड़े हुए हो और ख़ालिस उसी की प्रसन्नता चाहते हो तो तुम्हें काफ़िरों के साथ अपने रवैये में बेलाग होना चाहिए उन के साथ किसी तरह की रियायत करने का सवाल पैदा नहीं होता।

5. यह बात सार्वजनिक रूप से कही गई है जिस से स्पष्ट होता है कि यह किसी एक व्यक्ति की बात नहीं थी बल्कि कई लोगों से यह कमजोरी ज़ाहिर हुई थी और वह किसी राज़ को पहुँचाने ही की बात नहीं थी बल्कि विभिन्न तरीकों से दोस्ती को निभाने की बात थी। रही बात हातिब बिन अबी बलत्ता का क्रिस्सा जो हदीस में बयान हुआ है तो वह भी इसी के अन्तर्गत आता है इस लिए रवियों (उल्लेखकर्ताओं) ने इस आयत के शाने-नुज़ूल के तौर पर इस को बयान कर दिया है। यह घटना हुदैबिया संधि के टुट जाने के बाद

घटी थी और यह सूरह इस से पहले अवतरित हो चुकी थी। सारांश यह है कि एक सहाबी हातिब बिन अबी बलत्ता ने जिन को हिजरत का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था और बद्र की जंग में शामिल होने का भी, मक्का के काफ़िरों को ख़त लिखा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का पर चढ़ाई की तैयारी कर रहे हैं। यह खत उन्होंने एक बूढ़ी औरत को दे कर रवाना कर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य द्वारा इस की सूचना हुई तो आपने हज़रत अली, हज़रत ज़ुबैर, और हज़रत मिक्दाद को उस का पीछा करने के लिए रवाना किया और फ़रमाया कि रौज़ा ख़ाख़ के मुकाम पर एक औरत मिलेगी। उस के पास एक गुप्त पत्र है, उसे ले आना। इन लोगों ने घोड़े दौड़ा कर उसे पकड़ लिया और उस से ख़त हासिल कर के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत कर दिया। आप ने हातिब को बुला भेजा। उन्होंने निवेदन किया “ऐ अल्लाह के रसूल आप मेरे बारे में जल्दी न फ़रमाएँ। मैं कुरैश के ख़ानदान से नहीं हूँ और जो मुहाजिरीन आप के साथ हैं उन की मक्का में रिश्तेदारियाँ हैं और वे उन के घर वालों और उन के माल का ख़याल रखते हैं। चूँकि मेरी उन के साथ रिश्तेदारी नहीं है इस लिए, मैं ने चाहा कि उन के साथ भलाई करूँ ताकि वे मेरे रिश्तेदारों का ख़याल रखें। मैं ने यह काम कुफ़्र और इस्लाम से फिर जाने के कारण नहीं किया है।”

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की इस बात को सच मान लिया और उन के महान बलिदानों को देखते हुए जो उन के सच्चे ईमान वाले होने का सबूत थीं उन से दर गुज़र फ़रमाया। (देखिए बुख़ारी किताबुतफ़सीर सूरह मुमताहिनः)

6. इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों के साथ दोस्ती गाँठने को गुमराही बताया गया है जिस से इस गुनाह की संगीनी स्पष्ट होती है। मौजूदा दौर के उन मुसलमानों को जो इस्लाम और मुसलमानों के हित के विरुद्ध उन के दुश्मनों से जा मिलते हैं उन को अपना चेहरा इस आयत के आइने में देख लेना चाहिए।

7. अर्थात् इन इस्लाम दुश्मनों का हाल यह है कि मुसलमान कहीं इन की पकड़ में आ गए तो उन्हें फिर बख़्शेंगे नहीं बल्कि उन पर जुल्म और ज़्यादती करेंगे और उन्हें हार्दिक कष्ट पहुँचाएँगे और उन की कोशिश यही होगी कि मुसलमान काफ़िर बन जाएँ। तो उन के इन दुष्संकल्प को देखते हुए तुम उन के लिए नर्म चारा क्यों बनों ?

8. अर्थात् अगर काफ़िरों से तुम्हारी रिश्तेदारियाँ हैं तो वह इस्लाम से अधिक तुम्हें प्रिय नहीं होनी चाहिए कि उन को बचाने के लिए इस्लाम के हित पर वार करो। ये रिश्तेदारियाँ क्रियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम आने वाली नहीं, उस रोज़ जो चीज़ काम आएगी वह इस्लाम के लिए तुम्हारे दिल का सच्चापन और तुम्हारे बलिदान होंगे।

4. तुम लोगों के लिए इब्राहीम और उस के साथियों में बेहतरीन नमूना है।⁹ जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि हम तुम से और तुम्हारे उन माबूदों (पूज्यों) से जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो बिलकुल बरी हैं। हम ने तुम से कुफ्र (इन्कार) किया और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए शत्रुता और बेजारी ज़ाहिर हो गई जब तक कि तुम एक मात्र अल्लाह पर ईमान न लाओ।¹⁰ परन्तु इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना (आदर्श नहीं है) कि मैं आप के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा।¹¹ और मैं आप के लिए अल्लाह की तरफ़ से कोई अधिकार नहीं रखता।¹² ऐ हमारे रब हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजू हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है।¹³

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَاهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَا اسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْبَاؤُا إِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿١٣﴾

5. ऐ हमारे रब ! हमें काफ़िरों के लिए फ़िला न बना।¹⁴ और ऐ हमारे रब हमें क्षमा कर। निस्संदेह तू प्रभूत्वशाली और तत्वदर्शी है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ عَنَّا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٤﴾

6. निस्संदेह इन लोगों में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो।¹⁵ इस से जो मुँह फेरे तो अल्लाह बेनियाज़ है प्रशंसा योग्य।¹⁶

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

7. असंभव नहीं कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के बीच, जिन से तुम्हारी दुश्मनी है दोस्ती पैदा कर दे ¹⁷ अल्लाह बड़ी कुदरत वाला है और अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है ।

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦﴾

8. अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ अच्छे सुलूक और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता जिन्होंने ने दीन के मामले में तुम से जंग नहीं की और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।¹⁸

لَا يَمْلِكُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَ تُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿١٧﴾

9. इस से स्पष्ट होता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर उन के सम्बन्ध तोड़ लेने की घोषणा से पहले कुछ लोग ईमान लाए थे और उन के साथियों ने बेहतरीन नमूना पेश किया था ।

10. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन के साथियों का यह एलान अपनी बहुदेववादी जाति से सत्य पूरी तरह स्पष्ट कर देने अर्थात् हुज्जत कायम हो जाने के बाद किया गया। इस के एक एक शब्द से बेज़ारी ज़ाहिर हो रही है। और फिर जिस बेबाक़ी के साथ यह एलान किया गया वह साहस दृढ़ता और बुलन्द हौसले की उत्तम मिसाल है।

यहाँ इस मिसाल को प्रस्तुत करने से अभिप्रेत इस बात की ओर ध्यान दिलाना है कि मुसलमान बहुदेवादियों से जो इस्लाम के शत्रु बने हुए हैं दोस्ती की पेंगे न बढ़ाएँ।

मौजूदा दौर के मुसलमान यद्यपि बहुदेववादी जातियों को बेलाग तरीक़े पर तौहीद की दअवत दें और शिर्क के ग़लत होने को स्पष्ट करें तो उन का रवैया सही होगा। और कितने ही गुमराह लोगों पर हिदायत का मार्ग अर्थात् सीधा मार्ग खुलेगा।

11. अर्थात् हज़रत इब्राहीम का अपने मुश्रिक बाप के लिए क्षमा की प्रार्थना करना आदर्श नमूना नहीं है कि तुम उस का अन्धानुकरण करो। बहुदेवादियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने की मनाही कुर्आन ने की है और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क्षमा प्रार्थना के बारे में सूरह तौबा आयत ११४ में स्पष्ट किया गया है कि उन्होंने ने अपने बाप से इस का वादा किया था इस लिए क्षमा की प्रार्थना करते रहे किन्तु जब उन के ऊपर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उस के लिए क्षमा की प्रार्थना करना छोड़ दिया। व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट २०९, २१०, और २११

12. अल्लाह के आगे हज़रत इब्राहीम जैसी प्रतिष्ठित हस्ती भी कोई अधिकार नहीं रखती थी तो और कौन हो सकता है जो किसी को क्षमा करा कर ही दम ले?

13. यह वह दुआ है जो हज़रत इब्राहीम ने सम्बन्ध विच्छेद की घोषणा के अवसर पर की थी।

14. अर्थात् काफ़िरों को इतनी ढील न दें कि वे हम को अपना निशाना बनाएँ, हम पर अपना हाथ साफ़ करें और फिर इस भुलावे में रहे कि यदि ये लोग सत्य पर होते तो जुल्म का निशाना न बनते।

15. अर्थात् इस बेहतरीन नमूने पर अमल करने की तौफ़ीक़ उन ही लोगों को हो सकती है जो अल्लाह से अज़्र (बदले स्वरूप इनाम) की आशा रखता हो और आख़िरत का

इच्छुक हो। जो लोग दुनिया के लाभों को प्रिय रखेंगे वे यह साहस नहीं दिखा सकते।

16. अर्थात् अगर तुम हिदायत से मुँह फेरो तो अल्लाह का कुछ बिगड़ने वाला नहीं। उस को किसी चीज़ की हाज़त नहीं है और वह अपने आप में प्रशंसा का पात्र है ।

17. अर्थात् इस्लाम के दुश्मनों को दोस्त न बनाने की जो हिदायत दी गई है उस का यह मतलब नहीं कि उन की इस्लाम दुश्मनी कभी समाप्त नहीं हो सकती । हो सकता है उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हो। और अल्लाह तआला उन्हें हिदायत दे और वे तुम्हारे दोस्त बन जाएँ। अतः जब मक्का विजय हुआ तो इस्लाम और मुसलमानों के यही दुश्मन इस्लाम की छत्र छाया में आ गए और मुसलमानों के दोस्त बन गए।

18. यह आयत पुष्टि करती है कि उन ग़ैर मुस्लिमों के साथ जो उग्र नहीं हैं अर्थात् इस्लाम और मुस्लिम दुश्मनी का प्रदर्शन नहीं करते उन के साथ अच्छा बर्ताव करने और उन के मामले में इन्साफ़ का रवैया अपनाने से रोका नहीं गया है अर्थात् ग़ैर मुस्लिमों के साथ अच्छे ढंग से पेश आएँ, उन की तकलीफ़ और मुसीबत को दूर करने की कोशिश करें जैसा कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अकाल की मुसीबत से साधारण मिस्त्रवासियों को बचाने का सामान किया था। कल्याणकारी कामों से उन को भी लाभान्वित होने का अवसर दें और सब से बड़ी बात यह कि उन की जान माल और आबरू पर हाथ न डालें । और शरीअत की बाँधी हुई सीमा में रहते हुए उन के साथ जो भलाई भी संभव हो करें। इसी प्रकार उन से जो मामले तय हों उन में इन्साफ़ का रवैया अपनाएँ। जिस समय यह आयत नाज़िल हुई उस समय यह ख़ज़ाआ जैसे क़बीलों पर बिलकुल फिट बैठी जिन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध न कोई तोड़ फोड़ की कार्रवाई की थी और न इस मामले में कुरैश का साथ दिया था।

ध्यान रहे कि इस आयत में उन ग़ैर मुस्लिमों को जो उग्रवादी नहीं हैं अपना वली, दोस्त बनाने और इस्लाम और मुसलमानों के हितों के विरुद्ध उन से दोस्ती की पेंगे बढ़ाने की अनुमति नहीं दी गई है बल्कि उन के साथ भलाई का सुलूक करने, नैतिक अधिकारों को अदा करने और उन के मामलों में इन्साफ़ के तक्राजों को पूरा करने की अनुमति और हिदायत दी गई है। इस लिए बात को अपनी सामान्य सीमा में रखना ज़रूरी है। इस सिलसिले में दूसरी सम्बन्धित आयतें भी ध्यान में रहनी चाहिएँ जैसे सूरह आले इमरान आयत २८ (नोट ४१) सूरह माइदा आयत ५१ (नोट १६४) सूरह तौबा आयत २३ (नोट ४४)

इस से मौजूदा दौर की ग़ैर इस्लामी राज्यों में रहने वाले मुसलमानों को यह रहनुमाई मिलती है कि ग़ैर मुस्लिमों के साथ उन के सम्बन्धों की क्या पोजीशन होनी चाहिए और वे उन के साथ क्या बर्ताव करें। विशेष रूप से इस का लिहाज़ रखना चाहिए कि जिन ग़ैर मुस्लिमों का रवैया इस्लाम और

मुसलमानों के साथ आतंकी रवैया नहीं रहा है उन पर किसी प्रकार की ज़्यादती उचित नहीं है। अलबत्ता यदि किसी ग़ैर मुस्लिम जाति का रवैया जाति की हैसियत से आतंकी रहा है तो उस के साथ पॉलीसी अपनाने में पूरी जाति के ही रवैये को सामने रखा जाएगा न कि किसी व्यक्ति विशेष के रवैये को।



अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से दोस्ती करने से रोकता है जिन्होंने तुम से दीन के मामले में जंग की है और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला है और तुम्हारे निकालने में सहायता की है। और जो लोग उन से दोस्ती करेंगे वही ज़ालिम हैं। (अल-कुआन)

9. अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से दोस्ती करने से रोकता है जिन्होंने तुम से दीन के मामले में जंग की है और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला है और तुम्हारे निकालने में सहायता की है।¹⁹ और जो लोग उन से दोस्ती करेंगे वही ज़ालिम हैं।²⁰

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُواكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ①

10. ऐ ईमान वालो ! जब मोमिन औरतें हिजरत कर के तुम्हारे पास आएँ तो उन की जाँच कर लो ²¹-----अल्लाह उन के ईमान को बेहतर जानता है ।²²----- फिर यदि तुम्हें मालूम हो जाए कि वे मोमिन हैं तो उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो।²³ न वे इन (काफ़िरों) के लिए हलाल हैं और न वे उन के लिए हलाल।²⁴ और उन्होंने ने (काफ़िर पतियों ने) जो कुछ खर्च किया था वह उन्हें अदा कर दो।²⁵ और उन औरतों से निकाह करने में तुम पर गुनाह नहीं जब कि तुम उन के महर उन को अदा कर दो।²⁶ और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में रोके न रखो।²⁷ जो कुछ तुम ने खर्च किया था उस का तुम (काफ़िरों) से मुतालबा करो। और जो कुछ उन्होंने खर्च किया था उस का वे (तुम से) मुतालबा करें।²⁸ यह अल्लाह का फ़ैसला है जो तुम्हारे बीच वह कर रहा है और अल्लाह ज्ञान वाला और हिक्मत वाला है।²⁹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهْجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَأَهُنَّ حِلٌّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآتُوهُنَّ مَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا بِعَصَمِ الْكُوفَرِ وَ سَلُّوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْفَقُوا ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَعْصِمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑩

11. और अगर तुम्हारी पत्नियों के महर में से कुछ काफ़िरों की तरफ़ रह जाए और फिर तुम्हारी बारी आए तो जिन की पत्नियाँ चली गई हैं उन को उतना अदा कर दो जितना उन्होंने ने खर्च किया है।³⁰ और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान लाए हो।

وَلِنْ قَاتَلَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعاقِبْتُمْ فَانْكَحُوا ۚ الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَآتَوْا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑪

19. अर्थात् वे क़बीले भी जिन्होंने ने तुम्हारे विरुद्ध कार्रवाई करने में कुरैश का साथ दिया।

20. स्पष्ट हुआ कि इस्लाम विरोधी तत्वों से जो मुसलमानों पर अत्याचार तोड़ते रहते हैं दोस्ती के सम्बन्ध बनाना बहुत बड़ा गुनाह है।

21. हुदैबिय: संधि में यह बात तय हुई थी कि मक्का से कोई व्यक्ति यदि मदीना चला जाए तो उसे वापस कर दिया जाएगा किन्तु औरतों के बारे में कोई बात तय नहीं हुई थी और औरतों के मसले का मामला भी जरा अलग था इस लिए तय शुदा धाराएँ औरतों पर लागू नहीं हो सकती थी। जब औरतें मुसलमान हो कर मदीना आने लगी तो उन मुहाजिर मुसलमान औरतों के बारे में प्रश्न पैदा हुआ कि उन के साथ क्या मामला किया जाए। इसी अवसर पर अल्लाह तआला ने यह आदेश उतारा। यह मुसलामान मुहाजिर औरतों की समस्याओं का समाधान भी था और काफ़िरों के साथ इन्साफ़ के तक्राजों को भी पूरा करता था।

इस सिलसिले में सब से पहले उन मुसलमान औरतों को परखने का आदेश दिया गया जो हिजरत कर के मदीना आ जाएँ। अर्थात् यह देख लिया जाए कि क्या वास्तव में उन्होंने ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और उन की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ है या किसी दुनयावी लाभ और व्यक्तिगत इच्छा से वह मदीना आई हैं। यदि पहली सूरत है तो उन्हें काफ़िरो की तरफ़ लौटाया न जाए और यदि दूसरी सूरत है तो कोई कारण नहीं कि उन को रोक लिया जाए।

22. अर्थात् उन के दिलों का हाल तो अल्लाह ही को मालूम है इस लिए उन के ईमान को बेहतर तौर पर जानने वाला वही है। तुम्हारा काम हालात और सबूत के आधार पर राय क़ायम करना है। इस से अधिक ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं है।

23. अर्थात् जाँच परख करने के बाद तुम्हें मालूम हो जाए कि वे वास्तव में ईमान लाई हैं तो उन को काफ़िरों की तरफ़ न लौटाओ बल्कि अपनी सोसाइटी में उन्हें जगह दो।

24. अर्थात् ऐसी मुसलमान औरतों को काफ़िरों की तरफ़ लौटाना सही नहीं क्यों कि वे न तो काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न काफ़िर उन के लिए हलाल हैं। यह आदेश अपनी जगह एक उसूली आदेश है जिस के अनुसार न कोई मुसलमान औरत काफ़िर के निकाह में रह सकती है और न किसी काफ़िर को यह अधिकार पहुँचता है कि वह मुसलमान औरत को अपने निकाह में रखे। यदि पत्नी इस्लाम स्वीकार कर ले और पति इस्लाम स्वीकार न करे तो दोनों के बीच सम्बन्ध नहीं रह जाएगा और इद्दत गुजारने के बाद पत्नी दूसरा विवाह कर लेने के लिए स्वतंत्र हो जाएगी।

25. अर्थात् इन मुसलमान औरतों के काफ़िर पतियों ने जो

महर अदा किये थे वह उन को लौटा दो। यह हिदायत हुदैबिया संधि को ध्यान में रखते हुए इन्साफ़ के तक्राजे को पूरा करने के लिए दी गई थी। महर लौटाना मुसलमानों की सामूहिक ज़िम्मेदारी थी।

26. अर्थात् उन मुसलमान मुहाजिर औरतों से मदीना के मुसलमान विवाह कर सकते हैं बशर्ते कि वे नए महर के साथ उन से निकाह करें।

27. अर्थात् जो काफ़िर औरतें तुम्हारे निकाह में चली आ रही हैं उन्हें अब छोड़ दो। रिवायतों में आता है कि हजरत उमर रज़ि. ने अपनी दो पत्नियों को जो मक्का में रह गई थीं और ईमान नहीं लाई थीं इस आयत के आ जाने के बाद छोड़ दिया। यह उसूली हिदायत है। अतः यदि कोई व्यक्ति मुसलमान हो गया और उस की पत्नी काफ़िर हो तो वह उसे अपने निकाह में नहीं रख सकता यह और बात है कि वे अहले-किताब में से हों। (देखिए सूरह माइदा आयत ५) काफ़िर औरतों में बहुदेववादी औरतें भी शामिल हैं और नास्तिक औरतें भी।

28. अर्थात् मुसलमानों की जो पत्नियाँ मक्का में रह गई और उन्होंने ने उन के काफ़िर होने के आधार पर उन्हें छोड़ दिया तो जो महर उन्होंने ने अदा किए थे उन की वापसी का मुतालबा मुसलमान, काफ़िरों से करें। और जो मुसलमान औरतें हिजरत कर के मदीना आ जाएँ उन के काफ़िर पति जो मक्का में रह गए हों अपने महर का मुतालबा मुसलमानों से करें। इस प्रकार महर की वापसी के बारे में मुसलमानों और काफ़िरों दोनों की ज़िम्मेदारियाँ समान ठहरती हैं और अदायगी की यह व्यवस्था राष्ट्रीय या राजकीय स्तर पर होना चाहिए।

29. अर्थात् हुदैबिया संधि के परिवेश में मुहाजिर मुसलमान औरतों की वापसी की जो समस्या उत्पन्न हो गई थी उस का फैसला अल्लाह तआला ने इन अहकाम के रूप में कर दिया। और उस का फैसला ज्ञान और तत्त्वदर्शिता पर आधारित है अतः दोनों के बीच झगड़े और विवाद की कोई सूरत बाक़ी नहीं रहनी चाहिए।

30. अर्थात् अगर ऐसी परिस्थिति बन जाए कि जिन काफ़िरों के साथ संधि हुई है, उन के पास मदीना के मुसलमानों में से किसी की काफ़िर पत्नी रह जाए या मदीना आ कर वापस चली जाए और निकाह टूट जाने की दशा में उस का महर मदीना के काफ़िर, मुसलमान पति को न लौटाएँ, तो जब तुम्हारी बारी आए और किसी मुसलमान औरत के मदीना हिजरत कर के आ जाने के कारण उस का महर मक्का के काफ़िरों को लौटाना हो तो इस का समायोजन (Adjustment) इस तरह कर लिया जाए कि महर की जो रक़म काफ़िरों से वसूल करनी हो तो उतनी रक़म उस महर में से मदीना के मुसलमान पति को अदा कर दी जाए।

12. ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें बैअत (प्रतिज्ञा) करने के लिए आएँ , इस बात पर कि वे किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक न ठहराएँगी चोरी न करेंगी, व्यभिचार न करेंगी, अपनी संतान की हत्या न करेंगी । अपने हाथ पाँव के आगे कोई बोहतान न गढ़ेंगी और किसी मारुफ़ बात (सर्वमान्य भली बात) में तुम्हारी अवज्ञा नहीं करेंगी तो उन से बैअत (प्रतिज्ञा) ले लो।³¹ और उन के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो।³² निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يَبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ
بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ
وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيْنَهُ بَيْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ
وَلَا يَعْصِيَنَّ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعُهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑫

13. ऐ ईमान वालो ! उन लोगों को दोस्त न बनाओं जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ³³ वे आखिरत से मायूस हो चुके हैं जिस तरह काफ़िर क़ब्र वालों से मायूस हैं ।³⁴

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
قَدْ يَكْسِبُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَكْسِبُ الْكُفَّارُ مِنْ
أَصْحَابِ الْقُبُورِ ⑬

31. ऊपर मुहाजिर औरतों को जाँच लेने की हिदायत की गई थी। इस आयत में इसी परिवेश में औरतों से बैअत (प्रतिज्ञा) लेने की हिदायत की गई है ताकि जिस जाहिली समाज से निकल कर वे इस्लामी समाज में दाखिल हो रही हैं उस की बुराइयों को वे अपने साथ न लाएँ और अपने जीवन को तथा इस्लामी समाज को उन से पाक रखें। इस की आवश्यकता विशेष रूप से इस लिए सामने आई कि दूसरी मोमिन औरतों की तरह उन को इस्लामी सोसाइटी में रहने और अपनी तरबियत करने के अवसर नहीं मिले थे। तथा जो औरतें पहले इस्लाम में दाखिल हुई थीं वह नेकी में पहल करने वाली औरतें थी किन्तु बाद में इस्लाम स्वीकार करने वाली औरतें उन के हमपल्ला नहीं हो सकती थीं।

यह बैअत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के हाथ पर करने के लिए थी और जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया एक ख़ास मौक़े पर मोमिन औरतों से बैअत लेने की हिदायत की गई थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इस बैअत का ख़ास होना इस आयत से अच्छी तरह स्पष्ट है। अतः इस में इशार्द हुआ है कि :-

وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ

अर्थ : “वे मारुफ़ में तुम्हारी अवज्ञा नहीं करेंगी।”

और जो स्थान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है वह किसी और का नहीं हो सकता। इस लिए किसी और के हाथ पर गुनाहों से बचने आदि की बैअत करने का प्रश्न पैदा नहीं होता। और तसव्वुफ़ के नाम पर जो पीरी मुरीदी इस्लाम में दाखिल कर दी गई है और एक पीर अपने मुरीद से जो बैअत लेता है वह सब बिदअत है। इस की अधिक तफ़सील के लिए देखिए सूरह “फ़त्ह” नोट १७

हदीस में आता है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम औरतों से बैअत लेते तो उन के हाथ को छूते नहीं थे बल्कि कह देते मैं ने तुम से बैअत ले ली। (बुख़ारी किताबुत्तप्सीर)

इस बैअत में शिर्क अर्थात् अल्लाह का साझी ठहराने की धारणा से बचने को प्राथमिकता दी गई है। जाहिलिय्यत और जिहालत के प्रभाव में रहते हुए औरतों में शिर्क और बहुदेववादी अंधविश्वास आसानी से राह पा जाते हैं। इस लिए उस बारे में चौकन्ना रहना चाहिए।

चोरी की आदत भी औरतों में होती है और वह मर्दों को अपनी ओर आकर्षित कर के व्याभिचार की अपराधिनी भी होती रहती है इस लिए मुसलमान औरतों को इस बात का

ख़याल रखना चाहिए कि वे इन बड़ी बड़ी बुराईयों में न लिप्त हो जाएँ।

संतान की हत्या का एक रूप यह था कि ग़रीबी के डर से बच्चों की हत्या कर दी जाती थी और दूसरा रूप यह था कि बहुदेववादी अंधविश्वास के आधार पर संतान को देवी या देवताओं की बलि चढ़ा दी जाती थी। इस के अतिरिक्त एक तीसरा रूप भी था जो इस ज़माने में भी मौजूद है कि हराम व्यभिचार के फलस्वरूप उत्पन्न संतान का गला घोट कर उसे कहीं फेंक दिया जाए। यह भी जान (प्राण) की हत्या है जो कि हराम है। अपने हाथ और पाँव के आगे बोहतान गढ़ने से तात्पर्य दूसरों की संतानों को अपने पति के सर मूँढ़ना है। इस की सूरत यह है कि नाजायज़ गर्भ ठहर जाने पर वह उसे अपने पति का बताए।

मारुफ़ बात में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा न करे का मतलब यह नहीं है कि आप का अनुपालन मारुफ़ की शर्त के साथ है, क्यों कि कोई नबी कभी मारुफ़ के सिवा कोई आदेश देता ही नहीं और कुर्आन मजीद में रसूल के अनुपालन का आदेश **أَطِيعُوا الرَّسُولَ** बिना शर्त दिया गया है इस लिए यहाँ इस को शर्त के अर्थ में लेने का कोई औचित्य नहीं। ऊपर कई बुराईयों से बचने की प्रतिज्ञा लेने की हिदायत हुई थी। अब यह व्यापक बात कही गई है जिस में इबादत और अनुपालन के सारे मामले आ जाते हैं जिन का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदेश दें। नमाज़ ज़कात आदि सब इस मारुफ़ में दाखिल हैं।

32. अर्थात् उन के पिछले गुनाहों के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से क्षमा की यह प्रार्थना उन मोमिन औरतों के लिए हार्दिक परितोष का सामान थी।

33. तात्पर्य यहूदी है जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ। उन को दोस्त बनाने की मनाही भी उसी तरह है जिस तरह काफ़िरों को दोस्त बनाने की मनाही है। इस निर्देश को ध्यान में रखते हुए आज मुसलमानों को इस्राईल से सम्बन्ध के मामले में सावधान रहना चाहिए और उन से दोस्ती के सम्बन्ध हरगिज़ नहीं क़ायम करना चाहिए।

34. अर्थात् जिस तरह काफ़िर मुर्दों के ज़िन्दा होने की तरफ़ से निराश हैं उसी तरह यहूदी यद्यपि आख़िरत के क़ायल हैं किन्तु अपने करतूतों के कारण आख़िरत पर विश्वास और उस की सफलता की तरफ़ से बिलकुल निराश हैं। वे आभिलाषाओं और मनोकामनाओं की अभिव्यक्ति अवश्य करते हैं किन्तु दिल उन के आख़िरत की तरफ़ से फिरे हुए हैं और वे दुनिया परस्ती में बिलकुल डूबे हुए हैं।

इसी लिए कुर्आन में इन के आखिरत के मानने के दावे को निर्मूल बताते हुए कहा गया है :-

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّنْ دُونِ
النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ - وَلَنْ يَتَمَنَّوَهُ أَبَدًا
بِمَاقَدَمَتِ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ - (نूर: ९३-९५)

अर्थ :- “इन से कहो यदि आखिरत का घर तमाम लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे लिए खास है तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो। मगर उन्होंने ने जो कुछ आगे भेजा है उस के चलते वे कदापि इस की कामना न करेंगे। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (बक्र: ९४, ९५)



६१. सूरह अस्-सफ़

नाम :- आयत ४ में अल्लाह की राह में सफ़ बस्ता (पंक्तिबद्ध) होकर लड़ने वालों का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अस्सफ़ है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि उहद की जंग के बाद सन ३ हिजरी में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- मुसलमानों को अल्लाह की राह में जिहाद पर उभारना है।

कलाम की तरतीब :- पहली आयत भूमिका की आयत है जिस में आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों के अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान करने) में तल्लीन होने का वर्णन है।

आयत २ से ४ में उन मुसलमानों की पकड़ है जो अपने कहे पर अमल नहीं करते और अपने वचन को पूरा नहीं करते तथा उन मुसलमानों की तारीफ़ है जो अनुशासित तथा एक हो कर अल्लाह की राह में लड़ते हैं और अपनी प्रतिज्ञा तथा वचन को निभाते हैं।

आयत ५ और ६ में मुसलमानों को सचेत किया गया है कि वे यहूदियों के पदचिन्हों पर न चलें जिन्होंने अपने पैगम्बर को

तकलीफ़ें पहुँचाई और टेढ़ापन अपनाया जिस के फलस्वरूप उन के दिल टेढ़े हो कर रह गए। फिर उन्होंने ने अपने ही बीच से उठने वाले एक ऐसे रसूल का इन्कार किया जो खुले मोज़ों के साथ आया था।

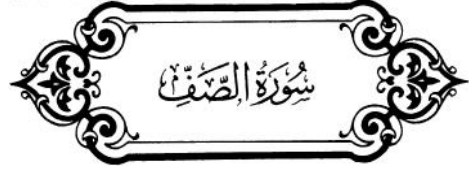
आयत ७ से ९ में इस्लाम का विरोध करने वालों को सचेत करते हुए एलान किया गया कि अल्लाह का नूर पूरा हो कर रहेगा और उस का दीन सारे दीनों (अर्थात् समस्त जीवन प्रणालियों) पर वर्चस्व पा कर रहेगा, चाहे काफ़िरों और बहुदेववादियों को कितना ही अप्रिय लगे।

आयत १० से १३ में मुसलमानों को ईमान के तक्राजों को पूरा करने और अल्लाह की राह में जिहाद करने की हिदायत दी गई है और इस की आख़िरत में मिलने वाली जज़ा (इनाम) भी बयान की गई है तथा सहायता और विजय की खुशख़बरी भी दी गई है।

आयत १४ में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सच्चे साथियों की मिसाल पेश कर के ईमान वालों को अल्लाह का मददगार (अर्थात् उस के दीन का मददगार) बनने की दअवत दी गई है।

६९.सूरह अस्-सफ़

आयतें : १४



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करती हैं आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ें ¹ और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

2. ऐ ईमान वालों !² तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं !³

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ②

3. अल्लाह के नज़दीक यह बात अत्यंत अप्रिय है कि तुम कहो वह बात जो करो नहीं।⁴

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ③

4. अल्लाह तो उन लोगों को पसन्द करता है जो उस की राह में इस तरह सफ़ बस्ता (पंक्तिबद्ध) हो कर लड़ते हैं जैसे वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।⁵

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ ④

5. और याद करो मूसा ने जब अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मुझे क्यों कष्ट देते हो हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ।⁶ फिर जब वे टेढ़े हो गए तो अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े कर दिए।⁷ अल्लाह फ़ासिकों को हिदायत नहीं देता।⁸

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ لِقَوْمٍ لَمْ تُؤْذُوا وَبَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑤

6. और जब ईसा इब्ने मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ ⁹ और तौरात में से जो कुछ मेरे सामने मौजूद है उस की पुष्टि करने वाला हूँ।¹⁰ और खुशखबरी देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उस का नाम अहमद होगा।¹¹ तो जब वह उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आया तो उन्होंने ने कहा यह तो खुला जादू है।¹²

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑥

1. इस की व्याख्या सूरह हदीद नोट १ में गुजर चुकी ।
2. संबोधन आम मुसलमान से है यद्यपि मूल रूप से सम्बोधन कमज़ोर चरित्र के लोग हैं।

3. यह प्रश्न इस बात का एहसास दिलाने के लिए है कि आदमी जो कहे वही कर दिखाए अगर काम करना नहीं है तो उस की अभिव्यक्ति अथवा घोषणा क्यों करे। यह बात यद्यपि सार्वजनिक रूप से कही गई है जिस में वादा खिलाफ़ी और प्रतिज्ञा व वचन को तोड़ना जैसी चीज़ें भी शामिल हैं किन्तु विशेषरूप से इशारा उन लोगों की तरफ़ है जो कहते थे कि अगर काफ़िरों से जंग का मौक़ा हमें मिल गया तो हम मर्दानगी के साथ लड़ेंगे किन्तु जब इस तरह के मौक़े आने लगे तो निर्भीकता के साथ निःसंकोच लड़ने से जी चुराने लगे।

4. अर्थात् अल्लाह की नज़र में ऐसे लोग अप्रिय हैं जो कहने और करने के विपरीत भाव में ग्रस्त हों। जो लोग केवल बातों के धनी और गुफ़्तार के गाज़ी होते हैं उन का कोई मान अल्लाह की नज़र में नहीं है कहने और करने में तालमेल तथा अनुरूपता आवश्यक है। इस्लाम के नज़दीक मात्र कहने (क़व्वाली) का नहीं बल्कि कर के दिखाने (फ़अ़ाली) का महत्व है। लफ़्फ़ाज़ी और किसी काम के ऊँचे ऊँचे दावे करना और फिर पीछे रह जाना अत्यंत निन्दनीय हरकत है।

5. अर्थात् अल्लाह को अच्छे चरित्र और आचरण के लोग पसंद हैं जो एक ओर अनुशासित हो कर उस की राह में जिहाद करें और जान की बाज़ी लगा दें। जंग में दुश्मन के मुकाबले के लिए पंक्तिबद्ध होना अपनी शक्ति और अपने संकल्प का प्रदर्शन है। तथा यह इस बात की तैयारी भी है कि दुश्मन मुसलमानों की पंक्ति में घुसने न पाये।

अल्लाह की राह में लड़ने वाले वही लोग हो सकते हैं जिन की जंग ख़ालिस अल्लाह के दीन को बुलन्द करने और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए हो। मुसलमानों की वे जंगें जो सांसारिक उद्देश्यों के लिए होती हैं, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की परिभाषा में नहीं आती।

6. बनी इस्राईल इस बात को जानने के बावजूद कि हज़रत मूसा अल्लाह के रसूल हैं उन्हें कष्ट और तकलीफ़ें पहुँचाते रहे जिस के बहुतेरे उदाहरण कुर्आन में प्रस्तुत किए गए हैं। जिहाद के बारे में उन्होंने मूसा को जो कष्ट दिए उस का वर्णन सूरह माइदा में हुआ है। जब हज़रत मूसा ने इन से पावन धरती में दाखिल होने का आदेश दिया तो उन्होंने जवाब दिया कि वहाँ ज़बरदस्त लोग रहते हैं इस लिए जब तक वे वहाँ से निकल नहीं जाते हम वहाँ नहीं जाएंगे और यहाँ तक कह गए कि :-

فَذَهَبَ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ . (المائدة: २४)

अर्थ :- “ तुम और तुम्हारा रब दोनों जाओ और लड़ो, हम तो यहाँ बैठे रहेंगे। ” (माइदा - २४)

बनी इस्राईल द्वारा इस तरह के कष्ट पहुँचाने की ओर संकेत करने से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों को इस बात की ओर आकर्षित करना है कि वह अपने रसूल के साथ इस तरह के कष्ट पहुँचाने का रवैया न अपनाएँ बल्कि आप के नेतृत्व पर पूर्ण विश्वास करते हुए सरफ़रोशी के साथ जंग लड़ें।

7. जो व्यक्ति सीधा दीन पसंद नहीं करता और टेढ़ी बातें करने लगता है अल्लाह तआला उस के दिल में टेढ़ पैदा कर देता है फिर उस के मस्तिष्क का साँचा ही टेढ़ा हो कर रहा जाता है और वह बिल्कुल ग़लत राह पर जा पड़ता है। इसी लिए ईमान वालों को यह दुआ करने की हिदायत हुई:-

رَبَّنَا لَا تَرِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا . (آل عمران- ८)

अर्थ :- ऐ हमारे रब ! जब तूने हमें हिदायत प्रदान की है तो इस के बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर ” (आले-इमरान ८)

8. अर्थात् जो लोग अवज्ञाकारी बने रहना चाहते हैं उन पर हिदायत का मार्ग प्रशस्त नहीं होता। हिदायत का मार्ग उसी के लिए प्रशस्त होता है जो उस का इच्छुक और उस का आदर करने वाला हो।

बनी इस्राईल ने जब जिहाद का खुला उल्लंघन किया तो उन्हें उल्लंघनकारी (फ़ासिक़) कहा गया। (देखिए सूरह माइदा आयत २५ और २६)

9. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट ७२

10. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट ७४ “तौरात में से जो कुछ मेरे सामने मौजूद है” के शब्द से स्पष्ट होता है कि तौरात अपने असली रूप में पूरी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी मौजूद नहीं थी बल्कि उस के अंश मौजूद थे। इस लिए उस के जो अंश मौजूद थे उन की आप ने पुष्टि की ।

11. यह आखिरी रसूल (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में बहुत स्पष्ट भविष्यवाणी है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने की और चूँकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के आखिरी नबी थे जिन के बाद बनी इस्राईल में अन्तिम रसूल की नियुक्ति होने वाली थी इस लिए इस की खुशख़बरी देने का काम अल्लाह तआला ने विशेष रूप से उन के सुपुर्द किया था। उन्होंने स्पष्ट रूप से दुनिया को खुशख़बरी दी कि आने वाला नबी किस शान का होगा।

भविष्यवाणीयाँ चाहे किसी भी प्रकार की हों आमतौर से

इशारों और संकेतों में बयान हुई हैं और यदि कोई भविष्यवाणी किसी नबी से सम्बन्धित हो तो उस के असली नाम के बजाए उस के गुणों पर आधारित नाम बयान हुआ है (सिवाय हज़रत यहया के) ताकि यह गुण उस की नुबुव्वत पर तर्क प्रस्तुत करे।

“अहमद” नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दूसरा नाम था अतः हदीस में आता है कि :-

عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعَمٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ -

أَنَا مُحَمَّدٌ وَأَنَا أَحْمَدُ.... (مسلم کتاب الفضائل)

अर्थ:- “जुबैर बिन मुत्तम से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं मुहम्मद हूँ और मैं अहमद हूँ” (मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

शब्द अहमद हम्द से है और इस नाम की व्याख्या इमाम राग़िब ने इस तरह की है:-

فَاحْمَدُ إِشَارَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِاسْمِهِ وَفِعْلُهُ

تَنْبِيْهَا أَنَّهُ كَمَا وَجَدَ اسْمُهُ أَحْمَدُ يُوجَدُ، وَهُوَ مُحَمَّدٌ

فِي أَخْلَاقِهِ وَأَحْوَالِهِ. (المفردات، ص १३०)

अर्थ:- “अहमद का इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम और सीरत की तरफ़ है और इस बात से अवगत करना अभिप्रेत है कि आप इस्म बा मुसम्मा (अर्थात् जीवन चरित्र के अनुकूल नाम धारी) होंगे। अर्थात् अपने आचरण और चरित्र में प्रशंसनीय होंगे।” (मुफ़रदात पृष्ठ १३०)

इस शब्द का दूसरा अर्थ अधिकता के साथ प्रशंसा करने वाले के हैं। (अहमद, हामिद से अफ़अलुत्तफ़ज़ील का सीगा है) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस बाहुल्यता के साथ अल्लाह की प्रशंसा की है, जितना खोल कर उस के प्रशंसनीय गुणों को उजागर किया। नमाज़ की शुरूआत जिस तरह हम्द (सूरह फ़ातिहा) से की। प्रशंसा और पाकी बयान करने का जो मंत्र (अज़्कार) उम्मत को प्रदान किया और प्रशंसा व गुणगान से जिस तरह वातावरण को मंत्र मुग्ध कर दिया वह आप की प्रमुखता है और आप के अहमद होने का स्पष्ट सबूत है।

आप का यह पवित्र नाम प्रसिद्ध रहा है। अतः दरबारे-नबी के शायर हस्सान बिन साबित रजि. का शेर है।

صَلَّى الْإِلَهَ وَمَنْ يَحْفُ بِعَرْشِهِ

وَالطَّيُّونَ عَلَى الْمُبَارَكِ أَحْمَدُ

अर्थ:- “अल्लाह और अर्श (ईश सिंहासन) के पास रहने

वाले फ़रिश्ते और पाकीज़ा लोग मुबारक मुहम्मद की ज़ात पर दरूद भेजते हैं।”

जहाँ तक मौजूदा इन्जीलों मत्ती, मरकूस, लूका और यूहन्ना की बात है वह ईसा अलैहिस्सलाम के हालात और उन की शिक्षाओं को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करती हैं। क्यों कि इन संकलनकर्ताओं ने इन को ईसा अलैहिस्सलाम के दुनिया से रखसत हो जाने के कई वर्ष बाद संकलित किया था। और ये संकलनकर्ता सिवाय मत्ती के, ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी नहीं थे कि उन्होंने ने सीधे उन ही से सुना हो, इस लिए यह वह इन्जील नहीं जो ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई थी अलबत्ता उस के कुछ अंश उस में मौजूद हैं परन्तु वो अपने असली रूप में नहीं। बनी इस्राईल की धार्मिक भाषा इब्रानी रही है और तौरात तथा अन्य सहीफ़े इब्रानी में मौजूद हैं यद्यपि कि परिवर्तित एवं संशोधित रूप में, अलबत्ता इन्जील इब्रानी में मौजूद नहीं है। मौजूदा इन्जीलें यूनानी (Greek) भाषा से अनुदित हैं और फिर अनुवाद दर अनुवाद होने के कारण बात अपने मूल भाव से बहुत अधिक हट गई है। फिर ये किताबें स्वयं भी इस बात का दावा नहीं करती कि वे शब्द शब्द अल्लाह की वहय हैं। बल्कि इन में क्रिस्से कहानी आदि की शैली बिलकुल स्पष्ट है। बाइबिल का टीकाकार स्वयं इस बात को स्वीकारता है कि जैसा कि लूका की इन्जील में बयान हुआ है, किस्सा कहानी ही उस का मक़सद है और इस में उस के अल्लाह की ओर से (इल्हामी) होने का कहीं दावा नहीं किया गया है।

“The motive and method of the writing of a Gospel are described in the prologue of the Gospel of Luke, without any claim to inspiration, the writer set out to get the best information that he could and to use the previous attempts which had been made. The narrative was not designed to be sacred scripture. It was a record of events wherein the sacred scriptures were fulfilled.”

(Peak's commentary on the Bible London 1962, P.4)

फिर भी मौजूद इन्जील में आने वाले रसूलों (ईशदूतों) के बारे में स्पष्ट संकेत मिलते हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ही लागू होते हैं। जैसे :-

“मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा क्यों कि इस संसार का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।” (यूहन्ना १४:३०)

“लेकिन मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा।” (यूहन्ना १६:१७)

“मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा। (यूहन्ना १६: १२, १३)

इन्जील के उर्दू अनुवाद में मददगार और हिन्दी में सहायक शब्द का इस्तेमाल किया गया है किन्तु इब्ने हिशाम ने पुष्टि की है कि यूहन्ना की जो इंजील सुरयानी भाषा में हैं उस में मुहम्मद शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है “मुहम्मद” (इब्ने हिशाम जिल्द १ पृष्ठ २५१)

और मत्ती की इंजील में अन्तिम संदेश के बारे में इस तरह भविष्यवाणी की गई है :-

“यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया? यह प्रभु की ओर से हुआ और हमारे देखने में अद्भुत है। इस लिए मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उस का फल लाए दिया जाएगा। जो इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा। (मत्ती २१:४२ से ४४) रही बात इन्जील बरनाबास की तो उस में नाम की पुष्टि के साथ भविष्यवाणी मौजूद है।

“यीशु ने जवाब दिया यक़ीन कर बरनाबास खुदा की मशिह्यत हुई कि दुनिया में लोग यहूदाह की मौत पर मेरी हँसी उड़ा लें और सब लोग यही जानें कि मैं सलीब पर मरा और यह हँसी उड़ती रहेगी जब तक मुहम्मद खुदा का रसूल न आ जाए, कि वह जब आएगा तो इस फ़रेब को उन पर फ़ाश करेगा जो खुदा की शरीअत पर ईमान लाएँ।” (यूहन्ना अध्याय २२, उर्दू अनुवाद से)

परन्तु यह इंजील की तरह विश्वस्नीय नहीं है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत उन का अन्तिम संदेश होना सूरज से अधिक रौशन है। आप की नुबुव्वत को सिद्ध करने के लिए कमज़ोर दलीलों का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं है। इंजील बरनाबास की भविष्यवाणीयाँ ईसाइयों के लिए स्पष्ट तर्क (हुज्जत) नहीं बन सकतीं क्योंकि वे उसे प्रमाणिक नहीं मानते। इस इन्जील के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस को किसी मुसलमान ने संकलित कर के बरनाबास से संबद्ध बता दिया है। इस के जाली होने पर बिस्तृत बहस की आवश्यकता है जिस की यहाँ गुंजाइश नहीं है इस लिए संक्षिप्त रूप से कुछ

बातें प्रस्तुत की जा रही हैं।

1) बरनाबास का ईसा अलैहिस्सलाम के हवारीयों में से होना साबित नहीं है। बाइबिल की किताब “प्रेरितों के कामों का वर्णन” से पता चलता है कि वह पाल के साथ प्रचार के लिए अन्ताकिया गया था (प्रेरितों के काम १५: २२) परन्तु उस के हालात अज्ञात हैं।

2) बरनाबास ने अपनी किताब की शुरूआत में उस के लिखने का उद्देश्य यह बताया है कि यूलस जो विकृत धारणा फैला रहा है उस का खण्डन किया जाए और सच्ची बातें सामने लाई जाएँ किन्तु किताब के आखिर में लिखता है कि यीशु ने उस से कहा :-

“देख बरनाबास तू ज़रूर और ज़रूर मेरी इन्जील लिखना।” (अध्याय २२१)

अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बरनाबास को इन्जील लिखने का पहले ही आदेश दिया था तो फिर उसे पहले दिन ही से यह काम करना चाहिए था और इस किताब के लिखने का उद्देश्य भी यही बयान करना चाहिए था परन्तु वह पाल की विकृत धारणा फैलने तक खामोश रहा।

3) बरनाबास की इन्जील के बारे में कहा जाता है कि उस की केवल एक प्रति जो इटैली भाषा में थी पोप सिक्सटस (Sixtus) १५८५ से १५९० ई. के पुस्तकालय में मौजूद था और अठारवी सदी के शुरू में वह सब के सामने आया। यदि यह वास्तव में बरनाबास की लिखी हुई इन्जील है तो वह मूल रूप से किस भाषा में थी और पूरी दुनिया इस से किस तरह बेखबर रही?

4) इस इन्जील में हज़रत मरयम के बारे में बयान हुआ है कि जब वे गर्भवती हो गईं तो इस डर से कि कहीं वे व्यभिचार के आरोप में संगसार न कर दी जाएँ अपने लिए अपनी ही बिरादरी का एक साथी चुन लिया जिस का नाम यूसुफ़ था।” (अध्याय - २)

यह बात कुआन के बयान के बिल्कुल विपरीत है और हज़रत मरयम के चरित्र को भी संदिग्ध बना देती है। वे तो पवित्रता की मूर्ति थीं और अल्लाह पर उन का भरोसा तथा विश्वास असाधारण था। फिर वे क्यों अपने को एक ऐसे व्यक्ति की तरफ़ जो उस का पति नहीं था सम्बन्ध जोड़ती ?

5) इस में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक चमत्कार यह बयान किया गया है कि उन्होंने ने एक दअवत के मौक़े पर पानी को शराब बना दिया था (अध्याय-१५) कैसी व्यर्थ की बात है जो हज़रत ईसा से संबद्ध की गई है।

6) इस में नबियों की संख्या हज़रत ईसा की ज़बानी एक लाख चौवालीस हज़ार बयान की गई है। (अध्याय १७)

ऐसी ही बात कमज़ोर हदीस में बयान हुई है और मालूम होता है यह उसी से उद्धृत है।

इसी अध्याय में आगे चलकर बयान हुआ है कि एलिय्याह के समय में एज़बिल ने दस हजार नबी जान से मारे। यह खुला झूठ है। एक ही समय में इतनी भारी संख्या में नबियों के भेजे जाने का कोई औचित्य नहीं और न ही इस के पक्ष में कोई दलील मौजूद है। इस का अनुमोदन न कुर्आन से होता है और न हदीस से।

7) इस में हज़रत ईसा की तरफ़ यह मत मंसूब किया गया है कि शैतान जो एक तरह से फ़रिश्तों का काहिन और सरदार था (अध्याय २५) यह बात भी कुर्आन के बयान से हरगिज़ मेल नहीं खाती।

8) इस में हज़रत आदम का यह किस्सा बयान हुआ है कि :-

“जब आदम उठ खड़ा हुआ तो उस ने हवा में एक तहरीर (लिखावट) देखी जो सूरज की तरह चमकती थी कि ख़ुदा एक ही है और मुहम्मद ख़ुदा का रसूल है। इस पर आदम ने अपना मुँह खोला और कहा ऐ ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा मैं तेरा शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हूँ कि तूने मेरी संरचना की योजना बनाई। परन्तु मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे बता इन शब्दों का क्या अर्थ है “मुहम्मद ख़ुदा का रसूल है” क्या मुझ से पहले और मनुष्य भी हुए हैं? तब ख़ुदा ने कहा, मरहबा ऐ मेरे बन्दे आदम मैं तुझे बताता हूँ कि तू पहला इन्सान है जिसे मैं ने पैदा किया और वह जिसे तूने लिखा देखा है तेरा बेटा है जो दुनिया में अब से बहुत साल बाद आएगा और मेरा रसूल होगा जिस के लिए सारी चीज़ें पैदा की हैं..... आदम ने ख़ुदा की मिन्नत की कि ख़ुदावन्द यह तहरीर मेरे हाथों की उंगलियों के नाखुनों पर अंकित कर दे तब ख़ुदा ने पहले इन्सान के अंगूठों पर यह तहरीर अंकित कर दी। यह दाएँ अंगूठे के नाखुन पर लिखा था ख़ुदा एक ही है और बाएँ अंगूठे के नाखुन पर लिखा था मुहम्मद ख़ुदा का रसूल है। तब पहले इन्सान ने (पिदरान: शफ़क़त) बापता भाव के साथ ये शब्द चूमे और अपनी आँखें मलीं और कहा मुबारक हो वह दिन

जब तू दुनिया में आए।” (अध्याय २९ और अध्याय ४१) में बयान हुआ है कि हज़रत आदम ने जन्नत के फाटक पर लिखा हुआ देखा “ख़ुदा एक ही है और मुहम्मद उस का रसूल है।”

ये ऐसी ही बातें हैं जो हमारे यहाँ गढ़ी हुई हदीसों में बयान हुई हैं।

आश्चर्य है मौलाना मौदूदी ने एक ऐसी इन्जील को जो त्रुटिपूर्ण है और जिस में बे सिर पैर की बातें और कलामी बहसें दर्ज हैं प्रमाणिक बताया और उस पर विश्वास करते हुए उन भविष्यवाणियों को उद्धृत किया जो उस में बयान हुई हैं। फ़रमाते हैं :-

“इस बहस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इन्जील बरनाबास वास्तव में चारों इन्जीलों से ज्यादा मोतबर (विश्वस्नीय) इन्जील है, मसीह अलैहिस्सलाम की तालीमात और सीरत की सही तरजुमानी करती है।” (तफ़हीमुल कुर्आन जिल्द ५, पृष्ठ ४७१)

परन्तु किसी ऐसी किताब को जिस में इल्हामी बातें बयान करने का दावा किया गया हो उस के मात्र लुभावने पहलुओं को देख कर प्रभावित हो जाना सही नहीं। इस का प्रभाव हमारे विश्वास और धारणा पर पड़ता है और दूसरे मसले भी पैदा हो जाते हैं।

12. अर्थात् बनी इस्राईल ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पेश किये हुए मोज़ों को जादू बताया यही बात सूरह माइदा में भी बयान हुई है।

وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ
بِآيَاتِنَا فَقَالُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ
هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ. (مائدة: ॥०॥)

अर्थ:- “और जब मैं ने बनी इस्राईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया था जब कि तुम उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आए थे। और जो लोग उन में से काफ़िर थे उन्होंने ने कहा था कि यह तो खुला जादू है।”



ये चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूँको से बुझा दें। परन्तु अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहेगा चाहे काफ़िरोँ को अप्रिय हो। वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि इस को समस्त दीनों (धर्मों) पर ग़ालिब कर दे चाहे बहुदेववादियों को अप्रिय हो। (अल-कुआन)

7. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बाँधे हालाँकि उस को इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो।¹³ अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।¹⁴

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى
الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ④

8. ये चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूँको से बुझा दें। परन्तु अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहेगा चाहे काफ़िरो को अप्रिय हो।¹⁵

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ⑤

9. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दिने हक के साथ भेजा। ताकि इस को समस्त दीनों (धर्मों) पर ग़ालिब कर दे चाहे बहुदेववादियों को अप्रिय हो।¹⁶

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ
كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ⑥

10. ऐ ईमान वालो ! क्या मैं तुम्हें वह तिजारत बताऊँ जो तुम्हें दुखदायिनी यातना से बचाए।¹⁷

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ⑦

11. ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल पर¹⁸ और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से।¹⁹ यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।²⁰

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ
وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑧

12. वह तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा²¹ और तुम को ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और उम्दा मकानों में²² जो अनंत बागों में होंगे,²³ यह है बड़ी सफलता।²⁴

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَمَسْكِنٍ عُظِيمٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑨

13. और दूसरी चीज़ भी जो तुम चाहते हो, अल्लाह की तरफ़ से मदद और अतिशीघ्र प्राप्त होने वाली विजय।²⁵ और (ऐ नबी !) मोमिनों को इस की खुशखबरी दे दो।

وَأُخْرَى يُجِيبُونَهَا نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ⑩

14. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के मददगार बनो।²⁶ जिस तरह ईसा इब्ने मरयम ने हवारियों से कहा था कौन है अल्लाह की राह में मेरे मददगार? हवारियों ने जवाब दिया था, हम हैं अल्लाह के मददगार।²⁷ तो बनी इस्राईल का एक गरोह ईमान लाया और दूसरे गरोह ने कुफ़्र किया।²⁸ तो हम ने ईमान लाने वालों की उन के दुश्मनों के मुकाबले में मदद की और वे ग़ालिब (हावी) हो गए।²⁹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ غَنُّ أَنْصَارُ
اللَّهِ فَا مَنَنْتَ طَائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ
فَايَدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَى عَدُوِّهِمْ فَاصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ⑪

13. अर्थात् कुर्आन का निमंत्रण देने वाले पैगम्बर का आहवान शुद्ध इस्लाम की ओर है किन्तु ये यहूदी आदि अपने झूठे धार्मिक धारणाओं के आधार पर इस का विरोध कर रहे हैं हालाँकि कोई भी धार्मिक धारणा जिस को अल्लाह की ओर से मान्यता एवं प्रमाण न मिला हो अल्लाह पर झूठ बाँधने के समानार्थ है। जैसे यहूदियों का यह दावा कि रसूल बनी इस्राईल ही में से हो सकता है। ईसाईयों का यह दावा कि हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे हैं और बहुदेववादियों का यह दावा कि पूज्य अनेक हैं और इस व्यक्ति (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह ने नबी बना कर नहीं भेजा है। ये और इस प्रकार की अन्य इस्लाम विरोधी बातें जिस को धार्मिक लोग अपनी धार्मिकता और अपनी आस्था समझते हैं और इसी कारण वश वे इस्लाम को स्वीकार नहीं करते अल्लाह से खुला झूठ सम्बन्ध करते हैं चाहे वे इस तरह की बातें अल्लाह का नाम ले कर कहें या न कहें क्यों कि धार्मिक धारणा और धार्मिकता का सम्बन्ध निश्चित रूप से अपने पैदा करने वाले (खुदा) से है तो खुदा के बारे में झूठ बोलना कोई मामूली अपराध नहीं हो सकता बल्कि ये अपराध अत्यधिक संगीन हैं।

14. अर्थात् जब तक वे इस जुल्म (ग़लत रवैये) से बाज़ नहीं आते उन्हें हिदायत (सीधे मार्ग की तौफ़ीक़) नहीं मिल सकती।

15. इस की व्याख्या सूरह तौबा नोट ६४ में गुज़र चुकी।

16. व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट ६५ और सूरह फ़तह नोट ५८

17. इन्सान तिज़ारत इस लिए करता है ताकि लाभ कमाए परन्तु यह लाभ अस्थायी बल्कि क्षणिक होता है जो दुनिया ही तक सीमित रहता है। इस की तुलना में वह सौदा अल्लाह से किया जाता है और जिस में अपनी क़ीमती पूँजी जान और माल लगाया जाता है और जिस के लिए कठिन परिश्रम किये जाते हैं वास्तविक और स्थायी लाभ का सौदा है। इस का पहला लाभ यह है कि सौदा करने वाला अल्लाह की यातना से जो अत्यंत दुखदायिनी होगी, बच जाएगा और उसे सदा सर्वादा की सफलता प्राप्त होगी जो आगे बयान हुई है।

इस अवसर पर सूरह तौबा आयत १११ तथा नोट १९९ भी सामने रहे।

यह आयत मास्तिष्क को इस बात पर केन्द्रित करती है कि मनुष्य के जीवन की मूल समस्या आख़िरत की मुक्ति की समस्या है और वहाँ की मुक्ति का सामान इन्सान को इस दुनिया में करना चाहिए। यह सोच जब तक मनुष्य पर हावी नहीं होगी वह सांसारिक उलझावे में उलझता रहेगा और सफलता व असफलता के लिए ग़लत आदर्शों का निर्धारण करेगा।

18. ईमान वालों को संबोधित कर के ईमान रखने की यह हिदायत इस अर्थ में है कि अपने को सच्चा मोमिन बनाओं और ईमान के तक्राज़ों को पूरा करो।

19. जिहाद ईमान का महत्वपूर्ण तक्राज़ा है। दीन की हिफ़ाज़त और उस की सरबुलंदी के लिए जब भी सर धड़ की बाज़ी लगाने की ज़रूरत पेश आ जाए ईमान वाले जान और माल की कुर्बानी दें और उस समय के हालात में तो जिहाद अनिवार्य हो गया था और मस्जिदे-हराम को वहाँ के बहुदेववादियों के क्रब्जे से मुक्त कराना सब से बड़ा अभियान था अतः यह जिहाद अल्लाह के रसूल के नेतृत्व में किया जा रहा था इस लिए उस का महत्व आसाधारण था।

20. अर्थात् इस का बेहतरीन सिला जो मिलने वाला है उस पर यदि तुम्हारी नज़र है तो तुम उस को अपने लिए बेहतर ही समझोगे।

21. गुनाहों की क्षमा, यह बहुत बड़ा सिला है। यदि किसी एक गुनाह पर भी अल्लाह तआला पकड़ कर ले तो मनुष्य का क्या हाल होगा। परन्तु जो लोग अल्लाह की राह में कुर्बानियाँ देते हैं उन की कुर्बानियों की क़द्र करते हुए अल्लाह तआला उन के उन गुनाहों को क्षमा कर देता है।

22. अर्थात् पाकीज़ा और बेहतरीन मकान जिन के सामने दुनिया के मकान कुछ भी नहीं।

कैसे नादान हैं वे लोग जो अपनी दुनिया बनाने के लिए रोटी कपड़ा और मकान का नारा लगाते हैं। और उस की प्राप्ति के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाते हैं। किन्तु जहाँ हमेशा रहना है वहाँ के लिए उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती कि ये चीज़ें वहाँ किस तरह प्राप्त होंगी। यदि वे इस समस्या पर विचार करते तो दुनिया ही को सब कुछ न समझते।

23. अर्थात् मकान भी अनंत और बाग़ भी अनंत और उस में रहने वालों का जीवन भी अनंत।

24. अर्थात् यह है इस तिज़ारत का असली लाभ कि भविष्य उज्जवल और बेहतरीन नेमतों के साथ अनंत जीवन। कितनी बड़ी और कितनी शानदार है यह सफलता।

25. अर्थात् आख़िरत की इस सफलता के अलावा वह चीज़ भी मिलेगी जो तुम्हें प्रिय है अर्थात् अल्लाह की मदद और अतिशीघ्र प्राप्त होने वाली विजय। अतिशीघ्र विजय से इशारा है मक्का विजय की तरफ़ जिस को शीघ्र ही प्राप्त करने के लिए ईमान वाले बेचैन थे। इस अवसर पर उन मुजाहिदीन को अल्लाह की मदद के ज़ाहिर होने के साथ यह ख़ुशाख़बरी भी सुनाई गई कि मक्का शीघ्र ही विजयी होगा। अतः इस सूरह के अवतरण के बाद बहुत जल्द मक्का विजय हुआ और कुर्आन तथा पैगम्बर की सत्यता सिद्ध हो गई कि इस्लाम के कट्टर विरोधी भी उस

के कायल हो गए।

26. अल्लाह के मददगार बनने से तात्पर्य अल्लाह के दीन के मददगार बनना है। ज़ाहिर है अल्लाह किसी की मदद का मोहताज नहीं है किन्तु वह उन लोगों को जो उस के दीन की मदद करते हैं और विशेष रूप से कठिन हालात और विषम परिस्थितियों में मदद करते हैं, अल्लाह के मददगार अर्थात् अन्सारुल्लाह की उपाधि प्रदान करता है ताकि उन का साहस और मान बढ़ाया जाए और उन में अल्लाह की खातिर काम करने का जज़्बा उभरे।

27. हवारी का अर्थ है निःस्वार्थ और सच्चा मित्र। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि उन की रिसालत (ईश दूत) और दीन की सही दअवत को पेश करना जान जोखिम में डाले बिना संभव नहीं है तो उन्होंने ने अपने साथियों को आवाज़ दी कि कौन है जो इन हालात में मेरी सहायता पर कमर कसता है और अल्लाह के दीन का बेलाग प्रचार व प्रसार के लिए उठ खड़ा होता है। उन्होंने जवाब दिया हम हैं अल्लाह के मददगार और इस अभियान में जी जान की बाज़ी लगाने वाले। यह जवाब ईसा अलैहिस्सलाम के सच्चे साथियों ने दिया था जो हवारी कहलाए। यहाँ इस घटना को बयान करने से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों को आप की हिमायत और सहायता तथा दीन के प्रचार व प्रसार पर उभारना है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को तलवार से जिहाद करने का मौक़ा नहीं मिला था किन्तु जिन हालात से आप को सामना था उन में दीन को अपने असली रूप में प्रस्तुत करना, दिखावा तथा रस्मी दीनदारी के बजाय सच्ची दीनदारी की तरफ़ दअवत देना और अल्लाह के संदेश को फैलाना भी जिहाद से कम न था।

आज के हालात में भी दीन की दअवत और उस के प्रसार का काम बेलाग तरीक़े से और सही ढंग से अंजाम देना, बहुदेववादी वातावरण में एकेश्वरवाद (तौहीद) को निखार कर पेश करना, बिदअतों और खुराफ़ात ने दीन का जो प्रारूप बिगाड़ दिया है उन को खरोच कर निकालना ताकि इस्लाम अपने असली रूप में सामने आए। ग़लत धारणाओं को रद्द करते हुए इस्लामी विचार को उजागर करना, ग़ैर इस्लामी क़ानून की जगह शरीअत के क़ानून का समर्थन और सुरक्षा करना और ऐसी कोशिशें करना जो दीन की सरबुलंदी का कारण हों, अल्लाह के दीन की बहुत बड़ी सहायता और बहुत बड़ा जिहाद है। और अल्लाह तआला का इर्शाद है :-

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. (مَكِّي: ११)

अर्थ :- “जो लोग हमारी राह में जिहाद करेंगे हम उन पर अपनी राह खोल देंगे।” (अन्कबूत ६९)

28. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दअवत और उन के हवारियों द्वारा प्रचार के फलस्वरूप एक ग़रोह हज़रत ईसा की रिसालत पर ईमान ले आया जो मुस्लिम था किन्तु बाद में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायी नसारा (ईसाई) कहलाए। रहा दूसरा ग़रोह तो उस ने हज़रत ईसा को अल्लाह का रसूल और इन्जील को अल्लाह की किताब मानने से इन्कार किया इस लिए वह काफ़िर ठहराया गया। यह यहूदियों का ग़रोह है।

ध्यान रहे कि अल्लाह के किसी भी रसूल और किसी भी किताब को स्वीकार करने से इन्कार के कारण आदमी काफ़िर हो जाता है यद्यपि वह दूसरी बातों पर ईमान रखने का दावा करता हो और किसी ऐसे धर्म से संबद्ध हो जो किसी रसूल से सम्बन्धित किया गया हो।

29. यह आयत पुष्टि करती है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले अंततः विजयी हुए। जहाँ तक हुज्जत (प्रमाण) के ग़लबा का सम्बन्ध है वह तो उन्होंने पहले ही हासिल था। अतः यहाँ जिस विजय का वर्णन हुआ है वह सत्ता विजय हो सकती है और “ज़ाहीरीन” का शब्द कुर्आन में दूसरी जगहों पर सत्ता विजय ही के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। फ़िरऔन के दरबार में मोमिन पुरुष ने कहा था :-

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ يُنْصِرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا. (مُؤْس: २९)

अर्थ :- “ऐ मेरी जाति के लोगो ! आज तुम्हें सत्ता प्राप्त है और तुम इस भू-भाग में ग़ालिब (सत्ताविजयी) हो किन्तु यदि अल्लाह का अज़ाब हम पर आ गया तो कौन है जो हमारी मदद करेगा?”

इस अवसर पर सूरह तौबा नोट ६५ भी सामने रहे।

इस आयत का मूल सार यह स्पष्ट करना है कि जिस तरह अल्लाह के रसूल ईसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान लाने वाले विजयी हो कर रहे उसी प्रकार कुर्आन के पैगम्बर पर ईमान लाने वाले भी विजयी (ग़ालिब) हो कर रहेंगे और इतिहास साक्षी है कि ऐसा ही हुआ।

कुर्आन में यह स्पष्टीकरण भी मौजूद है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा को यह खुशख़बरी दी थी कि :-

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ

كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ. (آل عمران: ५५)

अर्थ :- “जिन लोगों ने तुम्हारा अनुपालन स्वीकार किया उन

को उन लोगों पर जिन्होंने ने कुफ़र (इन्कार) किया, क्रियामत तक ग़ालिब (विजयी) रखने वाला हूँ।” (आले-इमरान ५५)

जहाँ तक इतिहास का सम्बन्ध है उस के पन्ने अधिक स्पष्ट नहीं हैं, फिर भी यह बात साबित है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठा लिए जाने के बाद उन के अनुयायी विरोध के तूफ़ान से गुज़रते हुए यहूदियों पर जिन्होंने ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से इन्कार कर दिया था, ग़ालिब आते चले गए। उन की दअवत फैलती रही और रोम राज्य के बड़े बड़े शहरों में उन के दअवती केन्द्र स्थापित हुए। यहूदियत सिकुड़ती रही यहाँ तक कि सन ७० ई. में (Titus) ने बैतुलमुक़दस पर हमला कर के यहूदियों को तितर बितर कर दिया और फिर यहूदियों का ज़ोर ऐसा टूटा कि वे ईसा के अनुयायियों के आगे बेबस हो कर रह गए। इधर हज़रत ईसा के अनुयायियों की संख्या बढ़ती रही और टायटस रोमी के आक्रमण के बाद रोमियों ने हज़रत मसीह का धर्म स्वीकार करना

शुरू कर दिया और हज़रत ईसा के मानने वालों को प्रभुत्व प्राप्त होता चला गया। इब्ने खुलदून लिखते हैं :-

“फ़िर रोमी मसीह अलैहिस्सलाम के दीन को कुबूल करने और उस की ताज़ीम (आदर सम्मान) करने लगे। फिर रोमी बादशाह का हाल मुख़्तलिफ़ रहा। वे कभी नसारा (ईसाइयों) के दीन को कुबूल करते और कभी छोड़ देते यहाँ तक कि कुस्तुन्तीन आ गया।” (मुक़दमा इब्ने खुलदून पृष्ठ ३६५)

सन ३१२ ई. में जब रोमी शासक कुस्तुन्तीन सत्ता में आया तो वह ईसाइयत का समर्थक बन गया और ईसा के अनुयायियों को ऐसी सत्ता विजय प्राप्त हुई कि आज तक यहूदियों के मुकाबले में ईसाइयत का ग़लबा चला आ रहा है।

ईसाइयत के इतिहास के लिए देखिए

Interpreter's One Volume Commentary
on Bible, Page 1051)



सूरह अल्-ज़ुमुआ

६२. सूरह अल्-जुमुआ

नाम :- आयत ९ में जुमे की नमाज़ का महत्व स्पष्ट किया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-जुमुआ” है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और हिजरत के कुछ समय बाद ही नाज़िल हुई है जैसा कि इस घटना से स्पष्ट है जो अंत में जुमुआ से सम्बन्धित बयान हुआ है।

रही बात अबू हुरैरा की रिवायत की जो बुखारी में बयान हुई है कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में बैठे हुए थे कि ये आयतें नाज़िल हुईं और हज़रत अबू हुरैरा के बारे में ज्ञात है कि वे हुदैबिया संधि के बाद ईमान लाए थे ऐसा मालूम होता है कि उल्लेख कर्ताओं ने शब्द ठीक से याद नहीं रखे। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. ने संभवतः यह फ़रमाया हो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने ये आयतें तिलावत फ़रमाई, किन्तु रावियों (उल्लेखकर्ताओं) ने इस बात को आयतों के नाज़िल होने की बात समझ ली वरना यह मानना मुश्किल है कि जब सहाबा की संख्या अधिक हो गई थी तो उन की मौजूदगी में जुमा की वह घटना घटी जिस की ओर इस सूरह में इशारा किया गया है।

केन्द्रीय विषय :- अल्लाह के उस फ़ज़ल (अनुग्रह) को

महसूस कराना है कि उस ने किस शान का रसूल भेजा है और वह कैसी बेहतरीन शिक्षा दे रहा है। इस की क़द्र पहचानो और उस की शिक्षाओं पर अमल करो तो तुम्हारा जीवन संवर जाएगा और हमेशा की सफलता तुम्हें प्राप्त होगी।

कलाम की तरतीब :- आयत १ भूमिका की आयत है जिस में अल्लाह की तस्बीह के साथ उस के गुण बयान हुए हैं।

आयत २ से ४ में अल्लाह के उस महान अनुग्रह का बयान है कि अनपढ़ लोगों में किस शान का रसूल भेजा गया है।

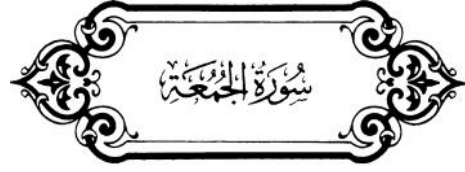
आयत ५ से ८ में यहूदियों की निष्क्रियता, बे-अमली और ग़लत दावों पर पकड़ की गई है।

आयत ९ से ११ में मुसलमानों को जुमे की नमाज़ का आयोजन करने का निमंत्रण दिया गया है। ऊपर यहूदियों के जिस रवैये का वर्णन हुआ उस से इस बात की तरफ़ इशारा करना भी अभिप्रेत है कि उन्होंने ने सब्त (सनीचर) के आदेशों का जिस तरह उल्लंघन किया उस तरह मुसलमान जुमुआ के आदेशों का उल्लंघन न करें।

हदीस :- हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे की नमाज़ में सूरह जुमुआ और सूरह मुनाफ़िकून पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी अबवाबुल जुमुआ)

६२.सूरह अल्-जुमुआ

आयतें : ११



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करती हैं सारी चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, वह बादशाह, कुदूस (पाक) प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।¹

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْقُدُّوسُ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

2. उसी ने उम्मियों (अनपढ़ों)² में एक रसूल उन ही में से उठाया, जो उन को उस की आयतें सुनाता है, उन का तज़कियः (उन को पवित्र) करता है। और उन को किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है।³ इस से पहले ये लोग खुली गुमराही में पड़े हुए थे।⁴

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ②

3. और (इस की नियुक्ति) इन (उम्मियों) में से उन दूसरे लोगों के लिए भी है जो अभी इन से मिले नहीं हैं।⁵ और अल्लाह प्रभुत्वशाली है तत्वदर्शी।

وَالْآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

4. यह अल्लाह का फ़ज़ल (अनुग्रह) है जिस से नवाज़ता है वह, जिसे चाहता है।⁶ और अल्लाह बहुत बड़े फ़ज़ल वाला है।

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ④

5. उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात का भार डाला गया था परन्तु उन्होंने ने उस को नहीं उठाया, उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हो।⁷ बहुत बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया।⁸ अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ كَفَرُوا هُمْ كَمَثَلِ الْإِمَارِ يُحْمَلُ
أَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا آيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑤

6. कहो, ऐ वे लोगो जो यहूदी बन गए हो।⁹ यदि तुम यह समझते हो कि दूसरों को छोड़ कर तुम ही अल्लाह के चहीते हो तो मौत की कामना करो, अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो।¹⁰

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنْكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ
النَّاسِ فَتَمَتُّوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑥

1. इन गुणों की व्याख्या सूरह हश्र में गुजर चुकी। भूमिका की इस आयत में अल्लाह के इन गुणों का वर्णन इस मुनासिबत से हुआ है कि रसूल को भेजने वाली हस्ती का सही परिचय प्राप्त हो जाए और लोग भली भाँति समझ लें कि यह रसूल कायनात के शासक की तरफ से संदेश ले कर आया है अतः इस पर ईमान लाना खुदा के बन्दों के लिए अनिवार्य वाजिब और फ़र्ज है। वह कुदूस है इस लिए उस के सारे फैसले गलतियों से پاک होते हैं। अतः जिस व्यक्ति को उस ने रिसालत के लिए चुन लिया है वह इस पद के लिए उचिततम व्यक्ति है और उस का फैसला बिलकुल सही और तत्वपूर्ण है।

2. उम्मी शब्द की व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट २९, सूरह आराफ़ नोट २२४ और सूरह अनकबूत नोट ९१,

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक्रर: नोट १४९

4. अर्थात् इस रसूल के आने से पहले ये अरबवासी जो उम्मी और अनपढ़ थे और जिन के पास अल्लाह की किताब मौजूद नहीं थी, खुली गुमराही में मुबतिला थे। किन्तु अल्लाह तअला ने उन पर यह एहसान फ़रमाया कि उन्हीं में से एक रसूल उन की हिदायत के लिए उठाया जो इब्राहीमी दुआ और मसीह की भविष्यवाणियों का प्रतीक है और जिस की शान यह है कि अनपढ़ होने के बावजूद अल्लाह की आयतों को जो उस पर नाज़िल हुई हैं पढ़ कर सुनाता है, जिस से दिलों में ईमान का नूर पैदा हो जाता है। इन अनपढ़ों का ऐसा प्रशिक्षण करता है कि उन का जीवन संवर जाता है और उन के अन्दर सद्गुण पैदा हो जाता है। अल्लाह की किताब की ऐसी शिक्षा देता है कि वे उस के भारवाहक बन जाते हैं और तत्वदर्शिता के ऐसे मोती बिखेरता है कि उन के दामन उन को समेटते हुए भर जाते हैं। इस लिए, इस रसूल की रिसालत संदेह व आशंकाओं से परे है और इस की नियुक्ति अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है जिस की नाकद्री बहुत बड़ी महरूमी की बात है।

5. यह उस बात की खुशखबरी है कि रसूल के अनुयायियों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ता चला जाएगा और उस में दूसरे अरब क़बीले भी शामिल हो जाएंगे। कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहते हुए ही अरब के सारे क़बीले मुसलमान हो गए।

ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति यद्यपि अरब के उम्मियों में हुई थी किन्तु जैसा कि कुर्आन पुष्टि करता है, आप की नियुक्ति केवल अरबों के लिए नहीं थी, बल्कि अरब, अजम, उम्मी और अहले किताब सब के लिए है, और किसी एक दौर के लिए नहीं बल्कि क्रियामत तक के लिए है।

6. उम्मी अरब वासियों पर यह अल्लाह की विशेष कृपा

है कि उस ने उन के अन्दर ऐसी शान का रसूल उठाया। इस आयत का इशारा इस बात की तरफ़ भी है कि यहूदियों को यह बात किसी तरह ग़वारा नहीं कि रसूल की नियुक्ति बनी इस्राईल के अलावा किसी और जाति में हो किन्तु रिसालत का पद उन की इच्छाओं तथा मनोकामनाओं पर आश्रित नहीं है। बल्कि वह अल्लाह का फ़ज़ल है, वह जिसे चाहे उसे प्रदान करे, उस पर एतिराज़ का किसी को क्या हक़?

7. सिफ़र (बहुवचन अस्फ़ार) का अर्थ अरबी और इब्रानी दोनों भाषा में “किताब” है। यहूदियों की धार्मिक भाषा इब्रानी है और तौरात के लिए उन के यहाँ अस्फ़ार का शब्द प्रसिद्ध था। इस लिए यहूदियों को अपनी आसमानी किताबों की ओर आकर्षित करने के लिए यह शब्द अधिक उचित हुआ।

यहूदियों की जिहालत और बेअमली को जो तौरात के भार वाहक होने के बावजूद उन के अन्दर पाई जाती थी ग़धे की उपमा दी गई है जिस पर किताबें लदी हुई हैं और वह नहीं जानता कि वह कोई मूल्यवान वस्तु उठाए हुए है। ऐसे ही मूर्ख यहूदी हैं कि तौरात जैसी अल्लाह की किताब की क्रीमत उन्होंने नहीं पहचानी। अगर उस की क़द्र पहचानते तो आज कुर्आन की भी क़द्र करते क्यों कि दोनों का नाज़िल करने वाला अल्लाह ही है।

यहाँ जो मिसाल दी गई है वह बहुत ही सारगर्भित है और उन मुसलमानों पर भी फिट बैठती है जिन को कुर्आन जैसी नेमत मिली है किन्तु उन्होंने ने उसकी क़द्र नहीं पहचानी न उन्होंने ने उस का ज्ञान प्राप्त किया और न उस की हिदायतों पर अमल किया।

8. यहूदियों की इस मूर्खता का असर यह निकला कि वह आज कुर्आन को जो अल्लाह ही की किताब है झुठलाने में लगे हुए हैं।

9. इशारा इस बात की तरफ़ है कि बनी इस्राईल को जो दीन अर्थात् जो जीवन प्रणाली प्रदान हुई थी वह इस्लाम ही था किन्तु बाद में उन्होंने ने उस में काट छाँट कर के अपने को मुस्लिम कहलाने के बजाय यहूदी कहलाना पसंद किया।

10. यहूदियों का दावा था कि वही एक मात्र अल्लाह के महबूब तथा उस की नज़र में प्रिय हैं परन्तु इस दावे की क़लई उस समय खुल गई जब कुर्आन ने उन से कहा कि फिर मौत की कामना करो। क्योंकि जो अल्लाह के प्रिय हैं उन के लिए जन्नत है। और जब तुम्हें अपने जन्नती होने का विश्वास है तो फिर तुम्हें आखिरत का तलबगार (इच्छुक) बनना चाहिए न कि दुनिया का लोभी। परन्तु तुम दुनिया में अधिक से अधिक जीना चाहते हो।

(सूरह बक्रर: आयत ९६) “और बुज़दिली तुम्हारा स्वभाव बन गई है।” तुम्हारा यह रवैया तुम्हारे दावे का खुद ही खण्डन कर रहा है।

7. किन्तु ये कदापि इस की कामना न करेंगे, उन करतूतों के चलते जो वे कर चुके हैं।¹¹ और अल्लाह इन ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।
8. (इन से) कहो जिस मौत से तुम भागते हो वह तो तुम्हें आ कर रहेगी।¹² फिर तुम उस के समक्ष उपस्थित किये जाओगे जो ग़ैब और हाज़िर (परोक्ष और अपरोक्ष) का जानने वाला है। वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो।
9. ऐ ईमान वाले ! जुमे के दिन जब नमाज़ के लिए पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीदना, बेचना छोड़ दो।¹³ यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।¹⁴
10. फिर जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो।¹⁵ और अल्लाह का ज़िक्र अधिकता के साथ करो ताकि तुम सफलता पाओ।¹⁶
11. ये लोग जब तिजारत या लह्व (खेल की) चीज़ देखते हैं तो उस की तरफ़ दौड़ते हैं। और (ऐ नबी !) तुम को खड़ा छोड़ देते हैं।¹⁷ कहो, जो अल्लाह के पास है, वह लह्व और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह बेहतरीन रिज़क़ (रोज़ी) देने वाला है।¹⁸

وَلَا يَمُنُّونَ أَبَدًا ۖ أَمَّا قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٤﴾

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلْقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۚ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا لَّانْفُسُوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ الْكُفْرِ وَفِي الْبَيْعِ وَاللَّهْوِ خَيْرٌ مِنَ الرِّبَا ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

11. अर्थात् उन के जीवन गुनाहों से लत पत हैं इस लिए उन के इस दावे के बावजूद कि वे अल्लाह के प्रिय हैं उन के दिल में यह खटक जरूर है कि हम अपने करतूतों के कारण से कहीं पकड़ न लिये जाएं इस लिए वे आखिरत की तुलना में दुनिया ही को पसंद करते हैं और चाहते हैं कि यहीं वे चैन की बाँसुरी बजाते रहें।

कुर्आन के इस चैलेंज को कि वे मौत की कामना करें यहूदियों ने स्वीकार नहीं किया जिस से उन के दावे का खण्डन भी हो गया और कुर्आन की सत्यता भी स्पष्ट हुई।

12. अर्थात् मौत से बच निकलने की कोई सूरत नहीं लामुहाला इस से तुम्हें दो चार होना है फिर तुम मौत के डर से अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने से क्यों गुरेज करते हो।

13. ऊपर यहूदियों के आचरण पर पकड़ की गई थी अब ईमान वालों को संबोधित कर के उन पर जुमे की नमाज़ का महत्व और उस की अनिवार्यता स्पष्ट की गई है। यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि यहूदियों को सब्त (सनीचर का दिन) मनाने का आदेश दिया गया था किन्तु उन्होंने उस का उल्लंघन किया। अब मुसलमानों को आसान शरीअत दी जा रही है और उन पर जुमे के दिन केवल जुमे की नमाज़ की पाबन्दी है इस रियायत की क़द्र करते हुए वे इस का अनुपालन निष्ठापूर्वक तथा मुस्तैदी से करें और यहूदियों का रवैया न अपनाएं। इस अवसर पर सूरह नहल नोट १८४ भी सामने रहे जिस में सब्त और जुमे से सम्बन्धित हदीसों उद्धृत की गई हैं।

जुमे की नमाज़ की शुरूआत सही रियायत के अनुसार मदीने में उस समय हुई जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ ले गए और कुबा में ठहरने के बाद जब शहर की तरफ़ जा रहे थे तो क़बीला बनी सालिम की आबादी से जुमे के दिन गुजर हुआ और आपने वही जुमे की नमाज़ अदा फ़रमाई। यह पहला जुमुआ था और जहाँ तक इस सूरह का सम्बन्ध है इस के कुछ समय के पश्चात अवतरित हुई जब कि वह घटना घटी जिस का वर्णन आगे हुआ है।

कुर्आन की ये आयतें जुमे की नमाज़ की तक्कीद के तौर पर नाज़िल हुई हैं जिस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले ही क़ायम फ़रमा चुके थे। इस से यह बात ख़ुद ब ख़ुद स्पष्ट होती है कि शरीअत के आदेश केवल वही नहीं हैं जो कुर्आन में बयान हुए हैं बल्कि वे भी हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिए हैं और आप के एहकाम मालूम करने का ज़रिया आप की सुन्नत और अहदीस सहीहा हैं।

जुमआ जुहर का ने'मलबदल है और उस का वक्त ज़वाल आफ़ताब के बाद है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब

सूरज दोपहर बाद ढलने लगता तो मिम्बर पर तशरीफ़ लाते। इस के बाद अज़ान कही जाती और जुमे के लिए यही एक अज़ान आप के समय में दी जाती थी। इस के बाद आप खड़े हो कर ख़ुत्बा देते। ख़ुत्बे दो होते जिन के बीच आप थोड़ी देर के लिए बैठ जाया करते। ख़ुत्बे में उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर के अल्लाह की हम्द और सना और कुर्आन की तिलावत फ़रमाते फिर उस की शिक्षाएँ लोगों के सामने प्रस्तुत करते। फिर आप जुमे की फ़र्ज नमाज़ दो रक्अत जमाअत के साथ अदा फ़रमाते।

जुमे की नमाज़ जमाअत के साथ ही अदा की जा सकती है किन्तु इस के लिए तादाद की कोई शर्त न कुर्आन से सिद्ध है और न हदीस से। इस तरह शहर की भी कोई क़ैद नहीं है। देहातों में भी अदा की जा सकती है। अलबत्ता कोशिश यह होनी चाहिए कि लोग एक ही जगह अधिक से अधिक संख्या में जमा हों। रियायतों में आता है कि मदीना के आस पास के लोग जुमे के लिए मस्जिदे-नबवी में उपस्थित होने की ख़ास तैयारी करते थे।

जुमे की व्यवस्था को बनाना इस्लामी हुक्मत की ज़िम्मेदारी है किन्तु इस का मतलब यह नहीं कि जुमा इस के बग़ैर अदा नहीं किया जा सकता। इस की व्यवस्था न होने पर मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि वे इस की व्यवस्था करें जुमा हर मुसलमान पर फ़र्ज है। अलबत्ता जैसा कि हदीस से स्पष्ट है औरतें मरीज मुसाफ़िर इस से अलग हैं किन्तु यदि इन में से कोई जुमे की नमाज़ में शरीक हो जाएँ तो उन की नमाज़ अदा हो जाएगी और उसे जुहर की नमाज़ अदा करनी नहीं होगी।

जुमा के लिए गुस्ल करने (नहाने) दाँत साफ़ करने, अच्छे कपड़े पहनने और ख़ुशबू लगाने का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया है। यह तैयारियाँ जुमे की शान को ज़ाहिर करने के लिए भी हैं और इस लिए भी कि जुमे में लोग साफ़ सुथरे और अच्छे वातावरण में एकत्र हों तथा उन में पवित्रता का एहसास भी पैदा हो।

इस आयत में आदेश दिया गया है कि जब जुमे की नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो कारोबार छोड़ कर नमाज़ के लिए दौड़ें। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक ही अज़ान दी जाती थी इस लिए इस से तात्पर्य वह अज़ान है जो इमाम के मिम्बर पर बैठ जाने के बाद दी जाती है। इस अज़ान के शुरू होने से नमाज़ की समाप्ति तक कारोबार तथा कारोबारी लेने देन करना मना है। और मनाही के इस आदेश में सभी प्रकार के कारोबार और व्यस्तता शामिल है। यह और बात है कि कोई ऐसी मजबूरी सामने आ जाए जो शरीअत की निगाह में रियायत का कारण (उज़्र) हो जैसे किसी दुर्घटना का शिकार हो जाना, डाक्टर के लिए मरीज का अप्रेशन यदि उसे टाला न जा सकता हो आदि। मुसलमानों की यह ज़िम्मेदारी भी है कि

वे अपने कर्मचारियों आदि को नमाज़ के लिए छुट्टी दें और यदि इस्लामी हुकूमत नहीं है तो उस से इस की छुट्टी की माँग करें। कुछ भी हो हर सूरत में मुसलमान कर्मचारियों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे जुमे की नमाज़ ज़रूर अदा करें।

आयत में ज़िक्र से तात्पर्य नमाज़ भी है और खुत्बा भी जो जुमे की नमाज़ से पहले दिया जाता है। इस से खुत्बे की हकीकत स्पष्ट हो जाती है कि वह अल्लाह का ज़िक्र और इबादत है। इस के साथ इस वास्तविकता का ध्यान रखना भी अति आवश्यक है कि खुत्बा उपस्थित जनों से सम्बोधन है इस लिए उन से सम्बोधन करते समय वे बातें सामने लाई जानी चाहिए जो अल्लाह की याद ताज़ा करने वाली हों और अपने अन्दर नसीहत और उपदेश का पहलू रखती हों। और जब यह सम्बोधन है तो इस का उद्देश्य उसी सूरत में पूरा हो सकता है जब कि खुत्बा अरबी के साथ साथ उपस्थित जनों की भाषा में भी दिया जाए।

“فَاسْعُوا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ” अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो” का मतलब है नमाज़ के लिए मुस्तैदी दिखाओ और उस की तरफ़ लपको। हदीस में किसी भी नमाज़ के लिए सुकून और वक्रार के साथ आने की हिदायत की गई है।

14. अर्थात् कारोबार छोड़ कर जाना यूँ तो घाटे की बात समझ में आती है परन्तु भलाई और बरकत इसी में है और हमेशा हमेशा की सफलता अल्लाह के अनुपालन तथा उस की इबादत ही के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

15. अर्थात् नमाज़ ख़त्म हो जाने पर कारोबार तथा कारोबारी लेन देन की पाबन्दी ख़त्म हो जाती है इस के बाद तुम अपनी कमाई से सम्बन्धित व्यस्तताओं में लग सकते हो और तुम्हारी यह व्यस्तता अल्लाह के फ़ज़ल की तलाश में होना चाहिए जिस से शुक्र की भावना (कृतज्ञ भाव) उभरती है।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि जुमे के आदेश सब्त (सनीचर के दिन) के आदेश की भाँति सख़्त नहीं हैं कि कारोबारी व्यस्तता पूरे दिन के लिए मना है बल्कि केवल उतने समय के लिए इस की मनाही कर दी गई है जो खुत्बा सुनने और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने के लिए ज़रूरी है। इस छूट और आसानी के बाद भी अगर मुसलमान जुमे की पाबन्दी को अपने लिए बोझ समझें तो यह बड़ा ही निरादर होगा।

16. अर्थात् यह न समझो कि अल्लाह को मस्जिद में याद कर लिया और नमाज़ अदा की तो काफ़ी हो गया। अल्लाह को हर समय याद रखना ज़रूरी है। इस लिए ज़बान से उस का ज़िक्र, तस्बीह और हम्द के कालिमे अर्थात् प्रशंसा एवं गुणगान के शब्द अधिकता के साथ अदा करना चाहिए। चलते फिरते

और बाज़ार में लेने देने की व्यस्तता के दौरान भी। इस से तुम्हें अनंत सफलता प्राप्त होगी।

17. यह उस घटना की ओर इशारा है जो इस सूरह के उतरने के समय घटी थी। जुमे के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा दे रहे थे कि शाम (सीरिया) से एक काफ़िला ग़ल्ला ले कर मदीने के बाज़ार में आया और ढोल बजाने लगा। ग़ल्ले की चूँकि उस समय बहुत तंगी थी इस लिए जो लोग खुत्बा सुन रहे थे उन की एक संख्या यह समझ कर ग़ल्ला ख़रीदने के लिए चली गई कि वे इस के बाद नमाज़ में शरीक हो जाएंगे। उस समय तक जुमे के खुत्बे का महत्व लोगों पर पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका था फिर भी जुमे का खुत्बा छोड़ कर जाना ग़लत था और इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बन्धित बेअदबी का पहलू भी था इस लिए इस ग़लती पर कड़ी तंबीह की गई। यह घटना बुख़ारी किताबुल जुमुआ और अन्य हदीस की किताबों में मौजूद है।

ध्यान रहे कि यह घटना इस समय घटी जब कि जुमे का सिलसिला अभी अभी शुरू हुआ था और इस का महत्व लोगों पर पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका था। बाद में कभी ऐसी स्थिति न बनी और प्रशिक्षण के चरणों से गुज़रने के बाद सहाबा किराम की शान वह थी जो कुर्आन में इन शब्दों में बयान हुई है।

رَجُلًا لَا تُلْهِهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ - (नूर: ३८)

अर्थ :- “ऐसे लोग जिन्हें तिजारात और ख़रीद फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती।” (नूर - ३७)

आयत में ढोल को लह्व कहा गया है इस से गाने बजाने और उस के उपकरणों की ख़राबी स्पष्ट हो जाती है। लह्व का अर्थ ग़ाफ़िल कर देने वाली चीज़ है और शरअन वह तमाम चीज़ें जो अल्लाह से ग़ाफ़िल कर देने वाली हैं लह्व हैं। गाना बजाना, संगीत के उपकरण और शंतरज, ताश, और कैरम आदि खेल लह्व की परिभाषा में आते हैं। यह चीज़ें आदमी को अपनी ओर इस तरह आकर्षित करती हैं कि आदमी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है।

अर्थात् जुमे का फ़र्ज़ अदा करने की ज़िम्मेदारी को अगर तुम अपने धन उपार्जन की व्यस्तताओं पर सर्वोपरि रखो तो तुम्हारी यह कुर्बानी व्यर्थ जाने वाली नहीं बल्कि इस का बेहतरीन इनाम अल्लाह तआला के यहाँ मिलेगा। रही बात सांसारिक कमाई की तो तुम्हें अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए कि वास्तविक अन्न दाता और रोज़ी देने वाला वही है और उस के अनुपालन की सूरत में भी वह तुम को अच्छी रोज़ी देगा। और बेहतरीन रोज़ी वह है जो मात्रा में चाहे कम हो किन्तु भलाई और बरकत वाली हो।

६३. सूरह अल्-मुनाफ़िक़ून

नाम :- सूरह की शुरूआत मुनाफ़िक़ून (पाखण्डियों) के झूठे इकरार से हुई है और आगे उन की इस्लाम दुश्मनी को भी उजागर किया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्मुनाफ़िक़ून” है।

नाज़िल होने का समय :- मदीनी है और रिवायतों से मालूम होता है कि यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, बनी अलमुस्तलक़ के युद्ध (सन ६ हिजरी) से निपट कर मदीना वापस तशरीफ़ लाए थे।

केन्द्रीय विषय :- मुनाफ़िक़त (पाखण्ड) के परदे को उठाना, मूल रोग को बताना और उस का क्या इलाज है वह

उजागर करना ।

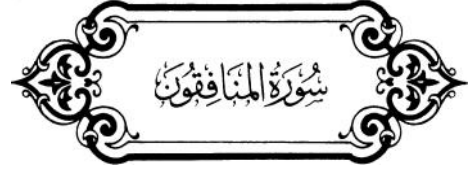
कलाम की तरतीब :- आयत १ से ८ तक मुनाफ़िक़ों अर्थात् पाखण्डियों के उस ख़वैये का बयान है जो उन्होंने ने इस्लाम दुश्मनी में अपना रखा था और जिस के चलते वे अक्षम्य पाप के अपराधी ठहरे।

आयत ९ से ११ में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह के ज़िक्र और उस की राह में ख़र्च करने की ताक़ीद की गई है जिस से मुनाफ़िक़त (पाखण्ड एवं विश्वासघात) के भयावह रोग की निशानदेही होती है और इस रोग को दूर करने की तदबीरें भी स्पष्ट हो जाती हैं।

६२. सूरह अल्-मुनाफ़िकून

आयतें : ११

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते हैं और कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह जानता है कि निस्संदेह तुम उस के रसूल हो। परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ बिलकुल झूठे हैं।¹

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا إِنشَهِدْ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ①

2. इन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है² और ये अल्लाह की राह से रुक गए हैं।³ बहुत बुरा है जो ये कर रहे हैं।

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ②

3. यह इस लिए हुआ कि ये ईमान लाए फिर इन्होंने कुफ़्र किया तो इन के दिलों पर मुहर लगा दी गई, अब ये कुछ नहीं समझते।⁴

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ③

4. इन्हें जब तुम देखो तो इन के शरीर तुम्हें अच्छे लगें, और जब वे बात करें तो तुम उन की बातें सुनने लगो, परन्तु वे जैसे कि लकड़ी के कुन्दे हैं जिन्हें टेक लगा दी गई हो।⁵ वे हर चौंका देने वाली आवाज़ को अपने ही ऊपर खिंचाए करते हैं।⁶ ये असली दुश्मन हैं। इन से बचकर रहो⁷ अल्लाह इन को ग़ारत करे।⁸ ये किधर बहकाए जा रहे हैं।⁹

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمِعُ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ
خُشْبٌ مُّسْنَدَةٌ يَحْسِبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوّ فَاحْذَرْهُمْ
قَاتِلْهُمْ اللَّهُ أَلَى يَوْمَانِ ④

5. और जब इन से कहा जाता है कि आओ अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की दुआ करे तो वे अपने सर मटकाते हैं और तुम देखते हो कि वे गर्व के साथ कतरा कर निकल जाते हैं।¹⁰

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّارُوا وَهُمْ
وَرَأَيْتَهُمْ يَصْطَدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ⑤

6. इन के लिए समान है चाहे तुम इन के लिए क्षमा की दुआ करो या न करो। अल्लाह इन को हरगिज़ क्षमा करने वाला नहीं।¹¹ अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को हिदायत नहीं देता।¹²

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑥

1. मुनाफ़िक़ ज़बान से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल मानने का इक्रार करते थे किन्तु दिल से नहीं मानते थे। और ईमान के लिए मात्र ज़बान से कह देना काफ़ी नहीं बल्कि इस के साथ दिल का अनुमोदन भी आवश्यक है। अगर आदमी कलिमा पढ़ने वाला है किन्तु उस का दिल ईमान से ख़ाली है तो ऐसा ईमान अल्लाह के यहाँ मान्य नहीं। वह मुसलमान नहीं बल्कि मुनाफ़िक़ है क्योंकि वह बाहर से कुछ और है और अन्दर से कुछ और इसी लिए वह अपनी इस गवाही में झूठा है हालाँकि जो बात वह कह रहा है अर्थात् यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रसूल हैं, वह अपनी जगह एक सच्ची बात है।

मदीना में जिन अन्दरुनी दुश्मनों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वास्ता था वे वही मुनाफ़िक़ थे जो क़बीला ख़ज़रज आदि से सम्बन्ध रखते थे और यहूदियों से उन का दोस्ताना था। उन की शह पर ये मुसलमानों में एक न एक विवाद खड़ा कर देते थे। इस लिए कुर्आन ने उन पर कई सूरतों में पकड़ की और इस सूरह में तो ख़ास उन ही के विषय पर बात छेड़ी है ताकि इस्लामी सोसाइटी में ऐसे तत्व पनपने ही न पाएँ।

2. यहाँ शहादत (गवाही) को क़सम कहा गया है जिस से स्पष्ट होता है कि यमीन (क़सम) गवाही के समानार्थ है, और कुर्आन में आसमान, ज़मीन और हवाओं आदि की जो क़समें खाई गई हैं वह शहादत (गवाही) के ही अर्थ में हैं अर्थात् ये चीज़ें हिसाब किताब के दिन पर साक्ष्य हैं और उन पर तर्क प्रस्तुत करती हैं।

मुनाफ़िक़ अपने बचाव के लिए बात बात पर झूठी क़समें खा कर अपने सच्चे होने का विश्वास दिलाते थे इस तरह उन्होंने क़समों को अपने बचाव के लिए ढाल बना लिया था।

3. अल्लाह की राह से रूकने का अर्थ अल्लाह के दिन अर्थात् इस्लाम से रूक जाना है। झूठी क़समों का सहारा लेने का परिणाम यह हुआ कि वे लीपापोती ही करते रहे और इस्लाम की तरफ़ बढ़ न सके। उस की राह उन पर बन्द हो गई।

4. अर्थात् इस्लाम में दाख़िल होने के बाद वे काफ़िर बने रहे। उन के इस निरादर का परिणाम यह निकला कि उन में सत्य स्वीकारने की योग्यता बाक़ी ही नहीं रही और मानसिकता ऐसी ग़लत हो गई कि सीधी बात भी उन की समझ में नहीं आ रही है।

5. अर्थात् इन मुनाफ़िक़ों का हाल यह है कि वे बड़े बड़े डील डोल वाले और भारी भारी शब्दों को अदा करने

वाले हैं। तन तन कर ऐसी बातें करते हैं कि आदमी सुनता ही रह जाए। किन्तु अन्दर से वे बिलकुल खोखले हैं और इस तरह नाकारा हैं जिस तरह लकड़ी के वे कुन्दे जो दीवार के सहारे रख दिए गए हों। मतलब यह है कि ये लोग बुद्धि से बिलकुल खाली हैं और नबी की मजलिस में आ कर कोई लाभ नहीं उठा पाते बल्कि दिवार से टेक लगा कर इस तरह बैठते हैं जैसा दीवार से लगे हुए लकड़ी के कुन्दे जिन में समझ बूझ नहीं होती।

6. यह उन की बुज़दिली का चित्रण है कि जब कभी ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी या सचेत करने वाली बात सामने आई तो उन्होंने ने उस को अपने ख़िलाफ़ समझा। यह उन के दिल का चोर है जो उन्हें बेचैनी में डाल देता है।

7. अर्थात् ये मुनाफ़िक़ वास्तव में इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन हैं इस लिए इन से उसी तरह सावधान रहना चाहिए जिस तरह आदमी दुश्मन से सावधान रहता है।

यह न समझा जाए कि इस्लाम के ये दुश्मन उस ज़माने ही में मौजूद थे। नहीं बल्कि इस ज़माने में भी अधिकता के साथ मौजूद हैं और वे मुस्लिम सोसाइटी में रहते हुए इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध एक न एक फ़ितना (विवाद) उठाते रहते हैं। इन की चालों से चौकन्ना रहना बहुत ज़रूरी है।

8. यह अल्लाह की तरफ़ से उन पर फिटकार है।

9. इशारा है इस बात की तरफ़ की उन की लगाम शैतान के हाथ में है और वह बुरी तरह उन को भटका रहा है।

10. अर्थात् कहाँ उन के ईमान का दावा और कहाँ उन की ये हरकत कि जब उन को इस बात की ओर ध्यान दिलाया जाता है कि जो करतूत तुम कर चुके हो उस के लिए तुम रसूल की सेवा में उपस्थित हो कर क्षमा चाहो ताकि अल्लाह का रसूल तुम्हारी क्षमा के लिए अल्लाह से प्रार्थना करे, तो ये सर मटकाने लगते हैं जैसे कि इस का कोई महत्व ही नहीं है और उन का घमण्ड उन को इस तरह झुकने से रोकता है।

11. मुनाफ़िक़ चूँकि मूल रूप से काफ़िर हैं इस लिए उन के बारे में अल्लाह का फैसला यह है कि वह उन को हरगिज़ क्षमा नहीं करेगा चाहे अल्लाह का रसूल उन के लिए क्षमा की दुआ करे। एक सूरत, उन की क्षमा की यह हो सकती थी कि वे तौबा (प्रयाश्चित) कर के अपना सुधार कर लेते किन्तु चूँकि वे अपने निफ़ाक़ (पाखंड) में कट्टर हैं जिस के कारण उन के दिलों पर मुहर लग गई है इस लिए उन्हें तौबा की भी तौफ़ीक़ नसीब होने वाली नहीं।

कुर्आन से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि गुनाहों को क्षमा करना अल्लाह ही का काम है और किसी भी नबी को इस का अधिकार नहीं है किन्तु ईसाईयों की यह धारणा कि हज़रत ईसा अपने अनुयायियों के पापों को धो देंगे अर्थात् बख़्श देंगे सरासर ग़लत है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट १४७

12. हिदायत उन्हीं को मिलती है जो अल्लाह के आगे झुकने और उस का अनुपालन (आज्ञापालन) स्वीकार करने के लिए तैयार हों किन्तु जिन का घमंड उन्हें इस से रोकता हो और वे अवज्ञाकारी ही बन कर रहना चाहते हों उन पर अल्लाह हिदायत की राह नहीं खोलता।



यही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम रसूल के साथियों पर खर्च न करो ताकि वे तितर बितर हो जाएं । हालाँकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ानों का मालिक अल्लाह ही है, परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं हैं। कहते हैं कि हम मदीना वापस पहुँच गए तो जो इज़्ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को वहाँ से निकाल बाहर करेगा हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के लिए है। किन्तु ये मुनाफ़िक़ नहीं जानते। ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद, तुम्हें अल्लाह से ग़ाफ़िल न कर दे। जो लोग ऐसा करेंगे वही घाटे में रहने वाले हैं। (अल-कुआन)

7. यही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम रसूल के साथियों पर खर्च न करो ताकि वे तितर बितर हो जाएँ।¹³ हालाँकि आसमानों और ज़मीन के खज़ानों का मालिक अल्लाह ही है, परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं हैं।¹⁴

هُم الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ④

8. कहते हैं कि हम मदीना वापस पहुँच गए तो जो इज़ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को वहाँ से निकाल बाहर करेगा।¹⁵ हालाँकि इज़ज़त अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के लिए है। किन्तु ये मुनाफ़िक़ नहीं जानते।¹⁶

يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ⑤

9. ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद, तुम्हें अल्लाह से ग़ाफ़िल न कर दे।¹⁷ जो लोग ऐसा करेंगे वही घाटे में रहने वाले हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑥

10. और जो रिज़्क (रोज़ी) हम ने तुम्हें दिया है उस में से खर्च करो।¹⁸ इस से पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए और वह कहे कि ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मोहलत और क्यों न दी कि मैं सदाक़ा करता और नेक बन जाता।¹⁹

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنُ مِنَ الصَّالِحِينَ ⑦

11. अल्लाह हरगिज़ किसी नफ़्स (प्राणी) को मोहलत देने वाला नहीं जब कि उस का निर्धारित समय आ जाए।²⁰ और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से अवगत है।

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑧

13. मदीना के अन्सार ने मक्का के मुहाजिरीन को अपने यहाँ जगह दी थी और उन पर निःसंकोच खर्च कर रहे थे। मुहाजिरीन की यह मदद रसूल के अनुयायियों की मदद थी किन्तु यह बात मुनाफ़िकों को जो अन्सार ही में से थे बिल्कुल पसंद न थी और वे चाहते थे कि वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से छट जाएँ इस लिए वे उन की सहायता और उन के काम आने से मना करते थे।

14. अर्थात् रोज़ी किसी के हाथ में नहीं बल्कि अल्लाह के हाथ में है जो आसमानों और ज़मीन के खज़ानों का मालिक है। वह अगर मुहाजिरीन की मदद करना चाहता है तो उस के लिए एक न एक साधन पैदा कर देगा। ये मुनाफ़िक लोग अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ किसी की रोज़ी रोक नहीं सकते। मगर इतनी मोटी बात भी इन की समझ में नहीं आती। और जब वे लकड़ी के कुन्दे ही ठहरे तो उन की समझ में क्या बात आ सकती है।

15. यह बात मुनाफ़िकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैई ने कही थी जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों के साथ बनी मुस्तलक़ (सन ६ हिजरी) से वापस लौट रहे थे। इस मौक़े पर एक मुहाजिर और एक अन्सारी के बीच पानी के मसला को ले कर झगड़ा हुआ। अब्दुल्लाह बिन उबैई को इस की खबर हुई तो उस ने इस में अन्सार की बेइज़्जती समझी और चिढ़ कर कहा तुम इन मुहाजिरों की मदद करना बन्द कर दो ताकि ये तितर बितर हो जाएँ, तथा यह भी कहा, मदीना पहुँचने पर जो इज़्जत वाला है वह ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा। उस की नज़र में मुहाजिरीन ज़लील थे और उस ने एक ऐसी बात ज़बान से निकाली जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी थी। यह बात एक नवयुवक सहाबी ज़ैद बिन अरक़म ने सुन ली और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आ कर बयान कर दी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन उबैई से पूछा तो उस ने इन्कार किया कि मैं ने ऐसी बात नहीं कही। जब आप मदीना पहुँच गए तो यह सूरह नाज़िल हुई। आप ने ज़ैद बिन अरक़म को बुलाकर फ़रमाया, अल्लाह ने तुम को सच्चा सिद्ध किया। (बुख़ारी किताबुतप्पसीर)

अब्दुल्लाह बिन उबैई की इस गुस्ताख़ाना और फ़सादी हरकत पर हज़रत उमर उन्हें क़त्ल कर देना चाहते थे। लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की अनुमति नहीं दी। आप इस से और अन्य मुनाफ़िकों से बराबर दर गुज़र करते रहे क्योंकि मुसलमान अभी अपने बाह्य शत्रुओं बहुदेववादियों और यहूदियों से मुकाबला कर रहे थे और यह बात नीतिपूर्ण नहीं थी कि अन्दरूनी शत्रुओं से भी लड़ाई छेड़ दी जाए। किन्तु तबूक की जंग के बाद जब कि पूरे अरब पर इस्लाम का प्रभुत्व

जम गया तो मुनाफ़िकों (विश्वासघातियों) के साथ कठोर कार्रवाई करने का आदेश हुआ। सूरह तौबा में है :-

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَأَغْلَظْ عَلَيْهِمْ. (توبة: ८३)

अर्थ:- “ऐ नबी काफ़िरों और मुनाफ़िकों से ज़िहाद करो और उन के साथ सख़्ती बरतो।”

किन्तु उस ज़मानों में अब्दुल्लाह बिन उबैई का देहांत हो चुका था। दूसरे मुनाफ़िक लोग जो अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आए थे उन के साथ सख़्त रवैया अपनाया गया। यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुनिया से उठ जाने के बाद जब हज़रत अबू बक्र ख़लीफ़ा हुए और इन मुनाफ़िकों ने सर उठाया और ज़कात देने से इन्कार किया और कितने तो खुल्लम खुल्ला मुर्तद (काफ़िर) हो गए तो ख़लीफ़ा-ए-राशिद ने उन के खिलाफ़ तलवार उठाई और उन का जोर तोड़ दिया। इस तरह उन मुनाफ़िकीन को मुसलमानों के हाथों अपमान का मज़ा चखना पड़ा। यह भी अल्लाह की तरफ़ से सज़ा थी जो दुनिया में उन्हें मिली।

16. अर्थात् ये मुनाफ़िक झूठी इज़्जत को सब कुछ समझ बैठे हैं हालाँकि सच्ची इज़्जत अल्लाह ही के लिए है कि वह महान, प्रभुत्वशाली और सर्वोच्च हस्ती है। उस के बाद इज़्जत उस के लिए है जिसे वह प्रतिष्ठा एवं श्रेष्ठता प्रदान करे। रसूल रिसालत के पद पर नियुक्त होता है इस लिए वह निस्संदेह प्रतिष्ठित है और ईमान वाले चूँकि अल्लाह के वफ़ादार बन्दे होते हैं इस लिए उन के लिए भी अल्लाह की तरफ़ से इज़्जत और श्रेष्ठता है।

17. मौक़े की मुनासिबत से आम मुसलमानों को सम्बोधित कर के नसीहत की गई है कि वे माल और औलाद के मोह में फँस कर अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न हो जाएँ। इस से इस बात का पता चलता है कि मुनाफ़िकों को जिस चीज़ ने ग़लत राह पर डाल दिया है वह यही माल और औलाद की मुहब्बत है। कमाई कज़ाई की ऐसी व्यस्तता तथा संतानों को सांसारिक लाभ पहुँचाने और उन के सांसारिक भविष्य को उज्जवल बनाने में ऐसे डूब जाना कि आदमी अल्लाह की याद और उस के ज़िक्र से बिल्कुल बेपरवाह हो जाए, न नमाज़ से दिलचस्पी और न शरीअत की ज़िम्मेदारियों का ख़ियाल और न आख़िरत की परवाह तो मनुष्य सांसारिक मामलों में उलझकर रह जाता है। और उस पर सौभाग्य और सफलता का मार्ग नहीं खुलता।

18. अल्लाह की राह में खर्च करने से बशर्ते कि यह खर्च सच्चे दिल से हो, अल्लाह की मुहब्बत बढ़ती है और आदमी

धन का पुजारी अथवा लक्ष्मी भक्त नहीं बनता।

मुनाफ़िकों के हाल पर टिप्पणी करने के बाद ईमान वालों को सदका और इन्फ़ाक़ की हिदायत उस महत्वपूर्ण नीति की निशानदेही है जो दिल के रोगों को दूर करती और ईमान को परवान चढ़ाती है।

19. यह चित्रण है मौत के समय का कि जब मौत सामने आ खड़ी होती है तो आदमी महसूस करने लगता है कि जिस माल को मैं ने संभालकर रखा यहाँ तक कि अपनी शरअी ज़िम्मेदारियों को भी अदा न कर सका वह माल अब मेरे क्या काम आने वाला है। इस एहसास के चलते वह कामना करने लगता है कि ऐ मेरे ख़ काश तूने मुझे कुछ और भी मोहलत दी होती ताकि मैं सदका करता और नेक बन जाता। मतलब यह कि मौत को निकट महसूस करते ही दुनिया की निर्मूलता और धन का लाभहीन होना तेज़ी से महसूस होने लगता है। और सदका करने तथा अल्लाह की राह में खर्च करने का एहसास उभरता है। परन्तु मौत के समय इस एहसास के उभरने का क्या लाभ। इस लिए यह आयत सचेत करती है कि मौत की घड़ी के आने से पहले ही आदमी अपने धन से सम्बन्धित ज़िम्मेदारियों को जो शरीअत ने लागू की हैं अदा करे और दिल खोल कर

अल्लाह की खातिर खर्च करे साथ ही अपने को नेकी की राह पर डाल दे।

“सदका” उर्दू के सीमित भावार्थ में नहीं है जो किसी फ़कीर को दिया जाता है। बल्कि कुर्आन के विस्तृत भावार्थ में है, अर्थात् हर वह खर्च सदका है जो अल्लाह की सामीप्यता और उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाए। यह भावार्थ ज़कात पर भी लागू होता है और अन्य वाजिब व ग़ैर वाजिब सदकों पर भी तथा अल्लाह के कलमे को बुलन्द करने के लिए खर्च करने पर भी।

आयत से यह इशारा भी मिलता है कि सदका और इन्फ़ाक़ से नेकी की तरफ़ रुझान बढ़ता है और आदमी के लिए नेक बनना आसान होता है। इस लिए इस नुस्खे का इस्तेमाल कर के आदमी अपने को नेक बना ले। वरना एक बिगड़े मुसलमान की मौत भी हसरत की मौत होती है।

20. अर्थात् अच्छी तरह समझ लो कि मौत के समय पछताना बेकार होगा। जो मोहलत जिस व्यक्ति को दी गई है उस की उस मोहलत में हरगिज़ वृद्धि होने वाली नहीं है। अतः मौत आने से पहले ही वह सामान कर लो जो मौत के बाद काम आए।



६४. सूरह अत्-तगाबुन

नाम :- आयत ९ में “यौमुत्तगाबुन” (अर्थात् वह दिन जिस का इन्कार करने वाले ज़बरदस्त नुकसान से दोचार होंगे) का जिक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तगाबुन है।

नाज़िल होने का समय :- मज़मून से अंदाज़ा होता है कि मदीना के आरंभिक दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस बात का विश्वास पैदा करना है कि आखिरत की सफलता वास्तविक सफलता है इस लिए इस को निगाह में रखते हुए अपना ख़ैया दुरुस्त कर लेना चाहिए। जो लोग इस को नज़रंदाज़ करेंगे वे सख्त घाटे से दोचार होने वाले हैं।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में अल्लाह का परिचय प्रदान किया गया है और स्पष्ट किया गया है कि कायनात की संरचना सत्य के उद्देश्य के लिए हुई है।

आयत ५ से ७ में रिसालत और आखिरत का इन्कार करने वालों को इस के परिणाम से सावधान किया गया है।

आयत ८ से १० में ईमान लाने का न्योता दिया गया है

और घाटे के दिन से आगाह किया गया है।

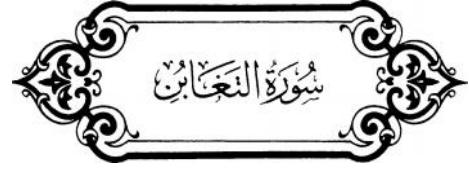
इस घाटे से ईमान वाले पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे और उन्हें ज़बरदस्त कामयाबी हासिल होगी। किन्तु इन्कार करने वालों और झुठलाने वालों को जहन्नम की कभी न ख़त्म होने वाली यातना भुगतनी होगी।

आयत ११ से १३ में समझाया गया है कि दुनिया की मुसीबतों के डर से अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन से मुँह मोड़ना अपने ही पक्ष में ग़लत फैसला करना है जिस के परिणाम अत्यंत विनाशकारी होंगे।

आयत १४ से १८ में ईमान वालों को मौक़े की मुनासिबत से कुछ हिदायतें दी गई हैं। एक यह कि वे अपनी पत्नियों और अपनी संतानों की ओर से चौकन्ना रहें कि वे उन को ग़लत राह पर तो नहीं डाल रहे हैं। दूसरे यह कि संपत्ति और संतान आजमाइश हैं अतः इन की चाह में ऐसे गिरफ़तार न हों कि आखिरत से ग़ाफ़िल हो जाएँ। तीसरे यह कि अल्लाह का तक्रवा अपनाएँ जितना कि बस में है। और चौथे यह कि दिल की तंगी से बचें और अल्लाह की राह में ख़र्च करें।

६४. सूरह अत्-तगाबुन

आयतें : १८



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करती हैं वे सारी चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। उसी की बादशाही है और उस के लिए हम्द (प्रशंसा) है और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।¹

يَسْبِيحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

2. वही है जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम में से कोई काफ़िर है और कोई मोमिन।² तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।³

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

3. उस ने आसमानों और ज़मीन को सत्य के साथ पैदा किया है ⁴ और तुम्हारी सूरतगरी की तो अच्छी सूरतें बनाई ⁵ और उसी की तरफ़ लौटना होगा।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ③

4. वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और तुम जो कुछ छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो उसे वह जानता है। और अल्लाह सीने में छिपी बातों को भी जानता है।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلَنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ④

5. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इस से पहले कुफ़्र किया, तो उन्होंने ने अपने कर्मों का वबाल चख लिया और उन के लिए दुखदायिनी यातना है।⁶

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَنَفَاثُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

6. यह इस लिए कि उन के पास उन के रसूल स्पष्ट निशानियों के साथ आते रहे किन्तु उन्होंने ने कहा ! क्या इन्सान हमारी रहनुमाई करेंगे ?⁷ इस तरह उन्होंने ने कुफ़्र किया और मुँह मोड़ लिया (अतः) अल्लाह भी उन से बेपरवाह हो गया।⁸ और अल्लाह बेनियाज़ और प्रशंसा योग्य है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَى اللَّهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَمِيدٌ ⑥

1. यह सूरह की भूमिका की आयत है जिस में अल्लाह का परिचय प्रदान किया गया है। अल्लाह पर ईमान और उस का अनुपालन उस के जाने समझे बगैर संभव नहीं इस लिए कुर्आन ईमान लाने, और अनुपालन करने का केवल आदेश ही नहीं देता बल्कि उस के साथ ज्ञान का प्रकाश भी प्रदान करता है ताकि दिल और दिमाग उस के लिए पूरी तरह आमादा हों।

जब यह वास्तविकता उभर कर इन्सान के सामने आ जाती है कि कुल कायनात अल्लाह की प्रशंसा और पाकी बयान करने में तल्लीन हैं तो वह वास्तविकता उस के दिल को स्पर्श करती है और वह भी कुल कायनात के संग अल्लाह की प्रशंसा तथा उस की पाकी बयान करने में सक्रिय हो जाता है और यह बहुत बड़ी इबादत है।

2. अर्थात् जब यह एक अटल सच्चाई है कि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है तो तुम्हें उस पर ईमान लाना चाहिए परन्तु स्थिति यह है कि तुम में से कोई मोमिन है तो कोई काफिर।

3. वह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है इस लिए वह कर्मानुसार इनाम या दण्ड देगा।

4. अर्थात् सत्य के उद्देश्य के लिए पैदा किया है और वह है न्याय और इन्साफ़ तथा ईनाम और दण्ड का मामला जो पूर्ण रूप से क्रियामत के दिन प्रकट होगा।

5. व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट ९१

6. इशारा है विनष्ट की गई जातियों की तरफ़, जैसे नूह की जाति, आद, और समूद आदि।

इन जातियों को इन के कुफ़्र की सज़ा दुनिया में भी मिली और आख़िरत में तो इन्हें दुखदायिनी यातना भुगतनी होगी।

7. रसूलों को अल्लाह तआला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए भेजा था। परन्तु चूँकि ये रसूल इन्सान थे इस लिए अहंकारी लोगों ने अपना अपमान समझा कि वह इन्सान को रसूल और अपना रहनुमा (मार्ग दर्शक) स्वीकार कर लें। उन के नज़दीक हिदायत और रहनुमाई के लिए ज़रूरी था कि अल्लाह फ़रिश्तों को रसूल बना कर भेजता। एक तरफ़ तो उन्हें इन्सान होने के कारण रसूल को रहनुमा स्वीकार करने से इन्कार था और दूसरी ओर उन का हाल यह था कि वे गुमराह लोगों को अपना रहनुमा बनाए हुए थे और ईट व पत्थर को उन्होंने अपना ख़ुदा बना लिया था। इन खुली मुख़ताओं पर न उन्हें शर्म आती थी और न उन्हें वे अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते थे। और जो अक़्ल का अन्धा हो वह हिदायत क्या पा सकता है।

8. अर्थात् जब उन्होंने ने हिदायत की तरफ़ से मुँह मोड़ लिया तो अल्लाह को भी उन की हिदायत की परवाह न रही क्योंकि कि अल्लाह हिदायत उसी को देता है जो उस को स्वीकार करने के लिए आमादा हो।



7. जिन लोगों ने कुफ्र किया वे दावा करते हैं कि हरगिज़ उठाए नहीं जाएंगे, कहो, क्यों नहीं ! मेरे रब की क्रसम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे ।⁹ फिर तुम्हें बताया जाएगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो । और यह काम अल्लाह के लिए बहुत आसान है ।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑨

8. तो ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस के नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है।¹⁰ जो कुछ तुम करते हो उस से अल्लाह अवगत है।

فَأْمُرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْتَّوْرَ الَّذِي أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑩

9. जिस दिन अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करेगा (सब को) इकट्ठा करने के दिन ।¹¹ वह घाटे के ज़ाहिर होने का दिन होगा।¹² जो ईमान लाए होंगे और नेक अमल करते रहे होंगे उन के गुनाहों को वह दूर करेगा और उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वे वहाँ हमेशा रहेंगे, यही बड़ी सफलता है।¹³

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑪

10. और जिन लोगों ने कुफ्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा वे दोज़खी होंगे हमेशा उस में रहने वाले और वह बहुत बुरा ठिकाना है ।¹⁴

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑫

11. कोई मुसीबत नहीं आती, मगर अल्लाह के इज़्ज (अनुज्ञा) से¹⁵ और जो अल्लाह पर ईमान रखता है वह उस के दिल की रहनुमाई करता है।¹⁶ और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑬

12. अल्लाह का अनुपालन करो और रसूल का अनुपालन करो, अगर तुम मुँह फेरते हो तो हमारे रसूल पर केवल साफ़ साफ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَنَّا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ⑭

13. अल्लाह वह है जिस के सिवाय कोई इलाह (पूज्य) नहीं और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑮

9. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हिदायत कि अपने ख की क्रसम खा कर यह एलान करे कि लोगों को जरूर दोबारा ज़िन्दा कर के उठाया जाएगा, इस बात की दृढ़ता तथा उस की वास्तविकता को प्रकट करने के लिए है। अर्थात् मैं अपने ख को गवाह कर के कहता हूँ कि तुम्हारा दोबारा उठाया जाना बिलकुल हो कर रहना है। इस में रत्ती भर संदेह की गुन्जाइश नहीं।

10. नूर से तात्पर्य कुआन है जो ज्ञान की रौशनी है। इस आयत में अल्लाह, उस के रसूल और कुआन पर ईमान लाने की सीधी दअवत दी गई है। यह दअवत वास्तव में समस्त मनुष्यों के लिए है।

11. अर्थात् क्रियामत का दिन सारे अगले और पिछले लोगों को एकत्र करने का दिन होगा और उस दिन वह तुम सब को एकत्र करेगा। मतलब यह कि उस सम्मेलन के दिन पूरी धरती पर इन्सानों का ठाठें मारता समुद्र होगा। कोई न होगा जो मरने के बाद ज़िन्दा न हुआ हो।

12. असल में शब्द तगाबुन इस्तेमाल हुआ है जो ग़ब्र से अतिशयोक्ति का शब्द है और जिस का अर्थ क्रय विक्रय में घाटे और नुकसान के हैं। लिसानुल अरब में है :-

وَالْعَبْنُ فِي الْبَيْعِ وَالشَّرَاءِ الْوَكْسُ (ج ३ ص ३१०)

अर्थ :- “क्रय विक्रय में ग़ब्र अर्थात् घाटा ” (जिल्द १३, पृष्ठ ३१०)

दुनिया में मनुष्य अपने जीवन की जो पूँजी लगाता है उसे कुआन तिजारत कहता है। काफ़िर अपने जीवन नामी पूँजी को अपनी दुनिया बनाने तथा गुमराही ख़रीदने में खर्च करता है इस लिए वह घाटे का सौदा करता है। और यह घाटा क्रियामत के दिन खुल कर सामने आएगा। और उस समय उसे एहसास होगा कि उस ने बिलकुल ग़लत काम में अपनी जीवन पूँजी लगाई थी और उस का फल आज क्रियामत के दिन यह है कि वह घाटे और विनाश से दोचार है।

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهَدَىٰ فَمَا

رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ. (لقرة: ११)

अर्थ :- “यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी, तो उन की तिजारत उन के लिए कुछ भी लाभदायक सिद्ध न हुई और न वे हिदायत पाने वाले बने।” (बक्रर:- १६)

क्रियामत का दिन काफ़िरों के लिए तगाबुन अर्थात् घाटे से दोचार होने का दिन होगा। यह उसी तरह है जिस तरह सूरह क्रमर में फ़रमाया है।

يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ -

अर्थ:- “काफ़िर कहेंगे यह बड़ा सख्त दिन है।”

13. अर्थात् जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक, और अल्लाह से डरते हुए जीवन बिताया था वे क्रियामत के दिन हर तरह के घाटे और नुकसान से सुरक्षित होंगे और उन्हें ज़बरदस्त सफलता प्राप्त होगी अर्थात् जन्नत क्योंकि उन्होंने अपनी जीवन पूँजी उस काम में लगाई थी जो आख़िरत में लाभ पहुँचाने वाला था।

14. जिस घाटे से काफ़िर क्रियामत के दिन दोचार होंगे यह उस की व्याख्या है।

15. इस की व्याख्या सूरह हदीद नोट ४७ में गुज़र चुकी।

यहाँ यह बात इस मुनासिबत से इरशाद हुई है कि बहुत सी मुसीबतों को देख कर एक मुसलामान अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन छोड़ न दे। मुसीबतें अल्लाह की अनुज्ञा से आती हैं और उन में ईमान वालों का इम्तिहान होता है और इस इम्तिहान में वे उसी समय पूरे उतर सकते हैं जब कि वे अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन का सबूत दें।

16. अर्थात् जो व्यक्ति अल्लाह पर पक्का ईमान रखता है अल्लाह तआला मुसीबतों के अंबार में उस के दिल को हिदायत की रौशनी प्रदान करता है और उस की ऐसी रहनुमाई करता है कि अल्लाह के बारे में उस के दिल में बदगुमानी पैदा नहीं हो पाती और न वह शिकवा करने लगता है। अल्लाह उस की भावनाओं को सही दिशा में मोड़ता है जिस से ईमानी भाव उत्पन्न होता है और उसे अल्लाह की मर्जी और मंशा पर राज़ी रहने की तौफ़िक़ प्रदान करता है।



14. ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतानों में से कुछ तुम्हारे दुश्मन हैं। तो उन से होशियार रहो ।¹⁷ और अगर तुम माफ़ करो, दरगुजर से काम लो और क्षमा कर दो तो अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है ।¹⁸

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश हैं।¹⁹ और अल्लाह ही है जिस के पास बड़ा बदला है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ﴿١٩﴾

16. अतः जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो ।²⁰ और सुनो और अनुपालन करो ²¹और खर्च करो अपनी भलाई के लिए ।²² जो अपने दिल की तंगी से बचा लिए गए वही सफल होने वाले हैं।²³

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٠﴾

17. अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो ²⁴ तो वह तुम्हारे लिए उसे कई गुना कर देगा और तुम्हें क्षमा करेगा। और अल्लाह बड़ा ही गुणग्राहक और सहनशील है।²⁵

إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢١﴾

18. ग़ायब और हाज़िर (परोक्ष व अपरोक्ष) सब का जानने वाला और प्रभुत्वशाली तथा तत्वदर्शी है।

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٢﴾

17. यहाँ दुश्मन का शब्द इस अर्थ में इस्तेमाल हुआ है कि कुछ पत्नियाँ और संतान मुसलमान होने के बावजूद अपनी जिहालत, नासमझी और अवज्ञा आदि के कारणवश अधिक से अधिक धन कमाने और कमाई की दृष्टि से जीवन स्तर को बुलन्द करने पर इस तरह उकसाती हैं कि आदमी दुनिया ही का हो कर रह जाता है और दीन के तक्राजों को पूरा नहीं कर पाता। इसी तरह दीन जब कुर्बानी चाहे तो वे हौसले को बढ़ाने के बजाए पस्त कर देते हैं और ऐसा भी होता है कि मात्र अपनी दुनिया बनाने के लिए शरीअत के विरुद्ध काम करने पर हट कर लगते हैं। ऐसे ही मौक्रे के लिए अल्लाह तआला ने ईमान वालों को हिदायत दी है कि वे उन से होशियार रहें और उन की बातों तथा उन के सुझावों को शरीअत की रौशनी में देखें। बिन सोचे समझे उन की बातें हरगिज न मानें। यह सावधानी पत्नियों और औलाद के बारे में ज़रूरी है।

ध्यान रहे कि आयत में यह नहीं फ़रमाया गया है कि हर व्यक्ति की औलाद और पत्नी ऐसी होती है बल्कि फ़रमाया गया है कि “कुछ ऐसी होती है” इस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो जाती है कि कितने ही लोगों की पत्नियाँ और कितने ही लोगों की सन्तानें नेक होती हैं। ऐसी पत्नियाँ अपने पतियों के दीनी कामों में सहायक बन जाती हैं और अच्छी जीवन संगिनी सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार नेक औलाद अपने बाप के लिए दीन के तक्राजों को पूरा करने में सहायक बनती है और अपने माँ बाप की आँखों की टंडक बन जाती है।

18. अर्थात् चौकन्ना रहने का मतलब यह नहीं है कि अपनी पत्नियों और अपनी सन्तानों के ग़लत रवैये पर सख्ती करने वाले बनो या बदले की भावना से उन के खिलाफ़ कार्रवाई करने लगे। नहीं बल्कि तुम्हारा रवैया क्षमा करने, दरगुजर से काम लेने तथा नज़रंदाज कर देने का होना चाहिए। यहाँ एक नहीं तीन तीन शब्द इस्तेमाल किये गए हैं ताकि क्षमा देन और दरगुजर करने की बात अच्छी तरह अपने पूरे रूप में स्पष्ट हो जाए। माफ़ करो का मतलब यह है कि उन पर सख्त पकड़ न करो। दर गुजर से काम लो का मतलब यह है कि उन की ग़लत बातों का कोई असर कुबूल न करो और क्षमा कर दो का मतलब यह है कि दिल से उन्हें क्षमा कर दो। यह विशाल हृदयता तुम्हें अल्लाह की नज़र में प्रिय बनाएगी और वह भी तुम्हें क्षमा कर देगा और तुम को अपनी रहमतों से अलंकृत करेगा और असंभव नहीं कि तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी सन्तानें भी अपने सुधार की ओर ध्यान देने लेंगीं।

19. आजमाइश इस बात की कि सम्पत्ति और सन्तान के मोह में फँस कर तुम अल्लाह के आदेश को किनारे डाल देते हो या उस की मुहब्बत के सर्वोपरि रखते हुए उस के अनुपालन में जीवन गुज़ारते हो। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह मुनाफ़िक़ून नोट १७

20. सम्पत्ति और सन्तान की कशीश तक्रवा अपनाने वालों के लिए क्रदम क्रदम पर रुकावट का कारण बनती है। किन्तु यदि एक मोमिन अपनी सामर्थ्य भर तक्रवा (ईश-भय का मार्ग) अपनाए तो अल्लाह सख्त पकड़ नहीं करेगा और ग़लतियों से दरगुजर फ़रमाएगा यह इशार्द अल्लाह से डर कर जीवन गुज़ारने वालों (मुत्तक्रियों) के लिए उम्मीद की किरण है। कुर्आन में दुसरी जगह फ़रमाया गया है :-

إِتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ۔ (آل عمران: १०२)

अर्थ :- “अल्लाह का तक्रवा (ईश-भय) अपनाओ जैसा कि तक्रवा अपनाने का हक़ है।” (आले इमरान १०२) और यहाँ फ़रमाया गया।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ۔

अर्थ :- “जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का तक्रवा अपनाओ।”

मालूम हुआ कि एक व्यक्ति जिस हद तक उस के बस में है अल्लाह का तक्रवा अपनाता है तो वह तक्रवा का हक़ अदा कर देता है। उस से उतना ही मुतालबा किया गया है और कोई ऐसी ज़िम्मेदारी उस पर नहीं डाली गई है जो उस के बस में न हो।

यह इशार्द कि :-

“जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का तक्रवा अपनाओ” बहुत बड़ा रहनुमा उसूल है जिस से हर प्रकार के प्रतिकूल हालात और पेचीदा मसलों में रोशनी हासिल की जा सकती है। और मौजूदा माहौल में जब कि हर तरफ़ से बुराईयों की यलगाार है और ग़लत जीवन प्रणालियों तथा ग़लत व्यवस्थाओं ने शरीअत पर चलना दूभर कर दिया है इस रहनुमा उसूल की रौशनी में एक मुसलमान तक्रवा की राह तय कर सकता है।

21. मजबूरियाँ अपनी जगह पर किन्तु एक मुसलमान का आम रवैया अल्लाह के आदेशों को दिल से सुनने और उन का अनुपालन करने ही का होना चाहिए।

22. अल्लाह के लिए खर्च करने से माल की मुहब्बत घट जाती है और अल्लाह की मुहब्बत बढ़ जाती है।

23. इस की व्याख्या सूरह हश्र नोट २३ में गुज़र चुकी।

24. तात्पर्य अल्लाह की राह में विशेष रूप से जिहाद के लिए खर्च करना है।

25. अल्लाह क़द्रदान अर्थात् गुणग्राहक है। वह अपने बन्दों के हर नेक अमल की क़द्र करता है और वह हलीम (सहनशील) है इस लिए ग़लतियों पर फ़ौरन सज़ा नहीं देता बल्कि सुधार का मौका देता है।



६५. सूरह अत्-तलाक़

नाम :- इस सूरह में तलाक़ के अहकाम बयान हुए हैं इस मुनासिबत से इस का नाम “अत-तलाक़” है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और संभवता : सन ६ हिजरी में नाज़िल हुई होगी।

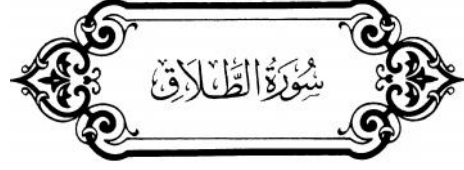
केन्द्रीय विषय :- तलाक़ के अहकाम बयान करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ७ में तलाक़ के अहकाम बयान किए गए हैं।

आयत ८ से १२ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि वे अल्लाह के आदेशों के प्रति विद्रोह का रवैया न अपनाएं और याद रखें कि अवज्ञा और उल्लंघन का रवैया अपनाने वाली जातियों का क्या हश्र हुआ। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक विधान (Family Laws) की पाबन्दी के लिए यह सख्त ताकीदी हुक्म है।

६५. सूरह अत्-तलाक़

आयतें : १२



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ नबी ! जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उन की इहत के लिए तलाक़ दो।¹ और इहत की गणना करो।² और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है।³ उन को उन के घरों से न निकालो और न वे खुद निकलें यह और बात है कि वे खुली बदकारी की अपराधी हों।⁴ यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं। और जो अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ेगा वह अपने आप पर जुल्म करेगा।⁵ तुम नहीं जानते, शायद अल्लाह इस के बाद कोई और सूरत पैदा कर दे।⁶

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيَّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

2. फिर जब वे अपनी मुहत को पहुँच जाएँ तो उन्हें या तो भले तरीके पर (अपने निकाह में) रोक लो या भले तरीके पर जुदा कर दो।⁷ और अपने में से दो न्याय करने वाले आदमियों को गवाह बना लो।⁸ और गवाही अल्लाह के लिए क़ायम रखो।⁹ यह नसीहत उन को की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं।¹⁰ जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह उस के लिए राह निकाल देगा।¹¹

وَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ②

3. और उस को वहाँ से रिज़क़ (रोज़ी) देगा जहाँ से उस को गुमान भी न होगा।¹² जो अल्लाह पर भरोसा करेगा तो वह उस के लिए काफ़ी होगा।¹³ अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अन्दाज़ा (समय) मुक़र्रर कर रखा है।¹⁴

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بِالْعَمَلِ أَمْرًا ③

1. आरम्भ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित किया गया है और इस के तुरंत बाद ईमान वालों को सम्बोधित कर के कहा गया है कि जब तुम लोग तलाक़ दो तो इदत के लिए दो। सम्बोधन की यह शैली इस बात की ओर संकेत करती है कि यह आदेश ऐसा ताकीदी है कि नबी स्वयं भी इस से अलग नहीं, और आप के माध्यम से यह आदेश पूरी उम्मत को दिया जा रहा है। जब तलाक़ देने का यह आदेश कि इदत के लिए तलाक़ दो इस ताकीद के साथ दिया गया है, तो इस से विमुखता बरतते हुए तलाक़ देने के किसी दूसरे तरीके को अपनाने का प्रश्न पैदा ही नहीं होता।

طَلَّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ

अर्थ :- “इदत के लिए तलाक़ दो”

का मतलब यह है कि तलाक़ ऐसे समय में दो जब कि इदत की शुरुआत कर सको। यह मंशा इसी सूरत में पूरा हो सकता है जब कि आदमी एक समय में एक तलाक़ दे ताकि उस तलाक़ की इदत की शुरुआत हो और जब वह इदत पूरी हो जाए तो वह औरत मर्द से जुदा हो जाएगी किन्तु दोबारा निकाह का अवसर बाक़ी रहेगा। और अगर इदत के दौरान पति ने रुजू कर लिया तो फिर उस के लिए यह मौक़ा रहेगा कि आगे कभी ज़रूरत महसूस करे तो दूसरी तलाक़ दे और इस की इदत के दौरान भी उसे रुजू (पुनः स्वीकार कर लेने) का अधिकार रहेगा। अगर वह रुजू कर लेता है तो पत्नी उस के निकाह में रहेगी। इस के बाद यदि उस ने आगे किसी अवसर पर तीसरी तलाक़ दी तो औरत को इदत गुज़ारना होगी किन्तु पति को अब रुजू का अधिकार बाक़ी नहीं रहेगा और यह तलाक़े-मुगल्लज़ा (Absolute) हो जाएगी।

तलाक़ का यही तरीक़ा है जिस की किताब और सुन्नत में शिक्षा दी गई है और जिस की ताकीद की गई है। रहा एक ही समय में तीन तलाक़ें दे देने का मसला तो यह तरीक़ा सरासर किताब और सुन्नत के विरुद्ध और गुमराहकुन है। ऐसी सूरत में एक ही तलाक़ वाक़े (घटित) होती है न कि तीन। क्यों कि शरीअत ने इदत के लिए तलाक़ देने का अधिकार दिया है अतः पहली तलाक़ की शुरुआत तो इदत से होगी किन्तु दूसरी और तीसरी तलाक़ की शुरुआत इदत से नहीं हो सकेगी जब कि हर तलाक़ के लिए अलग से इदत की शुरुआत होना ज़रूरी है। अतः एक से अधिक तलाक़ें बेकार और ग़लत क्रार पायेंगी क्यों कि ऐसी तलाक़ें देने का शरीअत ने उसे अधिकार ही नहीं दिया है और ग़ौर कीजिए तो हर तलाक़ के लिए इदत की क़ैद में शरीअत की बहुत बड़ी मसलहत भी है और वह यह है कि पति को पुनः विचार करने का अवसर मिले और उसे रुजू के दो

अवसर प्राप्त हों।

सारांश यह कि यह आयत इस बारे में बिलकुल स्पष्ट है कि हर तलाक़ के लिए इदत की शुरुआत होना ज़रूरी है। जिस तलाक़ के लिए इदत की शुरुआत न होती हो यह तलाक़ शरीअत की दृष्टि में मान्य नहीं है। रही बात इस की कि तीन पाकी में तीन तलाक़ें देने की बात तो वह न कुआन से साबित हैं और न किसी बड़ी हदीस से। अल्लमा इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं।

واما من اخذ بمقتضى القرآن ومادلت عليه الاثارفانه

يقول ان الطلاق الذى شرعه الله هو ما يتعقبه العدة :

وما كان صاحبه مخيرا فيها بين الامساك بمعروف

واليسريح باحسان : وهذا منتف في ايقاع الثلاث في

العدة قبل الرجعة ، فلا يكون جائز لم يكن ذلك

طلاق للعدة. (مجموع فتاوى ابن تيمية ج ٣ ص ٤٩)

अर्थ :- “कुआन जिस बात का तकाज़ा करता है और आसार (हदीस) जिस पर तर्क प्रस्तुत करते हैं उस को जिन लोगों ने सामने रखा है वे कहते हैं कि जिस तलाक़ को अल्लाह ने संवैधानिक (शरीअत का हुक़्म) कहा है वह वही तलाक़ है जिस के साथ इदत की शुरुआत होती है। और तलाक़ देने वाला मारुफ़ (सामान्य प्रचलन) के अनुसार पत्नी को रख लेने या भलाई के साथ छोड़ देने का अधिकार रखता हो और इस से इदत में रुजू करने से पहले तीन तलाकों के वाक़े हो जाने का खण्डन होता है इस लिए यह जायज़ नहीं और ऐसी तलाक़ इदत के लिए नहीं होगी।” (मज़मूआ फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द ३३, पृष्ठ ७९)

मुसनाद अहमद के टीकाकार अहमद मुहम्मद शाकिर ने अपनी किताब “निज़ामुततलाक़ फ़िल इस्लाम” में स्पष्ट लिखा है कि :-

ولذلك أوردت الأدلة التي ذكرتها والتي نقلتها عن

غيري في معرض احتجاج على بطلان الطلقتين

التاليتين للطلقة الاولى في العدة. وعلى ان الطلاق

لا يلحق الطلاق وعلى ان المعتدة لا يلحقها طلاق -

(نظام الطلاق في الاسلام لاحمد شاکر مطبوعه النهضة بمصر - ص ١١٣)

अर्थ :- “इस लिए मैं ने अपने तर्क भी बयान किए और दूसरों से भी उद्धृत किए इस बात की सिद्धि में कि पहली तलाक़ के बाद दो तलाक़ें ग़लत हैं और यह कि एक तलाक़ से दूसरी

तलाक़ लाहक़ नहीं होती और यह कि इदत गुज़ारने वाली औरत को कोई (दूसरी) तलाक़ लाहक़ नहीं होती।” (निज़ामुत्तलाक़ फिल इस्लाम-अहमद शाकिर, अन्नहज़ा- मिस्र पृष्ठ ११३)

मतलब यह है कि एक तलाक़ के साथ जो इदत शुरू हुई उस में कोई दूसरी तलाक़ पड़ नहीं सकती क्योंकि हर तलाक़ के लिए एक इदत का होना ज़रूरी है।

मौलाना मुहम्मद रईस नदवी अपनी शोध पुस्तक तन्वीरुलआफ़ाक़ फी मसलतुत्तलाक़ (जामिआ सलफ़िया बनारस से प्रकाशित) में लिखते हैं।

“अर्थात् जब तलाक़ के लिए तुहर (पाकी) का वक्त़ खास है और उस खास वक्त़ में एक मरतबा सिर्फ़ एक ही तलाक़ की इजाज़त है तो अगर उस खास वक्त़ में एक से ज़्यादा तलाक़ें दी जाएं तो ज़ायद तलाक़ें बातिल और सिर्फ़ वही एक तलाक़ वाक़े होगी जिस की शरअन इजाज़त है।” (पृष्ठ ३१५)

आयत का जो भावार्थ हम ने बयान किया है उलमा की इन राय से उस का अनुमोदन होता है और स्पष्ट होता है कि आयत का हम ने कोई निराला भावार्थ बयान नहीं किया है बल्कि हम से पहले शोध करने वाले आलिम यह भावार्थ बयान करते रहे हैं अर्थात् हर तलाक़ के लिए अलग इदत ज़रूरी है और एक इदत में दूसरी और तीसरी तलाक़ नहीं दी जा सकती अतः इकट्ठी तीन तलाक़ें शरीअत के अनुसार एक तलाक़ के हुक्म में हैं क्योंकि इस से केवल एक ही तलाक़ हुई। दूसरी और तीसरी तलाक़ सिरे से हुई ही नहीं परन्तु अधिकांश (जम्हूर) उलमा और फ़ुक्हा तीन इकट्ठी तलाक़ों के वाक़े होने के क़ायल हैं। वे इस को हराम और बिदअती मानते हुए भी क्रियान्वित मानते हैं, परन्तु जम्हूर दीन में हुज्जत नहीं हैं। हुज्जत केवल किताब और सुन्नत के स्पष्ट आदेश हैं। इस्लाम में जम्हूर से भी मतभेद का अधिकार है।

فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ

وَالرَّسُولِ - (नساء: ५९)

अर्थ :- “फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में विभेद हो जाए तो उसे अल्लाह (अर्थात् उस की किताब) और रसूल (अर्थात् उस की सुन्नत) की तरफ़ लौटाओ। (निसा - ५९)

और जम्हूर के मत को इज्मा अर्थात् पूर्ण सहमति बताना सरासर ग़लत और सत्य के विरुद्ध बात है।

मौजूदा ज़माने में और खास तौर से भारत के मुसलमानों में एक साथ तीन तलाक़े देने का प्रचलन बहुत बढ़ा हुआ है। जन सामान्य यह समझते हैं कि तीन तलाक़ें दिए बग़ैर तलाक़ होती ही नहीं। यह उन की जिहालत है। किन्तु वकील और क़ाज़ी भी जब कोई तलाक़ नामा लिखते हैं तो तीन तलाक़ें दर्ज कर के

तलाक़ देने वाले के उस पर दस्तख़त ले लेते हैं और उस को नहीं मालूम की तलाक़ देने का सही तरीक़ा क्या है तथा ग़लत तरीक़ा क्या ? फिर जब गुस्सा ठंडा हो जाता है और वह व्यक्ति रूजू करना चाहता है तो मुफ़्ती हज़रात जो तक्रलीद की क़सम खा बैठे हैं बताते हैं कि अब रूजू की कोई सूरत नहीं रही सिवाय हलाला कराने के। हालाँकि हलाला करने पर लानत आई है। इस तरह जन सामान्य तलाक़ के बारे में सख़्त उलझन और मुश्किलों से दो चार हो रहे हैं। इस से मुक्ति की सूरत यही है कि किताब और सुन्नत के स्पष्ट आदेश के अनुसार उन की रहनुमाई की जाए। तथा वे मसलक की जकड़बन्दियों से आज़ाद हो कर इस रहनुमाई को स्वीकार करें।

(इस मसले पर विस्तृत जानकारी के लिए देखिए हमारा पम्पफ़लेट “इकट्ठी तीन तलाक़ें किताब और सुन्नत की रौशनी में”)

आयत से यह बात भी स्पष्ट है कि तलाक़ तुहर (पाकी) की हालत ही में दी जा सकती है अर्थात् जब कि पत्नी को मासिक धर्म न आया हो और पाकी की हालत में पति ने सहवास न किया हो। क्योंकि मासिक धर्म की स्थिति में तलाक़ देने से इदत की गणना सही नहीं हो सकेगी और सहवास की सूरत में संदेह होगा कि गर्भ तो नहीं ठहर गया है। हदीस में आता है कि:-

“हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. ने अपनी पत्नी को माहवारी की हालत में तलाक़ दी। हज़रत उमर ने इस के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो आपने फ़रमाया उन से कहो कि अपनी पत्नी को वापस ले ले। और इसी हाल में रहने दें यहाँ तक कि जब वह पाक हो जाए और फिर दूसरी माहवारी आए और फिर वह पाक हो जाए तो चाहें तो पत्नी की हैसियत से रोक ले और चाहें तो सहवास से पहले तलाक़ दे दें। यही वह इदत है जिस का आदेश अल्लाह ने औरतों की तलाक़ के बारे में दिया है।” (मुस्लिम किताबुत्तलाक़)

मालूम हुआ कि शरीअत ने पुरुष को यह अधिकार नहीं दिया है कि औरत को अपवित्रता की हालत में तलाक़ दे। अतः यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को अपवित्रता की हालत में तलाक़ देता है तो यह तलाक़ वाक़े नहीं होगी क्योंकि यह शरीअत के विरुद्ध और ग़लत है।

2. इदत की गणना करने की ताक़ीद की गई है। क्योंकि इदत समाप्त होने से पहले स्त्री दूसरे पुरुष से विवाह नहीं कर सकती। यदि करेगी तो वह विवाह नहीं होगा। तलाक़ पाई हुई औरत की इदत आम तौर से तीन मासिक धर्म है जैसा कि सूरह बक्रर: में इर्शाद हुआ है :-

وَالْمُطَلَّاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ. (बक्रर: २२८)

अर्थ :- “और जिन औरतों को तलाक़ दे दी गई हो वे तीन

माहवारी तक अपने आप को रोके रखें।” (बकर: २२८)

इस का मतलब यह है कि जिस पाकी में औरत को तलाक़ दी गई हो उस के बाद पहली माहवारी आ जाए, फिर पाकी के बाद दूसरी माहवारी आ जाए, और फिर पाकी के बाद तीसरी माहवारी आ जाए। और तीसरी माहवारी जिस दिन समाप्त हो उस दिन औरत की इद्दत समाप्त होगी और फिर वह दूसरे पुरुष से विवाह करने के लिए आज़ाद होगी।

जिन औरतों को मासिक धर्म न आता हो या जो गर्भवती हो उन की इद्दत इस से जरा भिन्न है। आगे आयत ४ में यह अहकाम बयान हुए हैं।

3. तलाक़ के मामले में अल्लाह से डरने की विशेष रूप से हिदायत की गई है क्यों कि पहली बात तो यह कि तलाक़ दीन में अत्यंत नापसंदीदा चीज़ है। दूसरी यह कि जब तलाक़ देना आवश्यक हो जाए तो इस तरीक़े पर तलाक़ देना चाहिए जो शरीअत ने निर्धारित किया है। गुस्से की हालत में इस तरह तलाक़ देना कि सारे शरीअत के आदेशों का उल्लंघन हो जाए तक्रवा के सरासर विरुद्ध है। और जो व्यक्ति अपने मामलों में अल्लाह से नहीं डरता बल्कि अपनी इच्छाओं तथा भावनाओं से वशीभूत हो कर चलता है वह अपने को बुरे अन्जाम की तरफ़ ढकेलता है।

4. पुरुष की ज़िम्मेदारी है कि पत्नी को तलाक़ देने के बाद इद्दत तक अपने घर में रखे और औरत की भी यह ज़िम्मेदारी है कि इद्दत पति के घर में गुजारे। गुस्से में आ कर मैके न चली जाए घर से बाहर न निकलने का मतलब यह नहीं है कि अपनी ज़रूरत के लिए वह बाहर नहीं जा सकती बल्कि मतलब यह है कि पति का घर छोड़ कर वह किसी और जगह न चली जाए।

“यह और बात है कि वे खुली बदकारी की अपराधी हो” से तात्पर्य व्यभिचार के अपराध में लिप्त होना है। ऐसी सूरत में पति को अधिकार है कि वह इद्दत के दौरान भी अपनी पत्नी को अपने घर से निकाल दे।

“*فاحشة مبینة* ” से जिन लोगों ने बदकलामी वा अपशब्द आदि तात्पर्य लिये हैं उन के मतों से सहमति नहीं की जा सकती। और इस बहाने से तो पति औरत को जब चाहेगा निकाल बाहर करेगा। कुआन में यह शब्द तो व्यभिचार ही के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

5. अर्थात् तलाक़ किसी अति आवश्यकता के बग़ैर देना, तलाक़ देने में इद्दत का ख़ियाल न रखना एक साथ कई तलाक़ों दे डालना, इद्दत की गणना न करना अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं को तोड़ने के समानार्थ है और ऐसी हरकतें बिल्कुल अन्यायपूर्ण हैं। और जो अन्यायी व अत्याचारी हरकतें करता है वह अपने को अल्लाह की सज़ा का भागीदार बनाता है।

इस का उलटा अर्थ कुछ टीकाकारों ने लिया है। वे कहते हैं कि तीन इकट्ठी तलाक़ों वाक़े हो जाती हैं इसी लिए तो इसे जुल्म कहा गया है। हालाँकि यहाँ ग़लत तरीक़े अपनाने पर पकड़ की गई है और तीन तलाक़ों वाक़े हो जाने की बाबत कोई बात नहीं कही गई है। और जब यह स्वीकार्य है कि इकट्ठी तीन तलाक़े ज़ालिमाना होती हैं तो क्या इस्लाम इस जुल्म को औरत के प्रति वैध ठहराना चाहता है? कैसी भेन्डी बात है जो ये मुफ़स्सरीन कह रहे हैं।

6. इस का सम्बन्ध अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं से है। अर्थात् यदि तुम ने तलाक़ के मामले में अल्लाह की सीमाओं की पाबन्दी की तो असंभव नहीं कि अल्लाह तलाक़ के बाद बेहतर की कोई सूरत पैदा फ़रमा दे। अर्थात् रूजू की तौफ़ीक़ दे या इद्दत ख़त्म हो जाने पर औरत के लिए दूसरे निकाह की बेहतर सूरत पैदा फ़रमा दे। कुछ भी हो अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं की पाबन्दी का परिणाम अच्छा ही हो सकता है।

7. अपनी मुद्दत को पहुँच जाने से तात्पर्य इद्दत की समाप्ति के करीब पहुँचना है। इस मौक़े पर पति को चाहिए कि या तो रूजू का फैसला कर ले या जुदा कर देने का मगर दोनों सूरतों में भला तरीक़ा अपनाना चाहिए। इस से ज़ाहिर है कि कुआन ने तलाक़ के बाद रूजू का मौक़ा रखा है। और जैसा कि सूरह बकर: आयत २२९ में गुजर चुका, यह मौक़ा दो बार की तलाक़ों के लिए है। तीसरी बार की तलाक़ के बाद रूजू की कोई सूरत बाक़ी नहीं रह जाती। लेकिन इकट्ठी तीन तलाक़ों को स्वीकार्य मानने की सूरत में रूजू का मौक़ा सिरे से बाक़ी ही नहीं रहता जो ज़ाहिर है कुआन के मंशा के विरुद्ध है इस लिए इकट्ठी तीन तलाक़ों का वाक़े होना माना नहीं जा सकता।

8. यह ताक़ीदी हुक्म है इस लिए इस की पाबन्दी की जानी चाहिए। विवादों से बचने के लिए भी यह ज़रूरी है। और यह हुक्म दोनों सूरतों में है। तलाक़ देने के बाद रूजू की सूरत में भी और जुदा कर देने की सूरत में भी। बहरहाल यह बात ज़ाहिर हो जानी चाहिए कि फ़लाँ औरत फ़लाँ व्यक्ति की पत्नी रही या नहीं। वरना दोनों की पोजीशन लोगों की नज़रों में संदिग्ध हो सकती है।

9. यह गवाहों को हिदायत है कि वे जब गवाही देने का मौक़ा हो, निष्पक्षता के साथ सच्ची गवाही दें और केवल अल्लाह के लिए दें।

10. “यह नसीहत” से तात्पर्य वे सारे अहकाम हैं जो ऊपर तलाक़ से सम्बन्धित बयान हुए हैं। इन अहकाम (आदेशों) के अनुपालन के लिए अल्लाह तआला ने नसीहत फ़रमाई है कि ख़ैर और भलाई इसी में है और इस को अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान का तक्राज़ा बताया है। इस का मतलब यह

है कि जो लोग तलाक़ के मामले में शरीअत के आदेशों की परवाह नहीं करते वे ईमान के तकाज़े के विरुद्ध काम करते हैं और क्रियामत के दिन उन्हें इस की कड़ी जवाबदेही करनी होगी।

11. यह आयत तक्रवा अपनाने वालों के लिए उम्मीद की किरन है। अल्लाह ऐसे लोगों के लिए ऐसे साधन उत्पन्न कर देता है कि परेशानियों में घिरे हुए व्यक्ति के लिए उस से निकलने के रास्ते खुल जाते हैं और उस के कष्ट दूर हो जाते हैं। जहाँ विशेष रूप से इशारा परिवारिक कष्टों व परेशानियों की ओर है कि उन से घबरा कर तक्रवा (अर्थात् ईश-भय) का खैया छोड़ नहीं देना चाहिए बल्कि उस को मज़बूत थाम लेना चाहिए कि सारी गुत्थियाँ तक्रवा से ही सुलझ जाती हैं।

12. परिवारिक जीवन कभी कभी रोज़ी की तंगी के कारण कलह का शिकार हो जाता है इस लिए मर्द और औरत दोनों को ढारस दिलाई गई है कि अगर उन्होंने ने तक्रवा के दामन को नहीं छोड़ा तो अल्लाह उन के लिए रोज़ी की कोई न कोई सूरत पैदा कर देगा। ऐसी सूरत जो उन के विचारों तथा कल्पना में भी न आई होगी। और यह सही बात है कि रोज़ी दिलाने के वह ऐसे साधन कर देता है जो मनुष्य की कल्पना में भी नहीं होती अतः रोज़ी के मामले में केवल प्रत्यक्ष साधनों को ही सब कुछ नहीं समझ लेना चाहिए बल्कि अल्लाह की अनुकंपा और उस की विशालता से अच्छी आशाएँ बाँधना चाहिए।

13. साधनों पर भरोसा करने के बजाए अल्लाह पर जो साधनों का पैदा करने वाला है, भरोसा करना चाहिए। ऊपर से हालात निराशाजनक प्रतीत हो सकते हैं किन्तु अल्लाह पर अन्तर्मन से विश्वास और उस से खैर व भलाई की आशा आदमी को कभी निराश तथा असफल नहीं बनाती। पहाड़ जैसी मुश्किलें भी अल्लाह तआला के एक इशारे से दूर हो जाती हैं। और यह आयत इस बात की ज़मानत है कि जो भी अल्लाह पर दृढ़ विश्वास करेगा उस की मुश्किलों को दूर करने के लिए अल्लाह काफ़ी होगा।

14. अर्थात् अल्लाह की मर्जी पूरी हो कर रहती है अलबत्ता यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि यह दुनिया आजमाइशी है इस लिए उस ने हर तकलीफ़ और हर कष्ट को दूर करने के लिए तथा हर मुश्किल को आसान करने के लिए समय निर्धारित कर रखा है। यह उस की ठहराई हुई तक्रदीर है अतः इन्सान को जल्दबाज़ी और बेसब्री से काम नहीं लेना चाहिए। अल्लाह पर भरोसा करने का यह मतलब नहीं कि इधर भरोसा किया और दुआ की और उधर मुश्किल दूर हुई। बल्कि उस में समय भी लग सकता है ताकि जो आजमाइश अल्लाह तआला करना चाहता है वह पूरी हो जाए। किन्तु विश्वास रखना चाहिए कि अल्लाह मुश्किलों को दूर करने के लिए काफ़ी होगा। यही सही अर्थों में तवक्कुल अर्थात् अल्लाह पर भरोसा है।



हैसियत वाला अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करे और जिस को कम रोज़ी दी गई है वह उस में से खर्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है। अल्लाह ने जिस को जितना दिया है उस से अधिक बोझ वह किसी पर नहीं डालता। अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा करेगा। कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब के आदेश और उस के रसूलों से उद्दण्डता की तो हम ने उन का कड़ा हिसाब लिया (पकड़ की) और उन को बुरी तरह अज़ाब दिया। उन्होंने ने अपने किये का वबाल चख लिया और उन का अन्जाम तबाही है। (अल-कुआन)

4. और तुम्हारी औरतों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों उन के बारे में यदि कोई शक हो तो उन की इहत तीन महीने है।¹⁵ और उन की भी जिन को मासिक धर्म न आया हो।¹⁶ और गर्भवती स्त्रियों की इहत यह है कि उन का प्रसव हो जाए।¹⁷ जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा तो वह उस के मामले में आसानी पैदा फ़रमाएगा।¹⁸

وَالَّذِي يَسْنَنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَحِضْنَ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ③

5. यह अल्लाह का आदेश है जो उस ने तुम्हारी ओर अवतरित किया है।¹⁹ जो अल्लाह से डरेगा, उस की बुराइयों को वह दूर कर देगा और उस के अज़्र (इनाम) को बढ़ा देगा।²⁰

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ سُبُلًا وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ⑤

6. उन को (इहत के दौरान) उसी जगह रखो जहाँ तुम रहते हो, जैसी कुछ तुम्हारी हैसियत हो। उन को तंग करने के लिए न सताओ।²¹ और यदि वे गर्भवती हों तो उन पर खर्च करो यहाँ तक कि उन का प्रसव हो जाए।²² फिर यदि वे तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाए तो उन को उन की उजरत दो। और भले तरीक़े पर आपस के परामर्श से मामला तय कर लो।²³ अगर तुम कोई तंगी महसूस करो तो कोई दूसरी औरत उसे दूध पिलाए।²⁴

اسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاتُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ وَأَنْتُمْ وَابِنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَمِصْرُضْعُ لَكُمْ أُخْرَى ⑥

7. हैसियत वाला अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करे और जिस को कम रोज़ी दी गई है वह उस में से खर्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है। अल्लाह ने जिस को जितना दिया है उस से अधिक बोझ वह किसी पर नहीं डालता।²⁵ अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा करेगा।²⁶

لِيَنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُفْسِقْ فَمَا آتَاهُ اللَّهُ لَا يَكْفِلُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَاتَ بِهَا سَبَّحَ اللَّهُ بَعْدَ عَمْرِئِهِ ⑦

8. कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब के आदेश और उस के रसूलों से उद्दण्डता की तो हम ने उन का कड़ा हिसाब लिया (पकड़ की) और उन को बुरी तरह अज़ाब दिया।²⁷

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسِبُنَا حِسَابًا سَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا ثَقِيرًا ⑧

9. उन्होंने ने अपने किये का वबाल चख लिया और उन का अन्जाम तबाही है।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ④

15. इस आयत में उन तलाक़ शुदा औरतों की इद्त बयान की गई है जिन से निकाह के बाद पति ने सहवास किया हो। जिन औरतों को सहवास से पहले तलाक़ दी गई उन के लिए कोई इद्त नहीं है जैसा कि सूरह अहज़ाब आयत ४९ में बयान हुआ है। यह भी ध्यान रहे कि सूरह बक्रर: आयत २२८ में तलाक़ शुदा औरतों की इद्त जिन से पति ने सहवास किया हो तीन मासिक धर्म बताया गया है। यहाँ कुछ विशेष हालात के आदेश बयान हुए हैं।

औरत यदि बड़ी आयु को पहुँच गई हो जब कि उसे मासिक धर्म आने की कोई आशा न रही हो तो उस की इद्त तीन माह है। “यदि तुम्हें कोई सन्देह हो” का मतलब यह है कि माहवारी से निराश होने की आयु को पहुँच जाने के बाद अगर कभी कुछ खून आ जाए जिस के कारण से आदमी सन्देह में पड़े कि यह मासिक धर्म है या दूसरी तरह का खून तो इस संदेह में न पड़े और तीन माह की इद्त पूरी करो। और जब संदेह न हो तथा वे माहवारी से निराश हो चुकी हों तो उन की इद्त निश्चित रूप से तीन माह होगी।

16. “जिन को मासिक धर्म न आया हो” से तात्पर्य वे औरतें हैं जिन को बीमारी आदि के कारण माहवारी न आ रही हो। हलाँकि वे व्यस्क हो चुकी हों। ऐसी औरतों की अवधि भी तीन माह है।

आयत के इस हिस्से में कि “जिन को मासिक धर्म न आया हो” नाबालिग लड़कियों के विवाह की वैधता के लिए कोई दलील नहीं है। क्यों कि यदि मान लिया जाए अगर नाबालिग लड़की से किसी ने विवाह किया तो उस से संभोग तो वह कर नहीं सकेगा, क्यों कि इस की इजाज़त न शरीअत देती है और न मानव बुद्धी और स्वभाव। फिर अगर वह इस नाबालिग लड़की को तलाक़ देता है तो संभोग न कर सकने के कारण उस की कोई इद्त न होगी। (देखिए सूरह अहज़ाब आयत ४९) जब कि यहाँ उन औरतों की इद्त जिन को मासिक धर्म न आता हो तीन माह बयान की गई है। मालूम हुआ कि इस का सम्बन्ध नाबालिग लड़कियों से नहीं है और न नाबालिग लड़कियों के निकाह के लिए यह आयत हज्जत बन सकती है। इस के अलावा कुआन में यतीम लड़कों और लड़कियों के लिए इर्शाद हुआ है:-

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ - (नसा: ५)

अर्थ:- “और यतीमों को जाँचते रहो यहाँ तक कि वे निकाह की आयु को पहुँच जाएँ।” (नसा - ६)

ज़ाहिर है कि निकाह की आयु को पहुँच जाने से तात्पर्य लड़के और लड़की का बालिग हो जाना है अतः निकाह की

आयु व्यस्कता की आयु हुई। इस से पहले निकाह का प्रश्न पैदा ही नहीं होता। और जब निकाह का सवाल पैदा नहीं होता तो तलाक़ का क्या प्रश्न? अतिरिक्त शरीअत ने लड़की के निकाह के लिए उस की रज़ामन्दी ज़रूरी बताई है। यह रज़ामन्दी एक नाबालिग लड़की से किस तरह हासिल की जा सकेगी। इस्लाम ने इस बात की कदापि अनुमति नहीं दी है कि लड़की को ज़बरदस्ती किसी के निकाह में दे दिया जाए। रही बात इस रिवायत की कि हज़रत आइशा की आयु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह के समय ६ वर्ष की थी तो इस रिवायत को सही नहीं माना जा सकता क्यों कि कई और सच्चाइयों से इस का अनुमोदन नहीं होता। यहाँ विस्तृत बहस की गुन्जाइश नहीं, शोध करने वालों ने इस पर बहुत कुछ लिखा है।

17. गर्भवती स्त्री की इद्त प्रसव तक है चाहे वह तलाक़ देने के थोड़े समय बाद हो या कई माह बाद हो। इस तरह इद्त की अवधि घट भी सकती है और बढ़ भी सकती है और यही इद्त उस गर्भवती की भी है जिस के पति का देहान्त हो गया हो क्यों कि यदि उस की अवधि चार माह दस दिन होती और इस दौरान शिशु प्रसव न हुआ होता तो वह इस इद्त के गुज़ारने के बाद गर्भवती होते हुए दूसरे पुरुष से निकाह करने के लिए आज़ाद होती और यह बहुत ग़लत बात होती कि एक पुरुष का बच्चा होते हुए वह दूसरे के निकाह में चली गई। इस लिए शरीअत ने प्रत्येक गर्भवती औरत के लिए यह नियम निर्धारित किया है कि उस की इद्त प्रसव तक है चाहे उस में समय अधिक लग जाए या कम। हदीस से भी इस का अनुमोदन होता है :-

“सुबैअ असलमिय्या” फ़रमाती हैं कि मैं हज़रत सअद बिन ख़ौला के निकाह में थी। हज्जतुल विदा के मौक़े पर मेरे पति का देहान्त हो गया जब कि मैं गर्भवती थी देहान्त के कुछ रोज़ बाद मेरे यहाँ बच्चा पैदा हो गया। एक साहब ने कहा तुम चार महीना दस दिन गुज़ारने से पहले निकाह नहीं कर सकती। मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो आपने जवाब दिया कि तुम शिशु प्रसव होते ही हलाल हो चुकी हो। अब चाहो तो दूसरा विवाह कर सकती हो।” (मुस्लिम किताबुत्तलाक़)

18. अल्लाह से डरने वालों को ढारस दिलाई गई है कि यद्यपि तक्रवा की राह पर चलना और विशेष रूप से परिवारिक जीवन में जहाँ कलह पैदा होती रहती है, तक्रवा (ईश-भय) का लिहाज़ रख पाना मुश्किल है किन्तु जो व्यक्ति तक्रवा का दामन पकड़े रहेगा अल्लाह उस के लिए इस राह पर चलना आसान कर देगा। और सच्चाई यही है कि जो लोग इस बात

का दृढ़ संकल्प कर लेते हैं कि उन्हें हर हाल में अल्लाह से डरते हुए अपने मामले अन्जाम देने हैं तो अल्लाह उन्हें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और वह ईश भय से ओत प्रोत (तक्रवा का) जीवन गुज़ारने में सफल होते हैं।

19. अर्थात् ख़ूब जान लो कि इदत का यह आदेश अल्लाह का दिया हुआ आदेश है इस लिए निश्चित रूप से तुम्हें इस का पाबन्द हो जाना चाहिए। इस का उल्लंघन खुला गुनाह है और यदि किसी ने इस पारिवारिक विधान की जगह स्वरचित अथवा अपना गढ़ा हुआ क़ानून चलाने का प्रयास किया या उसे प्रचलित अथवा लागू किया तो यह संगीन अपराध होगा।

20. यह अल्लाह से डरने वालों और उस के आदेशों की पाबन्दी करने वालों का अच्छा बदला बयान हुआ है कि वह उन की बुराइयों को भी मिटाएगा और उन को बहुत बड़े इनाम से अलंकृत करेगा। जितना बड़ा सब्र उतना ही बड़ा इनाम बल्कि उस से भी बढ़ कर।

21. अर्थात् तलाक़ शुदा औरतों को इदत तक अपने ही घर में रहने दो और अपनी हैसियत के अनुरूप उन्हें अच्छी जगह रखो। ऐसा न हो कि अच्छी जगह के मौजूद होते हुए उन्हें घटिया जगह पर छोड़ दो कि यह दुर्व्यवहार होगा और इस से उन की ग़ैरत भी प्रभावित होगी। फिर इदत के दौरान तुम्हारा रवैया भी अपनी पत्नियों के साथ अच्छे बर्ताव का होना चाहिए। उन्हें कष्ट और तकलीफ़ दे कर तंग करना ताकि वह पति का घर छोड़ने के लिए मजबूर हो जाएँ कदापि उचित नहीं।

अफ़सोस है कि इस त़ाक़ीदी हुक्म के बावजूद आये दिन मुसलमान अपनी पत्नियों को तलाक़ देते हैं तो उन के साथ कष्ट पहुँचाने वाला रवैया भी अपनाते हैं और उन्हें तुरंत उन के घर से रुख़सत कर देते हैं। इस का बड़ा कारण यह है कि मुसलमान अगर कुआन से सम्बन्ध रखते हैं तो केवल तिलावत की हद तक। जब कुआन को समझ कर पढ़ने से उन्हें दिलचस्पी ही नहीं होती तो उन पर न अल्लाह के आदेश स्पष्ट हो पाते हैं और न उन पर कुछ सत्कर्म करने का भाव ही जागृत होता है। कैसी विचित्र बात है कि आदमी सूरह तलाक़ की तिलावत तो करे किन्तु उस में जो एहक़ाम बयान हुए हैं उन को समझने की कोशिश न करे जब कि उस को समझने के साधन मौजूद हैं। ऐसे लोग यदि अल्लाह के आदेश की अवज्ञा तथा उल्लंघन करते हैं तो तिलावत के बावजूद उन्हें कुआन से इस विमुखता और उस के आदेशों पर अमल न करने के बारे में कड़ी जवाबदेही करनी होगी।

22. तलाक़ शुदा यदि गर्भवती है तो उस का प्रसव होने

तक उस पर खर्च करने की ज़िम्मेदारी जिस में खाना पीना, कपड़ा और इलाज शामिल है, पति पर आयद होती है। चाहे यह तलाक़ रजअी (जिस में रूजू किया जा सकता है) हो या तिसरी बार की अर्थात् मुगल्लज़ा तलाक़। चूँकि प्रसव की अवधि लंबी खिंच सकती है इस लिए विशेष रूप से गर्भवती औरतों के नफ़्के (आजीविका) का ज़िक्र हुआ वरना यह आदेश उन तलाक़ शुदा औरतों के लिए भी है जिन को रजअी तलाक़ दी गई हो या तीसरी बार मुगल्लज़ा तलाक़ दी गई हो। इन सब तलाक़ शुदा औरतों के लिए उन की इदत तक सुकना अर्थात् रिहाइश और नफ़्का अर्थात् उस के खर्च की ज़िम्मेदारी उन के पति पर आयद होती है। यह बात इस पहलू से भी सही मालूम होती है कि जब इदत समाप्त होने से पहले औरत दूसरा निकाह करने के लिए आज़ाद नहीं है तो इदत पूरी होने तक उस की रिहाइश और अन्य खर्चों (नफ़्के) का ज़िम्मेदार कौन होगा। पति को जिस ने विवाह की संधि को तोड़ा है इस का ज़िम्मेदार होना चाहिए।

किन्तु उलमा और फ़ुक्हा (धर्म शास्त्रियों) का एक वर्ग इस बात का क़ायल है कि उस तलाक़ शुदा के लिए जिस को तीसरी बार तलाक़ दी गई हो और वह गर्भवती न हो न सुकना है और नफ़्का। वे फ़ातिमा बिनते क़ैस से उल्लिखित हदीस से तर्क प्रस्तुत करते हैं जिस में वे फ़रमाती हैं कि मेरे पति ने मुझे तीसरी और आखिरी तलाक़ दी थी तो मैं ने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष सुकना और नफ़्का (अर्थात् रिहाइश और खर्च) का मामला रखा किन्तु आप ने मुझे न सुकना दिलवाया और न नफ़्का बल्कि फ़रमाया कि तुम इब्ने उम्मे मत्कूम के घर में इदत गुज़ारो। (मुस्लिम किताबुतलाक़)

सच यह है कि फ़ातिमा बिनते क़ैस के पति अपने घर में मौजूद नहीं थे बल्कि सफ़र पर थे और यमन से उन्होंने ने तलाक़ भिजवा दी थी और जैसा कि दूसरी रिवायतों से मालूम होता है फ़ातिमा बिनते क़ैस स्वयं वहाँ ठहरना नहीं चाहती थीं इस लिए आप ने एक सुरक्षित जगह स्थानांतरित होने का निर्देश दिया। रही बात नफ़्के की तो पति ने अपने वकील के द्वारा ग़ल्ला भिजवाया था किन्तु फ़ातिमा बिनते क़ैस ने उसे अपर्याप्त समझते हुए और अधिक की माँग की थी परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अतिरिक्त नफ़्का नहीं दिलवाया जिस का कारण संभव है पति का अनुपस्थित होना रहा हो या जो ग़ल्ला उस ने भेजा था उस को पर्याप्त मान लिया गया हो। बहर हाल आपने उन के मसले का व्यवहारिक हल निकाला और न केवल यह कि उन्हें इब्ने उम्मे मत्कूम के घर जो नाबीना (नेत्रहीन) थे चले जाने का आदेश दिया। बल्कि इदत गुज़रते ही उन का निकाह उसामा बिन जैद से करा

दिया। मगर फ़ातिमा बिनते क़ैस इस घटना को इस तरह बयान करती थीं कि उस तलाक़ शुदा के लिए जिसे तीसरी बार तलाक़ दी गई हो न सुकना है और न नफ़का। (इस रिवायत के शब्द सुरक्षित नहीं रखे गए थे) तथा यह रिवायत कुर्आन से मेल नहीं खाती थीं इस लिए हज़रत उमर रज़ि. ने उन की इस रिवायत को स्वीकार नहीं किया और फ़रमाया :-

لَا تَتْرُكُ كِتَابَ اللَّهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّنَا ﷺ لِقَوْلِ امْرَأَةٍ لَا نَدْرِي لَعَلَّهَا حَفِظَتْ أَوْ نَسِيَتْ لَهَا السُّكْنَى وَالنَّفَقَةَ قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لَا تُخْرِجُوهُنَّ وَلَا يُخْرِجَنَّ الْأَنَ يَاتَيْنِ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ - (مسلم کتاب الطلاق)

अर्थ :- “हम अल्लाह की किताब और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को एक औरत के कहने पर नहीं छोड़ेंगे। हमें नहीं मालूम कि उस ने हदीस को सुरक्षित रखा या उस से भूल हुई। तलाक़ शुदा (बाइना) के लिए सुकना भी है और नफ़का भी है अल्लाह तआला फ़रमाता है, उन्हें अपने घरों से न निकालो और न वे अपने घरों से निकलें यह और बात है कि वे खुली बेहयाई की अपराधी हों।” (मुस्लिम किताबुतलाक़)

इसी तरह हज़रत आइशा ने भी इन की रिवायत पर पकड़ की। बुखारी में है कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया :-

أَمَّا أَنَّهُ لَيْسَ لَهَا خَيْرٌ فِي ذِكْرِ هَذَا الْحَدِيثِ -

अर्थ :- “इस हदीस को बयान करने में उस के लिए कोई भलाई नहीं।”

तथा फ़रमाया

إِنَّ فَاطِمَةَ كَانَتْ فِي مَكَانٍ وَحْشٍ فَخِيفَ عَلَى نَاحِيَّتِهَا فَلِذَاكَ أَرْخَصَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ -

अर्थ :- “फ़ातिमा एक वीरान जगह पर थीं इस लिए भय महसूस किया गया। इस आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे स्थानांतरण की अनुमति दी।”

इस हदीस की व्याख्या करते हुए हाफ़िज़ इब्ने हज़र लिखते हैं कि सुकना (रिहाइश की व्यवस्था) अपने आप में खुद समाप्त नहीं हुई थी बल्कि उक्त कारणों के चलते समाप्त हुई थी। किन्तु फ़ातिमा बिनत क़ैस तलाक़ शुदा (बाइना) के सुकना और नफ़का को निरस्त बताती थी। इस लिए हज़रत आइशा ने इस का खण्डन किया। (फ़तुह बारी जिल्द ९ पृष्ठ ३९६) हज़रत उमर रज़ि. के इस इर्शाद से कि हम अपने नबी की सुन्नत को नहीं छोड़ेंगे स्पष्ट होता है कि तलाक़ शुदा

के लिए चाहे उसे तलाक़ बाइन ही क्यों दी गई हो उस की रिहाइश का प्रबन्ध करने और उस को नफ़का देने का तरीका नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से चला आ रहा था। दूसरे शब्दों में यह सुन्नत तक्ररी है और कुर्आन की आयत कि “उन्हें उन के घरों से न निकालो” के भावार्थ में यह शामिल है। इस लिए हज़रत उमर ने फ़ातिमा बिनत क़ैस की हदीस को स्वीकार नहीं किया हज़रत उमर के इस रवैये से यह रहनुमाई मिलती है कि हदीस स्वीकार करने के लिए मात्र रावी का बयान काफ़ी नहीं है बल्कि उस का कुर्आन और सुन्नत के विपरीत न होना भी ज़रूरी है।

23. शिशु प्रसव के बाद इदत समाप्त हो जाती है और औरत के नफ़का की कोई ज़िम्मेदारी उस के पूर्व पति पर नहीं रहती किन्तु बच्चे को दूध पिलाने की उजरत उसे अदा करनी होगी। उजरत का यह मामला भले तरीके पर दोनों आपस के परामर्श से तय कर सकते हैं ताकि किसी को शिकायत का मौक़ा न मिले।

24. किन्तु यदि तलाक़ शुदा औरत अपने बच्चे को दूध न आने या बीमारी आदि के कारण दूध न पिला सकती हो या इतनी उजरत की माँग करे कि पुरुष अदा करने में असमर्थ हो तो इस तरह की किसी दुश्चारी के पैदा होने की सूरत में किसी दूसरी औरत से दूध पिलाया जा सकता है।

इस ज़माने में पावडर के दूध का प्रचलन बच्चों में आम हो गया है इस लिए किसी और औरत से दूध पिलाने की नौबत नहीं आती।

25. इस का सम्बन्ध दूध पिलाने की उजरत की अदायगी से भी है और इदत में औरत के नफ़के (खर्च) की अदायगी से भी। पुरुष की जो हैसियत हो उस के अनुसार वह खर्च करे। न तो हैसियत रखने वाला मात्र इस कारण कि वह अपनी पत्नी को तलाक़ दे चुका है खर्च करने में कन्जूसी करे और न उस से यह मुतालबा है कि अपनी हैसियत से बढ़कर खर्च करे। अल्लाह किसी पर उस की सामर्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी नहीं डालता।

26. अर्थात् असंभव नहीं कि तक्रवा और इन्साफ़ के रवैये को देखते हुए अल्लाह तआला पुरुष की तंगी को दूर कर दे और वह सम्पन्न हो जाए। अल्लाह से हर हाल में ख़ैर और भलाई ही की आशा बाँधनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि हर समय हालात एक जैसे नहीं रहते। गर्म हवाओं के बाद रहमत की खुशख़बरी देने वाली हवाएँ भी चलने लगती हैं।

27. यह मुसलमानों को कड़ी चेतावनी है कि यदि उन्होंने ने अल्लाह के आदेशों की अवहेलना की तथा उल्लंघन का रास्ता अपनाया तो याद रखें कि उदण्ड जातियों की क्या दुर्दशा

हुई है। उद्दण्ड जातियों से इशारा आद, समूद, लूत और फिरऔन की जाति की तरफ़ है। यह कड़ी चेतावनी मुसलमानों को तलाक़ के आदेश देने के बाद की गई है। अगर मुसलमान अपने परिवारिक जीवन में अल्लाह के आदेशों की परवाह न करें तो वे सामाजिक जीवन में उस के आदेशों की क्या परवाह करेंगे। परिणाम यह कि व्यक्तिगत जीवन का बिगाड़ बढ़ते बढ़ते सामाजिक जीवन को भी अपने लपेट में ले लेता है। फिर जब सामाजिक जीवन बिगाड़ से ओत प्रोत हो जाता तो उस समाज पर अल्लाह का प्रकोप टूट पड़ता है।

तलाक़ से सम्बन्धित इन स्पष्ट आदेशों तथा इन चेतावनियों के बावजूद जो इस सूरह में दी गई हैं बहुतेरे मुसलमानों का हाल यह है कि वे तलाक़ देने के मामले में इन आदेशों की खुली

अवहेलना तथा उल्लंघन कर रहे हैं। पत्नी को एक साथ तीन तलाक़ दे कर छोड़ देना, उसे तंग करना और घर से निकाल देना उन का स्वभाव बन गया है। और उन से भी दो क़दम आगे वे स्वतंत्र विचारों वाले मुसलमान हैं जो तलाक़ का अधिकार मर्द से छीन कर कोर्ट को देना चाहते हैं या फिर तफ़वीज़े तलाक़ के फ़िक्रही जुज़या का सहारा ले कर निकाह के समय ही स्त्री को यह अधिकार देना चाहते हैं कि वह जब चाहे अपने ऊपर स्वयं तलाक़ लागू कर सकती है। इस प्रकार वे समाज का सुधार करने के बजाय शरीअत का सुधार करना चाहते हैं। यह इस्लाम से उन की खुली विमुखता है और इस विमुखता का दुनिया में भी बुरा अन्जाम है और आखिरत में भी। काश कि मुसलमान होश में आएँ।



एक ऐसा रसूल, जो अल्लाह की स्पष्ट आयतें तुम को पढ़कर सुनाता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किये उन को अंधकारों से निकाल कर प्रकाश में ले आए। और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे कर्म करेगा उस को वह ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने उन को बेहतरीन रिज़्क (रोज़ी) प्रदान किया है। (अल-कुआन)

10. अल्लाह ने उन के लिए कड़ी यातना तैयार कर रखा है।²⁸ तो अल्लाह से डरो ऐ बुद्धि वालो ! जो ईमान लाए हो।²⁹ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ ज़िक्क (याददेहानी) उतारा है।³⁰

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۚ اللَّهُ الَّذِيْنَ أَمْنُوْا قَدْ أَنْزَلَ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝۱۰

11. एक ऐसा रसूल, जो अल्लाह की स्पष्ट आयतें तुम को पढ़कर सुनाता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन को अंधकारों से निकाल कर प्रकाश में ले आए।³¹ और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे कर्म करेगा ³² उस को वह ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने उन को बेहतरीन रिज़्क (रोज़ी) प्रदान किया है।³³

رَسُوْلًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ أَمْنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۝۱۱

12. अल्लाह ही ने सात आसमान बनाए और ज़मीन की क्रिस्म से उन्ही के जैसी।³⁴ उन के बीच उस के आदेश अवतरित होते रहते हैं।³⁵ (तुम पर यह वास्तविकता स्पष्ट की) ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है और यह कि अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को (अपने) घेरे में लिए हुए है।³⁶

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝۱۲

28. अर्थात् दुनिया में उन का जो अन्जाम हुआ हो, आखिरत में उन के लिए अल्लाह ने कड़ी यातना तैयार कर रखी है।

29. अर्थात् ईमान ला कर तुम ने बुद्धिमानी का परिचय दिया है और बुद्धिमानी की बात यह है कि ईमान लाने के बाद अल्लाह से डरते हुए जीवन गुजारा जाए और कोई काम तक्रवा के विरुद्ध न किया जाए।

30. तात्पर्य कुर्आन है जो याददेहानी और नसीहत है।

31. अर्थात् इस याददेहानी (कुर्आन) के साथ एक ऐसा रसूल भेजा है जो कुर्आन की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन लोगों को जो ईमान ला कर नेकी का रवैया अपनाते हैं, जिहालत और पाप के अंधकारों से निकाल कर ज्ञान और नेकी के प्रकाश में लाता है। इस तरह उन की पूरी रहनुमाई कर रहा है।

32. इस सूरह के मज़मून से बिलकुल स्पष्ट है कि सुकर्म करने में अल्लाह का डर अपनाना, उस के आदेशों पर अमल करना और परिवारिक जीवन में उस की हिदायतों की पाबन्दी करना शामिल है। ऐसे ही लोगों को इस आयत में जन्नत की खुशखबरी दी गई है।

33. इशारा है इस बात की तरफ कि ईमान और सुकर्मों जीवन गुजारने वालों को अगर दुनिया में मामूली रोज़ी मिले तो चिन्ता की कोई बात नहीं अल्लाह ने उन के लिए जन्नत में बेहतरीन रोज़ी मुहैया कर रखी है।

34. यह सूरह की अन्तिम आयत है और इस में कायनात के एक अति महत्वपूर्ण रहस्य पर से परदा उठाया गया है। वह यह कि यह कायनात इस आसमान और इस ज़मीन तक सीमित नहीं है। बल्कि यह पहला आसमान है जिसे हम अपने ऊपर देख रहे हैं। इस तरह सात आसमान अल्लाह तआला ने बनाए हैं और जिस तरह इस दुनिया के आसमान के नीचे ज़मीन है उसी तरह दूसरे आसमानों के नीचे भी ज़मीनें हैं। किन्तु ये ज़मीनें हमारी

ज़मीनों से बहुत भिन्न हैं। इसी लिए फ़रमाया “मिनलअर्द” ज़मीन जैसी। इन ज़मीनों को जो हमारे लिए अदृश्य हैं, उस की स्थिति, उस की दशा अल्लाह ही को मालूम है। हमारे पास उन के मालूम करने का कोई साधन नहीं है। और विज्ञान की पहुँच इस मण्डल से बाहर नहीं है जिस में हम रहते हैं। अर्थात् यह ज़मीन और इस के ऊपर का यह पहला आसमान। मुर्गी का चूज़ा जब तक अण्डे के अन्दर रहता है उस के लिए दुनिया वही होती है। वह जब अपने उस मण्डल से बाहर आता है तो एक विशाल जगत में आँखें खोलता है। इसी प्रकार हम इस आसमान और ज़मीन के मण्डल में बन्द हैं। किन्तु अल्लाह की कायनात यहीं तक सीमित नहीं है। अल्लाह की प्रकाशना ने हम पर इस का रहस्योद्घाटन किया है कि वह अत्यंत विशाल है। एक के बाद एक ऐसे सात जगत हैं। इन सातों जगत में क्या कुछ है उस से न हम परिचित हैं और न हमारे पास इस के जानने का कोई साधन है। कुर्आन का उद्देश्य मात्र हमारी जानकारी में वृद्धि करना नहीं है बल्कि कायनात की व्यापक कल्पना को प्रस्तुत कर के अल्लाह की विशाल कुदरत का एहसास पैदा करना है।

35. अर्थात् इन सातों आसमानों और ज़मीनों पर अल्लाह की सत्ता चल रही है और उस के आदेश उन सब के अन्दर अवतरित होते हैं। और यह अल्लाह ही को मालूम है कि इन सारे जगतों में किस तरह की सृष्टियाँ पाई जाती हैं और वहाँ किस प्रकार के आदेश अवतरित किये जाते हैं।

36. अर्थात् कायनात का एक महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन तुम पर इस लिए किया गया ताकि तुम अल्लाह की कुदरत और उस के ज्ञान की सही कल्पना कर सको। जिस हस्ती की कुदरत इतनी विशाल है और जिस का ज्ञान अथाह सागर जैसा है उस का दीन और उस की शरीअत ही मनुष्य के लिए अनुपालन योग्य हो सकती है और उस की प्रसन्नता का मार्ग अपना कर ही आदमी खुश हो सकता है।





६६. सूरह अत्-तहरीम

नाम :- पहली आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा एक हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर देने पर पूछा हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तहरीम है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और आयत ९ में मुनाफ़िकों से जिहाद करने का जो आदेश दिया गया है वह इस बात की साक्ष्य है कि यह सूरह सन ९ हिजरी में अवतरित हुई क्योंकि मुनाफ़िकों से जिहाद करने का आदेश तबूक की जंग के बाद दिया गया था जैसा कि सूरह तौबा आयत ७३ से स्पष्ट है।

केन्द्रीय विषय :- अपनी पत्नियों की चाहत को अपने ऊपर इतना न हावी होने दें कि उन की खातिर किसी हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लें तथा उन के सुधार की ओर से ग़ाफ़िल न हों और उन के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को महसूस करें ताकि उन्हें आखिरत के बुरे अन्जाम से बचाया जा सके।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक चूक पर जो आप से अपनी पत्नी के साथ दिलदारी में हुई थी, पूछा ग़ल्ल करते हुए आप की पत्नियों

की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ घरेलू मामलों में नाराज़गी पर पकड़ की गई है और उन्हें सुधार कर लेने की ओर आकृष्ट किया गया है।

आयत ६ से ८ में ईमान वालों को अपनी पत्नियों की तरफ़ से ग़ाफ़िल न होने और अपनी इस ज़िम्मेदारी को अदा करने की हिदायत की गई है कि उन्हें आखिरत के अज़ाब से बचाने की पूरी कोशिश की जाए।

आयत ९ में काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद का आदेश दिया गया है। यह आदेश यहाँ इस मुनासिबत से है कि ये सदैव एक न एक विवाद खड़ा करते थे यहाँ तक कि वे आप की पत्नियों के प्रति भी फ़िल्ता सामानी करते तथा इस बात की कुचेष्टा करते कि ईमान वालों की औरतें भी उन की गुमराही की बातों से प्रभावित हों।

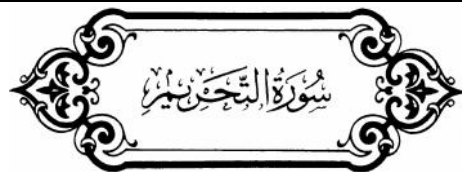
आयत १० में उन दो औरतों की घटनाओं से इबरत दिलाई गई है जिन्होंने अपने रसूलों के निकाह में होते हुए उन से बेवफ़ाई की।

आयत ११ और १२ में दो नेक औरतों की मिसालें पेश की गई हैं जिन के चरित्र की बुलन्दी के आगे आसमान भी नतमस्तक है।

६६.सूरह अत्-तहरीम

आयतें : १२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ नबी ! तुम अपनी पत्नियों की रज़ामन्दी की ख़ातिर उस चीज़ को क्यों हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है ? अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।¹

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ①

2. अल्लाह ने (ऐसी) कसमों का खोल देना तुम पर फ़र्ज़ किया है।² अल्लाह तुम्हारा मौला (करताधरता) है और वह ज्ञान वाला, तत्त्वदर्शी है।

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ②

3. और जब नबी ने अपनी पत्नी से राज़ में एक बात कही, फिर जब उस पत्नी ने उसे ज़ाहिर कर दिया और अल्लाह ने नबी को उस से अवगत करा दिया, तो नबी ने (उस पत्नी को) किसी हद तक ख़बरदार किया और किसी हद तक दरगुज़र किया। जब नबी ने पत्नी को यह बात बतलाई तो उस ने पूछा आप को इस की ख़बर किस ने दी? नबी ने कहा मुझे उस ने ख़बर दी जो सब कुछ जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।³

وَإِذَا أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا بَيَّنَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضُهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا قَالَ بَيَّنَّنِي الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ③

4. अगर तुम दोनों अल्लाह के समक्ष तौबा करो तो (तुम्हारे लिए बेहतर है) तुम्हारे दिल उस की ओर मुड़ चुके हैं और अगर तुम दोनों मिल कर उस को नाराज़ करो तो (याद रखो) अल्लाह उस का मौला है और उस के बाद जिब्रील और नेक ईमान वाले, और उस के बाद फ़रिश्ते उस के मददगार हैं।⁴

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ④

5. अगर नबी तुम सब पत्नियों को तलाक़ दे दे तो असंभव नहीं कि उस का रब तुम्हारे बदले में तुम से बेहतर पत्नियाँ उस को प्रदान करे।⁵ मुस्लिमा, ईमान वाली, आज्ञाकारी, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, सय्याहत (भ्रमण) करने वाली,⁶ पति (को देख लेने) वाली⁷ और कुंवारी।

عَلَى رَبِّهَ إِنْ طَلَغْتُمْ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِمَّنْكُمْ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قُنُوتَاتٍ يُدَّتْ غِيَدَاتٍ سَبِيحَتٍ تَبَدَّتْ وَابْكَارًا ⑤

1. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों में से किसी ने किसी चीज के बारे में अपनी नापसन्दगी जाहिर की थी। इस लिए आप ने उन का दिल रखने कि खातिर उस चीज को क्रसम खा कर अपने ऊपर हराम कर लिया। यह बात यद्यपि आप के अपने व्यक्तित्व तक सीमित थी और इसे राज में रखने की हिदायत भी आप ने अपनी उस पत्नी को कर दी थी। किन्तु नबियों की मामूली चूक पर भी अल्लाह तआला आलानिया उन्हें सजग करता है ताकि समय रहते ही उन का सुधार हो और उन के चरित्र पर कोई आँच न आने पाये। और लोगों के लिए सही व सच्ची रहनुमाई का सामान हो।

यह मात्र एक चूक थी, और अपने ऊपर हराम करना इस अर्थ में नहीं था कि अल्लाह ने उस चीज को हराम ठहराया है, बल्कि इस अर्थ में था कि मैं ने उसे खुद अपने लिए ही परहेज करने के लिए संकल्प कर लिया है। अल्लाह तआला ने जहाँ आप को इस चूक पर सजग किया वहीं इस चूक की क्षमा का एलान भी कर दिया जैसा कि आयत के आखिरी हिस्से से स्पष्ट है। अब जिस चीज को अल्लाह क्षमा कर चुका हो उस पर किसी को उंगली उठाने का कोई हक नहीं है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या चीज अपने ऊपर हराम कर दी थी, इस की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में इस का स्पष्टीकरण किया तो हम उस को कुरेदने की कोशिश क्यों करें? कुर्आन के संक्षिप्त बयान पर जो मूल उद्देश्य को पूरा करता है, हमें संतोष करना चाहिए। किन्तु रावियों ने, क्रियास (अनुमान) से काम लेकर कुछ घटनाएँ बयान की हैं और मुफ़स्सरीन ने उन को उद्धृत किया है। उन में मशहूर दो घटनाएँ हैं। एक घटना हज़रत मारिया क्रिस्तिया के बारे में है जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पुत्र इब्राहीम जन्मे थे और फिर बचपन ही में उन की मृत्यु हो गई थी। मारिया क्रिस्तिया से सम्बन्धित एक ऐसी बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बद्ध की गई है जो आप के आचरण से किसी भी तरह मेल नहीं खाती और इतनी वाहियात है कि हम उस का उदाहरण प्रस्तुत करना भी आप की शान में गुस्ताखी समझते हैं। इमाम नौवी ने भी साफ़ पुष्टि की है कि मारिया के बारे में कोई सही रिवायत मौजूद नहीं है। और अल्लामा शिबली नोमानी लिखते हैं :-

“यह बहस उसूले-रिवायत की बिना पर थी। दरायत का लिहाज़ किया जाए तो मुतलक़ कदो-काविश की हाज़त नहीं। जो रक़ीक़ वाक़िआ इन रिवायतों में बयान किया गया है और खुसूसन तबरी वग़ैरह में जो जुज़ियात मज़कूर हैं वह एक मामूली आदमी की तरफ़ भी मन्सूब नहीं किये जा सकते, न कि उस ज़ातेपाक की तरफ़ जो तक्रदुस व नज़ाहत का पैकर था।”

(सीरतुन्नबी, उर्दू जिल्द १ पृष्ठ १५०)

दूसरी घटना शहद को अपने ऊपर हराम करने की है जिस का सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी पत्नी ज़ैनब बिनत जहश के पास कुछ देर ठहरा करते और उन के पास शहद पिया करते थे। हज़रत आइशा का बयान है कि मैं ने और हफ़्सा ने आपस में सहमति की कि वहाँ से आप जिस पत्नी के पास तशरीफ़ लाएँ वह यह कहे कि आप के मुँह से मगाफ़ीर की गंध आ रही है (मगाफ़ीर जंगली फूल होते हैं जिन की गंध अच्छी नहीं होती) अतः एवं आप अपनी पत्नियों के पास गए तो उन्होंने ने यही बात कही। इस पर आपने शहद खाने से इन्कार किया। यह रिवायत यद्यपि मुस्लिम और बुखारी में मौजूद है परन्तु कई कारणों से विश्वस्नीय नहीं है।

प्रथम - शहद से सम्बन्धित रिवायतों में बड़ा इज्तिराब है। किसी रिवायत में बयान हुआ है कि आपने शहद हज़रत ज़ैनब बिनत जहश के यहाँ पिया था तो किसी में बयान हुआ है कि आप ने शहद हज़रत हफ़सा के यहाँ पिया था। सही बुखारी की रिवायतों में भी यह विरोधामास मौजूद है। (देखिए मुस्लिम किताबुत्तलाक़) जब रावी (उल्लेखकर्ता) को इस बारे में दृढ़ विश्वास नहीं है तो उस की रिवायत पर किस तरह भरोसा किया जा सकता है।

द्वितीय - कुछ रिवायतों में बयान हुआ है कि हज़रत आइशा ने केवल हज़रत हफ़सा से कहा था कि वे नबी सल्लल्लाहु वसल्लम से कहें कि मगाफ़ीर की गंध आती है किन्तु दूसरी रिवायतों में बयान हुआ है कि हज़रत आइशा ने यह बात दूसरी पत्नियों से भी कही थी और उन्होंने ने वैसा ही किया।

तृतीय - नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अभिरुचि अत्यंत उच्चकोटि की तथा नफ़ीस थी। आप ऐसा शहद क्यों खाते जिस में दुर्गन्ध हो। फिर वह दुर्गन्ध भी इतनी देर तक रहने वाली थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारी बारी सभी पत्नियों के घर तशरीफ़ ले गए और अन्तिम समय तक गंध बाक़ी रही? यह मात्र कहानी नहीं तो क्या वास्तविकता है?

चतुर्थ - शहद एक हलाल चीज ही नहीं बल्कि उस के साथ उस की विशेषता कुर्आन में यह बयान हुई है कि वह लोगों के लिए शिफ़ा (रोग निवारक) है। (सूरह नहल आयत ६९) और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस को पीने पर लोगों को उभारते रहते थे, ऐसी चीज आप अपने ऊपर क्यों हराम करते?

पंचम - बुखारी ही की एक हदीस में जो हज़रत इब्ने अब्बास से उल्लिखित है और जिस में हज़रत उमर ने तज़ाह़रा (नाराज़गी जाहिर करने के लिए ऐका) करने वालियों के नाम आइशा और हफ़सा बतलाए हैं परन्तु इस में शहद की घटना का कोई वर्णन नहीं है। बल्कि सारी पत्नियों की तरफ़ से नफ़्का (खर्च) में वृद्धि

की माँग पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रंजिश और फिर एक माह तक अपनी पत्नियों से अलग रहने की घटना बयान हुई है और इस के साथ आप की पत्नियों को आप के साथ रहने न रहने का अधिकार देने की घटना को भी जोड़ दिया गया है हालाँकि साथ रहने के अधिकार वाली घटना सन ५ हिजरी की है जिस के बारे में सूरह अहज़ाब की आयत २८ अवतरित हुई थी और सूरह अहज़ाब का अवतरण सन ५ हिजरी में हुआ था जब कि सूरह तहरीम सन ९ हिजरी में अवतरित हुई है।

इस से अन्दाज़ा हुआ होगा कि सूरह तहरीम की आयतों की तफ़्सीरी रिवायतों में बहुत ज़्यादा उलझाव है। इस लिए इन को मात्र प्रमाण के आधार पर स्वीकार नहीं किया जा सकता और कुर्आन के संक्षिप्त बयान पर संतोष करने में ही सलामती है और विशेष रूप से इस लिए भी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक हस्ती पर कोई उंगली उठने का सामान नहीं होना चाहिए और न आप की पवित्र पत्नियों के बारे में यह बातें कही जा सकती हैं कि उन्होंने ने आप के विरुद्ध कोई साज़िश की थी। जो घटना भी घटी और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह घटना क्या थी। चूक किस तरह की थी परन्तु चूक पर आप की पत्नियों को आगे जो कड़ी तंबीह की गई है वह इस लिए की गई है कि उन का मामला एक नबी से और उन का स्थान उम्माहातुलमोमिनीन (मोमिनों की माँ) का था।

2. अर्थात् ऐसी क्रसमों को जो अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने ऊपर हराम कर देने के उद्देश्य से खाई गई है। खोल देना शरीअत में बिल्कुल जायज़ है अतः उन को खत्म कर देना चाहिए। रही बात क्रसम तोड़ने के कफ़ारे (प्रायश्चित) की तो इस का हुक्म सूरह माइदा आयत ८९ में बयान हुआ है।

ध्यान रहे कि सूरह माइदा पहले नाज़िल हो चुकी थी और सूरह तहरीम बाद में नाज़िल हुई है।

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी किसी पत्नी से राज़ में एक बात कही थी किन्तु उन्होंने यह बात आप की दूसरी पत्नी पर खोल दी। अल्लाह तआला ने आप को इस से अवगत किया। आप ने राज़ को खोल देने वाली पत्नी को इस बात से आगाह किया कि तुम ने यह राज़ की बात खोल दी। परन्तु आपने अपने विनम्र स्वभाव के कारण इस को सरसरी तौर पर अभिव्यक्त किया इस पर कड़ी पकड़ नहीं की बल्कि दरगुज़र से काम लिया। उन्होंने ने आश्चर्य से पूछा कि आप को इस की ख़बर किस ने दी। आप ने फ़रमाया मुझे अल्लाह तआला ने जो सब कुछ जानने वाला और सब की ख़बर रखने वाला है उस ने इस से अवगत किया।

यह राज़ की बात क्या थी इस की पुष्टि न कुर्आन ने की

और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ही इस की कोई पुष्टि की। और इस के स्पष्टीकरण का प्रश्न उठता भी नहीं क्यों कि आप की एक पत्नी द्वारा दूसरी पत्नी पर राज़ ज़ाहिर कर देने ही पर चेतावनी आई है तो हमारा उस राज़ की बात की खोज लगाने के पीछे जुटना और इस बारे में अपने अपने अन्दाज़े व्यक्त करना किस तरह उचित वा जायज़ हो सकता है? परन्तु रिवायतों में लोगों के अपने अपने अनुमान मौजूद हैं और तफ़्सीरें भी इस से ख़ाली नहीं हैं। हम इन रिवायतों का उल्लेख करना अनावश्यक समझते हैं। इन का कोई महत्व अथवा कोई वज़न उक्त कारणों के आधार पर ही स्वीकार नहीं किया जा सकता। अलबत्ता प्रसंग से यह बात स्पष्ट है कि यह कई घटनाएँ नहीं थीं बल्कि एक ही घटना थी और वह थी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किसी चीज़ को अपने ऊपर हराम कर देना और वह बात थी जो आपने राज़ के तौर पर अपनी एक पत्नी से कही थी। किन्तु जैसा कि हम ऊपर स्पष्ट कर आए हैं कि यह क्या चीज़ थी हमें नहीं मालूम।

आयत से एक बात यह भी मालूम हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्आन के अलावा भी वह्य आती थी। क्यों कि राज़ को खोल देने की जो ख़बर आप को अल्लाह तआला ने दी थी उस का वर्णन कुर्आन में सूरह तहरीम से पहले कहीं भी नहीं हुआ है। और यह बात अधिकांश दलीलों से साबित है कि आप पर कुर्आन के अलावा भी वह्य आती थी।

4. तुम दोनों से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो पत्नियाँ हैं जिन में से एक ने दूसरी पर राज़ की बात खोल दी थी। ये दोनों कौन थीं इस की पुष्टि कुर्आन ने नहीं की क्यों कि हमारे लिए इस को जानना ज़रूरी नहीं। रिवायतों में एक उल्लेखकर्ता ने दो नाम पेश किए हैं, दूसरे उल्लेखकर्ता ने इस से अतिरिक्त दूसरे नाम पेश किये हैं। अतः बुख़ारी की रिवायत में हज़रत आइशा और हज़रत हफ़सा का नाम लिया गया है (बुख़ारी किताबुतलाक़) तो मुस्लिम की रिवायत में हज़रत आइशा, हज़रत सौदा और हज़रत सफ़िया के नाम लिए गए हैं (मुस्लिम किताबुतलाक़) रिवायतों के इस विरोधाभास को देखते हुए आप की मोहतरम पत्नियों में से किसी का नाम ले कर उन पर यह आरोप लगाना सही नहीं है।

कुछ भी हो जिस पत्नी ने राज़ की बात दूसरे से कह दी थी वह तो दोषी थीं ही किन्तु उन्होंने ने जिस पत्नी को राज़ की बात बताई थी वह भी दोषी थीं। उन का दोष संभवतः यह था कि उन्होंने ने राज़ की बात सुन कर यह महसूस किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से यह बात छिपाई थी और इस कारण आप से नाराज़ हो गई। इस लिए दोनों पत्नियों को तौबा की हिदायत की गई जिस में यह संकेत भी निहित था कि

यद्यपि उन का ज़ाहिरी रवैया यह है परन्तु उन को अपनी गलतियों पर आत्म ग्लानि है और उन के दिल प्रायश्चित के लिए उत्सुक हैं। साथ ही उन्हें सजग किया गया कि अगर तुम दोनों ने मिल कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नाराज़गी बरकरार रखी तो याद रखो नाराज़गी का यह मामला किसी व्यक्ति से नहीं बल्कि उस व्यक्तित्व से है जो नुबुव्वत के पद पर नियुक्त है और जिस का संरक्षक और साथी अल्लाह तआला है और जिस के सहायक ज़िब्रील, नेक ईमान वाले और फ़रिश्ते हैं। ऐसी उत्कृष्ट हस्ती से तुम नाराज़ हो कर क्या हासिल करने वाली हो और इस नाराज़गी से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक मजलिस हरगिज़ सूनी पड़ने वाली नहीं।

नेक ईमान वालों का मददगार होना सामान्य अर्थों में है इसी तरह फ़रिश्तों का सहायक होना भी सामान्य अर्थों में है।

5. यह बात भी सावधान करने के तौर पर थी जो

सार्वजनिक रूप से सभी पत्नियों से कही गई ताकि सब आगे को सावधान रहें। फ़रमाया अगर नबी ने तुम पत्नियों को तलाक़ दी तो अल्लाह तआला अपने नबी के लिए तुम से बेहतर पत्नी की व्यवस्था कर देगा और वे इन गुणों से सुसज्जित होंगी। यह इस बात का प्रोत्साहन था कि आदरणीय पत्नी अपने अन्दर ये गुण पूरे तरीक़े से पैदा करने की कोशिश करें।

6. सय्याहत (भ्रमण) का अर्थ वह सफ़र है जो इबादत के उद्देश्य से किया जाए। (देखिए लिसानुल अरब जिल्द २ पृष्ठ ४९४) जैसे हिजरत, हज्ज, जिहाद आदि का सफ़र।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट २०५

7. पति (को देख लेने) वाली औरतें जिन की तलाक़ हो गई हो या जिन के पति का देहांत हो गया हो, असाधारण गुणों वाली हो सकती हैं और इस कारण वे सम्मान एवं आदर की भागीदार हैं।



6. ऐ ईमान वालो ! अपने को और अपने परिवारजनों को उस आग से बचाओ ⁸ जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर होंगे । ⁹ जिस पर कठोर स्वभाव के कठोर फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो अल्लाह के आदेश की अवज्ञा नहीं करते और जो आदेश भी उन्हें दिया जाता है उस का वे अनुपालन करते हैं। ¹⁰

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَتُؤَدُّهَا
النَّاسُ وَالْجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غُلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ
اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ⑧

7. ऐ काफ़िरों ! आज उम्र न पेश करो । तुम्हें ऐसा ही बदला दिया जा रहा है जैसा तुम अमल करते रहे । ¹¹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْرُونَ
مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑨

8. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के समक्ष तौबा करो, ख़ालिस तौबा। ¹² असंभव नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुम से दूर कर दे और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी। ¹³ जिस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को, जो उस के साथ ईमान लाए हैं रुसवा नहीं करेगा। उन का नूर उन के आगे और उन के दाएँ जानिब दौड़ रहा होगा। वे दुआ कर रहे होंगे कि ऐ हमारे रब ! हमारा नूर हमारे लिए मुकम्मल कर दे। ¹⁴ और हमें बख़्श दे, तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَلَى
رَبِّكُمْ إِنَّ يُكْفَرُ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَبَدِّلْ خَلْقَكُمْ جَدِّتْ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
نُورُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا آتِنَا لَنَا
نُورَنَا وَاعْمُرْ لَنَا أَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑩

9. ऐ नबी ! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो। ¹⁵ उन का ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है पहुँचने की ।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ
وَمَا لَهُمْ بِهِمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑪

10. अल्लाह काफ़िरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह और लूत की पत्नियों की। दोनों हमारे नेक बन्दों के निकाह में थीं। परन्तु उन्होंने ने उन के साथ बेवफ़ाई की तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उन के कुछ भी काम न आ सके। और दोनों औरतों से कह दिया गया कि तुम भी आग में दाखिल होने वालों के साथ दाखिल हो जाओ। ¹⁶

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ وَامْرَأَتَ
لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ
فَخَانَتَهُمَا فَأَلَمَ يُعَذِّبْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَفِيلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ⑫

8. अर्थात् जहन्नम की आग से अपने को भी बचाने का सामान करो और अपनी पत्नी तथा बच्चों को भी बचाने की कोशिश करो। एक मुसलमान की अपने परिवारजनों के प्रति बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। वह अपने बीवी बच्चों को उन बातों से खबरदार करे जो जहन्नम में ले जाने वाली हैं। उन्हें दीन की सही जानकारी उपलब्ध कराए, अल्लाह के आदेशों से उन्हें परिचित कराए, जितने फ़र्ज (अनिवार्य इबादतें) हैं उन की विशेष रूप से नमाज़ की पाबन्दी की ताकीद करे, बुराइयों से बचने की हिदायत करे और घर का माहौल ऐसा बनाए कि बाल बच्चे सही इस्लामी साँचे में ढल सकें। आजकल टी.वी. और वीडियो ने घरों का माहौल खराब कर के रख दिया है। इन चीज़ों पर कन्ट्रोल की अत्याधिक आवश्यकता है ताकि कोई बुरी चीज़ घर में देखी न जा सके।

बच्चों की ऐसी शिक्षा जिस से उन में दीन की समझ पैदा हो और उन का ऐसा प्रशिक्षण कि उन के दिलों में ईमान की रौशनी पैदा हो, नेक रवैया और सीधा रास्ता अपनाएँ तथा शरीफ़ और सुसभ्य बन कर रहें, हर मुसलमान की अपने घर के प्रति ज़िम्मेदारी है, परन्तु मुसलमानों का हाल यह है कि उन को अपने बच्चों के सांसारिक भविष्य (कैरियर) को उज्ज्वल करने की जितनी चिन्ता है उतनी उन को जहन्नम के अज़ाब से बचाने की नहीं। उन्हें क्रियामत के दिन एहसास होगा कि उन्होंने ने अपने बच्चों के प्रति कैसी ग़फलत बरती और किस क्रूर ग़ैर ज़िम्मेदारी का सबूत दिया।

9. जहन्नम का ईधन एक तो वे इन्सान होंगे जो कुफ़्र की मौत मरे, दूसरे वे पत्थर होंगे जो पूजे जाते रहे। अर्थात् बहुदेववादी अपने बुतों समेत जहन्नम में जलते रहेंगे ताकि उन्हें एहसास हो कि अल्लाह को छोड़ कर जिन की वे पूजा करते रहे वही उन को लेकर जहन्नम में पहुँचे और उन के लिए जहन्नम की आग को भड़का रहे हैं।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट ११४।

10. फ़रिश्तों की विशेषता यह है कि वे अल्लाह के ऐसे आज्ञापालक होते हैं कि उस के किसी भी आदेश की अवहेलना तथा अवज्ञा नहीं करते। दोज़ख़ पर जो फ़रिश्ते नियुक्त होंगे वे अत्यन्त कठोर स्वभाव के तथा कठोरता बरतने वाले होंगे इस लिए वे दोज़ख़वालों के साथ कोई नमी न बरतेंगे और उन को यातना देने का जैसा कुछ आदेश होगा वे अनुपालन करेंगे।

11. अर्थात् जहन्नम में जाने वाले काफ़िर अपने कुफ़्र और शिर्क के बारे में तरह तरह के कारण और बहाने प्रस्तुत

करने लगेंगे किन्तु उन से कहा जाएगा कि अब उज़्र पेश करने से कोई लाभ नहीं है। तुम पर कोई अन्याय नहीं किया जा रहा है। बल्कि तुम अपने किये की सज़ा भुगत रहे हो।

12. ख़ालिस तौबा का अर्थ है ऐसी तौबा जो सच्चे दिल से गुनाह पर ग़लानि तथा पछतावे के साथ और आगे ऐसा पाप न करने के इरादे से की गई हो। यह हुक्म सारे ईमान वालों को दिया गया है ताकि वे अपनी पिछली ग़लतियों को जो उन्होंने ने अपने बाल बच्चों के प्रति की हों, महसूस करें और अपना सुधार करें।

13. सच्ची तौबा का इनाम यह होगा कि अल्लाह तआला बुराइयों को मिटा देगा और जन्नत प्रदान करेगा।

14. इस नूर की व्याख्या सूरह हदीद नोट २२ में गुज़र चुकी।

15. काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करने और उन पर सज़ा करने का आदेश इस मुनासिबत से यहाँ दिया गया है कि यही लोग थे जो अल्लाह के आज्ञाकारी अर्थात् मुस्लिम समाज में उपद्रव, तथा विवाद करने के कुप्रयास करते थे। मुनाफ़िकों के सिलसिले में यह कड़ा आदेश उस समय उतरा जब कि उन की मुनाफ़िकत (पाखण्ड) और इस्लाम दुश्मनी बिलकुल खुल कर सामने आ गई थी। ऐसे खुले मुनाफ़िकों को जो सोसाइटी में फ़ित्ना और फ़साद बरपा करते रहते थे क्रल्ल तक की सज़ा देने और जहाँ उन का ग़रोह हो उन से जंग करने की हिदायत दी गई ताकि इस्लामी समाज को इन बिगड़े तत्वों से पाक किया जा सके। मुनाफ़िकों से जिहाद करने का यह आदेश तबूक की जंग के बाद सन ९ हिजरी में नाज़िल हुआ था। देखिए सूरह तौबा आयत ७३ नोट १४३

16. हज़रत नूह और हज़रत लूत नबी थे। उन की पत्नियों ने उन के साथ बेवफ़ाई की। यह बेवफ़ाई दीन के मामले में थी अर्थात् उन्होंने ने अपने पैग़म्बरों के दीन को दिल से स्वीकार नहीं किया और काफ़िरों की सहायक व समर्थक बनी रहीं। परिणाम यह कि वे अज़ाब (प्रकोप) की भागीदार हुईं और ये पैग़म्बर उन को अज़ाब से न बचा सके।

इन दो औरतों की मिसाल में बहुत बड़ी इबरत है और वह यह कि अल्लाह के यहाँ इनाम और दण्ड का मामला कर्म के आधार पर होता है। इस सिलसिले में रिश्तेदारियाँ कुछ काम न आईं। यहाँ तक कि एक नबी की पत्नी भी अगर कुफ़्र करने वाली है तो सज़ा से नहीं बच सकती। हज़रत नूह और हज़रत लूत की पत्नियाँ अगर चाहतीं तो पैग़म्बरों की संगत का लाभ उठा कर बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकती थीं परन्तु कुफ़्र और बेवफ़ाई ने उन को जहन्नम में पहुँचा दिया।

11. और ईमान वालों के लिए अल्लाह फ़िरऔन की पत्नी की मिसाल पेश करता है जब कि उस ने दुआ की ऐ मेरे रब !मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और फ़िरऔन और उस के अमल से मुझे मुक्ति दे, और मुक्ति दे मुझे ज़ालिम क्रौम से।¹⁷

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِّنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِّنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

12. और मरयम बिनते इमरान की मिसाल पेश करता है जिस ने अपनी इस्मत (सतीत्व) की रक्षा की। फिर हम ने उस में अपनी रूह फ़ूँकी। उस ने अपने रब के कलिमों और उस की किताबों की पुष्टि की और वह आज्ञाकारी लोगों में से थी।¹⁸

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ لَهَا ذِكْرُ الْقُرْآنِ ۝

17. ऊपर दो काफ़िर औरतों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया था। यहाँ दो ऐसी औरतों का उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है जिन्होंने ईमान ला कर अत्याधिक उच्च आचरण का सबूत दिया जिस के सिले में उन को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ। उन में से पहली महिला फ़िरऔन की पत्नी है जो फ़िरऔन के साथ उस के महल में रहती थी जहाँ हर तरह के ऐश और आराम का सामान था किन्तु वह ईमान लाई थी इस लिए कुफ़्र का यह माहौल उसे पसन्द नहीं था। अतः महल में रहते हुए भी वह घुटन की ज़िन्दगी गुज़ार रही थी। उस के दिल से जो दुआ निकली वह उस के ईमानी भावनाओं तथा आख़िरत पर विश्वास की अभिव्यक्ति है। उस ने दुआ की कि ऐ मेरे रब मुझे आख़िरत के घर की अभिलाषी है तो मेरे लिए अपने पास घर बना दे और इस कुफ़्र और अन्याय के माहौल से मुझे मुक्ति दे। वह फ़िरऔन के पास रहने के लिए विवश थी और उस की संगत में रहने से उस की बहुत सी ग़लत बातें भी उस को सहन करनी पड़ रही होंगी। यह उस के लिए कड़ी परीक्षा थी इस लिए उस ने फ़िरऔन और उस के अमल से तथा उस ज़ालिम क्रौम से जिस का सर संचालक फ़िरऔन था, मुक्ति के लिए दुआ की।

इस उदाहरण से यह रहनुमाई मिलती है कि एक मुसलामान चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अगर काफ़िरों के माहौल में घिर गया हो तो उस का ईमान उस को विमुख कर देगा और वह उस की गंदगियों से बचने की कोशिश के साथ अल्लाह से बचाव व

मुक्ति के लिए दुआ करेगा।

18. यह दूसरी ईमान वाली महिला का उदाहरण है जो सच्चाई, सतीत्व एवं पवित्रता की मूर्ति थीं। यह थी इमरान की बेटी हज़रत मरयम। उन को एक असाधारण परीक्षा से गुज़रना पड़ा। वह कुंवारी थीं किन्तु अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते को भेज कर उन के अन्दर रूह फूँक दी जिस से वे गर्भवती हो गईं। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बग़ैर बाप के पैदा हो गए। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा चमत्कार था जो हज़रत मरयम के द्वारा प्रकट हुआ। किन्तु इस सिलसिले में उन्हें जातिवालों की ओर से बहुत कुछ सुनना और सहन करना पड़ा। उन्होंने ने इस नाज़ुक मौक़े पर बड़े ही संयम और सहनशीलता से काम लिया और अल्लाह तआला ने उन की पाकीज़गी असाधारण तरीक़े से ज़ाहिर कर दी।

हज़रत मरयम ने उन कलियों की पुष्टि भी की जो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के द्वारा उन पर उतारे थे अर्थात् हज़रत ईसा के जन्म की खुशख़बरी दी थी और उन की पैदाइश के अवसर पर तथा उस के फ़ौरन बाद उन्हें विशेष निर्देश दिये गए थे जिन का ज़िक्र सूरह मरयम में हुआ है। वे उन किताबों पर भी ईमान रखती थीं जो नबियों पर नाज़िल हुईं और उन्होंने ने एक आज्ञाकारी ईमानवाली महिला की हैसियत से जीवन बिताया था। उन की महानता का द्योतक उन का यही मज़बूत और उच्च आचरण है और इस चरित्र व आचरण ने ही उन को उच्च स्थान पर आसीन किया।



सूरह
अल्-मुल्क

६७. सूरह अल्-मुल्क

नाम :- सूरह की शुरुआत ही में अल्लाह की बादशाही (मुल्क) का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-मुल्क” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरू दौर में जब कि विरोध का आरंभ हुआ था अवतारित हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- खुदा और आखिरत से ग़ाफ़िल इन्सानों को चौंका देना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में मौत और ज़िन्दगी का उद्देश्य बयान करते हुए आसमान और ज़मीन की सृष्टि और इस की व्यवस्था पर चिन्तन करने का न्योता दिया गया है जिस से कायनात के सृष्टा का परिचय भी प्राप्त होता है और इस बात की पुष्टि होती है कि मनुष्य का यह जीवन एक परीक्षा है।

आयत ६ से ११ में कुर्आन द्वारा प्रस्तुत की गई वास्तविकताओं का इन्कार करने वालों का आखिरत में होने वाला दुखद अन्जाम बयान किया गया है।

आयत १२ से १४ में उन लोगों का सुखद अन्जाम बयान किया गया है जो अपने रब से डरते रहते हैं और स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह मनुष्य की हर खुली और छिपी बात को जानता है और उस से कोई बात और कोई अमल चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो छिपा नहीं रह सकता।

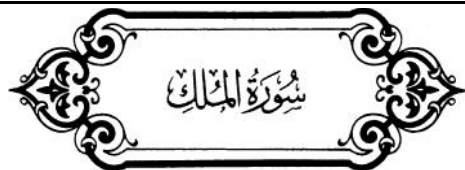
आयत १५ से सूरह के अन्त तक मनुष्य को सोच विचार की दअवत देते हुए उसे ग़फ़लत से चौंकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस कायनात पर विचार करेगा तो कुर्आन द्वारा प्रस्तुत की गई वास्तविकताएँ उस पर खुल जाएंगी और वह अपने जीवन लक्ष्य से परिचित हो जाएगा।

६७. सूरह अल्-मुल्क

आयतें : ३०

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. बड़ा बरकत वाला है ¹ वह जिस के हाथ में बादशाही है ² और वह हर चीज़ पर कादिर है।
2. जिस ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें आजमाए कि तुम में कौन अच्छा अमल करने वाला है।³ वह प्रभुत्वशाली भी है और क्षमा करने वाला भी।⁴
3. जिस ने सात आसमान तह दर तह बनाए।⁵ तुम रहमान की रचना में कोई खलल न पाओगे।⁶ फिर निगाह दौड़ाओ तुम्हें कहीं खलल (त्रुटि) नज़र आता है ?
4. फिर बार बार निगाह दौड़ाओ, तुम्हारी निगाह थक कर नाकाम वापस आएगी।⁷
5. हम ने आसमाने दुनिया को चिरोगों से सजाया और उन को शैतानों पर मार का साधन बनाया है।⁸ और उन के लिए भड़कती आग का अज़ाब भी तैयार कर रखा है।⁹
6. जिन लोगों ने अपने रब से कुफ़्र किया।¹⁰ उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है। और वह बहुत बुरा ठिकाना है।
7. जब वे उस में फेंके जाएंगे तो उस के दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे, और वह जोश मारती होगी।¹¹
8. प्रकोप की भीषड़ता से फटी जाती होगी।¹² हर बार जब कोई गिरोह उस में डाला जाएगा, उस के मुहाफ़िज़ (पहरेदार) उन से पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया था ?¹³



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ②

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَفَوُّتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى مِنْ فُطُورٍ ③

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ④

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑤

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَيُسَّ الْمَصِيرُ ⑥

إِذَا الْقُوفُ فِيهَا سَمْعُوهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ⑦

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أَلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑧

1. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फुरकान नोट १
 2. अर्थात् जिस के हाथ में कायनात की बागडोर है और जिस का शासन अत्यंत प्रतापी एवं वैभवशाली है।
 3. इन्सान की मौत और ज़िन्दगी का सिलसिला यूँ ही नहीं चल रहा है, बल्कि अल्लाह ने ये दोनो चीज़ें पैदा की हैं और इन की पैदाइश में महान निति निहित है और वह यह कि मनुष्य को दुनिया में परीक्षा से गुज़ारा जाए। उसे अच्छा या बुरा बनने का अवसर दिया जाए और फिर देखा जाए कि कौन अपने को नेक सिद्ध करता है। जो लोग नेक बनेंगे वे मानवता के दक्षता होंगे। अल्लाह उन का गुणग्राहक होगा और वह उन को ऐसे इनामों से अलंकृत करेगा कि वे खुश हो जाएंगे। वे सदाबहार जन्नतों में हमेशा हमेशा के लिए दाखिल किए जाएंगे। और जो कर्म की दृष्टि से जितना उत्तम होगा उतना ही उच्च स्थान वह अल्लाह के यहाँ पायेगा। यह बहुत बड़ा सकारात्मक उद्देश्य है जिस के लिए दुनिया की ज़िन्दगी परीक्षा की ज़िन्दागी बनाई गई है।
- आयत में ज़िन्दगी से पहले मौत की चर्चा की गई है जो मौक़े की मुनासिबत से है। मौत अत्याधिक कटु है जब कि ज़िन्दगी कटु के साथ साथ रसीली भी है। मौत की कटुता ही है जो ग़फ़लत से चौंकाने का काम करती है। हदीस में आता है :-

اَكْثَرُ وَاذِ كَرِهَاتِ الْمَوْتِ
يَعْنِي الْمَوْتَ - (ترمذی ابواب الزهد)

अर्थ :- “रस को समाप्त करने वाली चीज़ को याद करो अर्थात् मौत को” (तिर्मिज़ी अबवाबुज़्जुहद)

फिर मौत में इस पहलू से भी परीक्षा है कि मनुष्य हलाल मौत मरता है या हराम। कष्टों तथा मुसीबतों से आजिज़ आ कर आत्महत्या करता है या अपनी मौत मरता है। अपने को हराम मक़सद के लिए कुर्बान करता है या अल्लाह की राह में शहीद होता है।

4. वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस की पकड़ से डरो और वह क्षमा करने वाला है इस लिए उस की क्षमा की ओर दौड़ो। मतलब यह है कि उस की पकड़ से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारो और अपने पापों के लिए उस से क्षमा चाहो तो वह ज़रूर तुम्हें क्षमा करेगा।

5. यह आसमान जो ज़मीन के ऊपर हर तरफ फैला हुआ है, पहला आसमान है। हम इस खोल के अन्दर बन्द हैं। यद्यपि इस खोल के अन्दर बड़ी बड़ी आकाश गंगाएँ हैं और ऐसे सितारे भी हैं जो हजारों प्रकाश वर्ष की दूरी पर हैं। इस विशालता के बावजूद यह कायनात इस खोल तक सीमित नहीं है बल्कि इस तरह सात आसमानों वाली यह कायनात अत्यंत विशाल है।

सात आसमानों की कल्पना से इस कायनात की विशालता का एक हल्का सा नक्शा उभरता है वरना इस की विशालता का सही अनुमान करने से हम असमर्थ हैं।

विज्ञान की पहुँच पहले आसमान तक भी नहीं हो सकी है। जिस खोल में हम बन्द हैं उसी के अन्दर वह अपने कारनामे दिखा रही है।

6. रहमान की रचना कहने में यह बात निहित है कि आसमानों की यह रचना अल्लाह की रहमत का व्यक्तिकरण है। और इस रचना का कमाल यह है कि इस में जरा भी कोई चीज़ अनुचित वा असंगत नहीं है। आसमानी जगत का अवलोकन करो। अत्यन्त विशाल और सुन्दर छत है जो अपने टिमटिमाते तारों के साथ सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करती है। इस में असंख्य तारे हैं किन्तु हर चीज़ अपनी जगह बिलकुल ठीक फिट है। त्रुटि अथवा खलल की किसी जगह भी निशानदेही नहीं की जा सकती।

यह मज़मून सूरह काफ़ आयत ६ में भी गुज़र चुका।

7. आसमान का अवलोकन करने की बार बार दअवत दी गई है और चैलेन्ज के साथ कहा गया है कि तुम्हारी निगाहें थक जाएंगी किन्तु तुम इस आसमानी जगत में किसी त्रुटि अथवा किसी खलल की निशानदेही न कर सकोगे। अन्तरिक्ष वैज्ञानिक बड़ी बड़ी दूरबीनों के द्वारा आसमानी तारों का अवलोकन करते रहते हैं किन्तु वे कहीं किसी त्रुटि या खलल की निशानदेही नहीं कर सके।

फिर इस कारीगरी का कमाल यह है कि उस की रचना को एक लम्बी अवधि गुज़र चुकी है इस के बावजूद इस में कोई खराबी पैदा नहीं हुई है। क्या यह एक रचायिता की अथाह कुदरत की स्पष्ट निशानी नहीं है?

8. सितारे एक ओर तो आकाश में सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करते हैं तो दूसरी तरफ़ उन से आग के शोले (शहाब) निकलते हैं जो आसमान की ओर उड़ान भरने वाले शैतानों का पीछा करते हैं और उन की मार उन पर पड़ती है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट १६

9. अर्थात् इन शैतानों के लिए आखिरत में भड़कती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है। वे उस जहन्नम में झोंक दिए जाएंगे। शैतान के इस अन्जाम से आगाह करने का मतलब यह है कि लोग इन के फरेब में आ कर और उन के पीछे चलकर इसी अन्जाम को न पहुँच जाएँ।

10. अपने रब से कुफ़्र करने का केवल यही मतलब नहीं कि आदमी खुदा के होने का इन्कार करे। बल्कि इस का मतलब खुदा को उस के समस्त गुणों के साथ न मानना है। दुनिया की बहुत बड़ी संख्या खुदा के होने को स्वीकारती है किन्तु कुर्आन

उस के जो गुण बयान करता है जैसे कि उस का असीम सामर्थ्यवान होना, पूज्य होना, नातिज्ञ होना, व्यवस्थापक होना, पूरी कायनात का एक मात्र शासक होना, हिदायत देनेवाला होना, न्याय करने वाला होना, इनाम और दण्ड देने वाला होना आदि इन का इन्कार करती है। इस लिए उन का खुदा को मानने का दम भरना कोई अर्थ नहीं रखता वे उस के गुणों तथा उस की विशेषताओं का इन्कार कर के काफ़िर बनते हैं।

11. जहन्नम का यह चित्रण ऐसा है जो रौंगटे खड़ाकर देने

वाला है। उस का जोश मारना और दहाड़ना कितना भीषणतम भयावह होगा।

12. दुनिया में मनुष्य एक बम धमाके की आवाज़ सहन नहीं कर पाता फिर उस का क्या होगा यदि वह जहन्नम में झोंक दिया गया जिस में ऐसे भीषण धमाके होंगे कि वह फट पड़ने को होगी।

13. अर्थात् अल्लाह का रसूल जो तुम्हें इस दिन से सावधान करता।



वे जवाब देंगे, हाँ ख़बरदार करने वाला हमारे पास आया था किन्तु हम ने उसे झुठला दिया और कहा अल्लाह ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया है। तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख वालों में शामिल न होते। इस तरह वे अपने गुनाह को स्वीकारेंगे, तो लानत है दोज़खियों पर। जो लोग बे देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए क्षमा और बड़ा अज़्र (इनाम) है। तुम अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो, वह तो दिलों के राज़ भी जानता है। (अल-कुर्आन)

9. वे जवाब देंगे, हाँ खबरदार करने वाला हमारे पास आया था किन्तु हम ने उसे झुठला दिया और कहा अल्लाह ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया है। तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنَّا أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ⑩

10. और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख वालों में शामिल न होते ।¹⁴

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑪

11. इस तरह वे अपने गुनाह को स्वीकारेंगे, तो लानत है दोज़खियों पर।

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑫

12. जो लोग बे देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए क्षमा और बड़ा अज़्र (इनाम) है ।¹⁵

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑬

13. तुम अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो, वह तो दिलों के राज़ भी जानता है।¹⁶

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑭

14. क्या वह न जानेगा जिस ने पैदा किया है ?¹⁷ वह बड़ा सुक्ष्मदर्शी ¹⁸ और खबर रखने वाला है।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ⑮

15. वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को वशीभूत किया,¹⁹ चलो उस के कंधो पर ²⁰ और खाओ अल्लाह के रिज़क़ में से।²¹ उसी के समक्ष उठ खड़े होना है ।²²

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ⑯

16. क्या तुम उस से, जो आसमान में है ²³ निर्भय हो गए हो कि तुम्हें ज़मीन में धँसा दे और वह यकायक हिलने लगे।²⁴

أَمْ أَنْتُمْ مِّن فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخُسِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ⑰

17. क्या तुम उस से, जो आसमान में है निर्भय हो गए हो कि तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे ?²⁵ फिर तुम्हें मालूम हो जाए कि मेरी तंबीह कैसी होती है।

أَمْ أَنْتُمْ مِّن فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٌ ⑱

18. इन से पहले गुज़रे हुए लोग भी झुठला चुके हैं तो देख लो कैसा रहा मेरा अज़ाब (प्रकोप)।²⁶

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ⑲

14. काफ़िरों को जहन्नम में पहुँच कर एहसास होगा कि हम ने दुनिया में रसूल की नसीहत सुनने के लिए अपने कान बन्द कर लिए थे और अपनी बुद्धि पर ताला लगा रखा था। अगर इन का हम ने सदुपयोग किया होता तो आज इस अन्जाम को न पहुँचते।

15. ऊपर काफ़िरों का अन्जाम बयान हुआ था। इस आयत में अल्लाह से डरने वालों को खुशखबरी दी गई है कि उन के लिए बेहतरीन इनाम है।

अपने ख से डरना जब कि वह दिखाई नहीं देता एक ईमान वाले की बहुत बड़ी विशेषता है।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह काफ़ नोट ३९

16. इस लिए उस से न कोई छोटी से छोटी नेकी छिपी रह सकती है और न छोटे से छोटी बदी। और न उस से मन में उठने वाली नीयतें, इरादे, और अच्छी बुरी भावनाएँ छिपी रह सकती हैं।

17. यह दलील है इस बात की कि अल्लाह अपने बन्दों का हाल पूरी तरह जानता है। दलील यह है कि वह उन का सृष्टा है। और यह बात किस तरह संभव है कि जो सृष्टा है वह अपनी सृष्टि से अनभिज्ञ होगा।

18. अर्थात् वह बहुत छोटी छोटी और मामूली बात को जानता है, उस का ज्ञान बहुत गहरा है। कोई बारीक से बारीक, तथा सुक्ष्म से सुक्ष्म चीज़ भी उस से छिपी नहीं रह सकती। वह छोटी और बड़ी सब ही चीज़ों को अपने घेरे में लिये हुए हैं।

19. अर्थात् ज़मीन को इस लायक बनाया कि तुम उस पर चलो फ़िरो, रहो बसो और खेती बाड़ी करो।

20. अर्थात् इस की बुलन्दियों पर चलो फ़िरो। ज़मीन की बुलन्दियों को उस का कंधा कहा गया है और बुलन्दियों पर चलने फिरने का ज़िक्र इस मुनासिबत से हुआ है कि यह बात उस के वशीभूत होने के पक्ष को अच्छी तरह स्पष्ट करती है वरना ज़मीन के धरातल पर चलना तो स्पष्ट ही है।

21. अर्थात् रिज़क का जो सामान अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन में फैला दिया है उस में से खाओ।

22. परन्तु यह बात न भूलो कि एक दिन अल्लाह के समक्ष

उपस्थित होना है और इन नेमतों के बारे में जवाबदेही करनी है और फिर अपने कर्मों के अनुसार ईनाम या दण्ड पाना है।

23. अल्लाह का आसमान में होना उस के सर्वोच्च होने की उपमा है। एक साधारण मनुष्य खुदा के लिए आसमान ही की तरफ़ इशारा करता है। यह उपमा इस दृष्टि से भी सही है कि अल्लाह का सिंहासन आसमानों के ऊपर है वरना दूसरे पहलू से देखिए तो अल्लाह हर जगह है वह असीमित और हर जगह है।

24. इस आयत में और इस के बाद की कुछ आयतों में लोगों को सोचने तथा विचार करने का निर्मंत्रण दिया गया है। और उन को ग़फ़लत से चौंकाने का सामान किया गया है। क्या यह बात संभव नहीं है कि अल्लाह किसी समय भी ज़मीन को भूकंप से कंपित कर दे और इस पर रहने वाले इस के अन्दर धँस जाएँ? यह न केवल संभव है बल्कि इस तरह की अकस्मात घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है। और आज भी किसी न किसी क्षेत्र में भूकंप के झटके महसूस होते रहते हैं और बस्तियाँ उलट जाती हैं।

ये पंक्तियाँ जब कि लिखी जा रही हैं महाराष्ट्र के जिला लातूर और उस्मानाबाद में भूकंप के विनाश की घटना बिलकुल ताज़ा है। कुछ ही सेकन्ड के झटके में तीस हजार लोग मौत की नींद सो गए और कई बस्तियाँ लगभग नष्ट हो गईं जिन में से एक किलारी गाँव ही में पाँच हजार लोगों के मकान क़ब्रस्तान में परिवर्तित हो गए और वे उन के मलबे के नीचे दब कर विनष्ट हो गए। यह और इस तरह की घटनाएँ जो आए दिन किसी न किसी क्षेत्र में घटित होती रहती हैं क्या इन्सान की आँखें खोल देने के लिए क़ाफ़ी नहीं हैं। परन्तु मनुष्य की ग़फ़लत ऐसी है कि वह ऐसी घटनाओं के भौतिक कारणों को ढूँढ़ने व बताने में जूझने लगता है और इन में इबरत का जो पहलू है उस से आँखें बन्द कर लेता है। ऐसी सूरत में उस को हिदायत किस तरह मिल सकती है?

25. लूत की जाति पर पत्थरों, कंकरो की बारिश हुई थी। अज़ाब (प्रकोप) इस रूप में भी सामने आ सकता है और भीषण आँधी के रूप में भी जिस में बालू हो।

26. इशारा है आद, समूद, लूत और फ़िरऔन की जातियों की तरफ़।

19. क्या इन्होंने ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाए और उन को समेटते हुए नहीं देखा? रहमान के सिवा कोई नहीं जो इन को थाम लेता हो।²⁷ वही हर चीज़ का निगराँ है।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفًى وَيَقْبِضُنَّ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ①

20. बताओ तुम्हारे पास वह कौन सा लश्कर है जो रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सकेगा?²⁸ ये काफ़िर धोखे में पड़े हुए हैं।

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدُكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ
الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ②

21. बताओ वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वह अपना रिज़क़ रोक ले ?²⁹ वास्तव में यह लोग उद्दण्डता और (सत्य से) विमुखता पर अड़ गए हैं।³⁰

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْمِيكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَجُّوا
فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ③

22. क्या वह व्यक्ति जो औंधे मुँह चल रहा हो, राह पाने वाला है या वह जो एक सीधी राह पर सीधा चल रहा है?³¹

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ
يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ④

23. कहो वही है जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाए। (मगर) तुम कम ही शुक्र अदा करते हो।³²

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ
وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ⑤

24. कहो वही है जिस ने तुम को ज़मीन में फैलाया है और उसी की तरफ़ तुम इकट्ठे किये जाओगे।³³

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ⑥

25. ये लोग कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब पूरा होगा ?³⁴

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑦

26. कहो इस का ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है।³⁵ मैं तो बस खुला ख़बरादार करने वाला हूँ।

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ⑧

27. जब वे उस को³⁶ करीब देख लेंगे तो उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने ने इन्कार किया है और उन से कहा जाएगा यही है वह चीज़ जो तुम तलब कर रहे थे।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ
هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ⑨

28. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को विनष्ट कर दे या हम पर रहम करे तो काफ़िरों को दुखदायिनी यातना से कौन पनाह देगा ?³⁷

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ
يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ⑩

27. हवा में किसी सहारे के बगैर परिन्दों का अपने पंरों को फैलाकर उड़ना और उड़ते हुए उन को सुकेड़ लेना और इस हालत में उन का ज़मीन पर न गिरना कितना विचित्र है? एक बुद्धि रखने वाला व्यक्ति यह महसूस किये बगैर नहीं रहेगा कि यह दयावान ईश्वर की दया व अनुकंपा का प्रदर्शन है।

28. अर्थात् कोई व्यक्ति बड़े लश्करो वाला भी है तो वह अल्लाह के अज़ाब (प्रकोप) से कहाँ बच सकता है। फिरऔन को पानी में डूब जाने से उस का भारी लश्कर बचा न सका। वह भी उस के साथ डूब गया।

बहुदेववादी अपने पूज्यों को अपना मुहाफ़िज़ (संरक्षक) समझते हैं परन्तु जब अल्लाह का अज़ाब आता है तो ये सब ग़ायब हो जाते हैं।

29. रिज़क़ (रोज़ी) देने वाला अल्लाह ही है। वह अगर रिज़क़ रोक दे तो कोई नहीं जो रिज़क़ दे सके मिसाल के तौर पर बारिश को जो रिज़क़ का महत्वपूर्ण साधन है अगर अल्लाह रोक दे तो कौन है जो बारिश बरासाए।

30. अर्थात् इन सब बातों में जिन्हें रात दिन तुम अपनी आँखों से देखते रहते हो, तौहीद (एकेश्वरवाद) की निशानियाँ बिल्कुल स्पष्ट हैं किन्तु ये लोग इस बात पर हठी हैं कि वे अल्लाह के अनुपालन को स्वीकार नहीं करेंगे बल्कि अपनी मनमानी करेंगे। उन्हें सत्य से कोई दिलचस्पी नहीं बल्कि उस से नफ़रत है क्योंकि सत्य को स्वीकार करने की सूरत में वे अपनी मन मानी नहीं कर सकते।

31. यह मिसाल है उस व्यक्ति की जो गुमराही की राह चलता है और उस की जो हिदायत की राह चलता है। अपने स्वभाव के विरुद्ध चलने वाला हमेशा उल्टा चलता है और

पशुओं की भाँति हमेशा अपना सर ज़मीन की ओर झुकाए रहता है किन्तु अपने स्वभाव (जिस में एक ईश्वर के सामने शीघ्र झुकाने का भाव निहित है) पर चलने वाला व्यक्ति हमेशा सीधा चलता है और उस की निगाहें बुलंदी की तरफ़ उठती हैं।

32. अर्थात् अल्लाह ने देखने, सुनने और समझने की शक्ति इस लिए प्रदान की है ताकि तुम इन की क़द्र करो और इन का सही इस्तेमाल कर के उस के कृतज्ञ बन्दे बन जाओ। परन्तु लोगों में यह एहसास कम ही पाया जाता है। वे अल्लाह की उस बख़्शिश की क़द्र नहीं करते और इन क्षमताओं को सत्य सुनने और सत्य समझने के लिए इस्तेमाल नहीं करते।

33. अल्लाह ने ही अरबों ख़रबों मनुष्यों को ज़मीन पर आबाद किया है, और इस लिए किया है ताकि उन को परिक्षा की चक्की से गुज़ारा जाए और फिर क्रियामत के दिन सब को जीवित कर के अपने समक्ष ज़वाबदेही के लिए एकत्र किया जाए।

34. अर्थात् क्रियामत की घड़ी कब आएगी?

35. इस की व्याख्या सूरह लुकमान नोट ६० में गुज़र चुकी।

36. अर्थात् अज़ाब को ।

37. काफ़िर लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों के विनाश की इच्छा मन में पाले हुए थे और इस बात के इन्तिज़ार में थे कि कब उन का ख़ात्मा होता है। इस के ज़वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहने की हिदायत हुई कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को मौत दे भी देता है तो तुम अपने कुफ़्र की सज़ा से किस तरह बच सकोगे? हमारे जल्दी या देर से मरने के चलते तुम अल्लाह के अज़ाब से मुक्ति नहीं पा सकते जब कि तुम अपने कुफ़्र पर जमे हुए हो ।



29. कहो वह रहमान है जिस पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हम ने भरोसा किया है।³⁸ तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन है।

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ الْمَتَّابُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ
مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ③

30. कहो तुम ने यह भी सोचा कि अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए बहता हुआ पानी ले आए ?³⁹

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ④

38. इस सूरह में रहमान का शब्द कई बार आया है जो इस बात की ओर ध्यान ले जाता है कि उस की दया के चिन्हों को देखो जो हर तरफ फैले हुए हैं और उस पर ईमान ला कर उस की दया के भागीदार बन जाओ। अंत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी यह एलान फ़रमाया गया कि हम उस दयावान ईश्वर पर ईमान लाए हैं और उसी पर हम ने भरोसा कर के अपने को उस के हवाले कर दिया है। अतः उस की ओर से जो हिदायत मिलती है हम उसी का अनुपालन करते हैं।

39. सूरह की समाप्ति पर अल्लाह के पालनहार होने के

गुण पर विचार करने का न्योता दिया गया है ताकि शुक्र तथा कृतज्ञता की भावना उभरे। फ़रमाया पानी के ये जारी स्रोत जो तुम्हारे लिए बहुत बड़ी नेमत और तुम्हारे जीवन के लिए अति आवश्यक हैं यदि सूख जाएं और इन का पानी ज़मीन में इतना गहरा उतर जाए कि तुम इस को हासिल न कर सको तो कौन है जो तुम्हारे लिए पानी के स्रोत जारी कर देगा? अल्लाह के सिवा किसी के बस में यह बात नहीं है, और सच्चाई यह है कि नहीं है, तो फिर अपने वास्तविक प्रभु को छोड़ कर दूसरों को जो बिल्कुल बेबस हैं क्यों अपना रब और पूज्य बनाते हो?



सूरह अल्-क़लम

६८. सूरह अल्-क़लम

नाम :- शुरु में क़लम का ज़िक्र हुआ है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-क़लम” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है यह उस समय नाज़िल हुई जब कि कुरैश ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वहय और रिसालत के दावे के आधार पर दीवाना कहा।

केन्द्रीय विषय :- जो लोग वहय और रिसालत का निरादर करते हैं और रसूल को दीवाना कहते हैं उन्हें उन के दुनिया और आखिरत में होने वाले भयावह अन्जाम से खबरदार कर देना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में स्पष्ट किया गया है कि आप किस चोटी के आदमी हैं। और वे लोग जो आप के विरोध में आगे आगे हैं और आप को दीवाना कह रहे हैं कैसे निचले दर्जे के लोग हैं और कैसी गिरावट में पड़े हुए हैं।

आयत १७ से ३३ में एक बाग़ वाले की मिसाल इबरत के लिए पेश की गई जिन्होंने ने अल्लाह की नाशुक्री की जिस के फलस्वरूप वे बाग़ की नेमत से महरूम हो कर रह गए।

आयत ३४ से ३६ में तक्रवा अपनाने वालों को जन्नत की

खुशख़बरी दी गई है और इस बात की नामाकूलियत को स्पष्ट किया गया है कि आखिरत को नकारने वालों की नज़र में अज्ञाकारी (मुस्लिम) और अवज्ञाकारी (अपराधी) सब बराबर हैं।

आयत ३७ से ४१ में इन्कार करने वालों की विचार धाराओं को ग़लत होना स्पष्ट किया गया है।

आयत ४२ और ४३ में इन्कार करने वालों को सावधान किया गया है कि आज उन्हें अल्लाह को सज़्दा करने के लिए कहा जाता है तो वे इन्कार करते हैं किन्तु एक दिन आने वाला है जब लोगों को सज़्दा करने के लिए बुलाया जाएगा तो ये लोग सज़्दा न कर सकोगे और उन पर ज़िल्लत छाई होगी।

आयत ४४ से ४७ में अल्लाह की तदबीर से उन्हें आगाह करते हुए उन की नामाकूलित उन पर स्पष्ट की गई है।

आयत ४८ से ५० में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों के विरोध पर सब्र करने का उपदेश है।

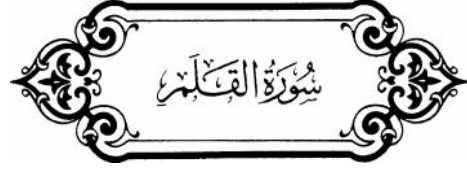
आयत ५१ और ५२ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में स्पष्ट किया गया है कि आप जो कलाम पेश कर रहे हैं वह दीवानगी नहीं बल्कि वह अल्लाह का कलाम है जो सारे इन्सानों के लिए सरारस नसीहत है।

६८. सूरह अल्-क़लम

आयतें : ५२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. नून ^१ क़सम है क़लम की और उस चीज़ की जिसे वे लिखते हैं।^२
2. तुम अपने रब के फ़ज़ल (अनुग्रह) से दीवाने नहीं हो।^३
3. और तुम्हारे लिए निश्चय ही ऐसा अज़्र है जो कभी ख़त्म न होगा।^४
4. और निस्संदेह तुम अज़ीम अख़लाक़ (शील स्वभाव) के मरतबे पर हो।^५
5. तो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और वे भी देख लेंगे।
6. कि तुम में से कौन जुनून में मुब्तिला है।^६
7. तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन उस की राह से भटका हुआ है। और वह उन लोगों को ख़ूब जानता है जिन्होंने हिदायत पाई है।
8. अतः तुम इन झुठलाने वालों की बात न मानो।
9. ये तो चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ो तो यह भी नर्म पड़ेंगे।^७
10. तुम ऐसे व्यक्ति की बात न मानो जो बहुत क़समें खाने वाला ^८ और ज़लील है।
11. कटाक्ष करने वाला, ^९ चुगलखोर।^{१०}
12. ख़ैर (भलाई) से रोकने वाला, ^{११} ज़्यादती करने वाला, ^{१२} गुनाहों में लिप्त।^{१३}



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ①

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ②

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ③

وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ④

فَسَبِّحْهُ وَبُصِّرْهُ ⑤

بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُونُ ⑥

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ⑦

وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ⑧

فَلَا تَطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ⑨

وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ⑩

وَلَا تَطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ⑪

هَٰذَا مَثَلٌ ۖ نَّبَيِّمُ ⑫

مَثَلًا لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَتِيهِ ⑬

1. यह विभक्त अक्षरों में से है जिन की व्याख्या सूरह बक्रर: नोट १ और सूरह युनूस नोट १ में गुजर चुकी।

इस सूरह में आयतों की तरतीब (क्रम) ऐसी है कि कई आयतों का आखिरी अक्षर “नून” है और सूरह की इसी विशेषता की तरफ यह नून जो शुरू में आया है इशारा करता है। इस में कुर्आन के चमत्कार का पहलू भी है और जबानी याद करने के लिए आसान होने का पहलू भी। और सब से बड़ी बात यह है कि इस अक्षर की तिलावत एक आकर्षक ध्वनि पैदा कर देती है और दिल कलाम की ओर आकृष्ट हो जाता है।

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्आन का जो भी हिस्सा नाज़िल होता आप उस को लिखवाने की व्यवस्था करते। वहय लिखने वाले उसे क़लम से चमड़े की झिल्लियों आदि पर लिखते। इस तरह कुर्आन क़लम के माध्यम से लिखा जा रहा था और उस के पन्नों को पढ़ कर उस के अल्लाह के कलाम होने की ओर से इत्मीनान हासिल किया जा सकता था। यहाँ क़लम और लिखने की जो क्रसम ख़ाई गई है वह कुर्आन के अल्लाह के कलाम होने के साक्ष्य के रूप में हैं और जैसा कि अन्य जगहों पर स्पष्ट किया जा चुका है, अरबी में ऐसे मौक़े पर क्रसम साक्ष्य और तर्क के अर्थ में होती है।

आयत का मतलब यह है कि कुर्आन का अवतरण यद्यपि एक अनपढ़ (उम्मी) जाति में हुआ है परन्तु इस बात की पूरी तैयारी की गई है कि वह लिखित रूप में आए और लोगों तक अल्लाह का कलाम अपने असली रूप में पहुँचे और हमेशा हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाए। अब कोई व्यक्ति भी इन पन्नों का अध्ययन कर सकता है। इस के मज़मून खुद गवाही देते हैं कि यह अल्लाह का कलाम है।

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ये काफ़िर दीवाना कहते थे इस कारण कि आप इस बात का दावा करते हैं कि आसमान से आप पर वहय आती है। उन के इसी आरोप का खण्डन अल्लाह तआला ने किया है कि अल्लाह का रसूल उस के अनुग्रह से दिवाना नहीं है, बल्कि जो कलाम वह पेश कर रहा है वह वास्तव में वहय है जिस को अल्लाह ने उस पर उतारा है। और उस के वहय होने का सबूत स्वयं उस के मज़मून में है जिस को सही तरह लिखने की तैयारी की गई है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज़्र नोट ८।

4. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ढारस है कि काफ़िरों के इस आरोप पर आप सब्र करें। अल्लाह तआला आप को ऐसा बदला प्रदान करने वाला है जिस का सिलसिला कभी समाप्त न होगा अर्थात् ऐसा ईनाम जो हमेशा बाक़ी

रहेगा।

5. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने शील स्वभाव, अपने चरित्र वा आचरण दृष्टि से बहुत ऊँचे मरतबे पर थे। ऐसे महान व्यक्ति पर दीवाना होने का आरोप लगाना अत्यंत अनुचित तथा सत्य के विपरीत बात थी। इस के खण्डन में यहाँ आप के शील स्वभाव की महानता के पहलू को उजागर किया गया है। क्या कोई दीवाना व्यक्ति शील स्वभाव तथा उच्च आचरण का हो सकता? अगर नहीं तो आप का उच्च आचरण और शील स्वभाव इस आरोप के खण्डन के लिए काफ़ी है।

कुर्आन और हदीस के अलावा इतिहास के पन्नों में आप की जीवनी बिल्कुल सुरक्षित है और इतने विस्तार के साथ सुरक्षित है कि आज भी हम इतिहास के पन्नों में आप के व्यक्तित्व को इस तरह देख सकते हैं कि जैसे आप हमारे बीच मौजूद हैं। इतिहास के ये पन्ने एक ऐसे व्यक्तित्व को पेश करते हैं, जो सुदृढ़ संकल्प रखने वाला, उच्च आचरण, पवित्र जीवनी तथा ऐसा महान है कि समूचा विश्व उस का उदाहरण प्रस्तुत करने में असमर्थ है।

6. अर्थात् अतिशीघ्र अन्जाम तुम्हारे सामने आएगा और तुम देख लोगे कि कौन दीवाना पन में लिप्त था काफ़िर जब अपने अन्जाम को देख लेंगे तो एहसास होगा कि वे स्वयं ही पागलपन में पड़े रहे थे कि अपने सच्चे हितैषी की बात नहीं सुनी और इस अन्जाम को पहुँच गए।

7. अर्थात् ये झुठलाने वाले चाहते हैं कि तुम अपने दीन के मामले में नर्म पड़ो तो वे भी नर्म पड़ें और ले दे कर के उसूल पर समझौता हो जाए परन्तु दीन के मामले में नरमी बरतने और किसी अन्य धर्मों वा जीवन प्रणालियों से समझौता करने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि सच्चा दीन वही है जो अल्लाह ने उतारा है। उस में जो कमी बेशी भी की जाएगी वह अल्लाह पर झूठ बाँधना होगा और इस के बाद यह दीन ख़ालिस नहीं रहेगा।

इस हुक्म का मंशा काफ़िरों पर यह स्पष्ट करना था कि अल्लाह का रसूल उस के आदेशों का पाबन्द है और उस से यह आशा हरगिज़ न रखें कि वह दीन के मामले में किसी समझौते (Compromise) के लिए आमादा हो जाएगा। यह ज़िम्मेदारी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों की भी है कि वह दीन और शरीअत के मामले में कड़े रहे और काफ़िरों के आगे न झुकें।

8. अधिक क्रसमें खाने वाला वही व्यक्ति होता है जो अपना विश्वास खो चुका होता है। काफ़िरों के लीडर झूठी क्रसमें खा खा कर लोगों को विश्वास दिलाते थे कि उन का

बहुदेववादी तथा मूर्तिपूजा वाला धर्म ही सच्चा धर्म है और इस व्यक्ति पर जो नुबुव्वत का दावा कर रहा है वहय हरगिज़ नहीं आती ।

9. कटाक्ष, ताना मारना तथा चुगलखोरी करना बहुत बुरी आदत है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को तुच्छ समझता है तथा हीन दृष्टि से देखता है। यहाँ इशारा इस बात की तरफ़ है कि यह कुस्वभावी व्यक्ति नेक व्यक्तियों पर भी उंगलिया उठा रहा है।

10. अर्थात् फ़साद के उद्देश्य से इधर की बातें उधर लगाने वाला। लोगों को आपस में लड़ाने के लिए उन की बातें नक़ल

करना और एक दूसरे के बारे में बुरी भावनाएँ उत्पन्न करना बहुत बुरी आदत तथा फ़साद खड़ा करने वाली हरकत है। आयत का ख़ास इशारा इस बात की तरफ़ है कि इस स्वभाव का व्यक्ति ईमान वालों की बातों को ग़लत रंग में लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर के उन्हें उन के विरुद्ध उकसा रहा है।

11. अर्थात् धन को भलाई के कामों में खर्च करने से रोकने वाला । तात्पर्य कंजूस है।

12. अर्थात् अन्याय व अत्यचार करने वाला।

13. अर्थात् जायज़ और नाजायज़ में अन्तर न करने वाला।



जब हमारी आयतें उस को सुनाई जाती हैं तो कहता है यह तो अगले लोगों के अफ़साने हैं। बहुत जल्द हम इस की सूँड पर दाग लगाएँगे। हम ने इन को उसी तरह आजमाइश में डाला है जिस तरह बाग़ वालों को आजमाइश में डाला था। जब उन्होंने ने क्रसम ख़ाई कि सुबह सवेरे ज़रूर इस के फल तोड़ेंगे। और इस्तिस्ना (अर्थात् कोई छट) नहीं कर रहे थे। वे अभी सोते ही पड़े थे कि तुम्हारे रब की तरफ़ से एक गर्दिश आई। (अल-कुर्आन)

13. क्रूर ¹⁴ और फिर बदनाम हैं।¹⁵

عُتِلَّ بَعْدَ ذَلِكَ زَيْمٌ ^{١٣}

14. (उस का घमण्ड) इस कारण है कि वह धन और सन्तान वाला है।¹⁶

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ^{١٤}

15. जब हमारी आयतें उस को सुनाई जाती हैं तो कहता है यह तो अगले लोगों के अफ़साने हैं।

إِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ^{١٥}

16. बहुत जल्द हम इस की सूँड पर दाग लगाएंगे।¹⁷

سَنَسِفُهُ عَلَى الْخُرُومِ ^{١٦}

17. हम ने इन को उसी तरह आजमाइश में डाला है जिस तरह बाग़ वालों को आजमाइश में डाला था।¹⁸ जब उन्होंने ने क़सम खाई कि सुबह सवेरे ज़रूर इस के फल तोड़ेंगे।

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ^{١٧}

18. और इस्तिस्ना (अर्थात् कोई छट) नहीं कर रहे थे।¹⁹

وَلَا يَسْتَنْثَوْنَ ^{١٨}

19. वे अभी सोते ही पड़े थे कि तुम्हारे रब की तरफ़ से एक गर्दिश आई।²⁰

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ^{١٩}

20. और वह कटी हुई खेती की तरह हो कर रह गया।²¹

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ^{٢٠}

21. सुबह उन्होंने ने एक दूसरे को पुकारा।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ^{٢١}

22. कि अगर फल तोड़ने हैं तो सुबह अपनी खेती पर पहुँच जाओ।²²

إِنْ أَغْدُوا عَلَى حَرْثِمْ إِنْ كُنْتُمْ صَٰرِمِينَ ^{٢٢}

23. अतः वे निकल गए और चुपके चुपके कहते जा रहे थे।

فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ^{٢٣}

24. कि आज कोई मिस्कीन इस में तुम्हारे पास दाखिल न होने पाये।²³

أَنْ لَا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِينٌ ^{٢٤}

25. वे सुबह सवेरे पक्के इरादे के साथ निकले कि वे ऐसा कर सकेंगे।²⁴

وَعَدُوا عَلَىٰ حَرْدٍ قَدِيرِينَ ^{٢٥}

26. परन्तु जब उस (बाग़) को देखा तो कहने लगे हम रास्ता भूल गए।

فَلَمَّارًا وَهَامِقًا الْوَإِلَآئِنَّا ضَالُُّونَ ^{٢٦}

14. अर्थात् क्रूर स्वाभावी, तथा झगड़ालू।
15. अर्थात् अपनी नैतिकता और क्रूरता के कारण बदनाम है और सोसाइटी का अत्यंत कमीना व्यक्ति है।
16. अर्थात् उस के घमण्ड ने उस के अन्दर ये दुर्गुण पैदा किया और वह घमण्ड में इस लिए पड़ गया कि अल्लाह ने उस को माल और औलाद प्रदान किया था हालाँकि उसे इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए था।
- इन आयतों में किसी खास काफ़िर का हाल बयान नहीं किया गया है बल्कि काफ़िरो के लीडरों का हाल बयान किया गया है कि एक ओर ऐसी खराब, अनैतिक और कमीना नेतृत्व है जो दअवत इस्लामी के खिलाफ़ लोगों को उकसा रही हैं और दूसरी ओर अल्लाह के रसूल की क्रियादत है, जो अत्यन्त श्रेष्ठ आचरण, और महान नैतिकता के शिखर पर हैं। अब तुम सोच लो कि तुम्हारा सच्चा रहनुमा कौन है?
17. अर्थात् उस के नाक पर अपमान का चिन्ह लगाएंगे। वह अहं से अपनी नाक ऊँची रखना चाहता है किन्तु ऐसे व्यक्ति की नाक मनुष्य की नाक नहीं बल्कि जानवर की सूँड है और इस लायक है कि उसे अपमान का मज़ा चखाया जाए।
18. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी नियुक्त किये जाने पर मक्का के काफ़िर आजमाइश में पड़ गए थे। अगर वे आप की दअवत को स्वीकार करते हैं तो उन पर दुनिया और आखिरत में सफलता का मार्ग खुलेगा और यदि वे इन्कार करते हैं तो उन पर दुनिया में भी अज़ाब आएगा और आखिरत

- में भी उन्हें हमेशा हमेश की यातना भुगतना होगी। इस सिलसिले में इब्रत के लिए एक बाग़ वालों की मिसाल पेश की गई है। यह मिसाल किसी बनावटी किस्से की नहीं है बल्कि वास्तव में घटने वाली एक घटना है। आगे बाग़ वालों की जो बात चीत दी गई है वह इस के सच्ची घटना होनी की गवाही देती है।
19. अर्थात् क्रसम खा कर पूरी दृढ़ता के साथ उन्होंने ने कहा कि वे सुबह सवेरे बाग़ के फल तोड़ेंगे और (इन्शाअल्लाह, अगर अल्लाह ने चाहा तो) न कहा। वे अल्लाह को भूल गए और मात्र अपने आप पर विश्वास के फ़रेब में पड़ गए।
20. अर्थात् उसी रात जब की वे सोते पड़े थे अल्लाह तआला ने उन के बाग़ पर आफ़त नाज़िल कर दी।
21. वह आफ़त ऐसी थी कि पूरा बाग़ तहस नहस हो कर रह गया।
22. बाग़ में खेती के लिए भी भूखण्ड होते हैं इस लिए इस को खेती कहा गया है।
23. यह उन की तरफ़ से बहुत बड़ी कंजूसी का प्रदर्शन था वे मिस्कीनों का हक़ अदा करना नहीं चाहते थे। हालाँकि अल्लाह तआला ने पैदावार में मिस्कीन का हक़ रखा है जिस का मूलभाव मनुष्य के स्वभाव में मौजूद है और वह इस से एक नेकी की हैसियत से परिचित है और शरीअत में इसे अदा करने की कड़ी ताकीद आई है। यह ताकीद पिछली शरीअतों में भी रही है।
24. अर्थात् वे सारे फल तोड़ कर अपने लिए रख लेंगे और किसी मोहताज़ को पास में फटकने का मौक़ा नहीं देंगे।



27. बल्कि हम महरूम हो कर रह गए।²⁵

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٥﴾

28. उन में जो व्यक्ति बेहतर था उस ने कहा मैं ने तुम से कहा न था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते ?²⁶

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٦﴾

29. वे पुकार उठे पाक है हमारा रब । हम ही कुसूरवार थे ।²⁷

قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٧﴾

30. फिर वे एक दूसरे को बुरा भला कहने लगे।²⁸

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلََاوُونَ ﴿٢٨﴾

31. उन्होंने कहा अफ़सोस हम पर ! हम ही उद्दण्ड हो गए थे।²⁹

قَالُوا يَوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾

32. उम्मीद है कि हमारा रब इस के बदले में हमें इस से बेहतर बाग़ प्रदान करेगा। हम अपने रब की तरफ़ रुजू करते हैं।³⁰

عَلَىٰ رَبِّنَا أَن يُّبَدِّلَ لَنَا خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٠﴾

33. इस तरह होता है अज़ाब ।³¹ और आखिरत का अज़ाब तो इस से कहीं बड़ा है। काश ये लोग जानते !

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ وَلَٰعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣١﴾

34. निश्चय ही मुत्तक्रियों (परहेज़गारों) के लिए उन के रब के पास नेमत भरी जन्नतें हैं।³²

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ﴿٣٢﴾

35. क्या हम आज़ाकारियों को अपराधियों जैसा करेंगे ?

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٣﴾

36. तुम लोगों को क्या हुआ है कैसा फ़ैसला करते हो !³³

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٤﴾

37. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो ?

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٥﴾

38. कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम पसन्द करोगे ?³⁴

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٦﴾

39. या तुम्हारे साथ हमारी प्रण प्रतिज्ञाएँ हैं क्रियामत तक बाक़ी रहने वाली, कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जिस का तुम फ़ैसला करोगे ?³⁵

أَمْ لَكُمْ آيَاتُنَا عَلَيْهِنَا بِالْغَةِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٧﴾

25. जब बाग को देखा तो उजड़ चुका था। पहले तो उन्होंने ने समझा कि शायद हम ग़लत जगह पर पहुँच गए हैं। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि बाग तो उन का अपना ही है किन्तु वह ऐसा तबाह हो गया है कि अब काटने के लिए कुछ भी नहीं रहा। बस हसरत ही हसरत रह गई।

26. उन बाग वालों में एक व्यक्ति ऐसा भी था जिस को अल्लाह तआला ने समझ प्रदान कि थी और वह अल्लाह का ज़िक्र और उस की तस्बीह करने वालों में से था। उस ने उन्हें याद दिलाया कि मैं ने तुम से कहा न था तुम अल्लाह की तस्बीह (उस का गुणगान) क्यों नहीं करते? उस ने बहुत छोटी मगर बहुत ही व्यापक बात कही। जो व्यक्ति अल्लाह की तस्बीह करता है वह उसे ज़रूर याद करता है। वह उस की पाकी बयान करता है तो अपनी तुच्छता को स्वीकारता भी है। वह अहं में लिप्त नहीं होता बल्कि सारे काम उसी के भरोसे पर करता है और अपनी ज़िम्मेदारियों को महसूस करते हुए सारे हक़ अदा करता है।

27. उस समय उन्हें एहसास नहीं हुआ कि बाग का विनाश अल्लाह का अत्यचार नहीं है। वह पाक है इस से कि कोई ग़लत काम करे। वास्तव में अपराधी हम ही थे कि अल्लाह को भूल गए थे। इस लिए हमें अपने करतूतों की सज़ा मिली।

अर्थात् वे आपस में एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे कि तुम ने ग़लत सुझाव दिया और हम तुम्हारी बातों में आ गए।

29. आखिरकार उन्होंने ने स्वीकार किया कि हम ही उदण्ड हो गए थे जिस की सज़ा हमें मिली है और इस पर उन्हें अफ़सोस भी हुआ।

30. उन्होंने ने तौबा की और वे अपने ख़ब की तरफ़ आशा के साथ पलटें।

31. अर्थात् उदण्डता के फ़लस्वरूप अल्लाह का अज़ाब आता है और अचानक आता है। जिस तरह बाग़ पर आफ़त आई और बाग़ वाले अफ़सोस करते तथा हाथ मलते रह गए। उन्होंने ने अपने बेहतरीन आदमी की नसीहत को स्वीकार नहीं किया और अपने अंजाम को देख लिया।

काफ़िर लोग इस से सबक़ लें। उन के बीच अल्लाह का रसूल उत्तम व्यक्ति है जो उन की भलाई कर रहा है तथा उन का स्थायी हितैषी है किन्तु यदि उन्होंने ने रसूल की नसीहत पर कान नहीं धरा और तौहीद को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए तो उन्हें अपनी उदण्डता की सज़ा दुनिया में भी मिलेगी और आखिरत में इस से कहीं अधिक कड़ी यातना भुगतना पड़ेगी।

32. ऊपर काफ़िरों के लिए अज़ाब का वर्णन था, इस आयत में अल्लाह से डरने वालों के लिए आखिरत के इनाम का ज़िक्र हुआ है। कुर्आन सज़ा के साथ ही साथ इनाम का भी वर्णन करता है ताकि लोग सज़ा से डरें और अपने को इनाम के योग्य पात्र बनाएँ।

33. काफ़िरों के सरदार अपनी खुशहाली के आधार पर समझते थे कि हम से अल्लाह खुश है इसी लिए उस ने हम को ये नेमतें प्रदान की हैं जब कि रसूल और उसके अनुयायियों को तंगी की ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ रही है जो इस बात का प्रतीक है कि अल्लाह उन से खुश नहीं है। अतः अगर आखिरत बरपा हुई तो वहाँ भी हम नेमतों से अलंकृत किए जाएंगे और अल्लाह की नाराज़गी इन लोगों के ही हिस्से में आएगी। काफ़िरों के इसी ख़ियाल का खण्डन करते हुए यहाँ फ़रमाया गया है कि क्या तुम यह समझते हो कि अल्लाह के नज़दीक उस के कृतज्ञ बन्दों का कोई मोल नहीं, कोई सम्मान नहीं। और वह उन के साथ अपराधियों जैसा मामला करेगा। और तुम अपने कुफ़्र एवं उदण्डता के बावजूद इनाम के पात्र बनोगे? कैसी नामाकूल और अन्यायपूर्ण बातें हैं जो तुम करते हो?

34. अर्थात् क्या तुम्हारे पास कोई आसमानी किताब है जिस में यह लिखा हुआ है कि कर्म पर नहीं बल्कि तुम्हारी मर्ज़ी पर सब कुछ निर्भर है, जो कुछ तुम चाहोगे तुम्हें मिलेगा।

35. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अगर तुम इस दंभ भरे भ्रम में लिप्त हो कि हम इब्राहीम के वंश से हैं जिन के साथ अल्लाह की प्रण प्रतिज्ञा थी इस लिए हम अल्लाह के आँख चढ़े हैं। जो कुछ भी हम करें हमारी कोई पकड़ होने वाली नहीं तो अल्लाह ने इब्राहीम से उन की नस्ल के बारे में ऐसी कोई प्रण प्रतिज्ञा नहीं बाँधी थी। इमामत का जो सिलासिला उन की नस्ल में चलाया जाने वाला था उस के बारे में वह पुष्टि कर दी गई थी कि

لَا يَنْبَأُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ

अर्थ :- “मेरा यह प्रण ज़लिमों के लिए नहीं है।”
(अलबक्रर: १२४)

और अल्लाह ने किसी भी जाति को मुक्ति का पट्टा लिख कर नहीं दिया है कि वह अपनी मन मानी करने के लिए आज़ाद है। बल्कि नबियों के माध्यम से प्रत्येक जाति को यही शिक्षा दी गई थी कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का स्वयं ज़िम्मेदार है और अपने कर्मों के अनुसार उसे अच्छा या बुरा फल पाना है।

40. इन से पूछो उन में से कौन इस की ज़मानत लेने वाला है ?³⁶

سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ بِذَلِكَ رَعِيْمٌ ۝۳۶

41. या इन के कुछ शरीक (साझीदार) हैं तो लाएं अपने शरीकों को अगर वे सच्चे हैं।³⁷

أَمْ لَكُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صٰدِقِيْنَ ۝۳۷

42. जिस दिन कड़ी मुसीबत आ पड़ेगी³⁸ और लोगों को सज्दे के लिए बुलाया जाएगा तो ये सज्दा न कर सकेंगे।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُوْنَ ۝۳۸

43. इन की निगाहें नीची होंगी। ज़िल्लत इन पर छाई होगी। सज्दे के लिए इन को उस समय बुलाया जाता था जब वे सही सलामत थे।³⁹ (परन्तु उस समय वे इन्कार करते रहे)

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝۳۹

44. तो (ऐ नबी!) छोड़ दो मुझे और इन को जो इस कलाम को झुठलाते हैं।⁴⁰ हम इन को इस तरह एक क्रम से (बुरे अन्जाम को) पहुँचाएँगे कि इन्हें ख़बर भी न होगी।⁴¹

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكْذِبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۴۰

45. मैं इन को ढील दे रहा हूँ। मेरी तदबीर अत्यंत मज़बूत होती है।

وَأُمْلِي لَهُمْ إِنْ كَيْدِي مَتِيْنٌ ۝۴۱

46. क्या तुम इन से कोई मुआवज़ा माँग रहे हो कि ये उस के तावान से दबे जा रहे हों ?⁴²

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝۴۲

47. या इन के पास ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान है जिसे ये लिख रहे हों ?⁴³

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝۴۳

48. अतः (ऐ नबी!) अपने रब के फैसले तक सब्र करो⁴⁴ और मछली वाले की तरह न हो जाओ।⁴⁵ जब उस ने (अपने रब को) पुकारा और वह ग़म से घुटा हुआ था।⁴⁶

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصٰحِبِ الْحُوْتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝۴۴

49. अगर उस के रब का फ़ज़ल उस को न पहुँचता तो वह निन्दनीय दशा में चटियल मैदान ही में डाल दिया जाता।⁴⁷

لَوْلَا اَنْ تَذَرٰكَ نِعْمَةٌ مِّنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ۝۴۵

36. अर्थात् तुम में से कौन इस तरह की प्रण प्रतिज्ञा को सिद्ध कर दिखाने की जिम्मेदारी स्वीकार करता है? ज़ाहिर है ऐसे खोखले दावे कभी साबित नहीं किये जा सकते।

37. अर्थात् उन के ठहराए हुए शरीकों (साझियों) ने उन के लिए मुक्ति का प्रमाण पत्र लिख दिया है तो उन को सामने लाएँ ताकि उस की हक़ीक़त स्पष्ट हो।

मुसलमानों का जाहिल वर्ग भी इस ख़ाम ख़ियाली में लिप्त है कि फ़लाँ और फ़लाँ बुजुर्ग के प्रति हमारी आस्था है इस लिए हमारे कर्म कैसे ही हों हम पर कोई पकड़ होने वाली नहीं। हमारे बुजुर्ग हमें दुनिया में भी आफ़तों से बचाएँगे और आख़िरत में भी हमारी मुक्ति का कारण बनेंगे।

38. मूल अरबी (Text) में शब्द “साक्र” इस्तेमाल हुआ है जिस का शाब्दिक अर्थ पिण्डली के हैं, वृक्ष के तने तथा किसी चीज़ के असल के भी हैं। यहाँ यह शब्द जातिवाचक संज्ञा (Common Noun) प्रयुक्त हुआ है और एक ख़ास तरकीब में। इस लिए शब्द कोष के विद्वान कहते हैं कि यह अरबी का मुहावरा है जिस का अर्थ शिद्दते-अम्र (अधिकता, उग्रता, तीव्रता, कड़ाई) के हैं। अतः लिसानुल अरब में है।

الساق فى اللغة الامر الشديد ، وكشفه مثل فى
شدة الامر كما يقال للشحيح يده مغلوله لايدثم
ولاغُلَّ وَأَنَّمَاهُ مَثَلٌ فى شدة البخل ، وكذالك
هَذَا، لاساق هناك ولاكشف - (لسان العرب ج ١ ص ١٢٨)

अर्थ :- “साक्र” शब्द कोष में अम्रे-शदीद को कहते हैं और इस का कशफ़ होना शिद्दते-अम्र के लिए मिसाल के तौर पर है। जिस तरह बख़ील (कन्जूस) के लिए कहा जाता है कि उस का हाथ बँधा हुआ है। हालाँकि ऐसे मौक़े पर न हाथ होता है और न बन्धन बल्कि यह शिद्दते-बुख़ल (अत्याधिक कन्जूस) के लिए एक मिसाल होती है। इसी तरह यहाँ (इस मुहावरे में) भी न “साक्र” का कोई वजूद है न कशफ़ का।” (लिसानुल अरब जिल्द १०, पृष्ठ १६८)

अधिकांश मुफ़स्सिरीन ने भी इस को शिद्दते-अम्र ही के अर्थ में लिया है। इस लिए हम ने इस का अनुवाद “जिस दिन कड़ी मुसीबत आ पड़ेगी” किया है। लेकिन कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस का अर्थ यह बयान किया है कि क्रियामत के दिन जब अल्लाह अपनी पिण्डली खोलेगा” और इस के पक्ष में सहीहैन की वह हदीस पेश की है जिस में :-

يَكْشِفُ رَبُّنَا عَنْ سَاقِيَةِ - (بخارى كتاب التفسير)

अर्थ :- “जब हमारा रब अपनी पिण्डली खोलेगा। (बुख़ारी किताबुत्तप्सीर)

के शब्द आए हैं। परन्तु अव्वल तो ये शब्द कुर्आन के शब्दों से मेल नहीं खाते क्यों कि कुर्आन ने अल्लाह की पिण्डली का कोई ज़िक्र नहीं किया। इस के अलावा यह हदीस यद्यपि सहीहैन की है किन्तु इस के एक रावी (उल्लेखकर्ता) ज़ैद बिन असलम हैं जिन के बारे में कलाम की गुन्जाइश है। इब्ने ऐनिया कहते हैं ज़ैद बिन असलम नेक आदमी थे किन्तु याददाश्त (हिफ़ज़) के मामले में कमजोरी थी। और अबू हातिम कहते हैं कि ज़ैद की अबू सईद से रिवायत मुर्सल होती है। इब्ने हबान ने इन का शुमार सिक्रा रावियों (सुदृढ़ उल्लेखकर्ताओं) में किया है और इब्ने अब्दुलबर् ने मुक़दमे में जो बात बयान की है उस से मालूम होता है कि वह तदलीस (जो प्रमाण की त्रुटि है) किया करते थे। (तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ३, पृष्ठ ३९७) और उबैदुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि हम उस से रिवायत में हरज महसूस नहीं करते किन्तु वे कुर्आन की तप्सीर अपनी राय से करते थे। (मीज़ानुलएतदाल जिल्द २ पृष्ठ ९८)

मालूम होता है यह हदीस अपने भावार्थ में बयान हुई है (अर्थात् असल शब्द महफूज़ नहीं हैं) इस लिए कुर्आन के शब्द ही असल प्रमाण हैं और वह शिद्दते-अम्र के अर्थ में हैं।

39. अर्थात् हश्र के मैदान में एक मौक़ा वह होगा जब कि इन काफ़िरों से कहा जाएगा कि अल्लाह को सज्दा करो और वे सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की पीठ झुक न सकेगी और वे आजिज़ रह जाएँगे। यह प्रदर्शन इस लिए कराया जाएगा ताकि उन्हें एहसास हो कि दुनिया में सही सलामत हो कर वे अल्लाह को सज्दा नहीं करते थे बल्कि ग़ैरुल्लाह के आगे झुकते थे। हालाँकि उस समय उन्हें अल्लाह के समक्ष सज्दा करने के लिए कहा जाता था। उन्हें अल्लाह का रसूल एक अल्लाह की इबादत करने की दअवत दे रहा था जिस में उस को सज्दा करना भी शामिल था। इस सज्दे से इन्कार कर के उन्होंने ने अपने लिए कैसे अपमान का सामान जुटाया है।

40. अर्थात् अब तुम झुठलाने वालों की चिन्ता न करो मैं उन से निपट लूँगा।

41. अर्थात् ऐसे हालात पैदा करूँगा कि वे ऊपरी हालात को देखकर अपने लिए सुकून और शान्ति महसूस करेंगे किन्तु वह उन की तबाही का सामान होगा। काफ़िर अपने को खुशहाल देख कर थोखे में पड़ जाते हैं किन्तु उन की खुशहाली उन की बदहाली का कारण बन जाती है। इसी प्रकार वे अल्लाह के दीन के विरोध में जो तदबीरें करते हैं वह उलटी पड़ जाती हैं। जो जाल वे बिछाते हैं उस में वे खुद ही फँस जाते हैं।

42. इस की व्याख्या सूरह शुअरा नोट ९८ में गुजर चुकी।

43. इस की व्याख्या सूरह तूर नोट ४० में गुज़र चुकी।

44. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हिदायत की गई है कि तुम सब्र के साथ अल्लाह के फ़ैसले की प्रतीक्षा करो। जब तक वह आदेश न दे अपना स्थान छोड़ कर कहीं चले न जाओ।

45. मछली वाले से तात्पर्य हज़रत यूनस अलैहिस्सलाम हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। उन की जाति वालों ने उन को झुठला दिया था। इस लिए वे क्रोधित हो कर उस बस्ती से निकल गए थे और अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा नहीं की थी। उन के इस कुसूर के चलते उन को अल्लाह तआला ने मछली के पेट में पहुँचा दिया था। यह घटना सूरह साफ़ात आयत १३९ से १४८ में बयान हुई है। यहाँ उसी घटना की

ओर इशारा कर के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया गया है कि उन की तरह जल्दी न करो और जब तक अल्लाह हिज़रत का आदेश न दे अपनी जगह न छोड़ो।

46. अर्थात् यूनस (अलैहिस्सलाम) ने मछली के पेट में जब कि वे गम से घुट रहे थे, अल्लाह को पुकारा। उन्होंने ने वह तस्बीह की जिस की बरकत से अल्लाह तआला ने उन को मछली के पेट से मुक्ति दी। उन की तस्बीह का ज़िक्र सूरह अम्बिया आयत ८७ में हुआ है।

47. अर्थात् मछली ने जब उन्हें उगल दिया था तो वह एक चटियल मैदान था। वहाँ वे बदहाल हालत में पड़े रहते, परन्तु अल्लाह का उन पर फ़ज़ल (दया) हुआ और उस चटियल मैदान में भी अल्लाह ने उन के लिए सायादार वृक्ष उगाया और उन की हर तरह सहायता की, देखिए सूरह साफ़ात नोट १२८



फिर उस के रब ने उसे निर्वाचित किया और उसे स्वालिहीन (नेक लोगों) में शामिल किया। जब ये काफ़िर (याददेहानी) को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं कि जैसे अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह ज़रूर दीवाना है। हालाँकि यह (कुर्आन) दुनिया वालों के लिए एक नसीहत है। (अल-कुर्आन)

50. फिर उस के रब ने उसे निर्वाचित किया और उसे स्वालिहीन (नेक लोगों) में शामिल किया।⁴⁸

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

51. जब ये काफ़िर (याददेहानी) को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं कि जैसे अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे।⁴⁹ और कहते हैं कि यह ज़रूर दीवाना है।

وَإِنَّ يَكْذِبُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِنَّ لَآ يَفْقَهُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

52. हालाँकि यह (कुर्आन) दुनिया वालों के लिए एक नसीहत है।⁵⁰

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

48. अर्थात् उन के कुसूर को माफ़ कर के रिसालत का दायित्व निभाने के लिए उन्हें फिर चुन लिया और उन्हें सुधार कर लेने की तौफ़ीक़ प्रदान कर के अच्छे लोगों में शामिल कर लिया ।

पैगम्बरों की ज़िन्दगी नमूना होती है। अगर कभी उन से कोई ग़लती हो भी जाती है तो अल्लाह तआला उस पर उन्हें सावधान करता है और वे तुरन्त अपना सुधार कर लेते हैं। इस प्रकार उन के नेक होने पर न कोई आँच आती है और न लोगों की ग़लत रहनुमाई होती है।

49. यह मिसाल है काफ़िरों के विद्वेष भरी निगाहों से देखने की। वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कुर्आन सुनाते हुए देखते हैं तो क्रोधित आँखों से देखते और इस तरह रोब में लेने की कोशिश करते कि आप लड़खड़ा जाएँ किन्तु आप पर अल्लाह की ऐसी कृपा हुई कि काफ़िरों की ये हरकतें आप पर कदापि कोई प्रभाव न डाल सकीं।

निगाहों से फिसला देने का भावार्थ वही है जो ऊपर बयान कर दिया गया है और यह ऐसी ही बात है जिसे हम कहते हैं “वह मुझे इस तरह देख रहा था कि अभी खा जाएगा।” ज़ाहिर है इस का मतलब वास्तव में खा जाना नहीं होता । बल्कि क्रोध व्यक्त करने की एक शैली है।

कुछ मुफ़स्सिरन ने इस आयत से नज़र लग जाने के सही होने पर तर्क प्रस्तुत किया है और इस सिलसिले में हदीस “अल-अैनु हक्कुन ٱٱٱ (नज़र का लग जाना हक़ है) भी पेश की है जिसे बुखारी मुस्लिम, अबूदाऊद ने रिवायत किया है। (देखिए बुखारी किताबुत्तिब्ब, मुस्लिम किताबुस्सलाम और अबू दाऊद किताबुत्तिब्ब) परन्तु नज़र लग जाना जिस अर्थ में बोला जाता है वह यह है कि कोई व्यक्ति किसी को बुरी नज़र से देखे और इस बुरी नज़र के असर से उह की तबीयत ख़राब हो जाए या वह बीमार पड़े। किन्तु आयत में ऐसी कोई बात बयान नहीं हुई है। इस में तो जो बात इर्शाद हुई है वह यह है कि ये काफ़िर पैग़म्बर को जब कि वे कुर्आन सुना रहे होते हैं ऐसी प्रकोपित दृष्टि से देखते हैं जैसे अपनी आँखों के तेज से पैग़म्बर को अपनी बात से हटा देंगे। कहाँ यह बात जो सारगर्भित शैली में कही गई है और कहाँ “बुरी नज़र” की बात। सारांश यह कि इस आयत से नज़र लग जाने की प्रचलित धारणा पर तर्क प्रस्तुत करना सही नहीं।

रही बात हदीस ٱٱٱ (नज़र का लग जाना हक़ है) की तो इस का भावार्थ भी कुर्आन और सुन्नत के स्पष्ट आदेश की रौशनी में ही सुनिश्चित करना चाहिए। कुर्आन अंधविश्वास की जड़ काट देता है और ज्ञान की रौशनी में चलने की हिदायत करता है।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ - (بنی اسرائیل : ۳۶)

अर्थ :- “उस चीज़ के पीछे न पड़ो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं।” (बनी इस्राईल - ३६)

यदि कोई व्यक्ति बीमार पड़ता है तो उस के बारे में यह समझा जाता है कि उस को बुरी नज़र लग गई है। यहाँ प्रश्न उठता है कि यह कैसे मालूम हुआ कि वह बुरी नज़र के लग जाने से बीमार हुआ है और किसी अन्य कारण से बीमार नहीं हुआ? स्पष्ट है यह मात्र अंधविश्वास है और अंधविश्वास के सही होने का कोई औचित्य नहीं। फिर नज़र लग जाने की यह कल्पना भी बड़ी विचित्र है कि कोई व्यक्ति किसी को सुन्दर देख कर प्रभावित होता है तो उस की नज़र लग जाती है और वह सुन्दर स्त्री या पुरुष बीमार पड़ जाते हैं। प्रश्न यह है कि बुरी नज़र किसी की ख़ूबी को देख कर लग जाती है या उस से विद्वेष के कारण। यह धारणा भी है कि यदि कोई व्यक्ति खाना खा रहा हो और दूसरा व्यक्ति उसे लोभ की दृष्टि से देख लेता है तो उस की नज़र लग जाती है और खाने वाले को उलटी हो जाती है। मगर यह मामला केवल अंधविश्वासियों के साथ होता है औरों के साथ नहीं। ऐसा क्यों? क्या हज़ारों लोग बाज़ारों में खाना नहीं खाते और लालची लोगों का उन के पास से गुज़र नहीं होता फिर उन्हें उलटी क्यों नहीं होती? इस के अलावा मज़े की बात यह है कि नज़र लग जाना एक अक़ीदे की बात बन गई है अतः नज़र उतारने के लिए भी एक ख़ास फ़ारमूला प्रचलित है। और वह यह कि कुछ हल्दी, नमक और राई आदि हाथ में ले कर उस व्यक्ति के सर से पाँव तक फेरा जाता है और फिर आग में उन चीज़ों को जलाया जाता है और उन के जलने की गंध उठती है तो समझा जाता है कि नज़र उतर गई। मालूम होता है यह तरीक़ा हिन्दुओं से लिया गया है क्योंकि उन में नज़र उतारने के लिए जलाने (स्वाहा करने) का तरीक़ा प्रचलित है। कुछ भी हो नज़र लगने और उतारने की यह धारणा सरासर जाहिली है। इस्लाम में ऐसी अन्धविश्वासी बातों के लिए कोई गुन्जाइश नहीं है।

जिस प्रकार मनुष्य किसी की चीख सुन कर शोक ग्रस्त हो जाता है, भयावह आवाज़ उसे प्रभावित कर देती है इसी तरह निगाहें भी मनुष्य पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं। मिसाल के तौर पर एक हत्यारा जिस क़ातिल निगाहों से देखता है आदमी घबराहट में मुब्तिला हो जाता है। और कुछ क्रूर निगाहें ऐसी भी हो सकती हैं कि उस के प्रभाव से आदमी के चेहरे का रंग बदल जाए। यह सब भौतिक कारणों के चलते संभव है और जब कोई स्पष्ट कारण मौजूद हो तो हम उस को उस बुराई या उस

तकलीफ़ का कारण बताएंगे जो किसी को पहुँची है हदीस **الْعَيْنُ حَقٌّ** (नज़र का लग जाना हक़ है) इस अर्थ में है। क्रूर व उपद्रवी निगाहें बुरे प्रभाव डालती हैं इस से मनुष्य कभी रोब में आ जाता है और कभी इस तरह घबरा जाता है कि उस के चेहरे का रंग ही उड़ जाता है। किन्तु यदि कोई स्पष्ट कारण मौजूद न हो तो किसी कष्ट के पहुँचने पर उसे बुरी नज़र समझना मात्र अंधविश्वास है और किसी के बारे में यह समझना कि उस की नज़र लग गई है जब कि इस का कोई सबूत न हो बदगुमानी है और हदीस में आता है कि :-

فَإِنَّ الظَّنَّ اكْذَابُ الْحَدِيثِ

अर्थ :- “बदगुमानी बदतरीन झूठ है।”
الْعَيْنُ حَقٌّ (नज़र का लग जाना हक़ है) का जो मतलब हम ने ऊपर बयान किया है उस की ताईद सही मुस्लिम की उस हदीस से भी होती है जिस में जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप के बीमार हो जाने पर जो दुआ पढ़ी थी उस में

أَوْعَيْنَ حَاسِدٍ اللَّهُ يَشْفِيكَ

अर्थ :- “और ईर्ष्या करने वाले की नज़र की बुराई से अल्लाह आप को शिफ़ा दे।” (मुस्लिम-किताबुस्सलाम) के शब्द हैं जो सूरह फ़लक़ की आयत **وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ** अर्थ :- “हसद (ईर्ष्या) करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे।” के शब्द और भावार्थ से मेल खाते हैं। (इस आयत की व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़लक़ नोट ७)

इस लिए हदीस **الْعَيْنُ حَقٌّ** (नज़र का लग जाना हक़ है) को किसी ऐसे अर्थ में लेना सही न होगा जो स्पष्ट कारणों के विरुद्ध हों तथा भ्रम एवं अंधविश्वास में लिप्त करने वाले हों।
 हदीस में नज़र लग जाने से शिफ़ा पाने के लिए भी वही दुआ बताई गई है जो दूसरी बीमारियों के लिए है। अर्थात्

أَذْهَبِ الْبَأْسَ رَبِّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي. لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا. (بخاری کتاب الطب)

अर्थ :- “ऐ इन्सानों के रब ! कष्ट को दूर कर दे, शिफ़ा प्रादन कर, तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं है। ऐसी शिफ़ा प्रदान कर जो किसी भी बीमारी को बाक़ी न रहने दे।” (बुखारी किताबुत्तिब्ब)

यह बेहतरीन दुआ है। इन को छोड़ कर टोने टोटके करना सच्ची धारणा को बिगाड़ने का कारण है।

50. अर्थात् कुआन को पैगम्बर की ज़बान से सुन कर ये लोग उन्हें दीवाना कहते हैं। हालाँकि यह कुआन समस्त संसार वासियों के लिए सरासर नसीहत है और उन को वह सबक़ याद दिला रहा है जो उन के स्वभाव में समाया हुआ है।

ये आयत यह स्पष्टीकरण भी करती है कि कुआन केवल अरबों के लिए नहीं बल्कि दुनिया की सारी क्रौमों के लिए नसीहत बन कर अवतरित हुआ है।



६९. सूरह अल्-हाक्क़ः

नाम :- सूरह की शुरूआत “अल-हाक्क़ः” सच हो कर रहने वाली घड़ी) के वर्णन से हुआ है इस मुनासिबत से उसी शब्द को इस सूरह का नाम निर्धारित किया गया है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और शुरू के दौर की नाज़िल शुदा है।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत का हौल और भयावह यातना का डर पैदा करना है ताकि लोग होश में आएँ और कर्म फल (इनाम और दण्ड) पर विश्वास करने लगें।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ भूमिका की आयतें हैं जिन में क्रियामत के निश्चित रूप से घटित होने की खबर दी गई है।

आयत ४ से १२ में उन जातियों के प्रकोप ग्रस्त होने से

इबरत दिलाई गई है जिन्होंने ने क्रियामत का इन्कार किया था और रसूलों को झुठलाया था।

आयत १३ से १८ में क्रियामत की हौलनाकी का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

आयत १९ से ३७ में खुदा को पहचानने वालों तथा खुदा को न पहचानने वालों, सुकर्मियों तथा कुकर्मियों का अलग अलग अन्जाम बयान हुआ है।

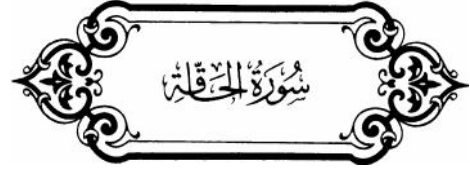
आयत ३८ से ५१ में काफ़िरो से संबोधन कर के उन पर कुर्आन और रसूल की सत्यता को स्पष्ट किया गया है।

आयत ५२ सूरह की समाप्ति की आयत है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने रब की तस्बीह करने का आदेश दिया गया है।

६९. सूरह अल्-हाक्क़ः

आयतें : ५२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सच होकर रहने वाली । ¹ الْحَاقَّةُ ①
2. क्या है वह सच हो कर रहने वाली ? مَا الْحَاقَّةُ ②
3. और तुम क्या जानों कि क्या है वह सच हो कर रहने वाली !² وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ③
4. समूद और आद ने उस खड़ खड़ाने वाली आफ़त को झुठलाया ।³ كَذَّبَتْ شَمُودُ وَعَادُ بِالْقَارِعَةِ ④
5. तो समूद एक भयावह चिंघाड़ से विनष्ट कर दिए गए।⁴ فَأَمَّا شَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ⑤
6. और आद प्रचण्ड हवाओं से विनष्ट कर दिए गए।⁵ وَأَمَّا عَادُ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑥
7. अल्लाह ने उस को सात रात और आठ दिन उन को काट फेंकने के लिए मुसल्लत रखा।⁶ तुम उन को देखते कि इस तरह ढेर हो गए हैं जैसे कि गिरी हुई खज़ूरों के तने।⁷ سَحَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ أَيَّامٍ لَخِثُومًا ⑦
فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أُجِيزَتِ نَخْلٌ خَائِيَةٌ ⑧
8. क्या इन में से किसी को तुम बाक़ी बचा हुआ देखते हो ?⁸ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ⑨
9. और फिरऔन तथा उस से पहले के लोगों ⁹ और उलटी हुई बस्तियों ¹⁰ ने बड़े अपराध का काम किया। وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَتِ بِالْحَاطِئَةِ ⑩
10. उन्होंने ने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की ¹¹ तो उस ने उन को कड़ी पकड़ में लिया। فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَابِيَةً ⑪
11. हम ने तुम को, जब पानी का तूफ़ान हद से गुज़र गया, नौका में सवार कर दिया।¹² إِنَّا لَنَاطِقُوا الْمَاءِ حَمَلُنْكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ⑫

1. अल-हक्क़: क्रियामत का नाम है जिस का अर्थ है सच हो कर रहने वाली, निश्चित रूप से घटित होने वाली और वह घड़ी जिस में सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो कर सामने आ जाएगा।

2. यह शैली इस के महत्व को स्पष्ट करती है कि यह अत्यंत असाधारण घटना होगी अतः अच्छी तरह खबरदार हो जाओ।

3. जिन जातियों ने क्रियामत की खबर को जो उन के रसूलों ने उन्हें दी थी, झुठलाया था और इस के फलस्वरूप उन पर अज़ाब आया उन में से कुछ जातियों का वर्णन यहाँ उदाहरण स्वरूप हुआ है ताकि लोग इस से शिक्षा ग्रहण करें।

इस आयत में क्रियामत को “अल-क्रारिआ” (खड़खड़ाने वाली आफ़त) कहा गया है। इस की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अल-क्रारिआ ।

4. जैसा कि दूसरी जगहों पर कुआन ने पुष्टि की है कि समूद को रज़फ़: (थरथार देने वाली) और सैह: (भयावह चींख) के द्वारा विनष्ट किया गया था। मालूम होता है कि बादलों की असाधारण गरज और बिजली की भयावह चिंगाड़ ने उन पर बेपनाह विचलन की अवस्था ला दी और वे तुरन्त गिर कर मर गये।

5. “प्रचण्ड हवा” अर्थात् ठंडी और तेज़ हवा । मालूम होता है कि आद का विनाश ठंडी हवाओं के साथ तेज़ आँधी के चलने से हुआ था।

6. अर्थात् ये प्रचण्ड हवाएँ उन पर निरंतर सात रातों और

आठ दिनों तक चलती रहीं और आठवें दिन उन को ऐसे जड़ से उखाड़ा गया कि उन का नाम और निशान बाक़ी न रहा।

7. खज़ूर के वृक्षों के तने बड़े मज़बूत होते हैं किन्तु जब तूफ़ान की ज़द में आ कर गिर जाते हैं तो उन को देख कर आदमी आवाक़ रह जाता है । यही हाल आद का हुआ कि वे बड़े शक्तिशाली थे परन्तु प्रचण्ड हवाओं ने उन्हें ऐसा गिरा दिया कि हर तरफ़ उन की लाशें ही लाशें थीं।

8. अर्थात् उन झुठलाने वालों को ऐसा विनष्ट किया कि उन में से एक आदमी भी न बच सका इस तरह उन का वंश बाक़ी ही न रहा।

9. अर्थात् फ़िरऔन से पहले कई उदण्ड जातियाँ गुजर चुकी हैं।

10. मुराद लूत की जाति की बस्तियाँ हैं जो भूकंप से उलट दी गई थीं।

11. अल्लाह के रसूल की बातों को न मानना बहुत बड़ी नाफ़रमानी और बहुत बड़ा अपराध है।

12. इशारा हज़रत नूह की घटना की तरफ़ है कि जब पानी का भीषण तूफ़ान आया तो उन की जाति को डुबो दिया गया किन्तु जो लोग ईमान लाए थे उन को नूह के साथ उन की नौका में सवार कराया गया और उन्हें डूबने से बचा लिया गया। उन्हीं के वंश से तुम लोग हो। अतः उन को सवार कराना मानव वंश को सवार कराना था इस लिए अल्लाह का यह एहसान तुम सब पर है ।



12. ताकि इस घटना को तुम्हारे लिए शिक्षाप्रद बना दें।¹³ और याद रखने वाले कान उसे याद रखें।¹⁴

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَأَعْيَةٌ ۝۱۲

13. फिर जब सूर में एक फूँक मारी जाएगी।¹⁵

فَإِذَا نَفَخْنَا فِي السُّورِ نَفْحَةً وَاحِدَةً ۝۱۳

14. और ज़मीन और पहाड़ों को उठा कर एकबारगी चूरा चूरा कर दिया जाएगा।¹⁶

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝۱۴

15. उस दिन होने वाली घटना घटित हो जाएगी।¹⁷

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝۱۵

16. और आसमान फट जाएगा और उस दिन वह अत्यंत कमज़ोर होगा।¹⁸

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝۱۶

17. फ़रिश्ते उस के किनारों पर होंगे¹⁹ और तुम्हारे रब के सिंहासन को उस रोज़ आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।²⁰

وَالْمَلَائِكَةُ عَلَىٰ أَصْحَابِهِمْ بِأَشْوَاقٍ ۝۱۷
ثُمَّ نَبِّئِهِ ۝۱۸

18. उस दिन तुम लोग पेश किये जाओगे।²¹ तुम्हारी कोई बात भी छिपी न रहेगी।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝۱۸

19. तो जिस का आमालनामा (कर्म पत्र) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा²² वह कहेगा लो पढ़ो मेरा आमालनामा।²³

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَٰذَا مَا أَرْسَلْتُ
كَتَبْتُهُ ۝۱۹

20. मैं समझता था कि मुझे ज़रूर अपने हिसाब से दो चार होना है।²⁴

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيَّةٍ ۝۲۰

21. अतः वह पसंदीदा ऐश में होगा।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝۲۱

22. बुलंद मक़ाम जन्नत में।

فِي جَنَّاتٍ عَالِيَةٍ ۝۲۲

23. जिस के फलों के गुच्छे झुके हुए होंगे।²⁵

قُطُوفُهُمْ حَادِثُونَ ۝۲۳

24. खाओ और पियो मज़े से अपने कर्मों के बदले में, जो तुम ने गुज़रे हुए दिनों में किये।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ
الْخَالِيَةِ ۝۲۴

25. और जिस का कर्म पत्र उन के बाएँ हाथ में दिया जाएगा²⁶ वह कहेगा काश मेरा आमाल नामा मुझे दिया ही न जाता।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ فَيَقُولُ لِيَسْبِقْنِي
أُوتِ كِتَابِي ۝۲۵

13. इस घटना में यह सबक है कि अल्लाह से उद्दण्डता दिखाने वाले और उस के रसूल की बात न मानने की कैसी कड़ी सज़ा मिलती है।

14. अर्थात् मानव इतिहास की यह महत्वपूर्ण और शिक्षाप्रद घटना एक यादगार घटना है। परन्तु इस शिक्षा को वही लोग याद रखेंगे जिन के कान सत्य सुनने का साहस रखते हैं।

15. अर्थात् सूर में एक फूँक मारते ही क्रियामत बरपा हो जाएगी। अल्लाह तआला को क्रियामत बरपा करने के लिए कोई तैयारी करनी नहीं पड़ेगी। बस इधर फूँक मार दी उधर कायनात की सारी व्यवस्था छिन्न भिन्न। यह फूँक मारना एक तरह से क्रियामत का आलार्म होगा।

16. कोई इस ख़ाम ख़ियाली में न पड़ा रहे कि यह पृथ्वी और यह बड़े बड़े पहाड़ हमेशा बाक़ी रहेंगे। नहीं बल्कि क्रियामत का झटका लगते ही चूर्ण विचूर्ण हो कर रह जाएँगे। अल्लाह के लिए ज़मीन और पहाड़ों को उठा कर चूर्ण विचूर्ण कर देना बहुत आसान है। और यह तोड़ फ़ोड़ इस लिए होगा ताकि नई ज़मीन जो हथ्र बरपा करने के लिए उचित हो सकती है अस्तित्व में लाई जा सके।

17. अर्थात् क्रियामत बरपा हो जाएगी।

18. आसमान बहुत मज़बूत है किन्तु क्रियामत का बिगुल बजाते ही वह कमज़ोर हो जाएगा। क्रियामत ज़मीन ही पर बरपा नहीं होगी बल्कि आसमानों को भी अपने लपेट में ले लेगी। यह उजाड़ना इस लिए होगा ताकि एक योजना के अनुसार नई दुनिया अस्तित्व में लाई जाए। मगर तोड़ फ़ोड़ की यह घटना ऐसी प्रचण्ड होगी कि उस की कल्पना मात्र से ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं।

19. अर्थात् फ़रिश्ते सिमट कर आसमानों के किनारों पर

आ जाएँगे और बीच के पुरे अंतरिक्ष में हलचल मच जाएगी।

20. यह आयत मुतशाबिहात (उपलक्षित आयतों) में से हैं और इस की व्याख्या करना अपने को फ़ित्ने (आज़माइश) में डालना है आयत में जो बात बयान हुई है उस से मूल रूप से अल्लाह की अदालत का एहसास दिलाना अभिप्रेत है जो कि क्रियामत के दिन बरपा होगी और कायनात का संचालक अपने राजसिंहासन से फैसले करेगा। इस की स्थिति क्या होगी और यह दृश्य कैसा होगा इस को क्रियामत से पहले समझा नहीं जा सकता।

मुतशाबिहात को विस्तार से समझने के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट १३

21. अर्थात् उस रोज़ अल्लाह के समक्ष तुम सब लोगों की अपनी कर्मों की जवाबदेही के लिए पेशी होगी।

22. व्याख्या के लिए देखिए सूरह वाक़िआ नोट ७

23. अर्थात् वह नेक व्यक्ति होगा और अपना कर्म पत्र दाहिने हाथ में पाते ही खुशी से झूम उठेगा कि यह सफलता का प्रतीक है और दूसरों को दिखाता फ़िरेगा।

जब कोई विद्यार्थी अपनी परीक्षा में सफल हो जाता है तो अपना परीक्षा फल (Result) दूसरों को दिखाना पसन्द करता है किन्तु जो नाकाम (फेल) हो जाता है वह अपना (Result) दिखाना पसन्द नहीं करता। क्रियामत के दिन वही लोग अपने कर्म पत्र दूसरों को दिखाना पसन्द करेंगे जो दुनिया की परीक्षा में सफल हो चुकें होंगे।

24. अर्थात् मुझे इस बात का पूरा विश्वास था कि क्रियामत के दिन मुझे अपने कर्मों का हिसाब देना है इस लिए मैं ने इस सच्चाई को मानते हुए जीवन बिताया था।

25. अर्थात् निकट होंगे कि आसानी से तोड़े जा सकें।

26. व्याख्या के लिए देखिए सूरह वाक़िआ नोट ८



26. और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है।

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِي ۚ

27. काश मेरी वही मौत निर्णायक होती।²⁷

يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ

28. मेरा माल मेरे काम न आया।

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِي ۚ

29. मेरी सत्ता (आदेश शक्ति) खत्म हो गई।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِي ۚ

30. इस को पकड़ो और इस की गर्दन में तौक़ डाल दो।²⁹

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۚ

31. फिर इस को जहन्नम में झोंक दो।

ثُمَّ الْحَبِيمَ صَلُّوهُ ۚ

32. फिर इस को एक जंजीर में जो सत्तर हाथ लम्बी है जकड़ दो।³⁰

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۚ

33. वह महिमावान अल्लाह पर ईमान न लाता था।³¹

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۚ

34. और न मिसकीनों को खाना खिलाने को उभारता था।³²

وَلَا يَخْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۚ

35. तो आज इस का यहाँ कोई दोस्त नहीं है।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَبِيمٌ ۚ

36. और न पीप के सिवा उस के लिए कोई खाना है।³³

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينَ ۚ

37. जिस को गुनहगार ही खाएंगे।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخِطَاؤُنَ ۚ

38. नहीं।³⁴ मैं क्रसम खाता हूँ उन चीज़ों की जिन को तुम देखते हो।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۚ

39. और उन चीज़ों की भी जिन को तुम नहीं देखते।³⁵

وَمَا لَا تُبْصَرُونَ ۚ

40. कि यह एक बाइज़्जत रसूल का क्रौल है।³⁶

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۚ

41. किसी शायर का क्रौल नहीं।³⁷ तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।³⁸

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۚ

27. अर्थात् मैं जो मर गया था तो अच्छा होता कि हमेशा के लिए समाप्त हो जाता और हिसाब का यह दिन देखना न पड़ता। इस से अन्दाज़ा होता है कि कैसी हसरत भरी बातें होंगी जो क्रियामत के दिन काफ़िरों की ज़बान से निकलेंगी। अल्लाह तआला ने इस से पहले ही अवगत कर दिया है ताकि मनुष्य संभल जाए और उसे पछताना न पड़े।

28. दुनिया में तो मनुष्य शासन और सत्ता के नशे में घमण्डी बन जाता है किन्तु क्रियामत के दिन उसे एहसास होगा कि वह हथ्र के मैदान में अकेला है। न उस का लाव लश्कर उस के साथ है और न उस का राज्य बाक़ी है। सारे आदेशात्मक अथवा शासन अधिकार उस से छीन लिये गये हैं।

राजाओं और सत्ताधारी लोगों के लिए कैसी दिल दहला देने वाली बात है यह। काश वे इस आयत को गौर से पढ़ते।

29. काफ़िर इधर पछताने की बातें कर ही रहा होगा कि उधर फ़रिश्तों को आदेश होगा कि इसे पकड़ कर इस की गर्दन में तौक्र डाल दो। यह तौक्र उस के अहं का दण्ड होगा। इस के बाद उस को जहन्नम में झोंक देने का आदेश होगा। जैसा कि आगे बयान हुआ है।

30. दुनिया में वह इच्छाओं का गुलाम था। और इच्छाओं का सिलसिला बहुत लम्बा था। इस लिए उस को सत्तर हाथ लम्बी ज़न्जीर में जकड़ दिया जाएगा। बदला आदमी को उस के कर्मों के अनुसार ही मिलेगा।

31. इस का दुस्साहस देखो कि अल्लाह की महिमा, उस की महानता का इन्कारी था, इस ने उस महान हस्ती को पहचाना नहीं। यह अपराध कोई मामूली अपराध नहीं बल्कि संगीन अपराध है क्योंकि यह अल्लाह के विरुद्ध खुला विद्रोह है।

32. आदमी जब अपने रब से बेपरवाह हो जाता है तो उन कामों से उस की कोई अभिरुचि नहीं होती जो अल्लाह की मर्जी के अनुकूल हैं तथा उस को प्रसन्न कर देने वाले हैं जिस की एक स्पष्ट मिसाल मुहताज़ों को खाना खिलाना और उन को खिलाने

के लिए दूसरों को उभारना। कुर्आन इस कन्जूसी को तथा ऐसे अहितैषी रवैये को बहुत बड़ा अपराध बताता है। जिस को अल्लाह ने धन संपत्ति प्रदान की उस के धन में मोहताज़ों का हक़ भी है।

33. अर्थात् पीने के लिए पीप जैसी गंदी चीज़ मिलेगी। वह इस लिए कि उस की धारणा और उस के काम बुरे और गन्दे ही रहे।

34. यहाँ “ला” नहीं इन्कार करने वालों की धारणाओं के खण्डन के लिए है। अर्थात् तुम्हारा यह समझना कि क्रियामत नहीं आएगी, वास्तविकता पूरक नहीं वास्तविकता के विरुद्ध है।

35. क्रसम गवाही के अर्थ में है। मतलब यह है कि जिन चीज़ों की अनुभूति तुम करते हो उन में बदले के दिन के चिन्ह बिलकुल स्पष्ट हैं जिन को कुर्आन ने खोल कर बयान भी कर दिया है और जो चीज़ें तुम्हारी नज़रों से ओझल हैं जैसे फ़रिश्ते, जन्नत, जहन्नम आदि उन से तुम को कुर्आन के द्वारा सुचित कर दिया गया है। इन परोक्ष की वास्तविकताओं पर विचार करने से हिसाब किताब के दिन का विश्वास पैदा हो जाता है।

36. अर्थात् यह जिब्रील की ज़बान से अदा हुए कलिमें हैं जो अल्लाह का बाइज़्जत संदेशवाहक है और संदेशवाहक होने की हैसियत से वह अल्लाह का कलाम उसके नबी पर वह्य कर रहा है। सूरह तकवीर आयत १९ में भी वही बात हज़रत जिब्रील के बारे में इरशाद हुई है।

37. अर्थात् रसूल जो कलाम पेश कर रहा है वह शायरी नहीं बल्कि जिब्रील का लाया हुआ कलाम है।

38. अर्थात् ईमान का कुछ ही असर कुबूल करते हो और फिर छोड़ देते हो। कुर्आन की बातें सत्य होने के कारण तुम्हारी अन्तरात्मा को अपील करती है और दिलों में विश्वास पैदा करती हैं परन्तु इच्छाओं का दबाव उसे स्वीकार करने में बाधक होता है।



42. और न यह किसी काहिन (ज्योतिषी) का क़ौल है।³⁹ तुम लोग कम ही समझते हो।

وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٩﴾

43. यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से नाज़िल हुआ है।⁴⁰

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٠﴾

44. और अगर इस (पैग़म्बर) ने कोई बात गढ़ कर हम से संबद्ध की होती।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤١﴾

45. तो हम इस का दाहिना हाथ पकड़ लेते।

لَا خَذَّ نَأْمُهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٢﴾

46. फिर उस की शह रग काट देते।⁴¹

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٣﴾

47. फिर तुम में से कोई (हमें) इस काम से रोक न सकता।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٤﴾

48. और वास्तविकता यह है कि यह⁴² परहेजगारों के लिए एक नसीहत है।

وَإِنَّهُ لَتَذِكْرٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٥﴾

49. और हम जानते हैं कि तुम में से इस को झुठलाने वाले भी हैं।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٦﴾

50. और यह काफ़ि़रों के लिए हसरत का कारण होगा।⁴³

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٤٧﴾

51. और यह बिलकुल सुनिश्चित सत्य है।⁴⁴

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٤٨﴾

52. तो तुम अपने महिमाशाली रब के नाम की तस्बीह करो।⁴⁵

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٤٩﴾

39. काहिन की व्याख्या सूरह “शुअरा” नोट १८० में गुजर चुकी।

40. अर्थात् कुर्आन न शायरी है और कहानत, बल्कि अल्लाह का कलाम है जो जिब्रील की ज़बानी रसूल पर उतारा गया है।

41. अर्थात् रसूल अपने पद पर रहते हुए कोई बात अपनी तरफ से अल्लाह की तरफ मन्सूब नहीं कर सकता। वह इस बात का ज़िम्मेदार है कि अल्लाह का कलाम ज्यों का त्यों प्रस्तुत करे। अगर उस ने अपनी ओर से कोई बात अल्लाह के कलाम में मिलाई होती तो यह उस पद का ग़लत इस्तेमाल होता और यह ऐसा संगीन अपराध होता कि हम उसी क्षण उस को विनष्ट कर देते और यह इबरतनाक सज़ा इसलिए भी देते ताकि लोगों की ग़लत रहनुमाई न हो।

इस सज़ा का नक्शा कुछ इस तरह खींचा गया है जैसे बादशाह अपने उस दूत की जो उस की तरफ से झुठी बातें जोड़े, दाहिना हाथ पकड़ कर उस की गर्दन उड़ा दे।

यह सज़ा इस के लिए है जो रसूल के पद पर रहते हुए अपनी तरफ से कुछ बातें अल्लाह की तरफ मन्सूब करे। इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि नबी होने का झूठा दावा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तुरंत यह सज़ा मिल जाएगी और यदि किसी

नबी होने का दावा करने वाले को नहीं मिलती तो यह उस के सच्चे होने की दलील होगी। ऐसी कोई बात आयत में नहीं कही गई है। इस लिए नबी होने का झूठा दावा करने वाले इस का सहारा नहीं ले सकते। दुनिया में केवल नबी होने के झूठे दावेदार नहीं हुए हैं बल्कि ख़ुदा होने के दावेदार भी हुए हैं और ख़ुदा को बुरा भला कहने वाले भी हैं। किन्तु अल्लाह उन को मोहलत देता है ताकि वे अपना पैमाना भर लें।

42. अर्थात् कुर्आन।

43. क्रियामत के दिन काफ़िर अफ़सोस करेंगे और पछताएंगे कि कुर्आन पर ईमान न ला कर उन्होंने ने बहुत बड़ी ग़लती की।

44. अर्थात् यह कुर्आन जो हिसाब किताब के दिन की ख़बर दे रहा है बिल्कुल सच्ची और सुनिश्चित है। हर तरह के शक और संदेह से ऊपर। फिर ऐसे विश्वस्नीय सत्य को क्यों नहीं स्वीकाराते।

45. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आप के माध्यम से आप के अनुयायियों को हिदायत है कि जब वास्तविकता वह है जो इस सूरह में बयान हुई तो काफ़िरों की बातों को ख़ातिर में न लाओ और अपने महिमाशाली प्रभु के गुणगाण तथा उस की इबादत में लग जाओ।

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह वाक़िआ नोट ५८ और ७६।



सूरह अल्-मआरिज

७०. सूरह अल्-मआरिज

नाम :- आयत ३ में ज़िलमआरिज (बुलन्दियों वाले) का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-मआरिज” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरू दौर के अन्त में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत के लिए जल्दी मचाने वालों को सावधान करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ७ में क्रियामत के अज़ाब के लिए जल्दी मचाने वालों को ख़बरदार किया गया है कि वह अज़ाब आ कर रहेगा और ठीक अपने समय पर

आएगा।

आयत ८ से १८ में क्रियामत के हालात बयान किये गए हैं कि वह कैसी सख़्त घड़ी होगी।

आयत १९ से २५ में इन्सानों की आम कमज़ोरी बयान करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि यह कमज़ोरी इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर होती है और वे गुण पैदा होते हैं जो मनुष्य को जन्नत का अधिकारी बनाते हैं।

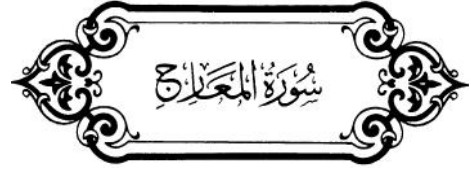
आयत २६ से ४४ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मज़ाक उड़ाने वालों और कुर्आन सुनाने से रोकने के लिए आप पर टूट पड़ने वालों को कड़ी तंबीह की गई है।

७०. सूरह अल्-मआरिज

आयतें : ४४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. माँगने वाले ने माँगा वह अज़ाब, जो प्रकट होने वाला है।¹
2. काफ़िरों पर, कोई उस को टालने वाला नहीं।²
3. वह (अज़ाब) अल्लाह की तरफ़ से होगा जो बुलन्दियों वाला है।³
4. फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) उस की तरफ़ चढ़ कर जाते हैं एक ऐसे दिन में जिस की माप पचास हज़ार वर्ष है।⁴
5. तो सब करो, सब्र जमील।⁵
6. ये लोग उसे दूर समझते हैं।
7. और हम उसे करीब देख रहे हैं।⁶
8. जिस दिन आसमान पिघली हुई धात की तरह हो जाएगा।⁷
9. और पहाड़ (धुनकी हुई) ऊन की तरह।⁸
10. और कोई दोस्त अपने दोस्त को न पूछेगा।
11. हालाँकि वे उन्हें दिखाए जाएंगे।⁹ मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अज़ाब से छुटकारा पाने के लिए फ़िदयः (मुक्ति प्रतिदान) में दे अपने बेटों को।
12. अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. और अपने ख़ानदान को जो उसे पनाह देता था।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝۱

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝۲

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝۳

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مَقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝۴

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝۵

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝۶

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۝۷

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ۝۸

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝۹

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝۱۰

يُبْصَرُ وَهُمْ يُودُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ

يَوْمَئِذٍ بِبَنِيهِ ۝۱۱

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝۱۲

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝۱۳

1. काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते थे कि आप क्रियामत के जिस अज़ाब से हमें डरा रहे हैं वह ले आओ। यह बात वे अज़ाब का मज़ाक़ उड़ाने के लिए कहते थे। उन के इसी मुतालबे के जवाब में फ़रमाया गया कि जिस अज़ाब की तुम माँग कर रहे हो वह प्रकट हो कर रहेगा। तुम्हें एक निश्चित रूप से होने वाली बात से अवगत किया गया है। अब यदि तुम इस का मज़ाक़ उड़ाना चाहते हो तो उड़ाओ, अपना अन्जाम देख लोगे।

2. अर्थात् क्रियामत प्रकट हो कर रहेगी और उस रोज़ काफ़िरों पर निश्चित रूप से अज़ाब मुसल्लत होगा। यह बात बिल्कुल अटल है और किसी तरह टलने वाली नहीं है।

3. अर्थात् अज़ाब का यह फैसला अल्लाह की बारगाह से हो चुका है जिस की महीमा की शान यह है कि उस की बारगाह तक पहुँचने के लिए बुलन्दियों पर बुलन्दियाँ तय करनी पड़ती हैं। उस महिमाशाली सर्वोच्च हस्ती की महानता का तुम्हें एहसास होता तो उस से डरते और उस के अज़ाब से पनाह माँगते।

4. यह आयत मुताशाबिहात (उपलक्षित आयतों) में से है जिस का मतलब अल्लाह ही जानता है और ऐसी आयतों की असल हक़ीक़त मालूम करने की चेष्टा फ़ित्ने में पड़ जाने का कारण है। ईमान वालों का तरीक़ा यह है कि वे इन पर ईमान लाते हैं और इन की व्याख्या के पीछे नहीं पड़ते। हज़रत इब्ने अब्बास से जब इस आयत का मतलब पूछा गया तो उन्होंने ने साफ़ कहा कि मैं नहीं जानता। (तफ़सीर तबरी जिल्द २९, पृष्ठ ४५)

रही बात यह कि इस आयत से तात्पर्य क्या है तो इस

आयत से अभिप्रेत अल्लाह की महानता का चित्रण प्रस्तुत करना है और क्रियामत के लिए जल्दी मचाने वालों पर स्पष्ट करना है कि उस दिन का अज़ाब उस हस्ती की तरफ़ से होगा जो बहुत ही बुलन्दियों वाला है और जिस की बारगाह में पहुँचने के लिए फ़रिशतों को भी कितनी मन्ज़िलें और कितनी बुलन्दियाँ तय करनी पड़ती हैं। ऐसे महिमाशाली प्रभु की तरफ़ से जो अज़ाब होगा उस की सख़्ती की कल्पना मात्र से मनुष्य काँप उठे परन्तु ये इन्कार करने वाले हैं कि इस का मज़ाक़ उड़ा कर उस के लाने की माँग कर रहे हैं।

इस अवसर पर सूरह हज्ज नोट ८४ और सूरह सज्दा नोट ८ भी सामने रहे।

5. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत है कि इन इन्कार करने वालों की बातों पर सब्र करो और ऐसा सुन्दर सब्र कि उन की बातों का गोया तुम पर कोई असर हुआ ही नहीं।

6. अर्थात् क्रियामत के बारे में इन की सोच यह है कि पहले तो वह होगी ही नहीं। और यदि हुई तो वह बहुत दूर की बात है जब कि अल्लाह के नज़दीक़ इसे निश्चित रूप से प्रकट होना है और वह अतिशीघ्र प्रकट होने वाली है। जो मोहलत इन्सान को दी गई है वह बहुत थोड़ी है।

7. अर्थात् आसमान का पदार्थ गर्म हो कर धात की तरह पिघलने लगेगा।

8. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिआ नोट ५

9. अर्थात् क्रियामत के दिन एक दोस्त दूसरे दोस्त को देख रहा होगा किन्तु उस की ओर कोई ध्यान न देगा। उसे अपनी ही पड़ी होगी।



14. और धरती के सब लोगों को, और अपने आप को बचा ले।¹⁰

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝۱۳

15. हरगिज़ नहीं,¹¹ वह भड़कती हुई आग होगी।

كَلَّا إِنَّهَا لَأُغْلَى ۝۱۵

16. जो खाल को उधेड़ लेगी।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى ۝۱۶

17. वह अपनी तरफ़ बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिस ने (सत्य से) पीठ फेरी थी और मुँह मोड़ा था।

تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝۱۷

18. माल जमा किया था और सेंट सेंट कर रखा था।¹²

وَجَمَعَ فَأَوْغَى ۝۱۸

19. मनुष्य बेसब्रा पैदा किया गया है।¹³

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝۱۹

20. जब उस को तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝۲०

21. और जब उसे सुख सम्पन्नता प्राप्त होती है तो कंजूस बनता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝۲१

22. परन्तु नमाज़ी इस से बचे हुए हैं।¹⁴

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝۲२

23. जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।¹⁵

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝۲३

24. जिन के मालों में एक निर्धारित हक़ हैं।¹⁶

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝۲४

25. माँगने वालों और महरूम का।¹⁷

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝۲५

26. जो बदला पाने के दिन को सच मानते हैं।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝۲६

27. जो अपने रब के अज़ाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ۝۲७

28. क्योंकि उन के रब का अज़ाब निर्भय होने की चीज़ नहीं।¹⁸

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝۲८

29. और वे जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝۲९

10. क्रियामत के दिन अपराधी यह चाहेगा कि वह अपने सगे सम्बन्धियों को बल्कि दुनिया भर के लोगों को फ़िदयः (मुक्ति प्रतिदान) में दे कर अपने को छुड़ा सकता है तो छुड़ा ले किन्तु उस के पास न फ़िदयः देने के लिए कुछ होगा और न उस से कोई फ़िदयः स्वीकार किया जाएगा।

अल्लाह तआला ने क्रियामत के दिन, मनुष्य की बेबसी का जो आलम होगा उस से उसे पहले ही खबरदार कर दिया है ताकि जो व्यक्ति अपने सगे सम्बन्धियों, अपने परिवारजनों और अपनी क़ौम (Nation) के लिए आखिरत को किनारे डाल कर दुनिया को लक्ष्य बनाता है वह होश से काम ले।

11. अर्थात् क्रियामत के इन्कारियों का यह खियाल बिल्कुल ग़लत है कि जहन्नम जैसी चीज़ से उन्हें कोई मामला पेश नहीं आएगा।

12. यह उस के कन्जूसी का चित्रण है कि माल को जमा करने और बढ़ाने की चिन्ता तो उसे हुई किन्तु उस में मुहताजों का जो हक़ अल्लाह तआला ने निर्धारित किया था उस से वह बेपरवाह रहा। माल अल्लाह तआला ने इस लिए नहीं दिया था कि अपनी तिजोरियाँ भर कर रखे बल्कि इस लिए दिया था कि इस से आवश्यक ज़रूरतें पूरी की जाएँ जिन में मुहताजों और गरीबों का हक़ भी है।

13. अर्थात् इन्सान की यह प्राकृतिक कमज़ोरी है कि वह बहुत जल्द हिम्मत हार जाता है और हौसले का सबूत नहीं देता। आगे की आयतों में इस की इस कमज़ोरी को स्पष्ट किया गया है। किन्तु यह कमज़ोरी ऐसी नहीं है कि उसे दूर न किया जा सकता हो। प्रशिक्षण द्वारा इसे ज़रूर दूर किया जा सकता है। और यह प्रशिक्षण जैसा कि आगे स्पष्ट किया गया है नमाज़ के द्वारा प्राप्त होता है। जीवन परिक्षा के लिए यह आवश्यक था कि उस के अन्दर कुछ ऐसी कमज़ोरियाँ रख दी जाएँ जिन को वह अपने कर्मों से दूर कर सके यह कमज़ोरियाँ ऐसी नहीं हैं कि इन पर मनुष्य क़ाबू न पा सके और मजबूर हो कर रह जाए।

यदि मनुष्य की संरचना में मजबूरी के अन्दाज़ की कमज़ोरियाँ होती तो नमाज़ियों को इस से अलग न किया जाता। जब कि आयत २२ में उन्हें अलग किया गया है।

14. अर्थात् नमाज़ पढ़ने वाले अपनी इस प्राकृतिक कमज़ोरी पर क़ाबू पा लेते हैं। वे न तकलीफ़ पहुँचने पर वावेली मचाते हैं और न सुख संपन्नता प्राप्त होने पर मुहताजों का हक़ अदा करने में कन्जूसी करते हैं। ध्यान रहे कि नमाज़ का यह असर उन लोगों के जीवन में साफ़ झलकता है जो पूरे विवेक के साथ नमाज़ अदा करते हैं।

15. अर्थात् नमाज़ कभी छोड़ते नहीं बल्कि पाबन्दी के साथ अदा करते हैं।

16. तात्पर्य ज़कात है जिस की तफ़सील यद्यपि बाद के दौर में बयान हुई है किन्तु इस के संक्षिप्त आदेश पहले से चले आ रहे थे। तौरात में भी उशर अदा करने का आदेश मौजूद है और हज़रत इस्माईल ने भी ज़कात का हुक्म दिया था इस लिए उन की नस्ल में यह हुक्म चला आ रहा था। इस के अलावा धनवानों के धन में मुहताजों का अधिकार एक सामान्य अधिकार है जिस को मनुष्य बुद्धि और अपनी प्रकृति से जानता है। यद्यपि कि इस की तफ़सील जानने का साधन शरीअत ही है इस लिए जिस समय ये तफ़सील नाज़िल नहीं हुई थी, शरीअत का संक्षिप्त हुक्म मौजूद था और भूखों को खाना खिलाना और मुहताजों को सदका देना एक ऐसा हक़ है जिस से मानव स्वभाव भली भाँति परिचित है।

17. इस की व्याख्या के लिए देखिए सूरह जारियात नोट ३०

18. आदमी यह न समझे कि मैं अल्लाह के अज़ाब से पूरी तरह सुरक्षित हूँ बल्कि उसे यह खटका लगा रहना चाहिए कि मालूम नहीं मुझ से क्या कुसूर हो जाए और अल्लाह का अज़ाब मुझे अपनी लपेट में ले ले। अज़ाब का यही भय आदमी को सजग बनाता है।



30. सिवाय अपनी पत्नियों और अपनी अधिकृत स्त्रियों (लौंडियों) के कि इस बारे में उन पर कोई मलामत नहीं।¹⁹ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
31. अलबत्ता जो लोग इस के अलावा कुछ और चाहें तो वे हद से बढ़ जाने वाले हैं।²⁰ فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ﴿٣١﴾
32. जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का पास रखते हैं।²¹ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٣٢﴾
33. जो अपनी गवाहियों को अदा करते हैं।²² وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
34. और जो अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं।²³ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾
35. यही लोग जन्नतों में इज़्जत के साथ रहेंगे।²⁴ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾
36. तो (ऐ नबी !) इन काफ़िरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं।²⁵ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾
37. दाएं और बाएं से गरोह दर गरोह। عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾
38. क्या इन में से प्रत्येक व्यक्ति यह आशा रखता है कि वह नेमत भरी जन्नतों में दाखिल कर दिया जाएगा ? أَيُظْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾
39. हरगिज़ नहीं।²⁶ हम ने इन को पैदा किया है उस चीज़ से जिसे वे जानते हैं।²⁷ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾
40. नहीं।²⁸ मैं क्रसम खाता हूँ पूरबों और पश्चिमों के प्रभु की कि हम सामर्थ्यवान हैं।²⁹ فَلَا أَقْسَمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِيرُونَ ﴿٤٠﴾
41. इस बात पर कि हम इन की जगह इन से बेहतर लोग ले आएँ और हम आजिज़ रहने वाले नहीं हैं।³⁰ عَلَىٰ أَنْ تُبَدَّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾

19. इस की व्याख्या सूरह मोमिनून नोट ६ में गुजर चुकी।

20. इस की व्याख्या सूरह मोमिनून नोट ७ में गुजर चुकी।

21. इस की व्याख्या सूरह मोमिनून नोट ८ और ९ में गुजर चुकी।

22. अर्थात् अपनी गवाहियों को न्याय पूर्वक ठीक ठीक अदा करते हैं। गवाहियों में तौहीद और रिसालत की गवाही सब से पहले है। और वे गवाहियाँ भी जो मनुष्य और मनुष्य के बीच मामलों से सम्बन्धित दी जाती हैं।

23. नमाज़ की हिफ़ाज़त में समय पर नमाज़ अदा करना और कोई नमाज़ क़ज़ा न करना, ठीक से वुजू करना, नमाज़ के अरकान को इत्मीनान और निष्ठा के साथ अदा करना। अपना ध्यान अल्लाह की ओर केन्द्रित रखना। कुआन की तिलावत और नमाज़ में पढ़े जाने वाले शब्दों पर ध्यान देना। ख़ियालों को इधर उधर भटकने न देना और मन के पूरे लगाव (ख़ुशू और ख़ुजू) के साथ नमाज़ अदा करना और नमाज़ के सिलसिले की समस्त बातों को पूरा करना शामिल है। जैसे पुरुषों के लिए जमाअत के साथ नमाज़ अदा करना आदि।

ऊपर ईमान वालों के जो गुण बयान हुए हैं उन की शुरुआत नमाज़ से हुई और समाप्ति भी नमाज़ पर हो रही है जिस से यह इशारा मिलता है कि ये गुण नमाज़ ही की देन हैं और नमाज़ ही इन की ज़ामिन हैं।

24. अर्थात् जन्नत मुफ़्त में मिलने वाली चीज़ नहीं है बल्कि उन को मिलेगी जो अपने को इन गुणों से सुसज्जित कर के इस की पात्रता को सिद्ध करेंगे।

फल वही काटता है जो मेहनत कर के वृक्ष लगाता है केवल इच्छा मात्र से न पेड़ उगता है और न फल प्राप्त होते हैं। जन्नत भी कर्मों ही का फल है इस लिए मेहनत ज़रूरी है।

25. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कुआन पढ़ कर सुनाते तो काफ़िर लोग आवाज़ सुनकर कुआन का

मज़ाक उड़ाने के लिए आप की तरफ़ दौड़े चले आते। उन की इसी हरकत का चित्रण इन आयतों में प्रस्तुत किया गया है।

26. यह काफ़िरों के उस ख़ियाल का खण्डन है कि आख़िरत सिरे से होगी ही नहीं और अगर वह बरपा हो ही गई तो उन को जन्नत ही मिलेगी क्यों कि उन को माल और दौलत की बाहुल्यता के साथ जाह-व-हशमत (इज़्ज़त और नौकर चाकर) भी प्राप्त हुआ है और यह इस बात का प्रतीक है कि अल्लाह उन से ख़ुश है अतः वे आख़िरत में भी अल्लाह की नेमतों के भागीदार होंगे।

27. अर्थात् जब हम ने इन को पानी की एक तुच्छ बूँद से पैदा किया है तो इन में यह घमण्ड कहाँ से आ गया है कि वे ख़ुदा के मुकाबले में अकड़ने लगते हैं? यदि वे अपनी पैदाइश पर विचार करते तो उन्हें अपनी बेचारगी का एहसास होता और वे अपने सृष्टा के आगे झुकते।

28. अर्थात् उन का ऊँचे होने का ख़्याल और अपने सृष्टा के मुकाबले में उन का अंह बिलकुल व्यर्थ है।

29. पूरब और पश्चिम एक नहीं बल्कि कई हैं और उन सब का रब अल्लाह ही है। जिस तरह ज़मीन के पूरब और पश्चिम हैं उसी प्रकार चाँद सितारे और अन्य उपग्रहों के भी पूरब और पश्चिम हैं और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि कायनात में कितने पूरब और कितने पश्चिम हैं। इन सब का मालिक ज़ाहिर है अल्लाह के सिवा कोई नहीं और यह वास्तविकता उस के सामर्थ्यवान होने पर तर्क प्रस्तुत करती है।

30. अर्थात् जब अल्लाह की कुदरत असीम है तो उस के लिए यह क्या मुश्किल है कि इन्सानों के मर खप जाने के बाद उन को पुनः पैदा कर दे। वह न केवल उसी रूप (Model) में उन को दोबारा पैदा कर सकता है बल्कि अगर चाहे तो उन की जगह उन से बेहतर रूप (Model) के लोग भी अस्तित्व में ला सकता है। उस की कुदरत मनुष्य को मौजूदा रूप में पैदा कर के समाप्त नहीं हुई कि वह उसे दोबारा पैदा करने या उस से बेहतर सृष्टि को अस्तित्व में लाने में असमर्थ हो।



42. अतः इन्हें छोड़ दो कि ये बातें बनाते और खेलते रहें। यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से दो चार हों जिस का इन से वादा किया जा रहा है।³¹

فَذَرَهُمْ خَوْصًا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي
يُوعَدُونَ ﴿٣٧﴾

43. जिस दिन ये अपनी क़ब्रों से इस तेज़ी के साथ निकलेंगे कि जैसे एक निशाने (लक्ष्य) की ओर भाग रहे हैं।³²

يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَانَهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ
يُؤْفَضُونَ ﴿٣٨﴾

44. उन की निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छाई होगी। यह है वह दिन जिस का इन से वादा किया जा रहा था।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا
يُوعَدُونَ ﴿٣٩﴾

31. अर्थात् यदि वे इन खुली वास्तविकताओं को स्वीकार नहीं करते और उन का मज़ाक उड़ाने ही में लगे हुए हैं तो उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो । क्रियामत के दिन उन को असली हक़ीक़त का पता चल जाएगा ।

32. अर्थात् जब क्रियामत का दूसरा सूर फूँका जाएगा तो ये लोग जो दोबारा जी उठने का इन्कार कर रहे हैं क़ब्रों से बड़ी

तेज़ी के साथ निकल खड़े होंगे और ऐसे दौड़ेंगे जैसे निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए लोग दौड़ पड़ते हैं।

क़ब्रों से निकलने का मतलब ज़मीन का फट जाना और उस से बाहर निकल आना है क्रियामत तक पैदा होने वाले इन्सान जो मर कर मिट्टी में मिल चुके थे फिर खुदा का हुक्म होते ही दोबारा ज़िन्दा हो कर ज़मीन से निकल पड़ेंगे और मारे घबराहट के तेज़ी से भाग रहे होंगे।



सूरह नूह

७१. सूरह नूह

नाम :- यह सूरह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दअवत को विस्तार के साथ प्रस्तुत करती है इस लिए इस का नाम सूरह “नूह” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और उन हालात में नाज़िल हुई जब कि मक्का के बहुदेववादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप की दअवत के विरोध में उग्र रूप धार लिया था।

केन्द्रीय विषय :- हज़रत नूह का क्रिस्सा इस अन्दाज़ में पेश किया गया है कि रसूल का विरोध करने वाले चौक जाएं और इस दर्पण में अपनी छवि देख लें।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में बयान हुआ है कि जब नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की जाति वालों की तरफ रसूल बना कर नियुक्त किया गया था तो उन्होंने ने क्या दअवत

पेश की थी।

आयत ५ से २० में हज़रत नूह की दअवती संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने ने अपनी जाति को जो नसीहतें की थीं उस को बयान किया गया है।

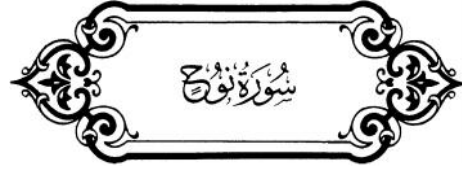
आयत २१ से २४ में हज़रत नूह की अल्लाह के समक्ष फ़रियाद को प्रस्तुत किया गया है। जो उन्होंने ने अपनी जाति पर हुज्जत पूरी करने के बाद उन की हठधर्मी को देखते हुए की थी।

आयत २५ में उस अज़ाब का ज़िक्र है जो क्रौम नूह पर आया।

आयत २६ से २८ में हज़रत नूह की उस दुआ को पेश किया गया है जो उन्होंने ने उस अज़ाब के मौक़े पर की थी जो उन की जाति पर आया।

७९. सूरह नूह

आयतें : २८



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हम ने नूह को उस की जाति की ओर भेजा ¹ कि अपनी जाति को खबरदार कर दो इस से पहले कि उन पर दुखदायिनी यातना आए।²
2. उस ने कहा, ऐ मेरी जाति के लागो ! मैं तुम्हारे लिए खुला खबरदार करने वाला हूँ।³
3. कि अल्लाह की इबादत करो, उस से डरो और मेरा अनुपालन करो।⁴
4. वह तुम्हारे गुनाह क्षमा करेगा ⁵ और तुम को एक नियत समय तक मोहलत देगा।⁶ निस्संदेह जब अल्लाह का नियत किया हुआ समय आ जाएगा तो उस को टाला नहीं जा सकेगा।⁷ काश कि तुम जान लेते !
5. नूह ने निवेदन किया ऐ मेरे रब ! मैं ने अपनी जाति को रात दिन पुकारा।⁸
6. मगर मेरी पुकार ने उन के फ़रार (विमुखता) ही में वृद्धि की।⁹
7. और मैं ने जब भी उन को बुलाया ताकि तू उन को क्षमा कर दे ¹⁰ उन्होंने ने अपनी उंगलियाँ कानों में ठूँस लीं, कपड़ों से अपने को ढाँक लिया।¹¹ अपनी ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा अहं किया।
8. फिर मैं ने उन को बुलन्द आवाज़ में दअवत दी।¹²
9. फिर मैं ने उन को आलानिया भी समझाया और एकान्त में भी।¹³

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ②

إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ③

يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ④
إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑤

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑥

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ⑦

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ
فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَعْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا ⑧
اسْتَكْبَارًا ⑨

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ⑩

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ⑪

1. हज़रत नूह का क्रिस्सा विस्तार के साथ सूरह हूद में गुज़र चुका और अन्य कई सूरों में भी इस के थोड़े थोड़े हिस्से बयान हुए हैं। इस सूरह में विशेष रूप से इन की दअवती संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

ध्यान रहे कि हज़रत नूह पहले रसूल हैं जो हज़रत आदम के बाद उन के वंश की तरफ़ जिस की आबादियाँ इराक़ के उत्तरी हिस्से में थीं और जिन में एक मुद्दत गुज़र जाने के कारण धारणाएँ विकृत हो चुकी थीं जिस के फल स्वरूप लोगों के कर्म भी अत्याधिक बिगड़ चुके थे, भेजे गए थे।

2. स्पष्ट हुआ कि एक रसूल की पहली जिम्मेदारी यह होती है कि वह लोगों को अल्लाह के अज़ाब से ख़बरदार कर दे। नबियों की दअवत की भी यही विशेषता होती है जिसे कुर्आन की परिभाषा में इन्ज़ार (डराना) कहा जाता है। इस में उन लोगों के लिए जो सत्य की दअवत का काम करने के लिए उठें यह रहनुमाई है कि वे दो टूक शब्दों में लोगों को अल्लाह के अज़ाब से डराएँ ताकि वे अल्लाह की तरफ़ रूजू हों।

3. अल्लाह की हिदायत के अनुसार हज़रत नूह ने अपने को इस हैसियत से पेश किया कि वे अल्लाह की ओर से स्पष्ट रूप से ख़बरदार करने वाले हैं।

4. सारांश रूप से हज़रत नूह की दअवत यह थी कि अल्लाह की और केवल अल्लाह की इबादत करो जिस का मतलब यह था कि शिर्क और बुत परस्ती को छोड़ दो और एक अल्लाह ही को पूज्य बनाओ। दूसरे यह कि अल्लाह से डरो और उस की नाफ़रमानी और गुनाह के कामों से बचो जिस का मतलब यह था कि अल्लाह से डरते हुए और उस के समक्ष जवाबदेही का एहसास रखते हुए जिम्मेदाराना जिन्दगी गुज़ारो। और तीसरे यह कि रसूल का अनुपालन करो जिस का मतलब यह था कि रसूल के हर आदेश का अनुपालन अनिवार्य है क्योंकि अल्लाह के आदेश रसूल ही के माध्यम से मिलते हैं इस लिए रसूल का अनुपालन वास्तव में अल्लाह ही का अनुपालन है।

हज़रत नूह की दअवत की ये तीन मौलिक धाराएँ थीं जिन को जैसा कि आगे चल कर स्पष्ट होगा पूरे तर्क के साथ पेश किया गया था।

5. अर्थात् इस दअवत को स्वीकार करो तो अल्लाह तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर देगा। ईमान लाने पर काफ़िरों के पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं और जैसा कि सूरह अनफ़ाल में इर्शाद हुआ है :-

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَسْتَهِوا
يُغْفَرُ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ. (अनफ़ाल: ३८)

अर्थ :- “उन लोगों से कहो जिन्होंने ने कुफ़्र किया है कि अगर वे बाज़ आ जाएं तो जो कुछ उन से पहले हो चुका उस के लिए उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा।

6. अर्थात् इस सूरत में तुम पर अज़ाब नहीं आएगा बल्कि इस समय तक तुम्हें दुनिया में मोहलत मिलेगी जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निश्चित किया है।

7. अर्थात् अल्लाह ने अमल की मोहलत की जो अवधि निश्चित की है उस के समाप्त होने पर किसी को भी अतिरिक्त मोहलत नहीं मिलती इस लिए इस मोहलत को गनीमत जानो और सुधार कर लो।

8. यह उस दअवती संघर्ष का सार है जिस के लिए हज़रत नूह ने एक लम्बे समय तक रात दिन एक कर दिया था। दअवत पेश करने के लिए उचित समय वही है जब लोग ध्यानपूर्वक बात सुन सकें चाहे वह दिन का समय हो या रात का।

9. एक पैग़म्बर की दअवत का भी लोगों ने असर स्वीकार नहीं किया बल्कि उलटे उस से बिफर गए क्योंकि वे बड़े हठधर्म लोग थे और आज्ञानता के अन्धकार से निकलना नहीं चाह रहे थे।

10. हज़रत नूह की दअवत को स्वीकार करने का मतलब अपने को अल्लाह की क्षमा का पात्र बनाना था और अल्लाह की क्षमा जिस को प्राप्त हुई निस्संदेह वह निहाल हो गया। किन्तु हज़रत नूह की जाति ने उस की कोई क़द्र नहीं की।

11. यह उस प्रतिक्रिया का चित्रण है जो उस हठधर्म जाति की ओर से हुआ। उन को हज़रत नूह की बातें सुनना गवारा नहीं था इस लिए वे उन से मुँह छिपा लेते।

12. अर्थात् उन के समूह को बुलन्द आवाज़ से संबोधित किया।

दअवत का एक तरीक़ा अभि-भाषण है जिस के द्वारा एक साथ और ऊँचे स्वर में लोगों के सामने दअवत पेश की जाती है।

13. अर्थात् उन की सभाओं में भी उन को समझाया और एकान्त में उन से मिल कर भी। मतलब यह है कि समझाने बुझाने के विभिन्न तरीक़े अपनाए। आलानिया भी उन्हें समझाया और अलग अलग लोगों से मिल कर भी ताकि वे किसी तरह बात समझने के लिए आमादा हो जाएँ।

10. मैं ने कहा अपने रब से क्षमा माँगो। निस्संदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला है।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾

11. वह तुम पर खूब बारिश बरसाएगा।¹⁴

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿١١﴾

12. तुम्हें माल और औलाद में बाहुल्यता प्रदान करेगा, तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और नहरें जारी करेगा।

وَيُمِدُّكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾

13. तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की बड़ाई से डरते नहीं हो।¹⁵

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

14. हालाँकि उस ने तुम्हें विभिन्न दशाओं से गुज़ार कर पैदा किया है।¹⁶

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾

15. क्या तुम देखते नहीं कि किस तरह अल्लाह ने सात आसमान तह दर तह बनाए।¹⁷

أَلَمْ تَرَ وَكَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

16. और उन में¹⁸ चाँद को नूर और सूरज को चिराग़ बनाया।¹⁹

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

17. और अल्लाह ही ने तुम को ज़मीन से ख़ास तरीक़े पर उगाया।²⁰

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾

18. फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा।²¹ और उस से निकाल खड़ा करेगा।²²

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

19. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया।²³

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾

20. ताकि तुम उस के खुले रास्तों में चलो।²⁴

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

21. नूह ने निवेदन किया²⁵ ऐ मेरे रब ! इन्होंने मेरी अवहेलना की और उन लोगों का अनुपालन किया जिन के माल और औलाद ने उन के घाटे ही में वृद्धि की।²⁶

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْكَ مَالَهُ وَلَوْلَا ذَلِكَ لَفِي الْأَخْسَارِ ﴿٢١﴾

22. और उन्होंने ने बहुत बड़ी चाल चली।²⁷

وَمَكْرُوا مَكْرًا كَبِيرًا ﴿٢٢﴾

14. मालूम होता है कि लोग बारिश की कमी के कारण परेशान थे और यह अल्लाह की तरफ से आजमाइश थी ताकि उन्हें अपने गलत रास्ते का एहसास हो और वे अल्लाह की तरफ लपकें। हज़रत नूह ने उन्हें क्षमा याचना करने के लिए कहा और फ़रमाया कि इस सूत में अल्लाह तआला तुम पर मूसलाधार बारिश भेजेगा।

हज़रत नूह की इस हिदायत से स्पष्ट हुआ कि जो जाति भी बारिश के अकाल में ग्रस्त हो उस के लिए स्वीकृत तरीका क्षमा याचना (इस्तिफ़ार) है अर्थात् वह अपने गुनाहों के लिए अल्लाह से माफ़ी माँगे और अपना रवैया दुरुस्त कर लें।

15. “रज़ा’ का मूल अर्थ उम्मीद करना है किन्तु जब यह शब्द नकारात्मक प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ भय के भी होता है। अतः लिसानुलअरब में पुष्टि है:-

الرجاء فى معنى الخوف لا يكون الامع الجحد.

अर्थ :- “रज़ा भय के अर्थ में उसी सूत में आता है जब कि वह नकारात्मक के साथ हो।”

16. अर्थात् सोचो कि तुम क्या थे और तुम्हें क्या बना दिया गया। तुच्छ पानी की एक बूँद को कई चरणों से गुज़ार कर तुम को एक संपूर्ण इन्सान बनाया गया। इस से यह बात ज़ाहिर नहीं होती कि तुम्हारा पैदा करने वाला (सृष्टा) किस शान का है। फिर उस की बड़ाई, उस की महानता तथा उस की महिमा से डरते क्यों नहीं ?

17. सात आसमानों के तह दर तह होने का मतलब सात लोक का अस्तित्व है जिन में से हर एक का एक आसमान है। हमारा यह नील गगन इस दुनिया का आसमान है। सात आसमानों की जानकारी मनुष्य को प्राचीन काल से नबियों की हिदायत के द्वारा प्रदान की गई है। इस लिए इस की हैसियत स्थायी ज्ञान की है। हज़रत नूह ने लोगों को आसमानों की पैदाइश पर सोच विचार करने की दअवत दी ताकि उन्हें अल्लाह की महान कुदरत का अन्दाज़ा हो और वह हज़रत नूह

की दअवत की सत्यता की निशानियाँ आसमान में भी देख लें।

18. चाँद और सूरज दुनिया के आसमान में हैं इस लिए इन को आसमानों की तरफ मन्सूब किया गया है।

19. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नबा नोट १

20. अर्थात् जिस तरह पौधा ज़मीन से उगता है और फिर विकसित होता है उसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह तआला ने मिट्टी से पैदा फ़रमा कर उस का विकास किया है। अतः इस की नस्ल पानी की तुच्छ बूँद (वीर्य) से चलती है और फिर वह इस का ऐसा विकास करता है कि वह बढ़ कर अपनी मर्ज़ी से चलने फिरने वाला इन्सान बन जाता है।

21. अर्थात् फिर तुम मर कर मिट्टी में मिल जाओगे।

22. अर्थात् क्रियामत के दिन वह तुम को दोबारा ज़िन्दा कर के ज़मीन से निकालेगा।

23. अर्थात् ऐसा समतल बनाया कि उस पर इन्सान का रहना बसना आसान हो गया।

24. पहाड़ों में दर्रे इसी उद्देश्य से रखे गए हैं ताकि लोग एक इलाके से दूसरे इलाके में पहुँच सकें।

25. जब हज़रत नूह ने सैकड़ों वर्ष तक दअवत पेश कर के हुज्जत पूरी कर दी और पूरी जाति कुफ़्र ही पर अड़ी रही तो उन्होंने ने अल्लाह के समक्ष वह फ़रियाद की जो आगे बयान हुई है।

26. अभिप्रेत जाति के वे लीडर लोग हैं जिन को धन की बाहुल्यता प्राप्त थी और जिन की अधिक संतानें थीं। इन चीज़ों के घमण्ड में वे अल्लाह के बागी बन गए थे। उन के ज़ाहिरी वैभव से प्रभावित हो कर लोग उन की बात में आ रहे थे और गुमराह हो रहे थे।

27. काफ़िरों ने हज़रत नूह के विरुद्ध बहुत बड़ी साज़िश की थी जिस की तफ़सील यद्यपि बयान नहीं हुई है किन्तु बाद की आयत से अन्दाज़ा होता है कि उन्होंने ज़ाहिरी वैमनस्य एवं विद्वेष को उभारना चाहा और लोगों को शह दी कि नूह तुम्हें अपने पूज्यों को छोड़ने के लिए कह रहे हैं ताकि लोग भड़कावे में आ कर नूह पर टूट पड़ें।



23. और कहा हरगिज़ न छोड़ो अपने पूज्यों को और न छोड़ो वह को और न सुवाब् को और न यगूस और यअूक और नस्त्र को।²⁸

وَقَالُوا لَا تَدْرِكُنَا إِلَهاتُكُمْ وَلَا تَدْرِكُنَا وَدًّا وَلَا سِوَاءَهُ
وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۝۳

24. इन्होंने ने बहुत लोगों को गुमराह किया है और तू इन ज़ालिम लोगों की गुमराही ही में वृद्धि कर।²⁹

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝۴

25. आखिरकार वे अपने गुनाह के कारण डुबो दिए गए³⁰ फिर आग में दाखिल कर दिए गए³¹ तो अल्लाह के मुक़ाबले में उन्होंने कोई मददगार न पाया।³²

مِمَّا خَطِيئَتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا ۖ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ
مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝۵

26. और नूह ने दुआ माँगी³³ ऐ मेरे रब ! तू ज़मीन पर इन काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝۶

27. अगर तू ने इन को छोड़ दिया तो वे तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इन से जो औलाद भी पैदा होगी वह कुकर्म और काफ़िर ही होगी।³⁴

إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَكِدُوا إِلَّا فِجْرًا
كَقَارًا ۝۷

28. ऐ मेरे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे माता पिता को।³⁵ और उन को जो मेरे घर में मोमिन हो कर दाखिल हों।³⁶ और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को।³⁷ और ज़ालिमों के विनाश में वृद्धि कर।

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا
وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا
تَبَارًا ۝۸

28. ये नूह की जाति ने जिन्हें पूज्य की हैसियत से गढ़ लिया था उन बुतों के नाम हैं। इन के भावार्थ के बारे में अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी का शोध यह है कि :-

“वदू” के मतअल्लिक मालूम हो चुका है कि यह वुदू से है जिस के मायने मुहब्बत के हैं।

“सुवाअ” इस लफ़्ज़ के मुश्तक मुँह (अर्थात् जिस मूल शब्द से यह निकला है) कलामे अरब में नहीं मिलता। मुमकिन है कि सूअ से मुश्तक हो जिस के मायने ज़माने के हैं।

“यअूक-ऊक” से (रोकना) मुज़ारिअ (वह क्रिया जिस में वर्तमान और भविष्य दोनों पाय जाएँ) का सीगा है यअूक के मायने रोकता है यानी मुसीबतों से रोकता है।

“यगूस” भी यअूक के क़ाएदे (नियम) से अलम (व्यक्ति वाचना संज्ञा) है।

“ग़ौस” (फ़रियाद को पहुँचना) इस का मस्दर (अर्थात् वह मूल शब्द जिस से यह शब्द बना है) है। यगूस के मायने फ़रियाद रसी करना है।

“नस्सर” के लुगवी मायने (शाब्दिक अर्थ) गिध के हैं। इसी शकल का एक मज्मूआ कवाकिब (तारों का झुंड) आसमान में है जिस को नस्र कहते हैं। नस्र देवता की हैसियत से सामी क्रौमों में बहुत मुद्दत से पूजा जाता है। (अर्जुल कुर्आन जिल्द २ पृष्ठ २३५, २३६)

इन नामों में यगूस ख़ास अरबी शब्द है जो ग़ौस से है और जिस का अर्थ फ़रियाद पूरी करने के हैं। यह नूह की जाति के बुत का नाम था। किन्तु मुसलमानों के भी एक वर्ग ने अपने कुछ बुजुर्गों को ग़ौस का लक़ब दे रखा है और उन्हें हाज़िर व नाज़िर, (अर्थात् हर जगह मौजूद और सब कुछ देखने वाला) तथा हाज़तों को पूरी करने वाला समझ कर मदद और फ़रियादों को पूरी करने के लिए पुकारते हैं और समझते हैं कि इस से उन के तौहीद पर कोई आँच नहीं आती। हालाँकि यह खुला शिर्क है और शिर्क एक अक्षम्य गुनाह है। किन्तु जो मुसलमान बिदअतों में लीन हैं उन्हें इस की समझ नहीं। नूह की जाति बुत परस्ती में लिप्त थी और ये पीर परस्ती में लिप्त हैं। फ़रियादों को पूरी करने वाला (ग़ौस) अल्लाह के सिवा कोई नहीं इस लिए उसी को पुकारना सही है। काश वे तौहीद और शिर्क (एकेश्वरवाद और बहुदेववाद के अन्तर को समझ लेते)।

नूह की जाति के बुत उन के साथ ही तूफ़ान में डूब गए थे इस लिए उन का कोई अस्तित्व बाक़ी नहीं रहा। काफ़िर डूबे और अपने खुदाओं को ले कर डूबे।

बुत परस्ती की शुरुआत नूह की जाति में हुई थी। यह शुरुआत किस तरह हुई इस पर हज़रत इब्रे अब्बास ने रौशनी डाली है जिस का सार यह है कि बुतों के ये नाम वास्तव में नूह

की जाति के महापुरुषों के नाम हैं। जब वे मर गए तो शैतान ने लोगों के दिलों में यह बात डाल दी कि उन की मूर्ति बनाई जाएँ। उन मूर्तियों की उन्होंने ने पूजा नहीं की किन्तु जब वे मर गए तो बाद के लोग उन मूर्तियों की पूजा करने लगे। (बुख़ारी किताबुत्तप्सीर)

मतलब यह कि ये मूर्तियाँ जो उन महापुरुषों के स्मारक के तौर पर बनाए गए थे बुत परस्ती का माध्यम बन गए। इसी लिए इस्लाम ने मूर्तिकला को हराम ठहराया है।

29. ये शब्द हज़रत नूह की ज़बान से उस समय निकले जब कि उन की जाति गुमराही पर जमी रही।

30. अर्थात् पानी का ऐसा तूफ़ान आया कि उस में सब काफ़िर डूब गए। दुनिया में यह सज़ा उन के गुनाहों के फल स्वरूप मिली।

31. अर्थात् उन के शरीर यद्यपि पानी में डूबे किन्तु उन की आत्माएँ आग में दाख़िल हो गई। यह अज़ाब उन पर आलमे-बरज़ख़ (यमलोक) में हो रहा है और क्रियामत के दिन तो वे शरीर के साथ जहन्नम में दाख़िल होंगे। इस आयत से बरज़ख़ का अज़ाब साबित होता है। इस अवसर पर सूरह मोमिन नोट ७१ भी सामने रहे।

32. जिन पूज्यों को उन्होंने ने सहायक और फ़रियादों को सुन कर उसे पूरा करने वाला समझा था। उन में से कोई भी उन की मदद को नहीं पहुँचा। इस तरह अल्लाह के अज़ाब ने उन मनगढ़ंत पूज्यों का सत्य विरुद्ध होना सिद्ध कर दिया।

33. हज़रत नूह ने यह दुआ उस समय की जब कि वे पूरी तरह हुज्जत क़ायम कर चुके थे अर्थात् पूर्ण रूप से तर्क प्रस्तुति कर के सत्य को स्पष्ट कर चुके थे। इस के बाद भी जो लोग काफ़िर बने रहे और उन से ईमान लाने की कोई आशा बाक़ी नहीं रह गई तो उन्होंने ने यह दुआ की। सूरह हूद में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ

قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ - (हूद-३५)

अर्थ :- “और नूह पर वहय (प्रकाशना) की गई कि तुम्हारी जाति में से जो लोग ईमान ला चुके हैं उन के सिवा अब कोई और ईमान नहीं लाएगा।” (हूद - ३६)

34. यद्यपि हर बच्चा अपने प्राकृतिक स्वाभाव (तौहीद) पर पैदा होता है किन्तु जैसा कि हदीस में आता है कि उस के माँ बाप उसे यहूदी, ईसाई, मजूसी और बहुदेववादी बना देते हैं। अर्थात् मनुष्य आम तौर पर माहौल का असर स्वीकार करता है। यदि वह बहुदेववादी माहौल में रहता है तो बहुदेववादी ही बन जाता है और बहुत कम ऐसा होता है कि वह अपने स्वभाविक धर्म पर जमा रहे तथा माहौल से प्रभावित न हो। आज के

प्रगतिशील तथा विकसित युग में भी मनुष्य का यह हाल है कि वह जिस सम्प्रदाय में पैदा हुआ है और जो उस का पैतृक धर्म है उसी से वह जुड़ा है और वह पक्षपात पूर्ण विद्वेष उसे खुदा और मजहब के बारे में खुले मन से सोचने पर आमादा नहीं करती।

इसी लिए हज़रत नूह ने यह दुआ कि खुदाया ज़मीन से काफ़िरों का अस्तित्व ही मिटा दे वरना ये काफ़िर, काफ़िरों ही को जन्म देंगे। और इन पापियों वा दुराचारियों की नस्ल भी पापी वा दुराचारी ही होगी।

35. हज़रत नूह ने इस मौक़े पर अपने लिए अल्लाह से क्षमा की दुआ की तथा अपने माता पिता के लिए भी जिस से स्पष्ट होता है कि वे दोनों मोमिन थे और अपने मोमिन माता पिता के लिए क्षमा की दुआ करना उन की मौत के बाद उन के साथ

नेकी करना है। इस्लाम की यही शिक्षा है और हज़रत नूह ने अपने पीछे यही आदर्श छोड़ा है।

36. मालूम होता है कि जो व्यक्ति भी ईमान ले आता उसे हज़रत नूह के घर में पनाह लेना पड़ती। इस लिए हज़रत नूह ने इस स्पष्टीकरण के साथ दुआ की कि जो व्यक्ति भी मेरे घर में मोमिन बन कर दाख़िल हो उस के पापों और दोषों को क्षमा कर ।

37. साथ ही उन्होंने ने सार्वजनिक रूप से सभी मोमिन मर्दों और औरतों के लिए क्षमा की प्रार्थना की। हज़रत नूह की यह दुआ जो आयत २६ से २८ में बयान हुई है जाति के डुबोये जाने से पहले की है किन्तु इस का वर्णन आख़िर में हुआ ताकि स्पष्ट हो जाए कि वह बिलकुल उचित अवसर पर थी और जहाँ काफ़िरों के हिस्से में अज़ाब आया वहाँ ईमान वालों के हिस्से में क्षमा आई।



७२. सूरह अल-जिन्न

नाम :- इस सूरह में जिन्नों का बयान उद्धृत हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-जिन्न” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और सूरह “एहकाफ़” से पहले अवतरित हुई। मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के शुरू के चरणों में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- यह स्पष्ट करना है कि कुर्आन अपने ईश वाणी होने का आप ही साक्षी है अतः जिन्नों के एक समूह ने इस कलाम को सुना तो उन का ज़मीर पुकार उठा कि यह अल्लाह का कलाम है और वे तुरन्त उस पर ईमान ले आए। उन्होंने ने शिर्क (बहुदेववाद) को असत्य ठहराते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) को सत्य बताया जिस की दअवत कुर्आन प्रस्तुत कर रहा है। इसी प्रकार कर्म फल स्वरूप ईमान और दण्ड तथा रिसालत (ईशदूतत्व) पर भी अपना विश्वास व्यक्त किया।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १५ में जिन्नों के एक समूह का बयान उद्धृत हुआ है जिस में उन्होंने कुर्आन के अल्लाह के कलाम होने और उस की दअवत के सत्य होने की गवाही दी है।

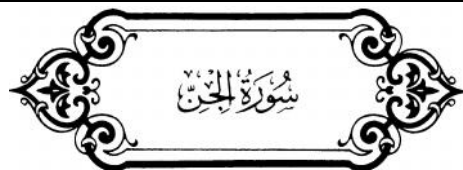
आयत १६ से १९ में संबोधन मक्का के बहुदेववादियों की तरफ़ फिर गया है और उन्हें समझाया गया है

आयत २० से २८ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी रिसालत के दायित्व से सम्बन्धित ज़रूरी बातों का स्पष्टीकरण किया गया है और रसूल की अवज्ञा करने वालों को जहन्नम के अज़ाब से ख़बरदार भी किया गया है।

विशेषता :- यह सूरह ऐसी क्रम बद्ध है और इस में इतना अधिक प्रवाह है कि अन्त तक आदमी इस को निरन्तर पढ़ते ही चला जाता है। इस के प्रवाह के आगे दरिया का प्रवाह भी तुच्छ है जो पहाड़ों से टकराता हुआ आगे बढ़ता है। कुर्आन का प्रवाह असत्य के परखच्चे उड़ाते हुए सत्य को ऊपर ले आती है। फिर इस सूरह की स्वर बद्धता ऐसी है कि एक तरफ़ कानों में वह रस घोलती है तो दूसरी तरफ़ दिलों में गर्मी पैदा करती है। अतिरिक्त यह कि इस में ग़ैब (परोक्ष) के वह रहस्य प्रस्तुत किये गए हैं जिन को सुनने की ओर मन आकर्षित हो जाता है। और जिस से विश्वास पैदा हो जाता है।

७२.सूरह अल - जिन्न

आयतें :28



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (ऐ नबी !) कहो मेरी तरफ़ वहुय की गई है कि जिन्नों ¹ के एक समूह ने (कुआन को) सुना तो कहा, हम ने बहुत अजीब कुआन सुना है।²

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝١
2. जो हिदायत की राह दिखाता है।³ हम उस पर ईमान ले आए ⁴ और हम हरगिज़ अपने रब का किसी को साझी नहीं ठहराएंगे।⁵

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝٢
3. और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है उस ने अपने वास्ते न कोई पत्नी बनाई है और न सन्तान ।⁶

وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝٣
4. और यह कि हमारे नादान लोग अल्लाह के बारे में सत्य विरुद्ध बातें कहते रहे हैं।⁷

وَأَنَّهُ كَانَ يَفُولُ سَفِيهًا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝٤
5. और यह कि हम ने समझा था कि मनुष्य और जिन्न कभी अल्लाह के बारे में झूठ नहीं बोलेंगे ।⁸

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَنْ لَّنْ نَقُولَ الْإِنْسَ وَالْجِنَّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝٥
6. और यह कि इन्सानों में से कुछ लोग जिन्नों के कुछ लोगों की पनाह माँगते रहे हैं। इस तरह उन्होंने ने इन की उहण्डता में वृद्धि की।⁹

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝٦
7. और यह कि इन्होंने ने भी इस तरह गुमान किया जिस तरह तुम ने किया कि अल्लाह किसी को रसूल बना कर नहीं भेजेगा।¹⁰

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝٧
8. और यह कि हम ने आसमान को टटोला तो देखा कि वह कड़े पहरेदारों और शहाबों से भर दिया गया है।¹¹

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلَأَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝٨

1. जिन्नो के बारे में कई जगहों पर स्पष्ट किया जा चुका है। देखिए सूरह अनआम नोट १९० और २३७ सूरह हिज्र नोट २५ सूरह अहकाफ़ नोट ४८ और ४९।

जिन्न एक अदृश्य सृष्टि है इस लिए इन का सम्बन्ध ग़ैब से है और ग़ैब के बारे में हमारी जानकारी का साधन केवल अल्लाह की वही है इस लिए किताब और सुन्नत के बयान पर हमें संतोष करना चाहिए। जिन लोगों ने अपने अपने अन्दाज़ व्यक्त कर के तरह तरह की बातों की हैं उन्होंने ने भ्रमों तथा अंधविश्वासों का पिटारा खोला है। आश्चर्य है कि कुछ उलमा ने भी जिन्नो के बारे में सुनी सुनाई बातों और बे सिर पैर की रिवायतों और कहानियों को बिना किसी आलोचना के उद्धृत किया है जिन पर विश्वास कर के लोगों ने ग़लत और ग़ैर शरीफ़ी तरीक़े अपना लिए हैं। इस सिलसिले की कुछ बातें हम यहाँ संक्षेप में बयान करते हैं।

A) जब कोई व्यक्ति मिरगी या दिमागी रोग में मुब्तिला हो जाता है और विशेष रूप से जब कोई औरत हिस्टीरिया के रोग का शिकार हो जाती है तो बजाय इस के कि डाक्टर से उस का इलाज कराया जाए उसे कहा जाता है कि उस पर किसी आसेब का साया है अर्थात् जिन्न उस पर सवार हुआ है और वही उस व्यक्ति या उस औरत की ज़बान से बोल रहा है। गोया उस मर्द या औरत का अस्तित्व बिलकुल निष्क्रिय हो कर रह गया है। फिर उस जिन्न को उतारने के लिए जाहिल बाबाओं तथा ज्योतिषों से रूजू किया जाता है और दरगाहों पर ले जाया जाता है। इस प्रकार शिर्क और बिदअत के डोस (Dose) उसे दिये जाते हैं तथा उस की ख़ूब पिटाई की जाती है और समझा यह जाता है कि उस मारपीट से आसेब पीड़ित व्यक्ति को कोई कष्ट नहीं होता बल्कि उस जिन्न को कष्ट होता है जो उस पर मुसल्लत हुआ है। इस सूरत में वह उस व्यक्ति का शरीर छोड़ कर भाग जाने को विवश हो जाता है। किन्तु अधिकतर यह सारे जतन बेकार हो जाते हैं और मरीज़ अच्छा नहीं होता। सच्चाई यह है कि यह मात्र अंधविश्वास है वरना आसेब का आना न तो कुआन और सुन्नत से साबित है और न यह कोई माकूल बात है। एक व्यक्ति कुछ भौतिक कारणवश रोग से पीड़ित है या आसेब से पीड़ित है इस का फैसला किस आधार पर किया जाएगा? यदि आसेब पीड़ित समझ कर उस की पिटाई की गई और वास्तव में वह रोग से पीड़ित हो तो उस के रोग में वृद्धि नहीं होगी? और इस मार पीट के लिए शरीफ़ी तौर पर क्या औचित्य है? क्या यह रोगी पर अत्याचार नहीं है? यह बात सरासर ग़लत है कि मार पीट से आसेब पीड़ित व्यक्ति को कोई कष्ट नहीं पहुँचता बल्कि कष्ट जिन्न को पहुँचता है जो उस पर मुसल्लत हुआ है। अगर ऐसा है तो आसेब पीड़ित व्यक्ति के शरीर को काटने से खून नहीं निकलना चाहिए परन्तु क्या ऐसा होना संभव

है? यह और इस प्रकार के दूसरे प्रश्न इस के अनौचित्य तथा इस की नामाकूलियत को सिद्ध करने के लिए काफ़ी हैं।

B) जिन्नो को अपने वश में कर लेने की धारणा भी पाई जाती है जिस की कोई हकीकत नहीं। यह विशेषता तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ही की थी कि अल्लाह तआला ने जिन्न उन के क़ब्ज़े में दिए थे। जिन्न से वे निर्माण कार्य आदि लेते थे। यह अल्लाह का चमत्कार था जो एक नबी पर ज़ाहिर हुआ।

C) एक ग़लत ख़ियाल यह भी पाया जाता है कि कुछ जिन्न कुछ इन्सानी औरतों के साथ शादी कर लेते हैं और यह कि उन से सन्तान भी हो जाती है। यह बड़ी मूर्खतापूर्ण बात है क्योंकि इस सूरत में तो एक औरत जिस को नाजायज़ गर्भ ठहर गया हो यह दावा कर सकती है कि एक जिन्न ने ज़बरदस्ती मेरे साथ सहवास किया था तो क्या उस के इस बयान को सही स्वीकार कर लिया जाएगा या उस पर शरीअत की दण्ड संहिता लागू की जाएगी?

D) जिन्नो के बारे में एक धारणा यह भी है कि वे माल चुरा ले जाते हैं। यदि वास्तव में वे ऐसा कर सकते तो मानव समाज में बड़ी गड़बड़ी पैदा होती। किसी भी चोरी पर यह पता लगाना मुश्किल होता कि यह माल जिन्न ने चुराया है या इन्सान ने। एक पहरेदार जिस ने ख़ुद माल चुराया हो यह कह कर अपने को बरी साबित कर सकता है कि मैं ने नहीं बल्कि जिन्न ने माल चुराया है। क्या उस के इस बयान को स्वीकार कर लिया जाएगा, अगर नहीं तो क्यों?

इस सिलसिले में अल्लाह तआला के उस इशार्द से जो उस ने शैतान से संबोधित हो कर कहा था :-

وَشَارِكُهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ - (بنی اسرائیل - १२)

अर्थ :- “माल और औलाद में उन का शरीक बन जा” (बनी इस्राईल ६४)

यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि माल और औलाद में जिन्न शरीक होते हैं और इस की सूरत यह होती है कि जिन्न माल चुरा ले जाते हैं और औरतों से शारीरिक सम्बन्ध भी बना लेते हैं जिस के फलस्वरूप औलाद भी पैदा हो जाती है। परन्तु ये दोनों ही बातें बिलकुल व्यर्थ की बातें हैं और आयत का यह मतलब हरगिज़ नहीं। माल और औलाद में शैतान की शिर्कत का मतलब यह है कि इन चीज़ों को आदमी अल्लाह के सिवा अन्य की देन बता कर शिर्क का अपराधी हो जाए हालाँकि ये चीज़ें अल्लाह ही की प्रदान की हुई होती हैं।

E) यह बात भी जनसाधारण में प्रसिद्ध है कि जिन्न ग़ैब जानते हैं। किन्तु यह धारणा बिलकुल ग़लत है अल्लाह के सिवा ग़ैब की बातें कोई नहीं जानता। और कुआन ने इस का पुरज़ोर

खण्डन किया है कि जिन्न ग़ैब की बातें जानते हैं। अतः कुर्आन ने इस के खण्डन में हज़रत सुलैमान की मौत की घटना बयान की है कि उन की मौत की ख़बर जिन्नो को उस समय हुई जब कि उन की लाठी कीड़े के खा जाने से गिर गई और हज़रत सुलैमान भी गिर पड़े। कुर्आन इस घटना को प्रस्तुत कर के कहता है कि :-

فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَ الْجِنَّ أَنَّ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ
الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ - (سبا: १३)

अर्थ :- “जब सुलैमान गिर पड़ा तो जिन्नो पर यह बात स्पष्ट हो गई कि यदि वे ग़ैब जानते होते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में पड़े न रहते।” (सबा - १४)

2. बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से जिन्नो से कुर्आन सुनने कि घटना जिस तरह नक़ल हुई है उस का सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उकाज़ के बाज़ार में जो ताइफ़ और मक्का के बीच था तशरीफ़ ले जा रहे थे कि नख़्खा के स्थान पर अपने साथियों के साथ फ़ज़्र की नमाज़ अदा की। उस समय जिन्नो के एक ग़रोह का गुज़र उधर से हुआ तो उस ने कुर्आन की क़िरअत सुन ली। यह ग़रोह आसमान में कड़े सुरक्षा प्रबन्धों और शहाबों के पीछा करने को देख कर इस बात की तलाश में निकला था कि ज़मीन पर कोई महत्वपूर्ण घटना घटी है जिन के लिए पहले से ही सुरक्षा प्रबन्ध कर दिए गए हैं। उन्होंने ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी कुर्आन सुनते ही फ़ौरन कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हमें आसमान में सुन गुन लेने से रोक दिया गया है। वे कुर्आन से इतना प्रभावित हुए कि उस के ईमान लाने की दअवत को उन्होंने ने तुरंत स्वीकार कर लिया और अपनी जाति में जा कर उन्होंने ने वे बातें कहीं जो इन आयतों में बयान हुई हैं और अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वहय के द्वारा इस की ख़बर दी (बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर) तिर्मिज़ी की रिवायत में यह स्पष्टीकरण भी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फ़रमाया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन्नो के सामने कुर्आन की तिलावत नहीं की थी और न उन को देखा था। (अर्थात् जिन्नो ने आप की क़िरअत इत्तिफ़ाक़ से सुन ली थी और आप को इस की सूचना वहय के द्वारा हुई। (देखिए तिर्मिज़ी तफ़सीर सूरह जिन्न)

जिन्नो के इस बयान से स्पष्ट है कि वे अरबी जानते हैं इस लिए जब उन्होंने ने कुर्आन सुना तो उस की चमत्कारिक शैली, उस की तत्वपूर्ण एवं सारगर्भित बातें उन्हें अजीब मालूम हुई और

इस की इस प्रमुखता को देख कर उन्होंने ने फ़ौरन पहचान लिया कि यह अल्लाह का कलाम है और आयत का मंशा मूल रूप से इसी बात को लोगों पर स्पष्ट करना है कि कुर्आन अपने ईश-वाणी होने का आप सबूत है। सत्य की कामना रखने वाले इन्सान तो इन्सान जिन्न भी इस को सुन लेते हैं तो उन्हें अपने रब के कलाम को पहचानने में कोई दिक्क़त पेश नहीं आती।

3. कुर्आन की बातों ने जिन्नो पर हिदायत की राह खोल दी। वे इस बात के क़ायल हुए कि यह राह जो कुर्आन दिखा रहा है सरासर हिदायत की राह है अर्थात् हक़ की तरफ़ रहनुमाई करने वाली और अल्लाह तक पहुँचाने वाली।

4. जिन्नो का यह ग़रोह कुर्आन पर ईमान ले आया। मालूम हुआ कि कुर्आन का अवतरण इन्सान और जिन्न दोनों के लिए हुआ है अर्थात् दोनों से ईमान लाने का मुतालबा है अतः सूरह रहमान में तो सीधे सीधे सम्बोधन दोनों समुदायों से किया गया है। और जब जिन्न कुर्आन पर ईमान लाने के ज़िम्मेदार हैं तो कुर्आन के पैग़म्बर पर भी ईमान लाना उन के लिए आवश्यक है। इस मक़सद के लिए अल्लाह तआला ऐसे साधन करता रहा कि जिन्न स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँच जाएँ और आप की ज़बान से उन्हें कुर्आन सुनने का मौक़ा मिले। इस सूरह के अलावा सूरह अहक़ाफ़ की आयत २९ भी इस पर तर्क प्रस्तुत करती है।

5. मालूम हुआ कि जिस तरह इन्सानों में बहुदेववादी धारणा रखने वाले पाये जाते हैं उसी तरह जिन्नो में भी पाये जाते हैं। जिन्नो के उस ग़रोह ने जब कुर्आन की एकेश्वरवादी दअवत सुनी तो उन्होंने ने बहुदेववाद से अपनी विमुखता व्यक्त की इस दृढ़ संकल्प के साथ कि वे एकेश्वरवाद पर जमे रहेंगे और किसी को अल्लाह का साझी नहीं ठहराएंगे।

आयत से यह बात भी स्पष्ट हुई कि हिदायत की शुरुआत तौहीद (एकेश्वरवाद) से होती है और तौहीद शिर्क को पूरी तरह से नकारता है।

6. अर्थात् हमारे रब की शान इस से बहुत बुलन्द है कि उस की पत्नी और सन्तानें हों। उस को सृष्टि जैसा समझना उस के सर्वोच्च अस्तित्व को गिराना है।

7. इन्सानों की तरह जिन्नो में भी ऐसे लोग पाये जाते हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते और अल्लाह के बारे में सत्य और न्याय के विपरीत बातें करते हैं।

8. अर्थात् हम इस भुलावे में रहे कि इन्सान और जिन्न अल्लाह के बारे में झूठ बोलने का दुस्साहस नहीं करेंगे किन्तु अब हम पर स्पष्ट हुआ कि दोनों अल्लाह की तरफ़ झूठी बातें मन्सूब करते रहे हैं और झूठ ही पर शिर्क अर्थात् बहुदेववाद का भवन निर्मित कर दिया गया है।

9. रिवायतों में आता है कि अरब वासियों का कोई क़ाफ़िला जब किसी भयावह स्थान पर ठहरता था तो उस घाटी के सरदार जिन्न की पनाह माँगता कि वह जिन्नों के खतरे से उन्हें सुरक्षित रखे। यह सरासर अज्ञानपूर्ण तथा बहुदेववादी धारणा थी किन्तु इस चीज़ ने जिन्नों के दंभ में वृद्धि की और वे उद्वृण्ड हो गए।

पनाह देने वाला केवल अल्लाह है इस लिए जिन्नों की पनाह माँगना सरासर गलत और बेहूदा बात है परन्तु आज भी कितने ही जाहिल जिन्नों की दुहाई देते हैं। धारणा (अक्कीदे) का यह बिगाड़ बहुत बड़ा बिगाड़ है जो इन्सान को गुमराही में डाल देता है।

10. उन जिन्नों ने अपनी जाति वालों से कहा कि जिस

प्रकार तुम ने समझ रखा था कि कोई रसूल नियुक्त होने वाला नहीं उसी तरह बहुदेववादी मनुष्यों ने भी यही समझ रखा था। किन्तु दोनों का यह समझना ग़लत सिद्ध हुआ और अल्लाह ने हिदायत की राह दिखाने के लिए रसूल भेजा जिस पर कुर्आन अवतरित हुआ।

11. जिन्रा की उड़ान आसमान में होती है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति हुई तो आसमान में कड़े पहेरे लगा दिए गए और शहाबों से उसे भर दिया गया ताकि रसूल पर जो पैगाम नाज़िल हो उस में वे हस्तक्षेप न कर सकें और न कोई बात उचक ले सकें ।



9. और यह कि हम उस के कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठ जाया करते थे। परन्तु अब जो सुनने की कोशिश करता है वह एक शहाब को अपनी घात में पाता है।¹²

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يُسْمِعِ
الْآنَ يَجِدْ لَهُ شَهَابًا رَصَدًا ۙ

10. और यह कि हम नहीं जानते थे कि ज़मीन वालों पर कोई मुसीबत नाज़िल करने का फैसला किया गया है या उन का रब उन्हें हिदायत से नवाज़ना चाहता है।¹³

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرُّ أُرِيدَ يَمِّنَ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ
بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ

11. और यह कि हम में नेक लोग भी हैं और वे भी हैं जो नेक नहीं हैं। हमारी राहें अलग अलग हैं।¹⁴

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ
قَدَدًا ۙ

12. और यह कि हम समझते थे कि ज़मीन में हम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते। और न (आसमान में) भाग कर उस के क़ाबू से निकल सकते हैं।¹⁵

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ
هَرَبًا ۙ

13. और यह कि जब हम ने हिदायत की बात सुनी तो उस पर ईमान ले आए और जो भी अपने रब पर ईमान लाएगा उसे न किसी हक़ तल्फ़ी का भय होगा और न किसी तरह की ज़्यादती का।¹⁶

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ فَمَنْ يُؤْمِنْ بِرَبِّهِ فَلَا
يَحَافُ بِغَسَاوِلَ أَرَاهُفًا ۙ

14. और यह कि हम में मुस्लिम (आज्ञाकारी) भी हैं और ज़ालिम भी। तो जिन्होंने ने इस्लाम को अपना लिया उन्होंने ने हिदायत की राह ढूँढ ली।¹⁷

وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِمَّا الْقَاسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا
رَشَدًا ۙ

15. और जो ज़ालिम हैं वे जहन्नम का ईंधन बनेंगे।¹⁸

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ

16. और ¹⁹ (मुझ पर वह्य की गई है कि) अगर ये लोग सीधी राह चलते तो हम उन्हें ख़ूब सिंचित करते।²⁰

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً عَذَقًا ۙ

17. ताकि हम इस में उन को आजमाएँ ²¹ और जो अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरेगा ²² उस को वह कड़े परिश्रम वाली यातना में डालेगा।

لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ
عَذَابًا صَعَدًا ۙ

18. और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।²³

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۙ

12. अर्थात् ऊपर आसमान में हम ने ऐसे ठिकाने बनाए थे जहाँ से हम आसमान वालों की बातों की सुन गुन लेने के प्रयास करते परन्तु अब यह संभव नहीं रहा। अगर हम कुछ सुन गुन लेने की चेष्टा करते हैं तो आग का शोला (शहाब) हमारा पीछा करता है।

ध्यान रहे कि ये शोले आसमान में काफ़ी बुलन्दी पर तारों से निकलने वाले शोले हैं जो जिनों की घात में लगे रहते हैं। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट १६।

13. अर्थात् आसमान में इन कड़े सुरक्षा प्रबन्धों को देख कर यह लग रहा था कि ज़मीन पर कोई इन्किलाबी घटना ज़रूर घटित होने वाली है। हो सकता है कि धरती वालों पर कोई प्रकोप उतारा जाने वाला हो या फिर उन के लिए हिदायत नाज़िल की जाने वाली हो जिस की पूर्व सूचना जिनों को न हो जाए इस लिए इतनी तैयारी की गई हो। इन दो में से कौन सी बात होने वाली है इस का पता जिनों को न चल सका। अलबत्ता जब उन्होंने ने कुआन सुना तो उन की जिज्ञासा और उन का संकोच समाप्त हुआ तथा उन को मालूम हुआ कि आसमान में यह सुरक्षा प्रबन्ध ज़मीन वालों को हिदायत से नवाज़ने के लिए किए गए हैं।

14. स्पष्ट हुआ कि सब जिन बुरे नहीं हैं उन में नेक लोग भी मौजूद हैं। इन्सानों की तरह जिनों में भी विचार धारा और करम की राहें भिन्न हैं चूँकि जिन भी एक ज़िम्मेदार और जवाबदेह सृष्टि है और उन्हें परिक्षा स्थल में खड़ा कर दिया गया है इस लिए उन्हें भी यह अधिकार दिया गया है कि वे चाहें तो हिदायत की राह आपनाएँ और चाहे तो गुमराही की।

15. अर्थात् हम यह ज़रूर समझते थे कि यद्यपि हमारी उड़ान आसमानों में है किन्तु अल्लाह के क़ाबू से हम कदापि बाहर नहीं हैं। वह अगर हमें पकड़ना चाहे तो न हमें ज़मीन में कहीं पनाह मिल सकती है और न विशाल आकाश की बुलन्दियों में हम कहीं भाग कर पनाह ले सकते हैं। जिनों के इस बयान से उन की अल्लाह के आगे बेबसी ज़ाहिर होती है और उन को खुदा के कामों में जो साक्षीदार ठहराया जाता है उस का खण्डन होता है।

16. जिनों ने अपनी जाति के लोगों से न केवल अपने ईमान लाने की चर्चा की बल्कि उन को ईमान लाने की दअवत भी दी और ईमान लाने का सिला यह बयान किया कि उस को पूरा पूरा अज़्र (बदला) मिलेगा।

17. जिनों के इस बयान से इस्लाम का सच्चा दीन होना और अधिक खुल गया तथा स्पष्ट हो गया कि मुस्लिम केवल इन्सानों ही में नहीं जिनों में भी मौजूद हैं। इसी तरह बहुदेववादी और काफ़िर भी।

ईमान लाने वाले जिनों ने अपनी जाति के सामने इस बात को भी ज़ाहिर किया कि इस्लाम को पा लेना, एक तरह से हिदायत को पा लेना है।

18. दूसरे शब्दों में जो सत्य धर्म (इस्लाम) से विमुख हैं वे जहन्नम की सज़ा भुगतने वाले हैं। इस तरह कर्म फल अर्थात् हिसाब किताब पर उन्होंने ने अपने ईमान और विश्वास को व्यक्त किया।

19. जिनों का बयान ऊपर समाप्त हो गया। अब अल्लाह तआला का अपना बयान शुरू हो रहा है।

20. तात्पर्य मक्का के बहुदेववादी हैं और मतलब यह है कि अगर ये लोग इस्लाम के राजमार्ग पर चलते तो इन्हें बाहुल्यता के साथ पानी की नेमत से माला माल किया जाता। पानी पर हर तरह की पैदावार आश्रित है और अरब के रेगिस्तानी इलाक़े में इस की ज़रूरत और अधिक महसूस होती है। कुआन ने इस जगह तथा दूसरी जगहों पर भी स्पष्ट किया है कि जो जाति हिदायत के रास्ते पर चलती है अल्लाह तआला उस के रोज़ी के संसाधनों में वृद्धि और बरकत प्रदान करता है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १५२।

21. अर्थात् दुनिया की नेमतों में आजमाइश का पहलू ज़रूर होता है कि उन के हासिल हो जाने पर लोग अल्लाह के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनते हैं या नाशुक्री (कृतघ्नता) करते हैं।

22. अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरने का मतलब यह है कि आदमी अल्लाह से बेपरवाह हो जाए। उस के ज़िक्र तथा उस के गुणगान से कोई दिलचस्पी न हो और उस की नसीहत को वह ख़ातिर में न लाए।

23. यहाँ मस्जिदों से तात्पर्य वे इबादतगाहें (पूजा स्थल) हैं जो वास्तव में अल्लाह ही की इबादत के लिए बनाई गई हैं। मस्जिदे-हराम और मस्जिदे-अक़सा तो सर्व प्रथम तथा सर्वाधिक इस पंक्ति में शामिल हैं किन्तु वे सारी मस्जिदें भी जो बाद में मुसलमानों ने बनाई। इस के अलावा अहले-किताब के पूजा स्थल भी क्यों कि वे वास्तव में अल्लाह ही की इबादत के लिए बनाई गई हैं।

मतलब यह है कि पूजा स्थान (इबादत गाहें) अल्लाह के लिए ख़ास हैं इस लिए उन में उसी की इबादत की जानी चाहिए। उन में बुत परस्ती और शिर्क बहुत बड़े जुर्म और ज़ुल्म की हरकत है। मस्जिदों की इस प्रतिष्ठा एवं आदर के बावजूद मुसलमानों में ऐसे बदअक़्रीदा लोग भी हैं जो मस्जिदों में ग़ैरुल्लाह को अपनी हाजतों की पूर्ति के लिए पुकारते हैं। उन की ज़बानों पर या रब और या अल्लाह के बजाये “या ग़ौस” और “या पीर दस्तगीर” होता है। ग़ैरुल्लाह की दुहाई के बावजूद वे समझते हैं कि उन की एकेश्वरवादी धारणा में

कोई खराबी नहीं आई।

मस्जिद में एक नित नई बिदअत भी प्रचलित की जा रही है कि जिस दिशा कि ओर मदीना है उस की तरफ़ मस्जिद की दीवार पर गुंबदे-खज़रा का चित्र लगाया जाए और जिस की तरफ़ मुँह कर के बाअदब खड़े हो कर “या रसूलुल्लाह” कहा जाए और आप पर दरूद भेजा जाए। मतलब क़िबला एक नहीं

दो हैं एक नमाज़ के लिए क़िबला जो मक्का की दिशा में है और दूसरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुकारने और आप पर दरूद और सलाम भेजने के लिए जिस की दिशा मदीना का गुंबदे-खज़रा है। अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत दे कि वे अपनी मस्जिदों को शिर्क और बिदअतों से पाक रखें ।



और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उस को पुकारने के लिए खड़ा होता है तो ये लोग उस पर टूट पड़ते हैं। कहो, मैं अपने रब ही को पुकारता हूँ और किसी को उस का साझी नहीं ठहराता। कहो, मैं तुम्हारे लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न हिदायत का। कहो, मुझे अल्लाह से कोई नहीं बचा सकेगा। और न मैं उस के सिवा कोई पनाह स्थल पा सकूँगा। (अल-कुआन)

19. और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उस को पुकारने के लिए खड़ा होता है तो ये लोग उस पर टूट पड़ते हैं।²⁴

وَإِنَّهُمْ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۖ

20. कहो, मैं अपने रब ही को पुकारता हूँ और किसी को उस का साझी नहीं ठहराता।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

21. कहो, मैं तुम्हारे लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न हिदायत का।²⁵

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝

22. कहो, मुझे अल्लाह से कोई नहीं बचा सकेगा। और न मैं उस के सिवा कोई पनाह स्थल पा सकूँगा।²⁶

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

23. मेरा काम तो केवल यह है कि अल्लाह की बात और उस के संदेश पहुँचा दूँ।²⁷ और जो अल्लाह और उस के रसूल की अवज्ञा करेंगे उन के लिए जहन्नम की आग है जिस में वे हमेशा रहेंगे।²⁸

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۖ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۝

24. यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ को देख लेंगे जिस का उन से वादा किया जा रहा है तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस के सहायक कमज़ोर हैं और किस का जत्था संख्या में कम है।²⁹

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَكْهُنُونَ ۖ مِمَّنْ أَوْعَدَ نَارًا لِّأَقْلٍ عَدَدًا ۝

25. कहो मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का वादा तुम से किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरा रब उस को एक (लम्बी) अवधि के लिए आगे बढ़ा देगा।³⁰

قُلْ إِن أَدْرِيٓ أَقْرَبُ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝

26. ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला वही है और वह अपने ग़ैब पर किसी को सूचित नहीं करता।

عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۝

27. सिवाय उस के जिसे उस ने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो।³¹ तो उस के आगे और पीछे वह रक्षक लगा देता है।³²

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिए।³³ और वह उन के पूरे हालात को घेरे हुए है और हर चीज़ को उस ने गिन रखा है।³⁴

لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولًا رَبَّهُمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

24. आयत में अब्दुल्लाह (अल्लाह का बन्दा) से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। आप जब मस्जिदे-हराम में नमाज़ के लिए खड़े होते और केवल अल्लाह को पुकारते तो बहुदेववादी क्रोध से भरे हुए आप के इर्द गिर्द इस तरह जमा हो जाते जैसे आप पर टूट पड़ेंगे।

25. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत हुई कि इन से कह दो कि हानि पहुँचाना या गुमराह करना और लाभ पहुँचाना या हिदायत देना यह सब अल्लाह के अधिकार में है। मेरे अधिकार में इन में से कोई चीज़ भी नहीं है।

26. अर्थात् मैं स्वयं अल्लाह से डरता हूँ कि अगर मैं ने उस की अवज्ञा की तो उस की सज़ा से मुझे कोई न बचा सकेगा और न मैं कोई पनाह स्थल पा सकूँगा। और जब रसूल होने के बावजूद मैं अल्लाह से निर्भय नहीं हूँ तो तुम किस तरह अल्ला से निर्भय हो गए हो?

27. अर्थात् रसूल के अधिकार में यह बात नहीं है कि वह लोगों को हिदायत दे। बल्कि उस के सुपुर्द जो काम हुआ है वह यह है कि :-

अल्लाह की तरफ़ से जो बात भी हो और उस के जो संदेश हों उन को वह लोगों तक पहुँचा दे इस के बाद लोगों की अपनी जिम्मेदारी है कि वे उन को स्वीकार करें।

बलाग़ (बात पहुँचाना) सभी के लिए अर्थात् जो बात भी अल्लाह की तरफ़ से हो पहुँचा दी जाए और रिसालात (संदेश) खास है जिस से तात्पर्य अल्लाह का कलाम है।

28. अर्थात् जो अल्लाह के संदेशों को स्वीकार नहीं करेंगे और अल्लाह तथा उस के रसूल के नाफ़रमान बनकर रहेंगे उन के लिए हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम की सज़ा है।

29. अर्थात् मक्का के बहुदेववादियों को इस पर गर्व है कि उन के सहयोगी बलिष्ठ एवं शक्तिशाली हैं और उन का जत्था बड़ा है और उन के मुक़ाबले में रसूल के मददगार कमज़ोर लोग हैं और आप के साथियों की संख्या भी थोड़ी है किन्तु जब अल्लाह का अज़ाब आएगा तो इन बहुदेववादियों को पता चलेगा के सच्चाई इस के बिल्कुल विपरीत थी। अब सिरे से उन का कोई सहायक ही नहीं और न उन के जत्थे का कोई अस्तित्व है।

30. अर्थात् रसूल को झुठलाने की सूत में जिस सांसारिक अज़ाब का तुम से वादा किया जा रहा है वह निश्चित रूप से पूरा हो कर रहेगा। रही यह बात कि वह कब पूरा होगा तो इस का ज्ञान अल्लाह ही को है। मुझे नहीं मालूम कि शीघ्र ही यह वादा सामने आ जाएगा या कुछ अवधि के बाद। अतिरिक्त व्याख्या

के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट ७५।

31. अर्थात् रसूल को रिसालत के दायित्व की अदायगी के लिए जितनी कुछ ग़ैब की बातें बताने की ज़रूरत होती है वह उस पर खोल दी जाती हैं। उस से अधिक रसूल को भी ग़ैब का ज्ञान नहीं होता। अतः रसूल को यह नहीं मालूम कि उस के विरोधियों पर अज़ाब कब आएगा। और न उसे यह मालूम है कि क्रियामत कब आएगी।

रसूल को जितना कुछ ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है उस की हकीकत इस आयत से बिल्कुल स्पष्ट है, फिर भी मुसलमानों के एक वर्ग ने हद से बढ़ कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इल्मे-ग़ैब की बहस छेड़ रखी है। जैसे कि आप को समस्त छोटी और बड़ी बातों का ज्ञान था और आप हर जगह उपस्थित हैं तथा सब कुछ देख रहे हैं और हर एक की पुकार सुनते हैं और प्रत्येक की बाहय तथा आन्तरिक परिस्थितियों से परिचित हैं। और तर्क यह प्रस्तुत करते हैं कि यह इल्मे-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) वहबी था अर्थात् प्रदान हुआ था। मतलब यह कि अल्लाह तआला ने आप को अपना ईश्वरत्व ही प्रदान कर दिया था। कैसी बहुदेववादी व्याख्या है यह, किन्तु उन के एकेश्वरवादी होने पर इस से कोई आँच नहीं आती।

32. अर्थात् रसूल के आगे पीछे रक्षक फ़रिश्ते नियुक्त कर देता है ताकि ग़ैब की बातें (संदेश) ठीक ठीक रसूल तक पहुँच जाएँ और शैतान को उन में दखलंदाज़ी का मौक़ा न मिले।

33. और रसूल की रक्षा का यह प्रबन्ध इस लिए किया जाता है ताकि रसूल अल्लाह के संदेशों को बग़ैर किसी कमी बेशी के ज्यों का त्यों पहुँचा दे। मतलब यह है कि रसूल को ग़ैब (परोक्ष) की जिन बातों से सूचित किया जाता है उन की रक्षा का असाधारण प्रबन्ध किया जाता है ताकि पैग़म्बर के सीने में वह सुरक्षित रहे तथा शैतान उस में वस्वसा अंदाज़ी न कर सके और पैग़म्बर उन संदेशों को ज्यों का त्यों लोगों तक पहुँचाए। इस तैयारी के साथ अल्लाह यह देखना चाहता है कि रसूल ने अल्लाह के समस्त संदेश लोगों तक पूरी तरह पहुँचा दिये।

34. अर्थात् अल्लाह रसूलों के हालात अच्छी तरह जानता है और उस ने हर चीज़ की गणना कर रखी है। इस लिए इस बात की कोई आशंका नहीं है कि रसूल उस के संदेश पहुँचाने में कोई कोताही या किसी प्रकार की कमी बेशी करेगा। अतः लोगों को चाहिए कि रसूल अल्लाह की तरफ़ से जो कुछ कहे उसे वे उस निश्चिन्तिता और विश्वास के साथ स्वीकार करें कि अल्लाह की बताई हुई बातें हैं जो उस के रसूल ने ज्यों की त्यों हम तक पहुँचा दी हैं।

सूरह
अल्-मुज़्जम्मिल

७३. सूरह अल्-मुज़्जम्मिल

नाम :- सूरह के शुरू में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को “अल-मुज़्जम्मिल” (चादर में लिपटने वाले) कह कर संबोधित किया गया है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-मुज़्जम्मिल” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्का के शुरू दौर में उस समय अवतरित हुई जब कि आप के विरोध का सिलसिला शुरू हो गया था अलबत्ता आखिरी आयत एक समय बाद जब कि पाँच वक्रत की नमाज़ का आदेश आ चुका था, अवतरित हुई।

केन्द्रीय विषय :- रिसालत के भारी दायित्व को देखते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों को उठ कर नमाज़ में लग जाने की हिदायत और रसूल का इन्कार करने वालों को चेतावनी।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ९ में नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को रातों को उठ कर नमाज़ में लग जाने की हिदायत दी गई है और अन्तरात्मा की तरबियत के पहलू से इस का जो महत्व है उस को भी स्पष्ट किया गाा है।

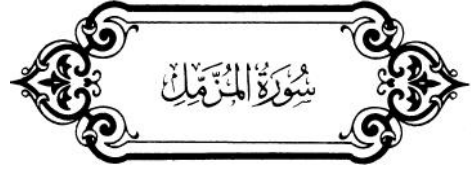
आयत १० से १४ में आप को विरोधियों की बातों पर सब्र की नसीहत करते हुए उन के अन्जाम को बयान किया गया है।

आयत १५ से १९ में मक्का के काफ़िरों को ख़बरदार किया गया है कि हम ने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजा है जिस तरह फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था तो देख लो फ़िरऔन ने जब रसूल की अवज्ञा की तो उस का क्या अन्जाम हुआ और तुम कुफ़र कर के आख़िरत के अज़ाब से किस तरह बच सकोगे।

आयत २० में रातों को उठ कर नमाज़ में लग जाने के उस आदेश में जो शुरू की आयतों में दिया गया था हालात को देखते हुए रियायत कर दी गई और फ़र्ज़ नमाज़ों के आयोजन और ज़कात की अदायगी की हिदायत की गई।

७३. सूरह अल्-मुज्जम्मिल

आयतें : 20



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ चादर में लिपटने वाले ¹।

يَا أَيُّهَا الْمَرْمِلُ ①

2. रात को (नमाज़ में) क्रियाम करो सिवाय थोड़े हिस्से के।²

فَمِ الْبَيْلِ إِلَّا قَلِيلًا ②

3. आधी रात या उस में से कुछ कम कर दो।³

نِصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ③

4. या उस से कुछ ज़्यादा कर लो।⁴ और कुआन को तरतील के साथ (अर्थात् साफ़ साफ़ और ठहर ठहर कर) पढ़ो।⁵

أَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ④

5. हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं।⁶

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ⑤

6. वास्तव में रात का उठना नफ़्स को दबाने के लिए अधिक प्रभावी और क़ौल को अधिक दुरुस्त रखने वाला है।⁷

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ⑥

7. दिन में तुम्हारे लिए लम्बी व्यस्तताएँ हैं।⁸

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْعًا طَوِيلًا ⑦

8. अपने रब के नाम का ज़िक्र करो ⁹ और सब से कट कर उसी के हो कर रहो।¹⁰

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ⑧

9. वह पश्चिम और पूरब का रब है। उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। तो उसी को अपना कर्ता धर्ता बना लो।¹¹

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ⑨

10. ये लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो और उन को ख़ूबसूरती के साथ छोड़ दो।¹²

وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَبِيلًا ⑩

11. और इन झुठलाने वाले ख़ुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी मोहलत दे दो।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِيَ النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ⑪

1. इस सूरह के अवतरण के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चादर में लिपटे हुए थे। इस लिए आप को अल-मुज़म्मिल कह कर संबोधित किया गया जो बड़ा ही प्यार भरा संबोधन है और जिस में आप की दिली सुकून का सामान भी है और इस बात की तरफ इशारा भी है कि आप के रब ने आप को नुबुव्वत से अलंकृत किया है अतः इस के शुक्र के तौर पर आप रातों को उठ कर नमाज़ का आयोजन करें और कुर्आन की यह तत्त्वपूर्ण सारगर्भिता है कि बाहर से अन्दर की तरफ, शरीर से अन्तर्मन की तरफ ध्यान को केन्द्रित करता है जिस का उदाहरण सूरह आराफ़ आयत २६ है जिस में लिबास का जब ज़िक्र हुआ तो **لَبَاسَ النَّفْوَى ذَلِكْ خَيْرٌ** “तक्रवा का लिबास बेहतर है” कह कर तक्रवा के लिबास की ओर ध्यान को खींचा ताकि इन्सान जाहिरी लिबास के साथ अन्दरूनी लिबास से भी अपने आप को अलंकृत करे।

2. अर्थात् पूरी रात सिवाय थोड़े हिस्से के इबादत में गुज़ारो। थोड़े हिस्से से तात्पर्य रात का आखिरी हिस्सा है। मतलब यह है कि रात के एक तिहाई में आराम करो और दो तिहाई हिस्से को इबादत में गुज़ारो अतः आयत २० में बयान हुआ है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो तिहाई रात इबादत में गुज़ारा करते थे।

रात का अधिकांश समय नमाज़ में गुज़ारने के आदेश से यह बात स्पष्ट होती है कि रात की इन नमाज़ों के लिए रकअतों की कोई संख्या सुनिश्चित नहीं है। जो व्यक्ति जितनी रकअतें पढ़ना चाहे पढ़ सकता है। अलबत्ता यह मुतालबा अल्लाह तआला ने अपने नबी से भी नहीं किया कि वह पूरी रात इबादत में गुज़ारे और आराम उस के किसी हिस्से में भी न करे। और रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नित्यकर्म जैसा कि आखिरी आयत से स्पष्ट है उस ज़माने में दो तिहाई रात या उस से कम समय इबादत में लगे रहने का रहा अतः जिन बुजुर्गों की मिसालें रातों की इबादत से सम्बन्धित प्रस्तुत की जाती हैं कि वे पूरी रात इबादत में गुज़ारते थे वह उन का अतिवाद था जिस का आदेश न शरीअत ने दिया है और न लोगों के लिए वह कोई मिसाली चीज़ हो सकती है।

3. अर्थात् आधी रात इबादत करो या उस से कम अर्थात् एक तिहाई रात।

4. या आधे से अधिक अर्थात् दो तिहाई रात नमाज़ में गुज़ारो।

इन आयतों का सार यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों को उठ कर इबादत में लगने का जो हुक्म शुरू में दिया गया था उस में यह गुनजाइश रखी गई थी कि आप कम से कम एक तिहाई रात और अधिक से अधिक दो

तिहाई रात नमाज़ में गुज़ारें।

5. तरतील का अर्थ “मुफ़रदाते-राग़िब” में इस तरह बयान हुए हैं :-

والترتيل ارسال الكلمة من الفم

بسهولة واستقامة۔ (ص १८१)

अर्थ :- “तरतील यह है कि जबान से कालिमें को सरलता पूर्वक और दुरुस्त तरीक़े पर अदा किए जाए।” (पृष्ठ १८६)

और कुर्आन को तरतील के साथ पढ़ने का मतलब यह है कि सारे शब्द साफ़ साफ़ अदा किये जाएं, क़िर्अत आयतों पर ठहरते हुए इस तरह की जाए कि उस की सुन्दरता स्पष्ट हो और उस के प्रभाव पढ़ने वाले के दिल और दिमाग़ पर पड़े।

तरतील न तो यह है कि कुर्आन को गा गा कर पढ़ा जाए और कलात्मक दक्षता का प्रदर्शन किया जाए और न यह है कि इस को पढ़ने की रफ़्तार ऐसी सुस्त हो कि इस कलाम में दरया की सी जो प्रवाह है वह न झलक सके।

कुछ हाफ़िज़ लोग तरावीह में क़र्आन को इस तेज़ी से पढ़ते हैं कि सुनने वालों के कुछ पल्ले नहीं पड़ता और अल्लाह के कलाम की पतिष्ठा को आघात लगता है। उन की यह क़िर्अत तरतील के बिलकुल विरुद्ध होती है और वे केवल बोझ उतारने का काम करते हैं।

कुर्आन की क़िर्अत तो इस अन्दाज़ से होनी चाहिए कि उस से ईश-भय तथा विनम्रता पैदा हो परन्तु मौजूदा ज़माने के क़ारी लोग आम तौर से अपने अच्छे गले का प्रदर्शन करते हैं जो तकल्लुफ़ से ख़ाली नहीं होता।

6. **قَوْلًا ثَقِيلًا** (भारी बात) से तात्पर्य जिहाद का हुक्म है जो निश्चय ही एक ज़िम्मेदारी है। आयत का मतलब यह है कि इस से पहले कि जिहाद की भारी ज़िम्मेदारियाँ आप पर आ पड़े आप रात की इबादत में अधिक लगे रहें कि जिहाद की व्यस्तता रात की लम्बी इबादत में बाधक होगी।

7. रात को उठने का मतलब रात को नींद की ग़फ़लत से उठ जाना और आराम को छोड़ कर नमाज़ के लिए खड़े हो जाना। उस समय आराम को कुर्बान करना मन पर बहुत भारी गुज़रता है किन्तु जब एक मोमिन अल्लाह की इबादत के लिए उठने की हिम्मत करता है तो इस का सब से बड़ा लाभ यह होता है कि उस का नफ़्स दब जाता है और नफ़्स पर क़ाबू पा लेने के बाद दीन की ज़िम्मेदारियों को अदा करना आसान हो जाता है। इस का दूसरा महत्वपूर्ण लाभ यह बयान किया गया है कि यह क़ौल (वचन) को अधिक दुरुस्त रखने वाला है। रात का समय चूँकि सुकून का होता है इस लिए यह कुर्आन को समझने और चिन्तन मनन के लिए अत्याधिक उचित समय होता है। उस समय जो

कालिमे ज़बान से निकलेंगे चाहे वे कुर्आन की आयतें हों या दुआ और ज़िक्र आदि वे दिल की गहराइयों से निकलेंगे इस लिए उन की अदायगी दृढ़ता के साथ होगी।

8. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्यस्तताएँ मक्का में भी बहुत अधिक थीं। दअवत और तब्लीग अर्थात् दीन के प्रचार आदि कामों की व्यस्तताओं के अलावा अपने साथियों को कुर्आन की सूरते कंठ कराने और उस की तरबियत करने में भी आप को लगे रहना पड़ता था इस लिए रात का समय नमाज़ों में देर तक लीन रहने के लिए उचित हो सकता था।

9. रब के नाम का ज़िक्र करने में दिल के साथ ज़बान का ज़िक्र भी शामिल है। ज़बान से जब अल्लाह का ख़ूब ख़ूब ज़िक्र किया जाता है तो उस की याद दिल में स्वयं बस जाती है इस लिए ज़बानी ज़िक्र की भी दीन में बड़ी अहमीयत है।

10. इस का यह मतलब नहीं कि सृष्टि से किसी भी तरह का सम्बन्ध ही न रखो बल्कि मतलब यह है कि खुदा से जैसा सम्बन्ध है और उस का जो क्षेत्र है वह उसी के लिए ख़ास होना

चाहिए जैसे उसी को हाज़तों को पूरा करने वाला समझकर अपनी हाज़तें उस के समक्ष रखो। उसी को अपना करता धरता और अपना सहारा समझ कर उस की तरफ़ रुजू करो। फ़रियादों की सुनवाई के लिए उसी को पुकारो। उस को पूज्य मान कर उसी की उपासना व आराधना करो और उसी से उम्मीदें लगाओ।

11. अर्थात् अपने सारे मामले उस के सुपुर्द कर दो और विश्वास रखो कि वास्तविक कर्ता धर्ता वही है। दुसरा कोई नहीं जो तुम्हारे काम बना सके।

मनुष्य किसी काम का इरादा करे और कैसी ही शानदार योजना बनाए उस की पूर्ति और उसे अन्तिम छोर तक पहुँचाना अल्लाह ही का काम है वरना बावजूद कोशिशों के काम धरे के धरे रह जाते हैं। इस का अनुभव रोज़मर्रा के जीवन में मनुष्य को होता रहता है।

12. अर्थात् विरोधियों की कष्टदायक बातों पर सब्र करो और उन से उलझे बग़ैर और झुंझलाहट ज़ाहिर किये बग़ैर उन को उन के हाल पर छोड़ दो।



हमारे पास उन के लिए बेड़ियाँ और जहन्नम की आग है। और हलक़ में फसने वाला खाना और दुखदायिनी यातना। उस दिन ज़मीन और पहाड़ कंपित हो उठेंगे और पहाड़ बिखरी हुई रेत बन जाएंगे। हम ने तुम लोगों की तरफ़ एक रसूल तुम पर गवाह बनाकर भेजा है। जिस तरह हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था। तो फ़िरऔन ने रसूल की अवज्ञा की। आख़िरकार हम ने उस को सज़्ज़ी के साथ पकड़ लिया। अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन (की सज़्ज़ी) से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (अल-कुआन)

12. हमारे पास उन के लिए बेड़ियाँ और जहन्नम की आग है।

إِنَّ لَدَيْنَا أَكْالًا وَجَحِيمًا ۝۱۲

13. और हलक़ में फसने वाला खाना और दुखदायिनी यातना।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۳

14. उस दिन ज़मीन और पहाड़ कंपित हो उठेंगे¹³ और पहाड़ बिखरी हुई रेत बन जाएंगे।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝۱۴

15. हम ने तुम लोगों की तरफ़ एक रसूल तुम पर गवाह बनाकर भेजा है।¹⁴ जिस तरह हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝۱۵

16. तो फ़िरऔन ने रसूल की अवज्ञा की। आखिरकार हम ने उस को सख़्ती के साथ पकड़ लिया।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝۱۶

17. अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन (की सख़्ती) से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।¹⁵

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝۱۷

18. आसमान उस (दिन की सख़्ती) से फट पड़ेगा। उस का वादा (कि क्रियामत बरपा होगी) पूरा हो कर रहेगा।

إِلَ السَّمَاءِ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۖ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝۱۸

19. यह एक याददेहानी है¹⁶ तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ जाने की राह अपना ले।¹⁷

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝۱۹

13. अर्थात् भारी भूकंप से हिला दिए जाएंगे।

14. “शाहिद” شَهِيد (गवाह) बना कर भेजने का मतलब यह है कि वह दीन की गवाही दे। यह बात सूरह बक्रर: आयत १४३ में भी इर्शाद हुआ है और सूरह हज्ज की आखिरी आयत में भी। और संदर्भ (Context) की दृष्टि से इस का यह अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है किन्तु जिन लोगों ने दीन में शिर्क और बिदअतों की मिलावट की है वे इस का मतलब हाज़िर और नाज़िर बताते हैं ताकि उन की उस ग़लत धारणा का अनुमोदन हो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर जगह हाज़िर और नाज़िर हैं और प्रत्येक व्यक्ति को देख रहे हैं और उस के हालात से भिन्न हैं जब कि यह धारणा अल्लाह के सिवा किसी के बारे में रखा नहीं जा सकता।

और शब्दकोष में शाहिद का अर्थ गवाह और हाज़िर के हैं तो इस का यह मतलब नहीं कि संदर्भ से नज़रें हटाकर इस का मतलब हाज़िर और नाज़िर के लिए जाएं, जब कि हाज़िर और नाज़िर के शब्द ख़ास अर्थ में बोले जाते हैं। सूरह अंबिया में हजरत इब्राहीम का इर्शाद उद्धृत हुआ है :-

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا عَلَىٰ ذَلِكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ - (انبیاء: ५६)

अर्थ :- “इब्राहीम ने कही नहीं बल्कि वास्तव में तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। उसी ने इन को पैदा किया है और इस पर मैं तुम्हारे सामने गवाह हूँ।” (अंबिया ५६) ज़ाहिर है “मिनशशाहिदीन” مِنَ الشَّاهِدِينَ का अर्थ “गवाही देने वाले” के ही हो सकते हैं। न कि हाज़िर और नाज़िर होने के।

सूरह हज्ज में फ़रमाया :-

لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ - (ح: ८८)

अर्थ :- “ताकि रसूल तुम पर गवाह हो। और तुम लोगों पर गवाह हो।” (हज्ज - ७८)

अगर यहाँ अर्थ “रसूल तुम पर गवाह हो” के बजाय “रसूल तुम पर हाज़िर और नाज़िर हो” किये जाएं तो “तुम लोगों पर गवाह हो” के बजाय “तुम लोगों पर हाज़िर और नाज़िर हो” करना पड़ेंगे इस तरह सारे ईमान वालों को हाज़िर और नाज़िर मानना पड़ेगा। कितना ग़लत मतलब है जो कुर्आन की आयतों का निकाला जा रहा है। यहूदी अपनी किताब के प्रवचनों को इसी तरह उलटे सीधे अर्थ पहनाते थे जिन के बारे में कुर्आन में इर्शाद हुआ है :-

يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ - (مائدة: १३)

अर्थ :- “वे कलिमों (प्रवचनों) को उन की असल जगह से फेर देते हैं।”

अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह अहज़ाब नोट ९९

15. कश्शाफ़ के मुफ़स्सिर कहते हैं :-

“यह शिदत की मिसाल है। सख्त मुसीबत के दिन के लिए कहा जाता है

يوم يشيب نواصي الاطفال

“अर्थात् यह ऐसा दिन है जो बच्चों की पेशानियों के बाल सफ़ेद कर देगा।” (तफ़सीर कश्शाफ़ जिल्द ५ पृष्ठ १७८)

मतलब यह कि दिन का बच्चों को बूढ़ा बना देना अरबी का मुहावरा है इस अर्थ में कि वह दिन सख्त मुसीबत का होगा।

16. अर्थात् कुर्आन याददेहानी और नसीहत है।

17. स्पष्ट हुआ कि कुर्आन की नसीहत कुबूल कर के ही आदमी अल्लाह तक पहुँच सकता है उस तक पहुँचने की एक मात्र राह वही है जो कुर्आन बता रहा है।



20. ऐ नबी ! तुम्हारा रब जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब या आधी रात या एक तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े होते हो।¹⁸ और तुम्हारे साथियों में से एक गिरोह भी।¹⁹ अल्लाह ही रात और दिन के समय निर्धारित करता है।²⁰ उसे मालूम है कि तुम उस की ठीक ठीक गणना नहीं कर सकते।²¹ अतः उस ने तुम पर कृपा की तो जितना कुर्आन आसानी से पढ़ सकते हो पढ़ लिया करो।²² उसे मालूम है कि तुम में कुछ मरीज़ होंगे और ऐसे भी जो अल्लाह के फ़ज़ल की तलाश में सफ़र करेंगे और ऐसे भी जो अल्लाह की राह में जंग करेंगे, तो जितना कुर्आन आसानी से पढ़ सकते हो पढ़ लिया करो।²³ और नमाज़ क़ायम करो,²⁴ ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो।²⁵ जो कुछ भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे।²⁶ वह बेहतर और अज़्र (बदले) में बढ़कर होगी। अल्लाह से इस्तिफ़ार (क्षमा याचना) करो।²⁷ वह बड़ा क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِّ اللَّيْلِ
وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ
يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَأَقْرَأُوا مَا تيسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلِمَ أَنْ
سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ يُقَارِتُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَأَقْرَأُوا مَا تيسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا يَقْدِرُوا
لِأَنفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ
وَأَعْظَمَ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

18. यह आखिरी आयत भी मक्की ही है किन्तु ऊपर की आयतों के उतरने के काफ़ी समय बाद उतरी और इस में रातों को उठ कर नमाज़ (इबादत) में लग जाने के हुक्म में रियायत कर दी गई।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों को उठ कर इबादत में लगने का जो हुक्म सूरह के शुरू में दिया गया था उस के अनुसार आप अमल कर रहे थे। इस वाक्य में आप के उस अनुपालन का वर्णन हुआ है कि आप कभी लगभग दो तिहाई रात इबादत में गुज़ार देते हैं और कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात।

19. रातों को उठ कर इबादत में लगने का ताकीदी हुक्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए था किन्तु आप के साथियों में से एक गरोह अपने इबादत के शौक के चलते रात की उस नमाज़ में शरीक हो जाया करता था और संभवतः यह नमाज़ मस्जिदे-हराम (काबा शरीफ़) में अदा की जाती थी। इस नमाज़ में सहाबा के एक गरोह के शामिल होने से यह बात निकलती है कि यह नमाज़ उन पर वाजिब नहीं थी बल्कि उन के लिए नफ़्ल थी। अगर उन पर वाजिब होती तो सारे सहाबा उस में शरीक होते।

20. अर्थात् रात का कभी छोटा होना और कभी बड़ा होना और इसी तरह से दिन के समयों का घटना और बढ़ना सब अल्लाह के बनाए हुए समय सारिणी के अनुसार होता है। किसी के बस में नहीं कि रात को छोटी बनाए और दिन को बड़ा या दिन को छोटा बनाए और रात को बड़ी।

21. उस ज़माने में घड़ियों नहीं थी इस लिए यह मालूम करना मुश्किल था कि ठीक आधी रात कब होती है और रात का आखिरी एक तिहाई हिस्सा ठीक किस समय शुरू हो रहा है। घड़ी और अलार्म की अनुपस्थिति में समय का सही अन्दाज़ा लगाना और नींद से ठीक समय पर जाग उठना मुश्किल था इस लिए अल्लाह तआला ने रसूल के अनुयायियों को इस परिश्रम में नहीं डाला और आसान हुक्म दिया जो आगे बयान हुआ है।

22. कुआन पढ़ना नमाज़ का महत्वपूर्ण हिस्सा है इस लिए यहाँ जैसा कि संदर्भ (Context) से स्पष्ट है कुआन की क़िर्त से नमाज़ मुराद है। मतलब यह है कि रात की यह नमाज़ (तहज्जुद) आसानी के साथ जितनी पढ़ सकते हो पढ़ो। आधी रात या उस से कम, ज्यादा नमाज़ में खड़े रहना वाजिब नहीं। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि रात कि नफ़्ल नमाज़ों के लिए रकअतों की तादाद के लिए कोई क़ैद नहीं। न रमज़ान में न दूसरे महीनों में। अलबत्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमल जो आप के आखिरी दौर में रहा

वह यह था कि आप आठ रकअतें खूबी के साथ अदा फ़रमाते जिन में लम्बी क़िर्त होती और रूकू और सज्दे भी लम्बे होते। सूरह बक्रर: सूरह आले-इमरान और सूरह निसा जैसी लम्बी सूरतें आप नमाज़ में पढ़ते। हज़रत आइशा का बयान है कि :-

“आप रमज़ान और ग़ैर रमज़ान में ग्यारह रकअतों से अधिक नहीं पढ़ते थे। आप चार रकअतें इस तरह पढ़ते कि उन के सुन्दर ढंग और लंबाई के बारे में न पूछो। फिर आप चार रकअत पढ़ते जिन के सुन्दर ढंग और लम्बाई के बारे में न पूछो। फिर आप तीन रकअतें (वित्र) की पढ़ते।” (बुख़ारी किताबुस्सलात अत्तरावीह)

और हज़रत आइशा रज़ीअल्लाहु अन्हा का यह बयान भी है कि :

“आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात के पहले हिस्से में सो जाते और आखिर रात में उठते और नमाज़ पढ़ते।” (बुख़ारी अब्बाबुत-तहज्जुद)

रात की ये नफ़्ल नमाज़ें दो दो रकअतें कर के जितनी तादाद में चाहे अदा की जा सकती हैं।

हदीस में आता है कि एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा :-

“रात की नमाज़ किस तरह अदा की जाए। फ़रमाया दो दो रकअतों की सूरत में। फिर जब सुबह हो जाने की आशंका हो तो एक रकअत “वित्र” पढ़ो (बुख़ारी अब्बाबुत-तहज्जुद)

यदि कोई व्यक्ति रात को नफ़्ल (तहज्जुद) न पढ़ सके तो कुआन की जितनी आयतें आसानी से पढ़ सकता हो पढ़ ले। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

“जिस ने रात के समय सूरह बक्रर: की आखिरी दो आयतें पढ़ लीं तो वे उस के लिए काफ़ी होंगी।” (बुख़ारी किताबु फ़ज़ाइलुल कुआन)

23. इस आयत में उन हालात की तरफ़ इशारा कर दिया गया है जो आगे चल कर सामने आने वाले थे जिन का लिहाज़ करते हुए रातों को उठ कर नमाज़ में लग जाने के आदेश में रियायत कर दी गई। कुछ लोग मरीज़ होंगे तो कुछ व्यापार से सम्बन्धित सफ़र करेंगे और ऐसे भी जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। इन सब सूरतों में रातों का बड़ा हिस्सा नमाज़ में लगाना कठिन परिश्रम की बात होगी इस लिए यह आसानी पैदा कर दी गई कि जितना कुआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ो और जितनी नफ़्ल नमाज़ें आसानी से पढ़ी जा सकती हैं पढ़ें।

24. अर्थात् फ़र्ज़ नमाज़े पाबन्दी के साथ अदा करो।

25. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हदीद नोट २१

26. अर्थात् जो नेकी भी तुम आखिरत को लक्ष्य बना कर करोगे वह तुम्हारी आरक्षित पूँजी होगी जो आखिरत में तुम्हें मिलेगी।

27. यह इस बात पर उभारना है कि नेक अमल करते

हुए अपने गुनाहों और कुसूरों का एहसास होना चाहिए। और इस के लिए अल्लाह से क्षमा माँगते रहना चाहिए। हदीस में भी अधिकता के साथ क्षमा याचना (इस्तिफ़ार) कहने पर उभारा गया है।



७४. सूरह अल्-मुद्दस्सिर

नाम :- सूरह के शुरू में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को “अल-मुद्दस्सिर” (चादर ओढ़ने वाले) कह कर सम्बोधित किया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-मुद्दस्सिर” है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्का के शुरू दौर में नाज़िल हुई। शुरू की आयतें पहले नाज़िल हुई और बाक़ी हिस्सा बाद में नाज़िल हुआ।

केन्द्रीय विषय :- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रिसालत के पद भार की ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की हिदायत देना और आप के ख़बरदार करने के बाद भी जो लोग सत्य का इन्कार करने पर हठी हैं उन्हें जहन्नम की दुखदायिनी यातना का

डरावा सुनाना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १० में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बरदार करने के लिए उठ खड़े होने का निर्देश देते हुए नैतिकता एवं आचारण को श्रेष्ठ करने तथा उच्च चरित्र की नसीहत की गई है।

आयत ११ से ३१ में कुरैश के लीडरों को जो विरोध पर आमादा हो गए थे जहन्नम के अज़ाब की चेतावनी सुनाई गई है।

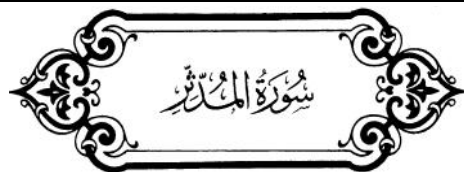
आयत ३२ से ४८ में आख़िरत के बारे में समझाया गया है।

आयत ४९ से ५६ में कुर्आन के याददेहानी होने के पहलू को इस तरह पेश किया गया है कि बात दिल में उतर जाए।

७४. सूरह अल्-मुद्स्सिर

आयतें : 56

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ऐ चादर ओढ़ने वाले ¹। يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ١
2. उठो और खबरदार करो।² فَمُفَانِّذُ ٢
3. और अपने रब की बड़ाई बयान करो।³ وَرَبِّكَ فَكْبَرُ ٣
4. और अपने कपड़े पाक रखो।⁴ وَتَيَّابُكَ فَطَهِّرُ ٤
5. और (बुतों की) गंदगी से दूर रहो।⁵ وَالرُّجُزَ فَاهْجُرُ ٥
6. और ज़्यादा हासिल करने के उद्देश्य से एहसान न करो।⁶ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ٦
7. और अपने रब के लिए सब्र करो।⁷ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرُ ٧
8. फिर जब सूर फूँका जाएगा।⁸ فَإِذَا نَفَخَ فِي الْتَأْوِيلِ ٨
9. तो वह दिन बड़ा ही सख्त दिन होगा। فَذَلِكَ يَوْمٌ مِّنْ يَّوْمٍ عَسِيرٍ ٩
10. काफ़िरों पर आसान न होगा।⁹ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ١٠
11. छोड़ दो मुझे और उस व्यक्ति को जिसे मैं ने अकेला पैदा किया।¹⁰ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ١١
12. और उस व्यक्ति को बहुत सा माल प्रदान किया।¹¹ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ١٢
13. और हाज़िर रहने वाले बेटे दिए।¹² وَبَنِينَ شُهُودًا ١٣
14. और उस के लिए सामान मुहैया किया।¹³ وَمَهْدَتُ لَهُ تَمْهِيدًا ١٤

1. पहली वहय जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आई वह सूरह अलक़ की आरम्भिक आयतें

(اٰقْرَا بِاَسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ.....)

थीं। इस के बाद वहय सूरह मुद्स्सिर की आरम्भिक आयतों की सूरत में नाज़िल हुई। चूँकि वहय के अवतरण और फ़रिश्ते के नज़र आने का यह पहला संयोग था इस लिए मनुष्य होने के नाते आप पर भय व्याप्त हो गया जैसा कि हदीस में बयान हुआ है (देखिए बुखारी, किताबुत्तप्सीर बाब सूरह अल-मुद्स्सिर) इस भय की वजह से आपने चादर ओढ़ ली थी। इस अवसर पर आप के स्वाभाविक भय को दूर करने और वहय से परिचित करने के लिए **يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ** “ऐ चादर ओढ़ने वाले” के प्यार भरे शब्द से आप को संबोधित किया गया।

ध्यान रहे कि नबियों पर जब पहली बार वहय आती है तो उन्हें उस के अल्लाह की वहय होने में कोई संदेह और कोई शंका नहीं होती। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी कोई संदेह नहीं हुआ। अलबता फ़रिश्ते को पहली बार देखने पर मनुष्य के स्वभावानुकूल आप पर भय व्याप्त हुआ जो एक अस्थायी हालत थी। इस मौक़े पर सूरह मुज़्ज़मिल नोट १ भी सामने रहे।

2. यहाँ उठो का मतलब यह नहीं है कि आप आराम की नींद सो रहे हैं और इस से उठ खड़े हो जाएँ बल्कि मतलब यह है कि खुदा और आख़िरत से गाफ़िल इन्सानों को ख़बरदार करने के लिए साहस और दृढ़ संकल्प के साथ उठ खड़े हों।

इस आयत से स्पष्ट हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो पहली हिदायत दी गई वह लोगों को ख़बरदार करने की थी और नबियों की दअवत की यह महत्वपूर्ण विशेषता है कि वे लोगों को सब से पहले अल्लाह के अज़ाब से डराते हैं ताकि वे चौंक जाएँ और अपनी इस्लाह के प्रति चिंतित हों। उन की दअवत का केन्द्र बिन्दु मनुष्य का अन्तर्मन होता है। सामाजिक जीवन के बिगाड़ को दूर करना और सुलझी व्यवस्था को स्थापित करना सब शरीअत के तक्राज़े हैं किन्तु नबियों की दअवत के तरीक़े ने हर चीज़ के लिए एक जगह निर्धारित कर दी है इस लिए उस को उसी जगह पर रखने की ज़रूरत है वरना संतुलन बिगड़ जाता है जिस को आज के दौर में दअवत के मैदान में हम अपनी आँखों से देखते रहते हैं और ऐसा महसूस होता है कि दअवती काम करने वालों ने घोड़े के आगे गाड़ी को बाँध दिया है इस लिए उन की दअवत प्रभावी साबित नहीं होती। इस मौक़े पर सूरह नूह आयत १ नोट २ भी सामने रहे।

3. अर्थात् बड़ाई केवल अल्लाह के लिए है इस लिए उसी की बड़ाई का ज़िक्र तुम्हारी ज़बान पर होना चाहिए और उसी का चर्चा लोगों में करना चाहिए। नमाज़ की शुरुआत तक्रबीर

अर्थात् अल्लाहु अक़बर (अल्लाह सब से बड़ा है) के कलिमों ही से होती है। और अज़ान में भी बार बार इस कलिमे को दोहराया जाता है ताकि संपूर्ण वातावरण अल्लाह की बड़ाई से गूँज उठे। बड़ाई बयान करने का आदेश सूरह बनी इस्राईल की आख़िरी आयत में भी दिया गया है।

وَكَبْرُهُ تَكْبِيرًا

अर्थ:- “और उस की बड़ाई बयान करो जैसी कि बड़ाई बयान करना चाहिए।”

अल्लाह की बड़ाई बयान करने में शिर्क (बहुदेवाद) का खण्डन भी है और एकेश्वरवाद (तौहीद) की स्वीकृति भी। बहुदेवादियों ने किसी को महादेव बना दिया है और किसी को महात्मा जिन की भक्ति में वे लगे रहते हैं। किन्तु यह केवल दावे हैं। वास्तविकता यह है कि बड़ाई अल्लाह के सिवा किसी के लिए नहीं है और न उस के सिवा कोई पूज्य है जिस की पूजा भक्ति की जाए।

4. ज़ाहिर की पाकीज़गी से अन्दरून की पाकीज़गी का एहसास उभरता है। इस लिए इस्लाम ने ज़ाहिर की पाकीज़गी को बड़ा महत्व दिया है। अतः नमाज़ के कपड़ों का गन्दगी से پاک होना ज़रूरी है। और जब कपड़ों को पाक रखने की हिदायत की गई तो शरीर को पाक रखने का दर्जा इस से भी कुछ ऊँचा और आवश्यक हुआ।

इस्लाम ने पेशाब और दूसरी गन्दगियों से पाकी हासिल करने और कपड़ों को पाक रखने का बेहतरीन तरीक़ा बताया है। और पाकीज़गी बनाये रखना नमाज़ पढ़ने वालों की पहली विशेषता है। किन्तु मौजूदा दौर के कितने ही सुसभ्य लोग पाकी के ऐसे सवच्छ विचारों ही से अपरिचित हैं।

5. “रुज़्ज” का अर्थ अल-क्रामूसुलमुहीत में इस तरह आया है

القدر وعبادة الاوثان والعذاب والشرك

अर्थ:- “गन्दगी, बुतों की पूजा, अज़ाब और शिर्क”
(अर्थात् सृष्टा का साझी ठहराना) और हज़्र का अर्थ दूर रहने के भी आते हैं ”

هجر الرجال هجر اذا تباعدوا نأى.

“अर्थात् लोगों से दूर और अलग रहे ” (लिसानुल अरब जिल्द ५ पृष्ठ २५२)

यहाँ ख़ास तौर से बुतों की गन्दगी और शिर्क से दूर रहना अभिप्रेत है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इस हुक्म की हैसियत एक ताकीदी हुक्म की थी जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया गया था कि

وَلَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا

“किसी को मेरा साझी न ठहराना” (सूरह हज्ज २६) वरना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अज्ञानता काल में भी बुत परस्ती से अलग रहे। इस के अलावा यह हुक्म इस अर्थ में भी था कि लोगों पर स्पष्ट हो जाए कि अल्लाह ने बुत परस्ती को छोड़ देने और उस से अलग रहने का हुक्म दिया है।

6. आदमी दूसरे पर एहसान इस लिए करता है ताकि उस के बदले में कुछ अधिक पाये या उस का कोई न कोई स्वार्थ उस में निहित होता है। यह नैतिक गिरावट की बात है। बलन्द नैतिकता यह है कि आदमी निःस्वार्थ हो कर उपकार करे। यह हिदायत बहुत सारे पहलुओं पर हावी है किन्तु विशेष रूप से यहाँ रिसालत के दायित्व को अदा करने और इस सिलसिले में लोगों को समझाने बुझाने तथा उन का हित चाहने का पहलु स्पष्ट है। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत (जीवन चरित्र) का एक अहम पहलू यह था कि आप ने अल्लाह का पैगाम पहुँचाने पर लोगों से कोई मुआवज़ा नहीं माँगा।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ - (ص: ८५)

अर्थ :- “कहो मैं इस पर तुम से कोई मुआवज़ा नहीं माँगता।” (साद-८६)

इस से अन्दाज़ा होता है कि कुर्आन की शिक्षा कितनी महान है। जिस शिक्षा का आरम्भ इतने उच्च स्तर से हुआ है उस का

शिखर क्या होगा। कुर्आन का चमत्कार तो उस की शिक्षाओं से भी स्पष्ट झलकता है।

7. अर्थात् जब लोगों को खबरदार करने के लिए उठ खड़े हो जाओगे तो क्रदम क्रदम पर कठिन हालात से दोचार होना होगा और सहिष्णुता बरतनी होगी। अतः तुम सब को अपना स्वभाव बना लो और यह सब सच्चे मन से ख़ालिस अल्लाह के लिए होना चाहिए वह उस का बेहतरीन अन्न देगा।

8. अर्थात् क्रियामत का बिगुल बजेगा।

9. अर्थात् यह दिन काफ़िरों के लिए बहुत ही सख्त दिन होगा। ऐसा सख्त कि किसी पहलू से भी आसानी की कोई सूरत नहीं होगी।

10. अर्थात् मैं अकेला उस का सृष्टा हूँ और इस से निपटने के लिए काफ़ी हूँ। इस इर्शाद से एक तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देना अभिप्रेत है कि आप उन लोगों की चिन्ता न करें जो आप के विरोध में आगे आगे हैं और दूसरी तरफ़ विरोध करने वालों को चेतावनी है कि मामला अल्लाह से है और उस की पकड़ बड़ी सख्त है।

11. अर्थात् दौलतमंद बनाया।

12. अर्थात् ऐसे बेटे जो उस के कारोबार में हाथ बटाएँ और उस की सेवा में उपस्थित रहें।

13. अर्थात् उस के लिए सांसारिक प्रगति और राज्य एवं शासन के मार्ग प्रशस्त किए।



फिर वह आशा रखता हैं कि मैं उसे और अधिक दूँगा । हरगिज़ नहीं, वह हमारी आयतों से बैर रखता है। मैं उस को बहुत जल्द एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा। उस ने सोचा और एक बात प्रस्तावित की। तो मारा जाए वह कैसी बात उस ने प्रस्तावित की। (अल-कुअनि)

15. फिर वह आशा रखता हैं कि मैं उसे और अधिक दूँगा।¹⁴

ثُمَّ يَظْمَعُ أَنْ أَرْيِدَ ۝١٥

16. हरगिज़ नहीं, वह हमारी आयतों से बैर रखता है।¹⁵

كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦

17. मैं उस को बहुत जल्द एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा।¹⁶

سَأَرْهِفُهُ صَعُودًا ۝١٧

18. उस ने सोचा और एक बात प्रस्तावित की।¹⁷

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨

19. तो मारा जाए वह कैसी बात उस ने प्रस्तावित की !

فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩

20. फिर मारा जाए वह कैसी बात उस ने प्रस्तावित की !

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠

21. फिर उस ने नज़र डाली।

ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١

22. फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बनाया।

ثُمَّ عَمَّسَ وَبَسَرَ ۝٢٢

23. फिर पीठ फेरी और अहं किया।¹⁸

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝٢٣

24. और बोला यह तो मात्र जादू है जो पहले से चला आ रहा है।

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝٢٤

25. यह मनुष्य का कलाम ही है।¹⁹

إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝٢٥

26. बहुत जल्द मैं इसे सक्कर²⁰(दोज़ख) में दाखिल करूँगा।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝٢٦

27. और तुम ने समझा कि सक्कर (दोज़ख) क्या है?²¹

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧

28. न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी।²²

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ۝٢٨

29. खाल को झुलसा देने वाली।²³

لَوَاحٍ لِّلْبَشَرِ ۝٢٩

30. उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते) नियुक्त हैं।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝٣٠

14. अर्थात् अल्लाह की प्रदान की हुई इन नेमतों पर उस का शुक्र अदा करने के बजाए और अधिक प्रतिष्ठा एवं धन का लोभी बन गया है और इस भ्रम में लिप्त है कि यदि आखिरत बरपा हुई तो अपने शिर्क और कुफ्र के बावजूद यहाँ भी वह नेमतों से मालामाल कर दिया जाएगा।

15. अर्थात् यह उस का भुलावा है। जब वह हमारी आयतों के साथ इन्कार (कुफ्र) का रवैया अपनाए हुए हैं न हमारे रसूल को मानने के लिए तैयार है और न हमारे कलाम को तो आखिरत में वह नेमतों का आधिकारी किस तरह हो सकता है।

ऊपर की आयतों में उन लीडरों का चित्रण प्रस्तुत किया गया है जो सांसारिक दृष्टि से खुशहाल थे किन्तु नबी के विरोध में आगे आगे थे। और वलीद बिन मुगीरा विरोध का जीता जागता उदाहरण था।

16. चढ़ने में मनुष्य का साँस फूलता है और फिर जब चढ़ाई कठिन हो और दोज़ख में हो तो वह कैसा सख्त अज़ाब होगा।

17. उस का यह सोचना लाल बुझक्कड़ की तरह था और जो बात उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुर्आन के बारे में प्रस्तावित की उस का जिक्र आगे आयत २४ और २५ में हुआ है।

18. इन आयतों में उस काफ़िर लीडर की हरकतें (Actions) बयान हुई हैं जो अल्लाह के कलाम को सुनने के बाद बुरा सा मुँह बनाने की सूरत में सामने आई।

19. अर्थात् लोगों को उस ने यह समझाने की कोशिश कि अथाह सोच विचार और चिन्तन मनन के बाद वह इस निष्कर्ष को पहुँचा है कि कुर्आन इन्सान का कलाम ही है अलबत्ता यह बयान की जादूगरी है जो लोगों को अपनी ओर खींच ले रही है। और बयान की जादूगरी कोई नई बात नहीं बल्कि यह बात तो पहले से होती चली आ रही है।

रिवायतों में आता है कि वलीद बिन मुगीरा ने अबू जेहेल को यही सुझाव दिया था कि लोगों में कुर्आन के जादू होने का चर्चा किया जाए।

20. “सक्रर” سَفَر दोज़ख का नाम है। यह “सक्रर” سَفَر से है जिस का अर्थ अत्याधिक तापमान के हैं।

21. अर्थात् दोज़ख को कोई मामूली चीज़ न समझो। वह दुखदायिनी यातना की जगह है।

22. अर्थात् दोज़ख की आग इन्सान को जलाने में कोई कसर न उठा रखेगी और फिर जलने के बाद भी उसे छोड़ेगी नहीं बल्कि जलाने का काम जारी रखेगी। दोज़ख उस को न जीने देगी और न मरने देगी और न अपनी पकड़ से आज़ाद होने देगी।

23. खाल मनुष्य के शरीर का नाजुक हिस्सा होता है और कष्ट का एहसास त्वचा ही के द्वारा होता है। दोज़ख की आग जब खाल को झुलस देगी तो मनुष्य का क्या हाल होगा। अल्लाह तआला दोज़ख के ये हालात सुनाकर खबरदार कर रहा है ताकि मनुष्य उस से बचने का सामान करे।



31. और हम ने दोज़ख के निगराँ फ़रिश्ते बनाए हैं। और उन की तादाद को काफ़िरों के लिए फ़ितना बनाया है ताकि अहले किताब को विश्वास हो जाए और ईमान वालों का ईमान बढ़े। और अहले-किताब और मोमिन किसी शक में न पड़ें। और जिन के दिलों में रोग है वे और काफ़िर कहें कि इस बात से अल्लाह की क्या मुराद है।²⁴ इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है। और हिदायत देता है जिसे चाहता है। और तुम्हारे रब के लश्करोँ को उस के सिवा कोई नहीं जानता।²⁵ और यह कुर्आन इन्सानों के लिए सरासर नसीहत है।²⁶

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيَقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزِدَّ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا امْتِلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنِ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

32. हरगिज़ नहीं,²⁷ क़सम है ²⁸ चाँद की।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

33. और रात की जब कि वह पलटती है।

وَالَيْلِ إِذَا دَبَّرَ ﴿٣٣﴾

34. और सुबह की जब कि वह रौशन हो जाए।

وَالصُّبْحِ إِذَا أَاسْفَرَ ﴿٣٤﴾

35. कि यह (कुर्आन) बहुत बड़ी निशानियों में से एक है।²⁹

إِنَّمَا الْخِطَابُ الْكَبِيرُ ﴿٣٥﴾

36. इन्सानों को ख़बरदार करने वाला।³⁰

نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

37. तुम में से हर उस व्यक्ति को जो आगे बढ़ना या पीछे रहना चाहे।³¹

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾

38. प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाई के बदले रहन है।³²

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾

39. सिवाय दाहिने हाथ वालों के।³³

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾

40. वे जन्नतों में होंगे, वहीं वे पूछ रहे होंगे।

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٤٠﴾

41. मुजरिमों के बारे में।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾

42. तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख में ले गई? ³⁴

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ﴿٤٢﴾

43. वे कहेंगे हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे।³⁵

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾

24. अल्लाह तआला का कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं, अतः उस ने दोज़ख़ पर जो उन्नीस फ़रिशते नियुक्त किए हैं वह भी निश्चय ही उस का हिकमत भरा (तत्त्वपूर्ण) फ़ैसला है। यद्यपि हम उस के फ़ैसले की मसलहत (नीति) को नहीं जानते और न हमें उन उन्नीस फ़रिशतों के काम का ज्ञान है कि वह किस तरह के काम पर नियुक्त हैं अलबत्ता हम यह ज़रूर जानते हैं कि फ़रिशतों को वह शक्ति प्रदान की गई है जिन का अन्दाज़ा हम नहीं कर सकते। मिसाल के तौर पर आसमान से उन का उतरना, मालिकुलमौत का रुहों को निकालना आदि इस लिए दोज़ख़ पर नियुक्त फ़रिशतों की तादाद को मामूली समझना और यह समझना कि दोज़ख़ियों की भारी संख्या को यातना में पड़ा रखने के लिए उन्नीस की संख्या कैसे काफ़ी हो सकती है, सरासर मूर्खता है। परन्तु काफ़िरों ने कुर्आन की इस ख़बर को सुन कर इसी मूर्खता का प्रदर्शन किया जिस पर इस आयत में उन्हें सचेत किया गया है।

रही बात इस संख्या के बयान की मसलहत तो इस की एक मसलहत यह बयान की गई है कि यह काफ़िरों के लिए आजमाइश है। अर्थात् बजाए सचेत होने के वे दोज़ख़ को मज़ाक़ में उड़ाना चाहते हैं तो वे अपना शौक़ पूरा कर लें और गुमराही में दूर निकल जाएं। दूसरी मसलहत यह है कि अहले-किताब को विश्वास हो जाए कि इस तफ़्सील के साथ दोज़ख़ का वर्णन कुर्आन के अल्लाह की तरफ़ से होने का सबूत है क्योंकि दोज़ख़ का वर्णन तो उन की किताबों में मौजूद था किन्तु इस का विस्तृत नक्शा कुर्आन ने प्रस्तुत कर दिया। और तीसरी मसलहत यह है कि ईमान वालों के ईमान में वृद्धि हो क्योंकि ईमान वालों का यह तरीक़ा नहीं कि कुर्आन की एक एक बात की हिकमत जानने के बाद उस पर ईमान लाएं बल्कि जो बात भी उस में बयान की गई है उस पर वे ईमान लाते हैं चाहे उस की हिकमत अल्लाह ने स्पष्ट की हो या न की हो। बन्दे का काम तो अल्लाह के कहने पर बिना शर्त और बिना कुछ कहे ईमान लाना है। उस के ईमान लाने के लिए वह बात काफ़ी है कि यह अल्लाह का इरशाद है आख़िरत के हालात पर जो इन्सान की निगाहों से छिपी हैं ईमान वाले विश्वास कर लेते हैं तो उन के ईमान में और वृद्धि हो जाती है। और चौथी मसलहत यह बयान की गई है कि अहले-किताब और ईमान वालों के लिए विरोधियों के एतिराज़ आदि उन के उलझाव तथा भ्रमित करने का कारण न बने बल्कि उन्हें इत्मीनान हो कि ग़ैब की यह बातें इतनी दृढ़ता के साथ कहने वाला नबी ही हो सकता है। और पाँचवी मसलहत यह है कि जो उलझावों तथा अविश्वास भाव से ग्रस्त हैं वे और इन्कार करने वाले लोग इस पर अचंभित हो कर रह जाएं।

ध्यान रहे कि कुछ मुफ़स्सिरन ने उन्नीस फ़रिशतों के जहन्नम

पर नियुक्त किये जाने की विभिन्न व्याख्याएँ की हैं परन्तु ये सब अपने अपने अन्दाज़े की बातें तथा तकल्लुफ़ात हैं जब अल्लाह तआला ने इस संख्या के नियुक्ति का कोई कारण नहीं बताया और संक्षिप्त बात कह कर हमारे ईमान की परीक्षा लेनी चाही है तो हम क्यों तादाद की बहस में पड़ें।

25. अर्थात् यह न समझो कि अल्लाह के पास फ़रिशतों के लश्कर की कमी है इस लिए दोज़ख़ पर केवल १९ फ़रिशते नियुक्त किए गए हैं। यह संख्या छोटी प्रतीत होती है किन्तु वह अपनी शक्ति और संसाधनों की दृष्टि से पूरी जहन्नम को कन्ट्रोल करने के लिए काफ़ी होंगे। जब मनुष्य का अपना हाल यह है कि एक आदमी रसायनिक हथियार इस्तेमाल कर के हजारों फ़ौजियों को एक ही समय में विनष्ट कर सकता है और ऐटम बम इस्तेमाल कर के लाखों लोगों को मौत के घाट उतार सकता है तो फ़रिशते आख़िर फ़रिशते हैं। उन की असाधारण शक्ति और उन के उन संसाधनों का जो अल्लाह ने उन को विशेष रूप से असंख्य जहन्नमियों को दण्डित करने के लिए प्रदान किये होंगे, कौन अन्दाज़ा कर सकता है। फिर जब मनुष्य की योग्यता का हाल यह है कि वह स्कड मीज़ाइल (Scud Missile) और पैट्रियाट (Patriot) के द्वारा हजारों मील दूरी के स्थानों को निशाना बना सकता है तो फ़रिशतों के लिए विशाल जहन्नम में दोज़ख़ियों को निशाना बनाना क्या मुश्किल है।

अल्लाह के लश्कर बहुत से हैं और उन की संख्याओं का ज्ञान भी उसी को है। कोई व्यक्ति भी उस के लश्करों का अन्दाज़ा नहीं कर सकता।

26. अर्थात् यह कुर्आन जो जहन्नम के हालात बयान कर रहा है लोगों के लिए नसीहत लेने का सामान है। बुद्धिमान हैं वे लोग जो बहसों में उलझे बग़ैर उस की नसीहत पर कान धरें।

27. अर्थात् कुर्आन को इन्सान की कलाम या जादू समझना हरगिज़ सही नहीं।

28. यह क़सम गवाही और तर्क के अर्थ में है।

29. अर्थात् कुर्आन का अवतरण अल्लाह की एक बहुत बड़ी निशानी का सामने आना है जो मनुष्य को अपने प्रभु का सही परिचय प्रदान करता है और उस के जीवन का उद्देश्य बयान करता है। अर्थात् एकेश्वरवाद के साथ कर्म फल की सूचना देता है। यह निशानी अल्लाह के कलाम के रूप में है इस लिए अत्यंत महान है और इस का अनुमोदन उन निशानियों से होता है जो कायनात में फैली हुई हैं। उदाहरण स्वरूप चाँद जो अपने सृष्टिकर्ता की सुन्दरता के गुणों को उजागर करने के साथ उस के एक मात्र पूज्य होने का एलान करता है। और रात और दिन की यह व्यवस्था कि रात अपने अंधकार के साथ रुख़सत हो जाती है और सुबह अपनी रौशनी के साथ सामने आ जाती है,

अल्लाह की महान शक्ति और सामर्थ्य पर तर्क प्रस्तुत करती है और इस बात पर भी कि वह न्याय और सत्य के साथ इस कायनात पर शासन कर रहा है। तथा इस बात की तरफ भी इशारा करती है कि इस जगत के गर्भ से क्रियामत की सुबह प्रकट होने वाली है। इस तरह कायनात के ये इशारे और कुर्आन के बोलते साक्ष्य दोनों को तुम एक पाओगे और यह इस बात का सबूत है कि कुर्आन का अवतरण अल्लाह की अत्यंत महान निशानी का सामने आना है।

30. अर्थात् कुर्आन का सर्वप्रथम उद्देश्य लोगों को बदले के दिन से खबरदार करना है।

31. अर्थात् इस से सजग हो कर जो लोग अल्लाह की राह में आगे बढ़ना चाहें और अपने भविष्य का सामान करना चाहें करें। और जो लोग इस चेतावनी के बावजूद पीछे रहना चाहें, अर्थात् अल्लाह की राह में क्रदम रखना न चाहें और अपने भविष्य के लिए कोई सामान करना न चाहें, वे अपनी मूर्खता तथा अदूरदर्शिता की सजा भुगतें।

32. इस की व्याख्या सूरह तूर नोट २१ में गुजर चुकी।

33. दाहिने हाथ वालों से तात्पर्य नेक ईमान वाले हैं जिन का आमाल नामा उन के दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

34. अहले ईमान जन्नत में काफ़िरों के बारे में आपस में बातचीत कर रहे होंगे कि उन का क्या हाल हुआ? उन की इस इच्छा पर उन्हें दोज़खियों से सीधी बातचीत करने का मौका दिया जाएगा। वे जन्नत में रहते हुए बहुदेववादीयों से जो दोज़ख में होंगे, सवाल करेंगे जिस का उन्हें उन की तरफ से जवाब भी मिलेगा जो आगे बयान हुआ है। जन्नत से दोज़ख बहुत दूरी पर होगी परन्तु उन से बात चीत बिलकुल संभव होगी। कुर्आन अवतरण के ज़माने में तो यह बात इन्सान के लिए आश्चर्य की हो सकती है परन्तु मौजूदा ज़माने में जब कि टेलिफोन के द्वारा

हज़ारों मील की दूरी पर दो आदमियों के बीच बात चीत करना आसान हो गया है। तथा वायर लैस आदि के द्वारा यह भी संभव हो गया है कि ज़मीन पर रहते हुए अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाले आदमियों से बातचीत की जाए। कुर्आन का यह बयान कि जन्नत में रहने वाले दोज़ख में पड़े हुए मुजरिमों से बात चीत करेंगे, आश्चर्य की बात नहीं रही। मतलब यह कि इन उपकरणों के आविष्कार से कुर्आन के बयान की सत्यता और अधिक स्पष्ट हो गई। कुर्आन की यह भविष्यवाणी कि :-

سَنُرِيهِمْ اَيِّنَا فِي الْاَفَاقِ وَفِي اَنْفُسِهِمْ حَتَّى
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ - (حم السجدة: ५३)

अर्थ :- बहुत जल्द हम इन को अपनी निशानियाँ आफ़ाक़ (संपूर्ण जगत) में भी दिखाएँगे और उन के अपने अन्दर भी, यहाँ तक कि उन पर यह बात खुल जाएगी कि यह हक़ है।''(हा मीम अस्सज्दा - ५३) आज हक़ीक़त बन कर उभर रही है।

35. इस से नमाज़ का महत्व और अधिक उभर कर सामने आया है कि उस को बेकार गंवाने का एहसास मुजरिमों को दोज़ख में होगा। नमाज़ इस्लाम का सब से बड़ा रुक़न (स्तंभ) है और ईमान इस के लिए शर्त है। इस के बग़ैर न नमाज़, नमाज़ कहला सकती है और न वह अल्लाह के यहाँ स्वीकार्य ठहरेगी। इसी तरह ज़कात आदि इबादतों का मामला भी है। दूसरे शब्दों में अल्लाह की शरीअत पर अमल करने की जिन पर ज़िम्मेदारी आयद होती है, सारे इन्सान हैं किन्तु उस के अनुपालन और अल्लाह के यहाँ उस के कुबूल किये जाने के लिए ईमान की शर्त अनिवार्य है।

इस आयत को पढ़ कर उन मुसलमानों को भी होश में आ जाना चाहिए जो नमाज़ से बिलकुल ग़ाफ़िल हैं।



और न मिस्कीनों को खाना खिलाते थे। और बहस करने वालों के साथ हम भी बहस करते थे। और बदले के दिन को झुठलाते थे। यहाँ तक कि यक्रीनी चीज़ हमारे सामने आ गई। तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के लिए कुछ भी लाभदायक न होगी। इन को क्या हो गया है कि ये नसीहत से मुँह फेर रहे हैं। (अल-कुआन)

44. और न मिसकीनों को खाना खिलाते थे।³⁶

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ^{٣٦}

45. और बहस करने वालों के साथ हम भी बहस करते थे।³⁷

وَكُنَّا نَحُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ^{٣٧}

46. और बदले के दिन को झुठलाते थे।

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ^{٣٨}

47. यहाँ तक कि यक़ीनी चीज़ हमारे सामने आ गई।³⁸

حَتَّىٰ آتَيْنَا الْيَقِينَ^{٣٩}

48. तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के लिए कुछ भी लाभदायक न होगी।³⁹

فَمَا نَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ^{٤٠}

49. इन को क्या हो गया है कि ये नसीहत से मुँह फेर रहे हैं।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ^{٤١}

50. जैसे कि ये बिदके हुए गधे हैं।

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ^{٤٢}

51. जो शेर से डर कर भागे हों।⁴⁰

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ^{٤٣}

52. बल्कि इन में से हर एक चाहता है कि उसे खुला सहीफ़ा दिया जाए।⁴¹

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً^{٤٤}

53. हरगिज़ नहीं। बल्कि ये आख़िरत का भय नहीं रखते।⁴²

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ^{٤٥}

54. हरगिज़ नहीं। यह तो एक नसीहत है।⁴³

كَلَّا إِنَّهُ تَذْكِرَةٌ^{٤٦}

55. तो जिस का जी चाहे इस से नसीहत हासिल करे।

فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرَهُ^{٤٧}

56. और ये नसीहत हासिल नहीं कर सकते, मगर यह कि अल्लाह चाहे।⁴⁴ वह इस का अधिकार रखता है कि उस से डरा जाए⁴⁵ और वही इस का अधिकार रखता है कि क्षमा कर दे।⁴⁶

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ
وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ^{٤٨}

36. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अल-हक्क़: नोट ३२
 37. दुनिया में तो ये लोग खुदा, आखिरत, कुर्आन और रिसालत के बारे में तरह तरह की बहसें खड़ी करते रहे और दीन की बातों पर वे ढेरों आपत्तियाँ जड़ा करते थे किन्तु अपनी इस भारी ग़लती का एहसास उन्हें दोज़ख़ में पहुँच कर होगा।

38. अर्थात् मौत जिसका आना सुनिश्चित था और जो उन बातों को सामने ले आई जिन को देख कर विश्वास हुआ कि ये बातें सच्ची थीं।

39. ऊपर मुजरिमों का बयान समाप्त हुआ। अब अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि जिन लोगों ने अपराध का मार्ग अपनाया था वे सिफ़ारिश के सहारे हैं कि अगर आख़िरत बरपा हुई तो फ़लाँ की सिफ़ारिश से हम मुक्ति पा जाएंगे। हालाँकि सफलता एवं मुक्ति के लिए किसी की भी सिफ़ारिश काम न आ सकेगी। सफलता एवं मुक्ति का दारोमदार सिफ़ारिश पर नहीं बल्कि ईमान और अच्छे कर्मों पर है और ये लोग जब आख़िरत के इन्कारी हो कर अपराध पर अपराध किये जा रहे हैं तो उन के लिए सिफ़ारिश का दरवाज़ा बिलकुल बन्द होगा और जिन को उन्होंने ने अल्लाह के यहाँ अपना सिफ़ारिशी समझकर पूज्य बना लिया था वे उन की सिफ़ारिश के लिए सिरे से मौजूद ही नहीं होंगे।

40. अर्थात् जिस तरह वहशी गधे शेर से बिदक कर भाग जाते हैं उसी प्रकार ये नादान लोग पैग़म्बर की नसीहत से बिदक कर भाग रहे हैं। कुर्आन और उस के पैग़म्बर से उन का यह भागना सरासर उन की मूर्खता है।

41. अर्थात् ये लोग इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं कि अल्लाह ने अपनी किताब उस के रसूल पर उतारी है बल्कि वे यह चाहते हैं कि अगर अल्लाह को किताब उतारना ही है तो वह हम में से हर एक के हाथ में उस की एक एक प्रति दे दे। उन के नज़दीक रसूल की आवश्यकता ही नहीं। बल्कि अल्लाह सीधे सीधे हम को अपनी किताब प्रदान करे यह थी उन की अहं भरी बातें और उन का यह मुतालबा सरासर

नामाकूल था।

42. अर्थात् ऐसा नहीं है कि कुर्आन का अल्लाह की ओर से आना तथा उस का कलाम होना एक स्पष्ट वास्तविकता न हो और इस कारण से ये लोग उस से विमुखता बरत रहे हैं बल्कि इस से विमुखता बरतने का कारण यह है कि उन्हें आख़िरत की जवाबदेही का कोई एहसास नहीं है। वे इस से बिलकुल बेपरवाह हैं।

आख़िरत का डर कुर्आन के डरावे से पैदा होता है बशर्ते कि आदमी उस पर ध्यान दे। फिर जब आख़िरत का डर पैदा हो जाता है तो नसीहत की सारी बातें सुनना और उस पर कान धरना आसान हो जाता है। परन्तु जब आदमी अपने को खुदा के समक्ष जवाबदेह न समझे और आख़िरत का डरावा सुनाने के बावजूद उस का कोई असर न ले तो नसीहत भरी यह किताब उस पर कुछ भी असर नहीं कर सकती।

43. अर्थात् कुर्आन हरगिज़ जादू नहीं है बल्कि अल्लाह की तरफ़ से नसीहत और याददेहानी है।

44. अर्थात् अच्छी तरह जान लो कि तुम्हारा नसीहत हासिल करना भी अल्लाह की मर्ज़ी के तहत ही है अगर उस की मंशा न होती तो तुम नसीहत भी हासिल नहीं कर सकते थे। तुम्हें नसीहत हासिल करने का जो अधिकार प्राप्त है वह अल्लाह के प्रदान करने से प्राप्त है वरना तुम्हारा अपना सामर्थ्य और अपना अधिकार कुछ भी नहीं।

45. अल्लाह अपनी महिमा, अपनी बड़ाई और अपने पूज्य होने के कारण इस बात का अधिकारी है कि बन्दे उस से डरें और इन बातों का लिहाज़ करें और उस का तक्रवा अपनाएँ।

46. गुनाहों को क्षमा कर देने का अधिकार भी उसी के पास है। ज़ाहिर है जो पैदा करने वाला और पालन पोषण करने वाला है वही अपने बन्दों के गुनाहों को क्षमा कर सकता है उस के सिवा कोई नहीं जो गुनाहों को क्षमा कर सके। इस से ईसाइयों की इस धारना का खण्डन होता है कि हज़रत ईसा अपने मानने वालों के गुनाह क्षमा कर देंगे।



सूरह अल्-क्रियामः

७५. सूरह अल्-क्रियामः

नाम :- पहली आयत में क्रियामत के दिन की क्रसम खाई गई है और पूरी सूरह क्रियामत ही के विषय पर आधारित है इस लिए इस का नाम “अल-क्रियामः” है।

नाज़िल होने का समय :- इस के नाज़िल होने का समय मक्का का आरम्भिक दौर है।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत के बारे में जो संदेह व्यक्त किये जा रहे थे उन को दूर कर के उस का विश्वास पैदा करना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में क्रियामत का आना बिलकुल सुनिश्चित है इस बात को रखते हुए इस के बारे में व्यक्त किये जाने वाले संदेहों को दूर किया गया है।

आयत ७ से १५ में क्रियामत के कुछ चित्रण प्रस्तुत किये गए हैं।

आयत १६ से १९ का विषय व्यवहित वाक्य (जुमला-ए-

मोतरिजा) स्वरूप हैं। अर्थात् बातों के क्रम को रोक कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य ग्रहण करने से सम्बन्धित समय पर हिदायत दी गई है।

आयत २० से २५ इन्कार करने वालों को उन की दुनिया परस्ती पर सचेत करते हुए क्रियामत के दिन ज़ाहिर होने वाली सुकर्मियों की सफलता एवं खुशी तथा कुकर्मियों की असफलता एवं मुर्दानगी की एक झलक दिखलाई गई है।

आयत २६ से ३० में मौत का चित्रण प्रस्तुत किया गया है जो क्रियामत आने की पूर्व सूचना है।

आयत ३१ से ३५ में क्रियामत के इन्कारीयों के रवैये पर उन की भर्त्सना की गई है।

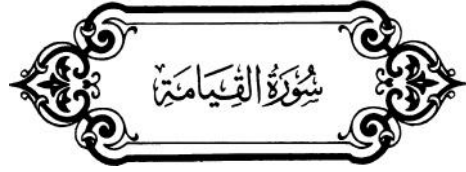
आयत ३६ से ४० में दोबारा ज़िन्दा किये जाने पर अकाट्य तर्क प्रस्तुत किया गया है।

७५.सूरह अल्-क्रियामः

आयतें :40

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. नहीं,¹ मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की।²
2. और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उलाहना देने वाले नफ़्स (आत्मा) की।³
3. क्या मनुष्य यह मसझता है कि हम उस की हड्डियों को जमा न कर सकेंगे।⁴
4. क्यों नहीं ? हम तो उस की पोर पोर तक ठीक बना देने पर समर्थ हैं।⁵
5. परन्तु मनुष्य चाहता है कि अपने आगे बुरे कर्म करता रहे।⁶
6. पूछता है कब आयेगा क़ियामत का दिन?
7. तो (सुन ले) जब आँखें चूँधिया जाएंगी ?⁷
8. और चाँद बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएगा।⁸
9. और सूरज और चाँद इकट्ठे कर दिए जाएंगे।⁹
10. उस रोज़ मनुष्य कहेगा कहाँ भाग कर जाऊँ ?¹⁰
11. नहीं, कहीं पनाह नहीं।¹¹
12. उस रोज़ तेरे रब ही की ओर ठिकाना होगा।¹²
13. उस रोज़ मनुष्य को बता दिया जाएगा कि उस ने क्या आगे भेजा, और क्या पीछे छोड़ा।¹³



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَقْسَمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝١

وَلَا أَقْسَمُ بِالنَّفْسِ الْكَوَامَةِ ۝٢

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ۝٣

بَلَىٰ قَدَرِينٌ عَلَىٰ أَنْ تُسَوَّىٰ بَنَانُهُ ۝٤

بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝٥

يَسْأَلُ أَتَىٰكَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝٦

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧

وَحَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُ ۝١٠

كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝١٢

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝١٣

1. क्रसम से पहले “ला” (नहीं) किसी ऐसी बात के खण्डन के लिए आता है जो उस बात के विरुद्ध जिस के लिए क्रसम खाई जा रही है। जैसे “ला वल्लाह” (नहीं-अल्लाह की क्रसम) ऐसे मौके पर कहा जाता है जब किसी व्यक्ति के किसी विचार का अथवा किसी बात का खण्डन करते हुए अपनी बात को ताक़ीद के साथ रखना अभिप्रेत हो।

2. इस आयत में क्रियामत का इन्कार करने वालों की उस धारणा का कि कर्म फल अर्थात् हिसाब किताब का दिन नहीं आएगा, खण्डन करते हुए क्रियामत के दिन को एक सत्य घटना के तौर पर प्रस्तुत किया गया है जिस का आना बिलकुल तय है। मतलब यह है कि तुम क्रियामत का कितना ही इन्कार करो उस का अस्तित्व में आना बिलकुल सुनिश्चित तथा एक अकाट्य सत्य है।

3. मनुष्य जब किसी बुराई या किसी गुनाह का अपराध करता है तो उस की आत्मा उस की निन्दा तथा उलाहना करने लगती है। मिसाल के तौर पर किसी के साथ अनुचित व्यवहार करने या उस पर अन्याय करने या झूठ बोलने या फुज़ूल खर्ची करने पर मनुष्य की आत्मा उस का ज़मीर आगर मुर्दा नहीं हो गया है तो उसे ज़रूर टोकता है कि ये काम तूने ग़लत किया और इस पर वह उसे बुरा भला कहता है। क़ाबिल ने अपने भाई हाबील को मार तो दिया किन्तु इस के बाद वह पछताया कि यह काम उसे नहीं करना चाहिए था। इस तरह आत्मा द्वारा बुराई पर उलाहना करना इस बात का प्रमाण है कि भलाई और बुराई में अन्तर करना मनुष्य की घुट्टी में पड़ा हुआ है। और वह अपने कर्मों के बारे में अपने प्रभु के समक्ष जवाबदेह है। बुराई कर चुकने पर वह दण्ड का भागीदार है और भलाई पर इनाम का। मानव ज़मीर की यह विशेषता कर्म फल के दिन का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। अगर इनाम और दण्ड का मामला पेश आने वाला न होता और मनुष्य अपने कर्मों के लिए ज़िम्मेदार न होता तो बुराई के करने पर उस का अन्तर्मन उस की उलाहना न करता और न किसी दूसरे व्यक्ति के जुल्म करने पर उस की आत्मा उस ज़ालिम की निन्दा करती।

4. क्रियामत का इन्कार करने वालों का बड़ा संदेश यह था कि जब मनुष्य का शरीर मरने के बाद सड़ गल जाता है और वह बोसीदा हड्डियाँ हो कर रह जाता है और हड्डियाँ भी बिखर जाती हैं तो फिर उन को किस तरह जमा कर के नये शरीर को विकसित किया जा सकेगा और उस को जीवित मनुष्य बनाया जाएगा? यह सन्देह वास्तव में अल्लाह की कुदरत का सही अन्दाज़ा न करने के कारण उत्पन्न हो रहा था। इस लिए संदेह को दूर करने के लिए यह प्रश्न किया गया कि क्या मनुष्य यह समझता है कि क्या हम उस की हड्डियाँ जमा करने पर समर्थ

नहीं है? ज़ाहिर है अल्लाह की कुदरत की यह सीमित सोच सरासर ग़लत है और यह चीज़ देखने में आती रहती है कि अल्लाह बिखरे हुए कणों व अंशों को जमा भी कर देता है और निष्प्राण वस्तु में प्राण भी फूँक देता है। फिर मुर्दा इन्सान के बिखरे कणों व अंशों को एकत्रित करना और उस को दोबारा जीवित करना उस के लिए क्या मुश्किल है।

5. अर्थात् हड्डियों को जमा कर के पुनः उस का ढाँचा खड़ा कर देने ही पर नहीं बल्कि मनुष्य के शरीर के एक एक अंश को यहाँ तक कि उस की उंगलियों के पोर तक जो बहुत नाजुक होते हैं दूसरी बार ठीक ठीक पैदा करने पर हम क़ादिर अर्थात् पूरी तरह सामर्थ्य हैं। मनुष्य का शरीर जैसा था वैसा ही उसे प्रदान किया जाएगा ताकि जिस शरीर से कर्म हुआ था वही शरीर कर्मानुसार इनाम या दण्ड पाये।

6. आर्थात् कर्मफल (हिसाब किताब) के दिन के इन्कार करने का मूल कारण यह है कि वह जो कुकर्म करता रहा है, आगे भी करता रहे और एक सुव्यवस्थित प्रणाली का पाबन्दी वाला जीवन उसे गुज़ारना न पड़े बल्कि वह स्वच्छन्द हो कर रहे। क्यों कि पाप एवं दुराचार में दुनिया की रंगीनी और लज़्ज़तें हैं जब कि ईश-भय का जीवन बड़ा ही रुखा सूखा तथा फीका है।

7. सवाल क्रियामत की तारीख के बारे में था किन्तु जवाब में क्रियामत का चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। क्यों कि जिस तरह मौत का आना सुनिश्चित है जब कि उस की तारीख किसी को नहीं मालूम होती उसी तरह क्रियामत का आना भी सुनिश्चित है यद्यपि इस की तारीख सिवाय अल्लाह के किसी को नहीं मालूम। इस लिए असल बात जिस की चिन्ता प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए यह है कि जब क्रियामत आएगी तो यह घटना कितनी प्रचण्ड होगी और उस रोज़ आदमी किस तरह बच सकेगा? कुर्आन ने जवाब में इसी बात की ओर ध्यान दिलाया है।

क्रियामत जब बरपा होगी तो उस की हौलनाकियाँ ऐसी जोरदार होंगी कि मनुष्य उन को देखने की ताब न ला सकेगा। सूरह इब्राहीम आयत ४२ में भी यह मज़मून गुज़र चुका कि :-

أَنَّمَا يُجْرُؤُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ - (إبراهيم: ४२)

अर्थ :- “वह तो उन को उस दिन तक के लिए मोहलत दे रहा है जब आँखें फटी की फटी रह जाएंगी।”

8. क्रियामत के दिन चूँकि सूरज की चादर लपेट दी जाएगी जैसा कि सूरह तकवीर में इर्शाद हुआ है :-

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ

अर्थ :- “जब सूरज लपेट दिया जाएगा”

तो चाँद बेनूर हो कर रह जाएगा गोया कि उसे ग्रहण लग गया है।

9. इस समय चाँद और सूरज अपने अपने मार्ग पर हैं किन्तु क्रियामत जब बरपा होगी तो यह संतुलन बाक़ी नहीं रहेगा। सूरज और चाँद दोनों इकट्ठे हो जाएँगे। उन के इकट्ठा होने की क्या सूरत होगी, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

10. अर्थात् आज तो मनुष्य क्रियामत के बारे में अनावश्यक सवालों में उलझ रहा है किन्तु क्रियामत जब सामने आन प्रकट

होगी तो मनुष्य उस की हौलनाकियों को देख कर भागना चाहेगा।

11. परन्तु भागने के लिए उसे कोई शरण स्थल न मिल सकेगा।

12. अर्थात् अल्लाह के समक्ष पेशी होगी।

13. आगे भेजने से तात्पर्य मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्म हैं जिन का फल आखिरत में सामने आएगा। और पीछे छोड़ने से तात्पर्य वे कर्म हैं जो उसे दुनिया में करने चाहिए थे किन्तु उस से नहीं किए। और आखिरत के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने से कासिर (नाकाम) रहा ।



वास्तव मनुष्य स्वयं अपने ऊपर हुज्जत है। चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (ऐ नबी !) इस (कुआन) को जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़बान को हरकत न दो। इस को जमा करा देना और पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है। तो जब हम इसे पढ़ चुके तो तुम इस के पढ़ने का अनुसरण करो। फिर इसे स्पष्ट करना हमारे ज़िम्मे है। हरगिज़ नहीं। बल्कि तुम शीघ्र प्राप्त होने वाली दुनिया से मुहब्बत करते हो। (अल-कुआन)

14. वास्तव मनुष्य स्वयं अपने ऊपर हुज्जत है।¹⁴
15. चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे।¹⁵
16. (ऐ नबी !) इस (कुर्आन) को जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़बान को हरकत न दो।¹⁶
17. इस को जमा करा देना और पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है।¹⁷
18. तो जब हम इसे पढ़ चुके तो तुम इस के पढ़ने का अनुसरण करो।¹⁸
19. फिर इसे स्पष्ट करना हमारे ज़िम्मे है।¹⁹
20. हरगिज़ नहीं।²⁰ बल्कि तुम लोग शीघ्र प्राप्त होने वाली दुनिया से मुहब्बत करते हो।²¹
21. और आखिरत को छोड़ देते हो।
22. उस रोज़ कितने चेहरे तर-व-ताज़ा होंगे।²²
23. अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे।²³
24. और कितने चेहरे उस दिन उदास होंगे।²⁴
25. वे समझ रहे होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ मामला होने वाला है।²⁵
26. हरगिज़ नहीं,²⁶ जब जान हँसली तक पहुँच जाएगी।²⁷
27. और कहा जाएगा है कोई झाड़ फूँक करने वाला ?²⁸
28. और वह समझेगा कि यह जुदाई का समय है।²⁹
29. और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी।³⁰

- بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَى نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۚ (١٣)
- وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرَهُ ۚ (١٥)
- لَا تُخْرِكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۚ (١٦)
- إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۚ (١٧)
- فَإِذَا قُرَأَتْهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۚ (١٨)
- نُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (١٩)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٠)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢١)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٢)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٣)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٤)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٥)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٦)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٧)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٨)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٢٩)
- وَنُفِّرَنَّ عَنْكَ سَائِرَ ذُنُوبِهِ ۚ (٣٠)

14. अर्थात् मनुष्य अपने आप पर हुज्जत है। उस की अन्तरात्मा पुकार पुकार कर कहती है कि वह एक नैतिक दायित्व वाली सृष्टि है। भलाई और बुराई दोनों के प्रभाव एवं परिणाम अलग अलग हैं। और यह कि वह अपने ख के समक्ष अपने कर्मों के लिए जवाबदेह है। बाह्य दलीलों एवं साक्ष्यों से अलग मनुष्य के अपने मन की आन्तरिक गवाही कर्मफल अर्थात् हिसाब के दिन की ऐसी गवाही है जिस से इन्कार किसी मनुष्य के लिए भी संभव नहीं।

15. अर्थात् इनाम और दण्ड से इन्कार के लिए मनुष्य बहुत से बहाने बना सकता है और बहुत कुछ गोल मोल बातें कर सकता है किन्तु इनाम और दण्ड का मामला उस पर बिलकुल स्पष्ट है क्योंकि उस की प्राकृति की रौशनी इसी वास्तविकता की ओर रहनुमाई करती है।

16. आयत १६ से १९ व्यवहित वाक्य (जुमला-ए-मोतरिजा) के तौर पर हैं अर्थात् चल रही बात के क्रम को रोक कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सही समय पर एक हिदायत दी गई है। आप जैसा कि बुखारी की रिवायत है जिब्रील अलैहिस्सलाम से वहय हासिल करने में जल्दी करते और आयतों को अपनी ज़बान से दोहराते ताकि कोई भूल न हो। इस अवसर पर आप को हिदायत दी गई कि वहय याद करने के लिए जल्दी करने की ज़रूरत नहीं है। जिब्रील की ज़बान ने वहय को पहले पूरी तरह सुन लें। इस के बाद उस को दोहराएँ। इस तरह आप को इत्मीनान दिलाया गया कि वहय के मामले में कोई भूल आप से नहीं होगी क्योंकि कुआन को आप के सीने में सुरक्षित करा देने का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने ले रखा है।

बातों के एक चलते हुए क्रम में दूसरी बात का ज़िक्र अटपटा मालूम होता है किन्तु संबोधन में जब मौक़े के लिहाज़ से कोई दूसरी बात कही जाती है तो उस का कोई असर बातों के क्रम तथा प्रवाह पर नहीं पड़ता। इमाम राजी ने इस बात को बड़ी अच्छी मिसाल से स्पष्ट किया है। वे फ़रमाते हैं कि एक उस्ताद जब अपने एक शागिर्द को सबक़ पढ़ा रहा हो और शागिर्द इधर उधर देखने लगे तो उस्ताद पढ़ाने के बीच में उस से कहता है कि 'इधर उधर न देख' और फिर सबक़ पढ़ाता है। अब अगर यह सबक़ उस व्यवहित वाक्य के साथ उद्धृत किया जाए तो व्यवहित वाक्य का कारण जिस को मालूम नहीं होगा वह सबक़ के बीच इस बात को अनुचित समझेगा किन्तु जिस को वास्तविकता मालूम हो वह इस कलाम को अच्छी तरतीब समझेगा।" (अन्तफ़सीरुल कबीर जिल्द २९ पृष्ठ २२३)

और वास्तविकता यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को वहय के बीच में यह हिदायत कि आप उस को ग्रहण करने में जल्दी न करें कुआन के अपने असली रूप में मौजूद होने का सबूत है कि अगर किसी बात के कर्म को काट कर कोई बात अल्लाह तआला ने इराशाद फ़रमाई है तो वह भी ज्यों की त्यों कुआन में रख दी गई है। यदि कुआन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिखा हुआ होता तो उस में यह बातें मौजूद न होतीं।

17. जमा कर देने से तात्पर्य कुआन की आयतों और सूरों का संकलन है अच्छी तरतीब के साथ। और पढ़ा देने से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से उस को सही अदायगी के साथ अदा कर देना है। इन दोनों बातों का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने लिया था। अतः कुआन जिस किताबी रूप में हमारे सामने मौजूद है वह अल्लाह ही का तरतीब दिया हुआ है। और कलाम की स्वयं गवाही यही है कि यह अल्लाह ही का लेखन एवं संकलन है। क्योंकि कलाम की तरतीब पर गौर करने से कितने ही भेदों पर से परदे उठते हैं।

मौजूदा ज़माने में कुछ आधुनिक वादियों ने कुआन को उस के अवतरण क्रम के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की है परन्तु वे उस में बुरी तरह नाकाम हैं। क्योंकि अवतरण क्रम को पूरे विस्तार एवं विश्वास के साथ जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है और न इस की ज़रूरत है। और जब अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत एवं नीती के अनुसार अपनी किताब को अवतरण क्रम के बजाए एक दूसरी तरतीब के साथ पेश किया है तो किसी को क्या हक़ कि वह उस की तरतीब को बदल दे।

यहाँ इस ग़लतफ़हमी का भी निदान हो जाना चाहिए कि कुआन को पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने या तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि. ने जमा किया था वरना इस से पहले वह एक संकलित ग्रंथ के रूप में मौजूद न था। वास्तविकता यह है कि कुआन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने ही में अल्लाह के निर्देशानुसार संकलित हो गया था अतः नमाज़ में उसी तरतीब के साथ सूरतें और आयतें पढ़ी जाती थीं और हदीस में आता है कि रमज़ान में हज़रत जिब्रील नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात फ़रमाते और आप के साथ कुआन का दौर करते (बुखारी किताबुल वहय) यह दौर ज़ाहिर है एक संकलित किताब ही का हो सकता है। हज़रत अबू बक्र ने जो ख़िदमत अन्जाम दी वह यह थी कि कुआन के जो अंश विभिन्न वहय लिखने वालों के पास मौजूद थे उन को उन्होंने ने जमा करा दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुआन का जो हिस्सा लिखवाते रहे वे कई सहाबा के पास मौजूद थे। इन लिखे हिस्सों को जमा

करने का काम हज़रत अबू बक्र ने कुछ सहाबा के सुपुर्द किया और उन्होंने ने उन को जमा किया और आयतों और सूक्तों की तरतीब वही रखी जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से चली आ रही थी। दूसरे शब्दों में कुर्आन इसी तरतीब के साथ जो चल रहा है हाफ़िज़ों के सीने में महफूज़ था और नमाज़ में इसी तरह पढ़ा जाता था। अलबत्ता इस की किताबत शुदा (लिखित) हिस्सों को मुस्हफ़ (ग्रंथ) के रूप में जमा करने का काम हज़रत अबू बक्र ने अन्जाम दिया। रही बात हज़रत उस्मान के कुर्आन को जमा करने की तो वह इस तरह से थी कि उन्होंने ने कुरैश के अरबी उच्चारण का लिहाज़ करते हुए मुस्हफ़ की किताबत कराई और उसे प्रचलित कर दिया। कुर्आन के कुछ शब्दों का उच्चारण कुछ क़बीलों में अलग अलग था जिस से अर्थ का कोई अन्तर नहीं होता था किन्तु उन के दौर में जब ग़ैर अरब लोगों की अधिकता हो गई तो शब्द उच्चारण का यह विभेद एक समस्या बन गई। इस लिए हज़रत उस्मान ने उन के फ़रक को मिटाया और एक ही क़िर्अत पर सब को जमा कर दिया और उस के अनुसार कुर्आन की प्रतियाँ तैयार कर के उन के कार्य को व्यवहारिक स्वरूप दिया। उच्चारण के अन्तर का उदाहरण शब्द “मुसैतिर” है जो सूरह “गाशियः” आयत २२ में आया है। इस का उच्चारण “सौद” से भी किया जा सकता है और “सीन” से भी। इसी लिए इस शब्द के ऊपर छोटा सीन लिख दिया जाता है मगर इस से भावार्थ में कोई अन्तर नहीं आता। दोनों का अर्थ एक ही है अर्थात् जबर करने वाला।

18. वहय यद्यपि हज़रत जिब्रील ले कर नाज़िल होते थे किन्तु कलाम चूँकि अल्लाह तआला का था इस लिए जिब्रील की क़िर्अत को अल्लाह तआला ने अपनी क़िर्अत कहा। आयत का मतलब यह है कि जब जिब्रील वहय नाज़िल कर चुकें तब ऐ नबी तुम इस की क़िर्अत करो।

19. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अतिरिक्त इत्मीनान की बात कही गई कि आयत का मतलब स्पष्ट करना भी अल्लाह के ज़िम्मे है अतः इस पहलू से भी फ़िक्र की कोई बात नहीं। अतः कुर्आन में कितनी आयतें ऐसी हैं जो स्पष्टीकरण स्वरूप उतरी हैं तथा आप पर कुर्आन के अलावा भी वहय नाज़िल हुई थी जिस में तफ़्सीली अहकाम आदि दिए गए हैं जो सही हदीसों में सुरक्षित हैं।

20. यहाँ से बातों का क्रम फिर अपने मूल विषय की ओर मुड़ जाता है। हरगिज़ नहीं का मतलब यह है कि तुम लोग हिसाब के दिन का इन्कार इस कारण नहीं करते कि इस की दलील स्पष्ट नहीं है।

21. इनाम और दण्ड अर्थात् कर्मफल की तार्किकता तो

तुम्हारी अपनी प्रकृति वा अपने स्वभाव से भी झलकती है किन्तु तुम्हारे इन्कार का मूल कारण दुनिया से लगाव और शीघ्र प्राप्त होने वाले लाभ हैं। तुम समझते हो कि आखिरत के लाभ उधार खाते में से हैं और उधार की खातिर नगद लाभ को कौन छोड़े लेनिक यह नहीं सोचते कि दुनिया का लाभ बहुत ही तुच्छ और अस्थायी है जब कि आखिरत का लाभ बहुत बड़ा और स्थायी है।

22. यह हिसाब किताब के दिन पर ईमान ला कर नेक अमल करने वाले के चेहरे होंगे।

23. इस आयत का स्पष्ट भावार्थ यही है कि क्रियामत के दिन सफल होने वाले लोग अपने प्रभु के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर रहे होंगे। हदीस से भी इस का समर्थन होता है। बुखारी की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

إِنكُمْ سَتَرُونَ رَبَّكُمْ عَيْنًا. (بخاری کتاب التوحید)

अर्थ :- “तुम बहुत जल्द अपने रब को खुली आँखों से देख लोगे।” (बुखारी किताबुत-तौहीद)

और इस सिलसिले में दूसरी हदीसों भी वारिद हुई हैं। और अल्लामा इब्ने कसीर ने कई हदीसों नक़ल कर के लिखा है कि अल्लाह को देख लेना ईमान वालों को क्रियामत के दिन नसीब होगा इस मसले पर सहाबा, ताबईन और इस उम्मत के बुज़ुर्गों का इत्तिफ़ाक़ है तथा इमाम हज़रात के बीच भी यह सर्वमान्य बात है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ४५०)

24. यह काफ़िरों के चेहरे होंगे और अपने जुर्म के कारण उन पर उदासी छाई हुई होगी।

25. अर्थात् उन को कड़ी सज़ा मिलने वाली है जो उन की कमर तोड़ कर रख देगी। दूसरे शब्दों में असहनीय मुसीबत उन पर टूट पड़ेगी।

26. अर्थात् तुम लोगों का यह समझना कि आदमी मर कर बिलकुल मिट जाता है, हरगिज़ सही नहीं मौत के बाद शरीर तो सड़ गल जाता है किन्तु रुह (आत्मा) बाकी रहती है और शरीर से जुदा होते ही अपने रब की तरफ़ चली जाती है।

27. यह प्राण निकलने की दशा का चित्रण है जो पेश किया गया है ताकि इन्सान में यह एहसास पैदा हो कि उसे बहरहाल एक दिन मरना है और अपने प्राण, प्राण देने वाले के सुपुर्द करना है।

28. लोग जब किसी मरीज़ को अन्तिम क्षणों में देख लेते हैं और इलाज आदि से निराश हो चुके होते हैं तो झाड़ फूँक करने वाले को बुलाते हैं ताकि इस तरह से उसे कुछ फ़ायदा

हो। परन्तु जब मौत का समय आ जाता है तो कोई तदबीर कारगर नहीं होती। चूँकि अरबों में झाड़ू फूँक का प्रचलन था इस लिए इस का विशेष रूप से हवाला दिया गया। स्पष्ट रहे कि इस्लाम ने झाड़ू फूँक को जिस में बहुदेववादी मंत्र पढ़े जाते हैं। हराम और ग़लत बताया है और रोग से मुक्ति पाने के लिए दुआ करने की शिक्षा दी जिस में तौहीद का इक्रार और अल्लाह पर विश्वास व्यक्त किया गया हो।

29. अर्थात् आदमी को विश्वास हो जाएगा कि इस के दुनिया से रुख़सत होने का समय आ पहुँचा है।

30. यह उस की बेबसी का नक़शा है। अपने जिन पैरों के द्वारा वह अपनी गतिविधियाँ किया करता था वह मौत के समय इतनी कमज़ोर हो जाती हैं कि एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाती है।



30. उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होगा।³¹

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۖ

31. परन्तु उस ने न सच्चाई को स्वीकार किया और न नमाज़ पढ़ी।³²

فَلَا صَدَقَ وَلَا وُصِّلَ ۖ

32. बल्कि झुठलाया और मुँह मोड़ा।³³

وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

33. फिर अकड़ता हुआ अपने घर वालों की तरफ़ चल दिया।³⁴

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۖ

34. अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है !³⁵

أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوَّلَىٰ ۖ

35. फिर अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है !

ثُمَّ أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوَّلَىٰ ۖ

36. क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा ?³⁶

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۖ

37. क्या वह वीर्य की एक बूँद न था जो (गर्भ में) डाली जाती है।³⁷

أَلَمْ يَكُ نَظْفَةً مِّن مَّيْنِي يُمْنَىٰ ۖ

38. फिर वह अलक्रा (लोथड़ा) हुआ ।³⁸ फिर (अल्लाह ने)उस का शरीर बनाया और उसे दुरुस्त किया ।³⁹

ثُمَّ كَانَ عَاقَةً فَخَلَقَ فَسْوَىٰ ۖ

39. फिर⁴⁰ उस से जोड़ा बनाया मर्द और औरत।⁴¹

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۖ

40. क्या वह इस पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे ?⁴²

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۖ

31. अर्थात् रूह शरीर से निकल कर के अपने रब के पास पहुँच जाएगी। तात्पर्य यमलोक में पहुँचना है जो काफ़िरों की रुहों के लिए एक तरह का कैद खाना है।

32. अब उस व्यक्ति के व्यवहारिक जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है कि वह दुनिया से रुखसत हो रहा है। कर्म फल के दिन की सच्चाई को उस ने सच नहीं माना था और न अल्लाह की इबादत से उसे कोई सरोकार था अतः उस ने नमाज़ जैसे महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य कर्तव्य से विमुखता बरती।

स्पष्ट हुआ कि बदले के इस दिन पर ईमान लाने का पहला तकाज़ा यह है कि आदमी नमाज़ पढ़े और कुर्आन काफ़िरों का हाल यह बताता है कि वे नमाज़ को छोड़ने वाले होते हैं। किन्तु मौजूदा दौर में मुसलमानों की भारी तादाद बे नमाज़ी है। यदि वे कुर्आन की इन आयतों को ग़ौर से पढ़ें तो चौंक जाएँ और नमाज़ की उन्हें तौफ़िक़ हो।

33. झुठलाया आख़िरत को और मुँह मोड़ा अल्लाह की इबादत और अनुपालन से।

34. अर्थात् यह उस का घमण्ड है जो सत्य स्वीकारने से उसे रोक रहा है। ऐसा व्यक्ति नसीहतों का कोई असर नहीं लेता बल्कि उस से मुँह मोड़कर अकड़ता हुआ अपने घर वालों की तरफ़ चल देता है और अपनी खुशहाली पर गर्व स्वरूप मग्न होता है।

35. **أُولَىٰ لَكَ** जैसा कि जौहरी ने स्पष्टीकरण किया है कि सावधान करने तथा चेतावनी देने वाला शब्द है। असल में यह **وَلَىٰ** (वलिय) से है जिस का अर्थ करीब होने के हैं। अस्मई कहते हैं इस का अर्थ है विनष्ट करने वाली चीज़ करीब हो गई

अर्थात् मुसीबत नाज़िल हो गई।

(अस्सिहाह लिलजौहरी जिल्द ६ पृष्ठ २५३०)

इन दो आयतों में उस व्यक्ति के इस रवैयो पर अफ़सोस पर अफ़सोस ज़ाहिर किया गया है। यह शब्द चार बार आया है जो इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि यदि ऐसे व्यक्ति के लिए विनाश पर विनाश है। दुनिया में भी विनाश और यमलोक में भी विनाश फिर हश्र के मैदान में भी विनाश और अन्तिम परिणाम जहन्नम जहाँ हमेशा के लिए मरते रहना है।

36. व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिनून नोट १०२

37. अर्थात् मनुष्य का घमण्ड और दूसरे जीवन से उस का इन्कार किस आधार पर है? वह अपनी इस वास्तविकता को भूल जाता है कि वह वीर्य की एख़ तुच्छ बूँद था जिसे गर्भ में डालने की क्रिया आदमी ने की इस के बाद अल्लाह तआला ने उस की रचना विभिन्न चरणों से गुज़ार कर की।

38. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ९ और सूरह मोमिनून नोट १४

39. अर्थात् खून के जमे थिक्के को मानव शरीर की आकृति दी और फिर उस की नोक पलक ठीक की।

40. अर्थात् इस के अलावा ।

41. जोड़ा बनाना इस बात की स्पष्ट दलील है कि उस के रचयिता ने उस को हिकमत और मसलहत और एक योजना के साथ पैदा किया है। अतिरिक्त व्याख्या के लिए देखिए सूरह नबा नोट ६

42. अर्थात् जिस के विचित्र चमत्कारों तथा असीम कुदरत की शान यह हो उस के लिए मुर्दों को ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है?





७६. सूरह अल्-इन्सान

नाम :- पहली आयत में मनुष्य की उस हालत का वर्णन हुआ है जब वह कुछ भी न था। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-इन्सान है। इस का दूसरा प्रसिद्ध नाम “अद् दहर” (ज़माना) भी है। इस मुनासिबत से कि यह शब्द पहली आयत में आया है। जैसा कि हम स्पष्ट कर चुके हैं सूरतों के नाम विषय के लिहाज़ से नहीं बल्कि प्रतीक शब्दों (Significant Words) की मुनासिबत से पहचान के लिए होते हैं।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरु दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कर्मफल ईनाम और दण्ड है किन्तु ईनाम का पक्ष उभरा हुआ है ताकि उन अनन्त ईनामों को प्राप्त करने को लोग उत्सुक हों और वे सदाचारी वा सुचरित्र बनें।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में मनुष्य की संरचना और उस का उद्देश्य बयान किया गया है।

आयत ४ में काफ़िरों के लिए सख्त सज़ा का एलान है। आयत ५ से २२ में सुकर्मियों का भव्य सिला बयान हुआ है।

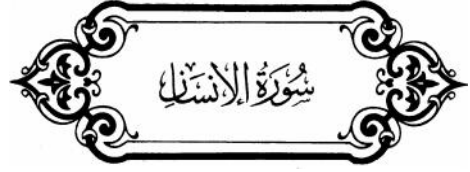
आयत २३ से २६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सब्र, नमाज़ और तस्बीह अर्थात् उस की पाकी बयान करने की हिदायत की गई है।

आयत २७ और २८ में उन लोगों को जो दुनिया पर लट्टू हो चुके हैं और आखिरत को नज़रंदाज़ करते हैं सचेत किया गया है।

आयत २९ से ३१ में कुर्आन की नसीहत को स्वीकार करने को उभारा गया है ताकि लोग अल्लाह की रहमत में दाखिल हों। किन्तु जो लोग इन्कार पर अड़े रहेंगे उन्हें दुखदायिनी यातना का डरावा सुनाया गया है।

७६.सूरह अल्-इन्सान

आयतें : 31



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या इन्सान पर ज़माना-ए-मदीद में (दीर्घ काल का) एक समय ऐसा नहीं गुज़रा जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था? ¹
2. हम ने इन्सान को एक मिले जुले वीर्य से पैदा किया।² ताकि उसे आजमाएँ, अतः हम ने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।³
3. हम ने उस को राह दिखा दी।⁴ चाहे वह कृतज्ञ बने या कृतघ्न।⁵
4. काफ़िरों के लिए हम ने जंजीरे और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है।⁶
5. नेक लोग ऐसी शराब के जाम पीयेंगे जिस में काफ़ूर का मिश्रण होगा।
6. यह एक स्रोत होगा ⁸ जिस से अल्लाह के बन्दे पियेंगे ⁹ और उस की शाखाएँ (जहाँ चाहेंगे) निकाल लेंगे।¹⁰
7. ये लोग अपनी नज़रें पूरी करते हैं ¹¹ और उस दिन से डरते हैं जिस की मुसीबत हर तरफ़ फैली हुई होगी।
8. और उस की मुहब्बत में मस्कीन यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं।¹²
9. हम तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ख़िलाते हैं, न तुम से बदला चाहते हैं और न शुक्रिया।¹³

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ①

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ②

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ③

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا وَسَعِيرًا ④

إِنَّ الْإِبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِّنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ⑤

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ⑥

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ⑦

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ⑧

إِنَّمَا نُنْطَعِمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَنَرْيِدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَشُكْرًا ⑨

1. मनुष्य ने ज़मीन पर जब से आँखें खोली हैं वह उच्चता और कमाल के जौहर दिखा रहा है। गोया ज़मीन पर इन्सानी आबादी का यह दौर पिछले दौर के मुकाबले में कुछ प्रमुखता रखता है और मनुष्य अपनी इस सांसारिक प्रगति पर गर्व करता है किन्तु अपने अतीत पर ग़ौर नहीं करता कि वह शुरू में क्या था और उस के सृष्टा ने उसे क्या बना दिया। एक समय यह था जब कि मनुष्य सड़ी हुई मिट्टी में ढल रहा था और सड़ी हुई मिट्टी कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं थी। फिर आदम की सृष्टि के बाद उस के वंश का क्रम वीर्य से जो पानी की अत्यंत तुच्छ बूँद होती है चलाया गया। प्रत्येक व्यक्ति पर एक समय गुज़र चुका होता है जब कि वह एक ऐसी चीज़ था जो न तो उल्लेखनीय थी और न ही उस की कोई क्रीमत थी। क्या मनुष्य का यह अतीत और उस की यह हक़ीक़त इस बात की याददेहानी नहीं है कि उस के ख़ब ने अपनी कुदरत के करिश्मे से तुच्छ को उच्च बना दिया।

2. वीर्य अपने आप में मिश्रित होता है अर्थात् उस में कई प्रकार के द्रव्य पदार्थ होते हैं और अधुनिक शरीर विज्ञान (Physiology) के अनुसार एक द्रव्य पदार्थ (Liquid) वह होती है जिस में जीवनी शुक्राणु, (Spermatozoon) होते हैं और ये शुक्राणु अंडकोष से निकल कर शुक्राणु कोष (Seminal Vesicles) में जमा हो जाते हैं और तीसरा द्रव्य पदार्थ प्रोटेस्टेट गलैंड (Prostate gland) की होती है जो उस में ख़ास तरह की गंध पैदा करती है और चौथा द्रव्य पदार्थ वे ग्रन्थियाँ (Glands) पैदा करती हैं जो पेशाब की नलिका के पास होते हैं और उसे लसदार बनाते हैं। वीर्य इन सब द्रव्य पदार्थों से मिश्रित होता है। फिर जब यह वीर्य गर्भ में अण्डाणु (Ovum) से मिल जाता है तो (Fertilized) (उर्वरण) हो जाता है अर्थात् गर्भ ठहर जाता है। इस तरह मनुष्य की पैदाइश की शुरुआत पुरुष और स्त्री के वीर्य के मिलाप होने की सूरत में होता है।

3. अर्थात् मनुष्य की पैदाइश इस लिए हुई है ताकि उस की परीक्षा ली जाए। इसी लिए उस को सुनने और देखने की शक्ति प्रदान की गई है। इन शक्तियों ने उसे सूझ बूझ रखने वाली सृष्टि बना दिया है और उसे यह विवेक भी प्रदान किया है कि वह अच्छाई और बुराई में अन्तर करे।

4. अर्थात् हम ने उस पर हिदायत की राह स्पष्ट कर दी। प्रकृति की रहनुमाई के द्वारा भी, जगत में फैली हुई निशानियों के द्वारा भी और रसूल तथा वह्य के द्वारा भी।

5. अब उस की मर्जी पर है कि अल्लाह का शुक्रगुजार बन्दा (कृतज्ञ) बने या नाशुक्रा और काफ़िर बने। जब उद्देश्य यही ठहरा कि मनुष्य की परीक्षा लेनी है तो उस को अपनी मर्जी

के अनुसार कृतज्ञ या कृतघ्न बनने की आज़ादी भी प्रदान की गई।

6. काफ़िर बनने का इस्तिहार तो दिया गया है किन्तु जो लोग काफ़िर बनेंगे वे याद रखें कि वे परीक्षा में असफल हुए। उन्होंने ने अपनी इच्छाओं के पीछे चल कर ग़लत रास्ते का चुनाव किया इस लिए आखिरत में कड़े दण्ड के भागीदार होंगे। वे ज़न्जीरों में जकड़ दिए जाएंगे। तौक़ उन के गले में पड़े होंगे और वे भड़कती आग में झोंक दिए जाएंगे। कैसी दुखदायिनी यातनाएँ हैं अल्लाह की हिदायत से मुँह मोड़ने वालों के लिए।

7. अबरार “बर्र” का बहुवचन है और यह शब्द “बुर्रन” से है जिस का मतलब सच्चाई वफ़ादारी, और अनुपालन है। जिस व्यक्ति की यह विशेषता हो उस को उर्दू में नेक कहते हैं। आयत का संदर्भ दलील है कि अबरार से तात्पर्य अल्लाह के वे नेक बन्दे हैं जो उस के कृतज्ञ और अनुज्ञा करने वाले बन कर रहे और जिन्होंने ने आखिरत को मक़सद बना कर सुक़्मी जीवन गुज़ारा।

8. काफ़ूर जन्नत में एक स्रोत होगा जिस को दुनिया के काफ़ूर के अनुरूप समझा नहीं जा सकता। अलबत्ता उस के बारे में कुछ इस तरह कल्पना होती है कि वह सफ़ाई और ठंडक में काफ़ूर की तरह होगा तथा उस की खुशबू और उस का स्वाद ऐसा होगा कि पीने वाले उस से आनन्दित हो उठेंगे। उस की थोड़ी सी मात्रा ही शराब को अति स्वादिष्ट बनाने के लिए काफ़ी होगी इस लिए शराब के जाम में उस का मिश्रण होगा।

9. “इबाद” से तात्पर्य अल्लाह के सच्चे बन्दे हैं।

10. अर्थात् यह आवश्यक नहीं होगा कि वे उस स्रोत पर आएँ और फिर उस से लाभान्वित हों बल्कि यह बात उन के अधिकार में होगी कि वे जहाँ चाहें उस स्रोत को जारी कर लें।

11. नज़्र यह है कि आदमी अपने ऊपर अल्लाह को ख़ुश करने के लिए कोई काम वाजिब कर ले। जैसे कि किसी ख़ुशी या किसी नेमत के मिल जाने पर आदमी यह प्रण करे कि मैं इतने रोज़े रखूंगा या मन्नत माने कि अगर रोग से मुक्ति मिली तो इतना धन सदक़ा करूँगा, ऐसी नज़्र का पूरा करना वाजिब है और उस को पूरा कर के ही आदमी अपनी सच्चाई और नेक होने का सबूत दे सकता है।

12. इस्लाम ने नज़्र मानने पर उभारा नहीं है। मुग़नी में है:-

وَلَا النَّذَرَ لَوْ كَانَ مُسْتَحَبًّا لَفَعَلَهُ النَّبِيُّ
ﷺ وَأَفْاضِلُ أَصْحَابِهِ. (المغنی ج १ ص १)

अर्थ :- “और इस लिए कि नज़्र अगर मुस्तहिब होती है तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और प्रतिष्ठित सहाबा उस पर

अमल करतो” अल-मुगनी जिल्द ९ पृष्ठ १)

और फ़िक्रहुस्सुन: में है

وَالْإِسْلَامُ وَإِنْ كَانَ قَدْ شَرَعَهُ إِلَّا أَنَّهُ
لَا يَسْتَحِبُّهُ، فَعَنْ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ
نَهَى عَنِ النَّذْرِ وَقَالَ ! إِنَّهُ لَا يَأْتِي بِخَيْرٍ وَإِنَّمَا
يُسْتَخْرَجُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ
وَمُسْلِمٌ. (فتاوى للسيد سابق ج ३ ص ३५)

अर्थ :- “इस्लाम ने यद्यपि नज़्र को जायज़ करार दिया है किन्तु मुस्तिहब (पसंदीदा) नहीं है। इन्ने उमर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नज़्र मानने से मना फ़रमाया है और फ़रमाया वह किसी ख़ैर (भलाई) का कारण नहीं है अलबत्ता इस के द्वारा कुछ धन कंजूसों से निकलवाया जाता है।” (फ़िक्रहुस्सुन्न: लिस्सैय्यद साबिक जिल्द ३ पृष्ठ ३५)

और यह भी सत्य है कि शरीअत के आदेशों की पूर्ति के बाद नज़्र के लिए कम ही गुन्जाइश रह गई है क्यों कि इन आदेशों की पाबन्दी अनिवार्य और सर्वोपरि है। तथा नफ़ल नमाज़ और सदक़े भी बिना किसी रोक टोक के अदा किये जा सकते हैं। फिर नज़्र की सूरत में अपने ऊपर कुछ चीज़ें वाजिब करना अपने को मुश्किलों ही में डालना है। इस लिए इस्लाम ने नज़्र मानने को उभारा नहीं। अलबत्ता यदि कोई व्यक्ति नज़्र मान ले तो उस को पूरा करने का ताकीदी हुक्म दिया गया है।

ध्यान रहे कि नज़्र इबादत है इस लिए अल्लाह ही के लिए

नज़्र मानी जा सकती है। किसी और के नाम की नज़्र (मन्नत) मानना चाहे वे देवी देवता हो या पीर और वली, शिर्क है।

12. अर्थात् अल्लाह की मुहब्बत में वे निःसहायों की सहायता करते हैं, हाजतमन्दों को खाना खिलाना तथा उन की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करना है। इस लिए इस का वर्णन विशेष रूप से किया गया है वरना उन को कपड़े पहनाना, उन की देख रेख, दवा आदि और बेघर होने की सूरत में उन के रहने सहने की व्यवस्था करना सब नेकी के काम हैं और ज़रूरी भी।

उस ज़माने में कैदियों के लिए आजकल की तरह कैद खाने नहीं होते थे जहाँ खाने का भी प्रबन्ध हो इस लिए उन को खाना खिलाने को ख़ास तौर से उभारा गया इस से ऊपर उठ कर कि वे मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम और जंगी कैदी हों या किसी जुर्म में गिरफ़्तार कर लिए गए हों। नैतिकता और मानवता का तक्राज़ा है कि उन की भूख की अवस्था को दूर किया जाए और उन के लिए खाना मुहैया किया जाए।

13. अर्थात् वे उन मोहताजों की मदद इस लिए नहीं करते कि उन से किसी तरह का बदला मिले और न इस लिए करते हैं कि उन की वाह वाही हो और उन का आभार माना जाए। बल्कि इन सारी बातों से बेपरवाह हो कर वे केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए उन की मदद और सहायता करते हैं। और सदक़ा वास्तव में वही है जो सच्चे मन से अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के उद्देश्य से दिया जाए न तो उस का बदला चाहा जाए और न प्रचार एवं वाह वाही लूटना अभिप्रेत हो। जहाँ दिखावा का अंश आया वहाँ अन्न (बदला) जाता रहा।



हम अपने रब की तरफ़ से एक ऐसे दिन का डर रखते हैं जो अत्यंत कटु और सख़्त होगा। तो अल्लाह ने उन को उस दिन की मुसीबत से बचा लिया और उन को ताज़गी और प्रफुल्लता प्रदान की। और उन के सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास प्रदान किया। वहाँ वे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। न उन्हें धूप की सख़्ती महसूस होगी और न सर्दी की शिद्दत। उस के साये उन पर झुके हुए होंगे। और उस के गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे। (अल-कुर्आन)

10. हम अपने रब की तरफ़ से एक ऐसे दिन का डर रखते हैं जो अत्यंत कटु और सख़्त होगा।¹⁴

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمَ سَاقِطٍ رِجًّا ⑩

11. तो अल्लाह ने उन को उस दिन की मुसीबत से बचा लिया और उन को ताज़गी और प्रफुल्लता प्रदान की।¹⁵

فَوَقَّعَهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَصْرَةً وَسُرُورًا ⑪

12. और उन के सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास प्रदान किया।¹⁶

وَجَزَّاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ⑫

13. वहाँ वे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।¹⁷ न उन्हें धूप की सख़्ती महसूस होगी और न सर्दी की शिहत।¹⁸

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمَهْرِيرًا ⑬

14. उस के साथे उन पर झुके हुए होंगे।¹⁹ और उस के गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे।²⁰

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلُّلًا ⑭

15. उन के आगे चाँदी के बर्तन ²¹ और शीशे के गिलास गर्दिश में होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ⑮

16. शीशे भी वह जो चाँदी के होंगे।²² और उन के पैमाने वे स्वयं निर्धारित करेंगे।²³

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ⑯

17. उन को वहाँ ऐसी शराब के जाम पिलाए जाएँगे जिस में ज़न्जबील (सोंठ) का मिश्रण होगा।

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ⑰

18. यह एक ख़ोत होगा।²⁴ जिस को सलसबील कहा जाता है।²⁵

عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ⑱

19. उन के पास ऐसे लड़के गर्दिश में होंगे जो हमेशा उसी सिन (आयु) के रहेंगे।²⁶ तुम उन को देखो तो समझो कि ये बिखरे हुए मोती हैं।²⁷

وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ ولدَانٌ تَحْمِلُودُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَنثُورًا ⑲

20. वहाँ जिधर भी देखोगे तुम्हें नेमतें ही नेमतें और महान बादशाही दिखाई देगी।²⁸

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَرًا رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ⑳

14. अर्थात् जो नेकी भी हम करते हैं आखिरत को लक्ष्य बना कर करते हैं। क्रियामत के दिन की कल्पना मात्र से काँप उठते हैं और उस दिन की मुसीबत से बच जाने को हम अपनी बहुत बड़ी सफलता समझते हैं।

क्रियामत का दिन कटु होगा अर्थात् वह दिन ऐसा होगा कि हर अपराधी को उजाड़ कुरूप बना देगा।

15. अर्थात् अल्लाह उन लोगों को जिन के गुण ऊपर बयान हुए हैं क्रियामत के दिन की आफ़त से सुरक्षित रखेगा और उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी बल्कि उन के चेहरे से ताज़गी टपक रही होगी और उन के दिल खिले पड़ रहे होंगे कि वे दुनिया की परीक्षा से सफल हो कर निकल आए।

16. स्पष्ट हुआ कि जन्नत मुफ़्त में मिलने वाली चीज़ नहीं है बल्कि सब्र के बदले में मिलेगी। शरीअत के आदेशों की पाबन्दी तथा नेकी और तक्रवा की ज़िन्दगी निस्संदेह बड़ी कठिन होती है किन्तु इस परीक्षा के दौर से संयम पूर्वक तथा सफलतापूर्वक गुज़रने वालों के लिए हमेशा हमेशा की जन्नत के दरवाज़े खुलते हैं।

जन्नत की प्रत्येक वस्तु उच्च कोटि की होगी। लिबास भी बहुत ही नफ़ीस और ख़ालिस रेशम के होंगे। जन्नत की नेमतों में जो आगे बयान हुई है, लिबास का वर्णन सर्व प्रथम हुआ। मतलब यह कि सब से पहला सम्मान जो जन्नत वालों को प्रदान किया जाएगा वह रेशमी लिबास होगा।

17. इन आयतों में जन्नत की एक झलक दिखाई गई है कि कैसी शानदार एवं भव्य होगी वह जन्नत और किस शान से रहेंगे उस में जन्नती। जन्नत की यह झलक कुर्आन ने ही दिखाई है और यह इस किताब की प्रमुखता है कि वह दुनिया ही में जन्नत की सैर कराती है।

जन्नतवासी तख़्तों पर तकिये लगाए बैठे होंगे मतलब यह है कि वे बहुत शाहाना अन्दाज़ से जन्नत में रहेंगे।

18. अर्थात् जन्नत का वातावरण बहुत ही अच्छा होगा, सर्दी और गर्मी की कोई तकलीफ़ वहाँ महसूस नहीं होगी। हर चीज़ पूरी संतुलित अवस्था में होगी।

19. अर्थात् जन्नत के वृक्षों के साये उन पर झुके हुए होंगे। इस से जन्नत के सुन्दर वातावरण और राहत बख़्श होने की कल्पना उभरती है।

20. जन्नत के वृक्षों के गुच्छे इस तरह लटक रहे होंगे कि उन को आसानी से तोड़ा जा सके। उन के फल हासिल करने के लिए कोई कष्ट नहीं करना होगा।

21. सूरह जुख़रुफ़ आयत ७१ में बयान हुआ है कि जन्नत में सोने के बर्तन होंगे और यहाँ चाँदी के बर्तनों का वर्णन हुआ है। मालूम हुआ कि जन्नत में चाँदी के भी बर्तन होंगे और सोने के भी।

ध्यान रहे कि दुनिया में चाँदी और सोने के बर्तनों को इस्लाम ने हaram बताया है। ये ऐश्वर्य के सामान जन्नत ही के लिए ठीक हैं।

22. प्याले शीशे के होंगे और शीशा वह जो चाँदी का होगा। दूसरे शब्दों में ऐसी चाँदी के प्याले होंगे जो शीशे की भाँति साफ़ पारदर्शी (Transparent) होगी। यह जन्नत की चाँदी की विशेषता होगी। दुनिया में ऐसी चाँदी का अस्तित्व नहीं। इस की कल्पना प्रस्तुत कर के कुर्आन ने अपने अनुयायियों को कैसी रूहानी उड़ान प्रदान की है।

23. इस का भावार्थ कुछ इस तरह समझ में आता है कि जन्नत के गिलास एडजस्ट (Adjust) करने के क़ाबिल होंगे। वे उन का जो पैमाना चाहेंगे निर्धारित करेंगे ताकि अपनी मनचाही मात्रा में उस पेयजल को प्राप्त कर सकें।

24. ज़ंजबील (सोंठ) एक खुशबूदार और हरात पैदा करने वाली चीज़ है। इस से जन्नत के स्रोत का हल्का सा चित्र मास्तिष्क में उभरता है। वरना दुनिया की सोंठ पर जन्नत की ज़ंजबील को समझा नहीं जा सकता। ज़ंजबील के मिश्रण से जन्नत की शराब और आनन्द दायक बनेगी

25. सलसबील का शाब्दिक अर्थ है आसानी से हलक़ में उतरने वाला और सदैव प्रवाहित ज़ंजबील के स्रोत का यह नाम उस की विशेषता को ज़ाहिर करता है कि उस में किसी तरह की कड़वाहट नहीं होगी बल्कि उस का पानी बड़ी आसानी से हलक़ से नीचे उतरेगा।

जन्नत की दूसरी नेमतों की तरह उस के इस स्रोत की विशेषताओं का भी सही अन्दाज़ा दुनिया में नहीं क़ायम कर सकते। जिन लोगों को जन्नत की खुशानसीबी हासिल होगी वही उस की विशेषताओं को जानेंगे।

26. इस की व्याख्या सूरह तूर नोट २२ में गुज़र चुकी।

27. अर्थात् वे लड़के अपनी सुन्दरता और अपनी व्यवस्था का ऐसा सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करेंगे कि जैसे वे बिखरे हुए मोती हैं।

28. दुनिया की तरह जन्नत में नपी तुली नेमतें नहीं मिलेंगी बल्कि प्रत्येक व्यक्ति वहाँ नेमतों से मालामाल होगा। और शाहाना अन्दाज़ की शान-व-शौकत उसे हासिल होगी और जन्नत का चप्पा चप्पा उसे मान सम्मान देने वाला होगा।

21. उन के ऊपर बारीक रेशम के हरे और अतलस के कपड़े होंगे।²⁹ उन को चाँदी के कंगन पहनाए जाएंगे³⁰ और उन का रब उन को बेहद पाकीज़ा शराब पिलाएगा।³¹
22. यह है तुम्हारा बदला, और तुम्हारी कोशिश स्वीकृत हुई।³²
23. (ऐ नबी !)³³ हम ने तुम पर कुर्आन एक क्रम से नाज़िल किया।³⁴
24. अतः तुम अपने रब के फैसले का इन्तिज़ार करो³⁵ और इन में से किसी गुनहगार या नाशुके की बात न मानो।³⁶
25. अपने रब के नाम का ज़िक्र (चर्चा) करो, सुबह और शाम।³⁷
26. रात को भी उस के समक्ष सज्दा करो³⁸ और रात के लम्बे हिस्से में उस की तस्बीह (पाकी बयान) करो।³⁹
27. यह लोग शीघ्र प्राप्त होने वाली दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन को अपने पीछे छोड़ रहे हैं।⁴⁰
28. हम ने ही इन को पैदा किया है और इन के जोड़ बन्द मज़बूत किये हैं। और हम जब चाहें इन की सूरतें बदल दें।⁴¹
29. यह एक नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ जाने की राह अपना ले।⁴²
30. और तुम नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह न चाहे।⁴³ निस्संदेह अल्लाह ज्ञान वाला तत्वदर्शी है।
31. जिस को चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है।⁴⁴ और ज़ालिमों के लिए उस ने दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है।⁴⁵
- عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَاسْتَبْرَقٌ وَحُلُوفٌ أَسَاوِرٌ
مِنْ فِضَّةٍ وَسَقْمُهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾
- إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ﴿٢٢﴾
- إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾
- فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطِعْ مِنْهُمْ إِشَاءً أَوْ كُفُورًا ﴿٢٤﴾
- وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾
- وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾
- إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ
يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾
- نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَلْنَا
أَمْثَلَهُمْ بَدِيلًا ﴿٢٨﴾
- إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾
- وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا ﴿٣٠﴾
- يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

29. इस की व्याख्या सूरह कहफ़ नोट ४८ में गुजर चुकी।

30. सूरह कहफ़ आयत ३१ में बयान हुआ है कि उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और यहाँ चाँदी के कंगन पहनाए जाने का जिक्र हुआ है। मालूम हुआ कि जन्नत वालों को दोनों ही तरह के कंगन पहनाए जाएंगे। चाँदी के भी और सोने के भी।

31. यह गोया अल्लाह की खास अनुकंपा एवं अनुग्रह (फ़ज़ल) होगा कि वे उन शराबों के अलावा जिस का जिक्र ऊपर हुआ एक खास तरह की शराब (पेय पदार्थ) जो बहुत ही पाकीजा होगी उन्हें पिलाएगा। उस की लज़्जत और उस का आनन्द क्या और कैसा होगा इस का कौन अन्दाज़ा कर सकता है।

32. अर्थात् यह सिला और ईनाम है उन कर्मों का जो दुनिया में तुम ने अन्जाम दिए और तुम्हारी कोशिश तुम्हारे रब की नज़र में मूल्यवान एवं स्वीकार्य ठहरी। यह मुबारकबाद का बहुत बड़ा सम्मान होगा जिस से जन्नत वालों को अलंकृत किया जाएगा।

33. अब संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर मुड़ रहा है और आप को हिदायतें दी जा रही हैं और आप के माध्यम से आप के अनुयायियों को।

34. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १४०

35. अर्थात् अल्लाह इन काफ़िरों के साथ क्या मामला करता है इस का सब्र के साथ इन्तिज़ार करो।

36. “आसिम” (गुनहगार) अर्थात् अवैध कामों का अपराधी और “कफ़ूर” (नाशुक्र) अर्थात् अल्लाह की नेमतों की क्रूर न करने वाला आयत का मतलब यह है कि जो व्यक्ति गुनाह का जीवन गुज़ार रहा हो वह तुम से गुनाह के काम करने के लिए कहेगा और जो अल्लाह की नेमतों की नाक्रद्री करने वाला हो वह नेमतों को नकारने की और कुफ़्र की ही बातें करेगा। तो ऐसे किसी भी व्यक्ति की बातों में तुम मत आओ। और उस का दबाव स्वीकार न करो।

इस आयत में संबोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है किन्तु असल संबोधी आप के अनुयायी हैं।

37. सुबह और शाम अल्लाह का नाम याद करने का आदेश सार्वजनिक रूप से दिया गया है अर्थात् अल्लाह की प्रशंसा तथा उस के गुणगान के शब्द सुबह और शाम दिल को

हाज़िर रख कर ज़बान से अदा करते रहो। इस आदेश के अनुपालन की बेहतरीन सूरत सुबह और शाम की नमाज़ें ही ठहरती हैं।

38. सज्दा नमाज़ का महत्वपूर्ण रुकन (स्तंभ) हैं इस लिए नमाज़ को सज्दा कहा गया है। मतलब यह है कि रात में भी नमाज़ पढ़ो।

39. शुरू में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रात के लंबे हिस्से में अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान करने) का आदेश दिया गया था। इस के कुछ ही समय बाद सूरह मुज़्जम्मिल में रात का बड़ा हिस्सा नमाज़ में गुज़ारने का आदेश दिया गया। तप्सील के लिए देखिए सूरह मुज़्जम्मिल नोट २ और नोट ४।

40. अर्थात् इन काफ़िरों को दुनिया का लाभ इतना प्रिय है कि इन को क्रियामत के दिन की कोई परवाह नहीं है। हालाँकि वह दिन बड़ा सख़्त होगा। हर अपराधी अपने गुनाहों का बोझ उठाए हुए होगा और अपनी मुक्ति के लिए बहुत ही परेशान होगा।

41. अर्थात् जब हम ने ही इन को पैदा किया है और इन के जोड़ बन्द मज़बूत किये हैं तो हम अगर चाहें तो इन की सूरतें बिगाड़ भी सकते हैं। फिर वे अपने रब को भूल कर अपनी सुन्दर संरचना पर घमण्ड क्यों करते हैं? और उस से डरते क्यों नहीं?

इस अवसर पर सूरह यासीन आयत ६७ और नोट ७२ भी सामने रहे।

42. अर्थात् कुर्आन सरासर नसीहत है और इस नसीहत को स्वीकार कर के आदमी अपने रब तक पहुँचने का रास्ता अपना सकता है।

43. व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर नोट ३०

44. अर्थात् अपने किस बन्दे को रहमत में दाखिल किया जाए इस का फ़ैसला अल्लाह तआला अपने ज्ञान और अपनी तत्वदर्शिता के तक्राज़े के अनुसार करता है।

45. ज़ालिमों से तात्पर्य तौहीद और आख़िरत का इन्कार करने वाले लोग हैं जिन का पूरा जीवन इस वास्तविकता के इन्कार के फलस्वरूप बिल्कुल ग़लत हो कर रह गया और वे गुमराह हुए। ऐसे लोगों को दुखदायिनी यातना देना अल्लाह की हिकमत और उस के न्याय का तक्राज़ा है इस लिए उस ने उन के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है।



७७. सूरह अल्-मुर्सलात

नाम :- पहली आयत में “मुर्सलात” (हवाओं) की क्रम खाई गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-मुर्सलात है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरू दौर के आखिरी हिस्से में नाज़िल हुई होगी जब कि मक्का के काफ़िर लोग बहुत जोर शोर से हिसाब के दिन को झुठला रहे थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा इस्लामी दअवत के विरुद्ध चालें चलने लगे थे।

बुखारी की हदीस है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि हम मिना की गुफ़ा में थे और सूरह मुर्सलात नाज़िल हुई। आप उसे तिलावत फ़रमा रहे थे और हम उसे आप की ज़बान से सीख रहे थे। (बुखारी किताबुत्तप्सीर)

केन्द्रीय विषय :- बदले के दिन का इन्कार करने वालों को उन के बुरे अन्जाम से ख़बरदार करना और अल्लाह से डरने वालों के सुपरिणाम को प्रस्तुत करना है ताकि इन्कार करने वाले होश में आएँ और अपने भविष्य को संवारने की चिन्ता करें। इस सूरह में इन्कार करने वालों के लिए इन्ज़ार (चेतावनी) का पहलू

ग़ालिब है जब कि पीछे की सूरह (अल-इन्सान) में नेकोकारों के लिए ख़ुशख़बरी का पहलू उभरा हुआ है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ७ में तेज़ हवाओं को क्रियामत आने के पक्ष में प्रस्तुत किया गया है।

आयत ८ से १५ में क्रियामत का हौलनाक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

आयत १६ से २८ में हिसाब किताब के दिन आने के पक्ष में सबूत प्रस्तुत करते हुए उस के सत्य होने पर सोचने तथा विचार करने का निमंत्रण दिया गया है।

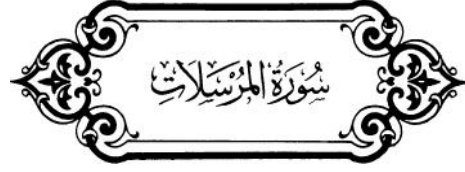
आयत २९ से ४० में झुठलाने वालों को क्रियामत के दिन जिन हालात का सामना होगा उस का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

आयत ४१ से ४४ में अल्लाह का डर रखने वालों के अच्छे अन्जाम का नक्शा खींचा गया है।

आयत ४५ से ५० में झुठलाने वालों के अपराध पूर्ण रवैये पर उन्हें कड़ी तंबीह की गई है।

७७. सूरह अल्-मुर्सलात

आयतें : 50



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं।¹
2. फिर तेज़ तेज़ चलने लगती हैं।²
3. और जो बादलों को फैलाती हैं।³
4. फिर (उन को) अलग अलग करती हैं।⁴
5. फिर (दिलों में) याददेहानी (की बात) डालती हैं।⁵
6. हुज्जत क़ायम करने या ख़बरदार करने के लिए।⁶
7. जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है, वह अवश्य घटित होगी।⁷
8. फिर जब सितारे बेनूर (प्रकाश हीन) हो जाएंगे।⁸
9. और आसमान फट जाएगा।⁹
10. और पहाड़ चूर्ण विचूर्ण कर दिये जाएंगे।¹⁰
11. और जब रसूलों के लिए नियत समय होगा।¹¹
12. उस में किस दिन के लिए विलम्ब हो रहा है।
13. फ़ैसले के दिन के लिए।¹²
14. और तुम्हें क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है ?¹³

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۝۱

فَالْعَصْفَاتِ عَصْفًا ۝۲

وَالنَّشْرَاتِ نَشْرًا ۝۳

فَالْفُرْقَاتِ فَرْقًا ۝۴

فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا ۝۵

عَذْرًا أَوْ تَذْرًا ۝۶

إِنَّمَا تَوَعْدُونَ لَوَاقِعُ ۝۷

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝۸

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝۹

وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۝۱۰

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِتَتْ ۝۱۱

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۝۱۲

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۝۱۳

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۝۱۴

1. क्रसम यहाँ गवाही के अर्थ में है। अर्थात् ये हवाएँ जिन की क्रसम खाई गई है हिसाब किताब के दिन का अनुमोदन करती हैं जिस से कुर्आन खबरदार कर रहा है।

हवाएँ यूँ ही नहीं चलती। बल्कि उन को चलाया जाता है और उन का अन्दाज़ जब कि वह लगातार चलती हैं इस बात की खुली दलील है कि इन को उस हस्ती ने जिस का इन पर कन्ट्रोल है एक खास मक़सद से भेजा है और वह है बारिश।

2. अर्थात् फिर इन हवाओं की रफ़्तार तेज़ हो जाती है और कभी वह आँधी और कभी तूफ़ान का रूप धार लेती हैं।

3. हवाएँ समुद्र से उठने वाले बादलों को वातावरण में इस तरह फैलाती हैं कि वह सैकड़ों और हज़ारों मील की दूरी पर पहुँच जाते हैं।

4. हवाएँ बादलों को अलग अलग कर देती हैं। अर्थात् उन का एक हिस्सा एक भू-भाग की तरफ़ ले जाती हैं तो उन का दूसरा हिस्सा दूसरे भू-भाग की तरफ़ ताकि उस योजना के अनुसार बारिश हो जो हवाओं को चलाने वाली हस्ती ने बनाया है।

5. इन हवाओं की रफ़्तार और हरकतें दिलों को जगाती और ज़मीर को झंझोड़ती हैं और अपने रब के प्रति वास्तविक डर उत्पन्न करती हैं। जब हवाएँ आँधी और तूफ़ान का रूप धार लेती हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को यदि उस का ज़मीर बिलकुल मुर्दा न हो गया हो, खुदा याद आ जाता है। बिजली की कड़क और चमक अल्लाह का भय पैदा करती है कि वह अज़ाब का कोड़ा बरसा सकता है। दूसरी तरफ़ हवाएँ बादलों को खींच कर लाती हैं और अच्छी बारिश के रूप में सामने आती हैं। इस तरह वह अपनी ख़ामोश ज़बान में इस बात का एलान करती हैं कि कायनात का रब जिस के इशारे पर वे इतना कुछ करती हैं एक ज़बरदस्त हस्ती है जो सख़्त सज़ा देने पर कादिर है। इस लिए उस की अवज़ा करना उस के प्रकोप को निमंत्रण देना है और उस की फ़रमाँबरदारी कर के ही मनुष्य उस की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। इस से इनाम और दण्ड के उस विधान का अनुमोदन होता है जो कुर्आन पेश कर रहा है।

ये हवाएँ जगत के प्रभु की कुदरत और हिकमत का निशान बन कर ज़ाहिर होती हैं। हवाओं की यह विस्तृत एवं विशाल व्यवस्था इस बात का खुला सबूत है कि यह कायनात बग़ैर खुदा के नहीं है। बल्कि इस का एक खुदा है और वह एक व्यवस्था में जकड़ी हुई है। हवाएँ भी इस व्यवस्था के अन्तर्गत हैं। यह व्यवस्था खुदा की असीम कुदरत और तत्त्वदर्शिता पर तर्क प्रस्तुत करती है। उस की कुदरत से

कदापि यह असंभव नहीं कि वह क्रियामत बरपा करे। और मनुष्य को दोबारा उठाए। और उस की हिकमत इस का तक्राज़ा करती है कि वह इन्साफ़ का दिन कायम करे और इन्सान अपने कर्मानुसार इनाम या दण्ड पाये। वरना यह ज़िन्दगी बेमक़सद हो कर रह जाती है। और ज़िन्दगी का बेमक़सद वा निरुद्देश्य होना हिकमत के खिलाफ़ है।

सार यह है कि तेज़ चलने वाली ये हवाएँ अपनी भाँत भाँत और अजीबो-ग़रीब रफ़्तार और हरकतों से मनुष्य को अपने रब की ओर आकृष्ट करती हैं और एक ज़बरदस्त एवं तत्त्वदर्शी हस्ती का एहसास उस में पैदा करती हैं और इसी एहसास के फलस्वरूप इनाम और दण्ड की कल्पना उभरती है।

6. ये हवाएँ अपनी चाल और हरकत से अल्लाह के एक होने तथा उस की कुदरत, हिकमत रबूबियत तथा संपूर्ण कायनात का व्यवस्थापक होने की गवाही देती हैं और उन के थपेड़े सोयी हुई इन्सानियत को जगाते हैं और उन की सरसराहट क्रियामत का आलार्म बजाती हैं। गोया हवाएँ अल्लाह के एकेश्वर होने का गीत गाते हुए और मनुष्य का दायित्व बोध जगाते हुए गुज़रती हैं। इस तरह इन हवाओं के द्वारा लोगों पर अल्लाह की हुज्जत भी कायम हो जाती है और उन को चौंकाने तथा ख़बरदार करने की सेवा भी वह अन्जाम देती हैं।

हवाओं के चलने में तौहीद और आख़िरत की जो निशानियाँ हैं उन की तरफ़ कुर्आन में कई जगहों पर ध्यानाकर्षित किया गया है मिसाल के तौर पर देखिए सूरह अज़ज़ारियात आयत १ से ६

7. यह वह बात है जिस पर हवाओं की क्रसम खाई गई है। वादा क्रियामत के दिन का किया जा रहा है कि उस रोज़ मनुष्य को दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा। ताकि वह अपने कर्मों की सज़ा अथवा इनाम पाये। यह वादा निश्चित रूप से पूरा होगा और वह बातें सच बन कर सामने आएंगी जिन के घटित होने की सूचना कुर्आन दे रहा है।

8. अब क्रियामत के कुछ हालात बयान किये जा रहे हैं। जब पहला सूर फूँका जाएगा तो ज़मीन और आसमान दोनों प्रचण्ड दुर्घटना से दो चार हो जाएंगे। असंख्य सितारे जो आज रौशन हैं उस रोज़ उन की रौशनी बिलकुल ख़त्म हो जाएगी सूरह तकवीर में फ़रमाया

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ

अर्थ :- “जब सितारे बे नूर (प्रकाश हीन) हो जाएंगे।

वह समय कैसा होगा जब कि संपूर्ण जगत में अन्धकार छा जाएगा।

9. व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिकाक़ नोट १
 10. व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ६६
 11. अब उस समय का ज़िक्र हो रहा है जब दूसरा सूर फूँका जाएगा और सारे इन्सानों को ज़िन्दा कर के हश्र के मैदान में लाया जाएगा ।
 उस रोज़ अदालत लगेगी और रसूलों को बुलाया जाएगा कि वे अपनी उम्मतों के बारे में गवाही दें।
 12. अर्थात् जानते हो कि ये समस्त काम किस दिन के

लिए उठा रखे गए हैं ? फैसले के दिन के लिए। अर्थात् आज दुनिया में अल्लाह की अदालत नहीं लग रही है तो यह न समझो कि कभी अल्लाह की अदालत लगेगी ही नहीं। और अपराधी दण्ड पाने से छूट जाएंगे। नहीं बल्कि अल्लाह की अदालत के लिए क्रियामत का दिन तय है। उस रोज़ प्रत्येक को अपना हिसाब देना होगा।

13. अर्थात् ख़ूब समझलो कि फैसले का दिन बड़ा सख़्त होगा ।



तबाही है उस दिन, झुठलाने वालों के लिए । क्या हम ने अगले लोगों को विनष्ट नहीं किया? फिर बाद वालों को, उन के पीछे विनष्ट करते रहे। मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही मामला करते हैं। तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए । क्या हम ने तुम को तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया? और उसे एक सुरक्षित जगह में रखा। एक निश्चित अवधि तक । तो हम ने एक योजना बनाई और हम क्या ही ख़ूब योजना बनाने वाले हैं। (अल-कुआन)

15. तबाही है उस दिन, झुठलाने वालों के लिए ।¹⁴

وَيَلُومِيذِلْمُكَذِّبِينَ ①

16. क्या हम ने अगले लोगों को विनष्ट नहीं किया?¹⁵

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ②

17. फिर बाद वालों को, उन के पीछे विनष्ट करते रहे।¹⁶

ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ③

18. मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही मामला करते हैं।¹⁷

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ④

19. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए ।¹⁸

وَيَلُومِيذِلْمُكَذِّبِينَ ⑤

20. क्या हम ने तुम को तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया ?¹⁹

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ⑥

21. और उसे एक सुरक्षित जगह में रखा।²⁰

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ⑦

22. एक निश्चित अवधि तक ।²¹

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ⑧

23. तो हम ने एक योजना बनाई और हम क्या ही ख़ूब योजना बनाने वाले हैं।²²

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ⑨

24. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيَلُومِيذِلْمُكَذِّبِينَ ⑩

25. क्या हम ने ज़मीन को समेट रखने वाली नहीं बनाया ?

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ⑪

26. ज़िन्दों और मुर्दों को ।²³

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ⑫

27. और उस में ऊँचे पहाड़ रखे।²⁴ और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया।²⁵

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَيْخِثٍ وَاسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ⑬

28. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيَلُومِيذِلْمُكَذِّبِينَ ⑭

29. चलो उस चीज़ की तरफ़ जिसे तुम झुठलाते हो।²⁶

إِنظِلُّوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ⑮

30. चलो उस साये की तरफ़ जो तीन शाखों वाला है ।²⁷

إِنظِلُّوا إِلَىٰ ظِلِّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ⑯

14. जो लोग आज हिसाब के दिन को झुठला रहे हैं वे उस रोज़ तबाही में पड़ेंगे।

“वैल” ويل का अर्थ हर तरह की तबाही के हैं। लिसानुलअरब में है :-

واصل الويل في اللغة العذاب والهلاك .

अर्थ :- शब्दकोष में वैल का अर्थ अज़ाब और बर्बादी के हैं ।

الويل : الحزن الهلاك والمشقة من العذاب .

अर्थ:- “वैल का अर्थ ग़म और अफ़सोस विनाश और अज़ाब की परेशानियाँ हैं।”

قال سيبيويه ويل له وويل له امي قبيحا .

(لسان العرب ج ١١ ص ٤٣٨)

“सैबवैह कहते हैं कि उस के लिए वैल है अर्थात् उस के लिए ख़राबी है।” (लिसानुल अरब जिल्द ११ पृष्ठ ७३८)

क्रियामत के दिन झुठलाने वाले के लिए “वैल” है का मतलब यह है कि बदले के दिन को झुठलाने वाले बहुत ही दुखदायिनी हालत से दोचार होंगे। उन्हें कठोर यातना भुगतनी होगी। वे विनाश एवं तबाही के गढ़े में गिरेंगे और उन का अंजाम बहुत बुरा होगा।

यह आयत इस सूरह में दस बार आई है और यह इस सूरह की ख़ास प्रमुखता है। इस आयत को बार बार दोहराने से अभिप्रेत झुठलाने वालों को बार बार उन के कुपरिणामों की ओर ध्यानाकृष्ट करना है ताकि वे चौंके और होश में आएँ।

15. तात्पर्य प्राचीनतम जातियाँ हैं जिन्होंने कुफ़्र किया था जैसे नूह की जाति, आद की जाति, समूद की जाति आदि।

16. अर्थात् उन के बाद आने वाली दूसरी काफ़िर जातियों को भी विनष्ट करते रहे जैसे लूत, शुऐब और फ़िरऔन की जाति आदि।

17. अपराधियों से तात्पर्य काफ़िर और झुठलाने वाली जातियाँ हैं। अल्लाह की सुन्नत यही है कि जब कोई रसूल आया और उस की जाति ने उसे झुठलाया तो उसे अज़ाब (प्रकोप) के द्वारा विनष्ट कर दिया गया । ताकि रसूल की सत्यता सिद्ध हो जाए तथा इस लिए भी कि जिस जाति पर अल्लाह के रसूल ने हुज्जत पूरी कर दी और इस के बाद भी वे ईमान न लाए तो ऐसी जाति इन्सानियत के लिए नासूर बन जाती है और सब से बड़ी बात ये कि हक़ स्पष्ट हो जाने के बाद किसी जाति का

कुफ़्र पर अड़ जाना अल्लाह के प्रकोप को खुला निमंत्रण देने का कारण है ।

18. जब दुनिया में अपराधियों को उन के अन्जाम तक पहुँचाया गया तो क्रियामत के दिन जो न्याय और इन्साफ़ का दिन होगा किस तरह वे सज़ा से बच सकेंगे।

19. अर्थात् मामूली वीर्य से।

20. अर्थात् गर्भ में।

21. तात्पर्य गर्भ की अवधि है।

22. अर्थात् मनुष्य की संरचना का काम एक ख़ास योजना के तहत अन्जाम पाता है और वह सोचने समझने वाली उत्तम सृष्टि बन जाती है। यह योजना अल्लाह की होती है। तो जो हस्ती ऐसी सर्वश्रेष्ठ योजना बनाने वाली और ऐसी उत्तम तदबीर करने वाली है उस की तरफ़ यह बातें कैसे मन्सूब की जा सकती है कि उस ने मनुष्य को निरुद्देश्य पैदा किया है और इस का कोई उद्देश्य नहीं।

23. ज़मीन ज़िन्दा इन्सानों को अपनी गोद में रहने बसने के लिए जगह देती है और मुर्दों को भी क़ब्र बन कर अपने अन्दर समेट लेती है। इस तरह ज़मीन इन्सान को उस की ज़िन्दगी में भी समेट कर रखती है और उस के मरने के बाद भी।

24. ऊँचे पहाड़ बादलों को रोकते हैं जिस के कारण पहाड़ी इलाक़ों में ख़ूब बारिश होती है और दरिया बह पड़ते हैं।

25. दरियाओं और ख़ेतों को जारी किया जिन से मीठा पानी प्राप्त होता है।

क्या यह सब नेमतें अल्लाह की रूबूबियत उस के पालनहार होने की निशानी नहीं है। और जब उस ने तुम्हारी परवरिश का यह सामान किया है तो वह तुम से तुम्हारे रवैये के बारे में पूछ ताछ कैसे नहीं करेगा और अपनी नेमतों का हिसाब तुम से क्यों नहीं लेगा। उस की रूबूबियत इस बात का तक्राज़ा करती है कि वह हिसाब का दिन लाए और कृतज्ञ लोगों को अच्छा सिला दे और कृतघ्न लोगों को सज़ा दे।

26. अर्थात् क्रियामत के दिन का अज़ाब ।

27. इस साये से जो धुएँ के रूप में होगा काफ़िर हश्र के मैदान में उस से जूझेंगे। उस की तीन शाखें होंगी यह इशारा संभवतः उस की तीन विशेषताओं की ओर है। और जिस तरह का अपराधी होगा उसी अपराध के अनुकूल विशेषता रखने वाला धुँआ उस पर मुसल्लत कर दिया जाएगा।

31. जिस में न छाँव है और न वह शोलों की लपट से बचाएगा।²⁸

لَا ظِلِيلٌ وَلَا يُعْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝۳۱

32. वह आग महल की तरह (ऊँची) चिंगारियाँ फेंकती होंगी।²⁹

إِنَّمَا تَرْمِي بِشَرِّ كَالْقَصْرِ ۝۳۲

33. गोया वे ज़र्द (पीले) ऊँट हैं।³⁰

كَأَنَّهُ جِلَّتْ صُفْرٌ ۝۳۳

34. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۳۴

35. यह वह दिन है कि वे बोल न सकेंगे।³¹

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۝۳۵

36. और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वे उज्र (कारण) पेश कर सकें।³²

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝۳۶

37. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।³³

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۳۷

38. यह फैसले का दिन है हम ने तुम को भी जमा कर दिया है और तुम से पहले के लोगों को भी।³⁴

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاهُ وَالْأَوَّلِينَ ۝۳۸

39. अगर तुम कोई चाल चल सकते हो तो मेरे मुकाबले में चल देखो।³⁵

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۝۳۹

40. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۰

41. मुत्तक्री (अल्लाह से डरने वाले) सायों और स्रोतों में होंगे।³⁶

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونٍ ۝۴۱

42. और अपनी पसन्द के मेवों में।³⁷

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝۴۲

43. खाओ और पियो मज़े से अपने कर्मों के बदले में।³⁸

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۴۳

44. हम सुकर्मियों को ऐसा ही बदला देते हैं।³⁹

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝۴۴

45. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।⁴⁰

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۵

28. अर्थात् दोज़ख़ से जो शोले उठ रहे होंगे वह हश्र के मैदान में अपराधियों पर आ आ कर गिर रहे होंगे और वे जिस साये के नीचे होंगे वह उन्हें उन शोलों की ज़द से बचा न सकेगा।

29. अर्थात् जहन्नम से जो चिंगारियाँ निकल रही होंगी वे महल की तरह ऊँची ऊँची होंगी और उन का आकार भी महल जैसा होगा ताकि अपराधियों को दुनिया के महल याद आ जाएँ जिन में वे रंगरलियाँ मनाते रहे।

30. दोज़ख़ से निकलने वाली चिंगारियाँ गोया मीज़ाइल होंगी जो हश्र के मैदान में अपराधियों को निशाना बनाएँगी। उन चिंगारियों की शक्त महल के अलावा पीले ऊँटों जैसी भी होगी ताकि अपराधियों को अपने क्रीमती ऊँट याद आ जाएँ जिन को उन्होंने दुनिया में असली पूँजी समझ रखा था और उस के मोह में फँस कर आखिरत को नज़रंदाज़ कर दिया था।

31. हश्र के मैदान में अपराधियों को विभिन्न चरणों से गुजरना होगा। एक चरण वह होगा जब उन के मुँह पर मोहर लगा दी जाएगी और उन के अंग अंग बोल पड़ेंगे कि वे दुनिया में क्या करते रहे हैं।

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ
وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ. (س: ५५)

अर्थ :- “आज हम इन के मुँह पर पहरा लगा देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे और इन के पाँव गवाही देंगे कि वे क्या करते रहे हैं ” (यासीन - ६५)

32. उन्हें अपनी सफ़ाई पेश करने का मौक़ा इस से पहले दिया जा चुका होगा इस लिए इस मरहले में जब कि उन का मुँह बन्द कर दिया जाएगा, उन्हें उन्न पेश करने (कारण प्रस्तुत करने) की इजाज़त नहीं दी जाएगी।

33. अर्थात् सोचो कि हश्र के मैदान में झुठलाने वालों का हाल कितना बुरा होगा।

34. वह बात ख़ास तौर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधियों को संबोधित कर के कही जाएगी कि तुम लोग फ़ैसले के दिन का इन्कार करते थे तो देखो तुम्हारा इन्कार ग़लत सिद्ध हुआ। आज फ़ैसले का दिन है और फ़ैसले के लिए हम ने तुम को भी हाज़िर कर दिया है और उन को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके थे, तात्पर्य गुज़रे हुए ज़माने के गुमराह लोग हैं जिन के पदचिन्हों पर ये लोग चलते रहे। यह बात मौक़े के

लिहाज़ से इर्शाद हुई है। वरना क्रियामत के दिन एक तरफ़ से सभी इन्सानों को जो दुनिया में पैदा हुए थे दोबारा ज़िन्दा कर दिया जाएगा इस तरह पूरी मानव जाति उस रोज़ हाज़िर कर दी जाएगी।

35. अर्थात् दुनिया में तो तुम मेरे कलिमे को नीचा दिखाने और मेरे रसूल को पीछे ढकेलने के लिए तरह तरह की चालें चलते रहे और साज़िशें करते रहे और यह न सोचा कि फ़ैसले का एक दिन सुनिश्चित है। अब अगर तुम में कुछ बल बूता है तो मेरे मुकाबले में कोई तदबीर कर दिखाओ। इस का जवाब वे क्या दे सकेंगे अलबत्ता सर झुका कर रह जाएँगे। तो झुठलाने वालों के लिए उस रोज़ बड़ी शर्मिन्दगी और ख़राबी होगी।

36. अब झुठलाने वालों की तुलना में अल्लाह से डरने वालो मुत्तक्रियों को मिलने वाले इनाम का वर्णन हो रहा है। अर्थात् जो लोग अल्लाह से डरते रहे और जिन्होंने इस एहसास के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी कि क्रियामत के दिन अल्लाह के समक्ष जवाबदेही करना है। वे जिन इनामों से अलंकृत किये जाएँगे उन का संक्षिप्त वर्णन यहाँ हुआ है। वे हक़ीक़ी साये में होंगे इस लिए उन्हें हर तरह का इल्मीनान और राहत हासिल होगी। और अल्लाह जिस को अपनी रहमत के साये में ले उन के सुकून और राहत का क्या कहना। दूसरी चीज़ जो उन को संपन्न एवं तृप्त करेगी और किसी भी तरह की चाह एवं प्यास का आभाव उन्हें कभी महसूस न होने देगी वे जन्नत के स्रोत होंगे जो उन्हें उच्च कोटि के पवित्र एवं स्वादिष्ट पेय मुहैया करेंगे। तीसरी बड़ी नेमत उन के लिए यह होगी कि वे अपनी पसंद के मेवे खाएँगे। जब उन की पसंद के मुताबिक उन को मेवे मिल जाएँगे और वह भी भरपूर मात्रा में तो वे कितना खुश होंगे।

38. अच्छे कर्मों का यह बदला कि जन्नत की ज़िन्दगी जिस में खाने पीने की बहुतायत और चीज़ें भी ऐसी जो अत्यंत स्वादिष्ट एवं अपनी ओर खींच लेने वाली हों, कितना बेहतरीन बदला है।

39. यह लोगों को सुक़र्मी बनाने पर उभारना है कि अपने को इस बेहतरीन इनाम का हक़दार बनाओ।

40. झुठलाने वाले सोचें कि क्रियामत का दिन उन के लिए कितनी बड़ी महरूमि का होगा। एक तरफ़ सुक़र्मी लोग जन्नत के मज़े लूट रहे होंगे और दूसरी तरफ़ झुठलाने वाले जहन्नम के विनाश का शिकार होंगे।

46. खाओ और मज़े कर लो थोड़े दिन, तुम मुजरिम हो ।⁴¹

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٣٩﴾

47. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए ।

وَيَوْمَ يَوْمٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

48. जब उन से कहा जाता है कि झुको तो झुकते नहीं हैं ।⁴²

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤١﴾

49. तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए ।

وَيَوْمَ يَوْمٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٢﴾

50. अब इस के बाद वे किस कलाम पर ईमान लाएंगे ?⁴³

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٤٣﴾

41. ये सूरह के ख़ात्मे की आयतें हैं। काफ़िरों को संबोधित कर के उन्हें आख़िरी बार झंझोड़ा जा रहा है कि ऐ अपराधियों! कि इतना समझाने बुझाने के बावजूद आगर तुम्हें अपने काफ़िराना रवैये पर हट है तो दुनिया में कुछ दिन मजे कर लो इस के बाद तुम्हें निश्चय ही तबाही से दोचार होना है।

42. अर्थात् कुर्आन और पैग़म्बर उन्हें अल्लाह के समक्ष झुकने की दअवत दे रहे हैं किन्तु वे इस के लिए आमादा नहीं हैं। और जो अल्लाह के समक्ष न झुके उस के लिए तबाही सुनिश्चित है। “इर्कअू” اِرْكَعُوا का अर्थ है झुको। और अल्लाह के समक्ष झुकने का भावार्थ बहुत फैला हुआ है। उस की इबादत, उस का अनुपालन और झुकना तथा माथा टेकना सब इस के

भावार्थ में शामिल हैं।

43. अर्थात् कुर्आन जो अल्लाह का आख़िरी कलाम है और जिस ने मज़बूत तर्कों द्वारा अपनी हुज्जत क़ायम कर दी है और जिस की तत्वदर्शिता परिपूर्ण एवं परिपक्व है, जिस की शैली प्रभावशाली और जिस की नसीहत दिलों को जीत लेने वाली है, इस पर भी यदि ये लोग ईमान नहीं लाते तो आख़िर वे किस कलाम की प्रतीक्षा में हैं? अगर वे कुर्आन से भी नसीहत नहीं ले सकते तो फिर कोई दूसरी किताब ऐसी नहीं हो सकती जो उन को होश में लाए और न कुर्आन के बाद कोई किताब आने वाली है इस लिए जिस को ईमान लाना है कुर्आन पर ईमान लाए।





७८. सूरह अन्-नबा

नाम : इस सूरह का नाम अन्-नबा है जिस का अर्थ है “अहम खबर”। इस से मुराद क्रियामत और दोबारा उठाये जाने की खबर है। यह नाम इस सूरह की आयत नं. २ से लिया गया है।

नाज़िल होने का समय : यह सूरह मक्की है और प्रारम्भिक आयात ही से यह बात स्पष्ट होती है कि यह सूरह उस समय की नाज़िल शुदा है जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का वासियों को क्रियामत के आने और बदला चुकाने का दिन सम्पन्न होने की खबर दी थी। जिस के नतीजे में इस विषय पर एक बहस उठ खड़ी हुई थी और क्रियामत को नामुमकिन ठहराते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा था। जाहिर है ये हालात दअवत के पहले मरहले ही में पेश आये थे।

केन्द्रीय विषय : इस सूरह का केन्द्रीय विषय क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत का क़ायम होना और इन्सानों को उन के आमाल (कर्मों) का बदला देना है।

आयात की तर्तीब : आयत नं. १ से ५ में उन लोगों को तंबीह की गयी है जो क्रियामत के विशाल और हौलनाक वाक़िया की खबर सुन कर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं गोया क्रियामत की खबर उन के निकट कोई संजीदा ग़ौर और फ़िक्र के योग्य नहीं है लेकिन वह समय दूर नहीं जब कि क्रियामत

वास्तविकता के रूप में उन के सामने आ धमकेगी और वह कायनात के फ़रमाँरवा (शासक) के सामने जवाब देने के लिए हाज़िर होंगे !

आयत ६ से १६ में अल्लाह की कुदरत, रूबूबिय्यत (स्वामित्व) और हिकमत की निशानियाँ बयान की गयी हैं जो मौत के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी के सम्भव होने पर न केवल दलालत करती हैं बल्कि इस बात की भी गवाही देती हैं कि बदले का दिन ज़रूरी है क्योंकि यह अल्लाह की रुबूबिय्यत और हिकमत का तकाज़ा है।

आयत १७ से २० में बताया गया है कि हिसाब का दिन अपने निश्चित समय पर प्रकट होगा। उस रोज़ आसमान और ज़मीन की व्यवस्था में एक ज़बरदस्त इन्क़लाब बरपा होगा और तमाम इन्सान ज़िन्दा हो कर अल्लाह की अदालत की ओर चल पड़ेंगे।

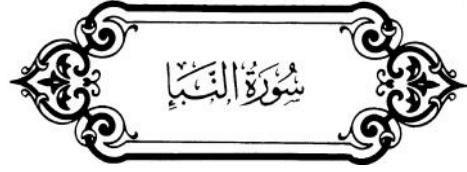
आयत २१ से ३० में सरकशों, बागियों का अन्जाम बयान किया गया है और आयत ३१ से ३६ में अल्लाह से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने वालों का।

आयत ३७ से ४० खातिमा-ए-कलाम (उपसंहार) है जिस में अल्लाह की अदालत में हाज़िरी का चित्र खींचा गया है और स्पष्ट किया गया है कि लोग झूठी सिफ़ारिश के बल पर जवाब देने से नहीं बच सकते।

७८. सूरह अन् - नबा

आयतें : 40

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. यह लोग किस चीज़ के बारे में पूछ ताछ कर रहे हैं ?
2. उस बड़ी ख़बर के बारे में,¹
3. जिस के सम्बन्ध में यह (खुद) मुख़लिफ़ बातें कर रहे हैं।²
4. इन की बातें ग़लत हैं, इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा,
5. फिर सुन लो इन के ख़यालात बातिल हैं, वह जल्द ही जान लेंगे।³
6. क्या हम ने ज़मीन को फ़र्श (समतल) नहीं बनाया ?⁴
7. और पहाड़ों को मिखें,⁵
8. और क्या तुम को जोड़ों की शक्ल में पैदा नहीं किया ?⁶
9. और तुम्हारी नींद को सुकून का कारण बनाया,⁷
10. और रात को लिबास,⁸
11. और दिन को जीविका (रोज़ी) का समय नहीं बनाया ?⁹
12. क्या तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान नहीं बनाये ?¹⁰

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ١

عَنِ النَّبَا الْعَظِيمِ ٢

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ٣

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ٤

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ٥

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ٦

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ٧

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ٨

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ٩

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ١٠

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ١١

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ١٢

1. बड़ी खबर से मुराद क्रियामत और हिसाब के दिन के प्रकट होने की खबर है। कुरआन ने जब यह खबर सुनाई ताकि लोग खबरदार हो जाएँ और ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारे, तो मक्का के मुशिरक़ीन (बहुदेववादी) इस का मज़ाक़ उड़ाने और इस के खिलाफ़ आपस में चर्चा करने लगे। आयत का इशारा उन की इसी चर्चा की तरफ़ है।

2. मक्का के मुशिरक़ीन के ख्यालात हिसाब के दिन और आखिरत (परलोक) के बारे में भिन्न थे। वह इन्सान के दोबारा उठाये जाने को सिरे से संभव ही नहीं समझते थे। वह कहते थे कि गली सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? कुछ लोगों के समीप आखिरत का तसव्वुर कोई उचित बात नहीं थी। वह कहते थे “ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है, मरने के बाद हमें उठाया नहीं जायेगा” और कुछ लोग आखिरत के बारे में संदेह और असमंजस में पड़े थे। उन के ये विचार किसी इस्लामी दलील (ठोस प्रमाण) पर आधारित नहीं थे बल्कि ये सिर्फ़ अटकल की बातें थीं।

ध्यान रहे कि क्रियामत और हिसाब के दिन को नकारने के मामले में अरब के मुशिरक़ीन अकेले न थे बल्कि जहाँ तक दूसरे बहुदेववादी धर्मों (मुशिरक़ाना मज़हबों) का सम्बन्ध है वह भी बहुत उलझी हुई बातें पेश करते हैं। जिस का अन्दाज़ा निम्न लिखित पंक्तियों से होगा।

Extract From The Encyclopaedia Of Religion And Ethics, Volume V :

Hindu : Although in the Rigveda no clear statement of Judgement is found, and Yama appears mainly as king of the region of bliss, yet he is to some extent an object of terror, and a dark underground hell is spoken of as the fate of evil-doers (iv. 5.5, vii 104.3, ix-73.8)..... The later views differ widely from this, through the gradual introduction of the belief in transmigration, while Yama is now the judge of the dead.....In the Upanishads re-birth in various conditions, in heaven, hell or on earth, appears as the result of ignorance of the true end of existence Hinduism in all its forms endorses this view. All go to Yama over a dreadful road, on which the pious fare better than the

wicked. Yama or Dharma judges and allots the fate. Through endless existences and re-births --- in human, animal, or plant forms --- alternated with lives in the heavens or hells, the soul must pass.

Buddhist : In Buddhism the idea of karma afforded an automatic principle of judgement, whereby the person after death entered upon an existence, higher or lower, according to his actions. At death, the force resulting from actions combined with clinging to existence causes creation of the five skandhas, or constituent elements of being. This is so swift that there is hardly any break in the continuity of personality, which is thus re-created in one of the six states -- gods, men, asuras, animals, plants, pretas, or inhabitants of one of the hells. (p.375)

लेकिन इन तमाम उलझी हुई बातों के बावजूद यह एक ऐसी हकीक़त है जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस दुनिया की एक दिन समाप्ति होनी है और मौजूदा साइंस इस की ताईद (अनुमोदन) करती है। अतः इन्साइक्लोपीडिया आफ़ रिलिजन एन्ड एथिक्स का लेखक आगे चल कर लिखता है :

Conclusion : The ideas regarding the end of the world which are found in most eschatologies may be regarded as mythical speculations prompted by knowledge of actual catastrophes in Nature and of its phenomena. The world, as science teaches, and as the speculations of men suggested, must have an end; but they pictured that end in lurid colours, while generally anticipating after it a new order. (p. 391)

कुरआन कर्मों के फल के लिए एक नई कर्म व्यवस्था के साथ नए संसार के बरपा किए जाने की खबर को मात्र अन्धे अक्रिदे (Dogma) के तौर पर नहीं बल्कि कायनात की और मनुष्य के अन्दर की निशानियों (अक़ली दलीलों) के साथ इतने मनमोहक ढंग से पेश करता है कि किसी तरह शक, संदेह और

मतभेद के लिए कोई गुन्जाइश बाक्री नहीं रहती और अंतःकरण पुकार उठता है कि हिसाब के दिन का बरपा किया जाना न केवल सम्भव बल्कि अनिवार्य है और कुर्आन आगे बढ़ कर पुरी दृढ़ता और विश्वास के साथ यह एलान करता है कि हिसाब का दिन ज़रूर बरपा होगा।

3. अर्थात् वह समय दूर नहीं जब उन्हें मालूम हो जायेगा कि हिसाब के दिन के बारे में उन के सारे अन्दाजे (अनुमान) गलत थे। यह हक़ीक़त मौत के आते ही आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में जो क्रियामत तक के लिए रूहों का ठिकाना है उन पर खुल जायेगी और फिर क्रियामत के दिन जब कि तमाम इन्सानों को शरीर सहित दोबारा उठा खड़ा किया जाएगा वह अपनी आँखों से इस हक़ीक़त को देखेंगे। “कल्ला सयालमूना” (इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा) की तकरार (Repetition) इन दो अवसर की तरफ़ इशारा करती है।

4. पृथ्वी यद्यपि हवा में ठहरी हुई है और सूरज के चारों ओर चक्कर भी लगाती है लेकिन इस के बावजूद इस में कोई उथल पुथल नहीं है एवं इस की सतह को इस तरह फैला दिया गया है कि इस पर आबादी संभव हुई। बल्कि ऐसा मालूम होता है कि विशेष रूप से इन्सानों को बसाने के लिए ही ज़मीन को फ़र्श बना कर उन तमाम चीज़ों का प्रबन्ध किया गया है जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए दरकार (वन्छित) है। गोया ज़मीन पर इन्सान को बसाने का काम एक मन्सूबे (Plan) के तहत अमल में आया या प्रकट हुआ। क्या इस में अल्लाह की रुबूबियत (स्वामित्व) और हिकमत की खुली निशानी मौजूद नहीं है?

5. ज़मीन पर पहाड़ों की मेंखें (Pegs) गाड़ देने से उस की रफ़तार और गर्दिश (चक्कर काटने) में संतुलन (Balance) पैदा हो गया है और उथल पुथल की हालत नहीं रही। इस के अलावा पहाड़ों से इन्सानों को तरह तरह के लाभ होते हैं जैसे दरयाओं की शकल में पानी का ज़खीरा इत्यादि।

6. ऐसा नहीं हुआ कि सिर्फ़ मर्द पैदा कर दिये गये हों या औरतें ही औरतें पैदा कर दी गई हों बल्कि इन्सानों को मर्द और औरत के जोड़े की शकल में पैदा किया गया है। इस जोड़े की हर इकाई अपने शारीरिक और आत्मिक विशेषताओं के लिहाज़ से अलग अलग हैं लेकिन यह फ़र्क़ उन में टकराव और विरोध नहीं बल्कि एकता और मुहब्बत पैदा कर देता है गोया वह एक दूसरे से मिल कर पूर्ण हो जाते हैं। क्या इन्सान की पूर्णता का यह सामान अपने अन्दर अल्लाह की रुबूबियत और हिकमत की कोई निशानी नहीं रखता?

7. नींद इन्सान की थकान को दूर करती है और इस के बाद आदमी ताज़ा दम हो जाता है। अगर नींद की इच्छा अल्लाह तआला ने मनुष्य के स्वभाव में न रखी होती तो लगातार मेहनत करने से उस के अंग जवाब दे देते और वह सुकून भरी ज़िन्दगी गुज़रने के क़ाबिल न रहता। इन्सान को आराम और सुकून पहुँचाने का यह प्रबन्ध कितना आश्चर्यजनक है। क्या यह भी किसी अचानक घटित घटना का परिणाम है या मुदब्बिर (प्रबन्धक) की हिकमत भरी योजना ?

8. अगर ज़मीन पर दिन ही दिन होता तो इन्सान की हिफ़ाज़त और राहत का सामान नहीं हो सकता था। सूरज की लगातार तपिश इन्सान को सुकून और राहत से महरूम कर देती, लेकिन अल्लाह तआला ने ज़मीन को एक ऐसे क़ानून में जकड़ दिया है कि वह अपनी धुरी पर बराबर घुमती रहती है जिस से रात और दिन का सिलसिला क़ायम रहता है। इस तरह रात की चादर इन्सान को अपने अन्दर उसी तरह छिपा लेती है जिस तरह से लिबास। क्या ज़मीन की इस गर्दिश के पीछे जो इस महान उद्देश्य को लिए हुये हैं किसी मुदब्बिर (प्रबन्धक) का हाथ नहीं है?

9. अगर ज़मीन पर रात ही रात होती तो रोज़ी हासिल करने की दौड़ धूप और गुज़र बसर के लिए वह उचित वातावरण इन्सान को हरगिज़ मयस्सर न आता, जिस की बिना पर वह एक बेहतरीन मख़लूक़ (सृष्टि) की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ार रहा है और आर्थिक प्रगति के लिए अनगिनत राहें उस पर खुल गई हैं। क्या यह अल्लाह की रुबूबियत (पर्वरदिगारी) का करिश्मा नहीं है ?

10. मतलब यह कि अल्लाह की पैदा की हुई कायनात की विशालता और फैलाव का अन्दाज़ा इस से कर सकते हो कि नज़र की सीमा तक दिखाई देने वाला आसमान सिर्फ़ पहला आसमान है। ऐसे सात आसमान अल्लाह तआला ने पैदा किये हैं और सूरज, चाँद, तारे इत्यादि को सुदृढ़ बनाया है कि एक लम्बा समय गुज़र जाने के बावजूद उन में टूट फूट के कोई आसार पैदा नहीं हुये और सौन्दर्य (Beauty) में रती बराबर फ़र्क़ नहीं हुआ। एवं कुदरती क़ानून की पकड़ इतनी मज़बूत है कि कहीं से कोई अड़ंगा पैदा नहीं हो सकता। अगर आसमान की व्यवस्था मज़बूत न बनाई गई होती तो ज़मीन की व्यवस्था हरगिज़ क़ायम नहीं रह सकती थी। क्या इस में अल्लाह की कुदरत, रुबूबियत और हिकमत की बड़ी निशानियाँ मौजूद नहीं हैं?

और एक रौशन चिराग पैदा नहीं किया? और क्या हम ने बादलों से मुसलाधार पानी नहीं बरसाया? ताकि उगाएँ उस के द्वारा गल्ला और वनस्पति। और घने बाग। बेशक फैसले का दिन एक मुकर्रर वक्त (निश्चित समय) है, जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो तुम आओगे फ़ौज दर फ़ौज, और आसमान खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे। और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वह सराब (मरीचिका) बन कर रह जायेंगे। बेशक जहन्नम घात में है। (अल-कुआन)

13. और एक रौशन चिराग पैदा नहीं किया?¹¹

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا^{١٣}

14. और क्या हम ने बादलों से मुसलाधार पानी नहीं बरसाया?¹²

وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا^{١٤}

15. ताकि उगाएँ उस के द्वारा गल्ला और वनस्पति।

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا^{١٥}

16. और घने बाग ।

وَجَدَّتْ آلَافًا^{١٦}

17. बेशक फैसले का दिन एक मुकर्रर वक्त (निश्चित समय) है,¹³

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا^{١٧}

18. जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो तुम आओगे फ़ौज दर फ़ौज,¹⁴

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا^{١٨}

19. और आसमान खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे।¹⁵

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا^{١٩}

20. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वह सराब (मरीचिका) बन कर रह जाएंगे।¹⁶

وُسِيرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا^{٢٠}

21. बेशक जहन्नम घात में है।

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا^{٢١}

22. सरकशों का ठिकाना,¹⁷

لِللَّطِغِينَ مَا بَأْ^{٢٢}

23. जिस में वह मुद्दतों पड़े रहेंगे¹⁸

لِسِتِّينَ فِيهَا أَحْقَابًا^{٢٣}

24. वहाँ वह न किसी तरह की ठण्डक का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का,

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا^{٢٤}

25. सिवाये गर्म पानी और पीप के।

إِلَّا صَيْمًا وَغَسَّاقًا^{٢٥}

26. उन के करतूतों का ठीक ठीक बदला।

جَزَاءً وَفَاءً^{٢٦}

27. वह हिसाब की उम्मीद न रखते थे,

إِنَّهُمْ كَانُوا إِلَّا يَرْجُونَ حِسَابًا^{٢٧}

28. और हमारी आयतों को बिल्कुल झुठला दिया था।

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا^{٢٨}

11. सूरज को ऐसा रौशन बनाया गया है कि उस की रौशनी कभी मांद नहीं पड़ती। मौजूदा साइंस की रौशनी में सूरज को देखिये तो खुदा के करिश्मों के पहलू और भी रौशन हो कर सामने आयेंगे। सूरज का ताप (Temperature) एक करोड़ चालीस लाख (१,४०,०००,००) डीग्री सेन्टीग्रेट है। वह ज़मीन से एक सौ गुना से अधिक बड़ा है। उसे ज़मीन से नौ करोड़ो तीस लाख (९,३०,०००,००) मील की दूरी पर रखा गया है जिस की वजह से ज़मीन पर न बेहद गर्मी होती है न बेहद सर्दी, बल्कि जानदारों के लिए जितना ताप होना चाहिए ठीक वही ताप यहाँ रहता है और सूरज के इसी ताप से यहाँ बारिश भी होती है और फसलें भी पकती हैं। फिर क्या तुम्हें इस रौशन चिराग से भी अल्लाह की कुदरत और रुबूबियत के बारे में कोई रौशनी नहीं मिलती?

12. बादलों के द्वारा इन्सानी आबादियों को अधिकता के साथ पानी मुहैया करने का प्रबन्ध और इस के द्वारा ग़ल्ला और सब्जी की पैदावार और घने बाग़ों का उग जाना जिस से इन्सान को रिज़क़ (जिविका) पहुँचाने का काम निरंतर हो रहा है। क्या यह इन्सान की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी नहीं है? क्या इस के पीछे एक ऐसी हस्ती का हाथ दिखाई नहीं देता जो उस की परवरिश का पूरा पूरा प्रबन्ध कर रही है?

13. यह है वह बात जिस के बारे में ऊपर की आयत ६ से १६ में दलील (प्रमाण) पेश की गई है। जिस का खुलासा यह है कि फैसले का दिन (Day of Judgement) एक पक्की बात है और इस के आने का समय भी बिल्कुल निश्चित है। मक्का के मुश्रीकीन इस को मानने से इस कारण इन्कार कर रहे थे कि इस से इन्सान का दोबारा उठाया जाना अनिवार्य ठहरता है जो उन के निकट एक असम्भव बात थी। इसी लिए वह कहते थे कि इन्सान जब मर कर मिट्टी में मिल गया तो उसे दोबारा किस तरह ज़िन्दा किया जा सकता है। वह अपनी संकीर्ण बुद्धि से अल्लाह की कुदरत और हिकमत का सही अन्दाज़ा लगाने में असमर्थ थे इस लिए अक्ल को अपील करने वाला अन्दाज़ अपनाया गया और फैसले के दिन पर अल्लाह की कुदरत और उस की रुबूबियत एवं हिकमत से इस्तेदलाल (Argue) किया गया। जिस का खुलासा यह है कि यह ज़मीन यह आसमान और यह तरह तरह की नेअमतें जिन से तुम्हारी ज़िन्दगी जुड़ी है, किस बात की गवाही दे रही है? क्या इस बात की कि इन का पैदा करने वाला बहुत ही महदूद (सीमित) कुदरत वाला है और उस के कामों में उद्देश्य का कहीं दूर तक पता नहीं चलता और

इस कायनात के अंश बिल्कुल बेतरतीब हैं और ये पूरा कारखाना (Unsystematic) मालूम होता है?

या यह कि कायनात और ज़िन्दगी के यह आसार इस हक़ीक़त को स्पष्ट करते हैं कि तुम्हारा पैदा करने वाला ज़बरदस्त कुदरत का मालिक है और न सिर्फ़ ज़बरदस्त कुदरत का मालिक है बल्कि साथ ही वह रुबूबियत और हिकमत की सिफ़ात (खूबियों) को भी अपने अन्दर रखता है। अल्लाह को इन सिफ़ात का मालिक मान लेने के बाद फैसले के दिन को मान लेने में कोई दुश्चारी बाक़ी नहीं रहती बल्कि इस सिफ़ात का लाज़मी तक्राज़ा क्रार पाती है कि फैसले का दिन बरपा हो। जब यह स्पष्ट हुआ कि अल्लाह ज़बरदस्त कुदरत का मालिक है, फिर उस के लिए मुर्दों को ज़िन्दा करना बेहद आसान बात है। इस के नामुमकिन या असम्भव होने का क्या सवाल? और फिर जो हस्ती इन्सान की रुबूबियत का सामान इतनी तैयारीयों के साथ कर रही है और जिस ने उसे अनगिनत नेमतें प्रदान की हों वह अपनी उन नेअमतों का हिसाब उस से क्यों न लेगी और अपने वफ़ादार बन्दों को इनाम का हक़दार और सरकशों को दण्ड का पात्र न ठहरायेगी? उस की हिकमत इस कायनात की एक एक चीज़ से ज़ाहिर हो रही है। उस का हर काम ज्ञान पर आधारित और योजना बद्ध (Well Planned) है। फिर क्या यह स्वीकार किया जा सकता है कि इन्सान ही की पैदाइश (उत्पत्ति) बेमक़सद हुई है? इसे मर कर मिट्टी में मिल जाना है और इस के बाद कुछ नहीं? अच्छे बुरे में कोई भेदभाव नहीं? अल्लाह तआला को मानने वाले और उस का इन्कार करने वाले, उस के आज्ञाकारी और उस के अवज्ञाकारी सब बराबर हैं? न किसी को इनाम मिलना है न किसी को सज़ा? अल्लाह की अदालत कोई अदालत ही नहीं जहाँ जवाबदेही के लिए हाज़िरी का सवाल हो? क्या इस तरह की बातें तुम्हारी बुद्धि में समाती हैं और उस के हिकमत के गुण से मेल खाती हैं? वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला की जिस हिकमत का परीक्षण इन्सान अपने इर्द गिर्द फैली हुई दुनिया में करता है उस का यह तक्राज़ा है कि फैसले का दिन बरपा हो। इस से कुर्आन की इस ख़बर की भी पूरी ताईद होती है कि बदले का एक दिन मुक़र्रर है। उस रोज़ तमाम इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

14. अर्थात् क्रियामत के दिन बिगुल बजाते ही सारे मुर्दा इन्सान ज़िन्दा हो कर अल्लाह की अदालत में हाज़िर होने के लिए निकल पड़ेंगे।

15. आसमान की हक़ीक़तें आज इन्सान की नज़रों से छिपी हुई हैं लेकिन क्रियामत के दिन इन्सान आसमान के

खुल जाने से उन को अपनी आँखों से देख लेगा।

16. इशारा है इस बात की तरफ़ कि क्रियामत के दिन इस दुनिया की व्यस्था बदल जायेगी। यह ज़मीन एक चटियल मैदान का रूप धारण कर लेगी जहाँ तमाम लोगों को इकट्ठा कर के अदालत बरपा की जायेगी। बड़े बड़े पहाड़ हवा में उड़ रहे होंगे और उन की जगह रेत का मैदान होगा। हश्र के मैदान में उन का कोई अस्तित्व बाक़ी नहीं रहेगा। इस से क्रियामत के दिन की हौलनाकी (Horrors), ज़मीन की बनावट में बहुत बड़े परिवर्तन के उत्पन्न हो जाने और हश्र के मैदान की विशालता का अन्दाज़ा होता है।

17. खुदा के सरकश (नाफ़रमान) बन्दे दुनिया में खुदा से निडर हो कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और यह समझते हैं कि

उनके लिए अज़ाब (यातना) और ख़तरे की कोई बात नहीं है। लेकिन क्रियामत के दिन जहन्नम इस तरह सामने आयेगी जैसे वह घात ही में थी और वह उस में ऐसे फँसेंगे कि फिर कभी उस से निकल न सकेंगे।

18. मतलब यह कि एक दौर के बाद दूसरा दौर, इस तरह वह लगातार अज़ाब (यातना) ही में रहेंगे। इतनी कठोर सज़ा इस लिए कि उन्होंने अल्लाह की बन्दगी के दर पर अल्लाह से बगावत का रास्ता अपनाया। अपने सच्चे उपकारी की नाशुक्री करते रहे और फैसले के दिन को मानने और उस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए किसी तरह आमादा नहीं हुए। अतः जो बीज उन्होंने बोया था उसी के फल वह काटते रहेंगे।



जब कल हड ने हर चीज़ को ललख कर सुरकुषलत कर रखा थल। तो चखो ! अब हड तुम्हारे अज़लब ही में वृद्धल करेंगे। नलश्रय ही (अल्लाह कल) डर रखने वललों के ललए कलमयलबी है। बलग़ और अंगूर, और नवजवलन हड उम्र (सडलन आयू वलली) लड़कीयलँ। और छलकते जलम, वहाँ वह न कोई फुज़ूल बलत सुनेंगे और न झूठी बलत। (अल-कुअन)

29. जब कि हम ने हर चीज़ को लिख कर सुरक्षित कर रखा था।¹⁹

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝

30. तो चखो ! अब हम तुम्हारे अज़ाब ही में वृद्धि करेंगे।

فَذُوقُوا فَلَنتُزِيدُكُمْ الْعَذَابَ ۝

31. निश्चय ही (अल्लाह का) डर रखने वालों के लिए कामयाबी है।²⁰

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝

32. बाग़ और अंगूर,

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝

33. और नवजवान हम उम्र (समान आयु वाली) लड़कियाँ ,

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝

34. और छलकते जाम,²¹

وَكَأْسَادٍ هَاقًا ۝

35. वहाँ वह न कोई फुज़ूल बात सुनेंगे और न झूठी बात।²²

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِدًّا ۝

36. यह तुम्हारे रब की ओर से बदला होगा और काफ़ी ईनाम,²³

جَزَاءٍ مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ حِسَابًا ۝

37. उस की तरफ़ से, जो आसमानों और ज़मीन का, और जो कुछ उन के बीच है उस का मालिक है। रहमान जिस से बात करने का किसी को यारा नहीं।²⁴

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

38. जिस दिन रूह²⁵ (अल-अमीन) और फ़रिश्ते सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे । कोई बात न कर सकेगा सिवाय²⁶ उस के जिसे रहमान इजाज़त दे और वह बिलकुल दुरुस्त बात कहेगा।

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝

39. यह दिन बरहक्र (सत्य) है।²⁷ तो जो चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले।

ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ مَا بَا ۝

40. हम ने तुम्हें एक ऐसे अज़ाब (यातना) से आगाह कर दिया है जो करीब आ लगा है।²⁸ जिस दिन आदमी देख लेगा कि उस ने आगे के लिए क्या किया है²⁹ और काफ़िर (इन्कार करने वाला) कहेगा, काश मैं मिट्टी होता।³⁰

إِنَّا أَنْذَرْنَكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَلَيْتَنِي كُنْتُ تَرَابًا ۝

19. अर्थात् उन के कर्मों का रेकार्ड हम तैयार कर रहे थे गोया हर व्यक्ति की पूरी बोलती फ़िल्म तैयार की जा रही थी। जिस में सिर्फ कहनी और करनी ही का नहीं, नियतों तक को रेकार्ड किया जा रहा था और यह इस भुलावे में पड़े रहे कि हम तो अपनी मनमानी करने के लिए आज़ाद हैं और उन के करनी का कोई रेकार्ड तैयार नहीं किया जा रहा है। क्यों कि उन्हें न कोई ऐसा कैमरा दिखाई देता था जो उन की अमली ज़िन्दगी (Practical Life) की तस्वीर खींच रहा हो और न कोई टेप रेकार्ड जो उन की बातों के कैसिट तैयार कर रहा हो।

20. यहाँ मुत्तक्रीन (अल्लाह का डर रखने वाले) का शब्द “तागीन” (सरकश) के मुकाबले में इस्तेमाल किया गया है। अर्थात् वह लोग जो अल्लाह और बदले के दिन पर ईमान रखते हैं उस की आयात को मानते हैं और इस तरीके से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं कि उन्हें अपने कर्मों की जवाबदेही करनी है।

21. इस से मुराद शुद्ध शराब के जाम हैं।

22. अर्थात् जन्नत का माहौल बेहद पाकीज़ा होगा सोसाइटी भी पाक और खाने पीने की तमाम वस्तुएँ भी पाक। यहाँ तक कि वहाँ कि शराब भी दुनिया की शराब जैसी नहीं होगी कि आदमी पी कर बकवास करने लगे। बल्कि यह बेहद पाकीज़ा होगी और उस से ऐसी कैफ़ियत पैदा होगी जिस में बेहुदगी का कोई अंश न होगा। इसी तरह यहाँ फ़ुज़ूल (व्यर्थ) की बातें और तमाशे भी नहीं होंगे और न झूट एवं तोहमतों व आरोपों का वजूद होगा बल्कि वह एक गम्भीर एवं प्रसन्नता का माहौल होगा जहाँ हर तरफ़ इख़लाक़ (नैतिकता) और शराफ़त ही के नमूने दिखाई देंगे।

23. मुत्तक़ियों (अल्लाह का डर रखने वालों) को सिर्फ़ उन के नेक कामों का इनाम देने पर ही बस नहीं किया जायेगा बल्कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी तरफ़ से काफ़ी उपहार भी प्रदान करेगा।

24. मतलब क्रियामत के दिन जब अल्लाह तआला अपनी अदालत बरपा करेगा तो उस अदालत के रोब का हाल यह होगा कि कोई उस के सामने ज़ुबान खोलने की जुअत न कर सकेगा। इस से मुश्क़ीन के इस विचार का खण्डन होता है कि उन के देवी देवता जो चाहेंगे खुदा से मनवा सकेंगे।

25. रुह से मुराद रुहुलअमीन अर्थात् ज़िब्रील अलैहिस्सलाम हैं। फ़रिश्तों के सरदार होने की हैसियत से उन का वर्णन विशेष रूप से किया गया है और मक़सद बताने का यह है कि क्रियामत के रोज़ जब अल्लाह अदालत बरपा फ़रमायेगा तो फ़रिश्ते यहाँ तक कि ज़िब्रील अलैहिस्सलाम भी पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) खड़े होंगे। सब पर हैबत छाई होगी और किसी की यह मजाल न होगी कि बिना इजाज़त बोल सके।

26. इस से अभिप्राय सिफ़ारिश के ग़लत विचारों का खण्डन है जिस में धार्मिक लोग जकड़े हुए हैं। जहाँ तक मुश्क़ीन का सम्बन्ध है वह यह ख़याल करते हैं कि अगर क्रियामत आ ही गई और कर्मों की जवाबदेही के लिए अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना ही पड़ा तो यह देवी देवता जिन की वह पूजा करते रहे हैं वह हमारे सिफ़ारिशी बन कर खड़े होंगे और हमें अज़ाब (यातना) से छुटकारा दिलवा के रहेंगे। लेकिन कुर्आन बताता है कि पहले तो किसी “देवी देवता” का आख़िरत में वुजूद ही नहीं होगा। सब के सब अल्लाह के बेबस बन्दे की हैसियत से पेश होंगे और सारे अधिकार अल्लाह ही के हाथ में होंगे और अल्लाह की अदालत के दबदबे का यह आलम होगा कि निकटस्थ (विशेष, समानित) फ़रिश्ते बात करने की जुअत न करेंगे अगर सिफ़ारिश के लिए कोई ज़ुबान खोल सकेगा तो वही जिस को अल्लाह इजाज़त दे और इस सूरत में वह ठीक और दुरुस्त बात ही कहेगा और मुश्क़ीन के लिए सिफ़ारिश कोई भी नहीं कर सकेगा क्योंकि ऐसे लोगों के हक़ में सिफ़ारिश करना, अल्लाह के इस फैसले की बुनियाद पर कि जो ऐसे जुर्म में लिप्त रहे जो क्षमा योग्य नहीं, दुरुस्त बात न होगी। अल्लाह की इजाज़त के बाद किसी की सिफ़ारिश के लिए कोई ज़ुबान खोलेगा भी तो सिर्फ़ ऐसे गुनहगार बन्दों के लिए जो ईमान वाले हों और जिन के लिए अल्लाह सिफ़ारिश कुबूल करना पसन्द फ़रमाए। लिहाज़ा कोई व्यक्ति इस भुलावे में न रहे कि वह चाहे कुफ़्र और शिर्क (खुदा का इन्कार करने या कई खुदाओं को मानने) का कुसूरवार क्यों न हुआ हो और चाहे उस ने एक सरकश की हैसियत से ज़िन्दगी क्यों न गुज़ारी हो, किसी न किसी के वसीले से उस की मुक्ति हो जायेगी।

27. अर्थात् बदले का दिन अनुमान और अटकल की बातें नहीं हैं बल्कि एक वास्तविकता और सत्य है जिस की ख़बर पूरी सच्चाई के साथ तुम्हें दी जा रही है।

28. क़रीब इस हिसाब से कि दुनिया की अधिकतर उम्र गुज़र चुकी है अब क्रियामत के आने में जो समय बाक़ी रह गया है वह बहुत ही थोड़ा है। वैसे भी समय एक सम्बन्धी (Relative) वस्तु है। क्रियामत के दिन जब कि ज़मान-व-मकान (Space & Time) के पैमाने बदल जाएँगे। इन्सान ने जो वक्त दुनिया में गुज़ारा था उसे बहुत थोड़ा मालूम होगा।

29. इन्सान दुनिया में अच्छे बुरे जो काम भी करता है अवश्य ही उस का एक परिणाम और एक प्रभाव है जो दूसरी ज़िन्दगी (आख़िरत) में जाहिर होगा। इस हकीक़त को “मा क़दमत् यदाहु” مَا قَدَّمَ يَدَاهُ (जो उस के हाथों ने आगे भेजा) के शब्द से दर्शाया गया है। क्यों कि इन्सान का हर अमल उस के अपने हाथों से बीज बोने जैसा है जिस के फल वह आने वाली

ज़िन्दगी में काटेगा ।

30. अर्थात् जो लोग बदले के दिन को मानने और उस की बुनियाद पर ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारने से इन्कार कर रहे हैं वह अच्छी तरह समझ लें कि बदले का दिन (अथवा फैसले

का दिन) बरपा होगा और इन्सान अपने करतूत अपने सामने देख लेगा तो ऐसे लोगों के हिस्से में सिवाय हसरत और पछतावे के कुछ नहीं आयेगा. उस समय आखिरत का इन्कार करने वाले हर आदमी को एहसास होगा कि काश वह मर कर मिट्टी में मिल गया होता और हिसाब देने की नौबत ही न आती।



७९. अन्-नाज़िआत

नाम : सूरह की शुरुआत वन्-नाज़िआत से हुई है जिस के सम्बन्ध से इस सूरह का नाम अन्-नाज़िआत रखा गया है। यह लफ़्ज़ हवाओं की सिफ़त (गुण) के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।

नाज़िल होने का समय:- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह नबा के फ़ौरन बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय:- इस सूरह का विषय क्रियामत का वकूअ (घटित) होना और कर्मों का हिसाब चुकाने के लिए इन्सान का दोबारा उठाया जाना है। पसमन्ज़र (पृष्ठ भूमि) में खास तौर से वह सरकश और फिरऔन सिफ़त लोग हैं जो अपनी दुनिया बनाने में मस्त रहते हैं।

कलाम की तरतीब:- आयत १ से ५ में बदले के दिन पर हवाओं को गवाही में पेश किया गया है।

आयत ६ से १४ में क्रियामत की घटना का चित्र प्रस्तुत करते

हुए इन्कार करने वालों के एतिराज़ का ज़िक्र किया गया है।

आयत १५ से २६ में हज़रत मूसा का संक्षिप्त वर्णन हुआ है कि किस तरह फिरऔन उन की दअवत को ठुकराने के नतीजे में भयानक अन्जाम से दोचार हुआ। यह गोया प्राकृतिक रूप से कर्मों का फल पाने पर इतिहास को गवाह ठहराना है।

आयत २७ से ३३ में इन्सानों की दोबारा पैदाइश के सम्भव होने पर अल्लाह तआला की कुदरत के गुणों से प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

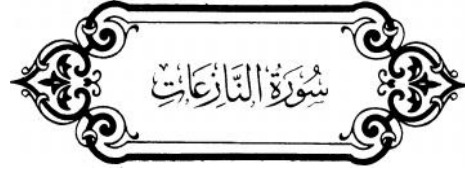
आयत ३४ से ४१ में बताया गया है कि जिस दिन क्रियामत की घटना पेश आयेगी, सरकशों और दुनिया परस्तों का अन्जाम कैसा बुरा होगा। और अल्लाह से डरने वालों का अन्जाम कितना आनन्ददायक होगा।

आयत ४२ से ४६ में क्रियामत का इन्कार करने वालों के इस सवाल का जवाब दिया गया है कि आखिर क्रियामत आयेगी कब?

७९.सूरह अन्-नाज़िआत

आयतें : 46

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्रसम है उन (हवाओं)की जो (बादलों को)
शिद्दत के साथ घसीटती हैं।¹

وَالَّذِي عَرَقْنَا^١

2. और उन की जो नरम नरम चलती हैं।

وَالَّذِي شَطَّتْ نَشْطًا^٢

3. और उन की जो तेज़ रफ्तार हैं।²

وَالَّذِي سَبَّحًا^٣

4. फिर जो (हुक्म की तामील में) बाज़ी ले जाती
हैं।

فَالَّذِي سَبَّحًا^٤

5. और एक काम (बारिश) का इन्तेज़ाम करती
हैं।³

فَالْمُدَبِّرَاتِ أُمْرًا^٥

6. जिस दिन ज़लज़ले का शदीद झटका लगेगा।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاحِفَةُ^٦

7. उस के पीछे दूसरा झटका आयेगा।⁴

تَتَّبِعُهَا الزَّارِقَةُ^٧

8. कितने दिल उस दिन धड़क रहे होंगे।⁵

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ^٨

9. निगाहें उन की झुकी होंगी।

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ^٩

10. कहते हैं, क्या हम फिर पहली हालत में लौटाए
जायेंगे ?⁶

يَقُولُونَ ءَاِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَاوِرَةِ^{١٠}

11. (क्या उस वक्त) जब की हमारी हड्डियाँ गल
चुकी होंगी ?⁷

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا تَّخْرَعُ^{١١}

12. कहते हैं, यह लौटना तो बड़े घाटे का होगा।⁸

قَالُوا تِلْكَ إِذْ أَكَرَّةٌ خَاسِرَةٌ^{١٢}

13. वह तो बस एक डाँट होगी,⁹

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ^{١٣}

14. कि वह यकायक मैदान में आ मौजूद होंगे¹⁰

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ^{١٤}

1. शुरु की पाँच आयतों में जिन चीजों की क्रसम खाई गई है उन की सिर्फ सिफात बयान की गई हैं। उन चीजों का जिक्र सराहत के साथ (स्पष्ट रूप से) नहीं हुआ है। और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में कोई हदीस नकल हुई है। रहे तफसीरी क़ौल (वचन) तो वह कई हैं। कुछ ने फ़रिश्ते मुराद लिये हैं और कुछ ने सितारे। किसी के नज़दीक घोड़े मुराद हैं और किसी के नज़दीक बादल। इन में ज़्यादा मशहूर बात जिस को आम तौर से मुफ़स्सिरीन (तफ़सीर करने वालों) ने इस्तिज़ाया किया है यह है कि फ़रिश्ते मुराद हैं। हम ने निम्न लिखित कारणों के आधार पर हवाएँ मुराद ली हैं।

A) कुर्आन करीम में जहाँ इस तरह की क्रसमें खाई गई हैं वह इस्तेदाल या इस्तिशहाद (प्रमाण या साक्ष्य प्रस्तुति) के तौर पर हैं। यहाँ इन्सान के दोबारा जिन्दा किये जाने पर इस्तिदाल करना मक़सूद है जो जाहिर है महसूस चीज़ ही से हो सकता है और हवाएँ एक महसूस चीज़ हैं जब कि फ़रिश्ते महसूस चीज़ नहीं हैं।

B) बयान की गई सिफ़तें फ़रिश्तों और सितारों वग़ैरा के मुक़ाबले में हवाओं से ज़्यादा मेल खाती हैं।

C) अरबी में “नज़ाए’अ’खास तरह की हवाओं को कहते हैं (लिसानुल अरब लफ़्ज़ नज़ाअ) नाज़िआत इस से मिलताजुलता लफ़्ज़ है। कुर्आन में तफ़्ज़ “तन्ज़िअु” हवा के लिए इस्तेमाल हुआ है।

تَنْزِعُ النَّاسَ كَانَهُمْ أَعْجَازٌ نَّحْلٍ
مُنْقَعِرٌ (القرآن: २०)

“वह हवा लोगों को इस तरह उखाड़ फेंकती थी जैसे जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने” (अलक़मर-२०)

D) कुर्आन में दूसरी जगहों पर हवाओं की क्रसम क्रियामत और बदले के दिन पर युक्तिवाद के तौर पर खाई गई है। (मुलाहज़ा हो सूरह ज़ारियात और सूरह मुर्सलात) इस लिए यहाँ भी जब कि अभिप्राय बदले का दिन है तो हवाएँ मुराद लेना कुर्आन के बयान से ज़्यादा समीप हैं।

E) यहाँ सिफ़ते स्त्रीलिंग प्रयोग हुई है और हवाओं के लिए स्त्रीलिंग का प्रयोग अरबी में परिचित एवं प्रचलित है।

2. “अस्साबिहात” السَّابِحَات (तेज़ रफ़्तार) असल में घोड़ों की विशेषता है। यहाँ हवाओं को घोड़ों से उन के तेज़ रफ़्तार होने की बिना पर तश्बीह (उपमा) दी गई है। गोया बादल हवाओं के काँधों पर सवार हैं और वह सरपट अपनी मन्ज़िल की ओर चले जा रहे हैं।

3. इन आयात में हवाओं की अवस्था और उन के काम

बयान किए गये हैं। जिस से बारिश की व्यवस्था कार्यान्वित होती है। ये हवाएँ ही हैं जो बादलों को हज़ारों मील से घसीट कर लाती हैं और जब किसी इलाके में बादल जमा हो जाते हैं तो हवाएँ नर्म नर्म चलने लगती हैं जिस से वातावरण खुशगवार हो जाता है।

ये हवाएँ जो लाखों और करोड़ों लीटर पानी का वज़न उठाये चलती हैं तो ऐसा महसूस होता है जैसे तेज़ रफ़्तार घोड़े जो किसी मुहिम के लिए दौड़ाये गये हों और जिस तरह कुछ घोड़े कुछ को पछाड़ जाते हैं इसी तरह कुछ हवाएँ कुछ पर बाज़ी ले जाती हैं। वातावरण में हवाओं के इस हमले को साबिकात से ताबीर किया गया है। बारिश का यह इन्तेज़ाम हवाओं ही के द्वारा अमल में आता है इस लिए मजाज़न (लाक्षणिक) इन को “فَالْمُدْبِرَاتِ أَمْراً” “फलमुदब्बिराति अमरा” (एक काम अर्थात् बारिश को तक्रसीम करने वाली) की उपमा दी गई है। जिस तरह सूरह ज़ारियात में इन्हें “فَالْمُقْسِمَاتِ أَمْراً” “फल-मुक़स्सीमात अमरा” (एक काम अर्थात् वर्षा को विभाजित करने वाली) से ताबीर (कल्पना) किया गया है।

इन हवाओं को गवाही में पेश कर के जिस बात पर बहस की गई है वह यह है कि बदले के दिन का पेश आना और इन्सानों का दोबारा उठाया जाना बिल्कुल सही है। बहस इस प्रकार है कि हवाओं की यह व्यवस्था, अल्लाह तआला की कुदरत और हिकमत, उस की रूबूबियत, अज़मत और जलाल की ज़बरदस्त निशानियाँ पेश करती हैं और इन पर सोचने और विचार करने की दअवत देती हैं। बारिश की हवाएँ जब चलती हैं तो अपनी विभिन्न हालतों के द्वारा गफ़लत में पड़े हुए इन्सान को चौंका देने का सामान करती हैं। जैसे बादलों को घसीटने का काम जिस के साथ कड़क और बिजली भी होती है और जो वातावरण को सुहाना बनाये हुए नर्म नर्म चलती हैं और कभी तेज़ रफ़्तार हो जाती हैं। इसी तरह हवाओं के विभिन्न गुरूप जब आक्रमण करते हैं तो परवरदिगार की आज्ञा का पालन करने और उस को लागू करने में उन के बाज़ी ले जाने की विशेषता बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। रहा तदबीरे अम्र (इन्तिज़ाम) का मामला तो ये हवाएँ किसी क्षेत्र में दया के बादल बरसाती हैं और किसी क्षेत्र को बारिश से महरूम (वंचित) रख कर बादल आगे निकल जाते हैं। कहीं ये तूफ़ान लाती हैं और वृक्षों और मकानों को उखाड़ फेंकती हैं तो कहीं सुहावनी चलती हैं। कभी गर्म लू का रूप धारण कर जाती हैं कभी सुबह को शीतल हवाओं के रूप में प्रकट होती हैं। अतः ये हवाएँ यँहि नहीं चलती बल्कि दिलों को स्पर्श करते हुए चलती हैं और हर उस व्यक्ति के अन्दर जो सोचता और विचार करता तथा हक़ीक़त को निष्पक्ष रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार रहता है, यह विश्वास पैदा करती है

कि इस कायनात का पैदा करने वाला ज़बरदस्त कुदरत का मालिक है और वह बेहद हिकमत के साथ इस पर शासन कर रहा है। इस का लाज़मी तक्राज़ा है कि इस दुनिया का भी कोई लक्ष्य और इस का कोई उद्देश्य हो और इन्सान को उस के कर्मों का पूरा बदला मिले। गोया हवाओं की यह व्यवस्था कर्मों का फल मिलने की गवाही पेश करती है। और इन्सान की दूसरी पैदाइश को न केवल सम्भव बल्कि उस की हिकमत को न्याय उचित माँग करार देती है। सारांश यह कि हवाओं के काम और उन की अवस्थाओं में प्रतिदान (अच्छा, बुरा बदला) की निशानियाँ स्पष्ट हैं और उन की गवाही का एक पहलू यह भी है कि जो हस्ती वर्षा काल की हवाओं द्वारा मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करती है वह निस्संदेह मुर्दों को ज़िन्दा कर देने वाली “हवाएँ” भी चला सकता है। और जिस तरह हवाएँ समुद्र से पानी की बूंदों को भाप की सूरत में आसमान पर फैला देती हैं और फिर उन बिखरी भापों को समेट कर पानी के रूप में बरसा देती हैं। इसी तरह मुर्दा इन्सान के बिखरे अंशों को समेट कर उसे दोबारा ज़िन्दा करने का कारनामा भी सम्भव है। और जब इस की खबर खुद अल्लाह तआला दे रहा है तो फिर इस में शक एवं संदेह का क्या सवाल? वास्तव में क्रियामत से इन्कार अल्लाह की कुदरत एवं हिकमत के गुणों से इन्कार के समान हैं।

4. पहला झटका वह है जब ज़मीन का मौजूदा निज़ाम दरहम बरहम (उलट पलट) होगा और तमाम इन्सान मर जाएंगे और दूसरा झटका वह है जब तमाम मुर्दे ज़िन्दा हो कर ज़मीन से निकल आएंगे। उस समय पृथ्वी की आकृति बदल चुकी होगी और उसे एक नये निज़ाम के साथ क्रायम कर दिया गया होगा।

5. दिल, क्रियामत की हौलनाकी और बाज़पुर्स (पूछ ताछ) के डर से धड़क रहे होंगे। यह हाल काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और फ़ासिकों (गुनाहगारों) का होगा। रहे मोमिनीन (ईमान लाने वाले) स्वालिहीन (नेक लोग) तो उन्हें कोई परेशानी का धड़का नहीं होगा।

6. अर्थात् क्या मरने के बाद फिर हमें ज़िन्दा किया जाएगा?

7. यह थी क्रियामत का इन्कार करने वालों की शंका कि जब इन्सान का भौतिक अस्तित्व (माद्दी वुजूद) नहीं रहेगा तो फिर वह किस तरह अस्तित्व में आ सकेगा। और जब उस का अस्तित्व ही मुहाल है तो हश्र और जज़ा एवं सज़ा का सवाल ही पैदा नहीं होता। उन की इस शंका का समाधान हो सकता था अगर वह साफ़ ज़ेहन (Unprejudiced Mind) से इस कायनात की व्यवस्था का अध्ययन करते जिसकी दअवत कुर्आन दे रहा है। यह अध्ययन कायनात बनाने वाले के बारे में उन्हें पहचान प्रदान करता और उन्हें महसूस होता कि ज़मीन से ले कर आसमान तक और हवाओं से ले कर बारिश तक कायनात की हर चीज़ कुर्आन के बयान की तस्दीक़ (पुष्टि) कर रही है।

8. इस तरह आख़िरत (परलोक) का वह मज़ाक़ उड़ाते थे कि अगर वास्तव में हमें दूसरी ज़िन्दगी मिली जिस की सूचना यह नबी हमें दे रहा है तो वह ज़िन्दगी बड़े घाटे की होगी क्यों कि हम इस का इन्कार करते रहे और इस के लिए हम ने कोई तैयारी नहीं की।

9. अर्थात् इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करने के लिए अल्लाह तआला को कोई ख़ास तैयारी नहीं करनी पड़ेगी बल्कि उसका सिर्फ़ एक हुक्म इस के लिए काफ़ी होगा और यह हुक्म डॉट की सूरत में होगा जिसे पूरी ज़मीन पर एक ही समय में प्रसारित (नश्र) किया जायेगा।

10. अर्थात् इसी गोश्त पोस्त के साथ इन्सान ज़मीन की सतह पर आ मौजूद होगा। दूसरे शब्दों में इन्सान मरने के बाद न जानवर का रूप धारेगा और न किसी दूसरी मख़्लूक का। बल्कि क्रियामत के दिन वह अपनी पहली हालत में ही ज़मीन से निकल खड़ा होगा।



क्या तुम्हें मूसा की घटना की खबर पहुँची? जब कि उस के रब ने उसे तुवा की पवित्र वादी में पुकारा । फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। और उस से कहो क्या तू चाहता है कि पाकीज़गी अपनाये, और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ कि तू उस से डरने लगे। फिर (मूसा ने) उस को बड़ी निशानी दिखाई। मगर उस ने झुठलाया और न माना। (अल-कुअरुन)

15. क्या तुम्हें मूसा की घटना की खबर पहुँची? ¹¹

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

16. जब कि उस के रब ने उसे तुवा की पवित्र वादी में पुकारा। ¹²

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝

17. फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। ¹³

إِذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

18. और उस से कहो क्या तू चाहता है कि पाकीज़गी अपनाये, ¹⁴

فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزْكَىٰ ۝

19. और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ कि तू उस से डरने लगे। ¹⁵

وَاهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْتَلَىٰ ۝

20. फिर (मूसा ने) उस को बड़ी निशानी दिखाई। ¹⁶

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝

21. मगर उस ने झुठलाया और न माना।

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

22. फिर पलटा और मुखालिफ़त में सरगर्म हो गया। ¹⁷

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

23. और लोगों को जमा कर के एलान किया।

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝

24. और कहा कि मैं हूँ तुम्हारा सब से बड़ा रब। ¹⁸

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝

25. आखिरकार अल्लाह ने उसे आखिरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ लिया।

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝

26. बेशक इस में बड़ा सबक है हर उस आदमी के लिए जो डरे। ¹⁹

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۝

27. क्या तुम लोगों को पैदा करना ज़्यादा दुश्वार है या आसमान को? उस ने इस को बनाया। ²⁰

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا مِّنَ السَّمَاءِ بَنَاهَا ۝

28. इस की छत बुलन्द की, ²¹ और इस को दुरुस्त और हमवार किया, ²²

رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّيَهَا ۝

29. इस की रात ढाँप दी और इस का दिन निकाला। ²³

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝

11. यह इतिहास से गवाही प्रस्तुत की गई है कि रसूलों को झुठलाने और सरकशी एवं बगावत का मार्ग अपनाने वालों पर अल्लाह तआला इस दुनिया में अज़ाब का कोड़ा बरसाता रहा है जिस की खुली मिसाल फ़िरऔन और उस का लश्कर है जो तबाही से दोचार हुआ। इस में करमों के न्यायोचित फल के क़ानून की एक झलक देखी जा सकती है जो क्रियामत के दिन हरकत में आएगा।

12. “तुवा” उस वादी का नाम है जो सीना के पहाड़ में है उसे पवित्र इस लिए फ़रमाया कि अल्लाह ने यहाँ तजल्ली फ़रमाई थी और हज़रत मूसा को नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया था।

13. फ़िरऔन (Pharoah) मिस्र के पुराने बादशाहों का लक़ब (उपनाम) है और जिस फ़िरऔन से हज़रत मूसा को मामला पेश आया था वह लगभग १४०० पू.ई. मिस्र में शासक था। फ़िरऔन की सरकशी यह थी की वह अपने को खुदा का बन्दा समझने के बजाय आज़ाद और खुदमुख्तार मसज़ता था। स्वयं रब्बे-आला (सर्वोच्च स्वामी) होने का दावेदार था और हुकूमत एवं शासन के सारे काम अल्लाह से कुफ़्र और बगावत की बुनियाद पर अन्जाम देता था। उस ने खुदसरी (उदण्डता) की बिना पर अल्लाह के बन्दों के साथ जुल्म एवं ज़ब्र का रवैय्या अपना रखा था। अतः वह उस समय की मुस्लिम (फ़रमाबरदार) क़ौम “बनी इस्राईल” पर बेहद जुल्म ढा रहा था।

14. पाकीज़गी अपनाने का मतलब इस्लाम कुबूल करना है जो इन्सान को कुफ़्र और शिर्क की गन्दगियों से पाक करता है और ईमान और अच्छे कामों द्वारा उसे संवारता है।

15. अक़ीदों और कर्मों की पाकीज़गी का आधार अल्लाह का ख़ौफ़ (भय) है और अल्लाह का ख़ौफ़ उसी सूरत में पैदा हो सकता है जब कि इन्सान को खुदा की सही माअरिफ़त (पहचान) हासिल हो जाये। “रब की राह दिखाऊँ” से इशारा इसी माअरिफ़त इलाही (खुदा की पहचान) की तरफ़ है।

16. बड़ी निशानी से मुराद लाठी के साँप बन जाने का चमत्कार है जो मूसा अलैहिस्सलाम को दिया गया था और जो इस बात की खुली निशानी थी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल बना कर भेजे गये हैं।

17. ताकि लोग हज़रत मूसा पर ईमान न लायें और उन की दअवत कुबूल न करें।

18. पुराने ज़माने के बादशाह सिर्फ़ हुकूमत (सत्ता) ही के दावेदार नहीं होते थे बल्कि प्रजा से अपनी पूजा भी कराते थे ताकि लोगों को उन के साथ लगव हो। उन की हुकूमत मज़बूत हो और वह पूरी खुदाई शान (ऐश्वर्य) के साथ हुकूमत कर सकें।

अपनी इसी महानता (पवित्रता) को मनवाने के लिए वह अपना रिश्ता सितारों और देवी देवताओं से भी जोड़ते थे। और उन के अवतार होने का दावा करते थे। फ़िरऔन भी अपनी परस्तिश लोगों से कराता था और इस अर्थ में अपने सर्वोच्च स्वामी (रब्बे-आला) होने का दावेदार था। उस वक्त मिस्र में बुत परस्ती प्रचलित थी और फ़िरऔन ने अपने अलावा किसी बुत की परस्तिश को क़ानूनी तौर पर मना नहीं किया था। इस से ज़ाहिर है कि उस का अपने ईश्वरत्व और अपने सर्वोच्च स्वामी होने का दावा मूसा अलैहिस्सलाम के तौहीद (एकेश्वरवाद) की दअवत के मुकाबले में था। वह दुसरे खुदाओं को जो नकारता था वह मात्र मूसा अलैहिस्सलाम को ज़िच करने के लिए था।

फ़िरऔन के इस दावे का यह मतलब लेना सही न होगा कि वह कायनात का सृष्टा होने का दअवेदार था। क्यों कि यह दावा तो कोई मूर्ख ही कर सकता है। इसी तरह इस का यह मतलब लेना भी सही न होगा कि वह राजनीतिक अर्थों में अपने को इलाह और रब्बे-आला कहता था। अगर फ़िरऔन का यह दावा मात्र राजनितिक अर्थ में होता, तो वह लोगों से यह न कहता कि

“إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ” (المؤمن: २५)

“मुझे अन्देशा है कि मूसा तुम्हारा दीन बदल न डाले,” (सूरह मोमिन: २६) क्यों कि मात्र राजनीतिक शासन (Political Lordship) का दावा करने वाले व्यक्ति को इस से क्या मतलब कि लोगों का मज़हब बाक़ी रहता है या बदल जाता है? इसी तरह फ़िरऔन हज़रत मूसा से यह भी न कहता कि

أَجْتَنَّبُ لِتَلْفِظَتَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا . (يونس: ८४)

(क्या तू इस लिए आया है कि हमें अपने आबाई मज़हब (पैतृक धर्म) से हटा दे, (सूरह यूनस: ८७)

19. अर्थात् जिन लोगों के अन्दर अल्लाह का कुछ डर है उन के लिए इस घटना में बड़ा सबक़ इस बात का कि यह दुनिया अंधेर नगरी नहीं है बल्कि अल्लाह अपने न्याय विधान के साथ इस पर शासन कर रहा है। फ़िरऔन जैसे अत्याचारी और वैभवी बादशाह पर भी सबक़ सिखाने वाला कोड़ा बरसा है। इस लिए नाफ़रमानों को इस दुनिया में जो ढील मिलती है उस से ये नतीजा निकालना सही नहीं है कि इन्सान को अल्लाह के सामने अपने कर्मों के सिलसिले में कोई जवाबदेही नहीं करनी है और न ही करमों का फल मिलने के क़ानून की कोई हक़ीक़त है।

20. अर्थात् आसमान की सृष्टि जो अन गिनत सितारों, अक्रल को हैरत में डाल देने वाली कहकशाओं (आकाशगंगा) विशाल एवं भव्य ग्रहों, और ज़बरदस्त निज़ामे शम्सी (Solar

System सौर परिवार) पर आधारित है और जिन के बीच कमाल दर्जे का प्रबन्ध पाया जाता है, कोई आसान काम नहीं है। लेकिन जब अल्लाह तआला के लिए विशाल एवं भव्य जगत को पैदा करना (उत्पत्ति) आसान हुआ तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा करना उस के लिए क्यों मुश्किल हो? क्या इतनी साफ़ और खुली बात भी तुम्हारी बुद्धि में नहीं समाती?

21. आसमान की बुलन्दी का अन्दाज़ा इस से किया जा सकता है कि कुछ सितारे इतनी दूरी पर हैं कि उन की रौशनी को ज़मीन तक पहुँचने में कई नूरी साल (Light year) लग जाते हैं।

22. अर्थात् आसमान का सिर्ष माद्दा (Matter) पैदा कर के नहीं छोड़ दिया बल्कि उस का माद्दा पैदा करने के बाद उस से विशाल एवं भव्य कायनात को साकार किया। उस के हर हर विभाग को आपस में सम्बद्ध व सहायक किया और ऐसा सुव्यवस्थित किया कि मालूम होता है ऊपरी जगत एक सजी सजायी और रौनक भरी महफ़िल है जो हर देखने वालों को मोहित करती और सोचने एवं विचार करने पर उकसाती है।

23. दिन और रात को आसमान से सम्बन्धित करना इस लिहाज़ से है कि इन्सान को रात और दिन के आसार आसमान पर ज़ाहिर होते दिखाई देते हैं।



इस के बाद ज़मीन को बिछाया। इस में से इस का पानी और चारा निकाला। और पहाड़ इस में गाड़ दिये। ताकि तुम्हारी और तुम्हारे मवेशियों के जीवन का सामान हो। फिर जब वह बड़ा हंगामा बरपा होगा। जिस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा। और दोज़ख़ हर देखने वाले के लिए बेनिकाब कर दी जायेगी। (अल-कुआन)

30. इस के बाद ज़मीन को बिछाया।²⁴

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

31. इस में से इस का पानी और चारा निकाला।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

32. और पहाड़ इस में गाड़ दिये।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

33. ताकि तुम्हारी और तुम्हारे मवेशियों के जीवन का सामान हो।²⁵

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

34. फिर जब वह बड़ा हंगामा बरपा होगा।²⁶

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

35. जिस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा।²⁷

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

36. और दोज़ख हर देखने वाले के लिए बेनिकाब कर दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

37. तो जिस ने सरकशी की होगी,²⁸

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

38. और दुनिया की ज़िन्दगी को वरीयता दी होगी,²⁹

وَأَشْرَىٰ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

39. दोज़ख ही उस का ठिकाना होगा।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

40. अलबत्ता जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा होगा³⁰ और अपने नफ़्स को बुरी ख्वाहिशों से रोका होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

41. जन्नत उस का ठिकाना होगी।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

42. (ऐ नबी !) यह लोग तुम से क्रियामत के बारे में पूछते हैं कि वह घड़ी कब आ ठहरेगी।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

43. उस का वक्त बताने से तुम्हें क्या वास्ता।³¹

فَيَمُوتُ أَمَّا مَنْ ذَكَرَهَا ﴿٤٣﴾

44. उस का इल्म तो तुम्हारे रब ही को है।

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

45. तुम्हारा काम सिर्फ उन लोगों को ख़बरदार करना है जो उस से डरें।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرُ مَنِ يَحْشُرْهَا ﴿٤٥﴾

46. जिस रोज़ वह उसे देख लेंगे तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि वह (दुनिया में) एक शाम या एक सुबह से अधिक नहीं ठहरे थे।³²

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

24. इस का मतलब यह नहीं है कि पहले आसमान को पैदा किया और इस के बाद ज़मीन को बल्कि मतलब यह है कि आसमान के अलावा ज़मीन को भी पैदा किया और उसे बिछाया। आसमान के कमालात (कौशल) और ज़मीन की नेमतें दोनों ग़ौर करने के लायक़ हैं।

25. ज़मीन की यह दया एवं हिकमत से भरी व्यवस्था एक महान योजना का पता देती है और कुर्आन इस योजना की पुष्टि करता है कि वह मृत्यु के पश्चात मिलने वाला जीवन और कर्मों का बदला है।

26. अर्थात् क्रियामत जो इस कायनात का सब से बड़ा हंगामा है।

27. इन्सान जो कुछ इस दुनिया में करता है वह सब उस के ज़ेहन के पर्दों पर अंकित (नक्श) हो जाता है। इसी बिना पर वह अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे हुए वर्षों के वाकिआत अपनी याद्दाशत की मदद से याद करता है। यह स्वयं इस बात की दलील है कि इन्सान के कर्मों का रेकार्ड खुद इन्सान का ज़ेहन तैयार कर रहा है। क्रियामत के दिन उस की याद्दाशत इतनी तेज़ होगी कि उस के कर्मों के सारे चिन्ह उस के ज़ेहन पर उभर आएंगे।

28. अर्थात् अल्लाह का वफ़ादार बन्दा बन कर रहने के बजाय कुफ़्र एवं बगावत का रवैया अपनाया होगा। ऊपर फ़िरऔन की सरकशी की मिसाल गुज़र चुकी।

29. अर्थात् आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया को लक्ष्य बनाया और उस के फ़ायदे को प्राथमिकता दी।

30. अर्थात् जो दुनिया में इस ख़याल से काँपते रहे कि अल्लाह की अदालत में हाज़िर हो कर अपने आमाल की जवाबदेही करना है। ज़ाहिर है जिस के अन्दर जवाबदेही का यह तसव्वुर होगा वह अल्लाह के वफ़ादार बन्दे ही की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

31. मतलब यह कि रसूल को क्रियामत का समय बताने के लिए नहीं भेजा गया है बल्कि उसे ख़बरदार करने के लिए भेजा गया है। क्रियामत तो अपने समय पर आ कर रहेगी जिस तरह कि मौत अपने समय पर आ कर रहती है हालाँकि इन्सान को उस का समय पहले से मालूम नहीं होता।

32. मतलब यह कि इस समय क्रियामत के लिए वह जल्दी मचा रहे हैं लेकिन जब वह आयेगी तो उन्हें महसूस होगा कि बहुत जल्द आ गई। और उन्हें दुनिया में जो मोहलत मिली थी वह बहुत थोड़ी थी। वक्त एक इज़ाफ़ी (Relative सम्बन्ध सूचक) चीज़ है। घन्टों के मुक़ाबले में मिनट समय का एक बहुत ही छोटा हिस्सा मालूम होता है इसी तरह दिनों के मुक़ाबले में घन्टे, और महीनों एवं सालों के मुक़ाबले में दिन। क्रियामत के दिन जब ज़मान-व-मकान (Time And Space) बदल जाएंगे और क्रियामत का एक दिन एक हजार साल का होगा तो जो समय इन्सान ने दुनिया में गुज़ारा था वह उसे वहाँ के ज़मान (Time) के मुक़ाबले बहुत थोड़ा मालूम होगा और उस समय यह एहसास उभरेगा कि काश अपने ये क़ीमती लम्हे अपनी आख़िरत बनाने में लगाये होते।



सूरह अबस

८०. सूरह अबस

नाम : सूरह की शुरूआत लफ़्ज़ अबस (त्योवरी चढ़ाई) से हुई है जो एक विशेष घटना की ओर इशारा करता है। इसी सम्बन्ध से इस सूरह का नाम अबस रखा गया है।

नाज़िल होने का समय : यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस ज़माने में नाज़िल हुई होगी जब कि मक्का वालों के सामने दअवत पेश हो चुकी थी और कुरैश के सरदारों ने उसे रद्द कर दिया था।

केन्द्रीय विषय: “इन्ज़ार” अर्थात् हिसाब के दिन से इन्सान को ख़बरदार करना ताकि वह अक़ीदा और अमल में (आस्था और कर्म में) सही रवैय्या अपनाये। पिछली सूरह के साथ इस का सम्बन्ध बिल्कुल स्पष्ट है। उस के आखिर में यह फ़रमाया गया था कि तुम उन्हीं लोगों को ख़बरदार कर सकते हो जो उस से डरने के लिए आमादा हों। इस सूरह में साफ़ बताया गया है कि जो लोग क्रियामत को नकारने की ज़िद पकड़े हों उन्हें अपने अन्जाम की कोई परवाह न हो उन के पीछे इस्लाम की तब्लीग़ (प्रचार व प्रसार) के जोश में वक्तर्बाद न किया जाये।

कलाम की तरतीब : आयत १ से १० में एक विशेष

घटना की ओर इशारा करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तवज्जोह दिलाई गई है कि जो लोग घमण्ड, बड़ाई और हटधर्मी में डूबे हुए हैं उन के पीछे पड़ने के बजाय उन लोगों की ओर ध्यान लगाएँ जो हक़ के चाहने वाले (इच्छुक) हैं और अपनी इस्लाह (सुधार) करना चाहते हैं।

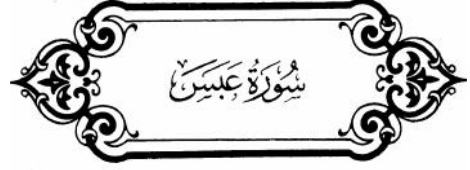
आयत ११ से १६ में कुर्आन की महिमा और वर्चस्वता बयान की गयी है ताकि स्पष्ट हो जाये कि जिस चीज़ को कुबूल करने की दअवत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दे रहे हैं वह कितने ऊँचे दर्जे की चीज़ है। अतः जो इस की नाक़दरी करेंगे वह अपने ही आप को बहुत बड़ी भलाई से महरूम रखेंगे। इस महान कलाम को पेश करने के लिए प्रतिष्ठित (पुरवक्कार) तरीक़ा ही अपनाया जाना चाहिए।

आयत १७ से ३२ में क्रियामत का इन्कार करने वालों को तंबीह और इन्सान के दोबारा उठाये जाने पर अल्लाह की रुबुबियत (स्वामित्व) से दलील दे कर बहस की गई है।

आयत ३३ से ४२ में क्रियामत की हौलनाकी की तस्वीर पेश करते हुए नेक किरदार और बदकिरदार लोगों का अलग अलग अन्जाम बयान किया गया है।

८०. सूरह अबस

आयतें : ४२



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. त्योवरी चढ़ाई ¹ और मुँह फेर लिया,
2. इस बात पर कि उस के पास नेत्रहीन आया।²
3. (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हें क्या मालूम शायद वह पाकीज़गी हासिल करता।
4. या नसीहत पर ध्यान देता और नसीहत उस के हक़ में लाभकारी होती।
5. जो मनुष्य बेपरवाही बरतता है।
6. उस की तरफ़ तो तुम तवज्जो करते हो।
7. हालाँकि उस के इस्लाह कुबूल न करने की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं।
8. और जो तुम्हारे पास दौड़ा हुआ आता है,
9. और वह अल्लाह से डरता भी है,
10. उस से तुम बेपरवाही बरतते हो।³
11. हरगिज़ नहीं ⁴ यह तो एक याददेहानी है।⁵
12. तो जो चाहे इसे स्वीकार करे।
13. यह ऐसे सहीफ़ों (पत्रों) में है जो अत्यन्त प्रतिष्ठित हैं।⁶

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۝۱

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ۝۲

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَكْفُرُ ۝۳

أَوْ يَذْكُرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ۝۴

أَمَّا مَنْ اسْتَعْصَى ۝۵

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ۝۶

وَمَا عَلَيْكَ إِلَّا يَرْكُبُ ۝۷

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ۝۸

وَهُوَ يَخْشَى ۝۹

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّى ۝۱०

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝۱१

فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرْهُ ۝۱२

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝۱३

1. त्योवरी चढ़ाने की क्रिया जैसा कि आगे के मज़मून से स्पष्ट है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुई थी। लेकिन यहाँ मुखातब (मध्यम पुरुष) के बजाय गायब का सीगा (प्रथम पुरुष) इस्तेमाल किया गया है। खबरदार करने का यह हकीमाना (विवेकपूर्ण) अन्दाज़ है।

2. मुराद अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रजिअल्लाहु अन्हा हैं जो नेत्रहीन (अन्धे) थे। यह हज़रत खदीजा रजि. के फूफीज़ाद भाई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निस्बती भाई (Brother in law) थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तुच्छ समझ कर त्योवरी नहीं चढ़ाई थी क्योंकि आप ग़रीबों, नादारों और मजबूरों का सब से अधिक सम्मान करने वाले थे। बल्कि उन का आना इस कारण आप को नागवार हुआ था कि आप की मजलिस में उस वक्त कुरैश के बड़े बड़े सरदार मौजूद थे जिन के सामने आप बड़े लगन एवं तन्मेयता के साथ इस्लाम की दअवत पेश कर रहे थे। इस अवसर पर अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रजि. की ओर ध्यान मोड़ देने से कुरैश के सरदारों की तरफ़ तवज्जोह में कमी होती इस लिए आप ने कुरैश के सरदारों से बात चीत का सिलसिला जारी रखा और अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम की तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह चूक किसी ग़लत भावना के तहत नहीं हुई थी बल्कि दअवत के जोश में हुई थी। लेकिन यह एक नापसंदीदा बात थी इस लिए अल्लाह तआला ने इस पर पकड़ फ़रमाई।

3. इन आयात में जिस घटना की ओर इशारा किया गया है वह संक्षेप में यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में अबू जहल, उमय्या बिन ख़ल्फ़, उत्बा वगैरा कुरैश के सरदार मौजूद थे जिन्हें आप इस्लाम कुबूल करने की दअवत दे रहे थे कि इस बीच इब्ने उम्मे मक्तूम रजि. जो नेत्रहीन थे तशरीफ़ लाए। वह अपनी इस्लाह के उद्देश्य से और नसीहत

सुनने की इच्छा लिये हुए तशरीफ़ लाए थे। उन की ओर ध्यान देने के बजाय आप कुरैश के सरदारों की तरफ़ ही आकर्षित रहे जो नसीहत पर कान धरने के लिए आमादा नहीं थे। यह बात नुबुव्वत की शान और दअवत की प्रतिष्ठा के खिलाफ़ थी। इस लिये इस पर तंबीह नाज़िल हुई। इस तंबीह का रुख़ यूँ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर प्रतीत होता है लेकिन असल में इस की चोट दअवत का इन्कार करने वालों पर पड़ रही है। और यह वाज़ेह करना मक़सद है कि जिन लोगों पर हक़ की दअवत खुल चुकी है और वह जानते बूझते इन्कार पर अड़े हैं उन को उन के हाल पर छोड़ दो और अपनी तवज्जोह ख़ुदा के उन बन्दों की तरफ़ फेर दो जो हिदायत के इच्छुक और कुर्आन के क्रदरदान हैं और चाहते हैं कि उन की ज़िन्दगीयों में पाकीज़गी आ जाये। दूसरी तरफ़ इन्कार करने वालों को डराया गया है कि तुम्हारी इस्लाह के सिलसिले में पैग़म्बर की इस बेचैनी और अनथक कोशिश के बावजूद अगर तुम इस पर कान धरने के लिए आमादा नहीं हो तो जिस किताब की तरफ़ तुम्हें दअवत दी जा रही है उस की प्रतिष्ठा और उस का महत्व इस से कम होने वाली नहीं बल्कि तुम खुद ही अप्रतिष्ठित और महत्वहीन हो जाओगे। यह किताब तो बेहद बुलंद और उच्च कोटि की है। इस की नाक़दरी करने वालों के हिस्से में सिवाय महरूमी के कुछ नहीं आ सकता।

4. अर्थात् ऐसे नाक़दरों के पीछे पड़ने की हरगिज़ ज़रूरत नहीं।

5. मुराद कुर्आन है

6. यहाँ कुर्आन की महानता बयान की गई है और यह स्पष्ट करना मक़सूद है कि जो लोग इस कलाम की नाक़दरी करते हैं वह अपना ही सम्मान घटाते हैं वरना इस का जो आदर सम्मान आसमानों में है उस का अगर इन्हें अन्दाज़ा होता तो वह हरगिज़ नाक़दरी न करते।



14. उच्चकोटी के और पाकिज़ा हैं, ⁷

مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝۱۳

15. ऐसे कातिबों (लिपिकों) के हाथों में हैं, ⁸

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝۱۵

16. जो सम्मानित और वफ़ादार हैं। ⁹

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝۱۶

17. ग़ारत हो ¹⁰ इन्सान कैसा नाशुकरा है !

قَتَلَ الْإِنْسَانَ مَا اكْفَرَ ۝۱۷

18. उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया ? ¹¹

مِنْ أَيْ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝۱۸

19. एक बूँद से पैदा किया और उस की मन्सूबा बन्दी की। ¹²

مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝۱۹

20. फिर उस के लिए राह आसान कर दी, ¹³

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝۲۰

21. फिर उस को मौत दी ¹⁴ और क़ब्र में दफ़न कराया, ¹⁵

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝۲۱

22. फिर जब वह चाहेगा उसे उठा खड़ा करेगा। ¹⁶

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝۲۲

23. हरगिज़ नहीं। उस ने उस आज्ञा का पालन नहीं किया ¹⁷ जो अल्लाह ने उसे दिया था,

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۝۲۳

24. इन्सान ज़रा अपने भोजन को देखे, ¹⁸

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝۲۴

25. कि हम ने ख़ूब पानी बरसाया, ¹⁹

إِنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝۲۵

26. फिर ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा, ²⁰

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝۲۶

27. फिर उस में उगाए गल्ले।

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝۲۷

28. और अंगूर और तरकारियाँ,

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝۲۸

29. और ज़ैतून और खजूर,

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝۲۹

30. और घने बाग,

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝۳۰

7. कुर्आन शैतान की घुसपैठ से बिल्कुल पाक है। इस में असत्य की मिलावट संभव ही नहीं क्यों कि शैतान की पहुँच इस किताब तक हो ही नहीं सकती। उन्हें इस से बहुत दूर रखा गया है। लिहाजा कुर्आन शुरू से ले कर आखिर तक शुद्ध रूप से अल्लाह के ही कलाम पर आधारित और हर प्रकार की मिलावटों से पाक है।

8. मुराद फ़रिश्ते हैं जो कुर्आन को लिख रहे थे।

9. यह उन फ़रिश्तों के विशेष गुण हैं जो कुर्आन को आसमान पर लिख रहे थे और उसे पूरी हिफ़ाज़त के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे थे। इस का उद्देश्य इस बात को साफ़ करना है कि यह कुर्आन जिन फ़रिश्तों द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाया जा रहा है वह ऐसी शान वाले, उच्चकोटि के और अमानतदार हैं कि उन से किसी तरह की ख़ियानत (ग़बन, बेईमानी) का होना मुमकिन ही नहीं और न वह शैतान को किसी तरह की घुसपैठ का मौक़ा दे सकते हैं इस लिए इस में शक की ज़र्रा बराबर गुन्जाइश नहीं कि वह अल्लाह की इस अमानत को जूँ का तूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे हैं।

10. यहाँ से कलाम का रुख़ कुफ़्रार की तरफ़ मुड़ता है।

11. अर्थात् इन्सान अपनी वास्तविकता पर विचार करे कि उस की ज़िन्दगी की शुरूआत पानी की एक तुच्छ बूँद से हुई। फिर उस में यह घमंड कहाँ से पैदा हो जाता है कि वह खुदा के सामने अपने को कुछ समझने लगे और उस के इस एहसान को कि उसे एक बेहतरीन मख़्लूक की हैसियत दी भुला दे।

यहाँ क्रियामत के दिन इन्सान के उठाये जाने पर भी तर्कवितर्क है। अर्थात् जिस हस्ती के करिश्मों का यह हाल हो कि वह पानी की एक तुच्छ बूँद से इन्सान जैसी महान सृष्टि को उठा खड़ा कर सकती है उस के लिए आखिर यह क्यों असंभव समझा जाये कि वह क्रियामत के दिन उसे दोबारा उठा खड़ा करेगी?

12. या'नी हर इन्सान की रचना एक मन्सूबे के साथ हुई है। जैसे उस के रंग रूप, आकार, ज़ेहनी सलाहियत, काम करने की क्षमता, शक्ति, जन्म स्थल, और मौत का वक्त इत्यादि. अल्लाह के इस मन्सूबे के तहत ही इन्सान ज़िन्दगी गुज़ारता है और इस से मुक्त होना उस के लिए असंभव है। यह इस बात की दलील है कि इन्सान की रचना का एक उद्देश्य है।

13. मुराद ज़िन्दगी की राह है जिस के उतार चढ़ाव को इन्सान सरलता के साथ तय करता है। उस के अस्तित्व को बाक़ी रखने और उस को परवान चढ़ाने के लिए जिन जिन साधनों की ज़रूरत थी सब मुहैया कर दिये गये हैं। मिसाल के तौर पर बच्चा अपनी प्रकृति के अनुरूप माँ की छातियों को चूसता है और उस के लिए भोजन की प्राप्ति आसान हो जाती है। इसी तरह श्वसन

क्रिया (Respiration System) एक मुश्किल कार्य है। लेकिन इन्सान मरते दम तक इस तरह लगातार साँस लेता और बाहर करता रहता है कि उसे ज़रा भी थकावट नहीं होती।

14. या'नी मौत हर व्यक्ति के लिए निश्चित है। इस से कोई भाग नहीं सकता और जब इन्सान की बेबसी का यह हाल है कि वह अपनी मौत को एक पल के लिए भी टाल नहीं सकता तो फिर वह किस बल बूते पर अपने पैदा करने वाले से कुफ़्र करता है।

15. मालूम हुआ कि मुर्दों को क़ब्र में दफ़न करना प्राकृतिक विधि (Natural) है इस के विरुद्ध जलाने का तरीक़ा न इल्हामी (अल्लाह की ओर से मन में डाला हुआ) है और न शरिअत के मुताबिक़। इस्लाम चूँकि महद (झूला) से ले कर क़ब्र तक का दीन है इस लिए उस ने जहाँ जीने का सही तरीक़ा बताया है वहाँ मरने के बाद की भी सही रहनुमाई की है।

16. या'नी इन्सान को दोबारा उठा खड़ा करना अल्लाह की मर्जी पर आश्रित है। यह काम उस के लिए न मुश्किल है और न उस के इरादे में कोई चीज़ रुकावट बन सकती है।

17. आज्ञा से मुराद वह तमाम आदेश हैं जो इन्सान की फ़ितरत (प्रकृति) में अल्लाह तआला ने समर्पित कर दिये। जैसे एक खुदा की परस्तिश करना, सच बोलना, इन्साफ़ करना, जुल्म न करना वगैरा और वह आदेश भी जो उस ने अपने पैगम्बरों और किताबों द्वारा नाज़िल फ़रमाए।

18. या'नी मौत के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी की बहुत सारी दलीलें हैं। इन्सान जिस भोजन से रोज़ाना फ़ायदा उठाता है और उसे मामूली ख़याल करता है ज़रा उसी पर ग़ौर कर के देखे कि वह पैदा कैसे होता है? अगर अल्लाह उसे पैदा न करता तो इन्सान को आहार कहाँ से मयस्सर होता? उस की परवरिश का यह सामान और स्वामित्व (रबूबियत) का यह प्रबन्ध इस बात का तकाज़ा करता है कि इन्सान से इन नेमतों के बारे में पूछ ताछ हो कि उस ने अपने स्वामी (रब) की इन नेमतों को पा कर उस की शुक्रगुजारी (कृतज्ञता) का रास्ता अपनाया या नाशुक्रि का।

19. बारिश का कोई अलग देवता नहीं है बल्कि अल्लाह ही है जो आसमान से पानी बरसाता है जिस से इन्सान को पीने के लिए भी पानी मयस्सर आता है और ज़मीन के फलने फूलने का भी सामान होता है। अगर वह बारिश का इन्तेज़ाम न करता तो क्या इन्सान के लिए ज़िन्दा रहना संभव होता?

20. यह अल्लाह ही की कुदरत का करिश्मा है कि वह पानी बरसाता है और ज़मीन को फ़ाड़ कर उस के अन्दर से कोपलें निकालता है और वनस्पति उगाता है। यह सब देखते हुए यह कहने की ज़रूरत किस तरह करते हो कि वह इस बात पर क़ादिर (सक्षम) नहीं है कि क्रियामत के दिन ज़मीन फाड़ कर मुर्दों को जिला उठाये।

31. और मेवे और चारा,

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝۳۱

32. तुम्हारी और तुम्हारे मवेशियों के लाभ के लिए।²¹

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝۳۲

33. फिर जब वह कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ गरजेगी,²²

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَةُ ۝۳۳

34. उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से,

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝۳۴

35. अपनी माँ और अपने बाप से,

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝۳۵

36. अपनी बीवी और अपनी औलाद से,

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝۳۶

37. उस रोज़ हर किसी को अपनी अपनी पड़ी होगी।²³

لِكُلِّ امْرَأٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝۳۷

38. कितने ही चेहरे उस रोज़ रौशन होंगे,²⁴

وُجُوهُ يَوْمَئِذٍ مُّسْفَرَةٌ ۝۳۸

39. हँसते हुए और आनन्दित,²⁵

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝۳۹

40. और कितने ही चेहरे उस रोज़ धूल से पटे होंगे,

وُجُوهُ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝۴०

41. उन पर स्याही छायी होगी।²⁶

تَرَاهُمْ قَائِرَةٌ ۝۴१

42. ये होंगे वही काफ़िर और दुराचारी लोग।

أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۝۴२

21. अर्थात् क्या ये नेमतें जिन से तुम रात दिन फ़ायदा उठाते हो, अपने साथ ज़िम्मेदारी का कोई तसव्वुर नहीं लातीं? जिस ख़ुदा ने तुम पर ये एहसानात किये हैं क्या वह तुम से पूछ ताछ नहीं करेगा कि तुम उस के शुक्रगुज़ार बन्दे बन कर रहे या इन्कार करने वाले बन कर।

22. मुराद क्रियामत की हौलनाक आवाज़ है। जब आख़िरी सूर फूँका जायेगा तो उस की हौलनाक आवाज़ तमाम मरे हुए इन्सानों को उठा खड़ा करेगी।

23. इशारा है इस बात की तरफ़ कि दुनिया में इन्सान अपने करीबी सम्बन्धियों की खातिर सत्य स्वीकार करने से भागता है लेकिन क्रियामत के दिन की मुसीबत ऐसी होगी कि न यह उन के काम आ सकेगा और न वह इस के काम आ

सकेंगे। हर व्यक्ति को अपनी नजात की चिन्ता लगी होगी और किसी को होश न होगा।

24. यह मुखलिस (निश्छल) मोमिनों के चेहरे होंगे जो ईमान की रौशनी से दमक रहे होंगे।

25. ख़ुशी इस बात की कि वह दुनिया के इम्तिहान में कामयाब हुए और उन की मेहनत ठिकाने लगी। चेहरों की शगुफ़्तगी (प्रफुल्लता) उन के नेकी अपनाने का नतीजा होगी और जन्नत का परवाना (अनुमति पत्र) पा कर वह आनन्दित और प्रसन्नचित होंगे।

26. ये काफ़िरों (न मानने वालों) के चेहरे होंगे जिन पर कुफ़्र (इन्कार) की सियाही छायी हुई होगी और उन के बुरे कर्म उन के चेहरों को ख़ाक में लिप्त कर रहे होंगे।



सूरह अत्-तकवीर

८९. सूरह अत्-तकवीर

नाम :- इस सूरह की पहली आयत में खबरदार किया गया है कि क्रियामत के दिन सूरज की बिसात लपेट दी जायेगी। लपेटने के लिए लफ़्ज़ “कुव्विरत”----- इस्तेमाल हुआ है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तकवीर है। या’नी वह सूरह जिस में सूरज के लपेटने का ज़िक्र (वर्णन) है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आरम्भिक काल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्री विषय :- ग़फ़लत (लापरवाही) में पड़े हुए इन्सानों को हिसाब के दिन से खबरदार करना है और यह स्पष्ट करना है कि पैग़म्बर और कुर्आन इस की जो खबर दे रहे हैं वह हर तरह के संदेहों से ऊपर है। पिछली सूरह में क्रियामत की हौलनाकी का ज़िक्र था। इस सूरह में उस की हौलनाकी की तस्वीर खींची गई है कि आदमी क्रियामत को अपने सामने देखने लगता है। गोया यह सूरह क्रियामत की जीती जागती

तस्वीर है। चुनान्चे हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति क्रियामत के दिन को अपनी आँखों से देखना चाहता हो वह सूरह तकवीर, सूरह इन्फ़ितार और सूरह इन्शिक़ाक़ को पढ़ ले।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ठ ४७४ अहमद व तिर्मिज़ी के हवाले से)

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में क्रियामत के पहले हादसे (पहली फूँक) की तस्वीर खींची गई है और आयत ७ से १४ में दूसरे हादसे (दूसरी फूँक) की।

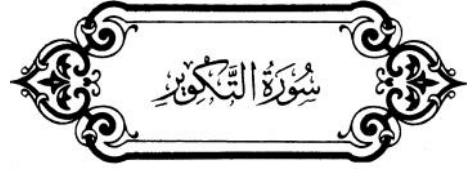
आयत १५ से २५ में कुर्आन और पैग़म्बर के बारे में स्पष्ट किया गया है कि वह जो दअवत पेश कर रहे हैं और खबर दे रहे हैं वह हक़ और सच्चाई पर आधारित है।

आयत २६ से २९ में इन्कार करने वालों को तंबीह है कि कुर्आन की राह को छोड़ना हक़ और सच्चाई की राह को छोड़ना है। इस लिए वह सोचें कि इस से इन्कार कर के किस खड्ड में गिरना चाहते हैं?

८९. सूरह अत्-तकवीर

आयतें : २९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब सूरज लपेट दिया जायेगा,¹
2. और जब सितारे बेनूर हो जायेंगे,²
3. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे,³
4. और जब दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जायेंगी,⁴
5. और जब जंगली जानवर इकट्ठे किये जायेंगे,⁵
6. और जब समुद्र भड़का दिये जायेंगे,⁶
7. और जब लोगों को (विभिन्न गिरोहों में) बाँट दिया जायेगा,⁷
8. और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा,
9. कि वह किस गुनाह में मारी गई?⁸
10. और जब आमाल नामे (कर्म पत्र) खोल दिये जायेंगे,⁹
11. और जब आसमान की खाल खींच ली जायेगी।¹⁰
12. और जब जहन्नम भड़काई जायेगी,
13. और जब जन्नत करीब लायी जायेगी।¹¹
14. उस समय हर व्यक्ति को मालूम हो जायेगा कि वह क्या लेकर हाज़िर हुआ है।¹²

وَإِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝٢

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧

وَإِذَا الْمَوْدَةُ سُئِلَتْ ۝٨

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝٩

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝١٣

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝١٤

1. सूरज को लपेट दिये जाने से मतलब यह है कि यह आसमानी चिराग जिस की रौशनी करोड़ों मील तक फैली हुई है और जिस से पूरा जगत जगमगा रहा है, क्रियामत का धमाका होते ही गुल हो जायेगा। और जब सूरज ही बुझ जायेगा तो यह दुनिया जिस बड़े हादसे से दोचार होगी उस की कल्पना मात्र से इन्सान काँप उठता है।

सूरज इस कायनात की सब से बड़ी ताकत है और नई वैज्ञानिक खोजों के अनुसार ज़मीन का तल सूरज से जो उर्जा प्राप्त करता है, चार मिलियन हार्स पावर प्रति वर्ग मील है। गोया सूरज ज़मीन के लिए पावर हाउस की हैसियत रखता है। कुर्आन यह ख़बर देता है कि एक रोज़ आयेगा जब कि सूरज अपनी इस महान शक्ति को खो चुका होगा और वह क्रियामत का दिन होगा। यह ख़बर खुद अल्लाह तआला दे रहा है जो सूरज सहित पूरी कायनात का ख़ालिक और मालिक है तो यकीन करने के लिए यह बात बिल्कुल काफ़ी है। फिर भी जहाँ तक साइंस का सम्बन्ध है वह भी इस वास्तविकता को स्वीकार करती है कि सूरज को आखिरकार बुझ जाना है।

“And eventually the sun will become a black, dwarf, a very dense, non-luminous object of degenerate matter.” (The New Encyclopedia Britannica Vol. 17. P.808).

एक समय में इन्सान सूरज को देवता समझ कर उस की पूजा करता रहा है और आज भी नई वैज्ञानिक खोजों के बावजूद सूरज के पूजने वालों की कमी नहीं है लेकिन कुर्आन का यह बयान कि सूरज खुदा नहीं बल्कि खुदा की पैदा की हुई कायनात का एक अंश और खुदा का महकूम (आधीन) है और उसी समय तक रौशनी देता रहेगा जब तक अल्लाह का वह हुक्म नहीं आ जाता जो कायनात की बिसात को उलट कर रख देगा। जिस दिन वह हुक्म आ जायेगा सूरज अपनी तमाम शक्ति खो देगा और उस की रौशनी बिल्कुल समाप्त हो जायेगी।

2. दुनिया को रौशन करने वाले सूरज और जगमगाते हुए तारों को देख कर इन्सान यह ख़याल करने लगता है कि यह दुनिया सदा बहार है और इस की रौनक कभी ख़त्म होने वाली नहीं लेकिन कुर्आन दो टोक (Emphatic) अन्दाज़ में इन्सान को आगाह करता है कि यह ख़याल का फ़रेब है। हक़ीक़त में एक ऐसा समय आने वाला है और वह बहुत करीब है जब कि सारे चिराग बुझा दिये जायेंगे और यह दुनिया अन्धेरे के हवाले हो जायेगी ताकि तोड़ फोड़ की इस क्रिया से एक नया जगत अस्तित्व (वजूद) में लाया जा सके जिस में कर्मों के फल प्रकट हों।

3. मालूम होता है कि क्रियामत का झटका लगते ही ज़मीन अपना आकर्षण (Attraction) खो देगी इस से जो भयावह स्थिति पैदा होगी उस की हल्की सी कल्पना ही इन्सान को चौंका देने के लिए काफ़ी है। इसी लिए पहाड़ों को उड़ा देने का वर्णन कुर्आन में कई स्थानों पर हुआ है।

4. कुर्आन जिस दौर में नाज़िल हुआ उस दौर में दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ जो जनने के करीब होती थीं सब से ज़्यादा क़ीमती चीज़ मानी जाती थी और अरब वालों की नज़र में यह प्रिय माल था। इस प्रिय माल का ज़िक्र मिसाल देने के लिए किया गया है ताकि इस से यह स्पष्ट हो जाये कि क्रियामत का धमाका होते ही इन्सान अपने प्रिय माल को भूल जायेगा। दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ जो आज उस के मालिक के नज़दीक मूल्यवान पूँजी की हैसियत रखती है इस तरह बे क़ीमत हो कर आवारा फिरने लगेगी कि उन को कोई पूछने वाला न होगा क्यों कि क्रियामत के शुरू होते ही इन्सान को किसी भी चीज़ का होश नहीं रहेगा।

ध्यान रहे कि ऊँटनी का यह ज़िक्र उस समय की अरबों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए गोया उन की क़ीमती पूँजी पर उंगली रख कर उस के बे क़ीमत हो जाने को प्रकट करने जैसा था। जिस ने कलाम में ज़बरदस्त तासीर (प्रभाव) पैदा कर दिया। इस मिसाल का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि क्रियामत का बिगुल बजते ही माल और दौलत के यह ढेर जिस की प्राप्ति (हुसूल) को इन्सान अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाये हुए है और इसी कारण ज़िन्दगी के सही मक़सद को कुबूल करने के लिए तैयार नहीं होता सब बेकार और मिट जायेंगे। चाहे वह प्रिय ऊँटनी की सूरत में हो या क़ीमती कारों, बड़े बड़े कारख़ानों और शानदार इमारतों की सूरत में।

5. या'नी क्रियामत के जाहिर होते ही ऐसी ख़ौफ़नाक हालत पैदा होगी कि इन्सान तो इन्सान जंगली जानवरों पर भी हैबत (आतंक) छाई होगी और वह जंगलों से भाग कर दूसरे जानवरों और इन्सानों के साथ इकट्ठा होने लगेंगे।

6. यूँ तो यह बात अजीब मालूम होती है कि समुद्र में आग लग जाएगी लेकिन क्रियामत का हादसा स्वयं बहुत ही अजीब है। इस का पहला झटका ही तमाम अजीब बातों को ख़त्म कर के रख देगा क्यों कि क्रियामत का मतलब ही यह है कि कायनात की साख़्त (बनावट) में ज़बरदस्त तब्दीली होगी और महान क्रान्ति नमूदार होगी। वैसे भी पानी, आक्सीजन और हाइड्रोजन गैसों का मिश्रण है, और अल्लाह का एक इशारा उस के इस रसायनिक मिश्रण को अलग अलग करने के लिए काफ़ी है जिस के नतीजे में यह गैसें भड़कने और भड़काने का काम कर सकती हैं।

कुर्आन के बयान के मुताबिक हश्र के लिए ज़मीन को चटियल मैदान का रूप दिया गया होगा। इस से स्पष्ट होता है कि समुद्रों को पाट दिया गया होगा, और इस से पहले उस के पानी को भड़का कर खत्म कर दिया गया होगा।

7. यहाँ से क्रियामत के दूसरे मरहले (चरण) का जिक्र शुरू होता है जब कि तमाम इन्सानों को शरीर सहित दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा।

गिरोहों में बाँट देने से मुराद अक्रीदे और आमाल (आस्था और कर्म) की बुनियाद पर लोगों की गीरोहबन्दी और श्रेणी बद्ध करना है। दुनिया में तो मोमिन और काफ़िर, मुस्लिम और मुजरिम, नेक और बद तथा ज़ालिम और मज़लूम सब खलत मलत रहते हैं लेकिन क्रियामत का झटका लगते ही इन्सानी सोसायटी का मौजूदा ढाँचा चकनाचूर हो जायेगा और हश्र के मैदान में ईमान और अख़लाक़ की बुनियाद पर लोगों के अलग अलग गिरोह बनाए जायेंगे (तफ़सील के लिए देखें सूरह वाक़िआ: आयत ७ से ४४)

8. ज़िन्दा गाड़ने का चलन अरबों के कुछ क़बीलों में प्रचलित था। इस का एक कारण तो निर्धनता का संदेह होता और आर्थिक स्थिति के ख़राब होने का ख़याल करते हुए वह पसन्द नहीं करते थे कि खाने वालों कि तादाद में वृद्धि हो। इस लिए सीमित वंश और फैमिली प्लानिंग का जो मूर्खतापूर्ण और अन्यायपूर्ण तरीक़ा उन्होंने अपना रखा था वह बच्चीयों के पैदा होते ही उन को दफ़न कर देने का था। इस का दूसरा कारण यह था कि वह लड़कियों की पैदाइश को अपने लिए लज्जाजनक समझते थे और झूठी ग़ैरत उन्हें इस आपत्तिजनक एवं क्रूर हरकत पर आमादा करती थी। कुर्आन ने उन की इस हरकत पर सख़्ती से पकड़ की और बताया कि क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत में ऐसे मुजरिमों के खिलाफ़ मुक़दमा चलाया जायेगा।

ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से यह सवाल कि वह किस जुर्म में मारी गई, उस के बेगुनाह मारे जाने और मारने वाले के जुर्म की संगीनी का पता देती है।

स्पष्ट रहे कि कुर्आन का यह बयान इस्लाह के मामले में इतना प्रभावपूर्ण साबित हुआ कि इस ज़ालिमाना रिवाज का हमेशा के लिए ख़ात्मा हो गया।

9. दुनिया में इन्सान जो कुछ करता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा चाहे उस का सम्बन्ध अक्रीदे से हो या अमल से, विचारों से हो या सिद्धान्तों से या आन्दोलन और संघर्ष से, करनी हो या कथनी, लेख हो या व्याख्यान, यहाँ तक कि उठना बैठना और चाल ढाल का भी रेकार्ड तैयार किया जा रहा है। यह रेकार्ड दुनिया में खुफ़िया तरीक़े पर अल्लाह के फ़रिश्ते तैयार कर रहे होते हैं जो हर व्यक्ति के साथ अलग अलग होते हैं। इस रेकार्ड

को कुर्आन की जुबान में “सहीफ़ा” या “किताब” और उर्दू में आमाल नामा (कर्म पत्र) कहा जाता है। और क्रियामत के दिन अल्लाह की अदालत में पेशी के मौक़े पर इस को खोल कर हर व्यक्ति के सामने रखा जायेगा ताकि वह अपना रेकार्ड अपनी आँखों से देख सके।

आदमी के ज़िन्दगी भर का रेकार्ड एक पन्ने (Sheet) के रूप में पेश किया जाना कुर्आन के नाज़िल होने के समय में आम इन्सानों के लिए आश्चर्यजनक बात थी लेकिन साइन्सी तरक्क़ी के मौजूदा दौर में जब कि माइक्रोफ़िल्म (Microfilms) तैयार की जाने लगी है, कुछ भी हैरत की बात नहीं रही।

10. मुराद आसमान से ऊपर की दुनिया का बेनिकाब किया जाना है। आज तो हमारी निगाहें नीले आसमान तक जाकर रुक जाती है लेकिन क्रियामत के दिन हम उस जगत का भी प्रत्यक्ष दर्शन कर सकेंगे जो आसमान से ऊपर है। और उन ग़ैब की हक़ीक़तों को भी देख सकेंगे जो आज हमारी नज़रों से औझल हैं लेकिन उन की ख़बर कुर्आन दे रहा है। उस रोज़ इन्सान को खुदा की खुदाई और कायनात की विशालता और उस के विस्तार का सही अन्दाज़ा हो सकेगा। आज इन्सान दुनिया के जिस खोल में बन्द है उस खोल को पूरी कायनात समझ बैठता है और इस से आगे उसे जिन हक़ीक़तों की ख़बर दी जा रही है उस को वह कुबूल करने के लिए तैयार नहीं होता जिस तरह मुर्गी का बच्चा जब तक अण्डे के खोल के अन्दर बन्द रहता है, यह मसज़ता है कि यही कुछ दुनिया है।

11. क्रियामत के दिन ज़मान-व-मकान (Time & Space) के पैमाने बिलकुल बदल चुके होंगे। उस रोज़ इन्सान जान लेगा कि जन्नत हश्र के मैदान से बहुत क़रीब है और जो लोग उस के योग्य क़रार पायेंगे उन को जन्नत तक पहुँचने के लिए न इन्तेज़ार करना पड़ेगा और न लम्बी दूरी तय करने का परिश्रम करना होगा। बल्कि वह खुद आगे बढ़ कर उन का अभिनन्दन (स्वागत) करेगी। इस की विस्तृत स्थिति (तफ़सीली नौइयत) का पता क्रियामत के दिन चल सकेगा आज हम सीमित ज्ञान (महदूद इल्म) की बिना पर इसे समझ नहीं सकते।

12. यह है इन आयात का केन्द्रीय विषय। मतलब यह है कि जब क्रियामत उन तमाम हौलनाकियों के साथ प्रकट होगी जो ऊपर बयान हुए हैं तो वह दिन अल्लाह की अदालत में पेशी का होगा। उस रोज़ इन्सान अपनी ज़िन्दगी का कच्चा चिट्ठा लेकर हाज़िर होगा ताकि अपने परवरदिगार के सामने ज़वाबदेही कर सके। वह दिन बड़ा हौलनाक होगा और वह घड़ी बड़ी सख़्त होगी।

**यह घड़ी महशर की है तू अर्सा-ए-महशर में है
पेश कर ग़ाफ़िल अमल कोई, अगर दफ़तर में है**

अतः नहीं, मैं क्रसम खाता हूँ डूब जाने वाले, चलने वाले, और छिप जाने वाले सितारों की । और रात की जब कि वह विदा हो, और सुबह की जब कि वह साँस ले, कि वास्तव में यह एक प्रतिष्ठित संदेशवाहक (फ़रिश्ते) का (लाया हुआ) कलाम है, जो कुव्वत वाला है, और अर्श के मालिक के यहाँ ऊँचे पद वाला है, वहाँ उस का हुक्म माना जाता है और वह आमानतदार है, और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है। उस ने इस फ़रिश्ते को आसमान के खुले किनारे पर देखा है। और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें बताने के मामले में कंजूस नहीं है। और वह किसी शैतान मरदूद का क़ौल (कथन) नहीं है, (अल-कुअर्न)

15. अतः नहीं,¹³ मैं क्रसम खाता हूँ¹⁴ डूब जाने वाले,¹⁵

فَلَا أَقْسِمُ بِالْخُنُثَىٰ ۝

16. चलने वाले,¹⁶ और छिप जाने वाले¹⁷ सितारों की।¹⁸

الْجَوَارِ الْكُنُثَىٰ ۝

17. और रात की जब कि वह विदा हो,

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسَسَ ۝

18. और सुबह की जब कि वह साँस ले,¹⁹

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝

19. कि वास्तव में यह एक प्रतिष्ठित संदेशवाहक (फ़रिश्ते) का (लाया हुआ) कलाम है,²⁰

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

20. जो कुव्वत वाला है,²¹ और अर्श के मालिक के यहाँ ऊँचे पद वाला है,²²

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

21. वहाँ उस का हुक्म माना²³ जाता है और वह आमानतदार है,²⁴

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝

22. और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।²⁵

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِجُنُونَ ۝

23. उस ने इस फ़रिश्ते को आसमान के खुले किनारे पर देखा है।²⁶

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝

24. और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें बताने के मामले में कंजूस नहीं है।²⁷

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝

25. और यह किसी शैतान मरदूद का क़ौल (कथन) नहीं है,²⁸

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝

26. फिर तुम लोग किधर चले जा रहे हो?

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝

27. यह तो दुनिया वालों के लिए एक याददेहानी (नसीहत) है।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

28. तुम में से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधी राह अपनाना चाहे।²⁹

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝

29. और तुम नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह रब्बुल आलमीन (सारे जगत का स्वामी) न चाहे।³⁰

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

13. यह इन्कार करने वालों के इस विचार का खण्डन है कि यह कुर्आन जो क्रियमात की खबर दे रहा है किसी दीवाने की बड़ या शैतान से प्रेरित बातें हैं।

14. इस तरह की जो कसमें खाई जाती हैं इन का मतलब उन चीजों की पवित्रता और महानता को बयान करना नहीं होता बल्कि उन को शहादत (Witness) और दलील (Aurgument) के तौर पर पेश करना होता है। यह अरबी कलाम की शैली (उस्तूब) है जो प्रभावपूर्ण भी है और सुन्दर भी। अरबी से अनभिज्ञ लोग इस शैली से अपरिचित होने की बिना पर इन कसमों को जो कुर्आन में विभिन्न जगहों पर खाई गई है, सही अवसर और उन के इशारे एवं छिपे भेदों को समझने में असमर्थ रहते हैं।

15. Text में लफ़्ज़ “अल्खुन्नस” الْخُنُسُ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद डूब जाने वाले सितारे हैं। मतलब यह है कि सितारों की जगमगाहट से धोखा नहीं खाना चाहिए बल्कि उन के डूब जाने के पहलू को भी सामने रखना चाहिए जिस से जाहिर होता है कि यह खुदा के क़ानून के आगे बिल्कुल बेबस हैं। इस पहलू की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से सितारों के चलते रहने की सिफ़त से उन के डूब जाने की सिफ़त का ज़िक्र किया गया है।

16. Text में “अल्-जवार” الْجَوَارِ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद चलते रहने वाले सितारे हैं सितारों का चलना इन अर्थों में भी हो सकता है कि इन्सान का आम मुशाहदा यही है। इस से अलग हट कर कि इन में से कौन से सितारे गतिमान (चल रहे) हैं और कौन से ठहरे हुए, और अपनी इस हकीकत के एतिबार से भी हो सकता है जिस का नई साइन्स ने खोज किया है कि सितारे अंतरिक्ष में मुतहरिक (गतिशील) हैं।

“The stars themselves are moving through space-some at tremendous speeds —but so vast is our distance from them that their positions do not appear to the naked eye to alter, even in a century.”

(-The Marvels and Mysteries of science P.82)

17. Text में लफ़्ज़ “अल्कुन्नस” الْكُنُسُ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद छिपने वाले और गायब हो जाने वाले सितारे हैं। दिन में सितारे गायब रहते हैं एवं चलते चलते नजरो से ओझल हो जाते हैं इसी मुनासिबत से इन की यह सिफ़त बयान हुई है।

18. यहाँ सितारों की रफ़्तार और इन के उदय होने और

डूब जाने को इस की शहादत में पेश किया गया है कि कुर्आन अल्लाह की वद्व है न कि शैतान की ओर से उतरने वाली बातें। इन का उदय एवं अस्त का निश्चित समय और इन की नियमपूर्वक रफ़्तार इस बात की निशानदेही करती है कि वह अल्लाह के क़ानून में जकड़े हुए हैं। और इस से बिन्दु भर भी फिर नहीं सकते। करोड़ों मील पर फैले विशाल अंतरिक्ष में सितारों का एक ना मालूम ज़माने से लटके रहना और एक आश्चर्यजनक व्यवस्था का पाबन्द हो कर रहना इस बात का खुला सुबूत है कि इस कायनात का प्रबन्ध हिकमत से भरा है जिस के पीछे एक अलीम (सब कुछ जानने वाले विद्वान) और ख़बीर (हर चीज़ की खबर रखने वाली) हस्ती का मुदब्बिराना (विद्वतापूर्ण) मंसूबा काम कर रहा है। कुर्आन इस मन्सूबे की व्याख्या करता है और कायनात पैदा करने वाले की जिन सिफ़तों की तरफ़ सितारों की यह व्यवस्था इशारा करती है उन को कुर्आन खोल कर पेश करता है। गोया कुर्आन का प्रतिबिम्ब (अक्स) इस कायनात के आइने में देखा जा सकता है और इस की सच्चाई को कायनात के आसार की कसौटी पर परखा जा सकता है।

सितारे और ग्रह अपनी भौतिक स्थितियों की बिना पर सोचने और विचार करने पर आमादा करते हैं। लेकिन इन्सान के सोचने और विचार करने का अन्दाज़ यह रहा है कि इन को वह स्वयं सत्ताधिकारी (Self created & self sufficient) मान कर इन की पूजा करता और इन से शगुन लेता रहा है। जिस के आधार पर ज्योतिष विद्या (Astrology) का विकास हुआ और शगुन शास्त्र और भविष्यवाणी (Sooth Saying) का बाज़ार गर्म हुआ। इस तरह इन्सान इन की साख़्त (बनावट) और इन के फ़ासले वगैरा के बारे में मालूमात के ढेर लगाता जिस की बिना पर खगोल विज्ञान (Astronomy) का फैलाव हुआ और साइंस ने ख़ूब तरक्की की। यह सूरत इन्सान के लिए लाभदायक हुई तो बस उस की मालूमात में वृद्धि की हद तक। इस से इन्सान अपना और कायनात का सही उद्देश्य मालूम करने सम्बन्धित कोई रहनुमाई हासिल न कर सका। कुर्आन सोचने और विचार करने का जो अन्दाज़ अपनाने की दअवत देता है कि वह यह है कि इन्सान इस के मुशाहदे (प्रत्यक्ष दर्शन) से इस के पैदा करने वाले की पहचान (माअरिफ़त) हासिल करें, क्यों कि यह सितारे अपने पैदा करने वाले (ख़ालिक) की महानतम गुणों का द्योतक (मज़हर) है। जिस तरह एक बेहद हसीन तस्वीर को देखकर उस के आर्टिस्ट कि महारत का अन्दाज़ा होता है उसी तरह इन चमकते सितारों की कारीगरी और इन के आश्चर्यजनक प्रबन्ध को देख कर कायनात के ख़ालिक (सृष्टा) की कुदरत, रुबूबियत, इल्म, इन्साफ़, शासन, हिकमत की सिफ़तों और इस

तरह की दूसरी सिफ़्तों की इब्तेदाई माअरिफ़त (प्रारम्भिक पहचान) इन्सान को हासिल हो जाती है। दूसरे लफ़्ज़ों में सितारे अपने ख़ालिक का जो तआरुफ़ (परिचय) अपनी ख़ामोश जुबान से कराते हैं वह कुआन के बयान से जो कि कायनात के ख़ालिक का मुकम्मल और विस्तारपूर्वक परिचय कराता है, पूरी तरह मेल खाता है। और यह कुआन की हक्क़ानियत (सत्यता) का खुला सबूत है। फिर उच्च कोटि के इस हकीमाना कलाम के बारे में यह कहना कि वह इन्सान की रचना है या शैतानी वसवसों का नतीजा है या इस बिना पर कि वह क्रियामत के आने की ख़बर दे रहा है इसे भविष्यवाणी (Sooth Saying) समझना, हक्कीक़त पर पर्दा डालने की कैसी निन्दनीय चेष्टा और कितनी बड़ी नाइन्साफ़ी है।

19. रात के विदा होने और सुबह के नमूदार (प्रकट) होने का वक़््त भी कुदरत के अजायबात में से है। उस वक़््त ऐसा महसूस होता है कि गोया रात के अंधेरे को चीर कर सुबह ने जन्म लिया है और जब सुबह की ठंडी हवाएँ चलती हैं तो वह एहसास करवटें लेने लगता है कि गोया सुबह साँस ले रही है। यहाँ इन कैफ़ियतों को शहादत में पेश करने का मतलब यह है कि जिस हस्ती ने रात और दिन के आने जाने की यह अजीबो-गरीब व्यवस्था क़ायम की है वह इस व्यवस्था के गर्भ से एक बहुत ही अजीब नये निज़ाम को भी पैदा कर सकता है और उस की हिकमत इस बात का तक्राज़ा करती है कि ऐसा किया जाये। इस लिए कुआन क्रियामत की आमद और एक नये निज़ाम की तश्कील-जिस में कर्मों के हिसाब का मामला पेश आयेगा--की जो ख़बर दे रहा है वह अक्ल के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि कायनात का मौजूदा निज़ाम (वर्तमान व्यवस्था) का एक उभरता हुआ तक्राज़ा है।

20. यह वह बात है जिस पर ऊपर की आयात में कुआन के कलामे इलाही होने पर गवाही पेश की गई है। प्रतिष्ठित संदेशवाहक से मुराद जिब्रील हैं जो खुदा के प्रतिष्ठित फ़रिश्ते हैं। वह खुदा का कलाम ले कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होते थे और ठीक ठीक इन ही अल्फ़ाज़ में आप को पहुँचाते थे।

चूँकि यह कलाम फ़रिश्तों द्वारा नाज़िल होता था न कि शैतानों द्वारा इस लिए आयत में कलाम को खुदा के भेजे हुए फ़रिश्ते की तरफ़ मन्सूब किया गया है।

21. यह वक़््त लाने वाले फ़रिश्ते जिब्रील अलैहिस्सलाम की सिफ़्त (गुण) है उन को अल्लाह तआला ने असाधारण शक्ति प्रदान की है इस लिए शैतान इन के काम में रोड़ा नहीं हो सकते। उन की उड़ान (परवाज़) आसमान से परे है और वह अल्लाह का पैग़ाम उस के रसूल तक सुरक्षित पहुँचाने में पूरी तरह क़ादिर

(सक्षम) है।

22. यह हज़रत जिब्रील की दूसरी सिफ़्त बयान हुई है या'नी उन की पहुँच सीधे कायनात के शासक तक है और वह अल्लाह के दरबार में निकटस्थ (मुकर्रब) और उच्च पद पर हैं।

23. या'नी जिब्रील फ़रिश्तों के सरदार हैं वह उस के हुक्म की इताअत करते हैं। लिहाज़ा जिस के मातहत फ़रिश्तों की फौज़ हो और जिस के इशारों पर वह हरकत में आते हों उस के काम में शैतानी ताक़तों के दख़ल अन्दाज़ होने का क्या सवाल पैदा होता है?

24. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की अमानतदारी की सिफ़्त इस बात की ज़मानत है कि वह कलामे-इलाही को जूँ का तूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे हैं। उन की तरफ़ से किसी कमी बेशी की हरगिज़ संभावना नहीं है।

कुआन के लाने वाले फ़रिश्ते का जो परिचय यहाँ कराया गया है इस से अभिप्राय यह स्पष्ट करना है कि यह कलाम शब्द शब्द इशादि इलाही (Word of God) है जिस को बहुत ही एहतिमाह के साथ और बेहद पाकीज़ा माध्यम से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाया जा रहा है। इस में किसी भी तरह की मिलावट की कोई संभावना नहीं है।

25. साथी से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और ख़िताब (सम्बोधन) मक्का वालों से है जिन के दरम्यान आपने सारी ज़िन्दगी बसर की और एक समझदार इन्सान ही की हैसियत से आप पहचाने जाते रहे। ऐसे व्यक्तित्व को दीवाना करार देना एक बेतुकी बात थी लेकिन कुआन का इन्कार करने वाले आप की मुख़ालिफ़त में ऐसे अन्धे हो गये थे कि इस तरह की बे तुकी बातें कहते हुए उन को ज़रा संकोच नहीं होता था। आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो आप के रिसालत के दावे को दीवानगी से ताबीर करते हैं लेकिन इन अक्लमन्दों की समझ में इतनी बात नहीं आती कि आप की पेश की हुई किताब ऐसी हकीमाना बातों से भरी हुई और ऐसी पाकीज़ा तालीमात पर आधारित है कि इस की मिसाल पेश करने में दुनिया असमर्थ है। फिर क्या कोई दीख़वाना आज तक हकीमाना बातें पेश कर सका है या किसी मजनून ने लोगों के अख़लाक़ संवारे हैं? सच है

“ख़िरद का नाम जुनूँ रख दिया जुनूँ का ख़िरद”

26. अर्थात् वहय लाने वाले फ़रिश्ता को अपनी असल रूप में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमान के खुले किनारे पर देखा था इस लिए इस में संदेह की कोई गुन्जाइश नहीं है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को उन के असल रूप में देखा तो उन के ६ सौ पर थे और उन के विशाल अस्तित्व से आसमान और ज़मीन का

वातावरण भर गया था (मुस्लिम, किताबुलईमान) इस से उन की जबरदस्त ताक़त का अन्दाज़ा होता है।

27. अर्थात् जो वह्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर की जा रही है उस में फ़रिश्तों की मजलिसों का भी रहस्योद्घाटन है और क्रियामत के आने की ख़बर भी। इन बातों की लोगों को ख़बर करने में आप किसी तरह की तंगी और कंजूसी से काम नहीं ले रहे हैं बल्कि अपना कर्तव्य समझ कर उसे बग़ैर किसी काट छाँट के लोगों तक पहुँचाने में सरगर्म हैं ताकि लोग होश में आएँ और अपने रब की हिदायत को कुबूल करें। गोया अल्लाह की वह्य का यह पूरा सिलसिला आसमान से ले कर ज़मीन तक सिलसिलतुज्जहब (सोने की ज़न्जीर) है जिन की कोई कड़ी भी नाक़िस (अधूरी एवं दोषयुक्त) नहीं है कि आदमी के लिए संदेह करने की कोई गुन्जाइश हो।

28. कुर्आन के नाज़िल होने के समय में भविष्यवाणियों का रिवाज था। ज्योतिषी (Sooth Sayer) ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरे जानने के दावेदार होते और शैतान जिन के बारे में यह खयाल था कि वह आसमान में उड़ कर के ग़ैब की ख़बरें लाते हैं, झूठी ख़बरें उन पर उतारते और वह उन में कुछ और झूठ मिला कर बयान करते। वह चूँकि भविष्य (Future) का हाल बयान करने के दावेदार होते थे इस लिए उन्हें लोगों से नज़राने वसूल करने और अपनी दुकान चमकाने का ख़ूब मौका मिलता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक जुबान से अल्लाह की वदह और क्रियामत की आमद की ख़बर सुन लेने के बाद कुर्आन का इन्कार करने वालों ने आप पर ज्योतिषी होने का इल्जाम लगाया और अल्लाह की वह्य के बारे में यह तअस्सुर (मनोभाव) देने की कोशिश की कि यह शैतान द्वारा अवतरित

है। यहाँ उन के इसी इल्जाम का खण्डन किया गया है। और ज़ाहिर है शैतान का इस पवित्र कलाम से क्या सम्बन्ध हो सकता है।

“चेह निस्बत खाक रा बा आलमे पाक”

क्या किसी शैतानी कलाम की यह ख़ूबी होती है कि वह इन्सान को खुदा से जोड़े, उस के मन की आँखों में रौशनी (अन्तर्दृष्टि) पैदा करे, उस के अख़लाक़ को संवारे, उस के विचारों में पवित्रता पैदा करे, उस के चरित्र को ऊँचा करे और समाज में भलाईयों के लिए उसे आमदा करे। अगर शैतानी कलाम की यह ख़ूबियाँ हो सकती हैं तो मानना पड़ेगा कि सब से बड़ा नेक गुणों वाला और इस्लाह करने वाला शैतान ही है जब कि कोई व्यक्ति भी उस का नाम उस पर लानत भेजे बग़ैर नहीं लेता। वरना यह मानना पड़ेगा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शैतानी कलाम के अवतरण का इल्जाम लगाने वाले स्वयं शैतानी वाणी का शिकार हैं। इस लिए इतनी मोटी बात भी उन की समझ में नहीं आती।

29. अर्थात् कुर्आन याददेहानी और नसीहत तो है सारे इन्सानों के लिए लेकिन इस से फ़ायदा वही लोग उठा सकते हैं जो सीधी सच्ची राह अपनाना चाहें। जो हक़ का इच्छुक न हो वह हिदायत के इस चरमे (स्रोत) से फ़ैज़याब (लाभान्वित) नहीं हो सकता।

30. अर्थात् यह सही है कि नसीहत हासिल करने और हिदायत पाने के लिए इन्सान का चाहना पहली शर्त है लेकिन यह काम अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर अन्जाम नहीं पा सकता। अल्लाह की मर्जी इन्सान की मर्जी पर ग़ालिब (हावी) है इस लिये इन्सान इस घमण्ड में न रहे कि वह जो चाहे कर सकता है।



सूरह अल्-इन्फितार

८२. सूरह अल्-इन्फितार

नाम :- पहली ही आयत में आसमान के इन्फितार (फट जाने) की खबर दी गयी है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-इन्फितार है।

नाज़िल होने का समय :- इस बारे में सहमति है कि यह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि इस का और सूरह तकवीर के नाज़िल होने का समय करीब करीब एक ही रहा होगा अर्थात् मक्के का इब्तेदाई दौर।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह का भी केन्द्रीय विषय कर्म फल ही है लेकिन दलील एक दूसरे पहलू से दी गयी है। और इस एहतिमाम से आगाह भी कर दिया गया है जो हर व्यक्ति की अमली ज़िन्दगी को रेकार्ड करने के लिए अल्लाह तआला ने कर रखा है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में क्रियामत का नक्शा खींचा गया है और बताया गया है कि जब यह बड़ा हादसा ज़ाहिर होगा तो इन्सान का किया धरा सब उस के सामने

आ जायेगा ।

आयत ६ से ८ में इन्सान को एहसास दिलाया गया है कि जिस खुदा ने इन्सान को बेहतरीन शरीर में ढाला और उच्च श्रेणी की क्षमता प्रदान की, उसे क्या मनमानी करने के लिए यूँ ही छोड़ दिया जायेगा? उस का अपने खुदा के साथ वफ़ादारी और बेवफ़ाई का इम्तिहान नहीं होगा? और क्या वह अल्लाह के दरबार में अपने तर्जें अमल (कार्यशैली) के लिए जवाबदेह नहीं करार पायेगा?

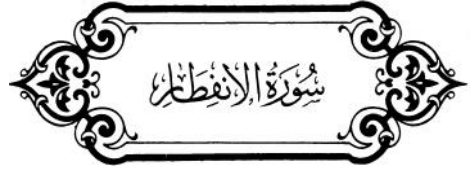
आयत ९ से १२ में उस एहतिमाम (तैयारियों) का ज़िक्र है जो अल्लाह ने हर व्यक्ति के आमाल (कर्मों) को नोट कर लेने के लिए कर रखा है।

आयत १३ से १९ में संक्षिप्त रूप में नेकी करने वालों और बदकारों का अन्जाम सामने लाया गया है। और ख़बरदार किया गया है कि पेशी के दिन किसी के बस में कुछ न होगा और सारे इख्तियारात अल्लाह के हाथ में होंगे।

८२. सूरह अल्-इफ़ितार

आयतें : 19

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आसमान फट जायेगा।¹

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ①

2. और जब तारे बिखर जायेंगे,²

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انتَثَرَتْ ②

3. और जब समुद्र बहा दिये जायेंगे,³

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ③

4. और जब क़बरे उखेड़ दी जायेंगी,⁴

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ④

5. उस वक्त हर व्यक्ति को मालूम हो जायेगा कि उसने आगे क्या भेजा है ? और पीछे क्या छोड़ा है ?⁵

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ⑤

6. ऐ इन्सान ! तुझे किस चीज़ ने अपने करीम रब के बारे में धोखे में डाल रखा है?⁶

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ⑥

7. जिस ने तुझे बनाया, और ठीक ठीक (इन्सान) बनाया और तेरी बनावट में संतुलन रखा,

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ⑦

8. और जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया।⁷

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ⑧

9. नहीं⁸ मगर तुम जज़ा (इनाम) और सज़ा को झुठलाते हो।⁹

كَلَّا بَلْ تَكَذِّبُونَ بِالذِّينِ ⑨

10. हालांकि तुम पर निगरानी करने वाले मुक़रर हैं।¹⁰

وَإِن عَلَيْكُمْ حَافِظِينَ ⑩

11. प्रतिष्ठित कातिब (लिपिक)।¹¹

كِرَامًا كَاتِبِينَ ⑪

12. जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं।¹²

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ⑫

1. इस मादी दुनिया (Physical world) को देख कर इन्सान माजी (भूतकाल) में यह खयाल करता रहा है कि उस के रात और दिन हमेशा यही रहेंगे और वह कभी किसी हादसे से दोचार होने वाला नहीं। और जहाँ तक मौजूदा साइन्स की बात है उस की तरक्की ने इन्सान को यह मान लेने पर मजबूर कर दिया है कि सूरज की ताकत भी नष्ट हो सकती है और यह कायनात बहुत बड़े हादसे से दोचार हो सकती है। अलबत्ता वैज्ञानिकों के अन्दाजे के मुताबिक यह स्थिति अरबों साल बाद आयेगी।

लेकिन कुआन जो अल्लाह का कलाम (वाणी) है सिर्फ संभावनाओं की बात नहीं करता बल्कि ठोस तरीके से और बिल्कुल खुले और स्पष्ट शब्दों में यह खबर देता है कि बहुत जल्द यह कायनात बहुत बड़े हादसे से दोचार होगी और ज़मीन तो ज़मीन आसमान की व्यवस्था भी तितर बितर हो जायेगी ताकि एक नई दुनिया एक नई व्यवस्था के साथ वजूद में लाई जाये। ज़ाहिर है नये निर्माण के लिए विनाश ज़रूरी होता है इस लिए नये जहान के निर्माण के लिए इस दुनिया का विनाश कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं।

क्रियामत के दिन आसमान और ज़मीन के टूट फूट जाने के ज़िक्र से बाइबल भी खाली नहीं।

“तब आकाश गरजता हुआ विलीन हो जायेगा, तत्व प्रचंड ताप के कारण पिघल जायेंगे, और पृथ्वी तथा उस पर किये गये मनुष्यों के कर्म प्रकट हो जायेंगे।” (२ पतरस ३:१०)

यह इस बात की दलील है की कुआन जिस बड़े हादसे की खबर दे रहा है वह कोई नई खबर नहीं है जो कुआन ने पहली दफ़ा दी हो बल्कि इन्सानी बिरादरी को अल्लाह की वह्य द्वारा बराबर आगाह किया जाता रहा है अलबत्ता कुआन जितने प्रभावपूर्ण शैली में जिस तफ़सील (विवरण) के साथ क्रियामत का वर्णन कर रहा है उस की मिसाल इन परिवर्तित (तहरीफ़शुदा) आसमानी किताबों में से किसी किताब में भी मिलना मुश्किल है। और वास्तविकता यही है कि कुआन के इस बयान से क्रियामत के बारे में ज़बरदस्त यक़ीन पैदा हो जाता है और दिल एवं दिमाग़ को ऐसा झटका लगता है कि दुनिया के बारे में इन्सान के विचारों में बहुत बड़ी तब्दीली शरू हो जाती है।

2. सितारे संसार की रौनक हैं लेकिन जब यह संसार ही खत्म कर दिया जायेगा तो इन कुमकुमों के बाक़ी रहने का क्या सवाल? जिस क़ानूने कशिश गुरुत्वाकर्षण विधान अथवा (Law of Gravitation) ने इन को अन्तरिक्ष में अनुशासित (मुनज़ज़म) कर रखा है उस में ज़रा सा भी खलल

उन को तितर बितर कर देने के लिए काफ़ी है। सितारों के गिरने का ज़िक्र इन्जील में भी मौजूद है।

“सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा, चन्द्रमा प्रकाश न देगा आकाश से तारामण गिरेंगे,----- एवं अन्तरिक्ष, की शक्तिया हिल जाएंगी।”

3. समुद्र जोश में आकर अपनी सीमाओं को तोड़ कर बह पड़ेंगे और साथ ही जैसा कि सूरह तकवीर में बयान हुआ है “भड़क उठेंगे।”

4. क़बरों के उखेड़ दिये जाने का मतलब यह है कि जूँ ही क्रियामत का दूसरा सूर फूँक दिया जायेगा ज़मीन के अन्दर से मुर्दे इस तरह से बाहर निकल पड़ेंगे जैसे क़बरें उखेड़ कर मुर्दों को बाहर निकाला गया है। क्रियामत तक जितने इन्सान भी पैदा हुए और मर गये उन को ज़मीन उगल देगी चाहे किसी की लाश जला दी गई हो या हवा में उस के अंश बिखर गये हों।

5. आगे भेजने (مَا قَدَّمَ) से मुराद आदमी का अच्छा या बुरा अमल है जो आख़िरत की ज़िन्दगी के लिए किया। गोया इन्सान रोज़ाना अपने कर्मों का पारसल नई दुनिया को भेजता है जहाँ क्रियामत के दिन वह पहुँचने वाला है। यह और बात है कि कोई व्यक्ति सदा बहार फूलों का पारसल भेजता है ताकि उस के लिए जन्नत की बहार बन जाये और कोई व्यक्ति विस्फोटक (आतशगीर) सामान का पारसल भेजता है ताकि उस को जलाने के लिए ईंधन का काम दे।

पीछे छोड़ने (مَا أَخَّرْتُ) से मुराद तक्रवा (ईशभय) और नेकी के वे काम हैं जो इन्सान के करने के थे लेकिन उस ने नहीं किये। इस तरह क्रियामत के दिन हर शख्स को उस की कारकर्दगी और उस की कोताहियाँ (Commission & Omission) अच्छी तरह मालूम हो जायेंगी।

6. यहाँ खुदा के करीम होने की सिफ़्त का हवाला देने का मक़सद उस के उपकारी (मोहसिन) होने का एहसास दिलाना है ताकि आदमी के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास उभरे। खुदा के मोहसिन और मेहरबान होने का तक्राज़ा यह था कि आदमी उस की तरफ़ लपकता और उस का शुक्रगुज़ार बन्दा बन कर रहता है लेकिन वह उस से मुँह फेरता है और उस के सामने अपने आप को जवाबदेह मानने के लिए तैयार नहीं होता। यह सरासर धोका है जिस में इन्सान मुज्जिला रहता है। लेकिन इस धोखे में पड़ने की कोई माकूल वजह नहीं बल्कि यह सिर्फ़ इच्छा परस्ती है जो उसे अपने मेहरबान रब से बगावत पर आमादा करती है।

7. इन्सान दुनिया की मुमताज़ तरीन (प्रमुखतम) मख़्लूक

है और उस की तख्तीक (रचना) में खालिक (सृष्टा) की कारीगरी पूरी तरह स्पष्ट है। इन्सान का पहले लोथड़ा तैयार होता है उस के बाद उसे इस तरह दुरुस्त किया जाता है कि वह अनुकूल अंगों को लेकर नमूदार हो जाता है। फिर उस के अंगों में ऐसा संतुलन रखा जाता है कि उस का वजूद दुनिया की सब से संतुलित मख्लूक होने की गवाही देता है। एवं यह भी कि इन्सानी बिरादरी का हर व्यक्ति रूप रंग में दूसरे से भिन्न होता है। दुनिया में अरबों इन्सान पैदा होते हैं और उन सब का मॉडल एक नहीं होता बल्कि हर एक का मॉडल अलग अलग होता है ताकि उस की विशेषता और उस की पहचान बरकरार रहे। सारांश यह कि इन्सान की बनावट और उस के रंग के मुशाहदे से उस के खालिक की कुदरत के कमालात और हैरत अंगेज कारीगरी का अन्दाज़ा हो जाता है। और यह एहसास भी पैदा हो जाता है कि इन्सान के हक में वह कितना बड़ा परोपकारी है जिस ने उस को इस दुनिया की बेहतरीन मख्लूक बना कर उठाया।

8. या'नी तुम्हारा यह अन्दाज़ा सही नहीं कि दुनिया यूँ ही चलती रहेगी, न क्रियामत आयेगी और न खुदा के हुजूर तुम्हारी पेशी होगी।

9. या'नी क्रियामत के आने की जो खबर कुआन दे रहा है उस को झुठलाने की असल वजह यह है कि तुम इनाम और सज़ा की हक़ीक़त को स्वीकार करना नहीं चाहते क्यों कि इस को स्वीकार करने के बाद इन्सान को नफ़्सानी ख्वाहिशात (स्वार्थिक इच्छाओं) के बिलमुकाबिल एक ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है। आज भी इन्सान ने ईनाम एवं सज़ा के मज़हबी तसव्वुर से बचने के लिए कायनात की ऐसी “साइन्टिफ़िक” तौजीह (वैज्ञानिक स्पष्टीकरण) की है कि ज़ेहन न खुदा की तरफ़ जाता है और न क्रियामत की तरफ़।

10. या'नी तुम इनाम और सज़ा को झुठलाना चाहो तो झुठलाओ, इस से हक़ीक़त नहीं बदलती। हक़ीक़त यह है कि जज़ा और सज़ा का मामला ज़रूर पेश आना है और इस के लिए अल्लाह ने यह ऐहतिमाम किया है कि तुम्हारे आमाल को रेकार्ड किया जाये।

निगराँ से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो इन्सान की करनी और कथनी को रेकार्ड करने के लिए अल्लाह की तरफ़ से मुकर्रर हैं। हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते लगे होते हैं एक दाईं तरफ़ और दुसरा बाईं ओर।

11. मुराद क़ौल-व-अमल (करनी और कथनी) को रेकार्ड करने वाले फ़रिश्ते हैं। उन की सिफ़त “किरामन” (प्रतिष्ठित, सम्मानित, मुअज़्ज़ज़) बयान की गई है। जिस से यह स्पष्ट करना अभिप्राय है कि यह बेहद ज़ेम्मेदारी के साथ

अपनी ड्यूटी अन्जाम देते हैं। इन के बारे में न यह संदेह हो सकता है कि कोई व्यक्ति नेकी करे और यह लिखे नहीं और न यह संदेह हो सकता है कि एक की नेकी दूसरे के खाते में जमा कर दें। यह छिपे तौर पर मगर बावकार अन्दाज़ में पूरी ईमानदारी के साथ अपना फ़र्ज़ अन्जाम देते रहते हैं। लिहाज़ा इन को दुनियावी हुकूमतों की सी. आई. डी. जैसा समझना सही न होगा जिस के इल्म का दायरा भी महदूद होता है और जो अपने फ़र्ज़ में कोताह होने का सबूत देते हुए उल्टी सीधी रिपोर्ट पेश करती रहती हैं। अलबत्ता यह हक़ीक़त है कि इस खुफ़िया पुलिस पर भी अल्लाह की खुफ़िया पुलिस मुकर्रर है जो इन की सारी हरकतों को रेकार्ड कर रही हैं।

फ़रिश्तों की किताबत (writing) की स्थिति तो अल्लाह ही को मालूम है। अलबत्ता मौजूदा साइन्स और टेकनॉलाजी के दौर में यह समझना हमारे लिए कुछ मुश्किल नहीं रहा कि इन्सान की तमाम सरगर्मियों (Activities) को और उस की जुबान से निकले हुए एक एक लफ़्ज़ को सुरक्षित किया जा सकता है। फिल्म, रेडियो, फोटो, टेलिविज़न और टेप रेकार्डिंग इस की खुली मिसालें हैं। और अब तो यह भी संभव हुआ है कि ज़मीन पर बैठ कर हम लाखों और करोड़ों मील दूर, चाँद, मंगल (Mars) और शनि (Saturn) जैसे ग्रहों की तस्वीर मँगाए। वास्तव में मौजूदा साइन्स ने दो बहुत ही अहम कुदरती विधान का रहस्योद्घाटन किया है जिस में समझने वालों के लिए बहुत कुछ रहनुमाई का सामान मौजूद है। एक यह कि हमारी तस्वीर हर हर पल वातावरण में बनती रहती है, इसी तस्वीर को महफूज़ करने की टेक्निक (Tech-nic) साइन्स ने अपनाई है।

इसी तरह हमारी आवाज़ हवा में लहरें पैदा करती हैं इन लहरों को कैसेट में महफूज़ (Save) कर के उसी आवाज़ को फिर सुना जा सकता है। यह सब कुछ जब इन्सान के लिए संभव हुआ है और संभव भी ऐसा कि इसी पर वर्तमान संस्कृति (Modern Civilization) की इमारत खड़ी हुई है। तो फिर इन्सान के लिए यह स्वीकार करना क्या मुश्किल है कि जिस खुदा ने यह क़ानूने-कुदरत (Law of Nature) बनाया है उस ने इस बात का भी ऐहतिमाम किया है कि हर व्यक्ति की पूरी ज़िन्दगी को फ़िल्माया जाए और क्रियामत के दिन हमारी बोलती फ़िल्म हमारे सामने पेश कर दी जाए। उस वक्त अपनी बोलती फ़िल्म को देख कर इन्सान के होश ठिकाने नहीं रहेंगे। अगर इन्सान आज ही यह यक़ीन कर ले कि उस की पूरी ज़िन्दगी को फ़िल्माया जा रहा है और उस की बोलती फ़िल्म उसे दिखाई जाने वाली है तो इन्सान अपने रवैये में बड़ा सावधान और ज़िम्मेदार होगा। और कभी

ऐसा काम करने या ऐसी बात जुबान से निकालने के लिए तैयार नहीं होगा जो कल आखिरत के टेलिवीजन पर वह देखना और सुनना पसन्द नहीं करेगा।

12. यहाँ कर्मों का वर्णन है और सूरह “काफ़” में सराहत (स्पष्टीकरण) है कि जो लफ़ज़ भी इन्सान अपनी जुबान से निकालता है उस को नोट करने के लिए एक फ़रिश्ता मौजूद होता है और यह भी कि ये फ़रिश्ते दो होते हैं जो दाएँ और बाएँ तरफ़ बैठे निगरानी कर रहे होते हैं।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ -

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ - (१८-१९)

“जब दो रिकार्ड करने वाले दाएँ और बाएँ बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं। वह कोई शब्द भी ज़बान से नहीं निकालता, मगर उस के पास एक मुस्तइद निगराँ (सतर्क निरीक्षक) मौजूद होता है।” (सूरह काफ़ १७-१८)



13. निश्चय ही नेक लोग ¹³ ऐश और आनन्द में होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾

14. और बदकार ¹⁴ जहन्नम में।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ فِي جَهَنَّمَ

15. वह उस में बदला पाने के दिन दाखिल होंगे।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

16. और उस से गायब नहीं हो सकेंगे।¹⁵

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

17. और तुम्हे क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है ?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٧﴾

18. फिर (सुन लो !) तुम्हें क्या खबर कि बदले का दिन क्या है ?¹⁶

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾

19. वह दिन जब कोई व्यक्ति किसी के लिये कुछ न कर सकेगा और मामलात सिर्फ अल्लाह ही के इख्तियार में होंगे।¹⁷

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ
شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

13. सूरह का मज़मून इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि नेक कर्मों वाले वह लोग हैं जिन की बुनियादी विशेषता रब्बे करीम के सामने जवाबदेही का एहसास है।

14. जो लोग रब्बे करीम के सामने जवाबदेही के काइल न हों और जज़ा-व-सज़ा को झुठलाएँ वह कुआनी परिभाषा (Qur'aanic Term) में “फ़ाज़िर” (बदकार) हैं क्योंकि जहाँ खुदा के सामने पेशी की कल्पना न हो वहाँ पूरी जिन्दगी ग़लत हो कर रह जाती है।

15. अर्थात् वह जहन्नम में ज़रूर दाखिल होंगे और दाखिल होने के बाद उस से निकल भागने की कोई सूरत संभव न होगी। वह हमेशा के लिए उसी में पड़े रहेंगे।

16. सवाल को इस लिए दोहराया गया है ताकि बदले के दिन की अहमियत खुल जाये और खुदा की अदालत में हाजिरी की कल्पना से इन्सान लरज़ उठे।

17. अर्थात् दुनिया में इन्सान जो इख्तियार का मालिक नज़र आता है क्रियामत के दिन बिल्कुल बेइख्तियार और बेबस होगा चाहे दुनिया में वह राजा रह चुका हो या रंक। उस रोज़ इन्सान की बेबसी का यह हाल होगा कि वह अपने ही लिए कुछ न कर सकेगा कहाँ यह कि दूसरों के लिए करे। इख्तियार और इक्तिदार सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में होगा और मामलात के फैसले वह खुद फ़रमाएगा। यह है अल्लाह की अदालत में पेशी का वह तसव्वुर जो कुआन पेश करता है। और अक़ीदा-ए-आख़िरत का अनिवार्य अंश है। इस के विरुद्ध आवागमन का अक़ीदा एक चक्र है जिस में खुदा की अदालत में पेशी का कोई मरहला (चरण) पेश आने वाला ही नहीं है। इस से इस्लाम में आख़िरत के अक़ीदे और मुश्रिकीन के आवागमन के अक़ीदे के बुनियादी फ़र्क़ को अच्छी तरह मसझा जा सकता है।



सूरह अल्-मुतफ़िफ़ीन

८३. अल्-मुतफ़िफ़ीन

नाम :- सूरह के शुरू ही में मुतफ़िफ़ीन (नाप तौल में कमी करने वालों) को सज़ा की धमकी सुनाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-मुतफ़िफ़ीन है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस वक़््त की नाज़िल शुदा है जब कि कुर्आन की दअवत मक्का वालों के सामने पेश हो चुकी थी। वह बदले के दिन का इन्कार कर रहे थे और ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ा रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- रब्बुल आलमीन (सारे जगत के रब) के सामने पेशी और कर्मों का बदला है। इस का एहसास दिलाने के लिए मामलात की उस ख़राबी पर पकड़ की गई है जिस में आख़िरत का एहसास न रखने वाले लोग आम तौर से फँसे होते हैं।

कलाम की तरतीब:- सूरह इन्फ़ितार से इस का सम्बन्ध बिल्कुल स्पष्ट है। उस में आगाह किया गया था कि आमाल (कर्मों) को नोट करने के लिए फ़रिश्ते मुकर्रर हैं। इस सूरह में इस हक़ीक़त से सूचित किया गया है कि इन्सान की अमली ज़िन्दगी (Practical Life) का रेकार्ड उस के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में महफूज़ रखने का इन्तिज़ाम अल्लाह

तआला ने कर रखा है।

आयत १ से ६ में कारोबारी मामलों में बेईमानी और फ़रेबकारी पर पकड़ करते हुए खुदा के सामने ज़वाब देही का एहसास दिलाया गया है।

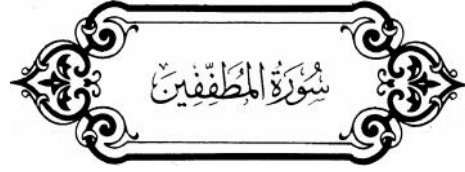
आयत ७ से १७ में इस हक़ीक़त से सूचित किया गया है कि बदकारों (कुकर्मियों) का आमाल नामा (कर्मपत्र) उन के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में एक ख़ास दफ़्तर में जो मुज़रिमों ही के लिए निश्चित है। और क्रियामत के दिन उस रेकार्ड की बुनियाद पर फैसला किया जायेगा। और उस रोज़ उन का अन्जाम बड़ा ही हसरतनाक होगा।

आयत १८ से २८ में नेक किरदार लोगों (सुकर्मियों) को ख़ुशख़बरी दी गई है कि उन का आमाल नामा (कर्मपत्र) उन के मरने के बाद आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में उच्चकोटि के दफ़्तर में है जो नेक लोगों के लिए निश्चित है, सुरक्षित किया जाता है और क्रियामत के दिन उस रेकार्ड की बुनियाद पर फैसला किया जायेगा। उस रोज़ वह कामयाब और बामुराद होंगे।

आयत २९ से ३६ में ईमान वालों को तसल्ली दी गई है कि वह इन्कार करने वालों के बुरा कहने पर दुखी न हों। आज वह तुम पर हँस रहे हैं मगर कल तुम उन पर हँसोगे।

८३. सूरह अल्-मुत्फिफ़ीन

आयतें : 36



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तबाही है नाप तौल में कमी करने वालों के लिए।
2. जो लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं।
3. और जब उन को नाप कर या तौल कर देते हैं तो घटा कर देते हैं।
4. क्या ये लोग नहीं समझते कि इन्हें उठाया जायेगा ?¹
5. एक बड़े दिन,²
6. जिस दिन सब लोग सारे जहान के रब के सामने खड़े होंगे।³
7. (इन का गुमान सही) नहीं।⁴ यकीन जानों बदकारों का आमाँल नामा सिज्जीन में होगा।
8. और तुम्हें क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है ?
9. वह एक रेकार्ड आफ़िस है।⁵
10. तबाही है उस दिन इन्कार करने वालों के लिए!
11. जो बदले के दिन का इन्कार करते हैं।
12. और इस का इन्कार वही लोग करते हैं जो हद से गुज़रने वाले ⁶ गुनाहगार होते हैं।⁷

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝۱

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝۲

وَإِذَا كَالُوا لَهُمْ أَوْزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝۳

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ۝۴

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝۵

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۶

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝۷

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝۸

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝۹

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝۱۰

الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ يَوْمَ الدِّينِ ۝۱۱

وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝۱۲

1. शुरू की इन आयतों में नाप तौल में कमी करने वालों पर कड़ी पकड़ की गई है। यह पकड़ यद्यपि डन्डी मारने और नाप घटा कर देने पर की गई है फिर भी इस के भावार्थ में लेने देने के मामले में की जाने वाली हर तरह की बेईमानी विश्वासघात और फरेब देना शामिल है। मिसाल के तौर पर खाने पीने वाली वस्तुओं में मिलावट करने (Adulteration) पर भी इस का इत्लाक़ (Implement) होता है क्योंकि मिलावट की सूरत में असल वस्तु को मात्रा से कम दिया जाता है। लिहाज़ा दूध में पानी मिलाने का मतलब शुद्ध दूध की मात्रा को घटा देना है और चूँकि घटा देने का यह कार्य ख़रीदार से छिपा कर किया जाता है इस लिए यह फ़रेब देना भी है और कमीनापन भी।

इस ख़राबी का असली कारण कुर्आन ने यह बताया है कि ऐसे लोग ख़ुदा के सामने पेशी का कोई तसव्वुर नहीं रखते हालाँकि उन का ज़मीर ख़ुद इस बात की गवाही दे रहा होता है कि वह अपने रब के सामने ज़वाबदेह (उत्तरदायी) हैं क्योंकि इस मुजरिमाना कार्यशैली को अपनाने वाले लोग जब दूसरों से लेते हैं तो नाप भर कर लेते हैं और कोई व्यक्ति भी इस बात को पसन्द नहीं करता कि उस की आँखों में धूल झोंक दी जाये। और उस को मात्रा से कम दिया जाये। दूसरे शब्दों में मनुष्य की प्रकृति इन्साफ़ ही को पसन्द करती है और चाहती है कि हर एक के साथ इन्साफ़ का मामला किया जाये। यह इस बात की दलील है कि इन्सान का ख़ालिक़ (पैदाकरने वाला) इन्साफ़ ही को पसन्द करता है लिहाज़ा जो लोग दूसरों से लेन देन करते समय इन्साफ़ की ख़िलाफ़ वर्जि करते हैं वह दर असल अपने रब की मर्जी और उस के इस हुक्म के ख़िलाफ़ काम करते हैं जो उन की प्रकृति (फ़ितरत) में समर्पित हुआ है। फिर उन का रब उन की इन मुजरिमाना हरकतों पर क्यों नहीं पकड़ेंगा? क्या डन्डी मारने वाले और इन्साफ़ का तराजू क़ायम करने वाले दोनों एक जैसे हो सकते हैं? और क्या दोनो का अन्जाम एक जैसा होगा? इन्सान की फ़ितरत और उसका विजदान (अन्तःप्रेरणा) इस को एक जैसा नहीं मानता। यहीं से कुर्आन के बयान की सच्चाई रौशन हो जाती है कि इन्सान को एक दिन जी उठना है और अपने रब के सामने कार्यशैली के सिलसिले में ज़वाबदेही करनी है और उस के अनुसार ईनाम या सज़ा पाना है।

इस से स्पष्ट हुआ कि इन्सान जब ख़ुदा के सामने ज़वाब देही का तसव्वुर नहीं रखता तो उस के लेने के पैमान और होते हैं और देने के और। वह न केवल अपना हक़ पूरा पूरा वसूल करना चाहता है बल्कि यह भी चाहता है कि दूसरों के अधिकारों पर भी डाका डाले। इस विचार धारा के सुधार का

सही और असरदार माध्यम ख़ुदा के सामने ज़वाबदेही का तसव्वुर ही है। इस लिए आर्थिक बुराइयों को दूर करने का मसला हो या समाजी बिगाड़ के सुधार का मसला, आदमियों में यह चेतना जगाये बग़ैर वास्तविक सुधार संभव नहीं।

2. मुराद क्रियामत का दिन है जो बेहद सख़्त होगा।

3. ख़ुदा की अदालत में हाज़री कोई मामूली बात नहीं है कि आदमी उस पर से सरसरी तौर से गुज़र जाये बल्कि यह बेहद सख़्त और कठिन मरहला होगा जो हर एक को ज़रूर पेश आना है लिहाज़ा अगर वह चाहता है कि सलामती के साथ इस मरहले से गुज़र जाये तो उसे अपने दिल और दिमाग़ में इस तसव्वुर को बसाना होगा और इसी बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारना होगी।

ज़रा कल्पना कीजिए अल्लाह की अदालत का जब कि सारे इन्सान ज़िन्दा हो कर हश्र के मैदान में जमा हो चुके होंगे, कायनात का फ़रमाँवा (शासक) अदालत बरपा फ़रमाएगा हर व्यक्ति की उस के दरबार में पेशी होगी और उसे पूरी ज़िन्दगी का हिसाब पेश करना होगा। फ़रिश्ते इस बात का इन्तेज़ार कर रहे होंगे कि किस के पक्ष में क्या फ़ैसला होता है ताकि उसे लागू करने के लिए हरकत में आएँ। उस वक्त इन्सान बिलकुल बेबस होगा। अगर इन्सान आज उस बेबसी की कल्पना कर ले तो अल्लाह के ख़ौफ़ से काँप उठे और उस के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा हो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में क्रियामत की स्थिति का नक़शा इस तरह खींचा गया है :-

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ حَتَّى يَغِيبَ أَحَدُهُمْ
فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أَذْنِيهِ. (مسلم کتاب الحجة)

“जिस रोज़ लोग रब्बुल आलमीन के सामने पेशी के लिए खड़े होंगे तो वह पसीने में इस तरह शराबोर होंगे कि कुछ लोगों के कान के आधे हिस्से तक का शरीर पसीने में डूब रहा होगा”। (मुस्लिम किताबुल ज़न्नह)

अल्लहु अकबर ! कैसा सख़्त मरहला होगा जिस से अल्लाह के रसूल ने इन्सान को पहले से ही सुचित कर दिया है। काश कि लोग क्रियामत की स्थिति की कल्पना से अपने विचारों पर सुधार के लिए दोबारा दृष्टि डालने (Revise) के वास्ते तैयार होते।

4. अर्थात् उन का यह अन्दाज़ा (अनुमान) ग़लत है कि न दोबारा जी उठना है और न ख़ुदा के सामने ज़वाबदेही करना है

5. “सिज्जीन” सिज्ज से बना है जिस के अर्थ कैद ख़ाना के हैं। यह लफ़ज़ कुर्आन ने अपनी परिभाषा (Term) के तौर

पर इस्तेमाल किया है और इस की खुद ही यह व्याख्या की है कि वह “किताबुम्मरकूम” है अर्थात् “रेकार्ड आफिस”।

यह आलमे बरज़ख (यमलोक) की एक बड़ी हकीकत है जिस से इन्सान को बाख़बर (सूचित) किया गया है। हर हर व्यक्ति की अमली जीवन का रिकार्ड तैयार करने पर फ़रिश्तों को जो मामूर किया गया है। इस का सिलसिला उस की मौत तक जारी रहता है। मौत के बाद उस का आमाल नामा (कर्मपत्र) आलमे बरज़ख (यमलोक) में स्थानान्तरित (Transfer) हो जाता है। अगर वह बदकार (कुकर्मी) था तो उस के आमाल नामे को “सिज्जीन” नामी रेकार्ड आफिस में लिखा जाता है। और अगर वह नेकोकार था तो जैसा कि आगे बयान हुआ है, इस का इन्दिराज “इल्लीयीन” में होता है। इस से वास्तव में यह स्पष्ट

करना अभिप्राय है कि हर हर व्यक्ति के आमाल नामे को उस के मरने के बाद सुरक्षित रखने का अल्लाह तआला ने एहतिमाम कर रखा है और क्रियामत के दिन उस को खोल दिया जायेगा और इसी की बुनियाद पर अल्लाह की अदालत में फैसला होगा।

6. हद से गुज़र जाने वाले से मुराद बन्दगी की हदों को लांघ जाने वाले लोग हैं। या’नी जो अपने को अल्लाह का बन्दा नहीं समझते बल्कि खुद मुख्तार (स्वाधीन) समझ कर मनमानी करते रहते हैं।

7. गुनाहगार से मुराद गुनाहों में लिप्त होने वाले लोग हैं। जब इन्सान खुदा का बन्दा बन कर रहने के लिए तैयार नहीं होता तो फिर उस की पूरी ज़िन्दगी गुनाह, बुराई, जुर्म की ज़िन्दगी बन कर रह जाती है। ऐसा व्यक्ति बदले के दिन को क्यों मानने लगे?



ऐसे व्यक्ति को जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं। नहीं, बल्कि हक़ीक़त यह है कि उन के दिलों पर उन के (बुरे) कर्मों का ज़ंग (मुर्चा) चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं। उस दिन वह अपने रब से दूर रखे जायेंगे। फिर वह जहन्नम में दाखिल होंगे। उस वक्त उन से कहा जायेगा कि यह वही चीज़ है जिस का तुम इन्कार करते रहे हो। (अल-कुआन)

13. ऐसे व्यक्ति को जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं।⁸

إِذْ اُتِيَ عَلَيْهِ اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلٰیْنَ ۝۱۳

14. नहीं,⁹ बल्कि हक़ीक़त यह है कि उन के दिलों पर उन के (बुरे) कर्मों का ज़ंग (मुर्चा) चढ़ गया है।¹⁰

كَلَّا بَلْ مَرَّانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝۱۴

15. हरगिज़ नहीं।¹¹ उस दिन वह अपने रब से दूर रखे जायेंगे।¹²

كَلَّا اِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَّحْجُوْبُوْنَ ۝۱۵

16. फिर वह जहन्नम में दाखिल होंगे।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيْمِ ۝۱۶

17. उस वक्त उन से कहा जायेगा कि यह वही चीज़ है जिस का तुम इन्कार करते रहे हो।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكٰذِبُوْنَ ۝۱۷

18. (इन का दावा सही) नहीं।¹³ निःसंदेह ही नेक किरदार लोगों का आमाल नामा (कर्मपत्र) इल्लीयीन में होगा।

كَلَّا اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِیْ عَلٰییْنَ ۝۱۸

19. और तुम्हें क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या है?

وَمَا اَدْرٰکَ مَا عَلٰییْنَ ۝۱۹

20. वह एक रेकार्ड आफ़िस है।¹⁴

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝۲۰

21. जहाँ (अल्लाह के दरबार के) मुकर्रिबीन (समीपवर्तियों या Nearest) की हाज़िरी होती है।¹⁵

یَسْهَدُوْهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝۲۱

22. बेशक नेकोकार (सुकर्मी) ऐश में होंगे।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ ۝۲۲

23. शानदार तख़्तों पर बैठे नज़ारा कर रहे होंगे,¹⁶

عَلٰی الْاَرَآئِكِ یَنْظُرُوْنَ ۝۲۳

24. उन के चेहरों पर तुम देखोगे कि ख़ुशहाली एवं आनन्द की लहर झलक रही है।¹⁷

تَعْرِفُ فِیْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِیْمِ ۝۲۴

25. उन को ऐसी शराब पिलाई जायेगी जो ख़ालिस और मुहरबन्द होगी।

یُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِیْقٍ خَمْرٍ ۝۲۵

8. या'नी कुर्आन में काफ़िर क़ौमों पर अल्लाह के प्रकोप की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है उन से सबक लेने के बजाए ये लोग उन को अफ़साने और कहानियाँ करार देते हैं। मौजूदा ज़माने के इन्कार करने वाले भी इसी तरह के इल्ज़ाम लगाया करते हैं। उन के नज़दीक ये सब कुछ “दकियानूसियत” है।

9. यह तरदीद (खण्डन) है इन्कार करने वालों के उस इल्ज़ाम की जो ऊपर बयान हुआ।

10. या'नी वह कुर्आन के बारे में इतनी ग़लत बात कहने की ज़रूरत इस वजह से कर रहे हैं कि उन के बुरे कर्मों ने उन को ढीट बना दिया है वर्ना अच्छे स्वभाव के इन्सान कुर्आन के बारे में ऐसी नामाकूल बात हरगिज़ नहीं कह सकते।

दिल पर जंग (मुर्चा) चढ़ जाने की व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह फ़रमाई है।

إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا خَطَأَ خَطِيئَةً نُكِّتَتْ فِي قَلْبِهِ نُكْتَةٌ
سَوْدَاءُ فَإِذَا هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صَقِلَ
قَلْبُهُ وَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا حَتَّى تَعْلُوَ قَلْبُهُ
وَهُوَ الرَّاغِبُ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى
قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ - (ترمذی ابواب النّسیر)

“बन्दा जब किसी गुनाह को कर गुज़रता है तो उस के दिल पर एक काला धब्बा लग जाता है। अगर वह उस (गुनाह) से बाज़ आ जाता है और क्षमा याचना और तौबा करता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है लेकिन अगर वह फिर गुनाह करता है, तो यह धब्बा बढ़ जाता है यहाँ तक कि वह पूरे दिल पर छा जाता है। यही वह जंग है जिस का ज़िक्र अल्लाह तआला ने आयत

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ में

किया है” (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़सीर)

11. या'नी उन की यह आरजू भी ग़लत है कि अगर आख़िरत बरपा हो ही गई तो हमें जिस तरह “इज़्जत का मक़ाम” हासिल हुआ है खुदा के यहाँ भी यह प्रमुख रूप से खुदा के निकट होंगे।

12. अर्थात् यह लोग अल्लाह के यहाँ कोई प्रमुखता क्या प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें उस रोज़ अपने रब से दूर रखा जायेगा। वह उस की कृपा से भी महरूम होंगे और उस की शान के जलवे देखने से भी।

13. या'नी उन का यह दावा सही नहीं कि अल्लाह के यहाँ नेक और बद में कोई फ़र्क़ नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने बदकारों का आमालनामा अलग महफुज़ रखने के लिए अलग अलग रेकार्ड आफ़िस क़ायम कर रखे हैं।

14. “इल्लीयीन” का शाब्दिक अर्थ “उच्च स्थान” है। यहाँ इस शब्द को कुर्आन ने अपनी विशेष परिभाषा (Term) के तौर पर इस्तेमाल किया है और इस की व्याख्या भी खुदा ही कर दी है कि वह “किताबुमुर्करम” है या'नी वह एक रेकार्ड आफ़िस है जहाँ नेक लोगों के कर्म पत्र (आमाल नामे) लिखे जाते हैं। यह सिलसिला उन के मरने के बाद शुरू होता है और यह आलमे बरज़ख़ (यमलोक) का रेकार्ड आफ़िस है।

15. मुराद समीपवर्ती अथवा (Nearest) फ़रिश्ते की हुजूरी है। नेकोकारों (सुकर्मियों) के रेकार्ड आफ़िस पर मुर्करब फ़रिश्तों की हुजूरी गोया मुर्करब फ़रिश्तों की तरफ़ से नेक लोगों के हक़ में अभिनन्दन है और यह बहुत बड़ा सम्मान और बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है जो यमलोक में नेक बन्दों को हासिल होती है।

16. या'नी बादशाहों की तरह शानदार तख़्त पर बैठे जन्नत की विशाल और बहार भरे वातावरण में अपने रब की नेमतों और उस की शान के जलवे देख रहे होंगे।

17. नेक लोगों को जन्नत में जो ज़िन्दगी मयस्सर आयेगी वह ऐसी आनन्दमय होगी कि उन के चेहरे हमेशा तर और ताज़ा एवं खिले रहेंगे।



26. यह मुहर मुश्क की होगी।¹⁸ और रगबत करने (रूचि रखने) वालों को चाहिए कि बड़ चढ़ कर इस की रगबत करें।¹⁹

خِمْهُ مُسْكٌ وَفِي ذَلِكَ
فَلَيْتَنَاقِسَ الْمُتَنَفِّسُونَ ﴿٢٦﴾

27. उस शराब में तसनीम का मिश्रण होगा,²⁰

وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

28. यह एक चश्मा (ख़ोत) होगा जिस में से मुकर्रब (Nearests) बन्दे पियेंगे।²¹

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾

29. जो लोग मुजरिम बने हुए थे, वह ईमान वालों पर हँसा करते थे।²²

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾

30. और जब उन के पास से गुजरते, तो आँखों से इशारा करते।²³

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

31. और जब अपने घर वालों में लौटते तो ख़ुश ख़ुश लौटते।²⁴

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾

32. और जब उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं,²⁵

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾

33. हालाँकि वह उन पर निगराँ (निरीक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे।²⁶

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٣﴾

34. तो आज ईमान वाले, इन्कार करने वाले (कुफ़रार) पर हँसेंगे।²⁷

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

35. तख़्तों पर बैठे (उन का हाल) देख रहे होंगे।²⁸

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾

36. मिल गया ना (इन्कार करने वाले) काफ़िरो को उन का बदला !

هَلْ تُؤْتِبُ الْكُفَّارَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

18. इस में तन्ज (व्यंग्य) है दुनिया की शराब पर जो गन्दी होती है और ढक्कन खुलते ही उस की सड़ान्ध से दिमाग फिरने लगता है। इस के विरुद्ध जन्नत के शराब की विशेषता यह होगी कि वह हर तरह की खराब मिलावट से पाक खालिस शराब होगी और वह जिन बोतलों या बरतनों में बन्द होगी उन पर मुश्क की (कस्तुरी) मुहर लगी होगी। इस लिए उस की खुशबू से दिमाग खुशबुदार होगा और पीने में लज्जत महसूस होगी।

19. “उस की रगबत करें” से मुराद जन्नत की नेमतों की रगबत करना (रूचि रखना) है जिन का वर्णन ऊपर हुआ मतलब यह है कि आदमी को तुच्छ के बजाय उच्च वस्तु का और समाप्त हो जाने वाली वस्तु के मुकाबले में सदैव बाक़ी रहने वाली वस्तुओं का चुनाव करना चाहिए। और इस लिहाज से आदमी गौर करे तो दुनिया का ऐश और उस की लज्जते, आखिरत के ऐश और उस की लज्जतों के मुकाबले में बिलकुल बेक़ीमत और बे हक़ीक़त करार पायेंगी और अकलमन्दी का तक्राज़ा यही होगा कि आदमी इन का लोभी बनने और माहा परस्ती में डूबने के बजाय आखिरत की नेमतों का तलबगार बने और इस मैदान में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करे।

कुआन ने यहाँ जन्नत की नेमतों का अभिलाषी बनने का जो प्रोत्साहन दिया है इस से उन लोगों के विचार का खण्डन होता है जो “अदब बराए अदब” के पैटर्न (Pattern) पर “नेकी बराए नेकी” (Virtue for the Sake of Virtue) का सिद्धान्त पेश करते हैं। उन के नज़दीक जन्नत और उस की नेमतों की आरजू रखे हुए नेकी करना एक गिरी हुई बात है। यूँ तो बात ऊँची सतह की मालूम होती है लेकिन वास्तव में यह सिर्फ़ खयाली उड़ान है। इस का न इन्सान की साइक्लॉजी से कोई नाता है और न ही यह कोई सम्भव बात है। एवं यह कुआन और सुन्नत के स्पष्ट आदेशों के भी विरुद्ध है। इस्लाम की शिक्षा न तो सिर्फ़ फ़लसफ़े से प्रेरित है और न कल्पनाओं की दुनिया में उड़ान भरने वाली बल्कि उस की शिक्षा वास्तविकताओं से परिपूर्ण इन्सानी साइक्लॉजी के ठीक ठीक अनुकूल और उस को अमल पर आमादा करने वाली हैं। वह शायरी करने नहीं आया है, बल्कि मिट्टी से बने हुए इन्सान को जन्नत का बाशिन्दा बनाने के लिए आया है।

20. “तस्नीम” का अर्थ बुलन्द करने के हैं। यह जन्नत के एक चश्मे (स्रोत) का नाम है और शायद यह नाम उस की इस विशेषता के आधार पर रखा गया है कि उस में से पीने वालों की बुलन्दी में और वृद्धि होगी।

21. तस्नीम जन्नत वालों का सब से उम्दा मशरूब (पेय पदार्थ) होगा। नेक लोगों को जो शराब पिलाई जायेगी उस में इस उम्दा मशरूब की मिलावट होगी। ताकि उस की मस्ती में

वृद्धि हो जाये। लेकिन जो लोग मुकर्रबीन (Nearest) के दर्जे के होंगे वह सीधे इस चश्मे से पी सकेंगे। गोया आनन्द उठाने एवं सुख में उन का हिस्सा उतना ही अधिक होगा जितना अधिक हिस्सा उन का, ईमान व अच्छे कर्म और अल्लाह के लिए कुर्बानियाँ देने में रहा है।

22. अर्थात् वह ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते और उन पर फ़ितियाँ कसते।

ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाने का सिलसिला तो मौजूदा ज़माने में भी जारी है। अलबत्ता कुछ नये जुमलों के साथ।--- चुनान्वे आज के “मार्डन” लोग इस्लाम की सही पैरवी करने वालों पर मुल्लाइयत (Orthodox) और रूढ़िवादी (Conservatism) के जुमले कसते हैं।

23. या'नी इन्होंने ईमान वालों को ज़लील करने और गिराने और नीचा दिखाने में कोई कसर न उठा रखी थी। यहाँ तक कि जब उन का गुज़र ईमान वालों के पास से होता है तो वह आपस में उन के ख़िलाफ़ कनखियों से इशारे करते।

24. इन आयात में विरोधियों के उस रवैये की तस्वीर खींची गई है जो ईमान वालों के विरुद्ध वह अपनाये हुए थे। जब वह अपने दिल की भड़ास निकालने के बाद घर वापस लौटते तो बजाय इस के कि वह अपनी हरकतों पर शर्मिन्दा हों उल्टे खुश होते और पूरे फ़ख़र के साथ इस का ज़िक्र अपने घर वालों से करते।

इस से अन्दाज़ा होता है कि जो लोग हक़ को ठुकरा देते हैं उन का मिज़ाज उन की मनोदशा सत्यवादियों (अहले-हक़) के बारे में क्या होती है।

25. मौजूदा ज़माने में जो लोग इस्लाम को दूसरे धर्मों जैसा समझ कर उसे भी अफ़्रीम कह देते हैं वह कुआन की दअवत को ले कर उठने वालों के बारे में यह बावर कराने की कोशिश करते हैं कि यह बुद्धि से खाली हैं।

26. या'नी अल्लाह तआला ने उन्हें अपने आमाल का ज़िम्मेदार ठहराया था न कि दूसरों के आमाल का लेकिन यह अपने आप को भुलाकर ईमान वालों के पीछे पड़ गये ताकि उन्हें तकलीफ़ दे दे कर अपनी बात ज़बरदस्ती उन से मनवायें। गोया खुदा ने उन्हें दुनिया में इस लिए नहीं भेजा था कि वह अपने आप को नेक बना कर प्रस्तुत करें बल्कि इस लिए भेजा था कि दरोगा बन कर ईमान वालों की ख़ूब ख़बर लें।

27. दुनिया में इन्कार करने वाले कुफ़्फ़ार ईमान लाने वालो पर हँसते रहे हैं लेकिन आखिरत में ईमान वाले इन कुफ़्फ़ार पर हँसेंगे। इस तरह उन को अपनी इस हरकत का ठीक ठीक बदला मिलेगा। और चूँकि कुफ़्फ़ार पर दुनिया में अल्लाह की दलील क़ायम हो चुकी थी इस के बावजूद इन्होंने ने हक़ को कुबूल करने

की राह नहीं अपनायी बल्कि सरकश बन कर हक़ का विरोध करते रहे और ईमान वालों के दुश्मन बन कर रहे। इस लिए आखिरत में वह किसी हमदर्दी के अधिकारी या उम्मीदवार नहीं होंगे। अगर वह किसी हमदर्दी के अधिकारी होते तो अल्लाह तआला खुद उन पर रहम फ़रमाता। इस बिना पर ईमान वालों का उन के हाल पर हँसना बिलकुल सही और उन के अनुकूल

होगा।

28. अर्थात् जहन्नम में जो हाल इन्कार करने वाले कुफ़्रार का हो रहा होगा उसे ईमान वाले जन्नत में अपने तख़्तों पर बैठे बैठे ही देख रहे होंगे। कुर्आन की इस बात को भी आज के साइन्सी दौर में समझना कुछ मुश्किल नहीं रहा। जब कि हम अपने घरों ही में बैठे मीलों दूर की चीज़े टेलिवीज़न पर देख लेते हैं।



८४. अल्-इन्शिकाक़

नाम :- इस सूरह की शुरूआत में क्रियामत के दिन आसमान के फटने की खबर दी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-इन्शिकाक़” है या’नी वह सूरह जिस में (आसमान) के फटने का ज़िक्र हुआ है।

नाज़िल होने का समय:- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरू के दौर में नाज़िल हुई होगी। जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दअवत देना शुरू कर दिया था और क्रियामत से लोगों को खबरदार कर रहे थे।

केन्द्रिय विषय :- हिसाब का दिन और अच्छा एवं बुरा अन्जाम है। पिछली सूरह में बयान किया गया था कि इन्सान का आमाल नामा (कर्मपत्र) उस के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में एक रेकार्ड आफ़िस (सिज्जीन या इल्लिय्यीन) में सुरक्षित रखा जाता है। इस सूरह में इस बात की सूचना दी गई है कि क्रियामत के दिन पेशी से पहले हर व्यक्ति को उस का कर्म पत्र उस के हाथ में दे दिया जायेगा।

कलाम की तरतीब:- आयत १ से ५ में उस इन्क़िलाब का संक्षिप्त वर्णन है जो क्रियामत के प्रकट होते ही आसमान और ज़मीन में बरपा होगा।

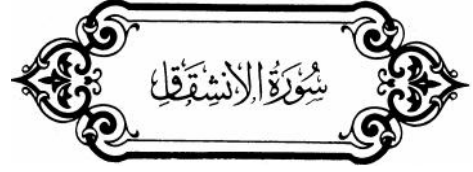
आयत ६ से १५ में इन्सान के अल्लाह की अदालत की तरफ़ बढ़ने, कर्म पत्र हाथ में दिये जाने और अपने अन्जाम को पहुँचने का ज़िक्र है।

आयत १६ से १९ में आसारे कायनात से इस बात पर तर्क वितर्क किया गया है कि इन्सान को मौत के बाद कई मरहलों से गुज़रना होगा।

आयत २० से २५ में उन लोगों को चेतावनी दी गई है जो कुआन को सुनकर खुदा के आगे झुकते नहीं हैं बल्कि उस को झुठलाते हैं, और उन लोगों को कभी न ख़त्म होने वाले इनाम की खुशख़बरी सुनाई गई है जो ईमान ला कर नेक अमल करते हैं।

८४. सूरह अल्-इन्शिकाक़

आयतें : 25



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आसमान फट जायेगा,¹

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۙ

2. और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगा,
और उस को अवश्य ही पालन करना चाहिए,²

وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۙ

3. और जब जमीन फ़ैला दी जायेगी।³

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۙ

4. और जो कुछ उस के अन्दर है, उसे उगल कर
खाली हो जायेगी,⁴

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۙ

5. और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगी,
और उस को अवश्य ही पालन करना चाहिए।⁵

وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ۙ

6. ऐ इन्सान, तू खिंचते खिंचते अपने रब ही की
तरफ़ जा रहा है और आखिरकार उस से मिलने
वाला है।⁶

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًا فَامْلُقْنِيهِ ۙ

7. तो जिस का कर्मपत्र (आमाल नामा) उस के
दाहिने हाथ में दिया गया,⁷

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۙ

8. उस से आसान हिसाब लिया जायेगा,⁸

فَسَوْفَ يَحَاسِبُ حِسَابًا يَّسِيرًا ۙ

9. और वह अपने सम्बन्धियों⁹ के पास खुश खुश
लौटेगा।

وَيُنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۙ

10. और जिस का कर्मपत्र (आमाल नामा) उस की
पीठ के पीछे दिया गया,¹⁰

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۙ

11. वह मौत को पुकारेगा,

فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۙ

1. यह सोचना सही नहीं कि आसमान तो बस नज़र की सीमा का नाम है और इस का कोई भौतिक अस्तित्व (माही वजूद) नहीं। और जब इस की कोई भौतिक वास्तविकता नहीं तो इस के फटने का सवाल पैदा ही कहाँ होता है? वास्तविकता यह है कि साइन्स के नाम पर यह बात ज़ेहन को मात्र प्रभावित करने के लिए कही जाती है वरना यह न कोई साइन्सी खोज है और न इस विचार के लिए कोई ठोस बुनियाद ही है। जहाँ तक मौजूदा साइन्स का सवाल है सच यह है कि उस की पहुँच अभी आसमान तक हो ही नहीं सकी है। वह तो अभी सितारों की दुनिया ही में चक्कर लगा रही है। वह कायनात के क्षेत्रफल को नापने में बिल्कुल असमर्थ है। अंतरिक्ष विज्ञान के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि साइन्सिस्ट अभी कायनात की विशालता का सही अन्दाज़ा नहीं कर सके हैं। अतः अंतरिक्ष विशेषज्ञ (W. Bartky) अपनी किताब में कायनात की आश्चर्यजनक विशालता को बयान करने के बाद साफ़ साफ़ स्वीकार करता है कि :-

“What lies beyond no man knows. Whether the stars continue without end or whether the universe has a definite boundary remains, and perhaps will always remain, a topic for speculative argument.” - (Highlights of Astronomy p. 260).

और जब साइन्स यह बताने में अपने को असमर्थ पाती है कि इस कायनात की कोई सीमा है या नहीं तो यह इस बात का सबूत है कि वह कायनात का क्षेत्रफल अभी मालूम नहीं कर सकी है। ऐसी सूरत में यह दावा किस तरह किया जा सकता है कि आसमान का कोई भौतिक अस्तित्व है ही नहीं। असल बात यह है कि ग्रहों एवं नक्षत्रों (Astronomy) की किताबों में सिर्फ़ उन बातों के बयान करने पर बस नहीं किया जाता जो वैज्ञानिक प्रयोग एवं परिक्षण द्वारा जानकारी में आई है बल्कि उन के साथ अटकलों को भी जोड़ दिया जाता है और लोग उस पूरे सम्मिश्रण (Amalgam) को साइन्स के नाम से प्रस्तुत करके ग़लत बातों को भी सही बावर कराने की कोशिश करते हैं।

आसमान के बारे में कुर्आन का बयान बहुत ही स्पष्ट है जैसे यह कि

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَا هَا بِاَيِّدٍ (الذريات-८८)

“उस ने आसमान को अपने हाथ से बनाया”

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا . (الرحمن: ८)

“उसे बुलन्द किया” (अर्रहमान-७)

سَقَفًا مَّحْفُوظًا . (انبیاء-३२)

“उसे सुरक्षित छत बनाया” (अम्बिया-३२)

وَرَزَيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ . (خم سجدہ- ۱۲)

“उसे सितारों से सजाया” (हा मीम सज्दा - १२)

साथ ही कुर्आन ख़बर देता है कि

اِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ . (الشقاق- ۱)

“क्रियामत के दिन आसमान फट जायेगा” (इन्शिकाक १)

और

فَكَانَتْ اَبْوَابًا . (النباء- ۱۹)

“उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे” (अन्नबा १९)

कुर्आन के इस बयान से आसमान के एक भौतिक वस्तु होने ही की कल्पना उभरती है इस लिए इस को ऐसा कोई अर्थ पहनाना सही न होगा उस के शब्दों से सरलतापूर्वक समझ में आ जाने वाले भावार्थ के बिल्कुल खिलाफ़ हो। (अधिक व्याख्या के लिए देखें सूरह इन्फितार फुटनोट नं. १)

2. या'नी यह ख़याल न करो कि आसमान खुदा के आदेश की अवहेलना कर सकता है। नहीं बल्कि उस को खुदा के आदेश का पालन निश्चित रूप से करना है क्योंकि वह आसमान का ख़ालिक और मालिक है और खुदा की सत्ता उस पर पूरी तरह क़ायम है लिहाज़ा जब क्रियामत के दिन वह उसे फटने का हुक्म देगा तो वह यह हुक्म सुनते ही टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।

3. अर्थात् ज़मीन अपने मौजूदा रूप में बाक़ी नहीं रहेगी बल्कि उसे तान कर फैला दिया जायेगा ताकि वह बहुत बड़े समतल मैदान का रूप धारण कर ले जिस पर खुदा के सामने पेशी के लिए पूरी इन्सानि बिरादरी के लोगों को जगह मिल जाये जो पहले दिन से क्रियामत तक पैदा होते रहे हैं।

4. इशारा है इस बात की तरफ़ कि ज़मीन मुर्दों को उगल कर उन के बोझ से इस तरह ख़ाली हो जायेगी जैसे गर्भवती महिला बच्चा जनने के बाद बोझ से छुटकारा पाती है। गोया ज़मीन मुर्दों से बोझल हो रही है और उन को उगलने ही को है।

5. अर्थात् ज़मीन भी अपने रब के आदेश का पालन इशारा पाते ही करेगी। क्रियामत के घटित होने में कोई चीज़ भी रुकावट पैदा नहीं कर सकती।

6. अर्थात् इन्सान को अपने जीवन के सफ़र का ज्ञान हो या न हो वह जा रहा है अपने रब ही की तरफ़ ताकि अल्लाह की अदालत में हाज़िर हो। जिस तरह ज़मीन के साथ हम भी गर्दिश करते रहते हैं चाहे हम गर्दिश करना चाहें या न चाहें और चाहे हमें इस गर्दिश का ज्ञान हो या न हो। उसी तरह जीवन की

यह नैया हमें लिये हुए रब्बुल आलमीन (सारे जगत के रब) की अदालत की ओर चली जा रही है और हमारी आखरी मन्ज़िल आखिरत है लेकिन नादान लोग दुनिया ही को अपनी मन्ज़िल मसझते हैं। इस लिए इन्हें आखिरत के भय का आभास नहीं होता।

अरबों इन्सान दुनिया में पैदा होते हैं और मरते हैं मगर कितने हैं जिन्होंने इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया हो कि हमारे जीवन के सफ़र की शुरूआत कहाँ से हुई है और सफ़र की आखरी मन्ज़िल क्या है? अगर हमें रास्ते में कोई व्यक्ति मिले और हम से पूछे कि तुम कहाँ से आ रहे हो और वह जवाब दे कि मुझे नहीं मालूम और इस के बाद हमारे यह सवाल करने पर कि “तुम कहाँ जा रहे हो?” वह यह जवाब दे कि “मुझे नहीं मालूम तो क्या उस के इस जवाब पर हमें अश्चर्य नहीं होगा और क्या हम उसे नादान नहीं कहेंगे? मगर दुनिया में अनगिनत लोग ऐसे हैं जिन से उन के जीवन के सफ़र के बारे में यही सवाल कीजिये तो यही जवाब मिलेगा कि हमें न इस सफ़र की शुरूआत का पता है न ख़ात्मे का। न आरम्भ का ज्ञान है न परिणाम का। अपनी मन्ज़िल सुनिश्चित किये बिना हम अपनी ज़िन्दगी का सफ़र जारी रखे हुए हैं। कैसे नादान हैं ये लोग जो अन्जाम से बेपरवाह हो कर अंधेरे में टामक टोड़या मार रहे हैं। काश इन्हें ज्ञान होता कि वह इसी तरह अपने रब की अदालत की तरफ़ खिंचे चले जा रहे हैं जिस तरह कि सुई चुम्बक की तरफ़ खिंची जाती है।

7. अल्लाह तआला ने दाहिने हाथ को यह विशेषता प्रदान की है कि वह अच्छाई की निशानी ठहराया गया। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो आदाब सिखाए हैं उन में यह बात भी शामिल है कि तमाम अच्छे काम जैसे खाना, पीना, वुजू करना, दान करना इत्यादि अपने दाहिने हाथ से अन्जाम दिये जायें। अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए इसी सम्मान की बिना पर नेक लोगों का दाहिना हाथ क्रियामत के दिन इस के योग्य

होगा कि उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) उन के इस हाथ में दिया जाये।

8. नेक लोगों से आसान हिसाब लिया जायेगा। आसान हिसाब से मुराद जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने व्यख्या की है, खुदा के सामने जवाब देने के लिए सिर्फ़ पेशी है। इस पेशी के मौक़े पर कड़ी पूछ ताछ नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला दरगुज़र फ़रमाएगा। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

“क्रियामत के दिन जिस से हिसाब लिया गया वह अज़ाब में पड़ गया। हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अनहा ने अर्ज़ किया। “*فَسَوْفَ حَاسِبٌ حَاسِبٌ حَسَابٍ يَسِيرٌ*” (उस से आसान हिसाब लिया जायेगा)” फ़रमाया इस का मतलब कड़ी पूछताछ करना नहीं है बल्कि सिर्फ़ पेशी है। कड़ी पूछ ताछ जिस से भी क्रियामत के दिन की गई वह अज़ाब में डाला गया।” (मुस्लिम किताबुलजन्नह)

अपने सम्बन्धियों से मुराद उस के बीवी बच्चे हैं जो ईमान वाले होंगे और जिन के साथ भी अल्लाह तआला ने दरगुज़र का मामला किया होगा। वह जन्नत में एक साथ जमा होंगे और उन्हें एक दूसरे की संगत प्राप्त होगी एवं इस मक़सद के लिए उन में से किसी का दर्जा घटाया नहीं जायेगा बल्कि बुलन्द कर दिया जायेगा। (देखिये सूरह तूर आयत २१)

10. यह उन लोगों का अन्जाम बयान हो रहा है जो खुदा के सामने उस के दरबार में पेशी पर यक़ीन नहीं रखते और उस से बगावत की बुनियाद पर जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे लोग अल्लाह की अदालत में मुजरिम की हैसियत से पेश होंगे। इस लिए उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) पीछे की तरफ़ से उन के बाएँ हाथ में पकड़ा दिया जायेगा। इन्होंने अल्लाह की किताब को बेपरवाही के साथ एक किनारे डाल दिया था। इस लिए उचित रूप से वह इस योग्य होंगे कि उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) उन्हें पीठ के पीछे से दिया जाये।



क्यों नहीं ! उस का रब तो उस को खूब देख रहा था। नहीं, मैं क्रसम खाता हूँ शफ़क़ की, और रात की, और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती है उस की, और चाँद की जब कि वह पूर्ण हो जाता है, कि तुम को निश्चय ही एक मरहले से दूसरे मरहले में पहुँचना है। (अल-कुआन)

12. और भड़कती आग में दाखिल होगा।

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝١٢

13. वह अपने घर वालों में मस्त था।¹¹

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مُسْرُورًا ۝١٣

14. उस ने समझ रखा था कि उस को कभी लौटना नहीं है?¹²

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ۝١٤

15. क्यों नहीं ! उस का रब तो उस को खूब देख रहा था।

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝١٥

16. नहीं,¹³ मैं क्रसम खाता हूँ¹⁴ शफ़क़ की,¹⁵

فَلَا أَقْسَمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦

17. और रात की, और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती है उस की,¹⁶

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٧

18. और चाँद की जब कि वह पूर्ण हो जाता है,

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝١٨

19. कि तुम को निश्चय ही एक मरहले से दूसरे मरहले में पहुँचना है।¹⁷

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝١٩

20. फिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते,¹⁸

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٢٠

21. और जब इन के सामने कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते,¹⁹

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝٢١

22. बल्कि ये काफ़िर (इन्कार करने वाले) उल्टा झुठला रहे हैं।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ۝٢٢

23. और ये लोग जो कुछ छिपा रहे हैं उसे अल्लाह खूब जानता है।²⁰

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝٢٣

24. तो तुम इन को एक दर्दनाक अज़ाब (याला) की खुशख़बरी सुना दो,²¹

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٢٤

25. अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये उन के लिए ऐसा अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।²²

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٢٥

11. अर्थात् अपनी और अपने बच्चों के आखरी अन्जाम से बेपरवाह होकर अपनी और उन की दुनिया बनाने ही में मस्त था ।

12. या'नी जब खुदा उसे देख रहा था तो वह अपने दरबार में पेशी के लिए बुलाता कैसे नहीं? उस के "बसीर" (देखने वाला) होने की सिफ़त इस बात का तक्राज़ा करती है कि वह अपने बन्दों को अपने यहाँ ज़वाबदेही के लिए बुलाये और इस के लिए ज़रूरी है कि उन को मरने के बाद उठाए।

13. यह खण्डन है इन्कार करने वालों के इस खयाल का कि मरने के बाद न फिर ज़िन्दा होना है और न खुदा कि तरफ़ लौटना है।

14. क्रसम खाने का मतलब उन चीज़ों को जिन की क्रसम खाई गई है, दलील के तौर पर या शहादत के रूप में पेश करना है। अधिक व्याख्या के लिए देखें सूरह तकवीर फ़ुट नोट १४ ।

15. शफ़क़ उस लाली को कहते हैं जो सूरज के डूब जाने के बाद आसमान पर झलकती है। अर्थात् संध्यालालिमा।

16. समेटने से अभिप्राय रात का अपने दामन में सितारों को समेट लेना है।

17. यह है वह बात जिस की ताईद (समर्थन) में आसारे कायनात के कुछ हालात को पेश किया गया है। दूसरे शब्दों में इन्सान को इन हालात और इन परिस्थितियों पर इस पहलू से सोचने और विचार करने की दअवत दी गई है कि उन के अनुभव से कुर्आन के इस बयान की ताईद होती है या नहीं कि इन्सान को निश्चय ही एक ऐसे मरहले से दोचार होना है जहाँ पहुँच कर उसे अपने रब के सामने अपने कर्मों के बारे में ज़वाबदेही करना होगी।

सूरज के डूबते ही शफ़क़ की सुर्खी (संध्यालालिमा) का झलकना, दिन के विदा होते ही रात का अपनी महफ़िल को सितारों से सजाना और चाँद का हिलाल (पहली रात के स्वरूप) से क्रमानुसार चौदहवीं का चाँद अर्थात् पूर्ण चाँद बन जाना, इस बात का पूरा सबूत है कि इस कायनात में एक क्रम पाया जाता है और उस के ख़ालिक ने मरहले (Steps चरण) मुक़रर किये हैं। चुनान्वे चाँद मरहला दर मरहला (Step by Step) गुज़र कर ही पूर्ण हो जाता है। फिर उस ने इन्सान के लिए जिस की ख़ातिर इस महफ़िल को सजाया गया है, आगे के मरहले कैसे नहीं रखे होंगे और दुनियावी ज़िन्दगी के इस एक मरहले ही में

इस का अन्त किस तरह हो जायेगा? अतः कुर्आन यह जो ख़बर पैग़म्बर की जुबानी सुना रहा है कि इन्सान को मौत के बाद फिर ज़िन्दगी के मरहले में दाख़िल होना है और फिर अपने रब के यहाँ पेशी के मरहले से ज़रूर दोचार होना है। और इन मरहलों से गुज़र कर अपनी आख़री मन्ज़िल जन्नत या दोज़ख़ में पहुँच कर रहना है, तो इस की पूरी पूरी ताईद (समर्थन) आसारे कायनात की उन परिस्थितियों से होती है जिन का ऊपर बयान हुआ । अगर इन्सान इस पहलू से इन परिस्थितियों का अनुभव करे तो उस के विचार और सिद्धान्तों के दृष्टिकोण बदल जाएँ ।

18. अर्थात् लोगों का हाल अजीब है कि स्पष्ट प्रमाणों के बाद भी वह यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि इन्सान को ज़वाबदेही के मरहले से दोचार होना है, बल्कि अपने इस ख़याल पर अड़े हैं कि ज़िन्दगी इसी दुनिया तक है और मरने के बाद कोई मरहला पेश नहीं आना है।

19. या'नी होना तो यह चाहिए था कि कुर्आन का यह वास्तविकता से परिपूर्ण बयान सुनकर वह इस की सत्यता को स्वीकार करते और इस की महानता से प्रभावित हो कर खुदा के सामने अपना सर झुकाते लेकिन उन्होंने ने इस के विरुद्ध इन्कार करने और अकड़ने का रवैया अपना रखा है।

इस स्थान पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सज़्दा करना साबित है। अतः "हज़रत अबू हुदैरह रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी और आप ने इस स्थान पर सज़्दा किया, इस लिए मैं मरते दम तक यह सज़्दा करता रहूँगा।" (मुस्लिम)

20. अर्थात् हक़ से दुश्मनी और इस्लाम शत्रुता के ज़ब्बात और बेलगाम स्वार्थी जीवन गुज़ारने की इच्छा जिस को वह अपने सीने में छिपाये हुए हैं, अल्लाह को इस का पूर्ण ज्ञान है।

21. अज़ाब अर्थात् यात्ना की ख़बर को ख़ुशख़बरी कहने में एक सूक्ष्म एवं कोमल व्यंग्य है कि जब तुम जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनने और अपने आप को उस का योग्य बनाने को तैयार नहीं हो तो फिर जहन्नम ही की ख़ुशख़बरी सुन लो।

22. अर्थात् नेक लोगों को जो अच्छा बदला आख़िरत में मिलेगा वह सामयिक और अस्थायी न होगा बल्कि स्थाई और हमेशा हमेशा के लिए होगा जिस का सिलसिला कभी ख़त्म होने वाला नहीं । गोया यह एक बहता हुआ दरया है जो हमेशा चलता ही रहेगा ।

सूरह
अल्-बुरुज

८५. अल्-बुरूज

नाम :- पहली आयत में बुर्जों वाले आसमान का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम पहचान के तौर पर “अल्-बुरूज” रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि कुफ़्रार, ईमान लाने वालों को जुल्म और सितम का निशाना बना रहे थे ताकि वह अपने ईमान से फिर जायें।

केन्द्री विषय :- क्रियामत और जज़ा और सज़ा ही है अलबत्ता उस के इस पहलू को खास तौर पर स्पष्ट किया गया है कि वह दिन मज़लूम ईमान वालों की फ़रियाद सुने जाने का दिन होगा। जो लोग ईमान वालों को सिर्फ़ उन के ईमान लाने की बिना पर जुल्म और सितम का निशाना बनाते हैं क्रियामत के दिन उन की कड़ी पकड़ होगी और जो लोग ईमान लाकर नेक अमल करते हैं वह कामयाब होंगे और अपनी मुराद को पहुँचेंगे।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में हिसाब के दिन (The day of Judgement) के निश्चित रूप से होने का दावा एक ऐसी वास्तविकता के तौर पर पेश किया गया है जिस का इन्कार किसी तरह भी सम्भव नहीं।

आयत ४ से ११ में उन लोगों को सख्त अज़ाब (कड़ी यात्ना) की चेतावनी सुनाई गई है जो मुसलमानों पर सिर्फ़ इस लिए जुल्म ढाते हैं कि वह एक खुदा पर ईमान लाए हैं और उन मुसलमानों को जो इन अत्याचारों के बावजूद अपने ईमान पर दृढ़ता से जमे रहेंगे, जन्नत की खुशखबरी सुनाई गयी है।

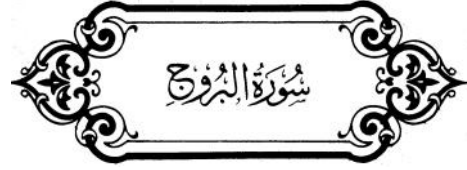
आयत १२ से १६ में ज़ालिमों को खबरदार किया गया है कि अल्लाह की पकड़ बहुत सख्त है साथ ही उस के वह गुण बयान किये गये हैं जिन से उस का ख़ौफ़ भी पैदा होता है और तौबा और पश्चाताप की ओर झुकाव भी होता है।

आयत १७ से २० में कुछ सरकश और ज़ालिम क़ौमों के भयानक अन्जाम की तरफ़ इशारा करते हुए इन्कार करने वालों को खबरदार किया गया है कि खुदा तुम्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है।

आयत २१ और २२ अन्तिम शब्द है जिस में कहा गया है कि यह क़ुर्आन जो हिसाब के दिन के आने की खबर दे रहा है, कैसी उच्चकोटि की किताब है और इस का सरचश्मा (उद्गम) कितना पाकीज़ा और सुरक्षित है, इस की कोई बात ग़लत नहीं हो सकती। अवश्य ही इस की हर बात अटल है।

८५. सूरह अल्-बुरुज

आयतें : २२



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्रसम है ¹ बुर्जों वाले आसमान की, ²
2. और उस दिन की जिसका वादा किया गया है, ³
3. और हाज़िर होने वाले की ⁴ और उस चीज़ की जो हाज़िर की जायेगी। ⁵
4. हलाक हुए खन्दक वाले, ⁶
5. जो खूब ईंधन वाली आग से भरी थी,
6. जब वह उस (आग) के पास बैठे,
7. जो कुछ ईमान वालों के साथ कर रहे थे उस का तमाशा देख रहे थे। ⁷
8. और उन के साथ यह ज़्यादाती सिर्फ़ इस वजह से की गई कि वह अल्लाह पर ईमान लाये थे, ⁸ जो ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली) है और प्रशंसा योग्य भी।
9. जिस की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन में। ⁹ और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। ¹⁰
10. जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर जुल्म ढाया और फिर तौबा नहीं की उन के लिए निश्चय ही जहन्नम की सज़ा है और उन के लिए जलने का अज़ाब (यात्ना) है। ¹¹

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝١

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝٢

وَشَahِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝٣

فَمَثَلِ الصَّعْبِ الْاُخْدُوْدِ ۝٤

النَّارِ ذَاتِ الْوُتُوْدِ ۝٥

اِذْهُمْ عَلَيْهَا قُوعُوْدٌ ۝٦

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝٧

وَمَا نَقْمُوْا مِنْهُمْ اِلَّا اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨

الَّذِيْ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلَىٰ

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٩

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوْا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوْا

فَلَهُمْ عَذٰبٌ جَهَنَّمُ وَلَهُمْ عَذٰبُ الْحَرِيْقِ ۝١٠

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट नं. १४

2. बुरुज से मुराद सितारों की वह बारह फ़र्जी (काल्पनिक) शक्तें (Signs of Zodiac) या सूरज की बारह मन्जिलें नहीं हैं जो प्राचीन खगोल शास्त्र अथवा नक्षत्र विज्ञान (Old Astrological Science) की विशेष परिभाषा (Terms) हैं बल्कि इस से मुराद रौशन सितारों के झुरमुट (Constellations) हैं जो आसमान की शोभा बने हुए हैं और जिन की सुन्दर छवि इन्सान को नज़ारा करने का न्योता देती है।

बुर्ज का शाब्दिक अर्थ, प्रकट, नुमाइश और क़िला एवं महल के हैं। आसमान में सितारों के झुरमुट इस तरह जगमगाते नज़र आते हैं कि गोया ऊँचे महल हैं जो सजाए गए हैं। उन की इस तरह क़िला बन्दी की गयी है कि जब शैतानी ताक़तें आसमान की तरफ़ उड़ान मारने लगती हैं तो इन क़िलों से शिहाबे-साक्रिब (उल्का या Meteor) के गोले दागे जाते हैं। इस लिए सितारों के इन झुरमुट को (Constellations) “बुरुज” कहा गया है। यहाँ बुर्जों वाले आसमान की क्रसम खाने का मतलब यह है कि आसमान में चमकते हुए नज़र आने वाले सितारों के ये झुरमुट इस बात की खुली गवाही देते हैं कि जिस हस्ती ने इस कायनात की महफ़िल को सजाया है वहाँ अन्धेर नगरी नहीं है बल्कि वह अपनी पूरी सौन्दर्यता और शानो-शौकत के साथ इस कायनात पर हुकूमत कर रहा है। लिहाज़ा यह हो नहीं सकता कि जो लोग उस के वफ़ादार बन्दों पर जुल्म ढाते हैं उन से पूछ ताछ न हो और उस के वफ़ादार मज़लूम बन्दों को जो उस की ख़ातिर सताए गए, इनाम और उपहार न प्रदान किया जाये।

शैतानी ताक़तों की आसमान में उड़ान को रोकने के लिए शिहाबे-साक्रिब (Meteor उल्का) के गोले बरसाये जाते हैं जिस से ज़ाहिर होता है कि हद से आगे बढ़ने वालों के लिए ख़ुदा के यहाँ सज़ा का क़ानून है फिर वह सरकशों को सज़ा कैसे नहीं देगा? गोया बुर्जों वाले आसमान पर ग़ौर करने से जज़ा और सज़ा का तक्राज़ा उभरता है और इस से हिसाब के दिन की पुष्टि होती है जिस की ख़बर कुआन दे रहा है।

3. मुराद क्रियामत का दिन है और इस का वादा अल्लाह तआला ने इस लिए फ़रमाया है ताकि वह अदालत बरपा करे तथा मोमिन और काफ़िर नेक और बद, एवं ज़ालिम और मज़लूम के बीच इन्साफ़ हो।

4. मुराद हर वह व्यक्ति है जो क्रियामत के दिन हाज़िर होगा।

5. मुराद वह चीज़ें हैं जो क्रियामत के दिन हाज़िर की

जाएगी और वह हौलनाक दृश्य है जिन को हर व्यक्ति देख लेगा।

यहाँ यौमे मौऊद (जिस दिन का कि वा'दा है) शाहिद (हाज़िर होने वाला) और मशहूद (जो चीज़ें कि हाज़िर की जाएंगी या जो दृश्य सामने लाए जाएंगे) की क्रसमें कलाम को दृढ़ करने और इन बातों का यक़ीन पैदा करने के लिए खाई गई हैं।

6. “अस्हाबुलउख़्दूद” (खन्दक़ वाले) से इशारा एक विशेष घटना की ओर है जिस का सारंश यह है कि ईमान वालों को सिर्फ़ उन के ईमान लाने की बिना पर आग से भरी हुई खन्दक़ (गढ़े) में झोंक दिया गया था और ज़ालिम उस खन्दक़ के पास बैठ कर उन के जलने का तमाशा देख रहे थे। यह घटना कब और कहाँ घटी इस की तफ़सील कुआन ने नहीं बताई क्यों कि सबक़ आमोज़ी के लिए इतनी ही बात काफ़ी है। रहा ऐतिहासिक प्रमाण तो इतिहास ईमान वालों के आग की भेंट चढ़ाए जाने की घटनाओं से भरा पड़ा है जिस का आरम्भ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नमरूद की आग में झोंक दिये जाने से होता है। और अत्यचार का यह सिलसिला आज भी जारी है। अतः सिर्फ़ इस बिना पर कि फ़ुलॉ गिरोह का दीन (Way of Life) इस्लाम है। उस गिरोह के लोगों को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता है या फिर उन्हें घरों में बन्द कर के आग लगा दी जाती है। हाँ यह फ़र्क़ ज़रूर है कि इस मक़सद के लिए अब खन्दक़ें (गढ़े) खोदने की आवश्यकता नहीं होती और न लकड़ियों का ईंधन जमा करना पड़ता है बल्कि पेट्रोल और इस तरह की दूसरी चीज़े ही काफ़ी हो जाती हैं।

जहाँ तक रिवायत (पुरातन कथाओं) का सम्बन्ध है इतनी बात तो सही मालूम होती है कि यमन के यहूदी बादशाह “जूनुवास” ने लगभग ५२३ ई. में नज़रान पर हमला कर के वहाँ के लोगों को जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे और सच्चे मोमिन थे यहूदी धर्म कुबूल करने का हुक्म दिया और उन के इन्कार करने पर उन्हें खन्दक़ें खोद कर आग में झोंक दिया गया। (सीरत इब्ने हिशाम भाग १ पृष्ठ ३५)

Standard Jewish Encyclopaedia के पृष्ठ नम्बर ५५४ पर भी संक्षेप में इस का ज़िक्र मौजूद है। नज़रान के मक्का से क़रीब होने की वजह से यह क्रिस्सा अरबों में मशहूर रहा होगा। और आश्चर्य नहीं कि कुआन ने अस्हाबुल उख़्दूद कह कर विशेषकर इस घटना की ओर इशारा किया हो। लेकिन रिवायत में गुलाम और राहब (सन्यासियों) वग़ैरा का जो क्रिस्सा बयान किया गया है उस में बड़ी नकारत है। इस क्रिस्से में गुलाम के बारे में ऐसी अजीब अजीब बातें बयान की गई हैं जो एक नबी के मोज़जे (चमत्कार) से भी बढ़ कर है। इस रिवायत को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जोड़ना सही नहीं अतः इब्ने

कसीर फ़रमाते हैं।

قال شيخنا الحافظ ابو الحجاج المزي
فيحتمل ان يكون من كلام صهيب الرومي
فانه كان عنده من اخبار النصارى -

“हमारे शैख हाफ़िज़ अबुल हज्जाज मज़ज़ी फ़रमाते हैं कि इस रिवायत में यह संदेह है कि यह क्रिस्सा सुहैब रूमी के कलाम का अंश हो इस लिए कि उन्हें नसारा (इसाईयों) के क्रिस्से मालूम थे।” (तफ़सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ठ ४९४)

और क़फ़ाल कहते हैं :-

“अस्हाबुलउख़ूद (ख़न्दक़ वालों) के सिलसिले में (मुफ़स्सिरों ने) भिन्न रिवायतें बयान की हैं लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है सिवाय इस के कि ये सब इस बात पर सहमत हैं कि मोमिनों के एक गिरोह ने अपनी क्रौम या काफ़िर बादशाह की जो उन पर शासन कर रहा था, मुख़ालफ़त की थी जिस की वजह से उस ने उन को ख़न्दक़ में डाल दिया था।

(अत्-तफ़सीरुल कबीर लिर्राज़ी, प्रकाशन तेहरान भाग ३ १ पृष्ठ ११७)

अफ़सोस कि ऐसी बेसिर पैर की रिवायतें बड़ी बड़ी तफ़सीरों में जगह पा गई।

7. या'नी ढिटाई और क़ूरता की हद है कि ईमान वालों पर ऐसा अमानुषी अत्याचार तोड़ते हुए उन्हें ज़रा संकोच नहीं हुआ

बल्कि उन की अख़लाक़ी हिस (नैतिक भावना) इतनी मुर्दा हो गई थी कि वह बड़ी बेशर्मी के साथ उन के जलने का तमाशा देखते रहे।

8. अर्थात् ईमान वालों का अगर कोई कुसूर था तो वह यह कि वह अल्लाह पर सही अर्थों में ईमान लाये थे। गोया जो सब से बड़ी नेकी थी वही इन ज़ालिमों की नज़र में जुर्म क़रार पाई।

9. इन आयात में अल्लाह तआला की जो सिफ़ात बयान की गई है इस का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि वही हस्ती इस योग्य है कि उस पर ईमान लाया जाये और उस से सम्बन्ध बनाया जाये।

10. इस में ज़ालिमों के लिए तम्बीह (चेतावनी) है कि जब अल्लाह तआला सब कुछ देख रहा है तो तुम्हारा अत्याचार कब तक चलेगा? एक दिन तुम्हारी पकड़ होना है और तुम्हे अल्लाह की अदालत के कटघरे में खड़ा होना है।

11. सज़ा की ये कड़ी चेतावनी उन लोगों को सुनाई गई है जो मोमिन मर्दों और औरतों पर सिर्फ़ इस लिए जुल्म ढाये ताकि उन को इस्लाम से फेरा जा सके। जलने की यातना का ज़िक्र विशेष रूप से किया गया है क्योंकि उन ज़ालिमों ने मोमिनों को आग में ज़िन्दा जलाया था। ऐसे लोगों को जहन्नम में दूसरी यात्नाओं के साथ ख़ासतौर से बहुत ही तेज़ आग में जलने के अज़ाब का मज़ा भी चखना पड़ेगा।

इस आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि इतने बड़े जुर्म का भागीदार भी अगर तौबा कर के अपनी इस्लाह कर लेता है तो उस के लिए माफ़ किये जाने के दरवाज़े खुले हैं।



जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये निश्चय ही उन के लिए बाग हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी। यह है बड़ी कामयाबी। निस्सन्देह तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। और वह माफ़ करने वाला, मुहब्बत करने वाला है, अर्श (सिंहासन) का मालिक, गौरव वाला महान, और जो चाहे कर डालने वाला (अल-कुर्आन)

11. जो लोग ईमान लाये ¹² और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये निश्चय ही उन के लिए बाग हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी। यह है बड़ी कामयाबी।¹³

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَمْ يَجْعَلْ لَهُمْ جَنَّةً تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

12. निस्सन्देह तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख्त है।¹⁴

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

13. वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा।¹⁵

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي وَيُعِيدُ ۝

14. और वह माफ़ करने वाला,¹⁶ मुहब्बत करने वाला है,¹⁷

وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ۝

15. अर्श (सिंहासन) का मालिक,¹⁸ गौरव वाला महान,¹⁹

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

16. और जो चाहे कर डालने वाला,²⁰

فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

17. क्या तुम्हें लश्करो की खबर पहुँची है?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝

18. फिरऔन ²¹ और समूद ²² के लश्करो की?

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝

19. लेकिन ये काफ़िर झुठलाने ही में लगे हुए हैं।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

20. और अल्लाह इन को आगे पीछे से घेरे हुए है।²³

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝

21. (यह कलाम मन घड़न्त नहीं) बल्कि यह गौरव शाली कुर्आन है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝

22. जो लौहे-महफूज़ में (अंकित) है।²⁴

فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۝

12. मतलब यह कि इस जुल्म और सितम के बावजूद लोग अपने ईमान पर कड़ाई से जमे रहे।

13. या'नी बड़ी कामयाबी दुनिया हासिल करना नहीं बल्कि जन्नत हासिल करना है।

14. अर्थात् ज़ालिम इस भुलावे में न रहें कि वह अल्लाह की पकड़ से बच सकेंगे।

15. मतलब यह कि जज़ा और सज़ा (इनाम और दण्ड) के लिए इन्सान को दोबारा पैदा किया जायेगा और यह दोबारा पैदा करना उस हस्ती के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं जिस ने पहली बार पैदा किया है।

16. वह माफ़ करने वाला है लिहाज़ा अगर तुम तौबा करो और अपनी कार्यशैली को सुधार लो तो इस योग्य हो सकते हो कि माफ़ कर दिये जाओ।

17. मतलब यह कि वह अपने बन्दों से नफ़रत नहीं बल्कि मुहब्बत रखता है इस शर्त के साथ कि वह उस के वफ़ादार बन्दे बन कर रहें।

18. अर्श का अर्थ तख़्त (सिंहासन) के हैं इस से मुराद अल्लाह तआला का तख़्ते-सलतनत (राज सिंहासन) है जिस की स्थिति हमें नहीं मालूम।

यहाँ अर्श (सिंहासन) का मालिक कह कर यह बताना मक़सूद है कि पूरी कायनात पर उसी की सत्ता स्थापित है और अकेले वही शासन कर रहा है लिहाज़ा उस से सरकशी करने वाले और उस के वफ़ादार बन्दों पर जुल्म ढाने वाले उस की पकड़ से हरगिज़ नहीं बच सकते।

19. अर्थात् गौरवशाली, महानता और श्रेष्ठता (Majesty) उस की सिफ़त है और इन सिफ़तों में कोई उस का साथीदार नहीं। लिहाज़ा बन्दों को चाहिए कि उस की श्रेष्ठता और उस की शानो-शोकत एवं दबदबे की कल्पना मात्र से काँप जायें।

20. अर्थात् दुनिया की कोई ताक़त ऐसी नहीं जो उस के

काम और मन्सूबे (Planning) में रोड़ा हो सके।

21. देखिए सूरह नाज़िआत फुट नोट नं. १३

22. समूद एक क्रौम का नाम है जो “हजर”(मदीना और तबूक के बीच का क्षेत्र) में आबाद थी। इस का ज़माना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है और उस की तरफ़ अल्लाह तआला ने हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बना कर भेजा था मगर इस ने सरकशी की जिस के नतीजे में इस पर सख़्त अज़ाब नाज़िल हुआ इस के तबाह शुदा खंडहर आज भी “हजर” के इलाक़े में मौजूद हैं और आवाज़ दे रहे हैं कि

“देखो मुझे जो दीद-ए-इब्रत निगाह हो”

फ़िरऔन और समूद को दुनयावी शान और शौकत और सत्ता हासिल थी मगर वह शासन के नशे में सरकशी और जुल्म पर उतर आये थे लेकिन जब अल्लाह तआला ने उन को पकड़ा तो वह बहुत बुरे अन्जाम से दोचार हुए। इन ऐतिहासिक घटनाओं की तरफ़ इशारा करते हुए कुर्आन अपने मुखातबों (सम्बोधितों) से कह रहा है कि क्या तुम भी उन का सा रवैया अपना कर इसी अन्जाम से दोचार होना चाहते हो?

23. मतलब यह कि यह झुठलाना चाहते हैं तो झुठलाएँ, इस से हक़ीक़त नहीं बदलती वह पूरी तरह अल्लाह की पकड़ में हैं। उस से भाग कर कहीं नहीं जा सकते।

24. “लौहे-महफूज़” का अर्थ सुरक्षित पट्टिका (महफूज़ तख़्ती) के हैं और इस से मुराद फ़रिशतों की वह पवित्र पट्टिका है जिस पर अल्लाह तआला ने अपने कलिमात को लिख दिया है। उस का लिखा बिल्कुल अटल है और उस तक किसी इन्सान और जिन्नात की पहुँच नहीं है। कुर्आन कोई ख़याली और सैद्धान्तिक चीज़ नहीं और न किसी ज्योतिषी का कलाम है बल्कि इस का उद्गम वह स्वच्छ स्रोत है जिसे लौहे महफूज़ कहते हैं इस लिए उस की हर बात हक़ है और पूरी हो कर रहने वाली है।





८६. अत्-तारिक़

नाम :- आयत १ में अत्-तारिक़ (रात में निकलने वाले सितारों) का ज़िक्र हुआ है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तारिक़ रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और उस समय नाज़िल हुई है जब कि मक्का वालों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दअवत पहुँच चुकी थी मगर वह उस को मज़ाक़ ठहरा कर उस के ख़िलाफ़ चालें चलने लगे थे।

केन्द्रिय विषय :- हिसाब किताब और पूछ ताछ के लिए इन्सान का दोबारा पैदा किया जाना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में आसमान और सितारों की शहादत (गवाही) इस बात पर कि हर व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक रोज़ आना है जब कि उसे हिसाब के लिए बुलाया जाएगा।

आयत ५ से ८ में इन्सान के जन्म से उस के दोबारा पैदा किये जाने पर तर्क वितर्क।

आयत ९ और १० में इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति कि उस दिन सारे राज़ परखे जाएंगे और इन्सान बिलकुल बेबस होगा। उसे कहीं से कोई मदद न मिल सकेगी।

आयत ११ से १४ में आसमान और ज़मीन की शहादत इस बात पर पेश की गई है कि कुर्आन हिसाब के दिन की जो ख़बर दे रहा है वह बिलकुल अन्तिम और निश्चित बात है।

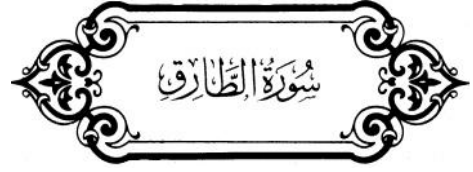
आयत १५ से १७ में कलाम का ख़ात्मा (अन्तिम शब्द) है। जिस में कुफ़्रार को सावधान करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि उन की चालें उल्टी पड़ेंगी अलबत्ता इन्हें थोड़ी मोहलत दे दो। इन का अन्जाम बस सामने आने ही को है।

८६.सूरह अत्-तारिक

आयतें :17

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



1. क्रसम है ¹ आसमान की, ² और रात में प्रकट होने वाले की,
2. और तुम्हें क्या मालूम कि रात में प्रकट होने वाला क्या है ?³
3. दमकता सितारा,⁴
4. कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिस पर एक निगेहबान न हो।⁵
5. इन्सान ज़रा गौर करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।⁶
6. उछलते पानी से,⁷
7. जो रीढ़ और पसलियों के बीच से निकलता है।⁸
8. निश्चय ही वह (अल्लाह) उस के लौटाने की कुदरत रखता है।⁹
9. जिस दिन छिपी बातें परखी जाएंगी,¹⁰
10. उस समय उस के पास न कोई शक्ति होगी और न कोई उस का मददगार होगा।¹¹
11. क्रसम है आसमान की जो बारिश बरसाता है,¹²
12. और ज़मीन की जो फट जाती है,¹³

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝۱

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝۲

التَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝۳

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝۴

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝۵

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝۶

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝۷

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝۸

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝۹

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝۱۰

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝۱۱

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝۱۲

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट नं. १४

2. आसमान की व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिकाक, फुट नोट नं. १

3. यह सवाल “रात में प्रकट होने वाले” के महत्व को स्पष्ट करने के लिए है। या’नी रात में प्रकट होने वाली चीज़ ऐसी नहीं है कि उस पर से यूँहि गुजर जाओ। बल्कि वह तुम्हें विचार करने पर उकसाती है। अतः उस पर गम्भीरता से विचार करो और इस सोचने और विचार करने का मकसद कायनात पैदा करने वाले की पहचान हासिल करना हो न कि सिर्फ मालूमात में वृद्धि करना।

4. अन्-नज्मुस्साकिबُ النَّجْمُ السَّاقِبُ (दमकता सितारा) से मुराद कोई विशेष सितारा नहीं है बल्कि यह सितारों की जाति के अर्थ में है। या’नी वह तमाम सितारे जो खूब रौशन और चमकते नज़र आते हैं और जिन को हर व्यक्ति खुली आँख से देख लेता है।

आसमान में बिखरे हुए तारे इतने असंख्य हैं कि उन की सही तादाद मालूम करने से मौजूदा अन्तरिक्ष विज्ञान (Astronomy) भी अपनी सारी की सारी वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद असमर्थ है। आधुनिक अन्तरिक्ष विशेषज्ञों (Modern Experts of Astronomers) के अनुमान के अनुसार जिस कहकशाँ (सौर जगत या Solar System) में हमारी पृथ्वी स्थित है उस में कोई एक बिलियन (One Billion) सितारे होंगे (The Cambridge Encyclopaedia of Astronomy P.313) इस से आसमान की विशालता और फैलाव का अनुमान लगाया जा सकता है। जिस को इस सूरह में दलील के तौर पर पेश किया गया है।

अनगिनत सितारों में से दमकते सितारों को यहाँ शहादत के तौर पर इस लिए पेश किया गया है कि यह अपनी चमक दमक की वजह से हर देखने वाले को अपनी ओर अकर्षित करते हैं और आँखों ही आँखों में “मन्ज़िल” का पता बता देते हैं।

५. यह वह बात है जिस पर आसमान और दमकते सितारों की शहादत पेश की गई है। यह शहादत इस अर्थ में है कि आसमान पर सितारों की जगमगाहट इन्सान को नज़ारा कर लेने पर ही नहीं उकसाती बल्कि विचार करने का न्योता भी देती है। रात के आते ही आसमान को कुमकुमों से सजाया जाता है और कुमकुमे भी ऐसे रौशन कि उन की चमक दमक बुद्धि को अचम्भे में डाल देती है, वर्तमान अंतरिक्ष मालूमात ने जिस के अनुसार कुछ सितारे तो इतनी दूरी पर स्थित हैं कि उन की रौशनी ज़मीन तक पहुँचने के लिए कई नूरी साल (Light years) लग जाते हैं, इन्सान को अधिक अचम्भे में डाल दिया है। क्या यह

अनुभव अपने ख़ालिक की कुदरत के कमाल का और कायनात के विशालतम एवं महानतम साम्राज्य के शासक होने का पता नहीं देता और इन्सान में यह एहसास पैदा नहीं करता कि इस विराट शासक के साम्राज्य में इन्सान की यह हैसियत हो ही नहीं सकती कि वह अपनी मन मानी करने के लिए आज़ाद हो और कायनात के शासक के सामने जवाबदेह न ठहराया जाए? यह परीक्षण यदि वह निष्पक्ष और विनयपूर्ण हो, तो इन्सान के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास ज़रूर पैदा करता है और यहीं से ख़ुदा के दरबार में जवाबदेही तथा जज़ा और सज़ा का तसव्वुर उभरता है और यही वह हकीकत है जिस से पैग़म्बर इन्सान को ख़बरदार करना चाहता है और यही वह दअवत है जिस को कुर्आन मानवता के सन्सार के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा है।

और जब इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन्सान एक ज़िम्मेदार मख़्लूक (सृष्टि) है तो इस की अनिवार्य और उचित मांग यह है कि उस के व्यवहारिक जीवन (Practical Life) का रेकार्ड तैयार किया जाये ताकि ख़ुदा के दरबार में पेशी के दिन इस के आधार पर ईमान या सज़ा का फैसला हो। कुर्आन कहता है कि अल्लाह तआला ने इस का पूरा पूरा प्रबन्ध किया है। अतः हर व्यक्ति के साथ देख रेख करने वाले फ़रिश्ते लगा दिये गये हैं जो उस की हर कथनी और करनी को नोट कर लेते हैं और उस के व्यवहारिक जीवन का पूरा रेकार्ड तैयार करते रहते हैं।

6. आख़िरत का इन्कार करने वालों का सब से बड़ा एतिराज़ यह था कि इन्सान को दोबारा पैदा करना संभव नहीं। उन के इस एतिराज़ (आपत्ति) का जवाब कुर्आन ने यह दिया कि इन्कार करने वाले ख़ुदा को सर्वशक्तिमान नहीं समझते इसी लिए उन के नज़दीक इन्सान को उस के मरने के बाद उठा खड़ा करना संभव नहीं।

लेकिन ख़ुदा की कुदरत (शक्ति) का यह तसव्वुर सरासर ग़लत है क्योंकि यह किसी भी दलील पर आधारित नहीं है और इस का खण्डन (तरदीद) कायनात की हर चीज़ करती है। इसी सिलसिले में इन्सान को ध्यान दिलाया गया है कि ज़रा वह अपनी पैदाइश और स्वयं अपने आप में गौर करे तो उस की समझ में यह बात आसानी से आएगी कि जिस हस्ती ने इन्सान को पहली बार पैदा किया वह उसे दूसरी बार भी पैदा कर सकता है।

7. मुराद वीर्य है।

8. रीढ़ और पसलियों के बीच से निकलने का मतलब यह नहीं है कि रीढ़ और पसलियों के अन्दर से वीर्य निकलता है बल्कि मतलब यह है कि मानव शरीर के उस रिक्ति (ख़ाली जगह) में जिस के एक तरफ़ रीढ़ की हड्डी और दूसरी तरफ़

पसलियाँ हैं, एक तरल पदार्थ (रक्तीक मादा) तैयार होता है और वहाँ से इस तरह बाहर निकलता है जैसे पिचकारी का अमला। **مِنْ بَيْنٍ** “मिन बैनि” (बीच से) के शब्द इसी अर्थ में कुर्आन में दूसरी जगह भी प्रयोग हुए हैं। सूरह नहल आयत ६६ में है।

نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِى بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّرْبِیْنَ -

“हम उन के पेट से गोबर और खून के बीच से तुम्हें खालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए बेहद अच्छे स्वाद की चीज है।”

ज़ाहिर है इस आयत में भी **مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ** “मिन बैनी फ़रोसिन व दमिन” (गोबर और खून के बीच से) का मतलब यह नहीं है कि खालिस दूध, गोबर और खून के अन्दर से निकलता है बल्कि मतलब यह है कि जिस शरीर के अन्दर गोबर और खून जैसी घिनावनी चीज पैदा होती है उसी शरीर में दूध जैसी मजेदार चीज भी तैयार होती है जो अल्लाह तआला की कुदरत के कमाल और उस की हिकमत की महानता को साबित करती है। इसी तरह इस आयत में भी जो कि बहस में है, कहने का मन्शा यह है कि इन्सानाँ ढाँचे के अन्दर से बड़े अजीब तरीके से वह पदार्थ (मादा) बाहर निकलता है जो होता तो है बेक़िमत लेकिन उस से इन्सान जैसी महान सृष्टि (मख़्लूक) उत्पन्न होती है। क्या यह अल्लाह तआला की कुदरत का कमाल और उस की ज़बरदस्त कारीगरी की दलील नहीं? फिर उस के बारे में यह खयाल करने के लिए क्या गुन्जाइश बाक़ी रह जाती है कि इन्सान को दोबार पैदा करना संभव नहीं?

ध्यान रहे कि रीढ़ और पसलियों के बीच से वीर्य के निकलने का जो ज़िक्र किया गया है उस से इस बात का खण्डन नहीं होता कि वीर्य, वीर्य की थैली (Seminal vesicles) से निकलता है क्योंकि वीर्य की थैली उदर (Abdominal) में होती है जो आख़री पसली का निचला हिस्सा है और जिस के दूसरी तरफ़ पुशत या'नी रीढ़ की हड्डियाँ हैं इस लिए व्यापक भावार्थ में यह उस ढाँचे के बीच ही से निकलता है जिस का अगला हिस्सा पसलियाँ हैं तो पिछला हिस्सा रीढ़। और कुर्आन जब याददेहानी के लिए कोई बात कहता है तो वह आम और व्यापक अर्थों में होती है न कि कलात्मक भाषा में। इस लिए कुर्आन ने वीर्य के निकलने के सिलसिले में यहाँ जो कुछ बयान किया है उसे शरीर रचना विज्ञान (Anatomy) की परिभाषा में सोचना सही न होगा।

इन्सान की रचना जिस वीर्य द्वारा होती है कुर्आन ने उस पर गौर करने का न्योता दिया है और जब हम नये अनुसंधानों

(New Research) का अध्ययन करते हैं तो अपने खालिक़ (सृष्टा) की कुदरत के करिश्मे को देख कर स्तब्ध रह जाते हैं। नये अनुसंधान के अनुसार एक समय में जो वीर्य (Semen) निकलता है उस की मात्रा २ से ५ मिली लीटर (2 to 5 ml) होती है और हर मिलिलीटर (ml) में प्रजनन कीटाणु (Spermatozoa) ४० से १०० मिलियन (40 to 100 millions) होते हैं।

(Text book of Physiology by George Bell-Edinburgh P. 643)

गोया पुरुष के एक ही समय में निकलने वाले शुक्राणुओं में इतनी शक्ति होती है कि वह पचास करोड़ इन्सान पैदा कर सकता है। यह और बात है कि उस के खालिक़ (सृष्टा) ने कीटाणुओं के गर्भधारण (Fertilize) होने की ऐसी व्यवस्था बनाई है कि एक ही समय में एक या दो से अधिक कीटाणु फल नहीं सकते। इस तरह इन्सानों की पैदाइश का औसत हद से बढ़ने नहीं पाता। खुदा की कुदरत के करिश्मे का यह तज़रिबा क्या इन्सान के अन्दर उस की बेपनाह कुदरत का यक़ीन पैदा नहीं करता? और क्या इसे इस बात का क़ायल नहीं करता कि उस के लिए मरे हुए इन्सान को दोबारा उठाना कुछ भी मुश्किल नहीं।

9. लौटाने से मुराद मनुष्य को शरीर सहित दूसरी बार पैदा करना है और यह क्रियामत के दिन होगा।

10. अर्थात् उस रोज़ कोई राज़, राज़ नहीं रहेगा। इन्सान की अन्दरुन का हाल खुल कर सामने आ जायेगा। उस की नीयत, उस के इरादे, कामों के प्रेरक, और वह लक्ष्य एवं उद्देश्य जो उस के कर्मों के पीछे रहे हैं, सब बेनकाब हो कर सामने आ जाएंगे। गोया उस के अन्दरुन की पूरी तरह स्क्रीनिंग की जाएगी और नीयत का जहाँ कहीं खोत होगा बिलकुल खुल कर सामने आ जायेगा। उस रोज़ इन्सान को अन्दाज़ा हो जायेगा कि वह सत्य को असत्य ठहराने के लिए जो एड़ी चीटी का ज़ोर लगाता रहा उस के पीछे उस का क्या स्वार्थ और क्या उद्देश्य था जिन को उस ने अपने दिल में छिपाये रखा था।

11. मतलब यह है कि न वह खुद अपना बचाव कर सकेगा और न दूसरा कोई उस का हिमायती बन कर खड़ा होगा कि उस की मदद कर सके।

12. “आसमान से बारिश का बरसना” ऊपर से बारिश बरसने के अर्थ में एक आम मुहावरा है।

13. अर्थात् बारिश के बरसते ही ज़मीन के छिद्र (Pores) खुल जाते हैं और वह फट कर वनस्पति उगाती है। गोया जो ज़मीन मुर्दा पड़ी थी बारिश के होते ही ज़िन्दा हो कर लहलहाने लगी। यह तज़रिबा जो इन्सान रात दिन करता है उसी को यहाँ मृत्यु के बाद मिलने वाले जीवन के समर्थन में प्रस्तुत किया जा

रहा है। या'नी जो खुदा मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर सकता है वह मुर्दों को क्यों नहीं जिला उठा सकता? क्या इस तज़रिबे से यह यक़ीन पैदा नहीं होता कि जो ज़मीन बारिश की सूरत में खुदा के हुक्म से वनस्पति को उगल देती है वह उस के हुक्म से मुर्दों को क्यों नहीं उगल सकती?

इसी के अन्तरगत यहाँ तौहीद (एकेश्वरवाद) का पहलू भी उभर कर सामने आ गया है क्यों की आसमान का बारिश

बरसाना और ज़मीन का पानी अपने अन्दर सोख कर वनस्पति उगाना इस के बग़ैर नहीं हो सकता कि दोनों का प्रबन्ध एक खुदा के हाथ में हो। इस से साबित हुआ कि जो खुदा ज़मीन का है वही आसमान का भी है वरना आसमान और ज़मीन में इस दर्जा मेल मिलाप और साज़गारी एवं अनुकूलता नहीं हो सकती थी। इस से इस मुश्किलाना तसव्वुर की जड़ कट जाती है कि आसमान का देवता अलग है और ज़मीन का देवता अलग।



13. कि यह एक तय शुदा बात है,¹⁴

إِنَّهُ لَقَوْلُ فَصْلٍ^{١٣}

14. हँसी मज़ाक़ नहीं।¹⁵

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ^{١٤}

15. यह लोग एक तदबीर कर रहे हैं,¹⁶

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا^{١٥}

16. और मैं भी एक तदबीर कर रहा हूँ।¹⁷

وَأَكِيدُ كَيْدًا^{١٦}

17. तो इन काफ़िरो को मोहलत दो। बस थोड़ी
मोहलत।¹⁸

فَسَهِّلْ الْكَافِرِينَ أَمْهَلُهُمْ رُوَيْدًا^{١٧}

14. या'नी कुर्आन जिस आने वाले दिन की खबर दे रहा है वह एक अन्तिम, निश्चित और अटल बात है।

15. अर्थात् इतनी अहम खबर और इतनी गम्भीर बात को हँसी मज़ाक़ करार देना उन ही लोगों का काम हो सकता है जो हकीक़त पसन्द बनना नहीं चाहते।

16. अर्थात् ये इन्कार करने वाले विरोधी पैगम्बर की आवाज़ को दबाने और सत्य को मात देने के लिए एक न एक चाल चल रहे हैं।

17. अर्थात् विरोधियों की चाल का तोड़ मैं भी कर रहा हूँ। मतलब यह कि अल्लाह तआला विरोधियों (मुन्किरीन) की चालों को नाकाम बनाने और उन को उन के जाल में फँसाने की तदबीर ऐसे तरीक़े से कर रहा है कि उन्हें इस का कोई अन्दाज़ा नहीं।

और वास्तविकता यह है कि जिन काफ़िरों ने कुर्आन और पैगम्बर के विरुद्ध चालें चली थी वह उन्हीं के खिलाफ़ पड़ी और वह बुरी तरह नाकामी और ज़िल्लत से दो चार हुए। यह तो हुआ दुनिया में हक़ (सत्य) के खिलाफ़ चाल चलने का अन्जाम, और आख़िरत में तो वह अपनी आँखों से देख लेंगे कि उन्होंने जो कुल्हाड़ी चलाई थी वह अपने ही पाँव पर चलाई थी और जो क्रूर खोदी थी उस में उन ही को दफ़न होना है और दफ़न भी आग के कफ़न के साथ होना है।

18. अर्थात् इन को अपना पैमाना भर लेने दो। इन के अन्जाम के सिलसिले में जल्दी न करो बल्कि सब्र और धैर्य के साथ अपना फ़र्ज़ अन्जाम दिये चले जाओ। जो मोहलत इन काफ़िरों को दी जा रही है वह जल्द ही समाप्त हो जाएगी और बहुत जल्द इन की पकड़ होगी



सूरह अल्-अअ्ला

८७. अल्-अअ्ला

नाम :- पहली आयत में खुदा की सिफ़त “अल्-अअ्ला” बयान हुई है इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-अअ्ला रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय की नाज़िल हो चुकी सूरह है जब कि वह्य के नाज़िल होने की शुरूआत हुए ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे और आप कुर्आन को ग्रहण करने में यह अन्देशा महसूस कर रहे थे कि कहीं कोई आयत भूल न जाएँ। इसी तरह आहवान करने दअवत और नसीहत करने (तज़कीर) का काम भी बिल्कुल आरम्भिक दौर में था।

केन्द्रीय विषय :- आख़िरत की कामयाबी है और यह निर्भर है अल्लाह की हिदायत को कुबूल करने पर जो कुर्आन की सूरत में पैग़म्बर पर नाज़िल हो रही है।

इस सूरह में सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और उन के माध्यम से कुर्आन के हर पढ़ने वाले से, अलबत्ता आगे चल कर सम्बोधन दुनिया परस्तों की तरफ़ हो गया है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में खुदा की पाकीज़गी बयान करने का आदेश देते हुए उस की सिफ़तें बयान की गई हैं ताकि इन्सान सही अर्थ में खुदा को पहचानने वाला बन जाये।

आयत ६ से ८ में अल्लाह की वह्य को पैग़म्बर की याद्दाश्त में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है

जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तसल्ली और हर सत्य प्रिय के लिए इत्मीनान का सामान है।

आयत ९ से १५ में तज़कीर अर्थात् याद्देहानी करने अथवा चर्चा करने की हिदायत करते हुए बताया गया है कि इस से किस प्रकार के लोग फ़ायदा उठाएँगे और किस प्रकार के लोग दूर रहेंगे और फिर इन में से हर एक के रवैये का परिणाम आख़िरत में क्या निकलेगा ?

आयत १६ से १९ कलाम का ख़ात्मा (अन्तिम शब्द) है जिस में बताया गया है कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया को वरीयता देना वह बुनियादी ग़लती है जिस की बिना पर इन्सान वह्य की रहनुमाई से महरूम रहता है और बुरे अन्जाम से दोचार होता है। कुर्आन ही में नहीं अगले सहीफ़ों (ग्रन्थों) में भी यही बात बतलाई गई थी।

फ़ज़ीलत (विशेषता) :- यह सूरह छोटी होने के बावजूद तौहीद, रिसालत और आख़िरत तीनों विषयों पर आधारित है और तज़कीर (याद्देहानी) का पहलू भी प्रभावपूर्ण अन्दाज़ में आ गया है। इस लिए जुमा और दोनों ईद की नमाज़ों में क़िरअत के लिए ज़्यादा उचित क़रार पाई है। अतः हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोनों ईद और जुमा में “सब्बिहिसमा रब्बिकल-अअ्ला” और “हल अताका हदीसुल गाशियः” (या’नी सूरह अअ्ला और सूरह गाशियः) पढ़ा करते थे ।

(मुस्लिम किताबुल जुमुअः)

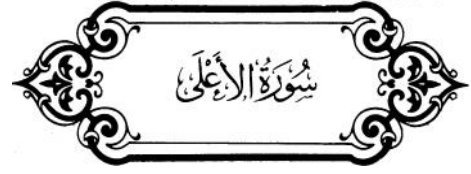
८७. सूरह अल-अअ्ला

आयतें : 19

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने सर्वोच्च रब ¹ के नाम की तस्बीह करो,²
2. जिस ने पैदा किया और सन्तुलित बनाया,³
3. जिस ने योजना बनाई ⁴ और रहनुमाई की,⁵
4. जिस ने चारा उगाया,
5. फिर उस को काला कूड़ा करकट बनाया।⁶
6. (ऐ नबी !) हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे,⁷
7. मगर जो अल्लाह चाहे।⁸ वह खुली बात को भी जानता है और छिपी बात को भी।⁹
8. और हम तुम्हारे लिए आसानी की राह हमवार (प्रशस्त) कर देंगे।¹⁰
9. लिहाज़ा तुम नसीहत करो, अगर नसीहत करना लाभदायक हो।¹¹
10. नसीहत स्वीकार करेगा वह जो डरता होगा।¹²
11. और इस से मुँह मोड़ेगा वह जो बड़े दुर्भाग्य वाला होगा,
12. वह बड़ी आग में दाखिल होगा।
13. फिर न उस में मरेगा और न जियेगा।¹³



سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ١

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ٢

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ٣

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ٤

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ٥

سَنُقَرِّئُكَ فَلَاتُنتَسَى ٦

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجُحْرَ وَمَا يَخْفَى ٧

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ٨

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَى ٩

سَيَذَكِّرْ مَنْ يَخْشَى ١٠

وَيَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ١١

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ١٢

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ١٣

1. ख की व्याख्या सूरह फ़ातिहा फुट नोट नं. ४ में गुजर चुकी। यहाँ ख की सिफ़त “अअला” (सर्वोच्च) बयान हुई है जिस का मतलब यह है कि वह ख़ुदा जो तमाम इन्सानों और सारी सृष्टियों का परवरदिगार, मालिक और आक्रा है, एक उच्चतम और सर्वोच्च हस्ती है। उस की शान और उस की मान बहुत ही बुलन्द है। इन्सान स्वभावतः उस को जानता है और अक़ल उस को पहचानती है। यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि इस उच्चतम एवं सर्वोच्च हस्ती के भेद मालूम करने और उस को अपनी बुद्धि की पकड़ में लेने की कोशिश बिलकुल व्यर्थ है।

“जो समझ में आ गया फिर वह ख़ुदा क्योंकर हुआ
अक़ल से जो धिर गया, लाइन्तिहा क्यों कर हुआ”

जो लोग उस की मारिफ़त (पहचान) हासिल करने के बजाये उस की असल हकीक़त मालूम करने के पीछे पड़ गये वह फ़लसफ़ियाना बातों में उलझ कर बिलकुल भटक गये। मिसाल के तौर पर जिन्होंने उसे “आत्मा” करार दिया वह सारी चीज़ों के अन्दर उस के मिल जाने के काइल हो गये।

“The sage sees all beings in the
Atman and the Atman in all beings.”
(The Essence of Principal Upanishads.
P. 5)

ख़ुदा का यह अत्यन्त घटिया तसव्वुर है जो शिर्क की बुनियाद है। कुर्आन इस बुनियाद ही को ढा देता है और ख़ुदा की हस्ती के बारे में अटकलें लगाने और फ़लसफ़ियाना बहसों खड़ी करने से बिलकुल रोक लगाता है। वह उस की ऐसी मारिफ़त (पहचान) प्रदान करता है जो अक़ल को जीवन देने वाली, दिल को संतुष्ट करने वाली और इन्सान को सही मानों में ख़ुदा को पहचानने वाला बताने वाली है। यह माअरिफ़त (पहचान) ख़ुदा की सिफ़तों, उस की विशेषताओं पर ग़ौर करने से हासिल होती है, इस लिए कुर्आन ख़ुदा की सिफ़तों, उस की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक और जगह जगह वर्णन करता है।

ख की सर्वोच्च होने की सिफ़त उस मुश्रिकाना तसव्वुर को ग़लत ठहराती है कि ख़ुदाओं में कोई छोटा है तो कोई बड़ा और कोई देव है तो कोई महादेव। साथ ही यह इस वास्तविकता की पुष्टि करती है कि ख़ुदा सिर्फ़ एक है और वही सर्वोच्च हो कर रहने वाला है। उस के सिवा कोई ख़ुदा है ही नहीं। फिर किसी के उच्चतर होने का क्या सवाल? और सिरे से कोई देव है ही नहीं फिर किसी के महादेव होने का क्या मतलब?

2. इस हुक्म में तीन महत्वपूर्ण हिदायतें पोशीदा हैं। एक यह कि अल्लाह तआला को उन नामों से याद किया जाये जो अपने अर्थ और भावार्थ के लिहाज़ से पवित्र और उस की शान

और उस की मान के लिहाज़ से बिलकुल ठीक और मुनासिब हों। ज़रूरी नहीं कि यह अरबी भाषा ही के शब्द हों, बल्कि वह किसी भी भाषा के शब्द हो सकते हैं बस यह शर्त है कि उस शब्द में शिर्क का तसव्वुर छिपा ना हो एवं दोष अनादर का भी कोई पहलू न निकलता हो। इसी बिना पर हम उर्दू में अल्लाह को ख़ुदा और परवरदिगार के नाम से याद करते हैं। मराठी भाषा पर मुश्रिकाना धर्म का काफ़ी प्रभाव है इस लिए इस भाषा में अल्लाह के लिए कोई नाम प्रस्तवित करते समय बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। मिसाल के तौर पर राम एक धार्मिक व्यक्तित्व का नाम है जिन को विष्णु का अवतार समझा जाता है। (देखिए Moles worth's Marathi English Dictionary P.693) इस लिए इस शब्द को रहीम के समानार्थ समझ कर अल्लाह के लिए हरगिज़ इस्तेमाल नहीं किया जा सकता इसी तरह शिव मुश्रिकाना धर्म में तीन ख़ुदाओं (त्रिमूर्ति) में से एक ख़ुदा का नाम है साथ ही इस के अर्थ पुरुष के जननेन्द्रिय के भी हैं। (देखिए Students' Sanskrit English Dictionary by Apte p-556).

शिव लिंग की पूजा भी की जाती है। इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) ने अपने ख़ुदाओं का नाम रखने में किस मानसिकता का सबूत दिया है।

“نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِكَ” नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक

दूसरी हिदायत यह है कि उस की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करो। अर्थात् उस को हर प्रकार के दोष, ऐब, और शिर्क (साझे) से मुक्त करार दो और तीसरी हिदायत यह है कि उस की दोषरहित पवित्रता के तसव्वुर के साथ उस का नाम जपते रहो, क्यों कि उसी का नाम जपने के लायक़ है।

हदीस में आता है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आयत की बिना पर सजदे में “سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى” “सुबहान रब्बियल-अअला” (पाक है मेरा सर्वोच्च ख) पढ़ने का हुक्म दिया था (अबू दाऊद किताबुस्सलात)। गोया सजदे की यह तस्बीह उस हुक्म की तामील में है जो इस आयत में दिया गया है।

3. अगर इन्सान आकस्मिक घटना के तौर पर अस्तित्व में आ गया होता तो उस के अन्दर सन्तुलन, अनुकूलता और सौन्दर्य नहीं पैदा हो सकता था। यह खुली निशानी है इस बात की कि उसे सर्वोच्च ख़ुदा ने पैदा किया है।

4. अर्थात् इन्सान की पैदाइश बग़ैर किसी योजना के नहीं हुई है। बल्कि उस के ख़ालिक ने एक योजना (Plan) बनाई है। जिस के अनुसार उसे दुनिया में एक निश्चित समय तक काम करना है। इस योजना का सार यह है दुनिया की यह ज़िन्दगी आजमाइश (परिक्षा की) होगी और हर व्यक्ति को आजमाइश

(परीक्षा) के जिन मरहलों (चरणों) से गुजरना होगा और उस को जो शक्ति और क्षमता दी जाएगी और जो साधन और अवसर मुहैया कर दिये जाएंगे वह सब एक पूर्व निश्चित फैसले की हैसियत रखते हैं और इसी का नाम कुर्आन की परिभाषा (Terms) में “तकदीर” है, या’नी अल्लाह की पूर्वनियोजित योजना।

5. या’नी अल्लाह तआला ने अपनी इस योजना से इन्सान को बेखबर नहीं रखा है बल्कि मुख्यतः इस की परख को उस के स्वभाव ही में रख दिया है जिस की बिना पर उस का ज़मीर उसे बुराई पर टोकता है और अच्छाई पर संतुष्ट होता है। वह अपनी ज़िन्दगी का अच्छा अन्जाम देखना चाहता है और नहीं चाहता कि बुरा अन्जाम उस के सामने आये। इस लिहाज से दिखिए तो मनुष्य स्वभावतः अपने को इम्तिहानगाह (परीक्षा स्थल) ही में महसूस करता है। इस एहसास को जो चीज ताज़ा करती है और अल्लाह की योजना से उसे अच्छी तरह सचेत (बाखबर) करती है वह अल्लाह की वहय है जिस का ज़िक्र आगे की आयतों में आ रहा है गोया इन्सान के ख़ालिक ने उस के लिए प्रकट और अप्रकट दोनों तरह की रहनुमाई का सामान कर दिया है। अगर प्रकृति एवं स्वभाव की आवाज़ अप्रकट एवं गुप्त हिदायत है तो अल्लाह की वहय प्रकट एवं स्पष्ट हिदायत है। इस के बाद मानव अपने किये का आप ज़िम्मेदार है और उस के लिए यह कहने का मौक़ा नहीं कि मेरे ख ने मेरी हिदायत और रहनुमाई का सामान नहीं किया।

6. या’नी जब चारा उगता है तो हरा भरा होता है लेकिन एक समय आता है कि काला कूड़ा करकट बन के रह जाता है। यह एक मिसाल है अल्लाह के मन्सूबे (योजना) की जो इस दुनिया में प्रचलित है और जिस से यह रहनुमाई मिलती है कि पूरी दुनिया के लिए भी ख़ुदा का एक मनसूबा एक योजना है और वह योजना यह है कि इस पर भी उजाड़ ज़रूर आना है ताकि इस के बाद आख़िरत प्रकट हो, लिहाज़ा इन्सान इस दुनिया को हरा भरा देख कर इस भुलावे में न रहे कि इस पर हमेशा बहार छाया रहेगी और इस पर कभी पतझड़ आने वाली नहीं

7. इस आयत में सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और फ़रमाया यह जा रहा है कि कुर्आन की सूरत में जो वहय हम नाज़िल कर (उतार) रहे हैं उस को आप के ज़ेहन में सुरक्षित कर देने की ज़िम्मेदारी हम ने ली है लिहाज़ा इस बात का कोई अन्देशा नहीं है कि इस का कोई हिस्सा तुम भूल जाओ। ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुरू शुरू में इस अन्देशे से कि कहीं कोई आयत या लफ़्ज़ भूल न जाएं। जब कुर्आन का कोई हिस्सा नाज़िल होता तो उस को ग्रहण करने में

जल्दी फ़रमाते। अल्लाह तआला का यह वादा कुर्आन और पैग़म्बर की सत्यता का प्रमाण है क्योंकि कि पूरा कुर्आन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस तरह याद हो गया कि आप उस का एक शब्द भी नहीं भूले। और आप ने शुद्ध रूप से संपूर्ण कुर्आन को उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल (Transfer) किया और आज हमारे सामने इस के लाखों और कराड़ों नुस्खे अपने शुद्ध रूप में इस तरह मौजूद हैं कि क्रियामत तक के लिए इस के सुरक्षित होने का सामान हो गया है। गोया कुर्आन एक सुदृढ़ स्थायी और कभी न बदलने वाला मोअजज़ा (चमत्कार) है जिस का अनुभव और ताज़िबा हर दौर के लोग कर सकते हैं।

8. अर्थात् अगर अल्लाह ही भुलाना चाहे तो और बात है।

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि ऐ नबी कुर्आन को याद करने के सिलसिले में जिस अन्देशे को तुम अपने दिल में महसूस करते हो अल्लाह तआला को इस का पता है मगर तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं, इस लिए कि कुर्आन का सबक तुम्हें वह हस्ती दे रही है जिस का इल्म (ज्ञान) तमाम बातों से भिन्न (परिचित) है और उस ने इसे तुम्हारे हाफ़्ज़े (याददाश्त) में ठीक ठीक महफूज़ कर देने का फैसला फ़रमाया है।

10. इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कुछ और इत्मीनान का सामान किया गया है कि कुर्आन का ज्यों का त्यों लोगों तक पहुँचाना यद्यपि बहुत मुश्किल काम है। लेकिन अल्लाह तआला इन तमाम मुश्किलों के बीच से तुम्हारे लिए आसान राह निकालेगा।

कुर्आन की यह पेशीनगोई (भविष्य वाणी) हर्फ ब हर्फ पूरी हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यद्यपि उम्मी (अनपढ़) थे लेकिन न सिर्फ़ पूरे कुर्आन को याद करना आप के लिए आसान हो गया बल्कि इस के साथ उस को लोगों तक पहुँचाना, उसका दर्स (सबक) देना, उस के द्वारा याददेहानी करना, उस की व्याख्या और पुष्टि करना, मुश्किल से समझ में आने वाले भेदों और उस की हिकमत से भरी बातों को बयान करना, उस से नतीजा निकालना और उस के आदेशों को लागू करना भी आसान हो गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने थोड़ी ही समय में ऐसे साथी प्रदान किये जो कुर्आन की किताबत (लिपि) का काम बहुत अच्छी तरह अन्जाम देते ताकि आने वाली नस्लों के लिए कुर्आन की हिफ़ाज़त का सामान हो। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितने ही ऐसे साथी मिल गये जिन्होंने कुर्आन को अपने सीनों में महफूज़ कर लिया। यह हुफ़्फ़ाज़ (कुर्आन को याद कर लेने वाले) और कुर्रा (पढ़ने वाले) कहलाए और उन्होंने कुर्आन को फ़ैलाने में बहुत बड़ी सेवा की।

11. अर्थात् दअवत और तबलीग़ एवं तज़कीर और

नसीहत का काम न लट चलाने का काम है और न अन्धे के रेवड़ी बाटने जैसा काम, बल्कि यह हिकमत और तदबीर से भरा काम है जिस के लिए मौक़ा और समय को देखने की ज़रूरत है। बे मौक़ा नसीहत करने से कोई फ़ायदा नहीं और न अन्धों और बहरों को नसीहत करने से कोई फ़ायदा है इस लिए जहाँ दाई दअवत देने वाला) यह महसूस करे कि लोग नसीहत सुनने के मूड में नहीं है वहाँ जबरदस्ती उन्हें सुनाने की कोशिश न करे।

इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि आम बिगाड़ को देख कर आदमी पहले ही से यह फैसला कर के बैठ जाये कि दअवत और तबलीग़ या तज़्कीर और नसीहत कुछ लाभदायक होने वाली नहीं, लिहाज़ा यह काम सिरे से किया ही न जाये। यह ऐसी ही बात है जैसे कि कोई डाक्टर लोगों की बद परहेज़ियों को देख कर अपनी क्लिनिक बन्द कर दे और घर में बैठ जाये या स्वास्थ्य विभाग (Health Department) यह देख कर कि सेहत के मामले में आम तौर से लोग बेपरवाही दिखा रहे हैं और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है, सिरे से अपने कर्तव्य ही को छोड़ बैठे। जिन लोगों की नज़र नबियों के तरीक़ा-ए- दअवत (आह्वान विधि) पर हो वह इस तरह का फैसला हरगिज़ नहीं कर सकते, इस लिए कि नबियों के दअवत के तरीक़ों में मौक़ा और समय के लिहाज़ की

निशानदेही तो ज़रूर की जा सकती है। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं पेश किया जा सकता कि आम बिगाड़ को देख कर उन्होंने ने दअवत और सुधार का काम रोक दिया हो, बल्कि वह हमेशा ही मुख़ालफ़तों के तूफ़ान से गुज़रते रहे हैं और सुधार का जो काम भी अन्जाम पा सका है मौज़ो के थपेड़े खाकर ही अन्जाम दिया जा सका है।

यहाँ कलाम के अन्दाज़ से भी स्पष्ट है कि तज़्कीर (याददेहानी) आम तो होनी चाहिए इसी सूरत में उसे स्वीकार करने वाले भी निकल आएंगे और उस से मुँह मोड़ने वाले भी।

12. या'नी जिस व्यक्ति के दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ होगा वह पैग़म्बर की बात ज़रूर पूरे ध्यान से सुनेगा और उस नसीहत को स्वीकार करेगा जो पैग़म्बर पर ख़ुदा की तरफ़ से कुर्आन के रूप में अवतारित (नाज़िल) हुई है।

13. या'नी जहन्नम में न वह जीने का मज़ा ले सकेगा और न मौत ही आयेगी कि सारे दुखों का ख़ात्मा कर दे बल्कि वह ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में फ़ँसा रहेगा जिस की मनुष्य कल्पना ही करे तो उस के रौंगटे खड़े हो जाएँ और वह उस से अल्लाह की पनाह माँगने लगे। ख़याल रहे कि यहाँ उन लोगों की सज़ा का हाल बयान हुआ है जो पैग़म्बर की नसीहत से मुँह मोड़ें और अन्तिम समय तक उस तज़्कीर (याददेहानी अथवा नसीहत) को स्वीकार न करें जो पैग़म्बर पर नाज़िल हुई है।



14. कामयाब हुआ वह जिस ने पाकीज़गी (पवित्रता) इस्तियार की,¹⁴

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝^{١٣}

15. और अपने रब का नाम लिया¹⁵ और नमाज़ पढ़ी।¹⁶

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝^{١٥}

16. मगर तुम लोग संसार के जीवन को वरीयता देते हो,¹⁷

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝^{١٦}

17. हालाँकि आखिरत कई गुना बेहतर और पायेदार है।¹⁸

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝^{١٧}

18. यह (शिक्षा) अगले सहीफ़ों में भी दी गई थी,

إِنَّ هَذَا الْقِيَ الصُّحُفِ الْأُولَى ۝^{١٨}

19. इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में (भी)।¹⁹

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝^{١٩}

14. पाकिजगी इख्तियार करने से मुराद, दिल और दिमाग की पाकीजगी भी है और अखलाक और आमाल (नैतिकता और व्यवहार) की पाकीजगी भी। दिल और दिमाग की पाकीजगी हासिल करने के लिए जरूरी है कि आदमी शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और कुफ्र (अनीश्वरवाद) और इल्हाद (नास्तिकता) में लिप्त होने से अपने को पाक रखे और खुदा और आखिरत पर ईमान ले आए और अखलाक एवं अमल की पाकीजगी हासिल करने के लिए जरूरी है कि आदमी बुराइयों को छोड़ दे और नेक काम करे।

15. अपने रब का नाम लेने से मुराद सिर्फ रस्मी तौर पर नाम लेना नहीं है क्यों कि इस तरह का नाम तो मुश्रिक भी लेते हैं और काफिर भी, बल्कि नाम लेने से मुराद खुदा को दिल से और हकीकती तौर से याद करना एवं जुबान से सही नाम के साथ उस का जिक्र (याद अथवा चर्चा) करना है।

16. “अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ी” से इस बात पर रौशनी पड़ती है कि नमाज़ का वास्तविक प्रेरक (मुहरीक) अल्लाह की याद है। यह याद ही बन्दे को उस की इबादत के लिए आमादा करती है। यहीं से हकीकती नमाज़ और रस्मी नमाज़ का फ़र्क़ खुल जाता है। हकीकती नमाज़ अल्लाह की याद का परिणाम होती है और उस के अन्दर रूह (आत्मा) की तरह समाई हुई होती है। गोया अपने रब की याद उसे इबादत के लिए बेचैन करती है और वह नमाज़ ही में सुकून पाता है। इस के विरुद्ध रस्मी नमाज़ एक बोझ उतारने का काम है इसी लिए उस में दिल नहीं लगता।

नमाज़ का वर्णन यहाँ जिस अन्दाज़ से हुआ है उस से अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में नमाज़ का क्या स्थान है। यह सूरह मक्का के आरम्भिक दौर की नाज़िल शूदा है और इस में आखिरत की कामयाबी के लिए जो गुण जरूरी ठहराये गये हैं उन में नमाज़ भी शामिल है। और शरई एहकाम में उसे प्राथमिकता प्राप्त है।

ध्यान रहे कि नमाज़ (सलात) को योगा (YOGA) से कोई मुनासिबत नहीं है क्यों कि नमाज़ शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत है जब कि योगा (YOGA) मुश्रिकाना स्टाइल की रियाज़त।

17. अर्थात् आखिरत की कामयाबी की यह राह जिस पर चल कर आदमी अपने ज़ाहिर और बातिन (बाह्य और अन्दरून) को संवारता है, मात्र इस लिए तुम लोग अपना के लिए तैयार नहीं हो कि असल अहमियत तुम्हारी निगाह में दुनिया की है न कि आखिरत की। तुम को चिन्ता है तो दुनिया की और सुख चाहते हो तो दुनिया ही में। दुनिया का कोई

लाभ कुर्बान करने के लिए तैयार नहीं हो और समझते हो कि यहाँ के “नक्रद” फ़ायदे हासिल करना ही अक़लमन्दी है।

18. अर्थात् दुनिया के मुकाबले में आखिरत इस लिए वरीयता के योग्य है कि वहाँ की ज़िन्दगी हर लिहाज़ से बेहतर और वहाँ की नेमतें दुनिया की नेमतों से कहीं बढ़ कर है। इस के अलावा आखिरत हमेशा बाक़ी रहने वाली है जब कि दुनिया मिट जाने वाली है।

19. अर्थात् तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत की यह शिक्षा जो कुर्आन दे रहा है कोई नई बात नहीं जो पहली बार दी गई हो। बल्कि अल्लाह की तरफ़ से हमेशा यही हिदायत नाज़िल (अवतरित) होती रही है, प्राचीन से प्राचीन आसमानी ग्रन्थों (सहीफ़ों) में ठीक ठीक यही शिक्षा मौजूद रही है। यह और बात है कि उन के मानने वाले उस शिक्षा को या तो भुला चुके या उस में उन्होंने ख़ूब काट छँट किया, इस लिए कुर्आन के माध्यम से फिर उस शिक्षा का नवीनकरण (तज्दीद) किया जा रहा है।

आसमानी ग्रन्थों में सब से प्राचीन सहीफ़ा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का है लेकिन वह सुरक्षित नहीं रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़े, तो उन से मुराद तौरात है जो अपने शुद्ध रूप में तो मौजूद नहीं है अलबत्ता उस के कुछ अंश “पुराने नियम” (Old Testament) की पाँच पुस्तकों में जो “उत्पत्ति, निर्गमन, लेवी, गणना और व्यवस्थाविवरण” के नाम से पाये जाते हैं देखे जा सकते हैं। विशेष कर तौहीद की शिक्षा अब भी इन में साफ़ तौर पर मौजूद है। जैसे

“तू मेरे अतिरिक्त किसी और को परमेश्वर न मानना । तू अपने लिए किसी प्राणी की मूर्ति या आकृति न बनाना” (निर्गमन २०:३, ४)

“प्रभू मूसा से बोला तू समस्त इस्राईली समाज से बोलना, तू उन से कहना पवित्र बनो। क्यों कि मैं प्रभू तुम्हारा परमेश्वर पवित्र हूँ।-----तुम मूर्तियों की ओर उनमुख मत होना और न उन की पूजा करने के लिए देवताओं की प्रतिमा “ बनाना” (लेवी १९:१-४)

“तू प्रभू परमेश्वर की भक्ति करना। तू उस की आराधना करना, और उस से ही संबद्ध रहना। तू केवल उस के नामकी शपथ खाना। वह तेरा आराध्य है। वह तेरा परमेश्वर है। (व्यवस्थाविवरण १०:२०, २१)

और मूसा अलैहिस्सलाम ने दुनिया से विदा होते समय बनी इस्राईल को इकट्ठा कर के जो गीत सुनाया उस का एक भाग यह है :-

“ओ आकाश, मेरी ओर ध्यान दे, मैं बोलूँगा, ओ पृथ्वी मेरे मुँह के शब्द को सुन । मेरी शिक्षाएँ वर्षा के सदृश बरसें,

मेरे शब्द ओस के सदृश टपकें जैसी हरी घास पर रिमझिम वर्षा, जैसे वनस्पति पर बौछार। मैं प्रभू के नाम को घोषित करूँगा, हमारे परमेश्वर की महानता को स्वीकार करो-----

प्रभू चट्टान है। उस का शासन-कार्य सिद्ध है क्योंकि उस के समस्त मार्ग न्यायपूर्ण हैं। वह सच्चा परमेश्वर है, उस में पक्षपात नहीं वह निष्पक्ष न्यायी और निष्कपट है। (व्यवस्थाविवरण ३२:१-१४)



८८. अल्-गाशियः

नाम :- इस सूरह की पहली आयत में क्रियामत की आम और हमःगीर (सार्वजनिक और सर्वव्यापी) मुसीबत के लिए गाशियः का लफ़्ज़ (शब्द) इस्तेमाल हुआ है जिस की मुनासिबत से इस का नाम “अल्-गाशियः” है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि दअवत और तबलीग़ (समझाने और बुलाने) का काम आरम्भिक चरणों (इब्तिदाई मरहले) में था।

केन्द्रीय विषय :- जज़ा और सज़ा ही हैं। लेकिन छोटे छोटे वाक्यों में जन्नत और दोज़ख़ का चित्रण ऐसी प्रभावपूर्ण शैली में किया गया है कि पढ़ने वाला अगर आँखें रखता है तो इसी दुनिया में इन का अनुभव करने लगता है।

यह सूरह पिछली सूरह की पूरक है। उस में जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र संक्षिप्त था लेकिन इस सूरह में दोनों का नक्शा प्रस्तुत कर दिया गया है। इसी लिए नमाज़ में सूरह “अल्-अअला” के साथ सूरह “अल्-गाशियः” भी पढ़ी जाती है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा और दोनों ईद की पहली रकअत में सूरह अल्-अअला पढ़ते तो दूसरी रकअत में सूरह अल्-गाशियः। (मुस्लिम किताबुल जुमुअः)

कलाम की तरतीब:- आयत १ में क्रियामत की सर्वव्यापी (हमःगीर) आफ़त की ख़बर दी गई है ताकि बेख़बरी में पड़े हुए इन्सान चौंक जायें।

आयत २ से ७ में उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया है जो क्रियामत का इन्कार करने वाले हैं और खुदा के यहाँ ज़वाबदेही का कोई तसव्वुर नहीं रखते।

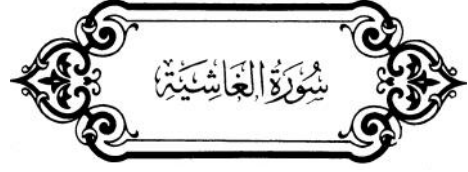
आयत ८ से १६ में उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया है जो क्रियामत पर यक़ीन रखते हैं और खुदा के यहाँ ज़वाबदेही के तसव्वुर के मातहत ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

आयत १७ से २० में संसार (Universe) की कुछ निशानियों की तरफ़ ध्यान अकर्षित किया गया है जो खुदा की कुदरत और हिकमत को प्रमाणित करती हैं और इन पर ग़ौर करने से कुर्आन के इस बयान की पुष्टि होती है कि वह खुदा क्रियामत के बरपा करने तथा जन्नत और दोज़ख़ वाली दुनिया पैदा करने पर क़ादिर (सक्षम) है और ज़रूरी है कि जज़ा और सज़ा का मामला पेश आये।

आयत २१ से २६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के फ़रमाया गया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का काम सिर्फ़ याददेहानी और नसीहत करना है। हक़ (सत्य) को ज़बरदस्ती मनवाने की ज़िम्मेदारी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नहीं डाली गई है। लिहाज़ा जो लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नसीहत सुनने के लिए तैयार नहीं हैं उन का मामला अल्लाह के हवाले करो। अख़िरकार इन को अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। उस वक्त वह इन से हिसाब लेगा।

८८. सूरह अल्-गाशियः

आयतें : 26



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तुम्हें ¹ छा जानेवाली आफ़त की ख़बर पहुँची है ?²
2. कितने चेहरे ³ उस रोज़ रुसवा होंगे,⁴
3. परिश्रम करने वाले थके माँदे होंगे,⁵
4. दहकती आग में दाख़िल होंगे,⁶
5. ख़ौलते चश्मे (ख़ोत) का पानी उन्हें पिलाया जायेगा ।⁷
6. उन के लिए झाड़ काँटे के सिवा कोई खाना नहीं होगा,⁸
7. जो न मोटा करेगा और न भूख ही को दूर करेगा ।⁹
8. कितने चेहरे उस रोज़ चमक रहे होंगे,¹⁰
9. अपनी कोशिशों पर प्रसन्न,¹¹
10. उच्च जन्नत में,¹²
11. जहाँ कोई बेहूदा बात न सुनेंगे,¹³
12. उस में चश्मे (ख़ोत) बह रहे होंगे।¹⁴
13. उस के अन्दर ऊँचे तख़्त होंगे,¹⁵

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝١

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢

عَالِيَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣

تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ۝٤

تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ۝٥

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيمٍ ۝٦

لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝٧

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨

لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَغْوَةً ۝١١

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢

فِيهَا سُرُورٌ مَرْفُوعَةٌ ۝١٣

1. सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है लेकिन मक़सद आम इन्सानों को आगाह करना है।

2. छा जाने वाली आफ़त (अलगाशियः) से मुराद क्रियामत है। मतलब यह है कि क्रियामत एक सर्वव्यापी (हमःगीर) आफ़त के रूप में प्रकट होगी जो सब को अपनी चपेट में ले लेगी। यहाँ इस बात को सवालिया अन्दाज़ (प्रश्नवाचक रूप) में पेश किया गया है ताकि सुनने वाले चौंक जाएँ और आगे जो क्रियामत की स्थिति बयान की जा रही है उन को ग़ौर से सुनें।

3. चेहरे (वुजूह وَجُوهُ) से मुराद व्यक्ति हैं। चूँकि इन्सान की आन्तरिक परिस्थितियों का प्रदर्शन चेहरे से होता है और उस का व्यक्तित्व भी उसी से पहचाना जाता है इस लिए यहाँ व्यक्तियों के चेहरे (वुजूह وَجُوهُ) का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है।

4. यह उन लोगों के हाल का बयान है जो जज़ा और सज़ा का इन्कार करते रहे हैं और इस विचार को लिए अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते रहे कि न उन्हें खुदा के सामने हाज़िर होना है और न अपने किये का हिसाब पेश करना है।

5. या'नी क्रियामत के दिन इन्कार करने वालों को कठोर परिश्रम के काम करने पड़ेंगे जिन से थककर वह निढाल हो जाएँगे। मिसाल के तौर पर क़ब्रों से उठते ही अपने विश्राम स्थान तक दौड़ने, पेशी के इन्तिज़ार में वर्षों तक कड़ी गर्मी में भूखे प्यासे खड़े होने, तौक़ (पट्टा) पहनने और जंजीरें घसीटने जैसे काम। जिन लोगों ने दुनिया में शरई (इस्लामी धर्मशास्त्र की) पाबन्दियों से अपने को आज़ाद कर रखा था और नमाज़ जैसी इबादत को वह बोझिल समझते रहे उन की इस सहूलत पसन्दी और विलासता का ठीक ठीक बदला यही होगा कि वह क्रियामत के दिन थका देने वाले काम करें और “क़ैद बामशक़रत” की सज़ा भुगतें।

6. अर्थात् क्रियामत की जगह से जब यह न मानने वाले लोग लौटेंगे तो सीधे जहन्नम में ढकेले जाएँगे जिस की आग भड़क रही होगी।

7. खौलता हुआ पानी इस लिए कि जब उन्होंने खुदा और आख़िरत से बेपरवाह हो कर ज़िन्दगी गुज़ारी और उस के इनाम का अपने को उम्मीदवार नहीं बनाया तो वह सही तौर पर इस बात के योग्य ठहरे कि उन की ख़ातिर आख़िरत में खौलते हुए पानी से की जाए।

8. अर्थात् खाने के लिए उन्हें ग़िज़ा इयत (आहार) रखने वाली और लज़ज़तदार कोई चीज़ नहीं मिलेगी। अलबत्ता झाड़ काँटे और इसी तरह ज़क्रूम और पीप वगैरा इन्हें ज़रूर खाना पड़ेंगे जो जाहिर है ग़िज़ा (आहार) का काम नहीं दे सकते।

यह बदला भी ठीक उन के कर्म के अनुकूल होगा। क्यों कि उन्होंने खुदा से मिलने का इन्कार कर के दुनिया में काँटे ही बोये थे। इस लिए इन्होंने जो बोया था वही इन्हें खाने के लिए मिलेगा।

9. अर्थात् इन झाड़ काटों में सिरे से आहार ही नहीं होगा, इस लिए शरीर को न शक्ति प्राप्त हो सकेगी और न भूख ही मिट सकेगी।

अल्लाह तआला ने शरीर को शक्ति पहुँचाने और भूख को मिटाने के लिए तरह तरह की लज़ज़तदार ग़िज़ाएँ (आहार) बरख़्शी थी लेकिन जब इन्होंने न इन नेमतों को पाने के बाद भी अपने रब की नाशुक्री की तो वह इसी योग्य ठहरे कि झाड़ काँटे खाएँ।

ध्यान रहे कि मतन (Text) में लफ़्ज़ “ज़रीअ” ضَرِيع इस्तेमाल हुआ है जो एक काँटेदार और ज़हरीली झाड़ी का नाम है।

10. अब उन लोगों का हाल बयान किया जा रहा है जो आख़िरत पर ईमान लाए और खुदा के सामने जवाबदेही के भय से ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारते रहे।

11. अर्थात् अपनी कोशिशों के बेहतरीन परिणाम देखकर वह खुश होंगे कि अच्छा हुआ उन्होंने आख़िरत को लक्ष्य बना कर ज़िन्दगी बसर की और दुनिया परस्ती में लिप्त नहीं हुए।

12. अर्थात् वह ऐसे बाग़ में होंगे जो बुलन्दी पर भी होगा और उच्च कोटि का भी।

13. अर्थात् जन्नत की सोसाइटी इस क़दर पाकीज़ा और वहाँ की मज़लिसें (सभाएँ) इतनी सभ्य होंगी कि न तो कोई व्यक्ति असभ्य बात अपनी जुबान से निकालेगा और न किसी को बेहूदा बात सुने के लिए सम्अख़राशी (बकबक से कानों को कष्ट देना) करना होगी। दुनिया के मौजूदा माहौल से जहाँ बेहयाई की बातों और बेहूदा गानों से अपने कानों को सुरक्षित रखना सम्भव नहीं रहा है, जन्नत का माहौल बिलकुल अलग और उच्च नैतिक मूल्यों पर आधारित होगा और यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत होगी जो पाकीज़गी अपनाने वालों को नसीब होगी।

14. जन्नत में चश्मों (स्त्रोतों) का बहते रहना एक तो इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि उस की ताज़गी और हरयाली कभी ख़त्म होने वाली नहीं और दूसरे इस बात की तरफ़ कि पानी और दूसरे उच्च क्वालिटी के मशरूबात (पेय पदार्थ या Drinks) वहाँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध होंगे।

15. ऊँचे और शानदार तख़्त शाही जीवन की निशानियाँ हैं और जन्नत में जाने वालों को ऐसी ही ज़िन्दगी नसीब होंगी।

14. और प्याले होंगे क़रीने (सभ्य तरीक़े) से रखे हुए,¹⁶

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۖ (١٣)

15. और गाव तकिये पंक्तिबद्ध लगे हुए,

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۖ (١٤)

16. और कालीन बिछे हुए।¹⁷

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۖ (١٥)

17. क्या यह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं ?

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۖ (١٦)

18. और आसमान को, कि कैसा बुलन्द किया गया है ?

وَالِى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۖ (١٧)

19. और पहाड़ों को, कि किस तरह खड़े कर दिए गये हैं?

وَالِى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۖ (١٨)

20. और ज़मीन को, कि किस तरह बिछाई गई है ?¹⁸

وَالِى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۖ (١٩)

21. तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम नसीहत करो, कि तुम्हारा काम बस नसीहत करना है।

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۖ (٢٠)

22. इन को बाध्य करना नहीं है,¹⁹

لَسْتُ عَلَيْهِمْ بِمُضِيطِرٍّ ۖ (٢١)

23. मगर जो मुँह मोड़ेगा²⁰ और कुफ़्र करेगा,²¹

إِلَّا مَن تَوَلَّى وَكَفَرَ ۖ (٢٢)

24. तो अल्लाह उस को बड़ा अज़ाब (यात्ना) देगा।²²

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۖ (٢٣)

25. निस्सन्देह हमारी ही तरफ़ है इन की वापसी,²³

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۖ (٢٤)

26. फिर हमारे ही ज़िम्मे है इन से हिसाब लेना,²⁴

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۖ (٢٥)

16. अर्थात् प्याले या गलास सामने रखे हुए होंगे। उन्हें जन्नत के मशरूबात (Drinks) पीने के लिए कोई कष्ट करना नहीं होगा।

17. इस से अन्दाज़ा होता है कि जन्नत वालों का जीवन कैसा सुख समृद्धि का जीवन होगा और उन के लिए कैसा अधिक और उत्तम आराइश (श्रृंगार) का सामान वहाँ मौजूद होगा।

ऊपर की आयतों में जन्नत का जो चित्रण प्रस्तुत किया गया है उस से जन्नत का सही और साफ़ सुथरा तसव्वुर क़ायम होता है और इतनी बातें, इस की उमंग पैदा करने के लिए काफ़ी है। रही इस की असल हकीकत तो आख़िरत के जगत (परलोक) की चीज़ों को हम माद्री (भौतिक) पैमानों से नाप नहीं सकते इस लिए इस पर बहसें खड़ी करना बिल्कुल बेफ़ायदा है।

18. ऊपर क़ियामत एवं जन्नत और दोज़ख़ का जो ज़िक्र हुआ उस का इन्कार करने वालों को यहाँ सोचने और विचार करने पर उकसाया गया है और इस सिलसिले में इर्द गिर्द की चीज़ों की तरफ़ इन का ध्यान खींचा गया है। अरब के रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उन की निगाह सब से पहले ऊँट पर पड़ती थी इस लिए उन्हें सब से पहले इस पर विचार करने का न्योता दिया गया है कि क्या ये देखते नहीं कि यह जानवर किन विशेषताओं के साथ पैदा किया गया है? जिन विशेषताओं की रेगिस्तानी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरत थी ठीक उन विशेषताओं के साथ ऊँटों का पैदा किया जाना क्या अल्लाह की कुदरत (शक्ति) रूबूबियत (स्वामित्व) और हिकमत (तदबीर) के गुणों पर तर्क नहीं करता?

रेगिस्तान में ऊँट पर सफ़र करने वालों को आसमान पहाड़ और ज़मीन नज़र आते हैं। इस लिए उन से कहा गया कि इन्हीं चीज़ों पर ग़ौर करो कि क्या यह ऊँचा आसमान अल्लाह की महान शक्ति की गवाही नहीं देता और क्या यह पहाड़ जो ज़मीन पर खड़े कर दिये गये हैं उस की सुदृढ़ कारीगरी और कला का निशान नहीं हैं। और क्या यह ज़मीन जिसे इस तरह बिछा दिया गया है कि वह अरबों इन्सानों के बसने योग्य हो गयी, उस की रूबूबियत और हिकमत पर दलालत नहीं करती? अगर यह सब कुछ सही है और अक्ल कहती है कि यही बात सही है, तो फिर

उस खुदा के लिए क़ियामत को बरपा करना, इन्सान को दोबार पैदा करना तथा जन्नत और दोज़ख़ वाली दुनिया बना देना क्या मुश्किल है? और क्या उस की रूबूबियत का यह तक्राज़ा नहीं है कि वह एक दिन ऐसा लाए जिस में वह अपने बन्दों से हिसाब ले कि उन्होंने ने उस की नेमतों से फ़ायदा उठा कर उस की शुक्रगुज़ारी की या ना शुक्र की? और क्या यह बात उस की हिकमत के खिलाफ़ न होगी कि इन्सान जैसी ऊँची मख़्लूक़ का कोई उद्देश्य न हो और उस की रचना के पीछे सिर से कोई योजना और कोई स्कीम ही न हो?

19. अर्थात् पैगम्बर का काम दअवत देना, नसीहत करना और डराना एवं समझाना है। लोगों से जबरदस्ती बात मनवा लेने का काम पैगम्बर के सुपुर्द नहीं किया गया है।

20. मुँह मोड़ना यह है कि आदमी नसीहत की बात सुनना पसन्द न करे, कुर्आन की नसीहत उस पर भारी हो और जब याददेहानी की कोई बात उस के सामने आ जाये तो वह उस में रुचि न ले या कतरा कर निकल जाये।

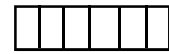
21. कुफ़्र यह है कि आदमी कुर्आन की नसीहत को कुबूल न करे और उस की हिदायत और शिक्षाओं को मानने से इन्कार कर दे।

22. अर्थात् इन्कार करने वालों पर आख़िरत में अल्लाह का अज़ाब (यातना) ऐसा ज़बरदस्त होगा कि उस का मुक़ाबला दुनिया की बड़ी से बड़ी सज़ा से नहीं किया जा सकता। मगर कुर्आन की इस स्पष्ट चेतावनी के बावजूद जो लोग कुफ़्र की राह अपनाएँ उन्हें इस अन्जाम को पहुँचने से कौन बचा सकता है।

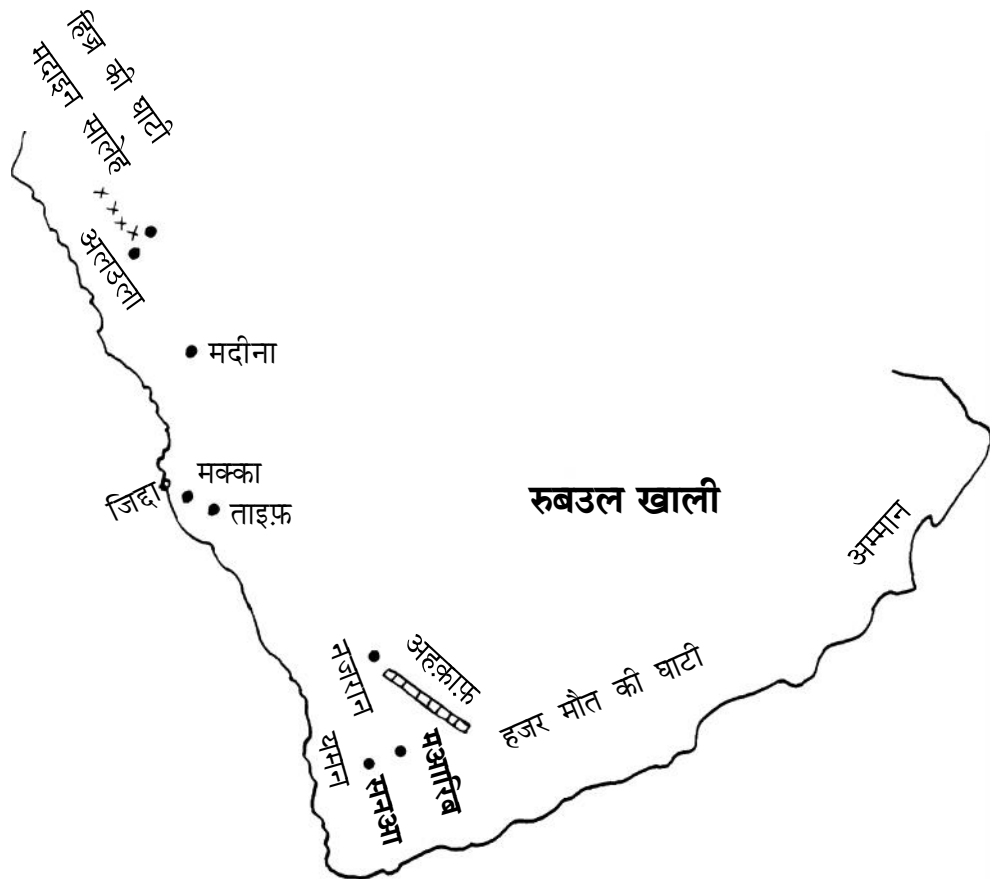
23. अल्लाह की तरफ़ वापसी का मतलब यह है कि सब को एक दिन उसी के सामने हाज़िर होना है, किसी और के सामने नहीं, फिर यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि आदमी इस फ़िक्क़ ही से बेपरवाह हो जाये कि उसे खुदा के सामने हाज़िर होना है।

24. अर्थात् क़ियामत के दिन जब अल्लाह के सामने तमाम लोगों की हाज़री होगी तो वह हर एक से हिसाब लेगा। उस वक्त उन लोगों को जिन्होंने पैगम्बर की बात पर कान नहीं धरा और कुर्आन की रहनुमाई को स्वीकार करने से इन्कार करते रहे, कड़ी जवाबदेही करना होगी।

हूद समाज का ठीकाना
समूद समाज का ठीकाना



X X X X



८९. अल्-फ़ज्र

नाम :- सूरह की शुरुआत “وَالْفَجْرِ” (कसम है फ़ज्र की) से हुई है। इसी मुनासिबत से इस का नाम “अल्-फ़ज्र” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून (विषय) से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि मक्का वालों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहत का असर कुबूल करने के बजाय सरकशी और जुल्म एवं फ़साद का रवैया अपना लिया था।

केन्द्रीय विषय :- जज़ा और सज़ा है, ख़ास तौर से सज़ा के पहलू को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है ताकि जो लोग दुनिया परस्ती में मगन हैं वह होश में आएँ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में रात और दिन की प्रकृतिक स्थिति को हिसाब के दिन के सबूत में पेश किया

गया है।

आयत ६ से १४ में इतिहास की कुछ बड़ी क़ौमों के भयावह अन्जाम को इस बात के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस कायनात का शासक, व्यक्तियों और क़ौमों पर नज़र रखे हुए हैं और वह एक दिन ज़रूर उन से पूछ ताछ कर के हिसाब लेगा।

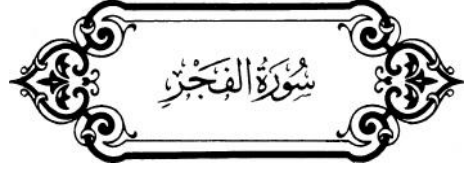
आयत १५ से २० में इन्सान के कुकर्मों विशेष रूप से कमज़ोर के अधिकार छीनने पर कड़ी पकड़ की गई है। और खोल कर बताया गया है कि इस तरह के ग़लत काम आख़िरत के इन्कार का ही नतीजा है।

आयत २१ से ३० में अल्लाह की अदालत का चित्रण प्रस्तुत करते हुए इन्कार करने वालों (मुन्किरीन और ईमान लाने वालों (मोमिनीन) का अन्जाम बयान किया गया है।

८९.सूरह अल्-फ़ज्र

आयतें :30

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है ¹ फ़ज्र की,²
2. और दस रातों की,³
3. और जुफ़्त (युग्म) और ताक़ (अयुग्म)की,⁴
4. और रात की जब कि वह विदा हो रही हो।⁵
5. क्या इस में एक अक्लमन्द के लिए कोई क़सम नहीं है?⁶
6. तुम ने नहीं देखा ⁷ कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आद के साथ !⁸
7. ऊँची इमारतों वाले ⁹ इरम के साथ।¹⁰
8. जिन के मानिन्द (सदृश) कोई (क्रौम) किसी देश में पैदा नहीं की गई थी।¹¹
9. और समूद के साथ ¹² जो घाटी में ¹³ चट्टानें तराशा करते थे।¹⁴
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ !¹⁵
11. इन लोगों ने देशों में सर उठा रखा था।
12. और उन में बहुत फ़साद मचा रखा था।¹⁶
13. तो तुम्हारे रब ने इन पर अज़ाब (यातना) का कोड़ा बरसाया।¹⁷

- وَالْفَجْرِ ۝
وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝
وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝
وَالْأَيْلِ إِذَا يَسِرٌ ۝
هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِذِي حِجْرِ ۝
الَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝
إِرمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝
الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝
وَتَمُودَ الَّذِي جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝
الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝
فَاكْتَرَوْا فِيهَا الْفُسَادَ ۝
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर फुटनोट नं. १४

2. फ़ज़्र से मुराद वह वक्त है जब रात के अन्धेरे में से दिन की रौशनी पूरब की ओर आसमान पर प्रकट होती है। इस का दूसरा नाम सुब्हे-सादिक़ (प्रातःकाल) है जिसे उर्दू में पौ फटना कहते हैं।

फ़ज़्र का वक्त सूर्य उदय होने तक रहता है जब कि सुबह, सुर्योदय के बाद के समय को भी कहा जाता है।

3. दस रातों से मुराद चाँद के महीने (क्रमरी माह) की दस रातें हैं और फ़ज़्र की मुनासिबत से बीच की दस रातें यानी ग्यारहवीं से बीसवीं रात मुराद लेना ज़्यादा सही मालूम होता है क्योंकि कि यह रातें चाँद से रौशन (प्रकाशमान) रहती हैं।

4. कलाम के सिलसिले को ध्यान में रखते हुए यहाँ जुफ़्त (युग्म) और ताक़ (अयुग्म) से मुराद जुफ़्त और ताक़ (युग्म और अयुग्म) रातें ही ली जा सकती हैं क्योंकि रात का ज़िक्र इस से पहले भी हुआ और इस के बाद भी। रातें किसी महीने में जुफ़्त (युग्म) अदद होती हैं और किसी में ताक़ (अयुग्म) अदद। अर्थात् कोई महीना ३० रातों का होता है और कोई २९ रातों का।

5. रात के विदा होने से मुराद वह वक्त है जब अन्धेरा ख़त्म होने और पौ फटने को होती है।

6. मतलब यह कि क्या इन चीज़ों में रहनुमाई का कोई सामान मौजूद नहीं है, और क्या एक आदमी पर जो अक़ल और होश से काम ले, आसमान पर जाहिर होने वाले इन आसार से कुर्आन के बयान की सच्चाई रौशन नहीं होती। यह सवाल दावे के लिए और बात पर ज़ोर देने के लिए है। यहाँ दिन और रात की व्यवस्था पर सोचने और विचार करने पर उकसाया गया है जिस का अनुभव मनुष्य रोज़ाना करता है। इस की शुरुआत फ़ज़्र से होती है और ख़ात्मा रात के विदा हो जाने पर। फ़ज़्र रात के अन्धकार को चीर कर प्रकट होती है। जिस समय सुबह की सफ़ेद धारी आसमान पर झलकने लगती है तो वह मन्ज़र बहुत अजीब होता है। इसी तरह हर माह की बीच की दस रातें जो चाँद के नूर से रौशन होती हैं, इन्सान के दिल और दिमाग़ पर ख़ास असर डालती हैं। फिर हर महीने की समाप्ति या तो ३० रातों पर होती है या २९ रातों पर। इस में कभी कोई अन्तर घटित नहीं होता और रात के जब विदा होने का समय आ जाता है तो वह ख़ामोशी के साथ अपनी विसात लपेट देती है और इस तरह विदा हो जाती है कि गोया वह विदा होने ही के लिए आई थी। और उस के विदा होते ही वह महफ़िल भी बेरौनक़ हो जाती है जो उस ने सजाई थी।

रात दिन मुशाहिदे (अनुभव) में आने वाले यह आसार क्या

किसी मुदब्बिर (नीतिज्ञ) का पता नहीं देते? दिन और रात की यह विचित्र व्यवस्था और इस में कमाल दर्जे का नियम किस तरह पैदा हो सकता था अगर इस के पीछे एक ज़बरदस्त कुदरत और हिकमत रखने वाली हस्ती का हाथ न होता? अतः यह अनुभव इन्सान को जिस नतीजे पर पहुँचाता है वह यह है कि निश्चय ही एक नीतिज्ञ हस्ती है जिस के इशारे पर कायनात की यह सारी व्यवस्था कमाल दर्जे के नियमानुसार अत्यन्त सुदृढ़ तरीक़े से चल रही है और जब वह हस्ती नीतिज्ञ (मुदब्बिर) है तो उस की बनाई हुई दुनिया बेमक़सद कैसे हो सकती है और उस का पैदा किया हुआ इन्सान बेनकील का ऊँट कैसे हो सकता है? ज़रूरी है कि इस दुनिया का एक मक़सद हो और इन्सान की रचना के पीछे कोई योजना हो। कुर्आन इस मक़सद की निशानदेही करता है ख़ुदा के मन्सूबे (योजना) को खोल कर बयान करता है। उस के बयान के मुताबिक़ दुनिया का मक़सद आख़िरत है और इन्सानी ज़िन्दगी के लिए ख़ुदा का मन्सूबा यह है कि उसे इस्तिहान से गुज़ारा जाये और जो इस इस्तिहान में खरा साबित हो उसे आख़िरत की कभी न मिटने वाली नेमतों से पुरस्कृत किया जाये और जो खोटा साबित हो उसे आग में झोंक दिया जाये। कुर्आन का यह बयान दरअसल उस वास्तविकता की व्याख्या है जो दिन और रात की व्यवस्था में और पूरी कायनात (संपूर्ण ब्रह्माण्ड) में इशारों की भाषा में बोल रही है। और कुर्आन के बयान की कायनात में पायी जाने वाली इस वास्तविकता का इस दर्जा मेल खाना उस की सच्चाई का खुला सबूत है।

फ़ज़्र की क्रसम का एक और पहलू भी है। फ़ज़्र का वक्त रोज़ाना क्रियामत के प्रकट होने की याददेहानी कराता है, जिस तरह रात के अन्धकार का पर्दा चीर कर फ़ज़्र नमुदार (प्रकट) होती है उसी तरह दुनिया पर छाया हुआ अन्धकार का पर्दा चीर कर क्रियामत की फ़ज़्र (सुबह) प्रकट होगी। और जिस तरह इन्सान सुबह नींद से जागता है उसी तरह क्रियामत की सुबह के प्रकट होते ही उठ बैठेगा और महसूस करेगा कि अभी सोया था और अभी जाग गया। इसी वास्तविकता की तरफ़ वह मस्नून दुआ ध्यान दिलाती है। जिस को सुबह जागते ही पढ़ने की हिदायत की गई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَاَنَا بَعْدَ مَا مَاتْنَا

وَالِيْهِ النَّشُوْرُ۔ (مسلم کتاب الذکر)

“अलहम्दुलिल्लाहिल्लजी अहयाना बाअद मा आमातना वा इलैहिन्नुशूर” (शुक्र अल्लाह का जिस ने मौत के बाद हमें ज़िन्दगी बख़्शी और उसी की तरफ़ उठ खड़े होना है।) (मुस्लिम

किताबुज्जिक्र)

7. “तुम ने नहीं देखा” “क्या तुम ने गौर नहीं किया” के अर्थ में है, जिस तरह हम बोलते हैं “तुम ने नहीं देखा हिटलर का क्या अन्जाम हुआ” जब कि हिटलर के अन्जाम को हम अपनी आँखों से नहीं देखे होते बल्कि उस को एक ऐतिहासिक घटना के तौर पर जानते हैं, ऐसे अवसर पर कहने वाले का अभिप्राय यह होता है कि यह घटना जिस की ऐतिहासिक सत्यता साबित है, तुम्हारे लिए गौर करने योग्य है और इस से तुम्हें सबक हासिल करना चाहिए।

8. आद एक क्रौम का नाम है जो दक्षिणी अरब के रेगिस्तानी बियाबान “रुबउल खाली” में अहकाफ़ के इलाक़े में जो यमन और हज्रमौत के बीच में है, आबाद थी। इस का दौर नूह अलैहिस्सलाम के बाद और इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है अर्थात् लगभग ३ हजार वर्ष पूर्व ईसा का।

9. “जातुलइमाद” (ऊँची इमारतों वाले) इस लिए कहा गया है कि वह बड़ी बड़ी ऊँची इमारतें बनाया करते थे और यह तरीका उन्होंने किसी वास्तविक सामाजिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए नहीं बल्कि मात्र क्रौमी यादगार (राष्ट्रीय स्मारक) खड़ी करने और दिखावटी शौक के उद्देश्य से इख्तियार किया था। उन की उस कला में फुज़ूल खर्च भी था और दुनिया परस्ती की जड़ें मज़बूत करने का सामान भी।

10. आद का सम्बन्ध इरम से इस लिए जोड़ा गया है कि ये लोग सामी नस्ल (Semetic Race) उस शाखा से सम्बन्ध रखते थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली। इरम का वर्णन बाइबिल में मौजूद है।

“शेम (साम) के पुत्र में हैं ----- और आराम हुए और आराम के पुत्र उज़ ----- (उत्पत्ति १०:२२)

बाइबिल के इस बयान में शब्द “आराम” इरम ही का उच्चारण है।

11. अर्थात् बल और शक्ति एवं शान और शौकत के लिहाज़ से उन के समय में कोई क्रौम उन की बराबरी की नहीं थी और उन से पहले भी इस शान की कोई क्रौम नहीं गुजरी थी।

आद अरब भू भाग की सब से पुरानी क्रौम है जो नूह के तूफ़ान के बाद अपनी रचनात्मक प्रगति एवं बल और सत्ता के साथ उभरी थी और अपनी इन भौतिक विशेषताओं के आधार पर दुनिया की एक विख्यात, प्रमुख और अद्वितीय क्रौम थी।

12. आद के बाद भौतिक प्रगति और दुनियावी शानो शौकत के लिहाज़ से जो क्रौम उभरी उस का नाम समूद था। इस का भी ज़माना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है।

13. घाटी से मुराद कुरा की घाटी है जो हिजाज़ प्रदेश और सीरिया के बीच स्थित है। उस घाटी का महत्वपूर्ण स्थान “हिब्र” था जिस को अब “मदाएन स्वालेह” कहते हैं और जो मदीने से उत्तर में लगभग १८० मील के फ़ासले पर स्थित है। यह इलाक़ा समूद का ठिकाना था।

14. समूद चट्टानों को काटकर घर बना लेते थे। इस निर्माण कला में वे बड़े निपुण थे और इस में उन की लगन निर्माण करने के शौक को पूरा करने के लिए था। इस तरह उन्होंने भवन निर्माण के क्षेत्र में शानदार तरक्की की थी और इस तरक्की से प्रभावित होकर यह समझ रखा था कि वह दुनिया में हर तरह से सुरक्षित हैं।

15. मेखों वालों से अभिप्राय लाव लश्कर वाला है। फ़िराऊन ने अपने देश की सुरक्षा के लिए स्थायी सेना तैयार की थी जब कि उस ज़माने में स्थायी सेना रखने का रिवाज न था बल्कि जब जंग की ज़रूरत पेश आ जाती, वक्ती तौर से उस का इन्तिज़ाम कर लिया जाता। फ़ौज चूँकि खेमों में रहती थी और खेमा मेखें ठोक कर स्थापित किया जाता है इस लिए इस मुनासिबत से ये शब्द लावलश्कर वाला के अर्थ में संकेत के रूप में प्रयोग हुए हैं।

16. अर्थात् इन क्रौमों ने एक भव्य समाज के साधनों और सत्ता पा कर बहुत ग़लत मार्ग अपना लिया। खुदा से बेख़ौफ़ और आख़िरत से बे परवाह हो कर वह घमण्ड में लिप्त हो गई और उन्होंने ने सरकशी का रवैया अपनाया जिस के परिणाम स्वरूप उन में हर तरह का बिगाड़ पैदा हुआ।

17. अर्थात् ये क्रौम जब सरकशी और बिगाड़ की राह पर चल पड़ी और पैगम्बरों द्वारा ख़बरदार (सचेत) करने के बावजूद अपने सुधार के लिए आमादा नहीं हुई तो अल्लाह तआला का यातना में घेर लेने का नियम हरकत में आया और उस प्रकृतिक नियम ने इस तरह उन को अपने शिकन्जे में जकड़ लिया कि उन की सारी भौतिक प्रगति और उन की सारी शानो-शौकत (मान-सम्मान) मिट्टी में मिल गई। न ऊँची इमारतें उन्हें ज़िल्लत की मौत मरने से बचा सकी और न चट्टानों में काट तराश कर बनाये गये भवन उन की रक्षा कर सके। इसी तरह फ़िराऊन का लाव लश्कर उस को समुद्र में डूब जाने से नहीं बचा सका बल्कि वह लश्कर समेत डूब मरा ठीक उस तरह जिस तरह कि किसी शायर ने कहा है।

“हम तो डूबे हैं सनम, तुझ को भी ले डूबेंगे”

इन क्रौमों पर जो अज़ाब आया उस की तफ़सीलात (सविस्तार विवरण) सूरह अअरफ़, सूरह युनूस, सूरह हूद, सूरह हिब्र और दूसरी सूरों में बयान हुई हैं।

मगर इन्सान का हाल यह है कि जब उस का रब उस की आजमाइश इस तरह करता है कि उस को इज़्जत और नेमत बख़्शता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्जत बख़्शी। और जब उस की आजमाइश इस प्रकार से करता है कि उस का रिज़्क (जीविका) उस पर तंग कर देता है तो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। नहीं, बल्कि तुम लोग यतीमों की क़द्र (आदर) नहीं करते। और न मिस्कीन (मोहताज) को खाना खिलाने पर एक दूसरे को उकसाते हो, और सम्पत्ति का माल समेट कर हड़प कर जाते हो, और धन के मोह में मस्त रहते हो, नहीं ! जब ज़मीन कूट कूट कर समतल (बराबर) कर दी जायेगी, और तुम्हारा रब आयेगा पंक्तिबद्ध फ़रिशतों की ज़िलौ (संगत) में। और जहन्नम उस रोज़ हाज़िर कर दी जायेगी। उस रोज़ इन्सान होश में आयेगा, मगर उस वक्त उस के होश में आने का क्या फ़ायदा? वह कहेगा कि काश मैं ने अपनी ज़िन्दगी के लिए पहले से कुछ कर रखा होता। (अल-कुर्आन)

14. वास्तव में तुम्हारा रब घात में रहता है।¹⁸

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْبُرْصَادِ ۝۱۳

15. मगर इन्सान का हाल यह है कि जब उस का रब उस की आजमाइश इस तरह करता है कि उस को इज्जत और नेमत बख्शता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज्जत बख्शी।¹⁹

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۖ
فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝۱۵

16. और जब उस की आजमाइश इस प्रकार से करता है कि उस का रिज़क (जीविका) उस पर तंग कर देता है तो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।²⁰

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝۱۶

17. नहीं,²¹ बल्कि तुम लोग यतीमों की कद्र (आदर) नहीं करते।²²

كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ۝۱۷

18. और न मिसकीन (मोहताज) को खाना खिलाने पर एक दूसरे को उकसाते हो,²³

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝۱۸

19. और सम्पत्ति का माल समेट कर हड़प कर जाते हो,²⁴

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۝۱۹

20. और धन के मोह में मस्त रहते हो,²⁵

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝۲۰

21. नहीं!²⁶ जब ज़मीन कूट कूट कर समतल (बराबर) कर दी जायेगी,²⁷

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝۲۱

22. और तुम्हारा रब आयेगा पंक्तिबद्ध फ़रिशतों की जिलौ (संगत) में।²⁸

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝۲۲

23. और जहन्नम उस रोज़ हाज़िर कर दी जायेगी।²⁹ उस रोज़ इन्सान होश में आयेगा, मगर उस वक्त उस के होश में आने का क्या फ़ायदा?³⁰

وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ يَوْمِئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ
يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۝۲۳

24. वह कहेगा कि काश मैं ने अपनी ज़िन्दगी के लिए पहले से कुछ कर रखा होता।³¹

يَقُولُ يَلَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝۲۴

18. ऊपर जिन ऐतिहासिक घटनाओं की ओर इशारा किया गया वह गवाह हैं कि यह दुनिया अन्धेर नगरी नहीं है और इन्सान को पैदा करने वाले ने उस को पैदा कर के यँही नहीं छोड़ दिया है बल्कि वह हर व्यक्ति और हर क्रौम की देख रेख कर रहा है और उन सब की बागडोर उस के हाथ में है। वह बागी और फ़सादी क्रौमों को ढील ज़रूर देता है ताकि वह संभलना चाहे तो संभले। लेकिन यह ढील बस एक समय तक के लिए ही होती है इस के बाद अचानक खुदा के अज़ाब का कोड़ा उन पर बरसता है और वह बुरे अन्जाम से दोचार हो जाती है।

इतिहास की यह गवाही इस बात की खुली दलील है कि यह दुनिया खेल तमाशा नहीं बल्कि एक इम्तिहानगाह (परिक्षा स्थल) है जिस में व्यक्तियों का भी इम्तिहान हो रहा है और क्रौमों का भी। और उन का खब उन के साथ हिकमत और इन्साफ़ के साथ मामला कर रहा है। और वह मुजरिमों को दण्ड देने पर पूरी तरह सक्षम (क्रादिर) है। तथा जब दुनिया इम्तिहानगाह करार पाई तो ज़रूरी हो जाता है कि एक रोज़ जज़ा और सज़ा (प्रतिफल) का आए। लिहाज़ा कुर्आन का यह दावा कि क्रियामत का आना एवं जज़ा और सज़ा का होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिस का इन्कार ही नहीं किया जा सकता और इतिहास की गवाही से भी साबित है।

19. यहाँ इन्सान का जो हाल बयान किया गया उस से इस भ्रम को दूर करना अभिप्रेत है जिस में दुनिया परस्त लोग लिप्त होते हैं। माल और दौलत, मान सम्मान एवं सत्ता और भौतिक वस्तुओं का मिलना उन के निकट सम्मान और मर्यादा का मेआर है और जिसको भौतिक वस्तुओं (मादी नेमतों) की सम्पन्नता प्राप्त होती है वह यह समझता है कि खुदा की नज़र में वह अच्छा है इसी लिए वह उस का सम्मान बढ़ाने का सामान कर रहा है। और फिर यह ग़लत विचार उसे सरकशी पर आमादा करता है। हालाँकि अल्लाह तआला जिस को भी यह चीज़े प्रदान करता है, आजमाइश के लिए प्रदान करता है कि देखे वह इन नेमतों को पाकर अपने खब का शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) और फ़रमाँबरदार (आज्ञाकार) बन्दा बनता है और बन्दों के हुकूक़ (अधिकारों) को अदा करता है या उस का नाशुक्रा, घमण्डी और बन्दों के अधिकारों को ठुकराने वाला बनता है। रहा वास्तविक मान और सम्मान, तो वह इम्तिहान में कामयाबी के बाद ही प्राप्त हो सकता है।

20. सांसारिक मोह का दृष्टिकोण रखने वालों के निकट निर्धन होना अपमान का कारण है। गोया जिन को माल और दौलत अधिकता से नहीं मिल सकी है वह अल्लाह की नज़र में तुच्छ है हालाँकि अल्लाह ऐसी हालत से इन्सान को इस लिए गुज़ारता है ताकि उस की आजमाइश हो कि वह अपने आप को सब्र करने वाला साबित कर दिखाता है या नहीं और अपने खब

के फैसले पर सन्तुष्ट होता है या उस के विरुद्ध शिकवा शिकायत करने लगता है। निर्धनता (गरीबी) इन्सान के अन्दर हालात का मुकाबला करने की ताक़त पैदा करती है उस के चरित्र को मज़बूत बनाती है और इन्सान इस मरहले से गुज़र कर मान और सम्मान का स्थान प्राप्त कर सकता है। बस शर्त यह है कि वह सब्र और धैर्य का दामन हाथ से छूटने न दे। खुदा की यह ज़बरदस्त हिकमत है जो गरीबी के पीछे काम कर रही होती है किन्तु अदूरदर्शी एवं ऊपरी निगाहें इस भेद को नहीं पाती और धोखे का शिकार को जाती हैं। इस आयत ने बहुत ही सफ़ाई से और बहुत ही खोलकर इस भ्रम को दूर करने का सामान किया है। इस के बाद भी अगर इन्सान इस भ्रम में रहता है तो इस के लिए उस इम्तिहान में नाकामी ही है।

21. अर्थात् सम्मान और अपमान का यह पैमाना सही नहीं है जो दुनिया परस्तों ने बना रखा है।

22. यहाँ दुनिया परस्तों और ख़ास तौर पर मालदारों को सीधे सम्बोधित कर के कहा जा रहा है कि होना तो यह चाहिए था कि इस आजमाइशी ज़िन्दगी में दौलत पाकर तुम खुदा के बन्दों के हक़ अदा करते, बेसहारा बच्चों और मुहताजों की मदद करते लेकिन तुम्हारे अन्दर धन दौलत का ऐसा घमण्ड पैदा हो जाता है कि बजाय इस के कि यतीमों की मदद करते, उन की अवहेलना और उन की नाक़दरी करने लगते हो और उन को अपमान भरी निगाह से देखते हो।

इस से स्पष्ट हुआ कि कुर्आन यतीमों की न सिर्फ़ मदद करने का हुक्म देता है बल्कि उन का सम्मान करने का भी। दूसरे शब्दों में कुर्आन गरीब और कमज़ोर वर्ग को समाज में सम्मान की जगह दिलाना चाहता है और एक सही मुस्लिम सोसाइटी वह है जिस में उन को आदर की दृष्टि से देखा जाए।

23. गरीबों को खाना खिलाना और उस के लिए एक दूसरे को उकसाना मौलिक नैतिकता (बुनियादी अखलाकियात) में से है जिस की ज़िम्मेदारी इन्सान पर उस के अपने स्वभाव स्वरूप लागू होती है। शरीअत ने इस की ताक़ीद कर के इस को और भी दृढ़ कर दिया। और इस सिलसिले में तफ़सीली एहकाम (विस्तृत आदेश) भी दिये हैं।

यहाँ कुर्आन ने अज़ानता (जाहिलिय्यत) के उस समाज पर कड़ी पकड़ की है जिस में लोग न मिस्कीनों को खाना खिलाने की चिन्ता करते हैं और न दूसरों के अन्दर भलाई की भावना पैदा करने की कोशिश करते हैं। इस से स्पष्ट है कि कुर्आन इन्सानी सोसाइटी को जिन खूबियों से भरापूरा देखना चाहता है वह यह है कि उस के लोग खुद भी गरीबों और मोहताजों की मदद करें और दूसरों को भी इस पर उकसाएँ। इस तरह से कन्जूसी, लोभ, धनपूजा और मोहमाया की समाप्ति होती है और

हमदर्दी (सहानुभूति) और दान पुण्य एवं उदारता की भावना परवरिश पाने लगती है। गरीबी और भुखमरी की समाप्ति के लिए यह बात बुनियादी है।

24. अज्ञानता के दौर में औरतों और बच्चों को जायदाद से महरूम (वन्चित) रखा जाता था और बलवान मर्द संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेते थे जिस के नतीजे में यतीम बच्चे और बच्चियाँ तक अपने बाप की जायदाद में हिस्सा पाने से महरूम रह जातीं, इस आयत में अज्ञानियों के इसी रवैये को ग़लत और निन्दनीय ठहराया गया है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा फुट नोट १९)

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जायदाद के बंटवारे का कुर्आनी संविधान तो मदीना में सन ३ हिजरी के अन्त में नाज़िल हुआ जो सूरह निसा में शामिल है जब कि सूरह फ़त्र मक्की है जिस में जायदाद का माल समेट कर खाने की निन्दा की गई है तो फिर यह तंबीह जायदाद के किस हुक्म की ख़िलाफ़ वर्जि करने पर की गई है? इस का जवाब यह है कि जायदाद का कुर्आनी संविधान यद्यपि बाद में नाज़िल हुआ लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि जब तक यह संविधान नाज़िल नहीं हुआ था उस समय तक यह लोग सिरे से जानते ही नहीं थे कि जायदाद का हक़दार कौन है। कम से कम यह बात तो बिलकुल खुली हुई है कि बाप की जायदाद का हक़दार उस की औलाद है और ख़ास तौर से वह यतीम हों तो उस के हक़ की मर्यादा और अधिक बढ़ जाती है। इतनी मोटी सी बात समझने के लिए साधारण बुद्धि काफ़ी है तथा अक्ल और इन्साफ़ के इस खुले तक्राज़े को रद्द कर के बलवान सम्बन्धियों का संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेना उन की पकड़ के लिए काफ़ी क्यों न होगा? फिर यह भी हकीक़त है कि मक्का के अरब, अल्लाह की शरीअत से बिलकुल अपरिचित नहीं थे बल्कि यह इब्राहीमी शरीअत के वारिस (उत्तराधिकारी) थे यह और बात है कि उस के कुछ ही भाग उन के पास रह गये थे जैसे हज के मनासिक अर्थात् हज की कृतियाँ व संस्कार इत्यादि। इस लिए यह ख़याल करना सही न होगा कि वह संपत्ति के सिलसिले में इतनी बात भी नहीं जानते थे कि औलाद बाप की जायदाद (संपत्ति) की हक़दार है, मगर यतीम बच्चों और बच्चियों को उन के बाप की जायदाद से महरूम रख कर उन का चचा पूरी जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लेता था। अख़िर ऐसी खुली ज़्यादाती और इस तरह हक़ छीनने का क्या औचित्य था? और जहाँ तक तौरात का सम्बन्ध है उस में संपत्ति का क़ानून मौजूद था। बाइबिल में है।

“और इस्राइलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र (बे औलाद) मर जाये तो उस का भाग उस की बेटी के हाथ सौंपना और यदि उस की कोई बेटी भी न हो तो उस का भाग

उस के भाइयों को देना (गिनती २७:८,९)

25. यह चोट है उन के मोह माया और दौलत परस्ती पर जिस ने उन के अन्दर अख़लाक़ी गिरावट (नैतिक पतन) पैदा की थी।

धन दौलत को जहाँ अल्लाह तआला ने अर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने का साधन बनाया है। वहाँ उस में इन्सान का बहुत बड़ा इम्तिहान भी रखा है। यह इम्तिहान एक तो इस पहलू से है कि इन्सान आख़िरत को लक्ष्य बनाता है या दुनिया के धन दौलत को। दूसरे इस पहलू से कि माल जायज़ तरीक़े से हासिल कर के जायज़ राहों में खर्च करता है या नाजायज़ तरीक़े से हासिल कर के नाजायज़ राहों में खर्च करता है। तीसरे इस पहलू से कि वह अल्लाह की ख़ातिर माल की कुर्बानियाँ देता और खुदा के बन्दों के हक़ अदा करता है या कंजूसी से काम लेता है और खुदा के बन्दों के हक़ हड़प करता है।

26. अर्थात् तुम्हारा यह ख़याल ग़लत है कि तुम्हारे इस तरह के कामों पर पकड़ नहीं होगी।

27. क्रियामत के दिन जो ज़लज़ला आयेगा और जो धमाके होंगे वह पूरी ज़मीन को उधेड़ कर रख देंगे। इमारतें और महल तो क्या पहाड़ तक चूर चूर हो जाएंगे और ज़मीन एक साफ़ मैदान का रूप धार लेगी जिस में तमाम इन्सानों को खुदा के सामने जवाबदेही के लिए हाज़िर होना होगा।

28. अर्थात् अल्लाह तआला क्रियामत के दिन खुद अदालत बरपा करेगा और वह स्वयं पूछ ताछ भी करेगा और फैसला भी फ़रमाएगा। और उस की आज्ञा का पालन और उस के फैसले को लागू करने के लिए फ़रिश्ते मौजूद होंगे। इस से अल्लाह की अदालत की दहला देने वाली तस्वीर सामने आती है और यक़ीन पैदा हो जाता है कि आज तो अल्लाह तआला पर्दे के पीछे से इन्सान का इम्तिहान ले रहा है लेकिन क्रियामत के दिन यह पर्दा उठा दिया जायेगा और सच्चाई बिलकुल बेनकाब होकर उस के सामने आ जायेगी।

29. अर्थात् जब अल्लाह की अदालत बरपा होगी तो जहन्नम बिलकुल सामने मौजूद होगी।

30. मतलब यह कि अल्लाह की अदालत में अपने को धिरा हुआ और जहन्नम को सामने मौजूद पा कर इन्सान को होश आ जायेगा कि आख़िरत से बेपरवाह हो कर वह कितने ज़बरदस्त घाटे में पड़ा है। उस समय उसे याद आयेगा कि अल्लाह के पैग़म्बर का इस दिन के बारे में ख़बरदार करना बिलकुल ठीक था और जो रास्ता वह बताते थे वही सही था। उन की नसीहत को न मान कर उस ने बड़ी मूर्खता की। मगर उस रोज़ होश में आने का कोई फ़ायदा न होगा इस लिए कि इम्तिहान का समय गुज़र चुका होगा। क्रियामत का दिन तो

परिणाम सामने आने का दिन होगा। उस दिन होश में आना और नसीहत पकड़ना ऐसा ही है जैसे कोई विद्यार्थी अपनी परीक्षा में तो पर्चा हल करने के बजाय हँसी दिललगी में समय गुज़ार दे और जब नतीजे का ऐलान हो और वह नाकाम हो जाये तो उसे अपनी ग़लती का एहसास हो जाये। ज़ाहिर है समय गुज़र जाने के बाद उस का एहसास उस की नाकामी को कामयाबी में

परिवर्तित नहीं कर सकता अलबत्ता उस को मायूसी और हसरत के हवाले ज़रूर कर देता है।

31. अर्थात् उस रोज़ इन्सान महसूस करेगा कि वास्तविक जीवन तो आखिरत का जीवन है और मैं दुनिया के जीवन ही को सब कुछ समझता रहा। काश कि मैं ने अपने इस जीवन के लिए दुनिया में कुछ सामान कर लिया होता।



25. उस दिन उस के अज़ाब (यातना) जैसा कोई
अज़ाब देने वाला न होगा,³²

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۙ ﴿٢٥﴾

26. और न उस के बाँधने जैसा कोई बाँधने वाला
होगा।

وَلَا يُوشِقُ وَشَاقَهُ أَحَدٌ ۙ ﴿٢٦﴾

27. ऐ मुत्मइन नफ़्स।³³(शान्त एवं परितुष्ट आत्मा)।

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

28. चल अपने रब की तरफ़, तू उस से राज़ी, वह
तुझ से राज़ी।³⁴

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۚ ﴿٢٨﴾

29. शामिल हो जा मेरे बन्दों में।³⁵

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۙ ﴿٢٩﴾

30. और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में।³⁶

وَادْخُلِي جَنَّتِي ۚ ﴿٣٠﴾

32. अर्थात् अखिरत की सजा को उन सजाओं की तरह न समझो जो दुनिया की हुकूमतें मुजरिमों को देती हैं। अल्लाह की यातना ऐसी कठोर होगी कि उस तरह यातना न कभी किसी ने दी होगी और न कोई दे सकता है।

इस से आगाह करने के बाद भी जो लोग अल्लाह के अज़ाब (यातना) की परवाह न करें एवं मुजरिम और सरकश बने रहें उन को उस के अज़ाब का अन्दाज़ा उसी समय होगा जब कि वह उस का मज़ा चखेंगे।

अज़ाब (यातना) की यह कठोरता कठोर जुर्म की वजह से होगी। जो लोग अपने खालिक, मालिक और कायनात के स्वामी एवं शासक के खिलाफ़ बाग़ियाना रवैया अपनाते हैं वह ज़बरदस्त ढिट्टाई का सबूत देते हैं। इस लिए वह कठोरतम अज़ाब के भागीदारी हैं।

33. शान्त एवं परितुष्ट आत्मा (मुत्मइन नफ़्स) से मुराद वह इन्सान है जिस ने आत्म संतोष (इत्मीनाने क़ल्ब) के साथ तौहीद (एकेश्वरवाद) का इकरार किया था, जिस को अखिरत पर यक़ीन था और खुशहाली एवं परेशानहाली, हर तरह कि स्थितियों में वह अपने रब से राज़ी एवं संतुष्ट रहा कि उस का कोई काम हिकमत से खाली नहीं।

जिस व्यक्ति ने दुनिया में आत्मसंतोष की यह खूबी पैदा कर

ली वह खुदा के यहाँ इस का हक़दार होगा कि उसे हमेशा के लिए चैन और राहत एवं सुकून नसीब हो।

34. यह बड़े प्यारे और रहमत भरे अल्फ़ाज़ हैं जिन में मुत्मइन नफ़्स को फैसले के दिन कामयाबी की खुशख़बरी सुनायी जायेगी। और कामयाबी भी ऐसी कि आदमी खुदा को पा ले जिस के बाद पाने के लिए क्या चीज़ बाक़ी रह जाती है। जहाँ पहुँचने की मनुष्य कल्पना कर सकता है?

35. “मेरे बन्दे” से मुराद खुदा के नेक बन्दे हैं। जन्नत की सोसाइटी इन नेक बन्दों पर ही आधारित होगी। नेक लोगों की पंक्ति में शामिल करना अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत होगी। लेकिन यह नेमत उन्हीं लोगों के हिस्से में आयेगी जो वास्ताव में उस की क़द्र करने वाले हैं। जो नेक लोगों से मिलना पसन्द करते हैं और उन के साथ रहने में खुशी महसूस करते हैं। इस के विरुद्ध जो लोग दुनिया में नेक लोगों से नफ़रत करते और उन से दूर भागते रहे और उन की सारी रुचि खुदा बेज़ार लोगों से रही उन का अन्त भी खुदा बेज़ार लोगों ही के साथ होगा।

36. जन्नत को अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ मंसूब फ़रमाया है (मेरी जन्नत) यह निस्बत (सम्बन्ध) जन्नत के सम्मान की ओर भी इशारा करती है और इस बात की तरफ़ भी कि वह अल्लाह तआला की रज़ा (प्रसन्नता) का मज़हर (द्योतक) होगी।



सूरह अल्-बलद्

९०. अल्-बलद्

नाम :- पहली आयत में अल्-बलद (शहर) का लफ़्ज़ आया है जिस से मुराद मक्का शहर है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-बलद्” करार दिया गया है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के शुरु के दौर में नाज़िल हुई लगती है।

केन्द्रीय विषय:- यह सूरह पिछली सूरह की पूरक है जिस में स्पष्ट किया गया है कि इन्सान एक अख़लाक़ी वजूद (नैतिक अस्तित्व) रखने वाली मख़्लूक़ है जिसे इम्तिहान के मैदान में खड़ा कर दिया गया है लिहाज़ा उस का यह समझना कि मैं मनमानी करने के लिए आज़ाद हूँ और मुझे खुदा के सामने ज़वाबदेही के लिए हाज़िर होना नहीं है, वह बुनियादी ग़लती है जो इन्सान के पूरे रवैये को ग़लत बना कर रख देती है। इस के बाद न उस में ज़िम्मेदारी का एहसास (कर्तव्य परायणता) पैदा होता है और न हुक्क़ (अधिकारों) को अदा करने का एहसास उभरता है। नतीजा यह कि इन्सान जहन्नम के गढ़े में जा गिरता है।

कलाम की तरतीब:- आयत १ से ४ में जो शहादतें (गवाहियाँ) पेश की गई हैं उन से अभिप्राय यह स्पष्ट करना है

कि यह दुनिया ऐश करने की जगह नहीं है और न इन्सान को यहाँ ऐश और आराम के लिए पैदा किया गया है बल्कि उस की पैदाइश एक ख़ास मक़सद के तहत हुई है इस लिए उसे पैदा ही मशक्क़त (कष्ट) की हालत में किया गया है।

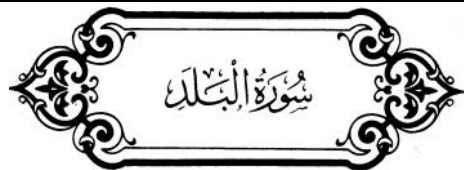
आयत ५ से ७ में इन्सान के लापरवाह चाल चलन पर पकड़ करते हुए उस के ज़मीर को झंझोड़ा गया है कि क्या वह इस भ्रम में है कि उस के ऊपर कोई उच्चतम शक्ति नहीं है जो उस के चाल चलन की देख रेख करने वाली हो?

आयत ८ से १७ में स्पष्ट किया गया है कि इन्सान के लिए अख़लाक़ (नैतिकता) और व्यवहार की बुलन्दी की राह भी खोल दी गई है और पस्ती (गिरावट) की राह भी। बुलन्दी की राह कठिन ज़रूर है मगर इस चढ़ाई पर चढ़ कर आदमी अख़लाक़ी तरक्क़ी की मन्ज़िलें तय कर लेता है और बुलन्द स्थान पर पहुँच जाता है।

आयत १८ से २० में बताया गया है कि ईमान के साथ अख़लाक़ी बुलन्दी की राह अपनाने का अन्जाम यह है कि आदमी सौभाग्य और भलाई की मन्ज़िल को पहुँच जाता है। इस के विरुद्ध कुफ़्र की राह अपनाने वाले जहन्नम के गड्ढे में जा गिरते हैं जिस से निकलने की कोई सूरत न होगी।

९०.सूरह अल्-बलद्

आयतें :20



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. नहीं! ¹ मैं क्रसम खाता हूँ ² इस शहर की। ³
2. ---और तुम इस के रहने वाले हो ⁴---
3. और जनने वाले की ⁵ और उस की जिसे उस ने जना, ⁶
4. हक़ीक़त में हम ने इन्सान को बड़ी मशक्क़त में पैदा किया है। ⁷
5. क्या वह यह ख़याल करता है कि उस पर किसी का बस नहीं चलेगा? ⁸
6. कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। ⁹
7. क्या वह समझता है कि उस को किसी ने देखा नहीं? ¹⁰
8. क्या हम ने उस को नहीं दीं दो आँखें? ¹¹
9. और ज़बान और दो होंट? ¹²
10. और उसे दोनों रास्ते नहीं दिखाए? ¹³
11. मगर उस ने घाटी पार नहीं की। ¹⁴

لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ۝

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۝

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا بَدَأَ ۝

أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۝

أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝

1. अर्थात् तुम्हारा यह खयाल सही नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी मजे उड़ाने के लिए है। यहाँ न कोई आजमाइश हो रही है एवं न कभी जज़ा और सज़ा से मामला पेश आएगा।

2. क्रसम की व्याख्या के लिए दिखिए सूरह तकवीर फुट नोट. १४

3. इस शहर से मुराद मक्का है जहाँ यह सूरह नाज़िल हुई।

4. सम्बोधन (ख़िताब) मक्का वालों से है जो इस सूरह के पहले सम्बोधित (मुखातब या Addressee) थे। सर्वनाम एकवचन (अन्ता اَنْتَ) प्रयोग हुआ है। क्यों कि यहाँ सम्बोधित मक्का का हर व्यक्ति है। गोया मक्का के रहने वालों को अलग अलग हर एक को सोचने और विचार करने का न्योता दिया गया है।

5. मुराद माँ है जो बच्चे को तकलीफ़ से जनती है। वालिद (पिता) का लफ़्ज़ पुल्लिंग इस्तेमाल हुआ है, लेकिन यह लफ़्ज़ जिस तरह बाप के लिए बोला जाता है उसी तरह माँ के लिए भी बोला जाता है। (देखिए लिसानुल अरब, लफ़्ज़ वलद) इस की मिसाल (उदाहरण) लफ़्ज़ हामिल है जो हामिला (गर्भवती) के लिए बोला जाता है। इन पुल्लिंग शब्दों का प्रायोग स्त्रीलिंग के लिए उस समय किया जाता है जब कि बात स्पष्ट रूप से कहना हो और मर्द या औरत का उल्लेख अर्थपूर्ण भाव की दृष्टि से अनुचित हो।

कलाम की शैली और मौक़े के लिहाज़ से यहाँ माँ मुराद लेना ही सही है क्यों कि बाद वाली आयत में इन्सान के मशक्क़त (कष्ट एवं परिश्रम) में पैदा किये जाने का ज़िक्र है। ज़ाहिर है जनने की मशक्क़त माँ को होती है न कि बाप को।

6. मुराद हर वह बच्चा है जो माँ के पेट से जन्म लेता है और बच्चे का जन्म लेना तकलीफ़ के साथ होता है।

7. यह वह दावा है जिस पर क्रसमें बतौर शहादत (गवाही) के खाई गई है। इन्सान का मशक्क़त की हालत में पैदा होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिस से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस हक़ीक़त के पक्ष में कुछ बातों को पेश कर के उसे और भी दृढ़ एवं वज़नदार कर दिया गया है। मक्का की ज़मीन पहाड़ों से घिरी हुई एक ऐसी घाटी है जहाँ न पानी है और न ही वह खेती के लायक़ है। रेगिस्तान होने की वजह से यहाँ का मौसम बड़ा सख़्त होता है। कुर्आन के अवतरण काल (ज़माना-ए-नुज़ूल) में यहाँ का जीवन कठोर परिश्रमी जीवन था। मक्का के इस प्राकृतिक वातावरण की ओर कुर्आन ने मक्का वासियों को ध्यान दिलाया कि तुम ने इस बात पर भी ग़ौर किया कि यह वातावरण परिश्रमी एवं मशक्क़त से भरा हुआ क्यों बनाया गया है? अगर यह दुनिया ऐश की जगह होती तो कोई वजह न थी कि जो शहर “उम्मुल कुरा” (शहरों की माँ) करार पाया वह मशक्क़तों से

घिरा हुआ होता। तुम न केवल यह कि उस के वातावरण (माहौल) का अनुभव करते हो बल्कि उस के इतिहास से भी अच्छी तरह परिचित हो कि किन दुश्चारियों से गुज़र कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के निर्माण का ऐतिहासिक कारनामा अन्जाम दिया था। कुल मिलाकर यह कि इस शहर के भौगोलिक और ऐतिहासिक हालात दोनों इस बात की शहादत देते हैं कि यह दुनिया तफ़रीह की जगह नहीं है बल्कि मेहनत और मशक्क़त की जगह है। और इस में इन्सान का इम्तिहान है। इसी तरह इन्सान की अपनी पैदाइश भी इस हक़ीक़त का नाक़ाबिले इन्कार सबूत है। बच्चा जब माँ के पेट से जन्म लेता है तो यह मरहला माँ के लिए कितना मुश्क़िल और कष्टदायक होता है और जब वह इस दुनिया में आता है तो मशक्क़तों से घिरा हुआ और रोते हुए ही आता है जो इस बात का खुला सबूत है कि इन्सान दुनिया में मजे उड़ाने के लिए नहीं आया है बल्कि तकलीफ़ और मशक्क़त को साथ ले कर आजमाइश की भट्टी से गुज़रने के लिए आया है। अतः इन्सान के मशक्क़त की हालत में पैदा होने की हक़ीक़त एक दूसरी बहुत बड़ी हक़ीक़त का पता देती है और वह है जज़ा और सज़ा का मामला। जिस से इन्सान को ज़रूर दोचार होना है। क्यों कि यह ज़िन्दगी जब मुसीबतों एवं आजमाइश की ज़िन्दगी ठहरी तो इस का ज़रूरी तक्राज़ा (Inevitable Demand) है कि हिसाब का दिन बरपा हो और इम्तिहान में कामयाबी एवं नाकामी के परिणाम सामने आएँ।

यह है वह तर्क (Argument) जो इन आयात में निहित (पोशदा) है। साथ ही एक अहम पहलू की तरफ़ भी इशारा निकलता है और वह यह है कि मशक्क़तों और तकलीफ़ों में इन्सान की बुलन्दी एवं महानता का भेद छिपा हुआ है। मक्का शहर को जिस व्यक्ति ने बसाया उसे कैसी कैसी मशक्क़तों और तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा और उस की ज़िन्दगी कितनी धैर्यपूर्ण रही लेकिन इन हालात से गुज़र कर ही उस के हाथों ख़ाना-ए-काबा की तामीर (निर्माण) का महान और ऐतिहासिक कारनामा अन्जाम पा सका और इस के बाद ही वह इमामत के पद पर आसीन हुआ। मालूम हुआ कि इस दुनिया में जो तकलीफ़ें और मशक्क़तें इन्सान के साथ लगी हुई हैं वह वास्तव में इन्सान को तकलीफ़ में डालने के लिए नहीं बल्कि उस को ऊपर उठाने के लिए है। इन्सान अगर अपना हौसला न छोड़े और ख़ुदा की रहनुमाई को स्वीकार कर के पेश आने वाली तकलीफ़ों में कर्तव्य परायणता का सबूत दे तो उस के अन्दर इन्सानियत का जो जौहर (तत्त्व) है वह खिलने लगता है और वह बुलन्दियों को छू लेता है।

**“रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद
आदमी बनता है इन्साँ, ठोकरें खाने के बाद”**

अल्लाह तआला ने अपने घर के निर्माण के लिए किसी ऐसे भुभाग का चुनाव नहीं फ़रमाया जहाँ बाग़ो-बहार हो बल्कि पहाड़ों से घिरी हुई रेगिस्तानी ज़मीन को चुना इस चुनाव के पीछे यह महान नीति निहित है कि उस के घर का दर्शन (ज़ियारत) करने वालों के लिए अन्दरूनी कशिश का सामान हो न कि बाह्य अकर्षण का। और इस से इन्सान को यह रहनुमाई (मार्गदर्शन) मिले कि खुदा तक पहुँचने की राह ऐश्वर्य से होकर नहीं बल्कि दुश्चारियों और कठिनाइयों से हो कर गुज़रती है।

इस स्पष्ट वास्तविकता के बाद और इन खुली दलीलों की मौजूदगी में इन्सान तकलीफ़ पहुँचने पर क्यों बिलबिला उठता है और हिम्मत छोड़ देने का क्यों शिकार हो जाता है? इस की असल वजह यह है कि इन्सान अपनी हैसियत और इस दुनिया के बारे में सही दृष्टिकोण नहीं अपनाता। वह दुनिया को आराम की जगह समझता है और उस से ऐश की ही उम्मीदें रखता है। लेकिन जब उस के इन जज़्बात को ठेस पहुँचती है और तकलीफ़ और दुश्चारियों का सामना करना पड़ता है तो वह बिलबिला उठता है और फिर ज़िम्मेदारी निभाने का सबूत देने और हौसले से काम करने में असमर्थ रहता है। इस तरह इन्सान की पूरी ज़िन्दगी ग़लत हो कर रह जाती है और इम्तिहान में नाकाम हो जाने के कारण वह सज़ा का भागीदार बन जाता है।

8. अर्थात् इन्सान जो मशक्क़तों में घिरा हुआ पैदा होता है और इस के बाद उसे ज़िन्दगी की ख़तरों भरी राहों से गुज़रना पड़ता कि मालूम नहीं किस वक्त उसे किस हादसे से दोचार होना पड़े और कौन सी मुसीबत उस पर नाज़िल हो जाये। वह इस धोखे और घमण्ड में किस तरह फ़ँस जाता है कि कोई उच्चतम शक्ति उस को पकड़ने वाली नहीं है और वह जो चाहे करे, उस पर किसी का बस नहीं चलेगा? इन्सान का मशक्क़त से घिरा होना तो उस की अपनी बेबसी को ज़ाहिर करता है और यह इस बात का सबूत है कि उस पर एक उच्चतम हस्ती की सत्ता स्थापित है जिस के फैसले उस पर लागू होकर रहते हैं।

9. यह एक मिसाल है इस बात की कि दुनिया को तफ़रीह की जगह समझने के नतीजे में इन्सान का आचरण कितना अनुत्तरदायी एवं लापरवाह हो कर रह जाता है। यह मिसाल उन मालदारों की है जो दौलत को बेजा (अनुचित) खर्च करते हैं और फिर अपने इन दिखावटी खर्चों पर गर्व करते हैं। हालाँकि अल्लाह तआला ने दौलत इस लिए प्रदान की थी कि वह इस को सही और भलाई की राह में खर्च करते, अपनी उचित ज़रूरतें भी पूरी करते और खुदा के बन्दों के हुक्म भी अदा करते मगर उन्होंने ने इसे दिखावटी और फुज़ूल (व्यर्थ) के खर्चों का साधन

बना लिया। इस तरह इम्तिहान के इस महत्वपूर्ण पर्व को हल करने में वह बुरी तरह नाकाम रहे।

माल को उड़ाना चाहे वह मुश्क़िकाना रस्मों को अदा करने के लिए हो चाहे जाहिली रस्मों (मूर्खतापूर्ण प्रथाओं) को पूरा करने के लिए, दावतों और समारोहों की शान बढ़ाने के लिए हो या आर्ट और कला के नाम पर दिखावटी स्मृतियाँ निर्माण करने के लिए, दिखावे की शोहरत एवं प्रचार हासिल करने के लिए हो या आन बान दिखाने के लिए, न केवल खुले गुनाह का काम है बल्कि इस से ग़रीबों और मोहताजों का हक़ भी मारा जाता है।

10. अर्थात् क्या फुज़ूल खर्ची कर के इस पर गर्व करने वाला यह समझता है कि कोई ताक़त उस की देखरेख नहीं कर रही है और उस को दौलत इस लिए मिली है कि वह गुलछरें उड़ाये या अपने लिए ऐश्वर्य का सामान करे? अगर ऐसा है तो यह सब से बड़ी मूर्खता है। खुदा तो इन्सान की हर हरकत को देख रहा है और जब देख रहा है तो पूछ ताछ भी करेगा।

11. अर्थात् खुदा ने उसे देखने की क्षमता प्रदान की थी ताकि वह कायनात की सब से बड़ी और सब से अधिक उभरी हुई हक़ीक़त का अनुभव करे मगर उस ने उसी तरफ़ से आँखें बन्द कर ली। वह सब कुछ देखता रहा मगर उसे एक सर्वशक्तिमान हस्ती का हाथ कहीं नज़र नहीं आया।

12. अल्लाह तआला ने ज़बान और दो होंट देकर इन्सान को बोलने की शक्ति प्रदान की। और यह शक्ति इस लिए प्रदान की ताकि वह अपने रब के गुण गाए तथा सत्य और इन्साफ़ की बातें करे, मगर इन्सान का हाल अजीब है। इस नेमत को पा लेने के बावजूद उस में शुक्र अदा करने का जज़्बा नहीं उभरता। वह बातें खूब बनाता है मगर उस की ज़बान नहीं खुलती तो अपने रब का गुण गाने के लिए, और वह लफ़्फ़ाज़ी से खूब काम लेता है मगर सत्य और इन्साफ़ के लिए उस की ज़बान गूँगी हो जाती है।

13. अर्थात् भलाई और बुराई, नेकी और बदी और पाप और पुण्य के दोनों रास्ते उसे दिखा दिये। यह प्रकृति का मार्गदर्शन है जो इन्सान को प्रदान किया गया है। अतः भलाई और बुराई में इन्सान स्वभावतः तमीज़ करता है। (अधिक व्याख्या सूरह अश्-शम्स में आ रही है। इन्शाअल्लाह)

पाप और पुण्य की दोनों राहें दिखाई, ताकि इन्सान अपनी ज़िम्मेदारी पर जिस रास्ते को चाहे स्वीकार कर ले।

14. मतन (मूल या Text) में लफ़ज़ “अक्बः” इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ घाटी के हैं। अर्थात् वह कठिन रास्ता जो पहाड़ों के बीच से गुज़रता और जिस को पार करने के लिए आदमी को चढ़ाई चढ़ना पड़ती है। यहाँ इस से मुराद नेकी का

रास्ता है जो कठिनतम और परिश्रमी है किन्तु यह चढ़ाई चढ़कर आदमी बुलन्दी पर पहुँच जाता है।

नेकी के कामों में चूँकि लज्जत महसूस नहीं होती और इच्छाओं के विरुद्ध यह काम अन्जाम देना पड़ता है इस लिए वह मन (नफ़्स) को बुरे लगते हैं, इस के विरुद्ध बुराई और गुनाहों के काम लज्जतदार होते हैं और इच्छाएँ भी उन पर उभारती हैं। इस लिए तबीयत (नफ़्स) उस की तरफ़ आसानी से झुकती और चल पड़ती है। इस हकीकत को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह बयान फ़रमाया:-

حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَ حُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ .

“जहन्नम नफ़्स की इच्छाओं से ढाँप दी गई है और जन्नत ऐसी बातों से जो नफ़्स (मन) को नागवार (अप्रिय) हैं।” (बुख़ारी किताबुर्रिकाक़)

और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने भी इस को एक मिसाल देकर बयान फ़रमाया है। अतः इन्जील मत्ती में है।

“सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। (मत्ती ७:१३, १४)



12. और तुमने क्या समझा कि वह घाटी क्या है?¹⁵

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقْبَةُ ۖ

13. गर्दन छुड़ाना,¹⁶

فَكَ رَقَبَةٍ ۚ

14. या फ़ाक़े के दिन खाना खिलाना,¹⁷

أَوْ اطْعَمُنِي يَوْمَ ذِي مَسْغَبَةٍ ۚ

15. कराबतदार (नातेदार) यतीम को,¹⁸

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۚ

16. या खाक में पड़े मिस्कीन (मोहताज) को।¹⁹

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۚ

17. फिर वह शामिल होता उन लोगों में जो ईमान लाए²⁰ और जिन्होंने एक दूसरे को सब्र (धैर्य) की और हमदर्दी की तत्किन (अनुदेश) की।²¹

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۚ

18. यही लोग हैं सआदतमन्द (सौभाग्यशाली)।²²

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْيَمِينَةِ ۚ

19. और जिन्होंने हमारी आयात का इन्कार किया वह बदबख्त (दुर्भाग्यशाली) लोग हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الشُّمَّةِ ۚ

20. उन पर आग छाई हुई होगी जिस को बन्द कर दिया जाएगा।²³

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۚ

15. यह सवाल घाटी के महत्व को स्पष्ट करने के लिए है। मतलब यह है कि अच्छी तरह समझ लो नेकी की राह कठिन राह है जिस से गुजरे बगैर आदमी कामयाबी की मन्जिल को नहीं पहुँच सकता। इस राह में माल की कुर्बानियाँ देनी पड़ती है लेकिन जिन लोगों ने माल को ऐश्वर्य का साधन बनाया हो वह इस राह में क्या कदम रख सकेंगे।

16. अर्थात् गुलाम को आज़ाद करना या उस को आज़ाद करने में धन की सहायता करना। इस सूरह में जो एक मक्की सूरह है और शुरू के दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों में से है, गुलामों को आज़ाद करने की इस हद तक ताकीद कि नेकी के कठिनतम रास्ते की पहली सीढ़ी ही यह कार्य ठहराया जाये, न केवल इस के महत्व को स्पष्ट करने के लिए काफ़ी है बल्कि इस से गुलामी की समस्या में कुर्आन का वास्तविक दृष्टिकोण भी खुल कर सामने आ जाता है। जब गुलाम को आज़ाद करना सब से बड़ी नेकी करार पाई तो किसी आज़ाद को गुलाम बनाने के लिए इस्लाम में क्या गुन्जाइश हो सकती है। इसी लिए हदीस में आता है कि क्रियामत के दिन अल्लाह तआला उस व्यक्ति से कड़ी पूछताछ करेगा जिस ने किसी आज़ाद को बेच कर के उस की क्रीमत खाई।----- (बुखारी)

رَجُلٌ بَاعَ حُرًّا ثُمَّ أَكَلَ ثَمَنَهُ - بخاری

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा फुटनोट ६४)

17. मोहताजों को खाना खिलाना हर हाल में नेकी का काम है लेकिन भूख की हालत में और सूखे (अकाल) के ज़माने में इस की ज़रूरत और अहमियत बढ़ जाती है।

18. हर यतीम मदद का हक़दार है लेकिन अगर वह सम्बन्धी हो तो और ज़्यादा मदद का हक़दार हो जाता है।

19. मिस्कीन (मोहताज) भी हर हाल में मदद का हक़दार है लेकिन जब उसे गरीबी ने लाचार कर दिया हो या निर्धनता और बदहाली ने उसे ज़मीन पर पड़े रहने (मौजूदा ज़माने में यूँ कहिये कि फुटपाथ पर गुज़र बसर करने) के लिए मजबूर कर दिया हो तो वह और ज़्यादा मदद का हक़दार हो जाता है।

इन आयतों में नेकी के कामों की कुछ मिसालें बयान की गई हैं। बताने का मक़सद यह है कि माल का सही और बेहतरीन इस्तेमाल यह है और इस प्रकार के काम कर के ही आदमी अख़लाक़ एवं किरदार की बुलन्दी की तरफ़ जा सकता है। रहे वह लोग जो शोहरत (नाम) के लिए फुज़ूल ख़र्ची करते हैं। तो उन के हिस्से में सिवाए महरुमी के कुछ नहीं आता।

20. अर्थात् इन नेक कामों को करने के साथ यह ज़रूरी है कि आदमी ईमान लाकर ईमान वालों की पंक्ति में शामिल हो क्योंकि ईमान के बग़ैर कोई नेकी भी अल्लाह तआला के यहाँ मक़बूल (मान्य) नहीं होगी। कुर्आन ने दूसरी जगहों पर भी इस का उल्लेख किया है। और ईमान विश्वस्नीय नहीं है जब तक कि आदमी कुर्आन और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान न ले आए।

21. यहाँ ईमान वालों कि दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ बयान की गई हैं। एक यह कि वह एक दूसरे को सब्र (धैर्य) की तल्कीन (अनुदेश) करते हैं और दूसरी यह कि वह एक दूसरे को हमदर्दी की नसीहत करते हैं। मालूम हुआ एक मोमिन का अपने तौर पर सब्र करना और दूसरों के साथ हमदर्दी करना काफ़ी नहीं बल्कि ज़रूरी है कि इन दोनों बातों की दूसरों को तल्कीन की जाये। यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि ईमान वालों को आपस में सम्बन्ध (जुड़ा हुआ) एवं एक दूसरे का हमदर्द और शुभचिन्तक होना चाहिए। तथा यह समझ लेना चाहिए कि ईमान वालों की पंक्ति में शामिल हो जाने के बाद उन पर सामाजिक और सामूहिक ज़िम्मेदारियाँ भी लागू हो गई हैं।

22. अर्थात् ये कामयाब और अपनी मुग़द को पहुँचने वाले लोग हैं क्योंकि यह इम्तिहान में पूरे उतरे और इन्होंने ने वह ख़ूबियाँ अपने अन्दर पैदा कर ली जो कामयाबी की ज़मानत थीं। यह सौभाग्यशाली रुहें (आत्माएँ) हैं जो हमेशा हमेशा के सौभाग्य से लाभान्वित होंगी।

23. अर्थात् उन को आग में डालने के बाद ऊपर से दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे और वह आग में इस तरह घिरे रहेंगे कि उस से निकलने का कोई रास्ता न पा सकेंगे।



सूरह अश्-शम्स

११. अश्-शम्स

नाम :- पहली ही आयत में अश्-शम्स (सूरज) की क़सम खाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अश्-शम्स” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुटलाने और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुखालफ़त की शुरुआत हो चुकी थी।

केन्द्रीय विषय:- इन्सान को सरकशी और बगावत के बुरे अन्जाम से आगाह करना है और इस हक़ीक़त को साफ़ (स्पष्ट) करना है कि नफ़्स (मन अथवा आत्मा) की पाकीज़गी और उस की सही दिशा में सही परवरिश कामयाबी की ज़मानत है। इस के विरुद्ध नफ़्स को बुराइयों में लुथेड़ना नाकामी और नामुरादी का कारण है, क्योंकि बुराइयाँ सरकशी पर आमादा करती हैं

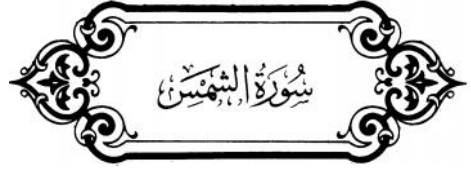
और सरकशी का अन्जाम बरबादी है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १० में सूरज और चाँद, दिन और रात, एवं ज़मीन और आसमान की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस कायनात के ख़ालिक (रचयता) की कुदरत के चमत्कार और उस की नीति (हिकमत) का सबूत पेश करती हैं। इस के अलावा इन्सानी नफ़्स की शहादत को जज़ा और सज़ा की तार्ईद (पक्ष) में पेश किया गया है।

आयत ११ से १५ में ऐतिहासिक गवाही पेश की गई है। इस सिलसिले में क़ौम समूद का क्रिस्सा संक्षेप में बयान किया गया है ताकि उन की सरकशी का जो अन्जाम हुआ उस से लोग सबक़ (इब्रत) हासिल करें और कुर्आन और पैग़म्बर के साथ दुश्मनी का रवैया अपनाने से बाज़ रहें।

९१. सूरह अश्-शम्स

आयतें : १५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है ^१ सूरज और उस की रौशनी की।^२
2. और चाँद की, जब कि उस के पीछे आए।^३
3. और दिन की, जब उसे बेनिकाब करे।^४
4. और रात की, जब उस को ढाँक ले।^५
5. और आसमान की और उस हस्ती की जिस ने इसे बनाया।^६
6. और ज़मीन की और उस हस्ती की जिस ने इसे बिछाया।
7. और नफ़्स (आत्मा) की और उस हस्ती की जिस ने इसे दुरुस्त बनाया।^७
8. फिर उस की बदी और परहेज़गारी उस पर इल्हाम (अंतस्फूर्ती) कर दी।^८
9. निश्चय की कामयाब हुआ वह जिस ने इस का तज़कियः (शुद्धिकरण) किया।^९
10. और नामुराद हुआ वह जिस ने इसे लुथेड़ा।^{१०}

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ①

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ②

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ③

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ④

وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ⑤

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ⑥

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ⑦

فَالْهَمَّهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ⑧

فَدَّ أَقْلَرَهُ مِنْ رَكْلَاهَا ⑨

وَقَدْ خَابَ مِنْ دَسَّاهَا ⑩

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर फुट नोट १४।

2. अर्थात् जब सूरज उदय होता है तो चारों ओर जगत में रौशनी फैल जाती है और जैसे जैसे सूरज चढ़ने लगता है उस की तपिश बढ़ने लगती है। यह स्थिति इस बात का खुला प्रमाण है कि सूरज की बाग डोर उस के खालिक (रचयिता) के हाथ में है। क्यों कि वह उस के निश्चित किये गये समय पर ही उदय होता और ऊपर चढ़ता है।

3. अर्थात् अगर सूरज द्वारा रौशनी फैलाने का काम दिन में होता है तो चाँद की शोभा और सौन्दर्य का उदय रात में। सूरज दिन का बादशाह है तो चाँद रात का। अतः वह अपनी महफ़िल रात ही में सजाता है। इस सच्चाई के रहते ही चाँद को सूरज के पीछे आने के अर्थ में बयान किया गया है। उस अर्थ की व्याख्या इस लिहाज से भी सही है कि चाँद सूरज ही से रौशनी हासिल करता है। इस तरह चाँद का सूरज के अधीन होना इस बात की खुली दलील है कि सूरज की तरह चाँद की बाग डोर भी उस के खालिक (रचयिता) ही के हाथ में है।

4. सूरज की सारी चमक दमक दिन के समय में होती है गोया वह दिन ही है जो सूरज को बेनिकाब करता है और सूरज की मजाल नहीं कि वह समय से पहले निकल आए।

यद्यपि सूरज का उदय ज़मीन के चक्कर लगाने के परिणाम स्वरूप होता है। लेकिन यहाँ वास्तविक दशा की स्थिति का भौगोलिक या अंतरिक्ष से सम्बन्धित पहलू को बहस में लाना अभिप्रेत नहीं बल्कि उस अहम हकीकत की तरफ़ ध्यान आकर्षित करना अभिप्रेत है कि जो मनोदशा दुनिया पर हावी होती है वह एक नियमबद्ध व्यवस्था के तहत प्रकट होती है। कुदरत के इस अनुशासित व्यवस्था में हर चीज़ यहाँ तक कि सूरज भी जिस से यह दुनिया चमक उठती है, ऐसी जकड़ी हुई है कि किसी के लिए रत्ती भर मुँह मोड़ने की गुन्जाइश नहीं वरना जगत की सारी व्यवस्था तितर बितर हो कर रह जाये।

5. ज़मीन के जिस भाग को रात ढाँप लेती है वहाँ सूरज की रौशनी नहीं पहुँच सकती। इस लिए ऐसा महसूस होता है कि जैसे रात ने आकर सूरज को ढाँप लिया है। बयान करने का यह अन्दाज़ अनुभव के अनुकूल अपनाया जाता है। यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि दुनिया के जिस भाग पर रात छा जाती है वहाँ सूरज प्रकट नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में वह रात के समय अपना चेहरा छिपाने के लिए मजबूर है और उस की यह मजबूरी इस बात की दलील है कि वह इस क़ानून के अनुबन्ध (पाबन्दी) से रत्ती बराबर उल्लंघन नहीं कर

सकता जो उस के रचयिता (खालिक) ने उस के लिए निश्चित कर रखा है। इस प्रसंग से अनीश्वरवाद (इल्हाद) का भी खण्डन होता है और अनेकेश्वरवाद (शिरक) का भी। क्यों कि अगर सूरज आकस्मिक घटना स्वरूप अस्तित्व में आ गया होता तो वह एक सुदृढ़ व्यवस्था का पाबन्द नहीं हो सकता था और अगर वह देवता होता तो कुदरत के क़ानून में जकड़ा न रहता और रात के बस की बात नहीं थी कि उस के चेहरे को छिपा लेती। बल्कि वह अपने बल पर रात को भी प्रकट होता। मगर इस पूरी सौर्य व्यवस्था (Solar System) में जो अनुबन्ध पाये जाते हैं वह सूर्य देवता के अनेकेश्वरवादी कल्पना को सिरे से नकारते हैं।

6. आसमान की क्रसम खाने का मतलब यह है कि उस की भव्यतम बनावट और उस की बुलन्दी इन्सान को इस बात की ओर ध्यान खींचती है कि उस की चोटी भी उस के रचयिता के हाथ में है।

“उस हस्ती की क्रसम जिस ने इसे बनाया” से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि आसमान को पैदा करने वाली एक सर्वशक्तिमान हस्ती है और उस का होना एक ऐसी हकीकत है जो संदेहों से बहुत ही ऊपर है। क्रसम जहाँ शहादत अर्थात् गवाही के भावार्थ में आती है वहाँ वह किसी बात के जाँची परखी हुई और विश्वसनीय होने के पहलू को स्पष्ट करने के लिए भी आती है। अतः यहाँ और बाद की दो आयतों में “उस हस्ती की क्रसम” जो खाई गई है वह इसी भावार्थ में हैं। अर्थात् यह क्रसम चेतावनी स्वरूप है।

7. नफ़्स (शख़सियत) को दुरस्त बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने नफ़से इन्सानी (इन्सान की शख़सियत) को सीधे प्रकृति पर पैदा किया और उस को उच्च कोटि की योग्यताएँ समर्पित की। उसे पैदाइशी गुनहगार नहीं बनाया और न उसे अपने स्वभाव से फसादी और बुराई पसन्द करने वाला बनाया कि खुदा से सरकशी एवं बगावत करने और शैतानी गुणों को अपनाने पर विवश हो। उस ने उसे सही और सीधी प्रकृति का बनाया है और उस की आत्मा में फ़साद का कोई तत्व नहीं रखा कि वह सीधे और सही रास्ते को अपनाना चाहे और न अपना सके। तथा गुमराही को अपनाने पर मजबूर हो। इस हकीकत को कुर्आन ने दूसरी जगह खोल कर बयान फ़रमाया है:-

فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا۔ (سورة روم: ३०)

“अल्लाह की वह फ़ितरत जिस पर उस ने इन्सानों को पैदा किया”। (सूरह रूम - ३०)

और इस की व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

हदीस में इस तरह फ़रमाई है।

ما من مولود الا يولد على الفطرة - فابواه
يهودانه وينصرانه ويشركانه - (مسلم کتاب القدر)

“कोई बच्चा ऐसा नहीं जो प्रकृति पर पैदा न होता हो। फिर उस के माता पिता उसे यहूदी, ईसाई या मुश्रिक (बहुदेववादी) बना देते हैं।”

8. अर्थात् अल्लाह तआला ने नेकी और बदी की सीख प्रदान की है जिस की बुनियाद पर वह भलाई और बुराई में फ़र्क़ (भेद) करता है और यह अनुभव करता है कि यह काम अच्छे हैं और वह काम बुरे। इसी लिए इन्सान झूट, अन्याय एवं अत्याचार और बे हयाई को स्वभावतः (फितरतन) बुरा समझता है और इस प्रकार के आचरण एवं व्यवहार से नफ़रत करता है और सच्चाई, न्याय, इन्सानी हमदर्दी और शर्म एवं हया की सुरक्षा को अच्छा समझता है और इस प्रकार के आचरण एवं व्यवहार को पसन्द करता है। यह सीख अथवा यह ज्ञान वास्तव में प्रकृति की रहनुमाई है और यह रहनुमाई अल्लाह तआला ही ने हर नफ़्स के अन्दर समर्पित कर दी है जिसे यहाँ इल्हाम से अलंकृत (ताबीर) किया गया है।

यह ज्ञान और यह सीख इन्सान के अपने नफ़्स की शहादत है कि वह नैतिक अस्तित्व रखने वाली ज़िम्मेदार मख़्लूक (सृष्टि अथवा रचना) है। और जब उस की हैसियत यह है तो इस का अनिवार्य तक्राज़ा (Demand) है कि वह कर्मों के सिलसिले में अपने ख़ब के सामने जवाबदेह (उत्तरदायी) क्रार पाये और उस के कर्मों के परिणाम उस के सामने आएँ। नफ़्स की इस शहादत (गवाही) को स्वीकार न करने का मतलब यह होगा कि इन्सान की प्रकृति और उस का स्वाभाव गलत, उस का ज्ञान और उस की सीख अनुचित और उस का अस्तित्व बेकार है। किन्तु यह बात कोई व्यक्ति भी कहने के लिए तैयार नहीं है, मगर करोड़ों इन्सान फिर भी अपने नफ़्स अपनी अन्तरात्मा की गवाही के विरुद्ध जीवन व्यतीत करते हैं और इस भुलावे में डूबे रहते हैं कि वह मन मानी करने के लिए आज़ाद हैं और उस के परिणाम का कभी इन्हें सामना नहीं करना पड़ेगा।

ध्यान रहे कि बुराई करने और बुराई से बचने का यह इल्हाम (ईश प्रेरणा) एक दर्जे में अल्लाह तआला की रहनुमाई है, रही मुकम्मल रहनुमाई, तो इस का सामान अल्लाह तआला ने आसमानी हिदायत के द्वारा किया है। यह आसमानी हिदायत, जो अब कुर्आन के रूप में मौजूद है, उस प्रकृतिक ज्ञान एवं सीख को जो इन्सान के नफ़्स को समर्पित हुआ है, सुदृढ़

करती और उजागर करती है। और वहीं से यह हक़ीक़त भी खुल कर सामने आती है कि जिन लोगों तक आसमानी हिदायत न पहुँची हो वह भी अपने प्रकृतिक ज्ञान एवं सीख की हद तक अपने अच्छे और बुरे कर्मों के ज़रूर ज़िम्मेदार हैं और इस सिलसिले में उन्हें भी अल्लाह के सामने जवाब देना पड़ेगा।

9. मतन (मूल भाषा या Text) में लफ़ज़ زَكَّيًّا “ज़क्काहा” इस्तेमाल हुआ है जो तज़्कियः से है और जिस का अर्थ पाक करने, विकास एवं उन्नति देने के हैं। ऊपर की आयत में नफ़्स पर फुजूर (बदी) और तक्रवा (परहेज़गारी) के इल्हाम किये जाने का जो ज़िक्र हुआ है उस से नफ़्स के तज़्कियः (आत्मा के शुद्धिकरण) का भावार्थ भी उभरता है। अर्थात् नफ़्स को फुजूर (बुराइयों) से पाक करना और तक्रवा (ईशभय और परहेज़गारी की बातों) से उस को विकास एवं उन्नति देना। दूसरे शब्दों में उस की इस तरह तरबियत या परवरिश करना कि उस में भलाई उभरे और नेकियाँ विकसित हों। नफ़्स की वास्तविक प्रगति और रूह का विकास इन विशेषताओं के पैदा करने में हैं। इस हक़ीक़त को एक मिसाल से समझा जा सकता है। वह यह कि एक पौदा तभी फल फूल सकता है जब कि उसे अनुकूल वातावरण मिल जाए और उस की सिंचाई की जाती रहे वरना तेज़ हवा का एक झोंका ही उस को मिट्टी में मिला देने के लिए काफ़ी होता है।

इस सूरह में जो मज़मून (विषय) बयान हुआ है उस से नफ़्स के तज़्कियः का जो महत्वपूर्ण पहलू उभर कर सामने आता है, वह यह है कि आदमी सब से पहले अपने आप को कुफ़्र और सरकशी से मुक्त कर ले और अल्लाह की हिदायत को कुबूल कर के अपने को इताअत (आज्ञापालन) की राह पर डाल दे। यह इताअत की राह शरीअत की राह है जिस पर चल कर आदमी सदाचारी और नेक बन जाता है।

यह है नफ़्स के तज़्कियः का सीधा सादा और कुर्आनी भावार्थ। इस में न कोई दुश्चारी है और न संदेह तथा इस के लिए न किसी दार्शनिक वाद विवाद की ज़रूरत है और न ही अनावश्यक बातों में उलझने की। कुर्आन ने नफ़्स के तज़्कियः (आत्मा के शुद्धिकरण) के लिए जो बेहतरीन और अत्यन्त प्रभावपूर्ण नुस्खा प्रस्ताव किया है वह है खुदा की सर्वोच्च एवं संपूर्ण शरीअत जिस पर न “तरीक़त” (सूफ़ियों का भक्तिमार्ग) की वृद्धि की ज़रूरत है और न सुलूक (तसव्वुफ़ की परिभाषा में ईश्वर की खोज) की मन्ज़िलों से गुज़रने की बल्कि ईमान और यक़ीन तथा सच्चे दिल और ईशभय के साथ शरीअत पर चल पड़ना काफ़ी है।

नफ़्स के तज़्कियः के इस सही तरीक़े की तरफ़ रहनुमाई

कर के कुर्आन ने इन्सान को उन तमाम अप्राकृतिक, अस्वाभाविक और मुश्किल तौर तरीकों से मुक्ति दिलाई है जो धर्मों के ठेकेदारों ने रुह और आत्मा को पाक करने (Purification) के लिए खोज कर रखे हैं, मिसाल के तौर पर योगा, तपस्सया, इच्छाओं को मारना, सन्यास इत्यादि।

और इस सिलसिले कि आखरी बात यह है कि नफ़्स को पाक करने का काम अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ के बग़ैर नहीं हो सकता। इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दुआ की तालीम दी है कि :-

اللَّهُمَّ! آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا - أَنْتَ وَلِيِّهَا وَمَوْلَاهَا. (مسلم کتاب الذکر)

“ऐ अल्लाह मेरे नफ़्स को उस का तक्रवा प्रदान कर और उस का तज़किय: कर कि तू बेहतरीन तज़किय: करने वाला है और उस का सरपरस्त और मददगार है।”

10. अर्थात् बजाए इस के कि तक्रवा (परहेज़गारी) का रास्ता अपना कर के नफ़्स का तज़किय: (आत्मा का शुद्धि करण) करता, उस ने फुजूर (बदी) की राह अपना कर के नफ़्स को बुराइयों और गुनाहों में लुथेड़ा। इस तरह नेकी की प्रवृत्ति को दबाने और बदी की प्रवृत्ति को अपने ऊपर हावी करने का नतीजा यह निकला कि नफ़्स का यह गुन्चा (कली) जो खिल कर फूल बन सकता था और जिस की महक उस के पूरे वजूद को महका सकती थी, दब कर अन्दर ही अन्दर मुरझा गया। और किसी शायर के कथनानुसार

“हसरत उन गुन्चों पे है जो बिन खिले मुरझा गये”

आयत १ से ७ में क्रसमें खायी गई हैं और इस के बाद जो दावा पेश किया गया है उस का सारांश यह है कि सूरज

से लेकर इन्सानी नफ़्स तक सब की बागडोर अल्लाह के हाथ में है और उन सब चीज़ों का अस्तित्व और उन से पैदा होने वाले हालात स्वयं अपने हाल से इस बात की शहादत देते हैं कि उन का ख़ालिक (रचयिता) ज़बरदस्त कुदरत का मालिक और बड़ी ही हिकमत वाला और ज्ञान वाला है। और जब उस की कुदरत के आगे किसी को दम मारने की मजाल नहीं और उस की हिकमत (नीति) ने इन्सान को ज्ञान एवं सीख रखने वाला तथा नेकी और बदी में तमीज़ करने वाली मखलूक बना कर उठाया है तो उस के लिए सही रवैया यही हो सकता है कि वह उस की आज्ञापालन एवं दासता की राह स्वीकार करे और इस एहसास के साथ ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुजारे कि उसे अपने रब के सामने जवाब देही के लिए हाज़िर होना और फिर अपने कर्मों के अनुसार इनाम या सज़ा पाना है। कुर्आन इसी हकीकत पर इन्सान की निगाहों को केन्द्रित करना चाहता है ताकि वह उस के अनुसार अपनी ज़िन्दगी संवारे और जब दुनिया के इस इम्तिहानगाह (Examination Hall) से लौटे तो कामयाबी की मन्ज़िल उस के सामने हो।

इस वास्तविकता का समर्थन यद्यपि ज़मीन से ले कर आसमान तक हर चीज़ से हो रहा है और स्वयं इन्सानी नफ़्स की भी शहादत यही है फिर भी इन्सान इस वास्तविकता को मुश्किल ही से स्वीकार करने के लिए तैयार होता है। वह खुदा की हिदायत से बेपरवाह रहना चाहता है। इस लिए वह नाफ़रमानी (अवज्ञा) और सरकशी (उद्यण्डता) का रवैया अपनाता है जिस के फ़लस्वरूप उस के अन्दर अनुत्तरदायित्व एवं लापरवाही पैदा हो जाती है और फिर वह नेकी और बदी में कोई तमीज़ नहीं कर पाता।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण और व्यापक विषय है जो ऊपर की आयात के अन्दर समो दिया गया है।



11. समूद ने अपनी सरकशी (उद्दण्डता) की वजह से झुठलाया।¹¹

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝۱۱

12. जब उन का सब से बड़ा, बदबख्त (अभागा) उठ खड़ा हुआ।¹²

إِذْ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝۱۲

13. तो अल्लाह के रसूल ने¹³ उन लोगों से कहा कि खबरदार अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से छेड़ न करना।¹⁴

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۝۱۳

14. मगर उन्होंने उस को झुठलाया और ऊँटनी के घुटने की नसें (कूँचे) काट दीं।¹⁵ आखिरकार अल्लाह ने उन के गुनाह के बदले में उन पर अज़ाब नाज़िल किया और उन को (ज़मीन के) बराबर कर दिया।¹⁶

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَذَمُّمَ عَلَيْهِمْ رَّبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۝۱۴
فَسَوَّاهَا ۝۱۵

15. और उस (अल्लाह) को उन के अन्जाम से कोई भय नहीं।¹⁷

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۝۱۵

11. ऊपर जो दा'वा पेश किया गया है उस के पक्ष में यह ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है कि सरकशी (उद्यण्डता) का कैसा भयंकर एवं शिक्षाप्रद परिणाम दुनिया के सामने आता रहा है। समूद की क्रौम की घटना कुर्आन में कई जगहों पर विस्तार से बयान हुई है। इस सूरह में उस का ज़िक्र संक्षिप्त रूप से किया गया है। झुटलाने से मुराद पैगम्बर हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाना है जो उन की हिदायत के लिए भेजे गये थे। समूद के ठिकाने वगैरह के सिलसिले में देखिए सूर फ़ज्र फुट नोट. १३

12. यह आभागा समूद की क्रौम का सरदार था और उस का नाम “किदार” था। अतः अरब जाहिलिय्यत (इस्लाम से पूर्व दौर) के शेरों (दोहों) में इस का ज़िक्र मिलता है।

इस को सब से बड़ा अभागा (बदबख्त) इस लिए कहा गया है कि वह अत्यन्त उद्यण्ड था और उस ने अपनी क्रौम को गुमराह कर के उद्यण्डता की बहुत बड़ी मिसाल क़ायम की, और फलस्वरूप वह खुद भी तबाह हुआ और क्रौम को भी तबाही के घाट उतार दिया।

13. मुराद हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम हैं जो उस क्रौम की तरफ़ पैगम्बर बना कर भेजे गये थे।

14. समूद की क्रौम ने हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम से माँग की थी कि यदि सचमुच वह खुदा के रसूल (दूत) हैं तो कोई मोअजज़ा (निशानी) पेश करें। उन की इस माँग पर अल्लाह तआला ने ऊँटनी को मोअजज़े के तौर पर पेश कर दिया। चूँकि वह ऊँटनी मोअजज़े के तौर पर पेश की गई थी

इस लिए इसे **الْبَقَرَةُ** “नाक़तल्लाह” (अल्लाह की ऊँटनी कहा गया)

इस मोअजज़े ने जहाँ उन की माँग पूरी कर दी वहाँ उन को आजमाइश में भी डाल दिया। और इस की सूरत यह हुई कि हज़रत स्वालेह ने कहा, एक दिन इस के पानी पीने के लिए निश्चित होगा और दूसार दिन तुम्हारे लिए और तुम्हारे जानवरों के पानी पीने के लिए होगा। और ख़बरदार किया कि ऊँटनी को नुक़सान न पहुँचाना वरना अल्लाह का प्रकोप (अज़ाब) तुम्हें आ लेगा। लेकिन क्रौम ने अपने उद्यण्ड सरदार को इस बात पर उकसाया कि वह इस ऊँटनी का क्रिस्सा तमाम कर दे।

15. ऊँट को जब मारना होता तो उस की कूँचे अर्थात् घुटने के पीछे की नसों काट डाली जाती थीं जिस के बाद वह मर जाता था। यही तरीक़ा समूद के लोगों ने अल्लाह की ऊँटनी को मारने के लिए अपनाया और इस काम के लिए सब ने मिल कर अपने बदतरीन सरदार को आगे किया था इस लिए पूरी क्रौम इस की मुजरिम क़रार पायी।

16. अर्थात् उन को इस तरह तबाह कर दिया कि वह ख़ाक में मिल गये और मलियामेट हो गये।

17. अर्थात् अल्लाह को दुनिया के शासकों जैसा न समझो जो किसी दोषी समूह को सज़ा देते समय भयभीत होते हैं कि मालूम नहीं इस का क्या नतीजा निकलेगा और कहीं इस से उन की सत्ता तो ख़तरे में नहीं पड़ेगी। अल्लाह तआला की सत्ता और उस का इक्किदार सब से उच्चतम और सब पर हावी है इस लिए जब वह किसी क्रौम को सज़ा देना चाहता है तो उसे किसी का भय अथवा संदेह लागू नहीं होता।



सूरह अल्-लैल

९२. अल्-लैल

नाम :- पहली ही आयत में अल्-लैल (रात) की क्रसम खायी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-लैल” है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के शुरु के चरण (मरहले) में नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- यह स्पष्ट करना है कि इन्सान की कोशिश की दो विभिन्न दिशाएँ हैं जिस का तक्राज़ा है कि दोनों के प्रभाव एवं परिणाम भी भिन्न भिन्न और मन्ज़िलें भी अलग अलग हों।

इस सूरह का मज़मून (विषय) सूरह “अश्-शम्स” के मज़मून से गहरा सम्बन्ध रखता है। उस में नफ़्स (आत्मा) को पाक करने और गन्दा करने का अन्जाम बयान किया गया था इस सूरह में इस बात पर रौशनी डाली गयी है कि नफ़्स को पाक करने वाली चीज़ें क्या हैं और गन्दगी में लिप्त करने वाली चीज़ें क्या।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में कुछ प्रमाणों को प्रस्तुत कर के इस बात पर तर्क वितर्क किया गया है कि इन्सान की दौड़ धूप एवं कर्म जब अलग अलग हैं तो ज़रूरी है कि उस के परिणाम भी अलग अलग हों।

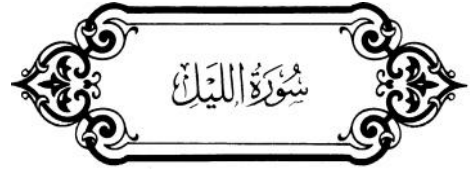
आयत ५ से ११ में अच्छे और बुरे आचरण की कुछ विशेषताएँ प्रस्तुत कर के स्पष्ट किया गया कि अच्छे गुण नेकी का मार्ग प्रशस्त करते हैं। और बुरे गुण बदी के मार्ग को।

आयत १२ से १४ में बताया गया है कि अल्लाह का काम हिदायत की राह दिखा देना है और उस ने यह राह तुम्हें दिखा दी है। दुनिया और आखिरत का मालिक वही है। इस लिए उस ने तुम्हें खबरदार कर दिया है कि आखिरत में क्या कुछ पेश आने वाला है।

आयत १५ से २१ में बताया गया है कि बुरे आचरण के लोग किस तरह बुरे अन्जाम से दोचार होंगे और अच्छे आचरण के लोगों का अन्जाम कितना अच्छा और दिलपसंद होगा।

९२. सूरह अल्-लैल

आयतें : २१



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है ¹ रात की जब कि वह छा जाये, ² وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى ۝١
2. और दिन की जब कि वह रौशन हो, ³ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ۝٢
3. और उस हस्ती की ⁴ जिसने नर और मादा पैदा किये। ⁵ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝٣
4. निश्चय ही तुम्हारी कोशिशें अलग अलग हैं। ⁶ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّى ۝٤
5. तो ⁷ जिस ने माल दिया ⁸ और परहेज़गारी अपनायी, ⁹ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى ۝٥
6. और बेहतरीन बात को सच माना, ¹⁰ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ۝٦
7. उस के लिए हम आसानी को पहुँचने वाला मार्ग प्रशस्त कर देंगे। ¹¹ فَسَيَسِّرُهُ لِّلْيُسْرَى ۝٧
8. और जिस ने कंज़ूसी की ¹² और बेपरवाही बरती, ¹³ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۝٨
9. और बेहतरीन बात को झुठलाया। ¹⁴ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ۝٩
10. उस के लिए हम सख्ती को पहुँचने वाला मार्ग प्रशस्त कर देंगे। ¹⁵ فَسَيَسِّرُهُ لِّلْعُسْرَى ۝١٠
11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उस का माल उस के कुछ काम न आयेगा। ¹⁶ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝١١

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट १४

2. इशारा है इस बात की तरफ कि रात की विशेषता अन्धियारा है। जब वह आ जाती है तो सब पर अन्धियारा छा जाता है।

3. अर्थात् रात के मुकाबले दिन की विशेषता उजाला है। जब वह उभरता है तो सब चीजें उज्ज्वल (रौशन) हो जाती है।

4. मुराद खालिक (सृष्टा अथवा रचयिता) की क्रसम है। और खालिक की क्रसम यहाँ बात को और भी दृढ़ करने और दअवे को निश्चित रूप से पेश करने के लिए है।

5. नर और मादा जानवरों में भी पैदा किये और इन्सानों में भी। यह शारीरिक फ़र्क अपनी विशेषताएँ रखता है। जो विशेषता मर्द की है वह औरत की नहीं और जो औरत की है वह मर्द की नहीं।

6. यह है वह हकीक़त जिस पर उक्त क्रसमें खाई गई हैं। मतलब यह है कि इस कायनात की तख़लीक़ (रचना) इस तरह हुई है कि इस में चीजें एक दूसरे से भिन्न हैं और अलग अलग विशेषताओं की मालिक हैं। मिसाल के तौर पर रात और दिन परस्पर भिन्न हैं और यदि एक की विशेषता अन्धेरा फैलाना है तो दूसरे की विशेषता उजाला फैलाना। मर्द और औरत भी शारीरिक रूप से परस्पर भिन्न हैं और अगर एक में किर्याशीलता की विशेषता पाई जाती है तो दूसरे में सहनशीलता की। अगर एक जाति में बाप बनने की विशेषता पाई जाती है तो दूसरी जाति में माँ बनने की। यही हाल इन्सान की कोशिशों का है कि कोई नेकी और भलाई का मार्ग अपनाता है तो कोई बदी और उपद्रव का। कोई खुदा का वफ़ादार बन्दा बन कर रहता है तो कोई नाफ़रमान सरकश (उद्यण्ड) बन कर। कोई, एक सच्चे खुदा को मानता है और किसी ने हज़ारों झूठे खुदा बना रखे हैं। किसी की दौड़ धूप भलाई की राह में होती है और किसी की बुराई की राह में, कोई उपद्रवी और ज़ालिम बन कर उठता है और कोई सुधारक बनता है और इन्साफ़ के तराजू कायम करता है। कोई दुनिया में मजे उड़ाता है और कोई कर्तव्यपरायणता का परिचय देता है। कार्य क्षेत्र में इन्सान की कोशिशों का यह अन्तर भी अपने अन्दर अलग अलग विशेषताएँ और अपने अलग अलग प्रभाव रखता है और यह परिस्थिती इस बात का तक्राज़ा करती है कि इन के अलग अलग नतीजे भी ज़ाहिर हों। और जब दुनिया की हैसियत कर्मभूमि और परीक्षा स्थल की ठहरी तो एक बदला पाने की जगह की ज़रूरत उभर कर सामने आती है। अतः कुर्आन का यह दावा कि आखिरत बदला पाने की जगह है जहाँ नेकी और बदी के अलग अलग परिणाम सामने आएंगे और इन्सान अपने कामों और कोशिशों के अनुकूल इनाम या सज़ा

पायेगा, ठीक उस हकीक़त के मुताबिक़ है जो कायनात की निशानियों पर ग़ौर करने से उभर कर सामने आती है।

जो लोग इतनी बड़ी हकीक़त को कुबूल नहीं करते वह निरे मूर्ख होने का सबूत देते हैं क्यों कि उन के नज़दीक़ हर चीज़ अपनी एक विशेषता रखती है किन्तु अगर कोई चीज़ अपनी विशेषता नहीं रखती तो वह नैतिक और अनैतिक रवैया है। वह समझते हैं कि हर चीज़ अपना असर (प्रभाव) रखती है लेकिन अगर कोई चीज़ अपना असर नहीं रखती तो वह नेकी और बदी है। वह इस बात के क़ायल हैं कि हर काम का एक नतीजा है परन्तु उन के नज़दीक़ अगर कोई काम बेनतीजा (परिणाम रहित) है तो वह खुदा की आज्ञा का पालन और उस की अवज्ञा के काम हैं कि दोनों काम और दोनों मार्ग एक जैसे हैं और इन का कोई अच्छा और बुरा नतीजा बरामद होने वाला नहीं। इन्सान खुदा पर ईमान लाए या कुफ़र करे उस की हिदायत को स्वीकार करे या न करे परिणाम की दृष्टि से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। बताइये इस से बढ़ कर नादानी और मूर्खता की बात और क्या हो सकती है।

7. यहाँ अच्छी और बुरी कार्यप्रणाली का अन्तर स्पष्ट किया जा रहा है। इस सिलसिले में पहले कुछ गुणों का वर्णन किया गया है जो इन्सान को संवारते और उस के चरित्र का निर्माण करते हैं। इस के बाद वह अवगुण बताये गये हैं जो इन्सान को बिगाड़ते और उस को चरित्रहीन बनाते हैं।

8. तात्पर्य भलाई के कामों पर खर्च करना है।

9. अर्थात् अल्लाह से डरते हुए ज़िन्दगी बसर करे। जो काम उस की नाराज़गी के हैं उन से परहेज़ करे।

10. बेहतरीन बात (अलहुसना الْحُسْنَى) से तात्पर्य यह बात है जिस की तरफ़ कुर्आन दअवत दे रहा है। अर्थात् कलम-ए-तौहीद को कुबूल करने और आखिरत पर ईमान लाने की दअवत।

11. अर्थात् नेकी की राह पर चलना उस के लिए आसान होगा और उस पर चल कर वह उस मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा जहाँ आसानियाँ ही आसानियाँ और राहत ही राहत है। नेकी की राह यद्यपि अत्यन्त कठिनतम राह है। लेकिन इस पर चलना उन लोगों के लिए आसान हो जाता है जो खुदा और आखिरत पर ईमान ला कर तक्रवा (परहेज़गारी) अपनाते हैं और अल्लाह की प्रसन्नता की खातिर अपना माल खर्च करते हैं। गोया यह तौफ़ीक़ अल्लाह तआला उन लोगों को प्रदान करता है जो सत्यमार्ग पर चलने की हिम्मत करते हैं और उस की बुनियादी शर्तें पूरी कर देते हैं।

12. कंज़ूसी (बुख़ल) से मुराद नेकी और भलाई के कामों में माल न खर्च करना है और इस लिहाज़ से वह व्यक्ति भी

कन्जूस है जो अपने ऐश और आराम और दूसरे दिखावटी कामों पर तो खूब खर्च करता है लेकिन खुदा और बन्दों के हुक्क की अदायगी उसे बोझ लगती है।

यदि कलाम के संदर्भ का लिहाज रखा जाये तो यह बात अपने आप स्पष्ट हो जाती है कि कंजूसी और मायामोह वह नैतिक बुराइयाँ हैं जो नफ़्स को लुथेड़ देती हैं और पाकीज़गी (पवित्रता) अपनाने के लिए ज़रूरी है कि आदमी अल्लाह की राह में खर्च करे।

13. बेपरवाही (बेनियाज़ी) बरतने का मतलब यह है कि आदमी खुदा और उस की हिदायत से बिल्कुल अलग (पृथक) हो जाये और उसे इस बात की परवाह न हो कि अल्लाह की प्रसन्नता किन कामों के करने से प्राप्त होती है और उस का प्रकोप किस तरह के काम करने से टूट पड़ता है।

“इस्तिग़ना” اِسْتِغْنَاء (बेनियाज़ी या बेपरवाही बरतने) का लफ़्ज़ तक्रवा (ईशभय और परहेज़गारी) के मुकाबले में इस्तेमाल हुआ है इस लिए अगर तक्रवा, अल्लाह के डर से प्रभावित होकर ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारने और अपने कर्तव्य को पहचानने एवं उसे पूरा करने का नाम है तो “इस्तिग़ना” यह है कि आदमी खुदा से बेपरवाह होकर ग़ैरज़िम्मेदाराना (दायित्वहीन) ज़िन्दगी गुज़ारें और अपने कर्तव्य को न पहचाने एवं उसे पूरा

न करे।

14. बेहतरीन बात की व्याख्या ऊपर फुटनोट १० में गुजर चुकी है।

15. अर्थात् बदी की राह चलना उस के लिए आसान होगा और इस पर चलकर वह उस कठिन मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा जहाँ कष्ट ही कष्ट है। बदी की राह इस लिहाज़ से आसान है कि उस पर चलने वाला अपनी इच्छाओं एवं स्वार्थ के पीछे चलता है और इस में उसे सांसारिक (मादी) फ़ायदे भी प्राप्त होते हैं और दुनियावी लज़्ज़तें भी। जो व्यक्ति इन जल्द मिलने वाले फ़ायदे के लालच में आ कर इस ग़लत राह को चुन लेता है अल्लाह तआला उस को उस पर चलने के लिए ढील देता है और उस के लिए वह साधन कर देता है जो बुराइयाँ व्यवहार में लाने को उस के लिए आसान बना देते हैं। लेकिन अन्त में यह आसानियाँ उसे अत्यन्त कठिन मन्ज़िल पर ले जाकर छोड़ देती हैं।

16. गढ़े (गड्ढे) में गिरने से तात्पर्य तबाही के गढ़े में गिरना है। मतलब यह है कि यह माल जिसे आदमी जमा करता है और भलाई के कामों में नहीं लगाता उस के लिए कुछ भी लाभदायक न होगा बल्कि तबाही का कारण होगा। अगर यह खुदा की खातिर भलाई के कामों में उसे खर्च करता तो यह उस की आख़िरत (परलोक) में मिलने वाली ज़िन्दगी के लिए सुरक्षित पूँजी बन जाती।



निस्सन्देह मार्ग दिखाना हमारे ज़िम्मे है। और आखिरत और दुनिया दोनों हमारे ही क़ब्जे में हैं। तो मैं ने तुम को भड़कती आग से ख़बरदार कर दिया है। इस में वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त (अभागा) होगा। जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा। और उस से ऐसे व्यक्ति को बचा लिया जायेगा जो बेहद परहेज़गार है। जो अपना माल पाकीज़गी हासिल करने की ख़ातिर देता है। और उस के नज़दीक किसी के हक़ (पक्ष) में कोई एहसान बदले के लिए नहीं है। बल्कि वह सिर्फ़ अपने बरतर (सर्वोच्च) रब की प्रसन्नता को हासिल करने के लिए देता है। और वह ज़रूर प्रसन्न होगा। (अल-कुआन)

12. निस्सन्देह मार्ग दिखाना हमारे ज़िम्मे है।¹⁷

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۖ

13. और आखिरत और दुनिया दोनों हमारे ही क़ब्जे में हैं।¹⁸

وَأَنَّ لَنَا الْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۚ

14. तो मैं ने तुम को भड़कती आग से ख़बरदार कर दिया है।

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۚ

15. इस में वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त (अभागा) होगा।¹⁹

لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْآسَفَىٰ ۚ

16. जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा।

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

17. और उस से ऐसे व्यक्ति को बचा लिया जायेगा जो बेहद परहेज़गार है।²⁰

وَسَيَجْعَلُهَا الْآتِقَىٰ ۚ

18. जो अपना माल पाकीज़गी हासिल करने की खातिर देता है।²¹

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۚ

19. और उस के नज़दीक किसी के हक़ (पक्ष) में कोई एहसान बदले के लिए नहीं है।²²

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۖ

20. बल्कि वह सिर्फ अपने बरतर (सर्वोच्च) रब की प्रसन्नता को हासिल करने के लिए देता है।²³

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۚ

21. और वह ज़रूर प्रसन्न होगा।²⁴

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۚ

17. अर्थात् जहाँ तक इन्सान को सीधा मार्ग दिखाने का सम्बन्ध है, अल्लाह तआला ने यह जिम्मा ज़रूर लिया है और यह काम उसने अपने पैग़म्बर को भेजकर और अपनी इस किताब को नाज़िल कर के पूरा कर दिया है। रहा सीधा एवं सत्य मार्ग अपना लेना तो यह इन्सान की अपनी जिम्मेदारी है। करेगा तो कामयाब होगा और नहीं करेगा तो नामुग़द होगा।

18. अर्थात् दुनिया और आख़िरत (लोक परलोक) दोनों ज़हानों के मालिक हम ही हैं और दोनों का नफ़ा, नुक़सान हमारे ही हाथ में है। अतः जो व्यक्ति दुनिया के भौतिक (मादी) लाभ की ख़ातिर सीधे मार्ग को स्वीकार नहीं करता उसे समझ लेना चाहिए कि दुनिया में वह उतने ही फ़ायदे हासिल कर सकेगा जितने कि उस की गुमराही के बावजूद उस का ख़ुदा उसे पहुँचाना चाहे। उस से अधिक वह दुनिया में कुछ हासिल न कर सकेगा। रही आख़िरत तो वहाँ ऐसे लोगों के लिए महरूमी के सिवा कुछ न होगा।

19. इस का यह मतलब नहीं है कि जो कम दर्जे का बदबख़्त (अभागा) होगा वह आग में नहीं पड़ेगा बल्कि मतलब यह है कि इस सूरह के नाज़िल होने के समय जो दो चरित्र के लोग सामने थे एक जो पैग़म्बर को झुठला रहे थे और उन की लायी हुई हिदायत से मुँह मोड़ रहे थे और दूसरे वह जो पैग़म्बर की पुष्टि कर रहे थे और उन की लायी हुई हिदायत को स्वीकार कर के अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर रहे थे। इन में से पहले चरित्र के लोग ही अर्थात् पैग़म्बर को झुठलाने वाले भड़कती आग में पड़ेंगे न कि दूसरे चरित्र के लोग जो पैग़म्बर की पुष्टि कर रहे थे। उन झुठलाने वालों को अत्यन्त अभागा (इन्तेहाई बदबख़्त اَشَقّٰی) इस लिए फ़रमाया कि जब पैग़म्बर ने स्वयं उन लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया जिस की वजह से अल्लाह की हुज़्जत (तर्क) पूरी तरह कायम हो गई और फिर भी वह इन्कार करते रहे तो उन से ज़्यादा बदबख़्त और कौन हो सकता है।

कुर्आनी आयात का मफ़हूम (भावार्थ) निश्चित करते समय, जगह, अवसर और उन हालात को जिन में वह आयात नाज़िल हुई है, लिहाज़ रखना ज़रूरी है एवं किसी आयत का ऐसा मतलब लेना भी सही न होगा जो कुर्आन के दूसरे बयानों से मेल न खाती हो।

20. यहाँ भी कहने का उद्देश्य यह नहीं है कि सिर्फ़ बड़े

परहेज़गार (मुत्तक़ी) ही आग से बचाए जायेंगे और साधारण परहेज़गार नहीं बचाये जायेंगे बल्कि मतलब यह है कि जो दो चरित्र उभर कर सामने आ गये हैं। और यह इस सूरह के नाज़िल होने के समय और पैग़म्बर की मौजूदगी में उभर कर सामने आ गये थे। उन में से सिर्फ़ दूसरे आचारण के लोग ही आग से बचा लिये जायेंगे। जिन्होंने अपने मुत्तक़ी (परहेज़गार) ही नहीं बल्कि “اَتَقٰی اَتَقٰ” (बेहद परहेज़गार) होने का सबूत दिया है। रहे “اَشَقّٰی” (बेहद बदबख़्त) तो वह ज़रूर ही आग में पड़ेंगे जैसा कि ऊपर बयान हुआ। स्पष्ट रहे कि जिन लोगों ने शुरू ही में रसूल की दअवत क़बूल कर ली थी और अल्लाह से डरते हुए अपने अन्दर पाकीज़गी पैदा कर रहे थे। उन्होंने बहुत बड़े हौसले का सबूत दिया था इस लिए उन का दर्जा बहुत बड़ा है और तक्रवा (परहेज़गारी) के ऊँचे मेयार पर होने की वजह से वह सब “अतक्रा” (बेहद परहेज़गार) हैं।

21. मालूम हुआ कि अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना “तज़क़िया-ए-नफ़्स” (नफ़्स के शुद्धीकरण) का बहुत बड़ा साधन है। क्योंकि इस से माया मोह और दुनिया परस्ती की जड़ कट जाती है और ख़ुदा परस्ती और आख़िरत पसन्दी का ज़ब्बा परवविश पाने लगता है।

22. अर्थात् वह जो कुछ किसी को देता है बदले के उद्देश्य से नहीं देता। उस के नज़दीक किसी की मदद करना उस को एहसान का आभारी करने के लिए नहीं कि उस से किसी न किसी सूरत में उस का बदला चाहा जाये बल्कि वह खुलूस (शुद्धहृदयता) के साथ और निःस्वार्थ होकर मदद करता है।

23. अल्लाह तआला के नज़दीक इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में किया गया ख़र्च) वही मान्य है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ उस की प्रसन्नता के लिए किया जाये और ऐसे ही इन्फ़ाक़ से नफ़्स का तज़क़ियः होता है। इस के विरुद्ध जो इन्फ़ाक़ किसी पर एहसान धरने या शोहरत (प्रचार) और नाम करने के उद्देश्य से किया जाये उस से न अल्लाह की प्रसन्नता हासिल होती है और न नफ़्स का तज़क़ियः (शुद्धीकरण) होता है।

24. अर्थात् जिस व्यक्ति का आचरण यह है उस पर उस का ख़ इस तरह अपनी कृपा उण्डेलेगा कि वह ख़ुश हो जायेगा। यह आयत सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों की है लेकिन इस के अन्दर बताये गये गुणों और ख़ुबियों वालों के लिए ख़ुशख़बरियों की एक दुनिया छिपी हुई है।

सूरह अज़्-ज़ुहा

१३. अज़्-ज़ुहा

नाम :- शरू में “ज़ुहा” (रोज़े रौशन या प्रकाशमान दिन) की क्रसम खाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अज़्जुहा” है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि नुबुव्वत की शुरूआत होने के कुछ ही समय बाद नाज़िल हुई थी जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने हक़ की दअवत की मुशकिलें पहाड़ बनकर खड़ी थीं और रिसालत (Prophethood) को झुठलाने वालों के व्यंग्य कसने और बुरा भला कहने से आप का दिल दुख रहा था।

केन्द्रीय विषय:- सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शानदार भविष्य और महान उपहारों एवं कृपा से सुसज्जित किये जाने की खुशखबरी देते हुए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तसल्ली का पूरा सामान किया गया है। यह तो है इस सूरह का खास पहलू, लेकिन इस विशेष पहलू के साथ इस का एक साधारण पहलू भी है जो कलाम के मज़मून और उस के अन्दाज़ (भावार्थ) से स्पष्ट है। और वह यह है कि जीवन के संघर्ष में इन्सान को जिन मुशकिलों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है या सत्य के मार्ग में जिन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ता है उन को अल्लाह की नाराज़गी खयाल करना सही नहीं बल्कि यह विपत्ति एवं परीक्षा और आजमाइश के लिए होती है और वह इन्सान के लिए वास्तविक उन्नति के दर्जे पूर्ण करने का साधन है। यही इस सूरह का केन्द्रीय विषय है।

कलाम की तरतीब:- आयत १ और २ में दिन और रात की शहादत पेश कर के इस हकीकत की तरफ़ इशारा किया गया है कि अल्लाह तआला ने यह दुनिया बनाई ही इस तरह है कि यहाँ नूर (प्रकाश) भी है और जुल्मत (अन्धकार) भी है। इसी तरह तकलीफ़ें भी हैं और राहत भी और यह दोनों हालतें आजमाइश के लिए ज़रूरी हैं।

आयत ३ में ऊपर बताई गई हकीकत के अनुकूल यह स्पष्ट किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सत्यमार्ग की जिन कठिनाइयों से दोचार होना पड़ रहा है इस का यह मतलब लेना हरगिज़ सही नहीं कि अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ़ से अपनी कृपादृष्टि फेर ली है या वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से नाराज़ हुआ है।

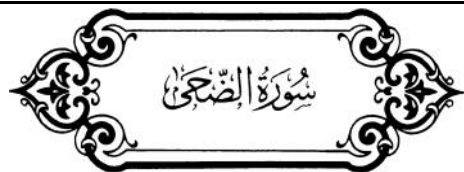
आयत ४ और ५ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को महान सफलताओं की खुशखबरी दी गई है।

आयत ६ से ८ में उन कठिनाइयों का वर्णन किया गया है जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी बनाये जाने से पहले दो चार हुए एवं खुदा के उन एहसानों का भी जिन के नतीजे में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए राहें खुली।

आयत ९ से ११ में बताया गया है कि उन एहसानात का तक्राज़ा क्या है अर्थात् इस के नतीजे में तुम्हारा रवैया कमज़ोरों और बेबसों के साथ स्नेह और हमदर्दी का होना चाहिए और खुदा की नेमत का एतिराफ़ (स्वीकरण) और इज़हार करना चाहिए।

९३.सूरह अज़्-जुहा

आयतें : ११



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है प्रकाशमान दिन की,¹ وَالْضُّحَى ۝۱
2. और रात की जब कि वह छा जाये,² وَالْأَيْلِ إِذَا سَجَى ۝۲
3. (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे रब ने न तुम्हें छोड़ा और न तुम से नाराज़ हुआ।³ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى ۝۳
4. और आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से कहीं बेहतर है।⁴ وَلَآ آخِرَةَ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَى ۝۴
5. और बहुत जल्द तुम्हारा रब तुम्हें वह कुछ प्रदान करेगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे।⁵ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ۝۵
6. क्या यह सत्य नहीं है कि उस ने तुम को अनाथ पाया तो ठिकाना दिया?⁶ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَى ۝۶
7. और राह से बेख़बर पाया ⁷ तो हिदायत दी?⁸ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَى ۝۷
8. और नादार (निर्धन) पाया तो ग़नी (धनी या सम्पन्न) कर दिया ?⁹ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَى ۝۸
9. अतः तुम अनाथ को मत दबाओ।¹⁰ فَأَنَّا الْيَتِيمَ فَلَاتَفْقَرُ ۝۹
10. और साइल (माँगने वाले) को न झिड़को।¹¹ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝۱०
11. और अपने रब की नेमत का इज़हार करो।¹² وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝۱१

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर फुट नोट नं. १४

2. यहाँ जो क्रसमें खाई गई हैं उन से इस उसूली हकीकत को जेहन में बिठाना अभिप्रेत है कि इस संसार की व्यवस्था अल्लाह तआला ने इस तरह बनाई है कि यहाँ हमेशा एक ही हालत बनी नहीं रहती यहाँ दिन की रौशनी भी है और रात का अन्धकार भी।

ومهما استطال الليل فالصبح واصل

“और रात चाहे कितनी ही लम्बी हो, सुबह प्रकट हो कर रहती है।”

इस लिए जिस तरह रात के अन्धकार को देख कर किसी का रौशनी से मायूस हो जाना सही नहीं उसी तरह तकलीफ और मुसीबत के उमड़ते हुए बादलों को देख कर यह खयाल करना भी सही नहीं कि ये बादल कभी छटने वाले नहीं हैं। और न इस से यह नतीजा निकालना सही है कि दुनिया की तकलीफ निश्चित रूप से अल्लाह तआला की नाराज़गी का नतीजा होती है। बल्कि जिस तरह आजमाइश के लिए रात और दिन दोनों का वजूद ज़रूरी है उसी तरह तकलीफ और राहत दोनों आजमाइश के लिए ज़रूरी हैं। एवं तकलीफें इन्सान की तरबियत (प्रशिक्षण) और उस की छिपी हुई क्षमताओं और प्रतिभाओं को उभारने का महत्वपूर्ण साधन भी हैं।

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब दअवत की शुरुआत फ़रमाई तो मुशकिलें और कठिनाइयाँ पहाड़ बन कर आप के सामने खड़ी हो गईं और आप के इस दावे पर कि आसमान से आप पर वहय नाज़िल होती है, विरोध का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। इन्कार करने वाले आप का मज़ाक़ उड़ाने और वयंग्य करने एवं भला बुरा कहने लगे। एक नबी को इन हालात में घिरा हुआ देख कर यह सवाल पैदा होता था कि अगर नबी वास्तव में खुदा का महबूब (प्रिय) है तो उस की राह में यह मुशकिलें कैसी? और फिर जब वहय कुछ दिनों के लिए रुक जाती तो विरोधी यह वयंग्य करते कि अल्लाह ने आप को छोड़ दिया है और आप से नाराज़ है। विरोधियों के इन संदेहों को दूर करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्मीनान और तसल्ली दी जा रही है कि जिन हालात में आप अपने को घिरा हुआ पा रहे हैं वह नुबुव्वत की सरगर्मियों का तक्राज़ा और अल्लाह की उस महान नीति के अन्तर्गत हैं जिस के अनुसार इस दुनिया की पूरी व्यवस्था चलाई जा रही है। और वह नीति यह है कि इन्सान की आजमाइश हो जिस से अम्बिया अलैहिस्सलाम भी अलग नहीं हैं और इस का तक्राज़ा यह है कि नर्म गर्म हर तरह के हालात से वास्ता पड़े। एक पैग़म्बर जब सत्यमार्ग की

मुशकिलों और विपत्तियों एवं विरोध के तूफ़ान से गुज़रता है तो उस के बहुत बड़े बड़े फ़ायदे हासिल होते हैं। जैसे पैग़म्बर की अख़लाक़ी खूबियाँ (नैतिक विशेषताएँ) निखर कर सामने आ जाती हैं और उस के किरदार की बुलन्दी आसमान को छूने लगती है। जिन दिलों में इन्सानियत जाग रही होती है उन में पैग़म्बर से मुहब्बत और अक़ीदत पैदा हो जाती है और वह उस पर अपनी जानें निछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी तरह पैग़म्बर की हिम्मत और हौसले को देख कर उन के अनुयायियों में भी स्थिरता, मज़बूती, और बहादुरी की सिफ़त पैदा हो जाती है। रहा अल्लाह की वहय के नाज़िल होने में विलम्ब तो यह भी इस कारण नहीं है कि अल्लाह पैग़म्बर से नाराज़ हो गया है बल्कि वहय का पूरा मामला अल्लाह की हिकमत और मसलहत पर आधारित है। उस की हिकमत जिस समय और जितनी वहय का तक्राज़ा करती है वह नाज़िल कर देता है।

4. यह खुशख़बरी अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस समय सुनाई जब कि आप को बेहद नासाज़गार (अत्यन्त प्रतिकूल) हालात से गुज़रना पड़ रहा था और सख़्त मुशकिलें आप की राह में आड़े थीं। इन हालात में आप के लिए आख़िरत की कामयाबी की खुशख़बरी न केवल तसल्ली बल्कि हौसला बढ़ाने का कारण भी थी।

मालूम हुआ कि अगर आदमी आख़िरत की कामयाबी पर नज़र रखे तो इस से हिम्मत और हौसला पैदा होता है। और सत्यमार्ग की मुशकिलें आसान हो जाती हैं।

ध्यान रहे कि अरबी मूल (Text) में “अल आख़िरा” और “अलऊला” के अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं जो “आख़िरत” और “दुनिया” के लिए कुर्आन के पारिभाषिक शब्द (Technical Terms) हैं और कुर्आन में जहाँ भी यह शब्द स्वतंत्र रूप से आये हैं, इसी भावार्थ में आए हैं। इस से पहले कि सूरह अल्लैल आयत १३ में **وَأَنَّ لَنَا لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَى** “बेशक आख़िरत और दुनिया दोनो हमारे ही कब्जे में हैं” में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयोग हुए हैं।

5. इशारा है आख़िरत के उन हमेशा हमेशा रहने वाले इनामों की तरफ़ जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नवाज़ा जायेगा। वहाँ आप इज़ज़त और बुलन्दी के जिस पद पर आसीन होंगे और इनाम और कृपा की आप पर जो बारिश होगी उस की एक झलक़ उन आयतों और हदीसों में देखी जा सकती है जिन में आप के रब की तरफ़ से आप पर की जाने वाली कृपा का वर्णन हुआ है वरना इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने रसूल को जो कुछ देने का वादा फ़रमाया है उस के विस्तार और बुलन्दी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

6. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यतीम पैदा हुए थे आप अभी गर्भ में ही थे कि आप के पिता अब्दुल्लाह का इन्तिकाल हो गया और जब ६ साल के हुए तो आप की माँ अमिना दुनिया से कूच कर गई। आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश की लेकिन अभी आप आठ साल ही के थे कि दादा का भी इन्तिकाल हो गया। उन के बाद आप के चचा अबू तालिब ने आप की कफ़ालत की जिम्मेदारी उठाई और आप के साथ बड़ा अच्छा बरताव किया। यहाँ तक कि उन की दया एवं स्नेह आप की बअसत (नबी होने) के बाद भी बरकरार रही।

सीरतुनबी, इब्ने हश्शाम, भाग, १ पृष्ठ १७१, १७९, १८०, १९३)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश का यह बेहतरीन प्रबन्ध और वह भी एक ऐसे माहौल में जहाँ यतीमों की उपेक्षा (नाक़दरी) की जाती थी अल्लाह तआला की कृपा का ही परीणाम था।

यहाँ यह पहलू भी विचार करने योग्य है कि अनाथ होने की हालत में यद्यपि तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है लेकिन बाप के सहारे से वन्चित रहने की वजह से आदमी के अन्दर एक तरह का आत्मविश्वास पैदा होने लगता है और इस से बढ़ कर अल्लाह पर विश्वास का जज़्बा पलने लगता है। ग़ौर कीजिये यतीमी की हालत में डाल कर के अल्लाह तआला किस तरह तरबियत का सामान करता है।

7. अरबी मूल (Text) में शब्द “ज़ाल्लन” इस्तेमाल हुआ है जो ज़लालत (गुमराही) से है। यह लफ़्ज़ हिदायत के मुकाबले में कई अर्थों में बोला जाता है। इस का एक अर्थ बेख़बर और अनभिज्ञ होने के भी हैं। अतः अरबी की सब से बड़ी और प्रामाणिक डिक्शनरी “लिसानुल अरब” में है।

وَضَلَّتْ الْمَسْجِدَ وَالْدارَ إِذَا لَمْ تَعْرِفْ مَوْضِعَهُمَا

अर्थात् अगर तुम मस्जिद और घर की जगह से भिन्न न हो तो कहोगे, मैं मस्जिद और घर से ज़लालत में (अनभिज्ञ) रहा (देखिए लिसानुल अरब शब्द ज़लल) यहाँ यह शब्द इस अर्थ में प्रयोग हुआ है।

बअसत (नबी चुने जाने) से पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उचित स्वभाव (Rightful Nature) पर क़ायम थे और तमाम अम्बिया अलैहिस्सलाम का बअसत (नबी चुने जाने) से पहले यही हाल होता है कि वह उचित स्वाभाव (Rightful Nature) से विमुखता नहीं बरतते- और इन्सान का उचित स्वभाव अपने स्व की पहचान रखता है और उसी को माबूद (पूज्य) करार देता है एवं भलाई और बुराई में तमीज़ भी करता

है। और यह दोनों ही ख़ूबियाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में पायी जाती थी अतः बअसत (नबी चुने जाने) से पहले आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का “ग़ारे हिरा” में एकाग्रता के साथ अल्लाह की इबादत में लीन हो जाना इस बात का सबूत है कि आप तौहीद पर क़ायम थे। इसी तरह आप का पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारना यहाँ तक कि आप क़ौम की नज़र में विश्वास पात्र ठहरे और अमीन (अमानतदार) के उपनाम से पुकारे गये, यह आप की अख़लाक़ी बुलन्दी की खुली दलील है। इस के अलावा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सच्चे दीन के जो अंश उस समय तक बाक़ी रह गये थे जैसे बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का आदर हज इत्यादि, उन पर आप अमल करते थे अतः यह सच्ची घटनाएँ इतिहास से प्रमाणिक हैं। (सीरतुनबी, इब्ने हश्शाम, भाग १ पृष्ठ १९७ और २२१) गोया जिस हद तक प्रकृति (Nature) और इब्राहीम के सच्चे दीन की रौशनी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने मौजूद थी आप उस रौशनी में चलते लेकिन आप पर हिदायत की राह पूरी तरह रौशन नहीं थी इस लिए न आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईमान की हक़ीक़त मालूम थी और न शरीअत की विस्तृत जानकारी थी। अतः कुर्आन ने इस का स्पष्टीकरण किया है।

مَا كُنْتُ تَذَرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ (سورة الشورى- ५२)

(तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है और ईमान क्या है। सूरह अश्-शूरा ५२) इसी हालत को यहाँ “ज़ाल्लन” (जो राह से बेख़बर हो) से ताबीर (व्यंजन) किया गया है। दूसरे शब्दों में यह राह की खोज और हक़ की तलाश की हालत थी इस लिए इस ज़लालत को गुमराही के अर्थ में हरगिज़ नहीं कहा जा सकता और ख़ास तौर पर जब कि आप के बारे में मालूम है कि न कभी आप ने ख़ुदा का इन्कार किया और न बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) अपनायी न बुराई से आप को वास्ता रहा और न दुष्कर्म से और न ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी बातिल (असत्य, ग़लत) चीज़ की तरफ़ लोगों को दअवत दी। बुख़ारी (हदीस की एक किताब) में यह घटना वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खाना पेश किया गया जो बुत के नाम पर वध किये हुए जानवर का था। आपने खाने से इन्कार कर दिया और यह देख कर ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील ने भी इन्कार किया। (बुख़ारी, किताबुलमनासिक बाब हदीस ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील)

जहाँ तक इब्राहीमी दीन के कुछ अंशों के बरकरार रहने का सम्बन्ध है अल्लामा इब्ने हजर बुख़ारी की टीका में लिखते हैं:-

انما كان عند اهل الجاهلية بقايا من دين ابراهيم

“जाहिलियत के लोगों के पास इब्राहीमी दीन के कुछ अंश ही बाकी रह गये थे।” (फ़तहुलबारी भाग ७ पृष्ठ ११३)

8. हिदायत से मुराद अल्लाह की वह्य है जिस ने सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पूरी तरह आप पर रौशन कर दी।

9. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बचपन यतीमी की हालत में गुजरा और जब आप जवान हुए तो निर्धनता की ही हालत रही। यहाँ तक कि कुरैश की सब से अधिक मालदार स्त्री ने आप के साथ मुजारिबत (Partnership) का मामला किया और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शाम (Syria) के व्यवसायिक सफ़र में ख़ूब लाभ हुआ। हज़रत ख़दीजा ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दयानतदारी (सत्यनिष्ठा) शराफ़त और अच्छे अख़लाक़ से प्रभावित होकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से निकाह कर लिया जिस के बाद आप की आर्थिक स्थिती काफ़ी अच्छी हुई।

(सीरतुनबी, इब्ने हश्शाम, भाग १, पृष्ठ नं. २०२ से २०६)

यह जो कुछ हुआ सांसारिक नियम के अनुसार हुआ किन्तु वास्तव में यह अल्लाह तआला ही की कृपा का फल था कि निर्धनता की दशा सम्पन्नता से बदल गई।

10. ऊपर अल्लाह तआला ने अपने एहसानों का ज़िक्र फ़रमाया था अब संक्षेप में उन के तक्राज़े बयान किये जा रहे हैं। इस सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया गया है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने तुम्हारी यतीमी की हालत में तुम्हें पनाह दी उसी तरह तुम भी यतीमों के हुकूक के रखवाले बन जाओ। किसी यतीम के साथ सख़्ती से पेश न आओ। इस हिदायत का संवोधन यद्यपि सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है किन्तु आप के माध्यम से यह हिदायत कुर्आन के हर पढ़ने वाले के लिए है और इस में धन के लोभियों के इस रवैये की निन्दा भी है जो यतीमों और कमजोरों के सिलसिले में वह अपनाते हैं। अर्थात् उन को तुच्छ जानकर उन के साथ आदर का बरताव नहीं करते, उन को दबाते हैं और उन के हुकूक चट कर जाते हैं।

11. यह उस एहसान का तक्राज़ा है जो ऊपर आयत ८ में बयान हुआ अर्थात् “निर्धन” पाया तो सम्पन्न कर दिया”। इस एहसान का हक़ यह है कि मोहताजों के साथ अख़लाक़ से पेश आया जाये और अगर किसी माँगने वाले की मदद न की जा सकती हो तो अच्छे अन्दाज़ से असमर्थता प्रकट कर दी जाए और उन लोगों का तरीक़ा हरगिज़ न अपनाया जाये जो माल के घमण्ड में गरीबों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और माँगने वालों को डाँटते और झिड़कते हैं।

इस आज्ञा का पालन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतनी कड़ाई के साथ की, कि न केवल यह कि किसी माँगने

वाले को कभी डाँटा नहीं बल्कि “नहीं” कह कर उसे खाली हाथ वापस लौटाना भी पसन्द न फ़रमाते। अतः हज़रत जाबिर का बयान है की :-

مَا سَبَّلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ لَا .

(بخاری کتاب الادب)

(कभी ऐसा नहीं हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चीज़ माँगी गई हो तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)ने फ़रमाया हो “नहीं”)

और हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हिदायत भी मिलती है कि

اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَمَنْ لَمْ

يَجِدْ فِيْكَ لِمَةً طَيِّبَةً . (مسلم کتاب الزکوٰۃ)

“जहन्नम से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा सदक़ा कर के बचने का सामान कर सको और अगर यह भी मयस्सर न हो तो अच्छी बात ही कहो।)

मतलब यह कि माँगने वाले को डाँटने के बजाय अच्छी बात कह कर असमर्थता प्रकट कर दो।

12. नेमत से मुराद साधारण नेमतें भी हैं और विशेष नेमत हिदायत भी है ।

ऊपर आयत ७ में हिदायत से नवाज़े जाने का जो ज़िक्र हुआ यहाँ उसी का हक़ बयान किया जा रहा है। यद्यपि तरतीब (क्रम) के लिहाज़ से इस का स्थान एक आयत पहले था लेकिन बात को दृढ़ करने के लिए इस को अन्त में बयान कर दिया गया, ताकि इस की अहमियत अच्छी तरह स्पष्ट हो जाये और उस पर ध्यान केन्द्रित हो। अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को जिन मेहरबानियों से सुसज्जित किया उन में उस की सब से बड़ी मेहरबानी हिदायत ही है। यह हिदायत कुर्आन की सूरत में आप को मिली और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रिसालत के पद (मंसब) से प्रतिष्ठित किया गया। यहाँ इसी नेमत के इज़हार की ताक़ीद की गई है। मतलब यह है कि अल्लाह तआला की इस महान कृपा का कि उस ने तुम को पैग़म्बर बनाया और कुर्आन जैसी महान और हिकमत से भरी किताब प्रदान की, लोगों में इस का ख़ूब चर्चा करो, इस पैग़ाम को उन तक पहुँचाओ और उन्हें उस राह की तरफ़ जो अल्लाह तआला ने अपनी किताब के द्वारा तुम पर खोली है, दअवत दो । यह हिदायत यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित कर के दी गयी है लेकिन आप के माध्यम से इस का सम्बोधन इस्लाम के अनुयाईयों से भी है। उन्हें कुर्आन की जो नेमत पैग़म्बर के माध्यम से मिली है। वह छिपाने के लिए नहीं है बल्कि इज़हार और बयान करने के लिए है ताकि इस का फ़ैज़ (लाभ) सर्वसाधारण में फैले ।

सूरह अलम्-नश्रह

१४. अलम्-नश्रह

नाम :- सूरह की शुरुआत अलम् नश्रह के अल्फ़ाज़ से हुई है। इस मुनासिबत से यह अल्फ़ाज़ इस सूरह का नाम करार पाये हैं।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि उस दौर में नाज़िल हुई जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अन्दर नुबुव्वत के कार्यभार की भारी ज़िम्मेदारियाँ संभालने का हौसला पैदा हो गया था जिस के नतीजे में विरोध के तूफ़ान से गुज़रना आप के लिए आसान हो गया था। नुबुव्वत का चर्चा भी सर्व साधारण में हो गया था और आप की दअवत पर हाथ उठाने वालों (हामी भरने वालों) की एक तादाद भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आसपास जमा हो गई थी।

केन्द्रीय विषय :- यह सूरह पिछली सूरह (अज़-ज़ुहा) का पूरक है पिछली सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ेहनी परेशानी को दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने उन एहसानों का हवाला दिया है जिन से उस ने अपने नबी को नवाज़ा। इस सूरह में आत्मविश्वास और आत्म संतोष (शरह सद्र) अर्थात् सीना खोल देने जैसी बड़ी नेमत से पुरस्कृत किये जाने का जिक्र करते हुए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इत्मीनान दिलाया है कि हर मुशकिल के बाद आसानी है और

यही इस सूरह का केन्द्रीय बिन्दु है अर्थात् हर मुशकिल के बाद आसानी की राह खुलती है। गोया मुशकिलों के साथ आसानियाँ लगी हुई है। इस लिए एक दाअी (आहवानकर्ता) को सत्यमार्ग की मुशकिल देख कर हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में अल्लाह तआला के उस एहसान का वर्णन है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आत्मसंतोष एवं आत्मविश्वास (शरह सद्र अर्थात् सीना खोल देने) की नेमत से पुरस्कृत किया और वह बोझ उतार दिया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमर तोड़े दे रहा था ।

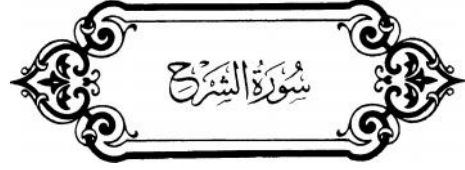
आयत ४ में यह खुशखबरी सुनाई गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख्याती एवं प्रसिद्धि बुलन्द कर दी गई है।

आयत ५ और ६ में इत्मीनान दिलाया गया है कि सत्यमार्ग की हर मुशकिल आसानियों की भूमिका है।

आयत ७ और ८ में अत्यन्त महत्वपूर्ण हिदायत दी गई है कि जब अपनी व्यस्तता से तुम छुट्टी पाओ तो अल्लाह की इबादत में सरगर्म हो जाओ और उसी से लौ लगाओ क्यों कि तमाम उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की सीमा यही है।

९४.सूरह अलम् नश्रह

आयतें : ८



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (ऐ पैगम्बर !) क्या हम ने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया?¹
2. और तुम पर से वह बोझ उतार नहीं दिया,
3. जो तुम्हारी कमर तोड़े दे रहा था?²
4. और तुम्हारा ज़िक्र (चर्चा ध्वनि) बुलन्द नहीं किया।³
5. तो (देखो) मुश्किल के साथ आसानी है,
6. बेशक (निस्संदेह) मुश्किल के साथ आसानी भी है।⁴
7. अतः जब तुम फ़ारिग (कार्यमुक्त) हो जाओ तो इबादत में सरगर्म हो जाओ,⁵
8. और अपने रब ही से लौ लगाओ।⁶

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝^١

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝^٢

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝^٣

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝^٤

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝^٥

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝^٦

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝^٧

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝^٨

1. शरह सद्र (सीना खोल देने) से मुराद दिल के इत्मीनान तथा हिम्मत और हौसला की मानोदशा है जो ईमान और अन्तर्दृष्टि (Insight या बसीरत) के नतीजे में पैदा होती है। यह मनोदशा शक्ति और क्षमता का स्रोत है जिस के हासिल हो जाने के बाद सत्यमार्ग की मुश्किलों को बर्दाश्त करना, विरोध का सामना करना और रोड़ा अटकाने वाली शक्तियों से टक्कर लेना आसान हो जाता है। सूरह अनआम में इरशाद हुआ :-

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ

“जिस व्यक्ति को अल्लाह हिदायत देने का इरादा करता है उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। (अन्आम आयत १२५)

अतः सीना का खुल जाना सरासर अल्लाह की तौफ़ीक़ है। यहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शरह सद्र (आत्म विश्वास एवं आत्मसंतोष) की नेमत से पुरस्कृत किये जाने का जो ज़िक्र हुआ है उस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तमाम ज़ेहनी उलझन को दूर कर दिया और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वह मज़बूत इरादे, व विशाल हौसला और अन्तर्दृष्टि (Insight) की वह ज्योति प्रदान की जो नुबुव्वत की महान ज़िम्मेदारियों को संभालने के लिए आवश्यक थी।

2. सूरह “अज़-ज़ुहा” की आख़री आयत में रिसालत की नेमत के इज़हार और एलान की जो हिदायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दी गई है वह एक भारी भरकम और कमरतोड़ ज़िम्मेदारी थी क्योंकि एक ऐसे माहौल में जहाँ लोग जाहिलिय्यत (अज्ञानता) की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और बुत परस्ती और शिर्क जिन की घुट्टी में पड़ा हुआ था, तौहीद और आख़िरत की दअवत पेश करना और ख़ास तौर से यह कहना कि अल्लाह ने मुझे रसूल बना कर भेजा है कोई आसान काम न था बल्कि कठिनतम और जान घुलाने का काम था अतः जैसे ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दअवत की शुरुआत की हर तरफ़ से विरोध का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और आप की रिसालत का लोगों ने न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि वह ख़ूब मज़ाक उड़ाने लगे। दअवत और तब्लीग़, इज़हारे-हक़ (सत्यभिव्यक्ति) और रिसालत के कर्तव्यों को पूर्ण करने की यही वह कमरतोड़ ज़िम्मेदारी थी जिस को अदा करने की चिन्ता में आप इस तरह डूबे रहते कि गोया ग़मों का पहाड़ आप पर टूट पड़ा है। बाद के मरहले में यह स्थिती नहीं रही क्यों कि शरह सद्र ने ज़बरदस्त शक्ति एवं ढारस का सामान किया, हौसले की बुलन्दी ने मुश्किल काम को भी आसान कर दिया एवं मुख़लिस (विश्वासपात्र एवं सत्यप्रिय) साथियों के एकत्रित हो जाने से दिल को इत्मीनान

और सुकून नसीब हुआ इसी इत्मीनान और सुकून (आत्मसंतोष) की मनोदशा जो बाद के मरहले में पैदा हुई बोझ उतार देने से ताबीर (प्रकट) किया गया है। और वास्तविक स्थिती का ज्ञान अल्लाह ही को है।

3. यह सब से बड़ा सम्मान है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया में प्रदान किया गया “रफ़अ ज़िक्र” (ज़िक्र को बुलन्द किया) का मतलब सिर्फ़ शोहरत (प्रचार) नहीं है बल्कि इस में अर्थों की गहराई और बड़े भेद हैं। एवं खुशख़बरियों की एक दुनिया छिपि हुई है। इस के कुछ पहलू ये हैं कि आप का ज़िक्र मुबारक बुलन्द सतह से होगा, आप की रिसालत का चर्चा आम होगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अत्यन्त अदब और आदर से लिया जायेगा, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत की गवाही दिये बग़ैर कोई व्यक्ति भी इस्लाम में दाख़िल नहीं हो सकता। अज़ान में आप के नाम की सदा (ध्वनि) बराबर गुँजती रहेगी, कोई नमाज़ आप के अच्छे ज़िक्र से खाली नहीं होगी, आप मानवता के संसार को मुक्ति दिलाने वाले कहलाएंगे, कोई आप को यतीमों का रक्षक एवं अभिभावक कहेगा तो कोई गुलामों का मौला, कहीं आप का तज़क़िरा (चर्चा) अख़लाक़ सिखाने वाले और नफ़्स को पवित्र करने वाले की हैसियत से होगा तो कहीं इतिहास रचने वाले क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की हैसियत से, कहीं आप सरवरे आलम (विश्वनायक) के उपनाम से पुकारे जायेंगे तो कहीं रहमतुल लिलआलमीन (सारेजगत के लिए रहमत) के उपनाम से, क्रौमें आप को हादी-ए-आज़म के नाम से याद करेंगी तो उलेमा और फ़ुज़ला नूरे मुजस्सम के नाम से, आप की सीरत (जीवनी) दिलों पर अंकित होगी और आप की हयाते-तैय्यबा (पवित्र जीवनी) के ज़िक्र से महफ़िलें महक उठेंगी, आप की शान में नअत पढ़ना लोगों के लिए गर्व की बात होगी और “बलगलूला बिकमालिही” जैसे कलमे लोगों की ज़बान पर होंगे। ईमान वालों को आप से गहरी अक़ीदत (श्रद्धा) होगी और रात दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में दरूद एवं सलाम का तोहफ़ा पेश करते रहेंगे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (उन पर खुदा का दरूद रहमत और सलाम हो)

इस आयत के नाज़िल होने के समय तो “रफ़अ ज़िक्र” की एक झलक ही देखी जा सकती थी लेकिन बाद में जब जगत को जगमगा देने वाले सूरज की तरह इस की सच्चाई जगमगा उठी तो किसी को इन्कार की मजाल न रही। सिवाय इस के कि किसी ने अपनी आँखें ही बन्द कर ली हों।

कलाम के मौक़े के लिहाज़ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह इत्मीनान दिलाना अभिप्रेत है कि ऐ नबी! तुम्हारे विरोधी तुम्हें कितना ही झुठलाएँ और तुम्हारा कैसा ही

मजाक्र उड़ाएँ अल्लाह ने तो तुम्हारी शान बुलन्द की है और अपने नेक बन्दों में तुम्हारे लिए कमाल दर्जों की मक़बूलियत रख दी है। अतः तुम्हारे जिक्र से वातावरण गुँज रहा है लिहाज़ा तुम विरोध की कोई परवाह न करो और इत्मीनान रखो कि वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे।

4. यह वह अहम हक़ीक़त है जिस को वास्तव में ज़ेहन में बिठाना अभिप्रेत है। इस सूरह में एवं पिछली सूरह (अज़-ज़ुहा) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी से सम्बन्धित जिन वाक़िआत (वस्तुस्थिती) का हवाला दिया गया है वह इस बात का खुला सबूत है कि अल्लाह तआला निर्धन्ता के बाद सम्पन्नता, तकलीफ़ के बाद राहत और मुशकिलों के बाद आसानी की राह खोलता है। इस हक़ीक़त को पेश कर के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्मीनान दिलाया गया है कि मुशकिलें आगे भी पेश आ सकती हैं लेकिन आप परेशान न हों क्योंकि हर मुशकिल आसानी की भूमिका है और कठिनाई, आराम की ज़मानत। आजमाइश के इन मरहलों से गुज़र कर ही आप उस मन्ज़िल को पहुँच सकेंगे जहाँ आसानियाँ ही आसानियाँ होंगी।

इस से यह उसूली हक़ीक़त खुल कर सामने आती है कि आदमी सत्यमार्ग में पेश आने वाली मुशकिलों से परेशान और दुखी न हों बल्कि इत्मीनान रखें, कि मुशकिलों के बाद आसानियों का दौर भी आयेगा और आसानियों का दौर इतना करीब है कि गोया साथ ही चला आ रहा है।

“मुशकिल के साथ आसानी भी है” यह बात दो बार दोहराई गई ताकि बात साफ़ हो जाए कि हक़ के रास्ते में मुशकिलें बार बार पेश आ सकती हैं लेकिन हर मुशकिल के बाद आसानी की राह ज़रूर खुलेगी शर्त यह है कि आदमी हिम्मत न हारे ऐसे ही हालात से गुज़र कर ईमान वाले अपनी मन्ज़िले मक़सूद (अमीष्ट लक्ष्य) को पहुँच सकते हैं। अर्थात् उस मक़ाम को जहाँ मुशकिलों का गुज़र ही नहीं और जिस का परिभाषिक नाम (Technical Term) जन्नत है।

5. फ़ारिग होने के अर्थ में हर तरह की व्यस्तता से छुट्टी पाना शामिल है लेकिन यहाँ विशेष रूप से इशारा दअवती सरगर्मियों से छुट्टी पाने की तरफ़ है क्योंकि इस से पहले की सूरह की आखिरी आयत **وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ** में दअवत और तबलीग़ की ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की हिदायत दी गई थी और यहाँ इसी सिलसिले में फ़रमाया गया कि “जब तुम फ़ारिग (कार्य मुक्त) हो जाओ तो इबादत में सरगर्म हो जाओ” मतलब यह है कि जब कोई और व्यस्तता न रहे तो अल्लाह की इबादत में लीन हो जाओ, कि सब से बड़ी वयस्तता अल्लाह की इबादत ही है इसी लिए इस निर्देश (हिदायत) के

पालन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत में लीनता इतनी बढ़ गई थी कि रात में लम्बे क़याम (नमाज़ में खड़े रहने) की वजह से आप के पाँव में वरम पड़ जाते।

عن عائشه رضى الله عنها قالت : كان النبي ﷺ يقوم من الليل حتى تنفطر قدماه ، فقلت له : لم تصنع هذا يا رسول الله وقد غفر لك ما تقدم من ذنبك وما تاخر ؟ قال : افلا اكون عبداً شكوراً . (بخارى مسلم)

“हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में इतना लम्बा क़याम फ़रमाते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में वरम पड़ जाते। मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप इतना लम्बा क़याम क्यों फ़रमाते हैं जब कि आप के अगले पिछले सब गुनाह बख़्श दिये गये हैं। फ़रमाया क्या मैं शुक़रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दा न बन जाऊँ”।

इस से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो जाती है कि इस्लाम में इबादत का मक़ाम क्या है। यद्यपि शरीअत के सभी आदेश अपनी जगह महत्व रखते हैं लेकिन जो चीज़ तमाम आदेशों पर वरीयता रखती है। वह इबादत ही है अर्थात् नमाज़, जिक्र, दुआ जैसी चीज़ कि यह इबादत निश्चित समय पर ज़रूरी है और इस समय भी जब कि दूसरी व्यस्तताओं से आदमी छुट्टी पाये। दुसरे शब्दों में ईमान वालों को सब से अधिक जिस काम में रुचि होनी चाहिए और जो काम नियमित करते रहना चाहिए वह अल्लाह की इबादत ही है। अगर अन्न और पानी इन्सान के ज़िन्दा रहने के लिए ज़रूरी है तो उस से कहीं ज़्यादा ज़रूरी साँस लेने की क्रिया है। अगर एक मिनट के लिए आदमी साँस न ले तो वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा। इसी तरह शरीअ आदेश चाहे वह आदेश दअवत और तबलीग़ से सम्बन्धित हों या शिक्षण और प्रशिक्षण से सम्बन्धित, व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित हो या सामाजिक जीवन से सम्बन्धित, अगर इस्लामी जीवन व्यतीत करने के लिए इन की पाबन्दी ज़रूरी है तो अल्लाह की इबादत और पूजा इस से अधिक आवश्यक है। यही कारण है कि दूसरे आदेशों के पालन के सिलसिले में हालात के हिसाब से ज़िम्मेदारियों में कमी बेशी होती रहती है। लेकिन नमाज़ मोमिन की ज़िन्दगी का एक अटूट हिस्सा और एक अभिन्न अंग है और इस की जितनी वह तैयारी करता है उतना ही उस का सम्बन्ध अल्लाह से मज़बूत हो जाता है यहाँ तक कि नमाज़ उस की आँखों की टंडक बन जाती है।

6. अर्थात् अपने रब ही की ओर आकर्षित हो जाओ, उस को अधिक से अधिक याद करो, उस की तस्बीह (पाकी बयान)

करो और हम्द (गुणगान) करो, उस के कलाम की तिलावत (Recitation) करो उस से क्षमा याचना (इस्तिफ़ार) करो और विनम्रता के साथ उस से प्रार्थना करो, दुआएं माँगें।

यह हिदायत यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

सम्बोधित कर के दी गई है मगर यह सब के लिए आम है और इस से जो अहम तरीन हकीकत खुल कर सामने आती है वह यह है कि तमाम उद्देश्यों की सीमा अल्लाह से लौ लगाना या दूसरे शब्दों में अल्लाह से सम्बन्ध (ताअल्लुक बिल्लाह) है।



सूरह
अत्-तीन

१५. अत्-तीन

नाम :- पहली आयत में “तीन” (इन्जीर) की क्रसम खायी गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तीन है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और इस के मक्की होने को आयत नं. ३ प्रामाणित करती है जिस में “इस अमन वाले शहर” की क्रसम खायी गई है जिस से तात्पर्य ज़ाहिर है कि शहर मक्का ही है। मज़मून पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कर्मों का फल है जिस का औचित्य बहुत ही मनमोहक अन्दाज़ में स्पष्ट किया गया है।

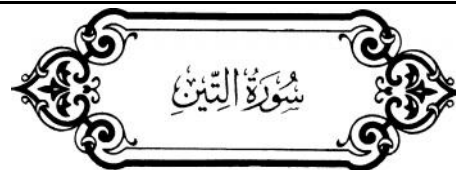
कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में उन स्थलों को शहादत में पेश किया गया है जो अत्यन्त शान और आदर वाले पैगम्बरों की याद ताज़ा करते हैं और जहाँ से हिदायत की रौशनी फैली।

आयत ४ से ६ में यह हक़ीक़त बयान की गई है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त (बनावट) पर पैदा किया है ताकि वह अपने को उस ऊँचे स्थान के योग्य

साबित करे जहाँ उस का रब उसे पहुँचाना चाहता है, मगर उस ने पस्ती (गिरावट) की राह अपनायी इस लिए अल्लाह तआला ने उसे बेहद पस्ती के गढ़े में फेंक दिया। अलबत्ता जिन लोगों ने अपने को उच्च स्थान के योग्य साबित कर दिया वह अपने मक़सद में कामयाब हुए। उन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से कभी न ख़त्म होने वाले इनाम का वादा है।

आयत ७ और ८ में इस बात पर ग़ौर करने का न्यौता दिया गया है कि जब इन्सानों में यह दो अलग अलग और विपरीत कार्यपद्धति पाई जाती हैं तो दोनों का अन्जाम एक जैसा कैसे होगा? या यह बात किस तरह सही हो सकती है कि सिरे से कोई अन्जाम होगा ही नहीं। इस का मतलब तो यह हुआ कि अल्लाह के नज़दीक न्याय और इन्साफ़ नाम की कोई चीज़ नहीं है, हालाँकि यह बात सरासर अनुचित है क्योंकि अक्ल (बुद्धि) और प्रकृति दोनों की गवाही यह है कि अल्लाह तमाम हाकिमों से बड़ कर हाकिम है फिर जो सब से बड़ा हाकिम हो वह इन्साफ़ कैसे नहीं करेगा?

९५.सूरह अत् -तीन



आयतें : ८

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क़सम है,¹ इन्जीर और ज़ैतून की,²

وَالَّتَيْنِ وَالزَّيْتُونِ ①

2. और तूरे-सीनीन की,³

وَطُورِ سِينِينَ ②

3. और इस अमन वाले शहर की,⁴

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ③

4. निस्संदेह हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त (बनावट) पर पैदा किया।⁵

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ④

5. फिर उसे पस्त तरीन (सब नीचों से नीच) हालत की तरफ़ फेर दिया,⁶

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ⑤

6. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और नेक अमल (सुकर्म) करते रहे उन के लिए ऐसा इनाम है जिस का सिलसिला कभी ख़त्म न होगा।⁷

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ⑥

7. तो (ऐ पैगम्बर !) इस के बाद कौन है जो तुम्हे जज़ा और सज़ा के मामले में झुठलाता है?⁸

فَمَا يَكْذِبُكَ بَعْدَ الدِّبْرِ ⑦

8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ कर हाकिम नहीं ?⁹

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَكِمِينَ ⑧

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट १४

2. यहाँ इन्जीर और जैतून का वर्णन उस क्षेत्र के लिए संकेत है जहाँ यह दोनों चीज़ें अधिक मात्रा में पैदा होती हैं, अर्थात् बैतुलमुकद्दस की सरज़मीन। इस का समर्थन इस बात से भी होता है कि इस के बाद तूरे-सीना और अमन वाले शहर की क्रसम खायी गई है। इस मुनासिबत से इन्जीर और जैतून से मुराद उन की पैदावार का क्षेत्र ही हो सकता है।

फ़िलस्तीन की सरज़मीन इन्जीर और जैतून की पैदावार के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रही है, अतः पुराने नियम में है।

“क्यों कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है----- फिर वह गोहूँ, जौ, द्राक्षा (अंगूर) अंजीरों और अनारों का देश है और तलवाली जलपाई (रौगनदान जैतून) और मधु (शहद) का भी देश है।” व्यवस्थाविवरण ८: ७,८)

और नये नियम में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इंजीर के पेड़ के पास से गुज़रने और उस की मिसाल बयान करने का ज़िक्र कई जगहों पर हुआ है जैसे मरकुस रचित सुसमाचार के अध्याय ११: १२, १३, १४ में और लूका रचित सुसमाचार के अध्याय २१: २९ से ३३ में और जैतून के पहाड़ का वर्णन तो मौजूदा इन्जीलों में इतनी अधिकता से हुआ है कि उस के एक परिचित और प्रसिद्ध स्थान होने में किसी संदेह के पूर्व गुन्जाइश बाक़ी ही नहीं रहती। यह मशहूर पहाड़ येरुशलम के पूर्व की ओर है।

“Mount of Olives: -----A hill which is before Jerusalem on the east.” -(A Dictionary of the Bible. — p. 554).

इस पहाड़ पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले जाते और अपने शागिर्दों को शिक्षा देते। इस सिलसिले में आप ने अत्यन्त प्रभावपूर्ण भाषण दिये हैं जो मौजूदा इन्जील में नक़ल किये गये हैं और जो जैतून के पहाड़ पर दिये गये थे।

अतः इन्जीर के क्षेत्र में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जो दअवत पेश की और जैतून के पहाड़ पर आप ने जो पाठ दिया उस में आखिरत के इनाम और सज़ा की विस्तृत कल्पना प्रस्तुत की गई थी। मिसाल के तौर पर कुछ उदाहरण देखिए :-

“तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, धन्य हो तुम जो दीन हो। क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो, क्योंकि तृप्त किये जाओगे, धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि हंसोगे----- क्योंकि कि देखो तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है-----परन्तु हाय तुम

पर, जो धनवान हो, क्योंकि अपनी शान्ति पा चुके। हाय, तुम पर, जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होंगे। अफ़सोस तुम पर, जो अब हँसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे----- क्योंकि कि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जायेगा----- कोई अच्छा पेड़ नहीं। जो निकम्मा फल लाए और न तो कोई निकम्मा पेड़ है जो अच्छा फल लाए। हर एक पेड़ अपने अपने फल से पहचाना जाता है, क्योंकि कि लोग झाड़ियों से इन्जीर नहीं तोड़ते।” (लूका ६: २० से ४४)

“जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और आन्द्रियास ने अलग अलग जा कर उस से पूछा कि हमें बता कि ये बातें कब होंगी?-----उन दिनों में उस कलेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा और चाँद प्रकाश न देगा और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जायेंगी----- अतः इन्जीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो। जब उस की डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि शीष्म काल निकट है। इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हों लेंगी तब तक यह लोग जाते न रहेंगे। (यह पीढ़ी जाती न रहेगी) आकाश और पृथ्वी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता।” (मरकूम १३: ३ से ३२)

यह अनन्त दंड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।”(मत्ती २५: ४६)

बाइबिल के इन उदाहरणों में जैतून और इन्जीर दोनों का न केवल ज़िक्र मौजूद है बल्कि साथ ही क्रियामत और इनाम एवं सज़ा का बयान भी। कुर्आन का इशारा “तीन” और जैतून की क्रसम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इसी पाठ और इसी शिक्षा की ओर है। और ये शब्द संकेत के तौर पर इस लिए प्रयोग किये गये हैं ताकि वह माहौल चित्रित हो कर सामने आ जायें जिस में ईनाम और सज़ा का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत किया गया था और जहाँ इन्जिल नाज़िल हुई थी। यह वार्ता की एक भावपूर्ण शैली है ताकि बात अच्छी तरह मस्तिष्क में बैठ जायें।

3. इस का दूसरा नाम तूरे सीना है। कोहे-तूर जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम को शरीअत प्रदान हुई थी, प्रायद्वीप सीना में स्थित है। बनी इस्राईल मिश्र से निकलने के बाद सीना की पहाड़ियों में ठहरे हुए थे। तूरे-सीनीन से तौरात की ओर इशारा है जिस में विस्तार के साथ यह बात प्रस्तुत की गई थी कि क्रियामत के दिन इनाम और सज़ा का मामला ज़रूर पेश आयेगा।

4. मुराद शहर मक्का है जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के परिणाम अमन (शान्ति) वाला करार पाया और उस की यह हैसियत हमेशा बरकरार रही। यहाँ तक कि अज्ञानता काल (जाहिलियत के ज़माने) में भी यहाँ लड़ाई मना (वर्जित) थी। इस की यह विशेषता कि यह अमन वाला है इस बात की ओर दिशा दिखलाती है कि इन्सान की बुलन्दी का राज खुदा की ठहराई हुई मर्यादाओं का पास और लिहाज़ करने में है और उस की अवज्ञा इन्सान के लिए अपमान का कारण है।

“बलदिल अमीन” (अमन वाला शहर) इस बात का इतिहासिक प्रमाण है कि यहाँ से हिदायत की रौशनी फैली है। और हिदायत का एक महत्वपूर्ण अंश आख़िरत की जज़ा और सज़ा पर ईमान लाना था। और जो सहीफ़ा (पवित्र ग्रंथ) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया गया था उस में जज़ा और सज़ा का यह तसव्वुर शामिल था। (देखिए सूरह आला फुट नोट १९)

5. बेहतरीन साख़्त पर पैदा करने का मतलब यह है कि जिस उद्देश्य के लिए इन्सान को पैदा किया गया है उस के लिहाज़ से उसे अत्यन्त उचित साख़्त (बनावट) प्रदान की गई है। शरीर भी बहुत ही उच्च कोटि का दिया गया है और उस में क्षमता और योग्यता भी उच्च कोटि की रख दी गई है। फिर बुद्धि एवं विवेक और ज्ञान एवं नीति की प्रतिभाओं ने तो गोया उस के सर पर अशरफ़ुल मख़लूक़ात (तमाम सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ) का ताज रख दिया है। वह न पैदाइशी गुनहगार है और न उस का स्वभाव बुराइयों को पसन्द करता है बल्कि सत्य यह है कि उसे बिल्कुल उचित, सीधी और सुदृढ़ प्रकृति पर पैदा किया गया है। और भलाई और बुराई की पहचान उस को समर्पित कर दी गई है। भलाई की प्रवृत्ति उस के अन्दर अवश्य पाई जाती है लेकिन जहाँ तक उस की वास्तविक प्रकृति एवं स्वभाव का सम्बन्ध है वह भलाई को ही पसन्द करने वाला है।

इन्सान को यह बेहतरीन साख़्त (बनावट) जो प्रदान हुई है वह एक अल्लाह की ज़बरदस्त कारीगरी और उस की दया का परिणाम है और अभिप्रेत यह है कि इन्सान इन प्रतिभाओं से काम लेकर वह ज़िम्मेदारियाँ पूरी करे जो खुदा ने उस के सुपुर्द की हैं और वह गुण अपने अन्दर पैदा करे जो इन्सानियत का कमाल (कौशल) हैं। ताकि वह आने वाले जीवन में अपने रब के कभी न ख़त्म होने वाले इनामों का अधिकारी ठहरे। स्पष्ट हुआ कि आख़िरत की जज़ा और सज़ा इन्सान के बेहतरीन साख़्त (बनावट) पर पैदा किए जाने का लाज़मी तक्राज़ा है। अतः कुआन का यह दावा कि जज़ा और सज़ा घटित होकर रहेगी। इस की सत्यता के प्रमाण हैं। और इस की यह दअवत कि इस कल्पना के आधार पर अपने जीवन संवारो, कोई

अनोखी दअवत नहीं है जो पहली बार प्रस्तुत की गई हो, बल्कि इस से पहले भी यही दअवत अम्बिया अलैहिस्सलाम पेश करते रहे हैं। अतः इन शान एवं आदर वाले पैगम्बरों ने जिन से बड़ी बड़ी मिल्लतें सम्बन्धित हैं अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने अनुयाईयों को इसी की शिक्षा दी थी। इन्जीर और ज़ैतून की सरज़मीन (बैतुलमक़दिस) गवाह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की अदालत के तसव्वुर को उजागर कर के पेश किया था। और ज़ैतून के पहाड़ पर अपने चेलों को यह शिक्षा दी थी कि तुम्हारे प्रयत्नों एवं संघर्ष का उद्देश्य आख़िरत की प्राप्ति होना चाहिए। जज़ा और सज़ा की हकीक़त इन्जील में बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से बयान हुई है।

इसी तरह तूरे-सीना गवाह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर जो किताब-तौरात-नाज़िल की गई थी। उस में भी इस हकीक़त को खोल कर बयान किया गया था। और आप ने बनी इस्राईल को जो पाठ कोहे-तूर के दामन में दिया था और उन से शरीअत की पाबन्दी का प्रण (अहद) लिया था उस में आख़िरत की जज़ा और सज़ा का यह बुनियादी तसव्वुर पूरी तरह शामिल था। और मक्का शहर का इतिहास गवाह है कि उस की नीव रखने वाले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जज़ा और सज़ा के तसव्वुर (कल्पना) ही की बुनियाद पर एक नये शहर एक नया समाज की आधार शिला रखी थी। इब्राहीमी ग्रंथ (सहीफ़े) में आख़िरत पर ईमान की दअवत स्पष्ट रूप से मौजूद थी और उन्होंने ने जो आवाज़ बुलन्द की वह आख़िरत की सफलता और मुक्ति की तरफ़ दौड़ने की ही आवाज़ थी। इन ऐतिहासिक तथ्यों से साबित होता है कि :-

प्रथम :- जिस तरह अम्बिया अलैहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दअवत दी थी उसी तरह इनाम और सज़ा पर विश्वास रखने का न्योता भी दिया था। हज़रत ईसा, हज़रत मूसा और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शिक्षा और निर्देश के जो केन्द्र स्थापित किये थे वह अपने अन्दर इस शिक्षा का ऐतिहासिक प्रमाण रखते हैं।

द्वितीय :- कर्मों के प्रतिफल का इन्कार, अम्बिया अलैहिस्सलाम को झुठलाने और उन की दअवत का इन्कार है।

तृतीय :- हर वह विचारधारा जो आख़िरत की जज़ा और सज़ा के ख़िलाफ़ हो चाहे वह संसार को लक्ष्य बनाने की विचार धारा हो या मरने के बाद इन्सान के किसी दूसरी सृष्टि के रूप में परिवर्तित हो जाने (आवागमन) की विचारधारा, जैसे जानवर या पेड़ इत्यादि बन जाने का ख़याल या फिर यह ख़याल कि मरने के बाद ज़िन्दगी हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, या यह वहम कि (नऊज़ुबिल्लाह) इन्सान मरने के बाद खुदा में

विलीन हो जाता है, वह गुमराही है जो इन्सान की सारी श्रेष्ठता को मिट्टी में मिलाकर रख देती है और उस की ज़िन्दगी को नाकाम बना कर उसे तबाही के घाट उतार देती है।

चतुर्थ:- ईनाम और सज़ा का तसव्वुर इन्सान को ज़िम्मेदार और चरित्रवान बनाता है एवं उस की योग्यताओं एवं प्रतिभाओं को परवान चढ़ाकर उसे वास्तविक उन्नति एवं प्रगति की राह पर लगा देता है।

पंचम :- यह ऐतिहासिक स्थल जहाँ महानुभाव पैगम्बर भेजे गये, इस बात पर गवाह हैं कि ये पवित्र आत्माएँ अखलाक और किरदार (नैतिकता एवं चरित्र) के ऊँचे मेयार पर थे और उन की बुलन्दी ने आसमान को छू लिया था। एवं जिन लोगों ने उस की दअवत को स्वीकार कर के कर्मों के प्रतिफल के आधार पर अपने चरित्र का निर्माण किया था वह सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गये। यह इस बात का अखण्डनीय प्रमाण है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को उत्तम योग्यताएँ एवं प्रतिभाएँ समर्पित कीं और वह तौहीद और आखिरत की बुनियाद पर जीवन व्यतीत कर के इन योग्यताओं और प्रतिभाओं को परवान चढ़ा सकता है और अपने को इतना ऊँचा उठा सकता है कि सुरैया (ऊँचाई पर रहने वाले सितारे) भी उस की बुलन्दी और उच्चता पर रश्क (ईर्ष्या सहित गर्व) करने लगे।

“उरूजे आदमे खाकी से अन्जुम सहमे जाते हैं

कि यह टूटा हुआ तारा महे कामिल न बन जाए ”

आयत १ से ३ में जो कसमें खायी गई हैं और आयत ४ में जो बात बयान हुई है उन के भेद और संकेत उन तमाम सच्चाइयों को अपने दामन में समेटे हुए हैं जिन को संक्षेप में हम ने ऊपर बयान किया है।

6. पस्त तरीन हालात से मुराद गिरावट और पतन की अन्तिम सीमा है। मतलब यह है कि जब इन्सान ने अपनी साख्त का आदर नहीं किया और उन क्षमताओं एवं योग्यताओं का सही इस्तेमाल नहीं किया जो उस को समर्पित की गई थीं और ऊपर उठने के बजाय उस ने गिरना चाहा तो अल्लाह ने उसे गिरावट की अन्तिम सीमा को पहुँचा दिया। परिणाम यह कि वह जहनुम की गहराईयों में जा गिरा।

मालूम हुआ कि इन्सान जब इस उद्देश्य को अपना लक्ष्य नहीं बनाता जिस के लिए उसे उच्चतम योग्यताएँ एवं प्रतिभाएँ प्रदान की गई हैं तो फिर वह इन्सानियत का अंश (Cream of Humanity) खो देता है और हैवान से भी बदतर साबित होता है। इसी लिए इन्सानी गिरावट की बदतरीन मिसालों से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं और ज़लील हरकतों और कमीनान

की ऐसी ऐसी घटनाएँ तज़रिबे में आती रहती हैं कि इन्सानित मातम करने लगती है। इबादत के पवित्र जज़्बे की यह तौहीन कि इन्सान ईंट पत्थर को माबूद (पूज्य) बना ले यहाँ तक कि लिंग को पूजने लगे। इन्सानों के खून का यह अनादर कि जानवर की क्रीमत और सम्मान इन्सानी जानों से भी अधिक क्रार पाये। महिलाओं पर यह अत्यचार कि पुरुष उन को अपनी हवस का निशाना बना लें। कमज़ोरों के अधिकारों की यह अवहेलना कि अनाथों का माल हड़प कर जाए। अपने स्वार्थ की यह सीमा कि ग़रीबों का खून चूसने लगे। इन्सानों का इस दर्जा अनादर कि उन को तकलीफ़ देने के दर्दनाक तरीक़े प्रयोग में लाए और मानव समाज का यह किरदार और उस के साथ ऐसी दुशमनी कि साइंस और टेकनोलाजी को उस की तबाही के लिए इस्तेमाल करे। यहाँ तक कि एक बम के धमाके में लाखों इन्सान मौत के घाट उतर जायें। यह और इस तरह की दूसरी ख़राबियाँ इन्सानी गिरावट के ऐसे सबूत हैं जिन का इन्कार नामुमकिन है।

7. अर्थात् जिन लोगों ने अपने बेहतरीन साख्त पर पैदा होने की क्रदर की और अपने को ईमान और नेक अमल से संवारा, वह पस्ती में गिरने से बच गये। उन्होंने अपनी सलाहिय्यतों का इस्तेमाल सही मक़सद के लिए किया और आखिरत की मन्ज़िल को सामने रखते हुए बुलन्दियों पर चढ़ने का हौसला किया। इस लिए वह आखिरत में अनन्त प्रतिफल के अधिकारी होंगे और कभी न ख़त्म होने वाले इनाम से पुरस्कृत किये जाएंगे।

8. अर्थात् इस स्पष्ट और सुदृढ़ तर्क के सामने आ जाने के बाद क्रियामत और कर्मों के फल के बारे में पैगम्बर को झुठलाने का क्या औचित्य है? अतः जो लोग इस के बावजूद पैगम्बर को झुठलाने में लगे हुए हैं वह अपने ही असत्य और अनुचित होने का सबूत दे रहे हैं।

9. अर्थात् खुदा का सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम होना एक अखण्डनीय वास्तविकता है क्योंकि आसमान और ज़मीन, इन्सान और फ़रिशते एवं ज़िन्न सब पर उस की हुकूमत (सत्ता) क़ायम है। फिर क्या तुम उस से यह आशा रखते हो कि वह अच्छे और बुरे इन्सानों में फ़र्क़ न करेगा? उस के नज़दीक़ इन्साफ़ कोई चीज़ नहीं, और वह कभी अदालत बरपा नहीं करेगा? वह न मुजरिमों को सज़ा देगा और न नेकी करने वालों को ईनाम? जब तुम दुनिया के हाकिमों से इन्साफ़ की आशा रखते हो तो अल्लाह तआला के बारे में जो सब शासकों का शासक है, यह विचार करना कैसे सही हो सकता है कि वह कभी न्याय करने वाला नहीं है और न ईनाम और सज़ा की कोई हक़ीक़त है।

सूरह
अल्-अलक्र

१६. अल्-अलक्र

नाम :- आयत २ में इन्सान के “अलक्र” (खून की फुटकी) से पैदा किये जाने का जिक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-अलक्र” है। और इस का दूसरा नाम “इक्रा” (पढ़) भी है। इस मुनासिबत से कि सूरह की शुरुआत इसी लफ़्ज़ से हुई है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और पहली व्हय जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई वह इस सूरह की शुरू की पाँच आयतें थीं। शेष आयतें बाद में उस समय नाज़िल हुई जब कि अबू जहल ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदे-हराम में नमाज़ पढ़ने से रोकने की कोशिश की और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खुली मुख़ालफ़त पर उतर आया।

केन्द्रीय विषय :- यह है कि यह किताब कायनात (ब्रहमाण्ड) के रचयिता का हुक्मनामा है जो इन्सान की रहनुमाई के लिए पैग़म्बर पर नाज़िल हुआ है ताकि वह इस की रौशनी में अपने रब की बन्दगी करे और उस का सान्निध्य (Nearness या कुर्ब) प्राप्त करे। लेकिन इन्सान का हाल अजीब है, बजाय इस के कि वह इस सौभाग्य को प्राप्त करता, अपने रब से सरकशी करने लगता है और पैग़म्बर के विरोध पर उतर आता है इस तरह

अपना अगला जीवन जो परलोक में मिलने वाला है, ख़राब करता है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में कुर्आन पढ़ने की हिदायत (निर्देश) की गई है और इसी परिवेश में इन्सान के रचयिता की चमत्कृति का वर्णन करते हुए जो उस की रचना एवं सृष्टि में प्रमुख और स्पष्ट है, वास्तविक ज्ञान की दौलत से पुरस्कृत किये जाने की खुशख़बरी सुनाई गई है।

आयत ६ से ८ में इन्सान को इस बात पर तंबीह की गई है कि वह इन नेमतों की क्रदर करने के बजाय उल्टा अपने रब से सरकशी करता है हालाँकि पहुँचना उसे अपने रब ही के पास है।

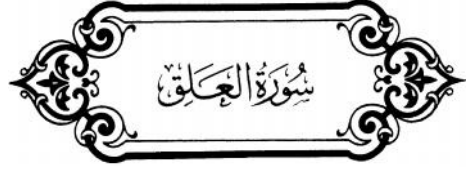
आयत ९ ता १४ में उन लोगों की सरज़निश (तंबीह) की गई है जो पैग़म्बर की मुख़ालफ़त पर उतारू हो गये हैं। और आप की राह में तरह तरह की रूकावटें पैदा कर रहे थे।

आयत १५ से १८ में सरकशों को उन के बुरे अन्जाम से आगाह किया गया है।

आयत १९ में पैग़म्बर को और उस के माध्यम से ईमान वालों को हिदायत (आदेश एवं निर्देश) की गई है कि इन सरकशों की बात न मानों और अल्लाह की बन्दगी में लगे रहो।



९६.सूरह अल् -अलक्र



आयतें : १९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. पढ़ो ¹ अपने रब के नाम से ² जिस ने पैदा किया।³

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝۱

2. पैदा किया इन्सान को जमे हुए खून से।⁴

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝۲

3. पढ़ो,⁵ और तुम्हारा रब बड़ा करीम (कृपालु) है।⁶

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝۳

4. जिस ने क़लम के द्वारा इल्म (ज्ञान) सिखाया,⁷

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝۴

5. इन्सान को वह इल्म (ज्ञान) दिया जो वह नहीं जानता था।⁸

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝۵

6. मगर इन्सान का हाल यह है कि वह सरकशी करता है,⁹

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِيَطْغَىٰ ۝۶

7. इस आधार पर कि वह अपने को बेनियाज़ (निष्काम) समझता है।¹⁰

أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝۷

8. (जब कि) यह बात निश्चित है कि तुम्हारे रब ही की तरफ़ लौट कर जाना है।¹¹

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝۸

9. तुम ने उस व्यक्ति को देखा जो रोकता है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝۹

10. एक बन्दे को जब कि वह नमाज़ पढ़ता है?¹²

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝۱०

1. यह शुरु की पाँच आयतें पहली वहय है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई जब कि आप ग़ारे-हिरा (हिरा की गुफा) में जो मक्का से तीन मील के फासले पर है, अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से ठहरे हुए थे। यह रमज़ान के महीने की कोई रात थी और उस समय आप की आयु ४० साल थी। ईसवी सन के हिसाब से यह ६१० A.D. की घटना है। बुख़ारी में यह घटना विस्तार से बयान हुई है जिस का सारांश यह है कि ग़ारे हिरा (गुफा) में अचानक फ़रिश्ता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने प्रकट हुआ और उस ने कहा **اقْرَأْ** इकरा” (पढ़ो) आपने कहा “मा अना बिक़ारी **مَا أَنَا بِقَارِي** (मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ) इस के बाद आप फ़रमाते हैं कि मुझे फ़रिश्ते ने पकड़ कर ज़ोर से दबाया यहाँ तक कि मेरी सहनशक्ति ज़वाब देने लगी। फिर उस ने मुझे छोड़ा और कहा “पढ़ो” मैं ने कहा “मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ” उस ने दूसरी बार मुझे दबाया इतना कि मेरा सहन करना मुश्किल हो गया। फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा “पढ़ो” मैं ने कहा “मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ” उस ने तीसरी बार मुझे दबाया यहाँ तक कि मेरा सहन कर पाना मुश्किल हो गया फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा **اقْرَأْ بِسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ** (पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया) यहाँ तक कि उस ने **مَا لَمْ يَعْلَمْ** तक की आयतें पढ़ी।

(बुख़ारी बिदुल वहय किताबुतफ़सीर)

इस तरह कुर्आन के नाज़िल होने की शुरुआत हुई और आप को नुबुव्वत का दायित्व सौंपा गया। यह मामला अचानक पेश आया था। इस से पहले यह बात आप के ध्यान और कल्पना में भी नहीं थी कि आप को नबी नियुक्त किया जाने वाला है। अलबत्ता नुबुव्वत से पहले भी आप शुद्ध हृदयता से मात्र आल्लाह तआला की इबादत (उपासना) करते रहे, और यह इबादत की लगन ही थी जो आप को ग़ारे हिरा में ख़ींच लायी ताकि आप पूरी एकाग्रता के साथ इबादत में लीन हो जाएँ। जिस फ़रिश्ते को आप ने देखा वह जिब्राईल हैं जो अल्लाह तआला का कलाम लेकर आये थे। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी थे अर्थात् आप ने पढ़ना लिखना नहीं सीखा था इस लिए अल्लाह के कलाम को पढ़ने के सिलसिले में कठिनाई महसूस किया। लेकिन जब फ़रिश्ते ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तीन बार दबाया तो आप की कठिनाई दूर हो गई और अल्लाह के कलाम को समझ लेने (Grasping) और पढ़ने की असाधारण क्षमता पैदा हो गई।

इस से यह बात बिलकुल साफ़ हो जाती है कि यहाँ जो पढ़ने का हुक्म दिया गया है इस से तात्पर्य कुर्आन का पढ़ना है जो हिदायत की किताब है। जो लोग कुर्आन के पहले

सम्बोधित (Addressees) थे उन की ज़बान अरबी थी और क़र्आन अरबी में ही नाज़िल हो रहा था। इस लिए पढ़ने का हुक्म उन के लिए समझ कर पढ़ने के समानार्थ था लेकिन जिन की ज़बान अरबी नहीं है उन के लिए इस हुक्म की अनिवार्य माँग (लाज़मी तक्राज़ा) यह है कि वह कुर्आन के मूल को पढ़ते हुए उस के अर्थ और भाव को भी समझने का प्रयत्न करें। जो किताब हिदायत के लिए नाज़िल की गई है उस को आदमी जब तक समझ कर नहीं पढ़ेगा, उस की हिदायत एवं ख़ैर और बरकत से किस तरह लाभन्वित हो सकेगा? ध्यान रहे कि कुर्आन पढ़ने का यह हुक्म अरब वासियों या मुसलमानों के लिए विशेष नहीं है बल्कि इस हुक्म का सम्बोधित (Addressee) हर वह व्यक्ति है जिस तक यह किताब पहुँचे। क्यों कि यह किताब इन्सान के ख़ालिक (रचयिता) ने इन्सान की हिदायत के लिए नाज़िल की है। इन्सानों के किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं और चूँकि यह क्रियामत तक के लिए हिदायत है इस लिए क्रियामत तक पैदा होने वाले सारे इन्सान इस हुक्म (आदेश) के सम्बोधित (Addressee) है अगर एक दोस्त के ख़त को किसी दूसरी ज़बान में पाकर आदमी के अन्दर उसे समझने की बेचैनी पैदा होती है तो इस से कहीं अधिक बेचैनी आदमी को अपने ख़ालिक (रचयिता) का हिदायत नामा समझने के लिए होगी जो यद्यपि उस की अपनी भाषा में नहीं है मगर उस को समझने के लिए साधन एकत्रित कर दिये गये हैं। बस शर्त यह है कि उस के अन्दर इन्सानियत ज़िन्दा हो।

2. अर्थात् अपने रब का नाम ले कर कुर्आन पढ़ो। बिस्म का “ब” बा-ए-इस्तिआनत है जो इस बात की ओर संकेत कर रहा है कि कुर्आन पढ़ना खुदा की तौफ़ीक़ पर निर्भर है अतः इस का प्रारम्भ करते हुए अपने रब से सहायता माँगी जाये। इस आदेश के पालन की विधि भी अल्लाह तआला ने बता दी है और वह है **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**

“बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम” का पढ़ना। इस लिए सूरह फ़ातिहा जो कुर्आन की प्रस्तावना अथवा भूमिका है और दूसरी तमाम सूरतों की शुरुआत सिवाय सूरह “तौबा” के **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम “अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से” ही होती है।

कुर्आन को अल्लाह के नाम से जो प्रस्तुत किया गया है वह वास्तव में इस सत्यता को प्रदर्शित करता है कि यह किताब शब्द शब्द अल्लाह की वाणी (कलाम) है। पैगम्बर की अपनी वाणी नहीं और यह हर तरह की मिलावट से पवित्र है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट नं. १)

3. अर्थात् जिस ने तमाम कायनात (संपूर्ण ब्रह्माण्ड) को पैदा किया।

4. जमे हुए खून से मुराद गर्भाधान अर्थात् शुक्राणु (Ovum) के मिलाप (Fertilize) होने के बाद की वह स्थिति है जब कि इन्सान अपनी रचना के आरम्भिक चरण में होता है। और उस की शक्ल जमे हुए खून की सी होती है।

यहाँ इस के वर्णन से इस वास्तविकता की और ध्यानाकर्षित करना अभिप्रेत है कि इतनी तुच्छ वस्तु से मानव जैसी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि को बना कर खड़ा कर देना सृष्टा की विशाल क्षमता, सर्वोच्च नीति, उस के चमत्कारों और अत्यन्त कृपाओं एवं मेहरबानियों पर प्रमाणित है।

5. इक्रा **إِفْرَا** अर्थात् पढ़ने का हुक्म यहाँ दोबारा दिया गया है। जिस से आग्रह एवं चेतावनी भी अभिप्रेत है और कुर्आन के महत्व की अभिव्यक्ति भी कि यह अपनी तरह की अकेली किताब है जो बार बार पढ़े जाने योग्य है और तुम्हें ताकिदी आदेश दिया जा रहा है कि इसे एक बार नहीं बार बार पढ़ो।

6. अल्लाह तआला की सिफ़त “अकरम” बयान हुई है जिस का मतलब यह है कि वह बड़े सम्मान वाली और बुलन्द हस्ती है और वह बन्दों के पक्ष में अत्यन्त परोपकारी है। यहाँ इस सिफ़त के वर्णन से अभिप्रेत इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति है की अपने अस्तित्व के एतिबार से अल्लाह तआला ही सम्मान वाला और सर्वोच्चता प्राप्त है। इन्सान की रचना तो अत्यन्त तुच्छ तत्वों से हुई है इस लिए उसे अहं और घमंड में डूबना नहीं चाहिए। इसी तरह इन्सान को यह एहसास दिलाना भी अभिप्रेत है कि अल्लाह तआला ने उस पर यह कितना बड़ा एहसान किया है कि सर्वश्रेष्ठ सृष्टि बना कर उस की हिदायत और संमार्ग का सामान किया।

7. अर्थात् क़लम इल्म (ज्ञान) के प्रकाशन एवं प्रसार का सुरक्षित और महत्वपूर्ण साधन है। यह साधन अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है। और इस नेमत का बेहतरीन इस्तेमाल यह है कि कुर्आन लिपिबद्ध किया जाए। चूँकि कुर्आन एक ऐसी क़ौम पर नाज़िल किया जा रहा था जो उम्मी (अनपढ़) थी इस लिए क़लम (लेखन क्रिया) का महत्व स्पष्ट किया गया ताकि अब उसे कुर्आन के प्रकाशन एवं प्रसार की जो सेवा करनी है और उस में लिपि एवं लेखन क्रिया का जो स्थान है उसे वह महसूस करे और इस के लिए क़मर कस ले। अतः आगे चलकर शिक्षा के मैदान में उस ने जो उन्नति की और कुर्आन को लिपिबद्ध कर के उस के प्रकाशन से सम्बन्धित जो बहुमूल्य सेवा की वह इसी रब्बानी हिदायत के प्रभाव एवं परिणाम थे।

8. अर्थात् यह अल्लाह तआला के करम (कृपा) की शान है कि उस ने तुच्छतम तत्व से उच्चतम गुणों की रचना खड़ी कर

दी जिस का एक प्रमुखतम गुण उस का ज्ञान वाला होना है।

“वह इल्म (ज्ञान) दिया जो वह नहीं जानता था” से तात्पर्य ग़ैब की (आँखों से ओझल रहने वाली वास्तविकताओं का वह ज्ञान है जो वहय द्वारा इन्सान को दिया गया। यह वास्तविक और मौलिक ज्ञान है जो कुर्आन के रूप में मनुष्य को प्रदान हुआ है। और इसी पर उस की उन्नति और सफलता का दारोमदार है। अर्थात् कुर्आन का अवतरण, मनुष्य पर अल्लाह तआला का सब से बड़ा एहसान है। अतः सूरह “रहमान” में इस को अपनी रहमत की सब से बड़ी दया एवं उपकार ठहराया है।

الرَّحْمَنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ “रहमान ने कुर्आन सिखाया” और इस का ज़िक्र इन्सान की पैदाइश के ज़िक्र से पहले किया है।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ “इन्सान को पैदा किया” ताकि स्पष्ट हो कि उस की पैदाइश का मक़सद हिदायत की प्राप्ति है जिस का स्रोत कुर्आन है।

9. अर्थात् बजाय इस के कि इन्सान अल्लाह की इस नेमत का मूल्य समझता और उस का आदर करता, उस से सरकशी करने लगता है।

10. अर्थात् इस सरकशी का कारण यह है कि वह अपने को खुदा से बेपरवाह समझने लगता है। इन्सान चाहता है कि वह मनमानी करने के लिए आज़ाद रहे इस लिए उसे न खुदा की परवाह होती है और न उस की हिदायत की। तथा अगर उसे माल और दौलत एवं पद और सम्मान भी प्राप्त हो तो फिर उस के अन्दर अहंता मनोवृत्ति बड़ी तेज़ी से पैदा होने लगती है और वह खुदा के विरुद्ध सरकशी पर उतर आता है।

11. अर्थात् खुदा से बेपरवाह हो कर के कोई व्यक्ति भी अपने को अल्लाह की अदालत में उपस्थिति से बचा नहीं सकता। वहाँ उसे मालूम हो जायेगा कि इस सरकशी का क्या नतीजा निकला।

12. इशारा है इस घटना की ओर जो हदीस में बयान हुई है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बअसत (नबी नियुक्त होने) के बाद जब मस्जिदे-हराम में नमाज़ अदा करने लगे तो अबू जहल ने जो बड़ा सरकश था आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नमाज़ से रोकने की कोशिश की लेकिन उस में कामयाब न हो सका।

इस प्रमुख घटना की ओर इशारे के अलावा आयत का सामान्य अर्थ यह है कि जो व्यक्ति भी जिस किसी बन्दे को नमाज़ से रोकता है वह एक बेहूदा हरकत करता है जो हर तरह से निन्दनीय है।

तुम ने सोचा अगर वह (बन्दा) हिदायत पर हो, या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। तुम ने सोचा अगर यह (रोकने वाला व्यक्ति) झुठलाता और मुँह मोड़ता हो ! क्या उसे नहीं मालूम कि अल्लाह देख रहा है ? ख़बरदार ! अगर वह बाज़ न आया तो हम उस की पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे, झूठी और ख़ताकार (दोषी) पेशानी। अतः वह बुलाले अपनी टोली को, हम भी बुलाते हैं अज़ाब (यात्ना) के फ़रिश्तों को, ख़बरदार ! उस की बात न मानें और सजदा करो और कुर्ब (सान्निध्य) हासिल करो। (अल-कुआन)

11. तुम ने सोचा अगर वह (बन्दा) हिदायत पर हो, أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَى ۝
12. या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَى ۝
13. तुम ने सोचा अगर यह (रोकने वाला व्यक्ति) झुठलाता और मुँह मोड़ता हो !¹³ أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝
14. क्या उसे नहीं मालूम कि अल्लाह देख रहा है ?¹⁴ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَى ۝
15. ख़बरदार ! अगर वह बाज़ न आया तो हम उस की पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे,¹⁵ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝
16. झूठी और ख़ताकार (दोषी) पेशानी।¹⁶ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝
17. अतः वह बुलाले अपनी टोली को,¹⁷ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝
18. हम भी बुलाते हैं अज़ाब (यात्ना) के फ़रिश्तों को,¹⁸ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝
19. ख़बरदार ! उस की बात न मानों¹⁹ और सजदा करो²⁰ और कुर्ब (सान्निध्य) हासिल करो।²¹ كَلَّا لَا تَطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝^{الْحَدِيثُ} ۝

13. इन आयत में कुर्आन के हर संबोधित (Addressee) को यह सोचने का निमंत्रण दिया गया है कि एक तरफ अल्लाह का वह बन्दा है जो स्वयं सीधी और दुरुस्त राह पर है और दूसरों को खुदा से डरने और उस की अवज्ञा से बचने का उपदेश देता है और दूसरी ओर वह व्यक्ति है जिस का काम सत्य को झुठलाना और उस से मुँह मोड़ना है तो बताओ इन में से किस का रवैया सही है? और फिर अगर यह झुठलाने वाला व्यक्ति इस्लाम दुश्मनी में अन्धा हो कर उस नेक बन्दे पर अत्याचार कर रहा हो और उस की राह में रुकावटें पैदा कर रहा हो तो उस की यह हरकत कैसी है?

पृष्ठ भूमि के लिहाज से इन आयात का इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू जहल की तरफ है मगर अपने भावार्थ के लिहाज से यह सभी के लिए है। जो व्यक्ति भी इस्लाम दुश्मनी में किसी नेक बन्दे को सत्यमार्ग से रोके उस की यह हरकत उसी तरह निन्दनीय है जिस तरह कि अबू जहल की हरकत निन्दनीय थी।

14. अर्थात् क्या यह अत्याचार करने वाला व्यक्ति इस बात से बेखबर है कि अल्लाह यह सब कुछ देख रहा है। और जब वह ज़ालिम और मज़लूम एवं कुकर्मों और सुकर्मों को देख रहा है तो वह ज़ालिम को सज़ा कैसे नहीं देगा और मज़लूम की फ़रयाद कैसे नहीं सुनेगा? क्या जिस हस्ती की नज़र उस के बन्दों और उन की तमाम हरकतों, आदतों एवं तौर तरीक़ों पर हो, उस के नज़दीक उस की बन्दगी करने वाले और उस की बन्दगी से रोकने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं? अगर ऐसा नहीं है और निस्सन्देह ऐसा नहीं है तो इस का अनिवार्य तक्राज़ा यह है कि इन्साफ़ का एक दिन बरपा हो।

15. अर्थात् यह सरकश अगर अपनी इन हरकतों से बाज़ नहीं आया तो वह दिन आता है जब कि फ़रिश्ते उस के मस्तक (पेशानी) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। सूरह रहमान में मुज़रिमों के बारे में फ़रमाया है कि :-

فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ- (الرّحمن: ३)

(उन के मस्तकों (पेशानियों) के बाल और उन की टाँगें पकड़ कर घसीटा जायेगा)

सरकश बड़े घमण्ड में लिप्त होते हैं और उन के दिमाग़ में ये हवा भर जाती है कि वह बड़े लोग हैं, इस लिए उन को क्रियामत के दिन यह अपमानजनक यात्ना (अज़ाब) दी जायेगी कि फ़रिश्ते उन की पेशानियों (मस्तकों) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे और उन्हें जहन्नम में झोंक देंगे।

16. झूठी और दोषी पेशानी (मस्तक) इस लिए कहा कि जो पेशानी अपने पैदा करने वाले के सामने न झुकी और दूसरों को भी उस के सामने झुकने से रोकती रही उस के झूठी और

दोषी होने में क्या संदेह हो सकता है।

17. इशारा है अबू जहल की उस धमकी की तरफ़ कि इस वादी (क्षेत्र) में मेरी टोली के लोग अधिक हैं।

18. अर्थात् अगर किसी को अपनी टोली के लोगों पर गर्व है तो वह उन को अपने समर्थन एवं सहायता के लिए बुला लें, हम भी अपनी पुलिस (जबानियः) अर्थात् दोज़ख़ के फ़रिश्तों को बुलाते हैं। फिर वह देख ले कि उस के अन्दर कितना बल बूता है।

19. मतलब यह कि इन सरकशों की बातों में न आओ जो एक अल्लाह की बन्दगी से तुम्हें रोकना चाहते हैं।

20. सजदा के अर्थ झुकने के भी हैं और माथा ज़मीन पर टेक देने के भी। यहाँ सजदा करने का जो हुक्म दिया गया है उस का मतलब यह है कि एक अल्लाह ही के आगे झुको, उसी के आगे माथा टेको और उसी के लिए नमाज़ पढ़ो।

21. अर्थात् अपने रब की समीपता (Nearness) प्राप्त करो हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ- (مسلم کتاب الصلوة)

“बन्दा अपने रब के अधिक निकट सज्दे की हालत में होता है”।

स्पष्ट हुआ कि सजदा नमाज़ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्तंभ है, अल्लाह के सामीप्य एवं निकट (कुर्ब) का महत्वपूर्ण माध्यम है। क्योंकि सज्दे में इन्सान अपने माथे को जो शरीर का श्रेष्ठतम अंग है धरती पर रख देता है और खुदा की वर्चस्वता एवं महानता को स्वीकार करते हुए उस की पाकीज़गी बयान करता है।

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

इस से पहले की आयत में दोषी मस्तक का वर्णन था जिसे जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। उस की तुलना में यह आयत मोमिन के मस्तक (पेशानी) की ओर इशारा कर रही है जो खुदा के सामने झुकते (सजदा करते) रहने के कारण सम्मानजनक ठहराया जायेगा।

सूरह की शुरुआत कुर्आन पढ़ने के हुक्म से हुई थी और समाप्ति खुदा का सामीप्य एवं निकटता (कुर्ब) प्राप्त करने के हुक्म पर हुई है। इस से स्पष्ट हुआ कि कुर्आन पढ़ने का फल खुदा का सामीप्य एवं निकटता (कुर्ब) है। इस से ऊँचा कोई स्थान नहीं जिस की इन्सान कल्पना कर सके। और इस से बुलन्द कोई लक्ष्य नहीं जो प्राप्त किया जा सकता हो।

इस आयत पर सजदा करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है। (मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

सूरह
अल्-क्रद्र

९७. अल्-क्रद्र

नाम :- पहली आयत में कुर्आन के शबे-क्रद्रे (क्रद्र की रात) में नाज़िल होने का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-क्रद्र” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है जैसा कि इमाम सुयूती ने अल्इत्कान में पुष्टि की है (अल् इत्कान भाग १ पृष्ठ २२) एवं मज़मून से भी इस के मक्की होने का अन्दाज़ा होता है।

केन्द्रीय विषय :- कुर्आन के महत्व और उस की महानता को स्पष्ट करना है।

कुर्आन के नाज़िल होने की शुरुआत सूरह “अलक्” की आरम्भिक आयतों से हुआ था। इस सूरह में बताया गया है कि वह घड़ी अति शुभ थी जब कि कुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ।

कलाम की तरतीब :- सब से पहले इस महान ऐतिहासिक

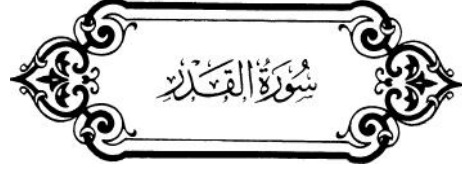
सच्चाई से आगाह किया गया है कि कुर्आन के अवतरण का आरम्भ अत्यन्त महत्वशाली विधि पर एक महामहिम रात्रि में किया गया। क्यों कि कुर्आन का अवतरण कोई मामूली बात नहीं है। बल्कि यह अल्लाह का वह ज़बरदस्त और बुलन्द फ़ैसला है जो क़ौमों की तक्रदीर बदलने वाला और मानवता के संसार की काया पलट देने वाला है।

इस के बाद बताया गया है कि इस रात की बरकतें क्या हैं और किस तरह यह रात सुबह तक सरासर सलामती (शान्ति) की रात होती है।

इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो किताब इस शान के साथ नाज़िल हुई है उस से बेरुखी बरतने वाले और इस को बेक़ीमत (मूल्यहीन) समझने वाले वही लोग हो सकते हैं जो इतने बड़े ख़ैर (भलाई) से अपने को महरूम (वन्चित) रखना चाहते हैं।

९७.सूरह अल् - क़द्र

आयतें : ५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हम ने इसे ¹ शबे-क़द्र (क़द्र की रात) में नाज़िल किया,²

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①

2. और तुम्हें क्या मालूम कि शबे-क़द्र क्या है ?³

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ②

3. शबे-क़द्र हजार महीनों से बेहतर है।⁴

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ③

4. इस में फ़रिश्ते और रूह (अल अमीन)⁵ अपने रब की अनुज्ञा से हर हुक्म (आदेश) को लेकर उतरते हैं।⁶

تَنْزِيلُ الْمَلَكِ وَالرُّوحُ فِيهَا يَأْذُنُ رَبَّهُمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ④

5. सरासर सलामती है वह रात तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक।⁷

سَلَامٌ شَتَّىٰ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑤

1. अर्थात् कुर्आन को,
 2. क़द्र का अर्थ क़द्र एवं मन्जिलत (मान एवं सम्मान) के हैं और शबे-क़द्र का अर्थ है मान और सम्मान वाली रात। यह वह रात है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली वहय नाज़िल हुई जब कि आप ग़ारे-हिरा (हिरा की गुफ़ा) में ठहरे हुए थे। चूँकि इस रात को यह शर्फ़ (श्रेष्ठता) हासिल है कि इस में कुर्आन के अवतरण (नाज़िल होने) का आरम्भ हुआ इस लिए इसे लैलतुल क़द्र **لَيْلَةُ الْقَدْرِ** (क़द्र की रात) के नाम की संज्ञा दी गई और सूरह “दुखान” में “लैलतिमुबारकः” **لَيْلَةُ الْمُبَارَكَةِ** (मुबारक रात) भी कहा गया है। यह ऐसी ही बात है जैसे उन दिनों को मनहूस करार दिया गया जिन में “आद” की क्रौम पर अज़ाब (प्रकोप) नाज़िल हुआ था।

فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحِسَاتٍ

“तो हम ने उन पर मनहूस दिनों में सख़्त तेज़ हवा भेज दी” (हा मीम सज्दा - १६)

साफ़ है इस आयत में मनहूस दिनों का मतलब यह नहीं है कि वह दिन स्वयं मनहूस थे बल्कि चूँकि उन दिनों में “आद” की क्रौम पर अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) नाज़िल हुआ था। इस लिए वह दिन उस क्रौम के लिए मनहूस करार पाये। इस की दूसरी मिसाल रमज़ान का महीना है कि उस की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) और बरकत इस कारण है कि इस में कुर्आन नाज़िल हुआ, इसी तरह लैलतुलक़द्र (क़द्र की रात) की फ़ज़ीलत और बरकत इस आधार पर है कि इस में कुर्आन के अवतरण का सिलसिला शुरू हुआ।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ

“रमज़ान का महीना जिस में कुर्आन नाज़िल किया गया” (बक्ररह - १८५)

यह रात जैसा कि सही हदीसों में आता है कि रमज़ान के आख़िरी अशरे (अन्तिम दहाई) की एक रात थी।

ध्यान रहे कि लैलतुलक़द्र में कुर्आन के नाज़िल होने का यह मतलब नहीं है कि इस रात पूरा कुर्आन नाज़िल हुआ। बल्कि मतलब यह है कि इस पवित्र किताब के नाज़िल होने की शुरुआत इसी रात में हुई। अर्थात् अल्लाह की रहमत इसी रात को जोश में आयी और हिदायत के स्रोत इसी रात में फूट पड़े।

कुर्आन के अवतरण के लिए दिन के बजाए रात का चुनाव हिकमत से खाली नहीं है। रात का समय शान्ति और संतोष का समय होता है। यही शान्तिमय समय आत्मा के विकास (रूह की बालीदगी) के लिए बहुत उचित होते हैं और विशेष कर रात का आख़िरी हिस्सा तो अल्लाह से प्रार्थना और उस से क्षमायाचना

के लिए अत्यंत उचित समय होता है। इसी लिए कुर्आन और हदीस से रात के आख़िरी हिस्से में नमाज़ और दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है और संभव है कि कुर्आन का अवतरण भी रात के आख़िरी हिस्से में हुआ हो।

3. यह सवाल लैलतुल क़द्र की अज़मत और बरकत (Greatness & Importance) स्पष्ट करने के लिए है। एवं इस का इशारा इस बात की तरफ़ भी है कि इस रात का मामला ग़ैब के भेदों में से है इस लिए इस के बारे में वहय द्वारा जो कुछ बताया गया है उस से अधिक विस्तार की जानकारी का इन्सान के पास कोई साधन नहीं। अतः इस रात का ठीक ठीक निर्धारण करना इन्सान के बस की बात नहीं है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान के आख़िरी दहाई (अशरा) की ताक़ (विषम या Odd) रातों में उसे तलाश करने का जो हुक्म दिया है उस को काफ़ि समझना चाहिए।

4. हज़ार महीनों की व्याख्या ख़ैर और बरकत की अधिकता को स्पष्ट करने के लिए है। मतलब यह है कि यह रात अपनी इस विशेषता और श्रेष्ठता के आधार पर कि इस में इन्सान को हिदायत समर्पित किये जाने का हिकमत भरा (नीतिपूर्ण) फैसला हुआ और कुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नुबुव्वत सौंपी गयी, दूसरी हज़ारों रातों बल्कि हज़ारों महीनों पर भी भारी है। और जब ज़र्फ़ (रात) इस श्रेणी की है तो मज़रुफ़ (कुर्आन) किस श्रेणी का होगा।

इस रात ने अपनी बरकतों के ख़जाने तो उस वक़््त खोल दिये थे जब कि फ़रिश्ता ग़ारे-हिरा (हिरा की गुफ़ा) में पहली बार वहय लेकर आया था। लेकिन उस की बरकतें स्थायी रूप से बाक़ी रह गई। अतः हर साल रमज़ान के महीने में “कुर्आन के अवतरण” नुज़ूले-कुर्आन की यादगार (स्मृति) के तौर पर उसे मनाया जाता और उस के मनाने का प्रारूप यह होता है कि उस में नमाज़, तिलावते-कुर्आन और ज़िक्र एवं दुआ का अधिक से अधिक आयोजन किया जाता है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

مَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا
 غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ -

“जिस व्यक्ति ने ईमान के साथ और अल्लाह से अन्न (इनाम पाने) की उम्मीद पर शबे-क़द्र में इबादत की उस के तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गये” (बुख़ारी किताब, सलातुत्तरावीह)

जिस तरह कि बारिश का मौसम खेती के लिए उचित और अनुकूल होता है उसी तरह अल्लाह के नज़दीक, उस के सामीप्य (कुर्ब) के लिए शरीअत के निश्चित किये विशिष्ट समय, विशिष्ट

दिवस और विशिष्ट रातें अत्यंत उचित और अनुकूल होती हैं। जैसे तहज्जुद (आधी रात के बाद और अरुणोदय से पहले) का समय, जुमे का दिन, अराफ़ात का दिन और रमज़ान का महीना इत्यादि। इसी तरह लैलतुलक़द्र अल्लाह के निकट (कुर्बे-इलाही) के लिए बेहतरीन, उचित और अतयन्त अनुकूल रात है इसी लिए हदीस में इसे रमज़ान की आखिरी दस रातों में तलाश करने का हुक्म दिया गया है।

عن عائشة رضى الله عنها ان رسول الله ﷺ
قال : تَحَرُّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوَتْرِ مِنَ الْعَشْرِ
الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ - (بخاری-کتاب صلاة التراويح)

“हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “शबे क़द्र को रमज़ान के आखिरी अशरे (दस दिनों) की ताक़ रातों में तलाश करो। (बुख़ारी)

ताक़ (विषम) रातों से मुराद रमज़ान की इक्कीसवीं, तेइसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताइसवीं और उन्तीसवीं रात है। किसी एक रात को इस लिए निर्धारित नहीं किया गया कि उस की तलाश का शौक़ पैदा हो और लोग कई रातें इबादत में गुज़ारें। इस पहलू से एतिकाफ़ (मस्जिद में निश्चित समय के लिए ठहरने) की मसलहत भी स्पष्ट है जो रमज़ान के आखिरी अशरे (दहाई) में किया जाता है।

रहा यह सवाल कि दुनिया के एक हिस्से में रात होती है तो दूसरे हिस्से में दिन। इस लिए जब मक्के में शबे क़द्र हो तो दूर के इलाक़े के लोग किस तरह उस को पा सकेंगे। इस का जवाब यह है कि शरीअत ने जिस घड़ी को बरकत वाली क़रार दे कर इबादत के लिए विशिष्ट किया है उस के सिलसिले में स्थानीय समय का एतिबार होगा। जैसे रात का आखिरी हिस्सा जो दुआ के कुबूल होने के लिए विशिष्ट है या जुमा का वक्त तो इस सिलसिले में स्थानीय समय ही का एतिबार किया जाता है और इसी के अनुसार नमाज़ वगैरा अदा की जाती है और इस से वह बरकतें गायब नहीं हो जाती जो विशिष्ट समय या विशिष्ट दिन के साथ होती हैं। इसी तरह शबे क़द्र की बरकतें भी स्थानीय समय का एतिबार करने के बावजूद बाक़ी रहती है और हर इलाक़े के लोग इसे पा सकते हैं।

5. रुह से तात्पर्य रूहुलअमीन हैं जो हज़रत ज़िब्रील का उपनाम है। उन का ज़िक्र विशेष रूप से इस लिए किया गया है कि वह फ़रिश्तों के सरदार हैं।

6. “तनज़ुल” (उतरते हैं) का प्रयोग तस्वीरे हाल के लिए हुआ है ताकि उस समय का दृश्य सामने आ जाए जब कि

फ़रिश्ते अल्लाह के कलाम को ले कर नाज़िल हो रहे थे। मतलब यह है कि जिस तरह किसी बादशाह के सिपाही शाही फ़रमान को ले कर किसी मुहिम (अभियान) पर दौड़ पड़ते हैं उसी तरह ज़िब्रील फ़रिश्तों की फ़ौज के साथ अल्लाह के फ़रमान को लेकर नाज़िल हुए थे और इस शान से नाज़िल हुए थे कि गोया रुहानी जगत में यह ज़ंशन कुर्आन की रात है।

हर हुक्म को लेकर नाज़िल होने का मतलब यह है कि शबे क़द्र में फ़रिश्तों का नुज़ूल (अवतरण) यँ ही नहीं हुआ था बल्कि अल्लाह तआला के हर हर हुक्म की तामील (पालन) के लिए हुआ था। उदाहरण के तौर पर यह कि कुर्आन की पाँच आयतों को जो सूरह अलक़ की आरम्भिक आयतें हैं नाज़िल करना मक्का के गारे-हिरा (हिरा की गुफ़ा) में नाज़िल होना, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य नाज़िल करना आप को नुबुव्वत से सुशोभित एवं अलंकृत करना, आप को पकड़ कर भीचना ताकि आप में वह्य को गृहण (Grasp) करने की और उस को स्वस्थ रूप में पढ़ने की क्षमता पैदा हो जाए इत्यादि। इन के अलावा ख़ैर और बरकत के नाज़िल होने के सिलसिले में फ़रिश्तों को जो आदेश दिये गये थे उन में से हर हर आदेश का पालन ठीक ठीक किया। इस लिए कुर्आन का अवतरण और नुबुव्वत से अलंकृत किये जाने का जो मामला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पेश आया उस पर कदापि संदेह नहीं किया जा सकता।

ध्यान रहे कि वह्य के आरम्भ होने के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिर्फ़ ज़िब्रील अलैहिस्सलाम दिखाई दिये थे। मगर जैसा कि यह आयत पुष्टी करती है उस रात में दूसरे फ़रिश्ते भी नाज़िल हुए थे। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए फ़रिश्ते को देखने का यह पहला मौक़ा था जिस को सहन कर ले जाना कोई आसान बात नहीं थी। इस लिए आप के सामने सिर्फ़ ज़िब्रील अलैहिस्सलाम को ज़ाहिर किया गया।

7. कुर्आन के अवतरण के अवसर पर आसमान पर सख़्त पहरे बिठा दिये गये थे ताकि शैतानों की टोली कुर्आन में ख़लल न पैदा कर सके और न उन्हें फ़रिश्तों से सुन गुन लेने का मौक़ा मिल सके। क्यों कि अगर इन्हें पैग़म्बर की नियुक्ति की ख़बर समय से पहले हो गई या जो संदेश पैग़म्बर (संदेशा) की तरफ़ भेजे जा रहे हैं उन की भनक उन्होंने पाई तो वह काहिनों (ज्योतिष्यों) के कानों में उल्टी सीधी बातें डाल कर ज़मीन पर उपद्रव बरपा करेंगे। अतः यह अल्लाह तआला के असाधारण प्रबन्ध का परिणाम था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति से पहले किसी को कानों कान ख़बर न हुई कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नबी बनाया जाने वाला है और

न कुआन के अवतरण से पहले किसी को यह खबर हुई कि उस रात को यह और यह पैगाम नाज़िल होने वाला है।

इस तरह अल्लाह तआला ने कुआन के नाज़िल होने वाली रात को हर तरह की आफ़तों से सुरक्षित रखने का सामान किया था और उस रात को पूर्ण रूप से सलामती (शान्ति) की रात बनाया था। और यह स्थिती थोड़ी देर के लिए नहीं बल्कि तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक रही क्योंकि यह शुभ रात कुआन करीम के उद्घाटन की रात थी और अब जो कुआन के अवतरण की यादगार (स्मृति) के तौर पर शबे क़द्र मनाई जाती है तो उस

में भी उस की सलामती और बरकते तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तर रहती है। इस लिए यह पूरी रात इस लायक है कि इबादत (उपासना) में गुज़ारी जाए।

शबे-क़द्र सरासर सलामती की रात थी और इस में जो किताब नाज़िल हुई वह भी सरासर सलामती ही की किताब है, यह इन्सानियत के लिए सलामती का पैगाम है। इस को स्वीकार करने वाले दुनिया में भी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और आख़िरत (परलोक) में इन्हें अबदी (अनन्त) सलामती नसीब होगी।



पहली वह्य (ईश-संदेश) जो शबे क़द्र में उतरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْبَرُ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

المعلق १०-५

९८. अल्-बैय्यिनः

नाम :- पहली आयत में अल्-बैय्यिनः (रौशन दलील) का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-बैय्यिनः रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के उस दौर में नाज़िल हुई जब कि अहले किताब (यहूदियों और ईसाईयों) और मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रसूल होना अच्छी तरह खुल गया था और इस के बावजूद उन्होंने इन्कार का रास्ता अपना लिया था।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में यह स्पष्ट किया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बना कर भेजने और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर किताब नाज़िल करने की क्या ज़रूरत थी।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में बताया गया है कि लोगों को कुफ़्र (इन्कार) की हालत से निकालने के लिए ज़रूरी था कि किताब के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह अल्लाह के दीन को सही रूप में प्रस्तुत करे।

आयत ४ और ५ में स्पष्ट किया गया है कि अहले किताब के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से खुली शिक्षाएँ आ चुकी थीं। लेकिन इस के बावजूद यह मतभेद और फूट में पड़ गये और दीन की वास्तविक शिक्षाओं को भुला बैठे।

आयत ६ से ८ में बयान किया गया है कि रसूल का इन्कार करने वाले कैसे भयावह अन्जाम से दोचार होंगे। इस के विरुद्ध रसूल पर ईमान लाकर खुदा से डरते हुए ज़िन्दगी बसर करने वाले किस तरह कामयाब और बामुराद होंगे।

इशदि-रसूल :- हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैइ बिन कअब से फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरह

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا

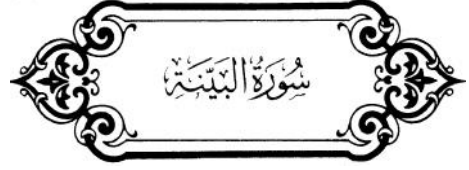
“लम् यकुनिल्लज़ीन कफ़रु” सुनाऊ। हज़रत उबैइ बिन कअब ने अर्ज किया, क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लेकर यह हुक्म दिया है। आप ने फ़रमाया, जी हाँ यह सुन कर हज़रत उबैइ बिन कअब की आँखें आँसूओं से तर हो गयीं। (बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर)

हज़रत उबैइ बिन कअब अहले किताब में से थे जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाये थे और चूँकि इस सूरह में इन ईमान लाने वालों के लिए खुशख़बरी है, इस लिए अल्लाह तआला ने उन की सराहना के लिए उन्हें यह सूरह सुनाने का हुक्म अपने नबी को दिया। और अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सम्मान देखकर हज़रत उबैइ बिन कअब रुदित हो गये जो ईमान की पहचान है।

९८.सूरह अल् - बैय्यिन:

आयतें : ८

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अहले किताब,¹ और मुश्रिकों² में से जिन्होंने कुफ़्र किया³ वह बाज़ आने वाले न थे जब तक कि उन के पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाता,⁴

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ
حَتَّى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①

2. (अर्थात्) अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो पाक सहीफ़े⁵ (पवित्र पृष्ठ) पढ़ कर सुनाये।

رَسُولٍ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ②

3. जिन में दुरुस्त एहकाम (बिलकुल ठीक आदेश) लिखे हुए हों।⁶

فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ ③

4. जिन लोगों को किताब दी गई थी, वह स्पष्ट हिदायत आ जाने के बाद ही फूट में पड़ गये।⁷

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ ④

5. हालाँकि उन को यही हुक्म दिया गया था कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें,⁸ दीन (आज़ापालन) को उस के लिए ख़ालिस कर के,⁹ रास्त रवी (सत्यनिष्ठा) के साथ¹⁰ और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें,¹¹ यही सही दीन है।¹²

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَا حُفَاءَ
وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيمَةِ ⑤

6. अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने कुफ़्र किया¹³ वह जहन्नम की आग में पड़ेंगे और हमेशा उस में रहेंगे। यह लोग बदतरीन मख़लूक हैं।¹⁴

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ⑥

7. निस्संदेह जो लोग ईमान लाये¹⁵ और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये वह बेहतरीन मख़लूक हैं।¹⁶

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ⑦

8. उन का बदला उन के रब के पास हमेशा रहने के लिए बाग़ है जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उन में सदा सर्वदा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी¹⁷ और वे उस से राज़ी ! यह (ईनाम) उस के लिए है जो अपने रब से डरे।¹⁸

جَزَاءُ وَّهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَدَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ⑧

1. अहले किताब से तात्पर्य यहूदी और ईसाई हैं जिन के पास अल्लाह की किताब-----परिवर्तन होकर सही मौजूद थी -----और जहाँ इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे तौहीद (एकेश्वरवाद) का सम्बन्ध है आज भी तौरात, ज़बूर और इन्ज़ील में यह स्पष्ट रूप से मौजूद है। यह और बात है कि परिवर्तन की वजह से उस में शिर्क (बहुदेववाद) की मिलावट भी हो गई है लेकिन यहूदी और ईसाई वास्तव में तौहीद को मानते थे और शिर्क उन के अन्दर ग़लत व्याख्या और बेजा बहानों के परिणाम स्वरूप आ गया था। वह आख़िरत और रिसालत के सिलसिले को भी मानते थे इस लिए कुर्आन ने इस ग़िरोह के लिए “अहले किताब” की परिभाषा प्रयोग की और उन के साथ मामला करने के सिलसिले में विशेष शर्इ आदेश भी दिये। जैसे, उन की औरतों से निकाह किया जा सकता है और उन का ज़बीहा (वध्व) अगर शर्इ तरीके पर हो-- खाया जा सकता है।

रहे दूसरे धर्मों के लोग तो चूँकि इन बुनियादी अक़ीदों (आस्थाओं) के सिलसिले में उन की धारणाएँ अत्यंत भिन्न थीं और उन के पास कोई आसमानी किताब इस रूप में भी मौजूद नहीं थी जिस रूप से तौरात और इन्ज़ील यहूदियों और ईसाईयों के पास मौजूद थी। इस लिए इन दो ग़िरोहों के अलावा किसी भी धार्मिक ग़िरोह को कुर्आन ने अहले किताब करार नहीं दिया यहाँ तक कि बनी इस्माईल, मक्का के कुरैश को भी जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान में से थे और जिन के पास हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन के कुछ अंश जैसे काबा का तवाफ़ और हज्ज इत्यादि मौजूद थे, अहले किताब में शामिल नहीं किया और खुली बुत परस्ती में लिप्त होने के कारण उन के लिए मुश्रिक की परिभाषा प्रयोग की। इसी तरह मजूसियों को इस के बावजूद कि उन के पास धार्मिक पुस्तक थी “अहले किताब” करार नहीं दिया। इस से स्पष्ट हुआ कि “अहले किताब” की परिभाषा (Term) यहूदियों और ईसाईयों के लिए खास है और इस आदेश का पालन (Implement) किसी दूसरे धार्मिक ग़िरोह पर नहीं किया जा सकता यद्यपि उस के पास कोई धार्मिक पुस्तक हो।

2. मुश्रिकों अर्थात् अल्लाह का शरीक (साझेदार) ठहराने वाले। यहाँ यह लफ़्ज़ अरब के बुत परस्तों के लिए परिभाषा के तौर पर प्रयोग हुआ है।

3. यहाँ कुफ़्र से मुराद वह कुफ़्र (इन्कार) है जिस के साथ हठधर्मी भी हो जैसा कि बाद के वाक्य “बाज़ आने वाले न थे” से स्पष्ट है। ऐसे हठधर्म काफ़िर अहले किताब में भी थे और मुश्रिकों में भी। मुश्रिकों का कुफ़्र तो जाहिर है ही उन्होंने

ने तौहीद को छोड़ कर बुत परस्ती का तरीका अपनाया था वह आख़िरत का भी इन्कार करने वाले थे और रिसालत के सिलसिले के भी। रहे अहले किताब तो उन के कुफ़्र (इन्कार) की विभिन्न सूरतें थी जैसे कोई हज़रत उज़ैर को खुदा का बेटा करार देता था तो कोई हज़रत ईसा को, कोई तो हज़रत ईसा की रिसालत ही का मुन्किर (इन्कार करने वाला) था और किसी के निकट, वह कफ़्रफ़ारा बन गये (अर्थात् ईसाईयों के गुनाहों की माफ़ी का द्वार बन गये)।

4. स्पष्ट प्रमाण से तात्पर्य एक नये रसूल की आमद (आगमन) है जैसा कि बाद वाली आयत में बयान हुआ है। मतलब यह है कि अहले किताब और मुश्रिकों में से जो लोग कुफ़्र में कठोर थे उन के कुफ़्र के टूटने की अगर कोई सूरत हो सकती थी तो वह यही थी कि एक नये रसूल का आगमन हो। गोया एक नये रसूल का आगमन हालात की उचित और आवश्यक माँग थी। इस ज़रूरत को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बअसत (नियुक्ति) ने पूरा कर दिया है। इस के बाद भी अगर कोई हठधर्मी में लिप्त रहता है तो उस के जुर्म की संगीनी और बढ़ जाती है।

5. सहीफ़े अर्थात् लिखे हुए पृष्ठ। पाक सहीफ़ो से तात्पर्य अल्लाह की किताब के पृष्ठ हैं जो शुद्ध रूप से अल्लाह के कलाम पर आधारित हों और हर प्रकार के परिवर्तन और ग़लत आस्थाओं और नैतिक बुराइयों की मिलावट से पवित्र हों।

आज जो लोग धर्म बैरी हैं वह बाइबिल और दूसरी पवित्र किताबों का अध्ययन करें तो उन में पाई जाने वाली गुमराहीयों, खुदा के बारे में तुच्छ धारणाएँ, नबियों से जुड़ी अनैतिक बातों, बेसिर पैर के उल्लेखों (रिवायतों) व्यर्थ कथाओं और रस्मों की जकड़ बन्दियों को देख कर उन का धर्म से बैर कुछ बढ़ ही जायेगा। इस धर्म के बैर को अगर कोई किताब दूर कर सकती है तो वह कुर्आन ही है जो न केवल इन तमाम ख़राबियों से पाक है बल्कि साथ ही उच्च कोटि की और अत्यंत हिकमत भरी (नीतिपूर्ण) शिक्षाओं पर आधारित है।

6. अपनी तरफ़ से बातें गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब करना और उन को पवित्र किताबों में शामिल करना धर्म का अवैध एवं स्वार्थपूर्ण प्रयोग (Exploitation) करने वालों का तरीका रहा है और उस की मिसालें बाइबिल और दूसरी धार्मिक पुस्तकों में देखी जा सकती हैं। इन पवित्र ग्रन्थों का यह हाल देख कर एक ऐसी किताब की ज़रूरत उभर कर सामने आती है जिन में अल्लाह के आदेश (एहकाम) सही शक़ल में मौजूद हों और ऐसी ठोस बातें हों जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए सही मन्ज़िल का निर्धारण कर सकें और उस

को सही दिशा पर डाल सकें। कुर्आन ही वह किताब है जो इस कसौटी (मेयार) पर पूरी उतरती है और इन्सान की इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए नाज़िल हुई है।

7. अर्थात् अहले किताब में फूट पड़ जाने का कारण यह नहीं है कि उन के पास अल्लाह की हिदायत स्पष्ट रूप से नहीं आयी थी बल्कि इस की वजह अल्लाह की हिदायत से बेपरवाही, इच्छाओं के पीछे चलना और स्वार्थपरायणता (नफ़्सानियत) है वरना उन्हें जो किताब दी गई थी उस में अल्लाह की रौशन हिदायत मौजूद थी और कोई कारण न था कि वह गुमराह होते और अलग अलग फिरकों में बँट जाते।

ध्यान रहे कि अहले किताब दो बड़े फिरकों (सम्प्रदाय) में बँट गये। यहूदी और ईसाई और इन दोनों ने अलग अलग धर्म का रूप धारण कर लिया एवं इन के अन्दर उप सम्प्रदाय भी काफ़ी पैदा हो गये जैसे ईसाईयों में कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट इत्यादि।

8. अर्थात् इन्हें एक अल्लाह की उपासना और बन्दगी का हुक्म दिया गया था मगर इन्होंने इस प्रथम हिदायत ही के विरुद्ध काम किया अतः यहूदियों को बुत परस्ती में भी झिझक न हुई और वह हज़रत उज़ैर को अल्लाह का बेटा बना बैठे और ईसाईयों ने एक की जगह तीन ख़ुदा बना लिए एवं दोनों गिरोहों ने अपने धर्मशास्त्रियों और गुरुजनों को रब बना लिया कि वह जिस चीज़ को चाहे हराम करार दे और जिस को चाहे हलाल।

9. यहाँ दीन का अर्थ उस आज्ञापालन के हैं जो शुद्ध हृदयता (खुजू) के साथ हो एवं स्वतंत्र और बिनाशर्त हो। ख़ालिक और मालिक होने की हैसियत से इस आज्ञापालन का अधिकारी मात्र अल्लाह तआला है इस लिए यह इताअत (आज्ञापालन) शुद्ध रूप से उसी के लिए होनी चाहिए। इस की हिदायत पिछली किताबों में भी दी गई थी और कुर्आन में भी दी गई है।

एक ख़ुदा जो वास्तव में अकेला ख़ुदा है कि इबादत का जो हुक्म दिया गया है उस के साथ “दीन” को उस के लिए ख़ालिस करने का मुतालबा इस्लाम में इबादत की स्थिति को ख़ूब अच्छी तरह खोल कर रख देता है। और वह है परस्तिश (पूजा एवं उपासना) के साथ इताअत (आज्ञापालन) का सम्मिश्रण या घुल मिल जाना। दूसरे शब्दों में इस्लाम में एक अकेले ख़ुदा की उपासना इस तरह से अभीष्ट (मतलूब) है कि आदमी उस की बिना शर्त आज्ञा पालन के लिए दिल से आमादा हो और इस स्वयंस्थापित हस्ती की इताअत को अल्लाह के लिए विशिष्ट कर दे। इस इताअत (आज्ञापालन) में अल्लाह की शरीअत और उस का पूरा दीन शामिल है।

10. रास्त रवी (सत्यनिष्ठा) के साथ अल्लाह की इबादत करने का मतलब यह है कि न तो दिल का झुकाव अल्लाह के सिवा किसी की पूजा, उपासना की तरफ़ हो और न उस की इबादत में यह बिदअतों (अप्रमाणित विधियों) को शामिल करें बल्कि एकाग्रता के साथ अल्लाह की इबादत उस तरीके पर करे जिस तरीके को अल्लाह ने इबादत के लिए निश्चित कर दिया है। चूँकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तरीका यही था इस लिए हनीफ़ियत (एकाग्रता) इब्राहीमी तरीके का दूसरा नाम है।

11. नमाज़ कायम करने और ज़कात देने का हुक्म अहले किताब को दिया गया था लेकिन उन्होंने नमाज़ को नष्ट कर दिया यहाँ तक कि तौरात से यह हुक्म ग़ायब कर दिया अलबत्ता ज़कात के एहकाम किसी न किसी रूप में अब भी बाइबिल में मौजूद हैं।

12. अर्थात् सच्चे दीन की यह बुनियादी शिक्षाएँ हैं। यही दीन अहले किताब को दिया गया था लेकिन उन्होंने इन बुनियादी शिक्षाओं को खो दिया और खोखली दीनदारी को ले कर बैठ गये। इस कसौटी पर दूसरे धर्मों को भी परखा जा सकता है।

13. यहाँ कुफ़्र से मुराद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल और कुर्आन को उस की नाज़िल की हुई किताब मानने से इन्कार करना है।

14. जो मख़लूक (सृष्टि) अपने ख़ालिक (सृष्टा) से कुफ़्र और बगावत का रवैया अपनाये उस के बदतरीन मख़लूक होने में संदेह की क्या गुन्जाइश हो सकती है? मालूम हुआ कि कुफ़्र के नतीजे में इन्सान इन्सायित का जौहर (Cream of humanity) खो बैठता है और प्रगति के बजाय पतन के आख़िरी गढ़े में गिरता है।

15. ईमान लाने के भावार्थ में तौहीद के अलावा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल और कुर्आन को उस की नाज़िल की हुई किताब स्वीकार करना भी शामिल है।

16. मालूम हुआ कि ईमान और नेक अमल (सुकर्म) के नतीजे में मानवता का सार खिलता है और वह वास्तविक प्रगति की उच्चश्रेणी तक पहुँचता है।

जो मख़लूक हर तरह के शैतानी प्रलोभन के विरुद्ध और हर तरह की आजमाइशों से गुज़रने के बावजूद कायम रही और उस की वफ़ादार और आज्ञाकारी बन कर रही उस के बेहतरीन मख़लूक होने में संदेह की क्या गुन्जाइश हो सकती है?

17. अल्लाह की रज़ा सब से बड़ा ईनाम है जिस से

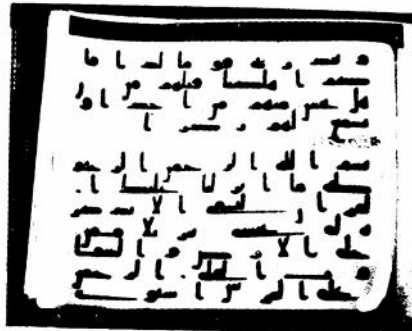
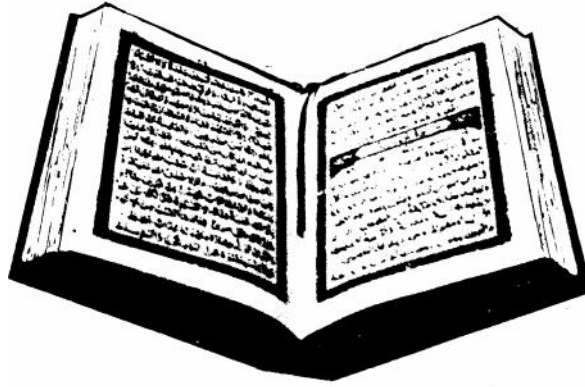
ईमान वाले पुरस्कृत किये जायेंगे। जन्नत अल्लाह तआला की रज़ा की निशानी होगी और वहाँ जाहिरी नेमतों के साथ साथ यह बातिनी (अन्दुरुनी) नेमत भी ईमान वालों को नसीब होगी।

18. अपने रब से डरना दीन की असल रुह है। जिन लोगों के अन्दर यह रुह मौजूद होती है उन के अन्दर सही दीनदारी होती है। इसी आधार पर वह इस ईनाम के योग्य होते हैं जो इस आयत में बयान हुई है।



पवित्र कुर्आन

صُفْحًا مَّطَهَّرًا



▲ صورة لمصحف عثمان بن عفان رضي الله عنه

खलीफा उस्मान के हाथ का लिखा हुआ कुर्आन

११. अज़्-ज़िल्ज़ाल

नाम :- पहली आयत में क्रियामत के दिन ज़मीन के हिलाये जाने का ज़िक्र हुआ है और इस सिलसिले में लफ़्ज़ ज़िल्ज़ाल आया है जिस की मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अज़्-ज़िल्ज़ाल” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के आरम्भिक चरण में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत के दिन इन्सान का खड़ा होना है ताकि उस के कर्मों का पूरा कच्चा चिट्ठा उस के सामने रखा जाए ।

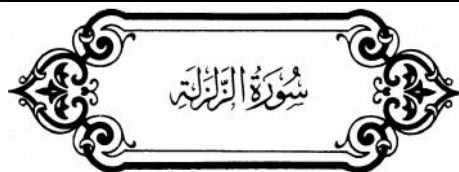
कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में ज़मीन की उस स्थिति का वर्णन है जो क्रियामत के दिन उस पर छाई होगी और जिस को देख कर इन्सान हक्का बक्का रह जायेगा।

आयत ४ और ५ में बताया गया है कि उस रोज़ ज़मीन बोल पड़ेगी और अपनी दास्तान सुनाएगी ताकि इन्सान उस की पीठ पर जो कुछ करता रहा है उस की ऐतिहासिक गवाही सामने आ जाये।

आयत ६ से ८ में बताया गया है कि उस रोज़ लोग विभिन्न गिरोहों के रूप में आमाल (कर्मों) की पेशी के लिए निकल पड़ेंगे और कोई छोटी भलाई या बुराई ऐसी नहीं होगी जो उस के सामने न आ जाए।

९९.सूरह अज़्-ज़िल्ज़ाल

आयतें : ८



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब ज़मीन अपनी पूरी शिद्दत (प्रचण्डता) के साथ हिला दी जाएगी,¹

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ①

2. और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी,²

وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ②

3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया है।³

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ③

4. उस रोज़ वह अपनी ख़बरें सुनायेगी।⁴

يَوْمَئِذٍ تُخَدِّثُ أَخْبَارَهَا ④

5. क्यों कि तुम्हारे रब ने उस को हुक्म दिया होगा।⁵

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ⑤

6. उस रोज़ लोग विभिन्न गिरोहों के रूप में निकलेंगे, ताकि उन्हें उन के आमाल (कर्म) दिखा दिये जाएँ।

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ⑥

7. तो जिस ने ज़र्रा (कण) बराबर भलाई की होगी वह उस को देख लेगा।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ⑦

8. और जिस ने ज़र्रा (कण) बराबर बुराई की होगी वह उस को देख लेगा।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ⑧

1. यह क्रियामत के दूसरे चरण का वर्णन है जब कि तमाम मरे हुए इन्सान जिन्दा निकल पड़ेंगे जैसा कि आगे के मज़मून से साफ़ है।

उस रोज़ पूरा भूमण्डल इस प्रचण्डता (शिद्दत) के साथ हिलाया जायेगा कि उस हिलाये जाने की सही कल्पना भी नहीं की जा सकती। ज़मीन पर जितने भी ज़लज़ले आये हों, क्रियामत का ज़लज़ला इतना ज़बरदस्त होगा कि बड़े से बड़ा ज़लज़ला भी उस के मुकाबले में कुछ न होगा।

2. तात्पर्य मुद्दे हैं जिन को ज़मीन क्रियामत के दिन उगल देगी। गोया मुद्दे ज़मीन के लिए बोझ हैं जिन से वह खाली हुआ चाहती है। इस से यह बताना अभिप्रेत है कि मरने के बाद इन्सान का शरीर मिट्टी में जो मिल जाता है वह नाश नहीं हो जाता बल्कि यह अमानत बनकर ज़मीन के पास रहता है चाहे रसायनिक विधि पर (Chemically) उस ने किसी भी तत्व का रूप धारण कर लिया हो और यह अमानत अपने असली रूप में क्रियामत के दिन ज़मीन हाज़िर कर देगी। अर्थात् मानव शरीर के अंग अंग रसायनिक परिवर्तन से गुज़रने के बाद अपने वास्तविक रूप में फिर सामने आ जाएंगे।

बोझा बाहर निकालने के भावार्थ में वह प्रमाण भी शामिल हैं जो ज़मीन में दफ़न हैं।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिकाक़ नोट नं. ४)

3. अर्थात् इन्सान क़ब्र से निकलते ही बदहवासी की दशा में पुकार उठेगा कि ज़मीन को यह क्या हो गया है कि वह झटके पर झटके ले रही है और एक ज़बरदस्त हादसे से दोचार है। ज़मीन की यह हालत देख कर इन्सान पहले तो परेशान होगा इस के बाद उस पर यह बात खुलेगी कि यह क्रियामत का दिन है। अलबत्ता जो लोग अपने ईमान में सच्चे हैं उन पर क्रियामत की कोई घबराहट नहीं छाएगी।

4. अर्थात् ज़मीन अपनी सारी आप बीती सुनायेगी कि इन्सान ने जिसे ज़मीन में खलीफ़ा बनाया गया था उस को किस तरह से प्रयोग किया। कौन ज़मीन के पैदा करने वाले के आगे झुका और कौन भूमि पूजा करता रहा, किस ने धरती पर मस्जिद बनाई और किस ने मन्दिर, किस ने लोकहित के विभाग क़ायम किये और किस ने सिनेमा घर, किस ने दीनी सभाएँ आयोजित किये और किस ने नाच रंग की महफ़िलें सजायी, कौन मानवता के अमन और शान्ति के लिए दौड़ धूप करता रहा और कौन बस्तियों को उजाड़ने के लिए बम बरसाता रहा, कौन सुधार का काम करता रहा और किस ने फ़साद बरपा किये, जंग किन लोगों ने लड़ी, कब लड़ी किस मैदान में लड़ी और किन उद्देश्यों के लिए लड़ी। मतलब यह कि ज़मीन गुज़री हुई तमाम घटनाएँ इस

तरह सुनायेगी जैसे सभी घटनाएँ जो ज़मीन पर घटी थी को टेप कर लिया गया हो और क्रियामत के दिन यह पूरा रेकार्ड इन्सान को सुनाया जायेगा। ताकि वह ज़मीन पर जो कुछ करता रहा है उस का प्रमाण एकत्र हो और इन्साफ़ के तक्राज़े पूरे हों। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी और पूछा, जानते हो ज़मीन क्या ख़बरें सुनायेगी? लोगों ने कहा अल्लाह और उस का रसूल ही बेहतर जानते हैं। फ़रमाया वह हर बन्दे और बन्दी के बारे में गवाही देगी कि उस ने यह और यह काम फ़लाँ और फ़लाँ दिन उस की पीठ पर किये थे। (तिर्मिज़ी अबवाब तफ़सीरुल कुर्आन)

5. यह सवाल दिमाग़ में पैदा हो सकता है कि ज़मीन तो बेजान धातु में से है फिर वह इन्सानों के कर्मों की गुज़री दास्तान किस तरह सुनायेगी? इस का जवाब इस आयत में दिया गया है कि वह अल्लाह तआला के हुक्म से बोल पड़ेंगी। कुर्आन में दूसरी जगह पर यह स्पष्टीकरण भी किया गया है कि क्रियामत के दिन मुजरिमों की खालें भी उस के विरुद्ध गवाही देंगी और वह जब आश्चर्य से पूछेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी तो खालें जवाब देंगी कि जिस ख़ुदा ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की उस ने हमें भी जवान दे दी। (हा मीम अस्सजदा - २१)

मतलब यह कि जो चीज़े हमारे अनुभव में बोलने वाली नहीं हैं उन के बोलने लग जाने का अनुभव हम क्रियामत के दिन करेंगे, और जो हस्ती मिट्टी से इन्सान बना कर खड़ा कर सकती है उस के लिए मिट्टी में टॉक शक्ति (बोलने की ताक़त) पैदा करना क्या मुश्किल है? जब हम अपनी आवाज़ की प्रतिध्वनि (गूँज) गुँबदों से इसी दुनिया में सुन सकते हैं तो क्रियामत के दिन जब कि एक नयी व्यवस्था क़ायम होगी, अपनी इन बातों की जो दुनिया में करते रहे हैं, प्रतिध्वनि (गूँज) सुनना क्यों असंभव है? और टेलिवीज़न, टेप रेकार्ड और फोटोग्राफी जैसे अविष्कारों के इस दौर में तो यह बात दलील की मोहताज न रही कि इन्सान के चाल चलन और तौर तरीक़े कण कण पर अंकित हो रहे हैं।

6. अर्थात् क्रियामत के दिन लोग ज़मीन के विभिन्न भागों से विभिन्न दिशा में गिरोहों के रूप में निकलेंगे ताकि हश्र के मैदान में जमा हो जायें और वहाँ उन्हें उन के सारे कर्म दिखाएँ जायें। क्रियामत तक जितने इन्सान भी पैदा हुए और मरे, चाहे कोई ज़मीन में दफ़न हुआ हो या समुद्र में डूब गया हो, किसी की लाश जला दी गई हो या हवा में उड़ा दी गई हो, क्रियामत के दिन सब के सब ज़मीन से निकल पड़ेंगे ताकि वह जो कुछ करते रहे हैं उस का नतीजा उन के सामने आये। “ताकि उन्हें उन के आमाल (सारे कर्म) दिखा दिये जाएँ” से स्पष्ट होता है कि इन्सान के सामने उस की अमली जिन्दगी (Practical

Life) के दृश्य प्रस्तुत किए जायेंगे।

7. अर्थात् क्रियामत के दिन हर व्यक्ति को जो स्वयं उस के पूरे जीवन ---- जो कुछ भी कहा और जो कुछ भी किया -----का अनुभव कराया जायेगा तो वह अपनी छोटी से छोटी नेकी और छोटी से छोटी बदी को देख लेगा। रहा ईनाम और सज़ा का मामला तो वह इन्साफ़ के तकाज़ों को पूरा करते हुए

उन उसूलों के अनुसार होगा जिन की पुष्टि कुर्आन में दूसरी जगहों पर की गई है। जैसे यह कि जिन के पलड़े भारी होंगे वह कामयाब होंगे या यह कि काफ़िरों के आमाल (सारे कर्म) निष्फल करार पायेंगे या यह कि शिर्क (बहुदेववाद) ऐसा गुनाह है जो क्षमा योग्य नहीं और काफ़िरों के लिए सदा सर्वदा जहन्नम की सज़ा है। इत्यादि।



१००. अल्-आदियात

नाम :- पहली आयत में “अल्-आदियात्” (दौड़ने वाले घोड़ों) की क्रसम खाई गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-आदियात्” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के पहले मरहले (चरण) में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- खुदा के सामने जवाबदेही से बेपरवाह रहने के नतीजे में पैदा होने वाला दायित्वहीन रवैया है जो इन्सान को खुदा का नाशुक्रा (कृतघ्न) बनाता है और उस की प्रदान की हुई नेमतों और शक्तियों के अवैध इस्तेमाल पर उसे आमादा करता है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में जंगी घोड़ों को

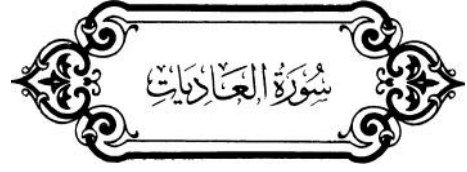
इस बात की गवाही में पेश किया गया है कि इन्सान खुदा की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत इस्तेमाल करता है।

आयत ६ से ८ में इन्सान को खुदा का नाशुक्रा (कृतघ्न) होने और उस के धन के प्रेम में बँधा होने पर भर्त्सना एवं निंदा की गई है।

आयत ९ से ११ में इन्सान को सचेत किया गया है कि उसे क्रियामत के दिन क़ब्र से उठा खड़ा किया जायेगा और उसे खुदा के सामने उपस्थित होना होगा। उस रोज़ इन्सान के अन्दर का हाल खुल कर सामने आ जायेगा और वह अनुभव करेगा कि कोई बात भी यहाँ तक कि उस की वह नियतें और इरादे भी अल्लाह से छिपे हुए नहीं हैं जो दुनिया में विभिन्न कामों को अन्जाम देते हुए उस ने अपने दिल में छिपाये रखे थे।

१००. सूरह अल्-आदियात्

आयतें : ११



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्रसम है ¹ दौड़ने वाले घोड़ों की ² जो हाँप उठते हैं, ³
2. जो टाप मार कर चिंगारियाँ झाड़ते हैं, ⁴
3. और प्रातः समय धावा मारते हैं, ⁵
4. और इस दौड़ से गुबार (धूल) उड़ाते हैं, ⁶
5. और इस हालत में समूह में जा घुसते हैं, ⁷
6. सत्य यह है कि इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है, ⁸
7. और वह स्वयं उस पर गवाह है, ⁹
8. और वह धन के लोभ में बहुत कठोर है, ¹⁰
9. तो क्या वह उस समय को नहीं जानता जब कब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल लिया जायेगा, ¹¹
10. और सीनों में जो कुछ छिपा है उस को निकाल कर परखा जायेगा, ¹²
11. निस्संदेह उन का रब उस रोज़ उन से अच्छी तरह अभिज्ञ (वाक्किफ़) होगा। ¹³

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا ۝١

فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ۝٢

فَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا ۝٣

فَأَثَرُنَ بِهِ نَقْعًا ۝٤

فَوْسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝٥

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝٦

وَأَنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝٧

وَأَنَّهُ لَحَبِيبٌ خَيْرٌ لِّشَدِيدٍ ۝٨

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝٩

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝١٠

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ خَبِيرٌ ۝١١

1. क्रसम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर नोट नं. १४

2. तात्पर्य जंगी घोड़े हैं जो सरपट दौड़ते हैं। कुआन के अवतरण के समय में घोड़े युद्ध के लिहाज से बड़ा महत्व रखते थे।

3. घोड़ों का हाँप उठना और हाँपने के बावजूद अपनी दौड़ जारी रखना इस बात को व्यक्त करता है कि अल्लाह तआला ने उन के अन्दर ज़बरदस्त शक्ति रखी है।

4. अर्थात् जब युद्ध अथवा ग़ारतगरी (विनाश) के लिए घोड़े दौड़ाये जाते हैं तो वह ऐसी सरगमी (कुशलता) दिखाते हैं कि उन की टापों से चिंगारियाँ झड़ने लगती हैं। यह चिंगारियाँ घोड़ों की टापों के तेज़ी से पथरीली ज़मीन से टकराने के फलस्वरूप निकलती हैं और रात के अन्धेरे में दिखाई देती हैं।

घोड़ों का चिंगारियाँ झाड़ते हुए सरपट भागना इस बात का सबूत है कि अल्लाह तआला ने एक ज़बरदस्त ताक़त इन्सानों के अधीन कर दी है।

5. अरबों का नियम था कि जब वह किसी क़बीला या बस्ती पर हमला करना चाहते तो रात को घोड़े दौड़ाते और बिलकुल सुबह हमला कर देते। रात को इस लिए हमला नहीं करते थे कि रात के अंधेरे में लड़ना मुश्किल था और सुबह को इस लिए हमला कर देते थे कि दुश्मन पर उन्हें अचानक टूट पड़ने का मौक़ा मिलता।

6. अर्थात् यह घोड़े ऐसी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि गर्द-गुबार का एक तूफ़ान उठ खड़ा होता है और जब यह धावा बोलते हैं तो अपने साथ गर्द-गुबार की एक आँधी लिये होते हैं।

समझ लीजिए कि अरबिस्तान का इलाक़ा रेगिस्तानी है और कुआन के अवतरण के समय में पक्की सड़कें भी नहीं थी। इस लिए घोड़ों की दौड़ से जो गर्द-गुबार उठता होगा उस को देख कर लोग दूर ही से अन्दाज़ा कर लेते होंगे कि यह विनाश के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

7. अर्थात् समूह में घुस कर तबाही मचाते हैं।

इन आयतों में अरब वासियों के उन हमलों का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो लूट मार और ग़ारतगरी (विनाश) के उद्देश्य से वह किया करते थे। एक क़बीला जब दूसरे क़बीले पर चढ़ाई करता तो इस के लिए घोड़े इस्तेमाल किये जाते। यह घोड़े रात के अंधेरे में चिंगारियाँ झाड़ते हुए निकलते और बिलकुल सुबह गर्द-गुबार की आँधी उठाये हुए बस्ती पर हमला बोल देते और बचाव करने वालों की भीड़ में जा घुसते। इस के बाद लूट मार का बाज़ार गरम होता और औरतों और मर्दों को पकड़ कर दासी और दास बना लेते। इस चीज़ ने अरब के इलाके में अशान्ति का वातावरण पैदा कर दिया था और बस्तियों पर यह ख़तरा

मंडलाता रहता था कि मालूम नहीं कौन क़बीला किस बस्ती पर कब हमला कर बैठे।

कुआन ने इस अन्याय एवं अत्याचार का एहसास दिलाने के लिए विनाशकारी के उस षडयंत्र का चित्र प्रस्तुत कर दिया जिस में तेज़ रफ़्तार घोड़ों को इस्तेमाल किया जाता था। यह ऐसी ही बात है जैसे आज ग़लत एवं व्यर्थ उद्देश्यों के लिए लड़ी जाने वाली जंगों में जो तेज़ रफ़्तार विमान प्रयोग किये जाते हैं और उन के द्वारा जो बमबारी की जाती है और शहरों और बस्तियों को जिस तरह तबाह किया जाता है उस की तस्वीर अल्फ़ाज़ में खींच ली जाये ताकि इन अन्यायपूर्ण एवं अत्याचारी कारवाइयों के विरुद्ध इन्सानियत को झिंझोड़ा जा सके।

8. यह वह बात है जिस का एहसास दिलाने के लिए सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की क्रसम खाई गई है। मतलब यह है कि तेज़ रफ़्तार घोड़े अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत हैं और युद्ध में अपना ज़बरदस्त महत्व रखते हैं। लेकिन इन को ग़लत एवं अवैध उद्देश्यों और अन्यायी एवं अत्याचारी कारवाइयों के लिए इस्तेमाल करना इस नेमत का निरादर और अपने रब की बड़ी नाशुकरी (कृतघ्नता) है।

वर्तमान दौर में परमाणू शक्ति का अविष्कार इन्सान के लिए अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है, और इस नेमत का शुक्र वह इसी सूरत में अदा कर सकता है जब कि वह इस शक्ती को रचनात्मक कामों के लिए इस्तेमाल करे लेकिन अगर वह विनाश के कामों जैसे ऐटम बम बनाना और उस को बड़े बड़े शहरों को तबाह करने और इन्सानियत पर अत्याचार तोड़ने के लिए इस्तेमाल करता है तो यह इस नेमत का खुला अनादर और इस को प्रदान करने वाले की बड़ी नाशुकरी (कृतघ्नता) होगी।

9. अर्थात् इन्सान की यह कृतघ्नता (नाशुकरी) दलील की मुहताज नहीं उस का ज़मीर स्वयं इस पर बहुत बड़ा गवाह है। वह खुदा की प्रदान की हुई नेमतों के अवैध प्रयोग के लिए कितने ही बहाने बनाए उस की प्रकृति अन्दर से पुकार उठेगी कि उस ने यह ग़लत हरकत की है। कितने ही इन्सान खुल्लम खुल्ला अपने परवरदिगार के विरुद्ध कृतघ्नता प्रकट करते हैं। वह अपनी कृतघ्नता पर स्वयं प्रमाण है।

10. अर्थात् इन्सान को खुदा से अधिक धन दौलत से प्रेम है। वह खुदा परस्त बनने के बजाय धन का पुजारी बन जाता है। अतः वह धन की प्राप्ति के लिए खून खराबा और विनाश करने से नहीं रुकता।

स्पष्ट रहे कि कुआन दौलत की मुहब्बत को जो बुरा क्रार देता है तो वह इस अर्थ में कि आदमी खुदा से अधिक धन दौलत को प्रिय रखे। आखिरत के बजाए संसार को लक्ष्य बनाये। धन प्राप्त करने में वैध और अवैध एवं हलाल और हराम में फ़र्क़

न करे और खुदा के बन्दों के हक मारे एवं उन की संपत्तियों पर अवैध कब्जा करने में न हिचकिचाएँ ऐसी धनपूजा हर ज़माने में मौजूद रही है और इस का नया रूप मौजूदा ज़माने का पूँजीवाद (Capitalism) है।

11. अर्थात् तमाम मरे हुए इन्सानों को ज़िन्दा उठा खड़ा किया जायेगा (देखिये सूरह ज़िलज़ाल नोट नं. २ और ६ यहाँ सवाल तंबीह के तौर पर है कि इन्सान लूट खसोट इस लिए करता है और माया के मोह में इस लिए लिप्त होता कि उसे न अपने दोबारा ज़िन्दा किये जाने का यक़ीन है और न खुदा के सामने जवाबदेही का एहसास, हालाँकि यह मरहला ज़रूर पेश आना है।

12. अर्थात् क्रियामत के दिन केवल ज़ाहिरी आमाल को ही नहीं देखा जायेगा जो दुनिया में इन्सान करता रहा है बल्कि उस के पीछे जो भावना, इरादे, नीयतें, उद्देश्य और प्रेरक रहे हैं। उन को भी देखा और परखा जायेगा। ताकि इन्साफ़ के तक्राजे पूरे हों और इस के बाद ही ईनाम या सज़ा का फैसला सुनाया जाए।

इस सिलसिले में सब से पहले सीने के जिस भेद को ज़ाहिर

किया जायेगा वह ईमान या कुफ़्र होगा अर्थात् किस के दिल में ईमान था और किस के दिल में कुफ़्र, जो लोग अपने को मुसलमान व्यक्त करते रहे लेकिन दिलों में कुफ़्र छिपाए हुए थे उन के सीनों से उस रोज़ कुफ़्र ही बरामद होगा। इसी तरह जिन लोगों ने नेकी और भलाई के काम किसी ग़लत मक़सद या अवैध प्रेरक के अन्तरगत किये होंगे तो उन की हक़ीक़त भी खुल जायेगी और जो लोग ग़लत काम कर के उन को सही साबित करने की कोशिश करते हैं ताकि लोग समझ लें कि उन्होंने कोई ग़लत काम नहीं किया है, उन के उद्देश्य और नीयतें भी खुल कर सामने आ जाएगी।

13. अल्लाह तआला हर व्यक्ति के ज़ाहिर और बातिन (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष) से आज भी बाख़बर (भिज़) हैं लेकिन क्रियामत के दिन हर व्यक्ति पर यह हक़ीक़त खुल जायेगी और वह मानने के लिए विवश होगा कि वास्तव में अल्लाह तआला को हर व्यक्ति के अन्दर और बाहर के हालात का पूरा पूरा ज्ञान था और आज क्रियामत के दिन वह जो फैसला भी कर रहा है पूरी तरह जानकारी रखते हुए कर रहा है।



१०१. अल्-क्रारिअः

नाम :- आयत नं. १ में क्रियामत की महान घटना को “अल्-क्रारिअः” (खड़खड़ाने वाली आफ़त) की संज्ञा दी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-क्रारिअः” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से पता चलता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- क्रियामत की महान घटना से ख़बरदार (सचेत) करना है और इस बात से आगाह करना है कि उस रोज़

सफलता और असफलता की कसौटी अच्छे कर्म होंगे।

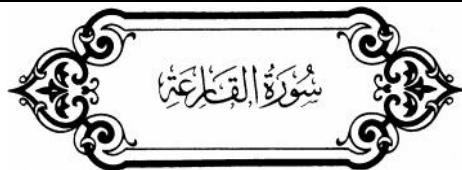
कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में क्रियामत की हौलनाकी और उस के फ़त्सवरूप पैदा होने वाले हालात से ख़बरदार (सचेत) किया गया है।

आयत ६ और ७ में उन लोगों का हुस्ने अन्जाम (सुपरिणाम) बयान किया गया है जिन के कर्म इन्साफ़ के तराजू में भारी होंगे।

आयत ८ से ११ में उन लोगों का ख़राब अन्जाम (कुपरिणाम) बयान किया गया है जिन के कर्म इन्साफ़ के तराजू में हल्के होंगे।

१०१. सूरह अल्-क्रारिअ:

आयतें : ११



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वह खड़खड़ाने वाली आफ़त,¹ الْقَارِعَةُ ①
2. क्या है वह खड़खड़ाने वाली आफ़त।² مَا الْقَارِعَةُ ②
3. और तुम्हें क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली आफ़त क्या है?³ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ③
4. वह दिन जब लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगे।⁴ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ④
5. और पहाड़ धुनके हुए ऊन की तरह हो जायेंगे।⁵ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ⑤
6. फिर जिस का पलड़ा भारी होगा,⁶ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ⑥
7. वह दिलपसंद ऐश में होगा। فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ⑦
8. और जिस का पलड़ा हलका होगा,⁷ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ⑧
9. उस का ठिकाना “हावियः” होगा,⁸ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ⑨
10. और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है? وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ⑩
11. दहकती हुई आग।⁹ نَارٌ حَامِيَةٌ ⑪

1. अरबी Text में लफ़्ज़ “अल्क्रारिअः” इस्तेमाल हुआ है, जो क्रियामत के कई नामों में से एक नाम है। इस के शाब्दिक अर्थ हैं ठोंकने वाली, खटखटाने वाली, खड़खड़ाने वाली बड़ी आफ़त। क्रियामत को इस नाम की संज्ञा देने का कारण यह है कि इस का प्रकट होना बहुत बड़ी आफ़त की सूत में होगा। और जिस तरह कोई रात में आने वाला दरवाज़े को खटखटा देता है और सोने वाले अचानक जाग उठते हैं। इसी तरह यह आफ़त अचानक आयेगी जिस को देख कर लोग घबरा उठेंगे।

2. यह सवाल इस लिए है ताकि लोग अचेतना से मुक्त हो जायें।

3. यह सवाल क्रियामत की हक़ीक़त और उस की हौलनाकी से आगाह करने के लिए। अर्थात् इस आफ़त को मामूली घटना न समझो। कुर्आन क्रियामत का वर्णन जिस विश्वास और दृढ़ता के साथ करता है और उस के जो हालात विस्तार से बयान करता है वह उस की सच्चाई का खुला प्रमाण है। आज आसमानी किताबों में कोई किताब ऐसी मौजूद नहीं है, जो क्रियामत की इतनी स्पष्ट कल्पना इस विस्तार के साथ प्रस्तुत करती हो।

4. अर्थात् क्रियामत के दिन लोग क़ब्रों से अस्तव्यस्त बिखरे हुए निकल पड़ेंगे और उन की घबराहट का यह हाल होगा जैसे बिखरे हुए पतंगें। अस्तव्यस्तता का चित्रण सूरह क्रमर में इस तरह किया गया है।

خُشَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ

كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ - (القر- ८)

“झुकी हुई निगाहों के साथ क़ब्रों से इस तरह निकलेंगे कि गोया वह बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं।”

इन्सान जब क़ब्र से उठेगा तो न उस के साथ उस का परिवार होगा और न ज़ात बिरादरी के लोग बल्कि वह अपने को एक अस्तव्यस्त झुंड और एक नये माहौल में पाएगा और ज़मीन और आसमान को बदला हुआ देख कर उस पर कड़ा आतंक छाया होगा।

5. अर्थात् जिस तरह धुनका हुआ ऊन रेशा रेशा (तंतु तंतु) हो कर हवा में उड़ता है उसी तरह यह बड़े बड़े पहाड़ क्रियामत के दिन टुकड़े टुकड़े हो कर हवा में उड़ रहे होंगे। और जब हिमालय जैसे पहाड़, उस रोज़ उड़ रहे होंगे। तो कौन सा क़िला कौन सा महल और कौन सी बिल्डिंग है जो ज़मीन पर बाक़ी रह सकेगी।

क्रियामत का इन्कार करने वालों को इस बात पर आश्चर्य होता था कि पहाड़ जैसी मज़बूत चीज़ को किस तरह उखाड़ फेंका जा सकता है? उन का आश्चर्य खुदा की कुदरत (क्षमता) का सही अन्दाज़ा न करने की वजह से था। ज़ाहिर है जो खुदा

पहाड़ों को पैदा करने और उन को ज़मीन में गाड़ देने पर क़ादिर (सक्षम) है वह उन को टुकड़े टुकड़े कर हवा में उड़ा देने पर क्यों क़ादिर न होगा? वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों एवं अन्वेषणों के दौर में तो इन बातों को समझना बिलकुल आसान हो गया है। अगर एक ज़र्रे (कण) में इतनी शक्ति है कि उस को तोड़ने (Splitting) के नतीजे में ज़बरदस्त धमाका हो सकता है तो पहाड़ों के ज़र्रे को तोड़ने (Splitting) के नतीजे में क्रियामत (प्रलय) क्यों नहीं बरपा हो सकती?

6. क्रियामत के दिन आमाल (कर्म) तौले जायेंगे और उन के तौलने के लिए मीज़ान (तराजू) क़ायम की जायेगी। इस तराजू में वही कर्म वज़नी होंगे जो हक़ की बुनियाद पर अन्जाम दिये गये होंगे। क्यों कि क्रियामत के दिन वज़न सिर्फ़ हक़ (सत्य) को हासिल होगा। जैसा कि सूरह “आराफ़” में फ़रमाया है।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ط (الاعراف- ८)

“वज़न उस रोज़ हक़ (सत्य) होगा”।

और कामयाबी के लिए शर्तें यह होंगी कि यह पलड़ा भारी हो। और किसी व्यक्ति का पलड़ा इसी सूत में भारी होगा जब कि उस ने व्यवहारिक जीवन (Practical Life) हक़ (सत्य) की बुनियाद पर गुजारी होगी। और जिस व्यक्ति की नेकियों की मात्रा जितनी अधिक होगी उतना ही अधिक यह पलड़ा भारी साबित होगा।

इस मीज़ाने-अद्ल (इन्साफ़ के तराजू) का सम्बन्ध आख़िरत के हालात से है और आख़िरत (परलोक) के ज़मान और मकान (Space & Time) और यहाँ के पैमाने सब कुछ इस दुनिया से बहुत भिन्न होंगे इस लिए हम आख़िरत की मीज़ान-अद्ल की परिस्थिति का पूरी तरह इस दुनिया में अन्दाज़ा नहीं कर सकते। अतः हमें कुर्आन के संक्षिप्त बयान को काफ़ी समझना चाहिए।

आमाल के तौले जाने में अगर आश्चर्य की कोई बात थी तो विज्ञान के आविष्कारों ने इस को बिलकुल समाप्त कर दिया है। क्यों कि भावों एवं दशाओं को नापने के लिए कई तरह के यंत्र ईजाद हो गए हैं। अतः शरीर के ताप को जो एक दशा ही है। थर्मामीटर के द्वारा नापा जाता है। इसी तरह हवा के दबाव को मालूम करने के लिए बैरोमीटर (Barometer) का प्रयोग किया जाता है। और जब मनुष्य के लिए दशाओं एवं भावों का नापना संभव हो गया है तो ज़मीन और आसमान के रचयिता के लिए आमाल (कर्म) तौलने वाली मीज़ान (तराजू) क़ायम करना क्या मुश्किल है?

7. हल्का पलड़ा उन लोगों का होगा जिन्होंने असत्य (बातिल) की बुनियाद पर जीवन व्यतीत किया था। उन के

आमाल (कर्म) चाहे वह ऊपर से कितने ही अच्छे क्यों न दिखाई देते हों, आखिरत की मीज़ाने-अदल (इन्साफ़ के तराजू) में बिलकुल बेवज़न होंगे क्यों कि असत्य (बातिल) सिरे से कोई वज़न ही नहीं रखता। इसी तरह “सैयिआत” (बुराइयाँ) भी परलोक (आखिरत) में बेवज़न होंगी। आज जब कि यह बात अनुभव में आ रही हैं कि जो चीज़ ज़मीन पर वज़न रखती है वह अन्तरिक्ष में बिलकुल बेवज़न हो जाती है, यह मत लेना क्या मुशकिल है कि असत्य प्रेमियों कि “ज़िन्दगी का कारनामा” दुनियाँ वालों की नज़रों में कितना ही वज़नी और शानदार रहा हो आखिरत (परलोक) के वातावरण में वह बिलकुल बेवज़न साबित होगा।

8. “हावियः” का अर्थ गहरे गढ़े और खड्ड के हैं। यह जहन्नम का नाम है और इस नाम की संज्ञा देने का कारण यह है कि वह बहुत गहरी होगी और उस में दोज़ख वालों को ऊपर से फेंक दिया जाएगा।

9. अर्थात् जहन्नम का यह गहरा गढ़ा दहकती हुई आग से भरा हुआ होगा।

जहन्नम की विशालता, उस की गहराई और उस की असाधारण आग का हाल सुनकर कितने ही लोग इसे अविश्वसनीय समझते रहे हैं। और आज भी समझते हैं लेकिन वास्तव में यह उन की संकीर्णता एवं अदूरदर्शिता बल्कि दृष्टि की खराबी है वरना जहन्नम का अस्तित्व हरगिज़ हैरत की बात नहीं। सूरज की मिसाल हमारे सामने मौजूद है, उसका तापमान २७ मिलियन डिग्री फारेनहाइट, उस का अक्षांश पृथ्वी के अक्षांश से १०९ गुना बड़ा और उस की मोटाई पृथ्वी की मोटाई से तीन लाख तैंतीस हजार गुना अधिक है। सूरज वास्तव में गर्म गैसों (Highly Heated Gases) का संग्रह है। जिस में ज़बरदस्त चुम्बकीय तूफ़ान उठते रहते हैं। विज्ञान द्वारा एकत्रित की गई जानकारीयों से सूरज की अथाह विशालता उस की बेअन्दाज़ (अनुमानरहित) गहराई और उस के ज़बरदस्त ताप का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो जाता है। अर्थात् सूरज दुनिया में जहन्नम का एक जीता जागता नमूना है और उस को देखते हुए आखिरत की जहन्नम न केवल संभव मालूम होती है बल्कि उस का विश्वास (यकीन) पैदा हो जाता है।



१०२. अत्-तकासुर

नाम :- पहली आयत में “तकासुर” (धन दौलत को अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा) को वास्तविक जीवन लक्ष्य से बेपरवाही का कारण बताया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अत्-तकासुर” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवती दौर के शुरु में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- लोगों को इस हक़ीक़त से आगाह करना है कि धन दौलत और दूसरे सांसारिक लाभ की प्राप्ति में इस तरह से लिप्त होना कि पूरी आयू उसी में खप जाये और आख़िरत की पूछ ताछ का ख़याल तक न आए, बहुत बड़ी मूर्खता एवं अदूरदर्शिता है और ज़बरदस्त घाटे का सौदा।

कलाम की तरतीब:- आयत १ और २ में उन लोगों को झिंझोड़ा गया है जो दुनिया की दौलत को सब कुछ समझ बैठे

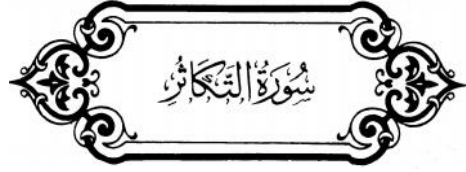
हैं। और इस को अधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि मौत के उस पार जो कुछ पेश आने वाला है उस का उन्हें होश ही नहीं।

आयत ३ से ५ में ख़बरदार किया गया है कि मौत के उस पार क्या है वह तुम्हें आँखें बन्द होते ही मालूम हो जायेगा। अगर आज तुम्हें इस का यक़ीन होता तो अपने भविष्य की तरफ़ से गाफ़िल (बेपरवाह) न होते और संसार प्राप्ति की यह धुन तुम पर सवार न होती।

आयत ६ से ८ में ख़बरदार किया गया है कि जहन्नम के अस्तित्व पर तुम विश्वास करो या न करो वह दिन आकर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे, उस समय तुम्हें उस के अस्तित्व का पूरी तरह विश्वास हो जायेगा। लेकिन वह वक्त अमल (करने) का नहीं बल्कि हिसाब देने का होगा और तुम्हें हर हर नेमत के बारे में ख़ुदा के हुज़ूर जवाब देनी होगी।

१०२. सूरह अत्-तकासुर

आयतें : ८



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. धन दौलत को अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा ने तुम्हें ग़फ़लत (बेपरवाही) में डाल रखा।¹
2. यहाँ तक कि तुम क़बरों में जा पहुँचे।²
3. मगर नहीं। बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायेगा।³
4. फिर सुन लो ! यह धुन सही नहीं, बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायेगा।⁴
5. हरगिज़ नहीं ! अगर तुम पूरे यक्कीन (विश्वास) के साथ जान लेते।⁵ (तो दुनिया के पीछे न पड़ते)
6. तुम ज़रूर दोज़ख़ को देख लोगे,⁶
7. फिर तुम उसे बिलकुल यक्कीन के साथ देखोगे,⁷
8. फिर उस रोज़ तुम से नेमतों के बारे में ज़रूर पूछताछ होगी।⁸

أَلْهَكُمُ الشَّكَاثُرُ ۝١

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٣

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٤

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝٥

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝٦

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝٧

ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝٨

1. अर्थात् तुम लोग धन दौलत कमाने, सांसारिक लाभ प्राप्त करने और ऐश के सामान एकत्र करने में ऐसे डूबे हो कि वास्तविक जीवन लक्ष्य और अपनी वास्तविक मन्जिल तुम्हारी नज़रों से ओझल हो गई है। तुम्हारी सारी दौड़ धूप और तुम्हारे सारे प्रयास धन अर्जित करने और वैभव और सत्ता की प्राप्ति के लिए होती है। इस से बुलन्द हो कर कुछ सोचने के लिए तुम आमादा ही नहीं हो।

धन दौलत का लोभ और सांसारिक लाभ की प्राप्ति में मनुष्य का हृदय से ज्यादा वयस्त होना उस की वह बुनियादी कमजोरी है जिस में वह हमेशा मुब्तिला रहा है। अलबत्ता मौजूदा दौर में उस ने कुछ नया और प्रगतिशील रूप धारण कर लिया है अतः धन प्रेम ने पूँजीवाद की, और संसार प्रेम ने भौतिकवाद का रूप धारण कर लिया है। अगर इन्सान पहले आखिरत का इन्कार करता था तो अब सिरे से खुदा ही को नहीं मानता। अगर पहले नैतिक मूल्यों (Moral Values) को पीछे फेंक कर सांसारिक लाभ प्राप्त करता था तो अब सांसारिक लाभ की खातिर नैतिक मूल्यों (Moral Values) से बिल्कुल खाली हो गया है। फिर मौजूदा सामाजिक उन्नति से प्रभावित हो कर हर व्यक्ति को अपना जीवन स्तर (Standard of Life) ऊँचा करने की चिन्ता है और आर्थिक क्षेत्र में व्यक्ति और समूह एक दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। लेकिन नैतिकता का स्तर (Standard of Moral) बुलन्द करने की फ़िक्र किसी को नहीं है, और न कोई यह सोचने का कष्ट उठाता है कि क्या संसार जीवन का आखिरी मरहला है या उस से आगे भी मरहले तै करने होंगे? इस महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ध्यान न करके इन्सान अपने जीवन लक्ष्य से बहुत दूर जा पड़ा है और ऐसा बेसुध है कि उसे आगे पीछे की कुछ खबर नहीं।

2. अर्थात् अधिक से अधिक धन समेटने और संसार प्राप्ति के प्रयासों में तुम ने अपनी पूरी आयु खपा दी और मरते दम तक तुम्हें यह तौफ़ीक़ नसीब न हुई कि मौत के बाद जिस चीज़ से मामला पेश आने वाला है उस पर विचार करते।

इन्सान की अधिक चाह की इच्छा और कभी न समाप्त होने वाले लोभ पर उसे हदीस में भी बड़े प्रभावपूर्ण अन्दाज़ से खबरदार किया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास से उल्लिखित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:-

لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَا يَبْغِي ثَانِيًا وَلَا يَمْلَأُ
جُوفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ. (بخاری کتاب الرقاق)

“आदमी के पास अगर धन से भरी दो वादियाँ हों तो वह तीसरी की तमन्ना करेगा। आदमी का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है।” का मतलब यह है कि आदमी की लालच की समाप्ति मिट्टी

में मिल जाने के बाद ही हो सकती है।

3. अर्थात् बहुत जल्द यह सच्चाई तुम पर खुल जाएगी कि धन दौलत की अधिकता और सांसारिक साज़ो-सामान का अधिक मात्रा में प्राप्त हो जाना असल कामयाबी नहीं है। बल्कि असल कामयाबी आखिरत की नेमतों की प्राप्ति है। उस समय तुम्हें अपनी ग़लती का अधिक एहसास होगा कि आखिरत को नज़र अन्दाज़ कर के तुम ने कितने बुरे अन्जाम को बुलावा दिया है।

4. मज़मून की यह पुनरवृत्ति (Repetition) ताक़ीद के लिए भी है और इस बात की ओर इशारा करने के लिए भी कि संसार प्राप्ति की इच्छा की हक़ीक़त पहली बार तो मौत के आते ही सामने आएगी और दूसरी बार क्रियामत के दिन प्रकट होगी।

5. अर्थात् कुआन जिस दिन की सूचना दे रहा है। उस पर अगर तुम्हें यक़ीन होता तो संसार के पीछे पड़कर बेपरवाही की ज़िन्दगी हरगिज़ न गुज़ारते बल्कि उस दिन के लिए तैयारी करते।

6. अर्थात् तुम जहन्नम के अस्तित्व को अगर मानना नहीं चाहते तो न मानों उस का अस्तित्व बहरहाल एक हक़ीक़त है और वह दिन ज़रूर आना है जब कि वह तुम्हारे सामने आ प्रकट होगी और तुम उस का अपनी आँखों से अनुभव करोगे।

7. अर्थात् तुम्हारा जहन्नम को देखना सपनों की दुनिया में नहीं बल्कि वास्तविकता की दुनिया में होगा। आज जिस चीज़ को तुम अविश्वस्नीय समझ रहे हो वह कल जब तुम्हारे अनुभव में आ जायेगी तो तुम्हें उस के अस्तित्व का पूरी तरह विश्वास हो जाएगा।

8. नेमतों में अल्लाह तआला की प्रदान की हुई तमाम नेमतें शामिल हैं। जैसे जीविका अर्जित करने का सामान, धन दौलत, औलाद शक्ति और योग्यता, उपकरण एवं, साधन, पद, वैभव और सत्ता इत्यादि। दुनिया में इन्सान को जो नेमत भी मिलती है वह अपने साथ एक ज़िम्मेदारी भी लाती है और वह ज़िम्मेदारी यह है कि इन्सान उस नेमत पर अल्लाह का शुक्र (धन्यवाद) अदा करे और उसे उन कामों में इस्तेमाल करे जो उसे पसन्द हैं। इस तरह अगर इन्सान अल्लाह तआला की नेमतों का हक़ अदा करता है तो क्रियामत के दिन उस के लिए जवाबदेही का मरहला आसान होगा और वह अपने रब की आनन्त नेमतों का पात्र ठहरेगा। लेकिन अगर वह सिरे से खुदा के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करता या स्वीकार तो करता है मगर यह समझता है कि इन नेमतों को प्रदान करने वाले बहुत से खुदा हैं या फ़लाँ नेमत फ़ैला देवी या देवता की प्रदान की हुई है और इस विषैली धारणा की बुनियाद पर वह उन नेमतों को अल्लाह की पसन्द और नापसन्द से बेपरवाह हो कर इस्तेमाल करता है तो क्रियामत के दिन उस से कड़ी पूछ ताछ होगी और इस नाशुक्री (कृतघ्नता)

और दोषपूर्ण कार्यविधि के कारणवश वह कठोर दण्ड का भागीदार होगा ।

मौक़े के लिहाज़ से इस आयत का इशारा विशेष रूप से धन दौलत की नेमत की ओर है कि इस को अधिक प्राप्त करने की चिन्ता तुम्हें ज़रूर है लेकिन इस सिलसिले में जो जवाबदेही करना होगी उस की तुम्हें बिलकुल चिन्ता नहीं । अगर खुदा के सामने जवाबदेही का एहसास तुम में होता तो धन दौलत के लोभी बनने के बजाय धैर्य एवं संतोष प्रिय होते कि दौलत जितनी अधिक मात्रा में मिलेगी हिसाब का मामला उतना ही बढ़ जायेगा और जवाबदेही कठिन होगी। ध्यान रहे कि क्रियामत के दिन जवाबदेही हर किसी को करना होगी चाहे व मुसलमान हो या काफ़िर। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

لَا تَزُولُ قَدَمَا عَبْدٍ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ عُمْرِهِ فِيمَا أَفْنَاهُ
وَعَنْ عِلْمِهِ فِيمَا فَعَلَ وَعَنْ مَالِهِ مِنْ أَيْنِ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَا
انْفَقَهُ وَعَنْ جِسْمِهِ فِيمَا أَبْلَاهُ. (ترمذی ابواب الزهد)

“(क्रियामत के दिन) बन्दे के क़दम हट न सकेंगे जब तक

कि उस से इन बातों के बारे में पूछा न लिया जायेगा। उस की आयु के बारे में कि कैसे गुज़ारी, उसे के इल्म (ज्ञान) के बारे में कि कहाँ तक उस पर अमल किया, उस के माल के बारे में कि कहाँ से कमाया और किस चीज़ में खर्च किया और उस के शरीर के बारे में कि किस चीज़ में जीर्ण (ख़त्म) किया”।

एक अवसर पर जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथ हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) भूख की तेज़ी को दूर करने के लिए एक अंसारी (सहायक) के घर गये और उन्होंने आप लोगों की सेवा खजूर और गोश्त से की और सब का पेट भर गया तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने साथियों से फ़रमाया :-

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُسْأَلُنَّ عَنْ هَذَا لَنُعِيمَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (فتح القدیر للشوكاني ج ۵ ص ۴۹۰ بروایه مسلم)

“क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है, क्रियामत के दिन तुम से ज़रूर इस नेमत के बारे में पूछा जाएगा”।



१०३. अल्-अस्र

नाम :- पहली आयत में “अस्र” (जमाना) की क्रसम खाई गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-अस्र है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के आरम्भिक चरण (मरहले) में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस बात से आगाह करना है कि इन्सानी क़ाफ़ला तेज़ी के साथ तबाही की तरफ़ बढ़ रहा है। इस तबाही से वही लोग बच सकते हैं। जो ईमान और अच्छे अमल की राह अपना लें और उस के तक्राज़ों को पूरा करें।

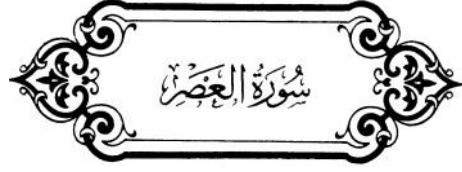
कलाम की तरतीब:- यह सूरह तीन छोटी छोटी आयतों

पर आधारित है मगर अर्थ के लिहाज़ से इस क्रदर व्यापक है कि न केवल मानवता के उत्थान और पतन का पूरा इतिहास इस में सिमट कर आ गया है बल्कि हिदायत का मीनारा बन कर व्यक्ति और समूहों को आगे चलने बढ़ने की सही दिशा से आगाह कर रही है, ताकि वह अभीष्ट (मन्ज़िले-मक़सूद) को पहुँच जायें और ग़लत राह पर पड़ कर तबाही के गढ़े में गिरने से बचें।

जमाने की गवाही इस बात के पक्ष में प्रस्तुत की गई है कि इन्सान तबाही से नहीं बच सकता अगर वह अपने अन्दर ईमान के गुण न पैदा कर ले।

१०३. सूरह अल्-अस्र

आयतें : ३



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ज़माने की क़सम,¹

وَالْعَصْرِ ①

2. इन्सान घाटे में है,²

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِفِي خُسْرٍ ②

3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए।³ और
जिन्होंने अच्छे कर्म किये ⁴ और एक दूसरे को
हक़ की हिदायत की ⁵ और सब की तल्कीन
(मंत्रणा)की।⁶

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّاصَوْا بِالْحَقِّ ③
وَتَوَّاصَوْا بِالصَّبْرِ ④

1. इस से पहले हम बता चुके हैं कि कुर्आन में विभिन्न चीजों की जो क्रसमें खायी गई हैं वह उन के पुज्य, पवित्र या महान होने के आधार पर नहीं खायी गई हैं बल्कि गवाही और दलील के तौर पर खाई गई हैं। यहाँ ज़माने की क्रसम भी इसी अर्थ में है।

Text में लफ़ज़ “अस्र” इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ “ज़माना” है। यह लफ़ज़ विशेष रूप से ज़माने की तेज़ रफ़्तारी (द्रुतगति) की ओर इशारा कर रहा है।

2. यह है वह बात जिस पर ज़माने की गवाही पेश की गई है। यह गवाही निम्न लिखित पहलुओं से है।

(i) इन्सान के पास सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु समय ही की पूँजी है जो गुज़रते हुए ज़माने का एक भाग है। यह समय अत्यंत सीमित है और बड़ी तेज़ी से गुज़र जाता है। जिस तरह बर्फ़ हर क्षण पिघलती रहती है और अगर एक व्यापारी उस को जल्द बेच कर के उस की कीमत खड़ी न कर ले बर्फ़, ख़त्म हो जायेगी और उस के पल्ले कुछ भी न पड़ेगा इसी तरह इन्सान को जो उम्र (आयु) की मोहलत मिली है उस से अगर वह फ़ायदा न उठाए और अपने परलोक का सामान न करे तो वह निश्चय ही घाटे में रहेगा। क्योंकि कि जो क्षण भी बीत रहा है उस की पूँजी बराबर घट रही है। गोया सेकेन्ड की सुई जिस तेज़ी के साथ चलती है उसी तेज़ी के साथ हमारी आयु को घटा कर हमारे घाटे में वृद्धि ही करती है सिवाय इस के कि हम समय का मूल्य पहचानें और उस को उन कामों में गुज़ारें जो लाभदायक परिणाम सामने लाने वाले और हमारे अन्त (परलोक) को संवारने वाले हों।

(ii) इतिहास की वह घटनाएँ जो अल्लाह के प्रकोप (अज़ाब) का द्योतक (निशानी) थे, इस बात का प्रमाण हैं कि जिन क्रौमों ने कुफ़्र, सरकशी (उद्यण्डता), सत्य का विरोध एवं अत्याचार और उपद्रव की राह अपनायी वह तबाही से दोचार हुई। अर्थात् ज़माना अपने इतिहास के आईने में इस सच्चाई को प्रस्तुत करता है कि तबाही और बरबादी से दोचार होने वाले कौन हैं और उस से बचने वाले कौन।

(iii) यह दुनिया इम्तिहान गाह (Examination Hall) है न कि सैर और तफ़रीह की जगह। इस इम्तिहान गाह में इन्सान को विभिन्न विषयों पर पर्चे हल करने के लिए दिये गए हैं और इस के लिए समय भी निर्धारित कर दिया गया है अतः जो व्यक्ति पर्चा हल करने के बजाये तफ़रीह में समय गुज़ार देता है वह निश्चय ही अपना नुक्सान करता है, और समय को नष्ट करने वाले के लिए नाकामी ही लिखी है।

इन पहलुओं के अलावा अस्र (ज़माने) की क्रसम में यह इशारा भी छिपा हुआ है कि दुनिया की समाप्ति का समय करीब

आ लगा है। अर्थात् आख़िरी नबी की बअसत (नियुक्ति) और क्रियामत (प्रलय) के बीच इतना ही फ़ासला रह गया है जितना कि इन्सानी आबादी की कुल उम्र (आयु) को एक दिन मान लेने की स्थिति में अस्र (अपरान्ह का समय) और मग़रिब (सूर्यास्त का समय) के बीच होता है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है कि :-

إِنَّمَا بَقَاءُكُمْ فِيمَنْ سَلَفَ قَبْلَكُمْ مِنَ الْأُمَمِ

كَمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى غُرُوبِ

الشَّمْسِ - (روح المعاني ج १० ص २९२ بحواله بخاری)

“जो उम्मतें गुज़र चुकी उन के मुकाबले में तुम्हारा दुनिया में रहना उतने ही समय के लिए है जितना समय अस्र की नमाज़ (अपरान्ह की नमाज़) और सूरज डूबने के बीच होता है।”

खुसरान से मुराद ज़िन्दगी भर का घाटा अर्थात् हमेशा हमेशा की तबाही और बर्बादी है जिस से फैसले के दिन इन्सान को दो चार होना होगा।

3. अर्थात् आख़िरत की सदा सर्वदा बर्बादी से वही लोग सुरक्षित रहेंगे जो ईमान ला कर भलाई एवं सकारात्मक जीवन अपनाएँगे।

ईमान लाने का मतलब सूरह बक्रर: नोट नं. ६ में बयान किया जा चुका है।

4. पता चला कि आख़िरत के ख़सारे (घाटे) से बचने के लिए केवल ईमान लाना काफ़ी नहीं बल्कि उस के साथ नेक अमल (सुकर्म) भी ज़रूरी है। और सत्य यह है कि जहाँ ईमान सचमुच मौजूद होगा वहाँ उस की रौशनी से अमली ज़िन्दगी (Practical Life) भी उज्ज्वल होगी और इन्सान सदाचारी और चरित्रवान बनेगा। लेकिन जहाँ ईमान मात्र अचल (जामिद) धारणा के रूप में होगा जिस ने विवेक (शऊर) को प्रभावित न किया हो तो अमली ज़िन्दगी (Practical Life) भी संवर न सकेगी। अच्छे बीज से अच्छा पौधा ही पैदा होता है और ख़राब बीज से ख़राब पेड़। इस लिए हो नहीं सकता कि ईमान तो दिल में मौजूद हो और व्यवहारिक जीवन (Practical Life) दुष्कर्म, अवज्ञा एवं पथभ्रष्टता से भरा हुआ हो। व्यवहारिक जीवन का फ़साद (विकार) इस बात का प्रमाण है कि ईमान स्वस्थ दशा में मौजूद नहीं है।

नेक कामों (सुकर्मों) की हकीकत अल्लामा फ़राही ने बड़े सुन्दर ढंग से बयान की है। लिखते हैं:-

“अल्लाह तआला ने अच्छे कामों को “स्वालिहात” से अलंकृत किया है। इस लफ़ज़ के इस्तेमाल से इस महान नीति (हिकमत) की तरफ़ रहनुमाई होती है कि इन्सान की तमाम बाहरी

एवं अन्दरुनी, दीनी एवं दुनियावी, व्यक्तिगत एवं सामूहिक और शारीरिक एवं बौद्धिक सुधार एवं उन्नति का माध्यम अच्छे काम ही हैं। अर्थात् स्वालेह अमल (सुकर्म) वह कर्म हुआ जो इन्सान के लिए ज़िन्दगी और विकास का कारण बन सके और जिस के द्वारा इन्सान प्रगति कर के उन उच्च श्रेणियों तक उन्नति कर सके जो उस के स्वभाव में समर्पित है।” (मजमुआ तफ़ासीर फ़राही पृष्ठ ३५२)

5. हक़ और सब्र यद्यपि स्वालेह आमाल में शामिल है लेकिन ये चूँकि बुनियादी नेकियों में से है इस लिए उन का ज़िक्र विशेष रूप से किया है।

हक़ उस बात को कहते हैं जो सच्ची, न्याय पर आधारित और वास्तविकता के अनुकूल हो। यह बातिल (असत्य) का विलोम है और यह पूरे दीने-हक़ (सत्यधर्म) पर भी लागू होता है और उस की शिक्षाओं पर भी जो इन्साफ़ के तक्राज़े के तहत ज़ालिम शासकों या असत्यप्रेमियों (बातिल परस्तों) के सामने पेश किया जाए। इस के अलावा यह उन अधिकारों (हुकूक़) पर भी लागू होता है जिन का अदा करना नैतिक रूप से और संवैधानिक (क़ानूनी) रूप से इन्सान पर वाज़िब है। जैसे खुदा का हक़, माँ, बाप, का हक़ रिश्तेदारों का हक़, पड़ोसियों का हक़, गरीबों और मोहताजों का हक़ इत्यादि।

ईमान वालों की इस ख़ूबी (गुण) का जो ज़िक्र फ़रमाया कि वह हक़ की एक दूसरे को हिदायत करते हैं। तो इस से यह बात

आप से आप स्पष्ट हो जाती है कि ईमान वाले हक़ (सत्य) पर न सिर्फ़ खुद जमे रहते हैं। बल्कि वह दूसरों को भी इस की हिदायत और तल्कीन (मंत्रणा) करते हैं। दूसरे शब्दों में ईमान वाले ऐसे बेहिस नहीं होते कि बातिल (असत्य) उभर रहा हो या समाज में सत्यविरोधी और ग़लत बातें प्रचलित हो रही हो और वह ख़ामोश तमाशाई (मूक दर्शक) बने रहे बल्कि वह अपनी घरेलू और सामाजिक ज़िम्मेदारी महसूस करते हुए हक़ की आवाज़ बुलन्द करते हैं। और एक दूसरे की इस्लाह (सुधार) के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

इसी परिवेश में इस से यह उसूली बात भी साबित होती है कि इज़हारे हक़ (सत्यभिव्यक्ति) ईमान वालों का हक़ है और इस की आज्ञादी बहरहाल इन्हें होनी चाहिए।

६. हक़ (सत्य) को स्वीकार करने, उस का समर्थन करने, सत्यवचन कहने और सत्यमार्ग पर चलने के परिणाम स्वरूप तरह तरह की कठिनाईयाँ आती हैं, तकलीफ़ों कष्टों एवं परिश्रमों का सामना करना पड़ता है और विरोध के तूफ़ान से गुज़रना पड़ता है। हानियाँ भी सहन करनी पड़ती हैं और कुर्बानियाँ भी देनी पड़ती हैं। इस लिए हक़ के साथ सब्र और इस्तिक्रामत (दृढ़ता) तहम्मुल एवं बुर्दबारी (सहिष्णुता एवं सहनशीलता) और हिम्मत एवं हौसले का होना भी ज़रूरी है। सब्र के मफ़हूम (भावार्थ) में यह तमाम बातें शामिल हैं और इसी मुनासिबत से सब्र की तल्कीन (मंत्रणा) को ज़रूरी क्रार दिया गया है।



१०४. अल्-हुमज़ः

नाम :- पहली आयत में “हुमज़ः” ईमान वालो पर उंगलियाँ उठाने वालों को खबरदार किया गया है कि इन की हरकतें उन के लिए तबाही का कारण होगी इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-हुमज़ः है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह “अस्र” के बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- धन के पुजारियों को झिझोड़ना है कि जिन के चरित्र की यह दशा है तो निश्चय ही वह कर्मभोग तक पहुँच कर रहेंगे।

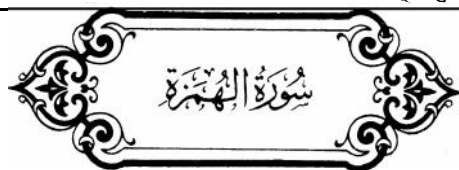
आयत की तरतीब :- आयत १ से ३ में धन के

पुजारियों का चरित्र चित्रण किया गया है और उन्हें खबरदार किया गया है कि ऐसे आचरण निश्चय ही तबाही का कारण है।

आयत ४ से ९ में धन के पुजारियों का आखिरत में होने वाला अन्जाम बयान किया गया है।

यह सूरह पिछली सूरह से इस हद तक जुड़ी हुई है कि बिल्कुल इस का पूरक (परिशिष्ट) मालूम होती है। अगर पिछली सूरह की समाप्ति उन गुणों के बयान करने पर हुई थी जो कामयाबी की ज़मानत है तो इस सूरह का आरम्भ उन गुणों के ज़िक्र से हुआ है जो बर्बादी का कारण हैं।

१०४. सूरह अल्-हुमज़:



आयतें : ९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो (ईमान वालों पर) उंगलियाँ उठाता और ता'नोतशनीअ (व्यंग और कटाक्ष) करता है।¹

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝١

2. जिस ने माल समेटा और उसे गिन गिन कर रखा।²

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهُ ۝٢

3. वह समझता है कि उस के माल (धन)ने उस को हमेशा की ज़िन्दगी बख़्शी (प्रदान की) है।³

يَحْسِبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝٣

4. हरगिज़ नहीं,⁴ और वह हुतमः⁵ (कुचल देने वाली) में फेंक दिया जायेगा।⁶

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤

5. और तुम्हें क्या मालूम कि हुतमः क्या है?⁷

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥

6. अल्लाह की भड़कायी हुई आग,⁸

نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةُ ۝٦

7. जो दिलों पर जा चढ़ेगी,⁹

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْآفِئَةِ ۝٧

8. उस में उन को बन्द कर दिया जाएगा।

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَدَةٌ ۝٨

9. लम्बे लम्बे सुतूनों (स्तम्भों) में।¹⁰

فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ۝٩

1. पिछली सूरह कि आखिरी आयत में वह गुण बयान किये गये थे जो आखिरत के घाटे से बचाने वाले और कामयाबी की ज़मानत हैं। ये गुण ईमान वालों के किरदार की विशेषताएँ हैं लेकिन दुनिया परस्तों की नज़र में इन का कोई महत्व नहीं होता और ख़ास तौर से जो लोग धन दौलत के पुजारी होते हैं वह इस किरदार के लोगों को बेइज़्जत ख़याल करते हैं बल्कि उन के अपमान और तिरस्कार पर उतर आते हैं। दौलत का घमण्ड उन के अन्दर ओछापन पैदा का देता है और वह उन पर उंगलियाँ उठाते हैं कि इस पर बस आखिरत ही की धुन सवार है। वह उन की दीनदारी का मज़ाक़ उड़ाते हैं और जहाँ मौक़ा पाते हैं उन पर व्यंग्य कस देते हैं।

इस सूरह के नाज़िल होने के समय में कुरैश के सरदारों का यही हाल था। वह दौलत के घमण्ड में डूबे हुए थे और जो धन के पीछे पड़ने के बजाए आखिरत की दौलत जमा कर रहे थे उन पर उंगलियाँ उठा रहे थे कि ये किस सम्मान के अधिकारी हैं? सम्मान वाला तो वही है जो दौलतमन्द है। उन की दीनदारी और परहेज़गारी की ज़िन्दगीयों पर वह तरह तरह की फ़त्तियाँ कसते और बड़ा व्यंग्य एवं तिरस्कार करते यहाँ उन की इन ही हरकतों पर पकड़ की गई है।

कलाम के अवसर के लिहाज़ से ईमान वालों पर उंगलियाँ उठाने और व्यंग्य एवं तिरस्कार करने की बुरी हरकत को कंज़ूस एवं संकीर्ण हृदय के पूँजीपतियों का तरीक़ा (नीति) क़रार दिया गया है जैसा कि आगे की आयत से स्पष्ट है लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि यह हरकत केवल धन के पुजारी ही करते हैं बल्कि आयत का असल अभिप्राय एवं उद्देश्य यह है कि जो भी यह हरकत करेगा वह अपनी तबाही का सामान करेगा। सूरह तौबा में जो मदीने में नाज़िल होने वाली सूरह है, मुनाफ़िक़ों (ईमान का झूटा दावा करने वालों) के इस व्यंग्य एवं तिरस्कार का वर्णन हुआ है जो ईमान वालों पर वह “सदक़ों” (दान) के सिलसिले में किया करते थे।

गरीब ईमान वाले मेहनत मज़दूरी कर के जो कुछ कमाते उस में से अल्लाह की राह में ख़र्च करते। धन की बड़ी मात्रा उन के पास दान के लिए न होती मगर मुनाफ़िक़ीन इस पर व्यंग्य करते और उन का मज़ाक़ उड़ाते।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي
الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ - (التوبة- ८९)

“जो खुशी खुशी इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च) करने वाले मोमिनों पर उन के दान के सिलसिले में ताना मारते हैं और

उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत और मज़दूरी के सिवा इन्फ़ाक़ के लिए कुछ और नहीं पाते।” (तौबा ७९)

जहाँ तक आयत के ख़ास पहलू का सम्बन्ध है अर्थात् प्रसंग और संदर्भ (Reference & Context) के लिहाज़ से इस का जो भावार्थ है उस की व्याख्या ऊपर हो चुकी। रहा इस का सामान्य पक्ष तो वह यह है कि शरीअत ने जिन लोगों के आदर का आदेश दिया है उन का आदर करने के बजाय उन की पगड़ी उछालना, ऐब निकालना और उन के विरुद्ध दिल दुखाने की बातें करना वह निन्दनीय अवगुण है जिस का नतीजा आखिरत में बहुत बुरा निकलेगा चाहे इस का करने वाला कोई मुसलमान ही क्यों न हो।

यहाँ यह बात याद रहनी चाहिए कि पुराने ज़माने में ऐबचीनी (छिद्रान्वेषण) और व्यंग्य एवं तिरस्कार की जो विधियाँ प्रचलित थी जैसे राह चलते आँखों से इशारा करना, उंगलियाँ उठाना, आवाज़ें कसना, फ़त्तियाँ चुस्त करना, बुरे नाम धरना, व्यंग्य करना और ख़ास तौर से कविताओं (शायरी) में व्यंग्यकाव्य कहना इत्यादि। मौजूदा ज़माने में इन के अलावा कुछ नये तरीक़ों की भी वृद्धि हो गई है जैसे कार्टून, तन्ज़ निगारी (कटाक्ष-लेख) व्यंग्यात्मक ड्रामे, तीरो-नशतर के कालम जो आजकल समाचार पत्रों की शोभा बने हुए हैं और जिस ने बाक़ायदा फ़न का रूप धारण कर लिया है. “हम्ज़ व लम्ज़” (छिद्रान्वेषण एवं तिरस्कार) ही के उन्नति प्राप्त रूप हैं जब कि उन के द्वारा ऐसे लोगों की पगड़ी उछाली जाये जिन की इज्जत को शरीअत ने आदरणीय ठहराया।

2. अर्थात् यह दौलत का घमण्ड है जिस ने उन के अन्दर ऐसा ज़ेहन पैदा कर दिया है कि वह इन ग़रीबों को तुच्छ जाने और उन का मज़ाक़ उड़ाये जिन्होंने अपने ख़ब से सही तअल्लुक़ (सम्बन्ध) पैदा कर लिया है और अपनी ज़िन्दगियों को नेकियों से संवारा है।

दौलत के पुजारियों को हमेशा धन की फ़िक्क़ लगी रहती है और लालची पूँजीपति हमेशा पूँजी ही के उलट फेर में लगे रहते हैं। उन का दिल कारोबार में अटका हुआ होता है और उन का दिमाग़ हिसाब किताब में लगा हुआ। उन का सारा ध्यान एक ही समस्या पर केन्द्रित होता है और वह यह कि उन की पूँजी में किस तरह वृद्धि हो और उन का बैंक बैलन्स (Bank Balance) किस तरह बढ़े। यह चिन्ता उन के दिल और दिमाग़ को इस तरह परेशान किये रहती है कि न उन्हें ख़ुदा और आखिरत के बारे में कुछ सोचने की फ़ुरसत होती है और न वे अपनी मनोवृत्ति के अनुसार नसीहत की बातें सुनने के लिए आमदा होते हैं। उन की बढ़ती हुई लालच उन्हें इस बात की भी इजाज़त नहीं देती कि वह ख़ुदा के दिये हुए माल में ख़ुदा के

बन्दों का जो हक है वह अदा करें बल्कि वह अपने माल पर साँप बन कर बैठ जाते हैं।

माया प्रेम एवं धन की पूजा की निन्दा इन्जिल में भी बड़े प्रभाव पूर्ण अन्दाज़ में की गई है। जैसे:-

“अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।” (मती ६:१९ से २१)

“तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। (मती ६:२४)

3. यह धन के पुजारियों की मनोवृत्ति का प्रतिबिम्ब (अक्स) है। वह अपने धन को जीवन की पूँजी समझता है और जो कार्यविधि अपनाता है उस से जाहिर होता है कि जैसे दुनिया में उस को हमेशा रहना है और कभी मौत आने वाली नहीं है।

दौलत चूँकि सांसारिक ऐश्वर्य का साधन है इस लिए पूँजीपति इस फरेब में मुब्तिला हो जाते हैं कि दौलत उन के लिए जीवनदायक है और उन की स्थिरता का कारण है। हालाँकि दौलत में न जीवन शक्ति है और न स्थिरताशक्ति अगर उस में जीवन शक्ति होती तो वह इन्सान को ज़रूर दिल का सुकून प्रदान करता जब कि मालदारों को यही चीज़ नसीब नहीं होती और सामान्यतः उन का जीवन परेशानियों में घिरा हुआ होता है। अलबत्ता परहेज़गारी (तक्रवा) की ज़िन्दगी अपना कर के इन्सान दिल का सुकून महसूस करता है। पता चला कि इन्सान को अनन्त जीवन प्रदान करने वाली चीज़ परहेज़गारी (तक्रवा) है न कि दौलत। कुर्आन में यह हक़ीक़त विभिन्न जगहों पर बयान हुई है और इन्जील में इसे इस तरह बयान किया गया है कि “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु परमेश्वर के वचन से जीता है” (मती ४:४) और वास्तविकता यह है कि आदमी की दौलत उस की क़ब्र तक भी नहीं जाती फिर यह तो बहुत दूर रहा कि उसे अनन्त जीवन प्रदान करे। मगर आज भी दौलत के मामले में इन्सान का विचार वही है जो इस से पहले (माज़ी में) था। अर्थात् वह दौलत को दुनिया की ज़िन्दगी का सामान समझने और भलाई के कामों में खर्च करने के बजाए उस से अपनी स्थिरता की आशाएँ बाँधता है और उसे जमा करता रहता है। फिर जमा करने की भी कोई हद नहीं होती। लखपति बन जाने के बाद वह करोड़पति बनना चाहता है और करोड़पति बन जाने

के बाद अरबपति। जब कि समाज में कितने ही लोग अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए मोहताज होते हैं और भलाई के कितने ही काम मात्र रुपये की कमी के कारण हो नहीं पाते।

सारांश यह कि कुर्आन धन जमा करने की इस प्रवृत्ति को निन्दनीय क्रार देता है सिवाय इस के कि आदमी अपनी और अपने सम्बन्धियों की वास्तविक ज़रूरतों के लिए दौलत रोके रखे।

4. यह दौलत के पुजारियों के इस विचार का खण्डन है जो ऊपर बयान हुआ।

5. Text (मूल) में लफ़्ज़ “हुतमः” इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ चूर चूर कर देने वाली और कुचलने वाली के हैं। यह जहन्नम का नाम है और इस की यह सिफ़त (खूबी) “हुमज व लुमज़” की उस निन्दनीय अवगुण के साथ बयान हुई है जिस का ज़िन्न आयत नं. १ में हुआ। इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो व्यक्ति अल्लाह के मुखलिस (निःस्वार्थ) बन्दों की इज़ज़त को क्षति पहुँचाता है, जहन्नम उस की इज़ज़त के परखच्चे उड़ायेगी और ईमान वालों का अपमान एवं तिरस्कार करने के जुर्म में उसे कुचल डालेगी।

गौर किजिए “हुमजः व लुमजः” की तुलना में “हुतमः” के लफ़्ज़ ने लफ़्ज़ी यक्सानियत (शाब्दिक समानता) ही नहीं बल्कि अर्थ की मुनासिबत भी पैदा कर दी है और कुर्आन की अलंकारिक शैली (बलागत) और उस के चमत्कार की यह मामूली मिसाल है।

6. फ़ेंक देने में इशारा है इस बात की तरफ़ कि यह माल और दौलत की वजह से जिस घमण्ड में मुब्तिला था इस का पता उसे उस समय चलेगा जब कि यह जहन्नम में अपमान के साथ फ़ेंक दिया जाएगा।

7. यह सवाल जहन्नम की हौलनाकी का एहसास दिलाने के लिए है।

8. यह “हुतमः” की व्याख्या है जो अल्लाह तआला ने खुद ही फ़रमाई है।

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि जिन दिलों में अल्लाह की मुहब्बत के बजाय माल की मुहब्बत रच बस गई थी उन पर यह आग चढ़ दौड़ेंगी और दिल में आग के घुस जाने से दुख और पीड़ा की जो मनोदशा होगी उस का अन्दाज़ा दिल के मरीज़ की दशा से भी नहीं किया जा सकता।

10. अर्थात् वह उस आग के लम्बे लम्बे स्तंभो (सुतूनों) में घिरे हुए होंगे।

१०५. अल्-फ़ील

नाम :- पहली आयत में असहाबुलफ़ील (हाथी वालों) का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-फ़ील” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और आरम्भिक दौर के अवतरणों में से है।

केन्द्रीय विषय :- ऐतिहासिक और शिक्षाप्रद मिसाल उन लोगों के अन्जाम की जो दौलत और सत्ता के नशे में खाना-ए-काबा को ढा देने के उद्देश्य से निकले।

आयत की तरतीब:- यह पूरी सूरह उस ऐतिहासिक घटना के इबरतनाक (शिक्षाप्रद) पहलुओं पर आधारित है जो “फ़ील” की घटना के नाम से प्रसिद्ध था।

आयत १ में इस बात पर विचार एवं चिन्तन करने का न्योता दिया गया है कि जिस लश्कर ने खाना-ए-काबा को ढा देने के लिए क़दम उठाया था उस के साथ अल्लाह तआला ने क्या मामला किया?

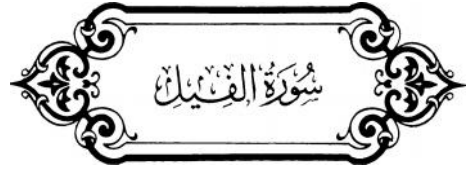
आयत २ में बताया गया है कि उन की चाल किस तरह उलटी पड़ी।

आयत ३ और ४ में अल्लाह तआला की कुदरत के करिश्मे का ज़िक्र हुआ है जो उस के घर की सुरक्षा के लिए प्रकट हुआ।

आयत ५ में हमलावरों का इबरतनाक (शिक्षा प्रद) अन्जाम बयान किया गया है जिस को इतिहास ने अपने पन्नों में हमेशा के लिए सुरक्षित कर दिया है।

१०५. सूरह अल्-फ़ील

आयतें : ५



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम ने नहीं देखा ¹ कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया? ²
2. क्या उन की तदबीर को बेकार नहीं कर दिया ? ³
3. और उन पर परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड नहीं भेजे ? ⁴
4. जो उन पर पकी हुई मिट्टी के ⁵ पत्थर फेंक रहे थे, ⁶
5. फिर उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस। ⁷

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ^ط ①

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ^ي ②

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ^ل ③

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ^ر ④

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ^ه ⑤

1. सम्बोधन (Address) यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है लेकिन इस के वास्तविक सम्बोधित (Addressee) कुरैश और अरब वासी हैं जो इस घटना से भली भाँति परिचित थे।

2. हाथी वालों (असहाबुल फ़ील) से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है जो हाथियों को ले कर अल्लाह के पवित्र घर पर चढ़ दौड़ा था। इस घटना की तफ़सीलात (विवरण) कुर्आन ने बयान नहीं की क्यों कि इस घटना से अरब का बच्चा बच्चा परिचित था एवं इस सूरह के नाज़िल होने के समय उस के प्रत्यक्ष गवाह भी मौजूद थे। इस लिए कुर्आन ने इस के इबरतनाक (शिक्षाप्रद) पहलुओं की तरफ़ इशारा करने और अपने इस एहसान का जिक्र करने पर बस किया की उस ने किस असाधारण तरीक़े से अपने घर की हिफ़ाज़त का सामान किया। हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस घटना की कोई तफ़सील नक़ल नहीं की गई है। अलबत्ता उल्लेखों (रिवायत) और सीरत (जीवनी) की किताब में विवरण पाए जाते हैं। ख़ास तौर से सीरत इब्ने इस्हाक़ में यह किस्सा साविस्तर बयान हुआ है। लेकिन उस में उचित अनुचित सभी कुछ मौजूद है। दूसरी रिवायत (उल्लेखों) का भी लगभग यही हाल है इस लिए हम इन उल्लेखों को सामने रखते हुए सिर्फ़ उन बातों के जिक्र पर संतोष करेंगे जिन का समर्थन तथ्यपूर्ण परिस्थितियों से होता है। या जिस को स्वीकार करने में कोई दुविधा नहीं है।

यह घटना सन ५७० ई. या ५७१ ई. की है जब कि यमन में अब्रहा नामी एक ईसाई शासक जो हब्शा के ईसाई बादशाह के मातहत (आधीन) था, शासन कर रहा था। उसे यह देख कर कि अरब वासियों की आस्था का केन्द्र ख़ाना-ए-काबा है और हर साल यहाँ हज्ज का बड़ा इज्तिमा (सम्मेलन) होता है, ईर्ष्या पैदा हो गई और उस ने सनआ (Sana) में बहुत ही शानदार गिर्जा बनवाया ताकि अरब वासियों के हज्ज का रुख़ इस की तरफ़ फेरा जा सके। इस उद्देश्य के लिए उस ने ख़ाना-ए-काबा को ढा देने की योजना बनाई और साठ हज़ार का भारी लश्कर ले कर मक्का की तरफ़ कूच किया। इस लश्कर में आगे आगे हाथियों की एक तादाद थी इसी कारण यह लोग “असहाबुलफील” कहलाए।

यह लश्कर जब यमन से मक्का के लिए रवाना हुआ तो रास्ते में कुछ अरब क़बीलों ने प्रतिरोध किया लेकिन वह उस को रोकने में कामयाब न हो सके यहाँ तक कि यह लश्कर मिना के निकट मुहस्सिर की घाटी में पहुँच गया जो मक्का से कुछ ही मील की दूरी पर है।

इधर कुरैश को जब इस आक्रमण की ख़बर हुई तो उन के सरदार अब्दुल मुत्तलिब ने जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के दादा हैं, ख़ाना-ए-काबा के दरवाज़े को पकड़ कर अल्लाह तआला से दुआ माँगी। इस दुआ में कुरैश के दूसरे लोग भी शामिल थे। इस अवसर पर अब्दुल मुत्तलिब ने जो अशआर (काव्य पंक्ति) पढ़े वह यह है :-

لَا هُمْ إِلَّا الْعَبْدُ يَمْنَعُ رَحْلَهُ فَاَمْنَعُ رَحَالَكَ

“ऐ खुदा ! बन्दा अपने घर वालों की रक्षा करता है तू भी अपने लोगों की रक्षा कर”

لَا يَغْلِبُنَّ صَلِيْبُهُمْ وَمَحَالُهُمْ غَدُوًّا مَحَالِكَ

“कल इन की सलीब और इन की शक्ति तेरी शक्ति पर हावी न होने पाए।”

إِنْ كُنْتُ تَارِكُهُمْ وَقَبْلَتْنَا فَأَمْرٌ مَا بَدَاكَ

“अगर तू इन को और हमारे क़िबले को यूँ ही छोड़ देना चाहता है तो फिर तेरी मर्ज़ी ”

(सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ ५१)

कुरैश के लिए जो तादाद में थोड़े थे, साठ हज़ार के भारी लश्कर का मुकाबला करना कठिन था। अगर उन के और लश्कर के बीच मुठभेड़ हो भी जाती हो विजय की आशा नहीं थी और मामला अल्लाह के घर की सुरक्षा का था।

उस घर की सुरक्षा का जो दुनिया में अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया पहला घर है। इस का यह असाधारण महत्व एवं श्रेष्ठता का यह ज़रूरी तक्राज़ा हुआ कि इस की सुरक्षा का सामान भी असाधारण हो। अतः अल्लाह की ग़ैरत जोश में आयी और उस ने लश्कर को आगे बढ़ने नहीं दिया अब्रहा का ख़ास हाथी जो आगे आगे था मुहस्सिर की घाटी में सहसा बैठ गया, उसे मार कर ज़ख्मी कर दिया गया मगर वह न उठा। उसे यमन या शाम या पूरब की तरफ़ मोड़ने की कोशिश की जाती तो वह उठ कर दौड़ने लगता और जब मक्का की तरफ़ मोड़ा जाता तो वह फ़ौरन बैठ जाता। इतने में परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड आये जिन की चोंचों और पन्नों में कंकरियाँ थीं। उन्होंने लश्कर पर उन की बारिश कर दी। इन कंकरियों की विशेषता यह थी कि वह जिस पर भी गिरती उस के शरीर पर फोड़ा निकल आता और पीप और खून बहने लगता और थोड़ी ही देर में पूरा शरीर गलने लगता। जैसा कि कुछ रिवायत (उल्लेखों) से ज़ाहिर होता है। यह अनुमानतः चेचक की तरह का कोई खतरनाक मर्ज़ था जो अचानक फट पड़ा था। कंकरियाँ जो पकी हुई मिट्टी की थीं कुछ ऐसा विष लिये हुए थीं कि जिस के कंकरी लग जाती उस का शरीर सड़ने लगता। इस आफ़त ने लश्कर को इस तरह लपेट में ले लिया कि उस के अन्दर

ज़बरदस्त भगदड़ मच गई और लाशों पर लाशें गिरती चली गयीं। अब्रहा का भी बहुत बुरा हाल हुआ। उस के शरीर से खून और पीप (मवाद) बह रहा था और जिस्म झर रहा था। आखिरकार उस का सीना फट गया और वह बुरी तरह विनष्ट हो गया।

यह घटना मुहर्रम के महीने में घटी थी और इसी साल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश मुबारक हुई। (अल-बिदाय: वन्निहाय: भाग १ पृष्ठ १७५)

इस घटना का सब से अहम पहलू यह है कि अल्लाह तआला ने अपने घर की सुरक्षा का असधारण प्रबन्ध किया। परिन्दों के द्वारा कंकरियों की बारिश और कंकरियाँ भी ऐसी जो बन्दूक की गोली का काम करें, खुदा की एक चमत्कृत निशानी थी जो प्रकट हुई। और इस प्रकार की निशानियाँ खास खास अवसरों पर प्रकट होती हैं।

रहा इस का ऐतिहासिक प्रमाण तो कुर्आन स्वयं सब से बड़ा ऐतिहासिक प्रमाण है क्यों कि अगर कुर्आन का बयान ग़लत होता ----- और यह बात वही लोग सोच सकते हैं जिन को कुर्आन की सत्यता पर विश्वास नहीं ----- तो मक्का के वासी ज़रूर इस का खण्डन करते लेकिन चूँकि इस घटना को अपनी आँखों से देखने वाले उन के बीच मौजूद थे और घटना की शोहरत (प्रसिद्धि) के कारण वह इस सच्चाई को जानते थे इस लिए कुर्आन के बयान को ग़लत क्रार देने की किसी को ज़रूरत नहीं हुई। इस के अलावा पूर्व इस्लाम के अरब शायरों ने इस घटना का वर्णन अपने दोहों और कविताओं में किया है। मिसाल के तौर पर नुफ़ैल जिस ने इस घटना को अपनी आँखों से देखा है, कहता है :

حَمَدْتُ اللَّهَ إِذَا أَبْصَرْتُ طَيْرًا

“मैं ने अल्लाह का शुक्र अदा किया जब परिन्दों को देखा”

وَحَفَّتْ حَجَارَةٌ تُلْقَى عَلَيْنَا

“और डरा कि कोई पत्थर न लग जाए जिस की हम पर बारिश हो रही थी”

और अब्रहा की पराजय और विनष्टता का जिक्र इस तरह करता है।

أَيْنَ الْمَفْرُ وَالْإِلَهِ الطَّالِبِ

“अब भाग कर कहाँ जाएँ जब कि खुदा पीछा कर रहा है।”

وَالْأَشْرُمُ الْمَغْلُوبُ لَيْسَ الْغَالِبُ

“और नकटा (अब्रहा) मगलूब (पराजित) है ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) नहीं” (सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ ५३, ५४)

3. अर्थात् अब्रहा और उस के लश्कर ने ख़ाना-ए-काबा को ढाने के उद्देश्य से जो अभियान किया था उस को अल्लाह तआला ने नाकाम बना दिया और वह अपने नापाक इरादों में हरगिज़ कामयाब न हो सका।

असहाबुल फ़ील (हाथी वालों) की तदबीर को नाकाम बनाने में बुतों या देवी देवताओं का कोई दखल नहीं था बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की कुदरत का करिश्मा था जो उन पर प्रकोप के रूप में प्रकट हुआ। अरब वासी भी इस को स्वीकारते थे। अतः अरब शायरों (कवियों) ने भी अब्दुलमुत्तलिब के साथ ख़ाना-ए-काबा के दरवाजे पर जो दुआ माँगी थी वह खुदा ही से माँगी थी न कि बुतों से। यह इस बात का सबूत है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) सत्य है जिस की ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुला रहे हैं। और बुत परस्ती कदापि ग़लत (असत्य) है।

4. यह इस बात की तफ़सीर है कि अल्लाह तआला ने हाथी वालों की तदबीर को किस तरह बेकार कर दिया। सूत यह हुई कि अल्लाह तआला ने इन को तबाह करने के लिए परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड भेज दिये। दूसरे शब्दों में हाथी वाले लश्कर का मुकाबला परिन्दों के लश्कर ने किया।

उल्लेखकर्ताओं (रावियों) का बयान है कि ये परिन्दे खास क्रिस्म के थे और समुद्र की तरफ़ से आए थे।

5. Text (मूल) में लफ़्ज़ “सिज्जील” इस्तेमाल हुआ है जो फ़ारसी के दो लफ़्ज़ संग (पत्थर) और गिल (मिट्टी) से बनाया गया है और इन से मुराद वह कंकर है जो पकी हुई मिट्टी से बने हों। ज्वालामुखी क्षेत्र में लावे की वजह से मिट्टी जो पत्थर का रूप धारण कर लेती है शायद उसी को सिज्जील कहा गया है। और आश्चर्य नहीं कि परिन्दे इन पत्थर की कंकरियों को अपनी चोंचों और पंजों में क़रीब के किसी ज्वालामुखी क्षेत्र से ले कर आए हों और उन के अन्दर विषैला पदार्थ हो या उस के साथ ज़हरीले कीटाणु हों जिस ने अचानक महामारी का रूप धारण कर लिया हो। बहरहाल यह साधारण पत्थर नहीं बल्कि विशेष प्रकार के पथरीले कंकर थे इसी लिए कुर्आन ने इस का जिक्र “सिज्जील की क्रिस्म के पत्थर” की पुष्टि के साथ किया।

6. परिन्दों की यह संगबारी गोया आसमानी बमबारी थी जिस ने हाथियों को भी तबाह किया और हाथी वालों को भी। परिन्दों के पथरीले कंकर गिराने को कंकर फेंकने (تَرْمِيهِمْ) तर्मीहिम) से इस लिए ताबीर (अलंकृत) किया गया कि उन्होंने ने लश्कर पर पथरीले कंकरों की ऐसी बौछार कर दी थी कि वह पूरी तरह उस की ज़द में आ गया जैसे ये तीर थे जो निशाने पर लग गए। इस परिस्थिति के पैदा होने में हो सकता है कि हवा का भी

दखल (रोल) रहा हो अर्थात् उस समय तेज हवा चली हो। शायद इसी वजह से कुछ अरब शायरों ने परिन्दों की इस संगबारी (कंकर फेंकने) को “हासिब” (पत्थर बरसाने वाली आँधी) से ताबीर किया है।

हाथी वालों पर परिन्दों के जो झुण्ड के झुण्ड भेजे गये थे इस की एक तावील (अर्थापन) यह की जाती है कि यह परिन्दे हाथी वालों की लाशें खाने के लिए आए थे न कि कंकर बरसाने के लिए। मगर आयतों का क्रम और मज़मून इस तावील से मेल नहीं खाता एवं परिन्दों का लाशें खाना कोई ऐसी बात नहीं है कि कुआन इस एहतिमाम के साथ इस का जिक्र करे। इस लिए जम्हूर मुफ़स्सिरीन (अधिकांश तफ़सीर करने वालों) ने आयतों का जो मतलब बयान किया है वही सही है और इस के हिसाब से परिन्दें लाशें खाने के लिए नहीं बल्कि लाशें गिराने के लिए आए थे।

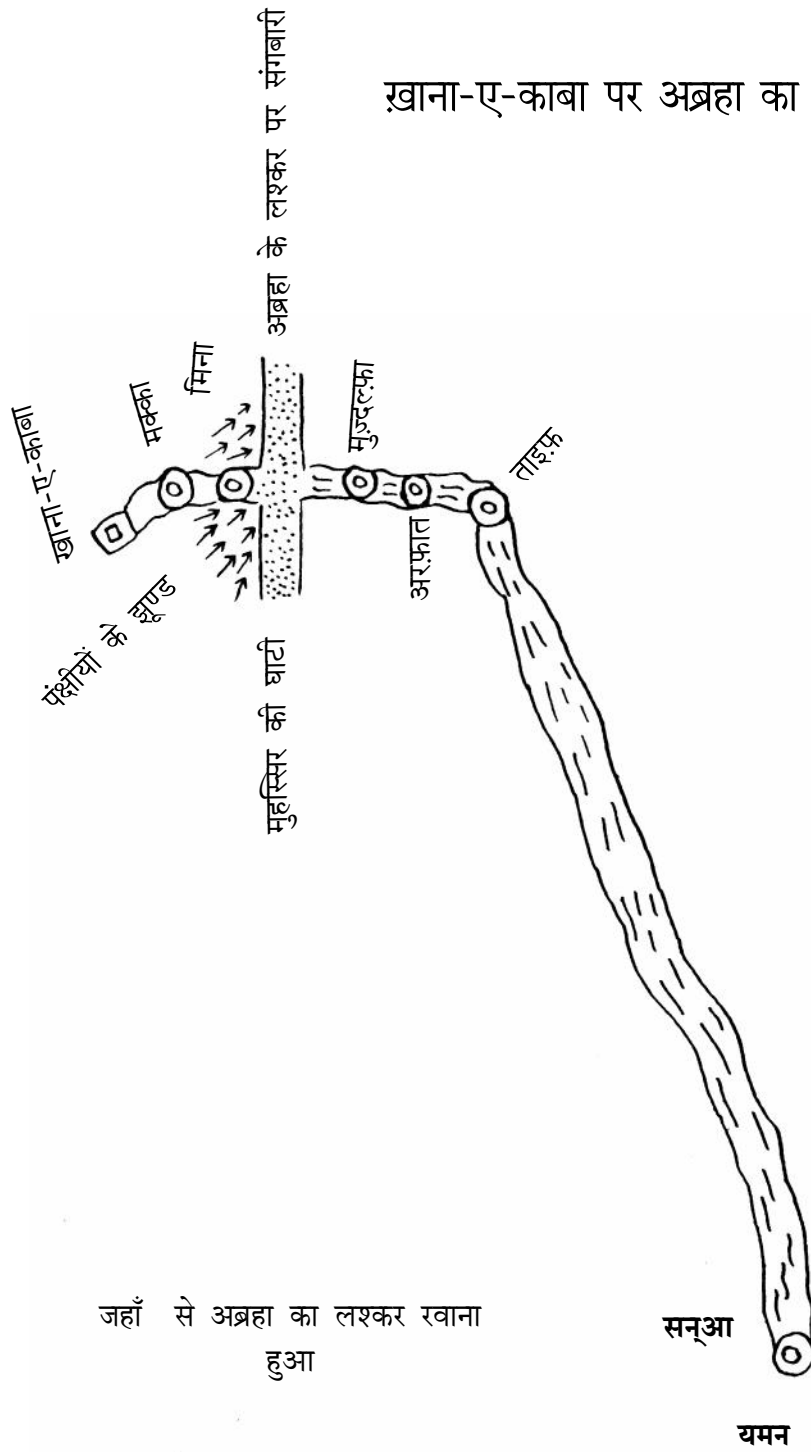
रहा यह सवाल कि कुरैश ने जो बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के संचालक (मुतवल्ली) थे, फ़ौज का मुकाबला किया या नहीं? तो सच यह है कि उन की मुठभेड़ फ़ौज से हुई ही नहीं। वह मक्का में थे और लश्कर मिना और मुजदल्फ़ा के बीच था इस लिए न यह बात सही है कि वह डर कर पहाड़ों में छिप गये थे जैसा कि रिवायतों में बयान किया गया है और न यह ख़याल सही है कि उन्होंने पहाड़ों पर से लश्कर पर पथराव किया था। पहाड़ों में छिपने की बात इस लिए स्वीकार योग्य नहीं कि कुरैश बुजदिल नहीं थे और जब कि अब्रहा का प्रतिरोध कुछ अरब

क्रबीलों ने रास्ते में किया था। जैसा कि उन रिवायतों ही में बयान हुआ है तो कुरैश किस तरह प्रतिरोध न करते। उन की ग़ैरत एवं स्वाभिमान इस बात को कैसे गवारा कर सकता था कि बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) को छोड़ कर सब के सब भाग जाएँ? और अल्लाह के घर पर कुर्बान होने के लिए एक आदमी भी मौजूद न रहे? अब्दुल मुत्तलिब के उन वंदनीय दोहों से जिन के उदाहरण ऊपर दिये गए हैं बुजदिली का इज़हार नहीं होता अलबत्ता चूँकि कुरैश तादाद में थोड़े होने की वजह से एक भारी लश्कर के मुकाबले में कामयाब नहीं हो सकते थे। इस लिए अल्लाह तआला ने अपने घर की सुरक्षा का असाधारण सामान किया। रहा यह दावा कि दरअसल इन्होंने पहाड़ों पर से पथरीले कंकर बरसाये थे न कि परिन्दों ने, तो यह दावा बिना दलील है। और जब कुरैश का अब्रहा के लश्कर के निकट आना ही साबित नहीं तो फिर पत्थर फेंकने का क्या सवाल पैदा होता है?

7. अर्थात् इन हाथी वालों को अल्लाह तआला ने ऐसी इबरतनाक (भयावह एवं शिक्षापद) सज़ा दी कि वह सड़ी गली लाशों के ढेर बन कर रह गये। खाये हुए भूसे से उदाहरण देने का मतलब यह है कि जिस तरह भूसा एक बेक़िमत चीज़ है और पैरों तले रौंदा जाता है उसी तरह यह भारी लश्कर बेक़िमत और पैरों के नीचे आ कर रहा। भूसे को जब जानवर खा लेता है तो उस की अत्यन्त घिनावनी शकल बनती है। हाथी वालों की लाशों का भी यही हाल हुआ। इस लिए उन को खाये हुए भूसे से उदाहरण दिया गया।



खाना-ए-काबा पर अब्रहा का सैन्यक्रमण



१०६. कुरैश

नाम :- पहली आयत में कुरैश का जिक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम कुरैश है।

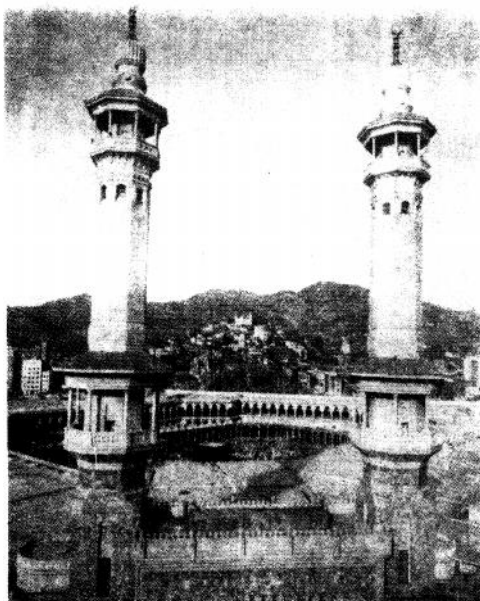
नाज़िल होने का समय :- इस सूरह में “रब्बा हाज़लबैत” (इस घर का रब) के अल्फ़ाज़ आये हैं जो इस बात का सबूत हैं कि यह सूरह मक्की है क्योंकि ख़ाना-ए-काबा के लिए निकट होने का संकेत (हाज़ा) मक्का में नाज़िल होने की सूरत ही में उचित हो सकता है। मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह फ़ील के बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- कुरैश पर अल्लाह का यह हक़ है कि वह उसी की इबादत करें।

आयत की तरतीब:- आयत १ और २ में कुरैश की इस उल्फ़त को जो उन को अपने तिजारती सफ़र से थी आश्चर्यजनक क्रार दिया गया है क्योंकि उन्हें यह नेमत अल्लाह के घर की बदौलत हासिल थी मगर वह अल्लाह की नाशुक़ी (कृतघ्नता) कर रहे थे।

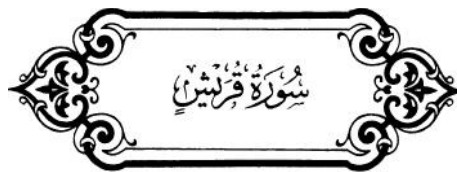
आयत ३ में उस नेमत का यह तक्राज़ा बयान किया गया है कि वह सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करें।

आयत ४ में बताया गया है कि रिज़क़ (जीविका) और अमन अल्लाह ही की प्रदान की हुई नेमतें हैं लिहाज़ा इस को स्वीकार करते हुए सिर्फ़ उसी की इबादत करनी चाहिए।



१०६. सूरह कुरैश

आयतें : ४



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. किस क़दर ¹ लगाव है कुरैश को,²

إِلَّيْفٍ قُرَيْشٍ ①

2. इन को जो लगाव है सर्दी और गर्मी के सफ़र से।³

الْفِهِمَ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ②

3. लिहाज़ा इन को चाहिए कि इस घर ⁴ के रब की इबादत करें,⁵

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ③

4. जिस ने इन को भूख से बचा कर खाना खिलाया और खौफ़ (भय) से बचा कर अमन (शान्ति) प्रदान किया ।⁶

الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ ④

1. लाम मजरूर (अर्थात् ल पर इ की मात्रा यानी लि) यहाँ तअज्जुब (आश्चर्य) के अर्थ में है जिसे अरबी में लाम तअज्जुब कहते हैं। इब्रे जरीर ने भी इसी अर्थ को वरीयता दी है। इस लिए हम ने लिईलाफ़ि का अनुवाद “किस क्रदर लगाव है” किया है।

2. कुरैश एक क़बीले का नाम है जिस के हाथ में खाना-ए-काबा का संचालन एवं प्रबन्ध था। हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल को मक्का की पवित्र धरती पर बसाया था। कुरैश इन ही की नस्ल से हैं। इस क़बीले की एक शाख़ बनी हाशिम कहलायी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध इसी खानदान से है।

3. मक्के की धरती खेती करने योग्य नहीं थी। इस लिए कुरैश ने व्यापार को अपना व्यवसाय बना लिया था। अतः उन के तिजारती काफ़िले सर्दियों में यमन की ओर जाते और गर्मियों में शाम (Syria) और फ़िलस्तीन की ओर। यह तिजारती सफ़र उन के कमाने का बहुत बड़ा साधन और उन की दौलत में वृद्धि का कारण थे। वह जिन राहों से गुज़रते थे वे यद्यपि अन्तराष्ट्रीय राजमार्ग (International highways) थे लेकिन व्याप्त अशान्ति और लूट मार के कारण सुरक्षित नहीं थे। इस के बावजूद कुरैश के तिजारती काफ़िले निर्भीकता से आया जाया करते थे क्योंकि काबा के संचालक एवं प्रबन्धक होने के कारण लोग उन का आदर करते थे। इस के अलावा उन्होंने इन राज्यों के बादशाहों से व्यापारिक सुविधाएँ एवं सुरक्षा प्राप्त कर ली थी कि वह बे रोक टोक उन के मुल्क में आते जाते रहेंगे। अतः हाशिम ने जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा हैं, शाम (Syria) रोम और ग़स्सान के बादशाह से, अब्द शम्स ने नजाशी से, नौफ़ल ने किसरा से और मुत्तलिब ने हिमयर (यमन) के बादशाह से आदेश प्राप्त कर लिये थे। (अल्बिदाय: वन्निहाय: भाग २ पृष्ठ २५३)

इस तरह अल्लाह के घर की बदौलत उन पर रिज़्क (जीविका) का रास्ता भी खुल गया था और सर्व व्याप्त अशान्ति के बावजूद उन के लिए सफ़र भी शान्ति मय हो गया था। इन लाभों के कारण उन को अपने तिजारती सफ़रों से लगाव और चाव पैदा हो गया था। अतः वह पाबन्दी के साथ सर्दियों के मौसम में यमन का और गर्मियों के मौसम में सीरिया और फ़िलस्तीन का सफ़र करते। यमन का इलाक़ा चूँकि गर्म है इस लिए सर्दियों के मौसम में इस मुल्क के सफ़र को वह वरीयता देते और सीरिया एवं फ़िलस्तीन का इलाक़ा चूँकि ठंडा है इस लिए गर्मियों के मौसम में उन मुल्कों के सफ़र को वह उचित समझते थे।

इस आयत में उन के इन तिजारती सफ़रों से प्रेम और लगाव को इस आधार पर आश्चर्य योग्य क्रार दिया गया है कि वह अपने आचरण एवं कार्य विधि से हक़ को न पहचानने और

नाशुक्री (कृतघ्नता) का सबूत दे रहे हैं। क्यों कि ये नेमतें उन्हें हासिल हो रही हैं खुदा के घर की बदौलत लेकिन वह खुदा के ही हक़ को भुला बैठे हैं। वह खाते हैं खुदा का दिया हुआ रिज़्क मगर गुन गाते हैं बुतों के।

4. इस घर से मुराद “खाना-ए-काबा” है।

5. कुरैश को ध्यान दिलाया गया है कि जब तुम इस घर को अल्लाह का घर मानते हो तो फिर तुम्हें इस का हक़ अदा करना चाहिए और वह हक़ यह है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और उस की इबादत के साथ किसी और की इबादत न करो। इसी तरह इस घर की बदौलत जो व्यापारिक लाभ तुम्हें हासिल हो रहे हैं और जो निश्चितता एवं सम्पन्नता तुम्हारे हिस्से में आ रही है उस का तक्राज़ा है कि इस घर के रब के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दे बन कर रहो और नाशुक्री (कृतघ्नता) का तरीक़ा न अपनाओ।

खाना-ए-काबा का निर्माण एक अल्लाह की इबादत के लिए हुआ था फिर इस घर के संचालकों के लिए बुतों की परस्तिश (पूजा) के लिए वैधता कहाँ मिल गयी?

6. उस ज़माने में अरबों की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय थी और उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि खाद्य वस्तुओं की भी बड़ी कमी थी। गोया यह गरीबी और भुखमरी का इलाका था इस के अलावा कबायली सिस्टम होने और किसी मज़बूत हुकूमत के न होने के कारण बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। हत्याओं और लूट पाट की घटनाओं ने उन की ज़िन्दगी का सुकून छीन लिया था मगर कुरैश की हालत आर्थिक दृष्टि से भी बेहतर थी और अमन-व-अमान के लिहाज़ से भी। आर्थिक दृष्टि से बेहतर होने की वजह तो उन के कामयाब तिजारती सफ़र थे। रहा अमन-व-अमान तो उन्हें शहर मक्का में भी हासिल था और इस के बाहर भी। मक्का में अमन-व-अमान तो उस के हरम (पवित्र) होने के कारण था और बाहर निकलने के बाद उन पर हाथ डालने की ज़ुरत कोई व्यक्ति या क़बीला या हुकूमत इस लिए नहीं करती थी कि वह हरम (पवित्र स्थल) की देख रेख़ करने वाले और हाजियों की सेवा करने वाले समझे जाते थे। सारांश यह कि कुरैश को ये दोनों नेमतें अर्थात् जीविका और सुरक्षा जो इन्सान की बुनियादी ज़रूरतें हैं, खुदा के प्रदान करने से प्राप्त हो रही थी। इस लिए इस का शुक्र (कृतज्ञता) और बन्दगी का हक़ उन पर अनिवार्य था न कि बुतों का जिन का न भूक को मिटाने में कोई हाथ था और न भय को दूर करने में।

इस सूरह में अकेले एक खुदा की इबादत का मुतालबा यद्यपि कुरैश से किया गया है लेकिन वास्तव में यह मुतालबा पूरी इन्सानियत से है क्योंकि तमाम इन्सानों का रब वही है जो खाना-ए-काबा का रब है।

कुरैश और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वंश क्रम (संक्षेप में)

हजरत इस्माइल अलैहिस्सलाम

मध्य में कई पीढ़ियाँ

अदनान

मध्य में कई पीढ़ियाँ

मुजर

मध्य में कुछ पीढ़ियाँ

नजर बिन किनाना (जिस ने कुरैश का उपनाम अपनाया)

मालिक

फेहर

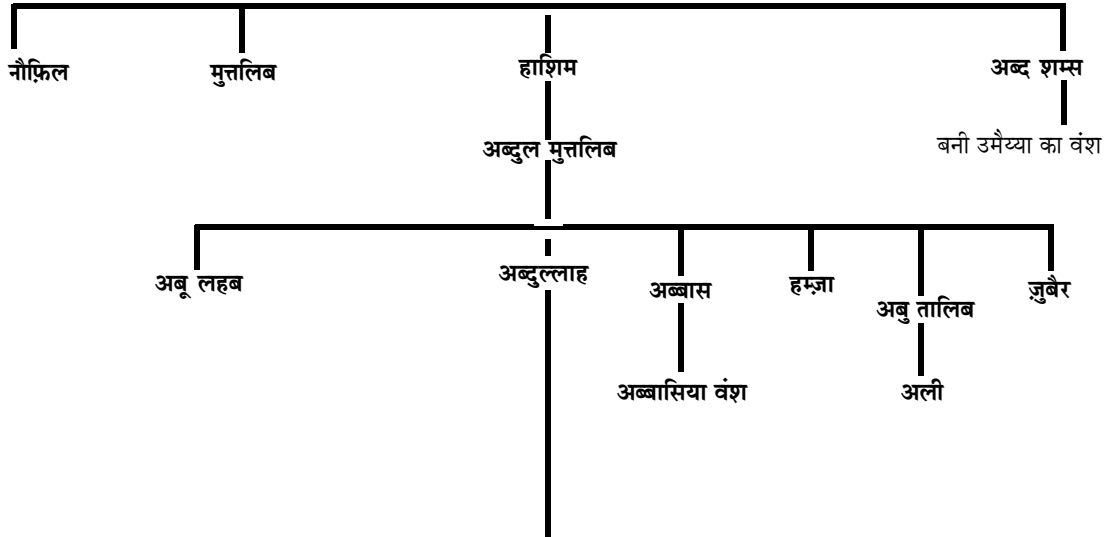
गालिब

लुअय्यि

मध्य में कई पीढ़ियाँ

कुसैय्यि

अब्दे मनाफ़



मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

(विस्तार के लिए देखिए सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ १, २, ११८, ११९, १२०
एवं अलबिदाय: वन्निहाय: भाग २ पृष्ठ १९३, २००, २५९)

१०७. अल-माऊन

नाम :- आखरी आयत में माअून (माल का हक़) अदा न करने पर चेतावनी आयी है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अलमाअून” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह शुरु के दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- उस चरित्र को सामने लाना है जो जज़ा और सज़ा से इन्कार के फलस्वरूप पैदा होता है ताकि लोग उस के बुरे अन्जाम से ख़बरदार हों।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में उस व्यक्ति के चरित्र पर ग़ौर करने की दअवत दी गई है जो जज़ा और सज़ा का इन्कार करता है।

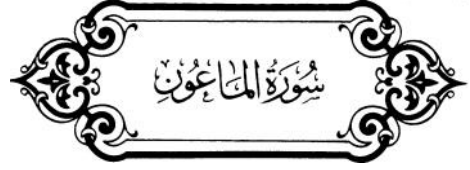
आयत २ और ३ में बताया गया है कि ऐसे लोग ही समाज के कमज़ोर और दयनीय लोगों के साथ बेरहमी और क्रूरता का बर्ताव करते हैं।

आयत ४ से ६ में उन की रस्मी नमाज़ को बेहक्रीकत क्रार दिया गया है।

और आयत ७ में उन के कंजूसी की बुरी आदत पर पकड़ की गई है।

पृष्ठ भूमि :- पृष्ठ भूमि में कुरैश के वह सरदार हैं जिन्हें अपनी धार्मिकता और ख़ाना-ए-काबा के संचालक होने पर बड़ा गर्व था मगर अख़लाक़ और अमल के लिहाज़ से बड़े ही गिरावट का शिकार थे जिस की कुछ मिसालें इस सूरह में प्रस्तुत की गई हैं।

१०७. सूरह अल-माऊन



आयतें : ७

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम ने उस व्यक्ति को देखा जो जज़ा और सज़ा को झुठलाता है।¹
2. वही है ² जो यतीम को धक्के देता है,³
3. और मिसकीन (मोहताज) को खिलाने की तरगीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।⁴
4. तो ऐसी नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तबाही है,⁵
5. जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं।⁶
6. जो रियाकारी (पाखण्ड) करते हैं,⁷
7. और माल का हक़ अदा नहीं करते।⁸

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِّينِ ۝^١

فَذَلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝^٢

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝^٣

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۝^٤

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝^٥

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤْنَ ۝^٦

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝^٧

1. अर्थात् तुम ने उस व्यक्ति के हाल पर गौर किया जो कर्मों के फल का इन्कार करने वाला है। उस का क्रिदर कितना घटिया और उस के धार्मिक कर्म कितने बेहक्रीकृत हैं। जो व्यक्ति भी ऐसे लोगों के हाल पर गौर करेगा उस के अन्दर यह एहसास ज़रूर उभरेगा कि स्वस्थ चरित्र और सच्ची दीनदारी के लिए आखिरत पर ईमान लाना ज़रूरी है।

2. अर्थात् आखिरत (परलोक) के इन्कार करने वालों में जो नैतिक एवं व्यावहारिक खराबियाँ पैदा हो जाती हैं उन का प्रतिबिम्ब (अक्स) इस चरित्र (क्रिदर) में देखा जा सकता है।

3. यतीम को धक्के देने के भावार्थ में उस का माल खा जाना, उस का हक मारना, उस को झिड़कना, उस का अपमान और तिरस्कार करना और उस को धक्के दे कर अपने दरवाजे से हटा देना सब शामिल है।

कुर्आन ने न केवल यतीमों के हुक्क अदा करने की ताक़ीद की है बल्कि उन का आदर करने की भी हिदायत की है। अतः सूरह फ़ज्र में फ़रमाया:

كَأَلَّا بَلْ لَا تُكْرُمُونَ الْيَتِيمَ (الفجر- १८)

“नहीं बल्कि तुम यतीमों का आदर नहीं करते”

अर्थात् यतीमों (अनाथों) का अनादर उन लोगों का स्वभाव है जो खुदा के सामने जवाबदेही का तसव्वुर नहीं रखते।

4. इस की व्याख्या सूरह फ़ज्र नोट नं. २३ में गुजर चुकी है।

ध्यान रहे कि मिस्कीन को खाना खिलाना स्वयं नेकी का काम है इस से अलग हट कर के कि वह मुस्लिम है या ग़ैर मुस्लिम और यतीम को धक्के देना हर हाल में गुनाह का काम है चाहे उस यतीम का सम्बन्ध किसी भी धर्म एवं सम्प्रदाय से हो।

जिस समय यह सूरह नाज़िल हुई है मक्के में मुसलमानों की तादाद इतनी कम थी कि वह उंगलियों पर गिने जा सकते थे लेकिन जब उन्हें मिस्कीन को खाना खिलाने और इस की तरगीब (प्रोत्साहन) देने का हुक्म दिया गया तो यह इस बात का सबूत था कि इस्लाम अपने अनुयायियों में इन्सानी हम्ददी का ऐसा जज़्बा पैदा करना चाहता है जिस का प्रभाव क्षेत्र पूरी मानवता के लिए फैला हो और जिस के आधार पर हर हक़दार की मदद की जा सके।

5. यहाँ नमाज़ से मुराद खुदा की परस्तिश की वह शक़ल है जो मक्का के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने अपना रखी थी। कुर्आन ने दूसरी जगह उन की नमाज़ की स्थिति और उस की वास्तविकता इस तरह बयान की है :-

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصَدِيَةً - (الانفال- ३५)

“अल्लाह के घर के पास उन की नमाज़ सीटियाँ और तालियाँ बजाने के सिवा कुछ नहीं है।”

यह उन की रस्मी नमाज़ थी और वह भी ऐसी कि जिस का हुलिया बिगाड़ दिया गया था। जहाँ तक नमाज़ की असलियत का सम्बन्ध है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस को अपनी असली शक़ल में क़ायम किया था और अपनी औलाद को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के पास इस लिए बसाया था कि वह नमाज़ क़ायम करें।

رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ

“ऐ हमारे रब ! ताकि वह नमाज़ क़ायम करें” (इब्राहीम - ३७) और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम अपने घर वालों को इस की ताक़ीद करते रहे।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ

“और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था” (मरयम - ५५) लेकिन बाद के दौर में दीन में काँट छाँट करने वालों ने नमाज़ की शक़ल बिगाड़ दी। यहाँ तक कि कुर्आन के अवतरण के समय नमाज़ नाम रह गया था सीटियाँ और तालियाँ बजाने का। इस की मिसाल आज भी मन्दिरों में देखी जा सकती है जहाँ बुत परस्त भजन गा कर और झाँझ और तालियाँ बजा कर नाचते हुए पूजा पाठ करते हैं और समझते हैं कि इस से खुदा भी खुश होता है और बुत भी।

यहाँ मुश्रिकीन की इसी नमाज़ को इन की तबाही का कारण ठहराया गया है क्योंकि यह वह नमाज़ नहीं है। जिस का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया था। लोगों ने अगर ग़ैर सन्जीदा (उछल कूद की) हरकतों का नाम नमाज़ या इबादत रख लिया हो तो इस का हकीक़ी नमाज़ और इबादत से क्या वास्ता। यह तो खुदा की इबादत नहीं बल्कि उस का मज़ाक़ है। कुछ मुफ़स्सिरों (कुर्आन के टीकाकारों) ने इस सूरह को मदनी क़रार दिया है और नमाज़ से मुनाफ़िक़ों (कपटियों) की नमाज़ मुराद ली लेकिन जिस संदर्भ (Context) में नमाज़ का ज़िक़्र हुआ है उस का सम्बन्ध आखिरत का इन्कार करने वालों से है जिन की नैतिक खराबियों के स्पष्ट उदाहरण पेश किये गए हैं। इस के अलावा पिछली सूरह में कुरैश को एक खुदा की इबादत का हुक्म दिया गया है और उस के फ़ौरन बाद सूरह माअून को रखना इस बात को ज़ाहिर करता है कि इस के पसमन्ज़र (पृष्ठ भूमि) में कुरैश

के सरदार हैं। जो मुश्रिक भी थे और आखिरत के मुन्किर (इन्कार करने वाले) भी। अतः इस आयत में जिस नमाज़ का ज़िक्र हुआ है वह मक्का के मुश्रिकों और ख़ास तौर से ख़ाना-ए-काबा के संचालकों की नमाज़ थी। अलबत्ता व्यापक भावार्थ (Broad Sense) में मुनाफ़िक़ीन (कपटियों) की नमाज़ भी शामिल है क्योंकि इन की नमाज़ भी मात्र नाम की नमाज़ थी। वास्तविक नमाज़ से वह भी गाफ़िल ही थे और यह बात सिर्फ़ उस दौर के मुनाफ़िक़ीन पर लागू नहीं होती बल्कि हर दौर के मुनाफ़िक़ीन पर लागू होती है।

6. अर्थात् यह लोग अपनी वास्तविक नमाज़ से गाफ़िल हैं। वास्तविक नमाज़ यह है कि आदमी शिर्क से बचते हुए ख़ालिस अल्लाह के लिए नमाज़ अदा करे। उसी की ओर ध्यानाकर्षित करे, और उस के सामने जवाबदेही का तसव्वुर रखे एवं उस इबादत का जो प्रारूप अल्लाह तआला ने निश्चित किया है उसी प्रारूप के साथ उसे अदा करे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो नमाज़ अपने पीछे छोड़ी थी उस की यही विशेषताएँ थीं और उस में क्रियाम (Standing) रूकू (Bending) और सज्दा (Prostration) जैसे अरकान (items) थे। मगर मुश्रिकीन (बहुदेववादी) इस की बाहरी और अन्दरूनी दोनों विशेषताओं को खो बैठे और इस को खेल तमाशा बना कर रख दिया। अब जब कि यह पैग़म्बर इब्राहीमी नमाज़ का पुनर्गठन करना चाहता है तो यह लोग उस पर कान धरने को आमादा नहीं हैं और अपनी इस नाम मात्र की नमाज़ ही को लिये बैठे हैं।

ध्यान रहे कि आयत में عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ “वह अपनी नमाज़ से गाफ़िल हैं” फ़रमाया गया है न कि فِي صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ “वह अपनी नमाज़ में भूलते हैं” क्योंकि नमाज़ में भूल (सहू) तो ईमान वालों से भी हो सकती है लेकिन नमाज़ से गाफ़िल हो जाना उन ही लोगों का स्वभाव है जो आखिरत की चिन्ता से आज़ाद हैं।

7. अर्थात् उन की नमाज़ दिखावे की होती है। खुलूस (शुद्ध हृदयता) से बिलकुल खाली मात्र रियाकारी (पाखण्ड) की नमाज़, ताकि लोग उन को धार्मिक समझें।

अल्लाह की इबादत (उपासना) बन्दगी का हक़ समझ कर उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के उद्देश्य से की जानी चाहिए। लेकिन रियाकारों (पाखण्डियों) की इबादत मात्र दिखावटी होती है और इस लिए होती है ताकि लोगों से दाद (वाहवाही) हासिल की जाये। इस लिए ऐसी इबादत करने वाले आखिरत में न केवल यह कि किसी ईनाम के अधिकारी नहीं होंगे। बल्कि अपने इस गुनाह की वजह से कठोर दण्ड के भागीदार होंगे। रियाकारी के सिलसिले में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बयान भी बड़े

प्रभावपूर्ण हैं, जो बाइबिल में नक़ल हुए हैं। अतः मत्ती की इन्जील में है :-

“सावधान रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो ----- इस लिए जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी सभाओं और ग़लियों में करते हैं ताकि लोग उन की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाये।----- और जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े हो कर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।” (मत्ती ६: १, २, ३, ४, ५)

और बनी इस्राईल के विद्वानों और धर्मशास्त्रियों को जिन्होंने दीन के सिलसिले में दिखावेपन को अपना रखा था और जिन के अन्दर बदतरीन क्रिस्म की रियाकारी पैदा हो गई थी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सख़्त झिंझोड़ा।

“हे कपटी शास्त्रियों और फ़रिसियों तुम पर हाय ! कि विधवाओं के घरों को दबा बैठे हो और दिखावे के लिए नमाज़ को तूल देते हो, तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा-----हे कपटी शास्त्रियों और फ़रीसियों तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर से माँजते हो परन्तु वह भीतर अंधे असंयम से भरे हैं-----हे कपटी शास्त्रियों और परीसियों तुम पर हाय ! तुम चूना फिरी क्रब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती है परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।” (मत्ती २३: १४, २५, २६, २८)

(कपटी का अर्थ रियाकार के हैं)

8. अर्थात् ये लोग बड़े कन्जूस साबित हुए हैं। गरीबों और मिस्कीनों (मोहताजों) की मदद और सहायता में जो माल खर्च होना चाहिए उसे रोके रखते हैं। इन्हें वास्तव में न खुदा से मुहब्बत है और न उस के बन्दों से हमदर्दी बल्कि माल से मुहब्बत है और अपनी दुनिया बनाने ही की फ़िक्र है। वह धर्म का चोला ओढ़ कर अपने को खुदा परस्त ज़ाहिर कर रहे हैं लेकिन इन गरीबों और मिस्कीनों के साथ उन का क्रूर रवैया इस बात का सबूत है कि वह अपने खुदा परस्ती के दावे में सच्चे नहीं हैं क्योंकि सच्ची खुदा परस्ती इन्सान को सदाचारी, स्नेही और दानी बनाती है।

Text (मूल) में लफ़्ज़ माऊन इस्तेमाल हुआ है जिस का शाब्दिक अर्थ “लाभ की चीज़” के हैं। यह रोज़ाना के इस्तेमाल

में आने वाली चीजों पर भी लागू होता है। और माल पर भी। मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने आम तौर से मामूली और साधारण ज़रूरत की चीज़ें मुराद ली हैं। जो एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी को माँगने पर देता है और जिन का न देना कन्जूसी का कारण समझा जाता है, इस में शक नहीं की इस क्रिस्म की चीज़ें देने से इन्कार करना नैतिक रूप से अपमान की बात है। लेकिन यहाँ जो चेतावनी सुनाई गई है वह ज़ाहिर है किसी बहुत बड़े हक़ के अदा न करने या किसी बड़े गुनाह के कर गुज़रने ही पर है। एवं सूरह का मज़मून भी ग़रीबों और मिस्कीनों के अधिकारों से सम्बन्धित है। इस लिए माऊन से माल का हक़ मुराद लेना ही अधिक उचित मालूम होता है। इस का समर्थन ज़ुहरी के इस कथन से होता है कि माऊन कुरैश की ज़बान में माल को कहते हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ठ ५५६)

और कुछ हज़रात ने इस से मुराद ज़कात ली है लेकिन

हज़रात इब्ने उमर का कथन इस की बेहतरीन तफ़्सीर (व्याख्या) है। उन से जब माऊन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा **“المال الذى لا يؤدى حقه”** “वह माल जिस का हक़ अदा न किया जाए।” पूछने वाले ने कहा कि इब्ने मसऊद तो कहते हैं कि इस से मुराद व्यवहार में लाने की वह चीज़ें हैं जो लोग एक दूसरे को देते रहते हैं तो इस के जवाब में उन्होंने कहा माऊन का मतलब वही है जो मैं तुम से बयान कर रहा हूँ। (फ़तुहलबारी भाग ८ पृष्ठ ५९४ तबरी के हवाले से)

इस लिए हम ने **يَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ** का अनुवाद “माल का हक़ अदा नहीं करते” किया है। यह बात कुर्आन में दूसरे तरीक़े से भी बयान हुई है। जैसे **مَنَاعَ لِلْخَيْرِ** (सू. १२. १२) अर्थात् कंजूस। स्पष्ट रहे कि **“خَيْر”** का लफ़्ज़ अरबी में माल के अर्थ में भी आता है और मना का लफ़्ज़ रोकने एवं कंजूसी करने के अर्थ में भी।



सूरह अल-कौसर

१०८. अल-कौसर

नाम :- पहली ही आयत में कौसर (खैर कसीर अर्थात् अधिकता के साथ भलाई) के प्रदान किये जाने की खुशखबरी दी गयी है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-कौसर” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मजमून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के आखिरी दौर में नाज़िल हुई होगी जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विरोध के तूफ़ान से गुज़र रहे थे और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बदनाम करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- यह सूरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बड़ी खुशखबरी और आप (सल्लल्लाहु

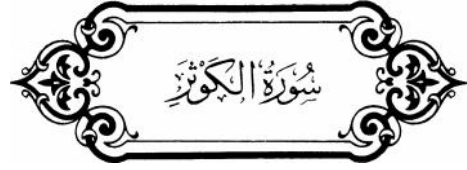
अलैहि वसल्लम) के हक़ में विशेष कृपा का एलान है।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को खैर कसीर (Good in Abundance) अर्थात् भलाई में अधिकता प्रदान किए जाने की खुशखबरी दी गयी है।

आयत २ में इस के शुक्र के तौर पर नमाज़ और कुर्बानी का आयोजन करने का आदेश दिया गया है।

आयत ३ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी गयी है कि जो लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दुश्मनी पर तुले हुए हैं वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कुछ बिगाड़ न सकेंगे अलबत्ता अपने को बहुत बड़े खैर (भलाई) से ज़रूर महरूम कर लेंगे।

१०८. सूरह अल-कौसर



आयतें : ३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हम ने ¹ तुम्हे ² कौसर प्रदान किया।³

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ①

2. अतः तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।⁴

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ②

3. बेशक तुम्हारा दुश्मन ही खैर से महरूम है।⁵

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ③

1. यह कलाम करने (वार्ता करने) का शाहाना अन्दाज़ है जिस में एक वचन के बजाय बहु वचन सर्वनाम (Plural Pronoun) (हम ने) इस्तेमाल की गई है और अभिप्रेत इस शान का प्रदर्शन है जिस के साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कौसर का बरकतों वाला उपहार अल्लाह के दरबार से पुरस्कृत हुआ।

2. सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

3. कौसर का अर्थ ख़ैर कसीर (Good in Abundance) के हैं (अन्निहाय: भाग ४ पृष्ठ ३७, लिसानुल अरब भाग ५ पृष्ठ १३३) और इसी मुनासिबत से यह जन्नत की उस नहर का नाम है। जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरत में प्रदान की जाएगी मुफ़स्सिर-ए-कुआन (कुआन के टीकाकार) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कौसर से ख़ैर कसीर (भलाई में अधिकता) मुराद लिया है जिस में जन्नत की नहर भी शामिल है। अतः बुख़ारी की रिवायत है कि :-

عن سعيد بن جبير عن ابن عباس أنه قال في الكوثر
هو الخير الذي أعطاه الله إياه. قال ابو بشر قلت
لسعيد بن جبير فإن الناس يزعمون أنه نهر في
الجنة. فقال سعيد النهر الذي في الجنة من الخير
الذي أعطاه الله إياه. (بخاری کتاب الثیر)

“सईद बिन जुबैर, इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने ने फ़रमाया कौसर वह ख़ैर (भलाई) है जो अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया। अबू बिश्र (रावी) कहते हैं कि मैं ने सईद बिन जुबैर से कहा: लोगों का ख़याल है कि वह जन्नत की एक नहर है। सईद ने जवाब दिया कि जन्नत की नहर उसी ख़ैर में से है जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रदान किया है।”

इसी तरह इस के भावार्थ में वह हौज़ भी शामिल है जो क्रियामत के दिन मैदाने हश्र में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अता किया जायेगा, जिस का पानी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने मुखलिस (सच्चे) अनुयायियों को पिलायेंगे। हदीस में उस हौज़ पर भी कौसर को लागू समझा गया है। सही मुस्लिम में हज़रत अनस की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कौसर की व्याख्या करते हुए फ़रमाया :-

هو حوض ترد عليه أمتي يوم القيامة.

“वह एक हौज़ है जिस पर क्रियामत के दिन मेरी उम्मत पहुँचेगी”।

मतलब यह कि जिस ख़ैर कसीर से अल्लाह तआला ने आप को नवाज़ा (पुरस्कृत) है उस में ये दो नेमतें ख़ास तौर से चर्चा करने के योग्य हैं क्यों कि यह भव्य और अमूल्य होने के अलावा आप की विशेष श्रेष्ठता एवं प्रमुखता (फ़ज़ाइल) में शामिल हैं और आयत का इशारा जिस को नबी की हदीस ने ख़ौल दिया है ख़ास तौर से अल्लाह के इन दो उपहारों की ओर है। और जिस बख़्शिश का वादा अल्लाह तआला फ़रमाए उस का मिलना चूँकि निश्चित है इस लिए उस को माज़ी के सीगे (Past tense verb) में اَعْطَيْنَا (हम ने अता किया) बयान फ़रमाया जो इस की निश्चितता को ज़ाहिर करता है।

यह बहुत बड़ी खुशख़बरी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस समय दी गयी जब कि मक्का के मुश्रिकीन (बहुदेववादी) आप के दुश्मन हो गये थे और उन्होंने ने आप को कष्ट देने में कोई कसर उठा न रखी थी। इस अवसर पर यह बशारत (खुशख़बरी) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तसल्ली का कारण थी। एवं इस से विरोधियों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत था कि तुम जिस हस्ती को कष्ट पहुँचा रहे हो वह खुदा के नज़दीक कितने बुलन्द मरतबे की हस्ती है जिस पर ख़ैर और बरकत की निरंतर बारिश हो रही है और इस ख़ैर और बरकत का ज़हूर (आविर्भाव) किस तरह हौज़ कौसर और नहरे कौसर के रूप में होने वाला है। इस के बावजूद अगर तुम उस की शान में गुस्ताख़ी करना चाहते हो तो करो, आसमान को तो तुम उस पर फूल निछावर करने से नहीं रोक सकते।

कौसर की नहर और कौसर के हौज़ के सिलसिले में जो कई एक सही और स्पष्ट हदीसे वारिद हुई हैं उन सब को बयान करना तो विलम्ब का कारण होगा इस लिए हम कुछ हदीसे नीचे नक़ल करते हैं।

कौसर की नहर का अनुभव नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज के मौक़े पर कराया गया था। हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत है कि :-

”لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى السَّمَاءِ قَالَ آتَيْتُ
عَلَى نَهْرٍ حَافَتَاهُ قَبَابُ اللَّؤْلُؤِ مُجَوِّفٌ ، فَقُلْتُ مَا
هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ هَذَا الْكَوْثَرُ.” (بخاری کتاب الثیر)

“नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मेराज के लिए आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो वहाँ जो कुछ अनुभव किया उस का ज़िक्र करते हुए आप ने फ़रमाया मैं एक नहर पर आया जिस के दोनों किनारों पर मुजौव्वफ़ (अन्दर से ख़ाली) मोतियों के क़िब्बे (Domes गुंबद) थे। मैं ने पूछा, ज़िब्रील! यह क्या है? फ़रमाया यह कौसर है।” (बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर)

और बुखारी ही की दूसरी रिवायत में ये अल्फ़ाज़ हैं।

هَذَا الْكَوْثَرُ الَّذِي اعطَاكَ رَبُّكَ

“यह वह कौसर है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रब ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अता किया है।” (बुखारी किताबुर्रिकाक़)

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) से रिवायत (उल्लिखित) है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया :

الْكَوْثَرُ نَهْرٌ فِي الْجَنَّةِ حَافَتَاهُ مِنْ ذَهَبٍ وَمَجْرَاهُ عَلَى الدَّرِّ وَالْيَاقُوتِ تُرْبَتُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَمَاؤُهُ أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ وَأَبْيَضُ مِنَ الثَّلَاجِ -

“कौसर जन्नत में एक नहर है जिस के किनारे सोने के हैं और वह मोतियों और याकूत पर बहती है। इस की मिट्टी मुश्क से अधिक खुशबूदार है, और इस का पानी शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है”

(तिर्मिज़ी अबबाबुत्तप्सीर)

और कौसर के हौज़ के बारे में हज़रत सहल बिन सअद की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

إِنِّي فَرَطُكُمُ عَلَى الْحَوْضِ مِنْ مَرٍّ عَلَى شَرِبٍ وَمِنْ شَرِبٍ لَمْ يَظْمَأْ أَبَدًا - (بخاری کتاب الرقاق)

“मैं तुम से पहले हौज़ पर पहुँचूँगा। जो मेरे पास आयेगा, उस का पानी पियेगा और जो कोई इस का पानी पियेगा उसे फिर कभी प्यास महसूस न होगी।” (बुखारी, किताबुर्रिकाक़)

अब्दुल्लाह बिन उम्र की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَكَيْزَانُهُ كَنْجُومُ السَّمَاءِ مَنْ شَرِبَ مِنْهَا فَلَا يَظْمَأْ أَبَدًا - (بخاری کتاب الرقاق)

“मेरे हौज़ की लम्बाई (या चौड़ाई) एक माह की दूरी के बराबर होगी। इस का पानी दूध से अधिक सफ़ेद और इस की खुशबू मुश्क से अधिक बेहतर और उस के कूज़े (पान पात्र) आसमान के तारों की तरह बेहद होंगे। जो इस का पानी पियेगा उस को फिर कभी प्यास न लगेगी।”

(बुखारी किताबुर्रिकाक़)

उम्ब्रा बिन आमिर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ मिम्बर पर चढ़ कर फ़रमाया :-

إِنِّي فَرَطُ لَكُمْ وَ أَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ وَإِنِّي وَاللَّهِ لَا نَظُرُ إِلَى حَوْضِي إِلَّا نَ -

“मैं तुम से पहले (हौज़ पर) पहुँचने वाला हूँ और तुम पर गवाह हूँगा। खुदा की क्रमस मैं इस वक्त अपने हौज़ को देख रहा हूँ।” (मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

अनस बिन मालिक का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

لَيْسَ دَنَ عَلَى الْحَوْضِ رَجُلٌ مِمَّنْ صَاحَبَنِي حَتَّى إِذَا رَأَيْتَهُمْ وَرَفَعُوا إِلَيَّ اخْتَلَجُوا دُونِي فَلَا قَوْلَنِّي إِي رَبِّ أَصِيحَا بِي أَصِيحَا بِي فَلَيْقًا لَّنَّ لِي إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحَدَثُوا بَعْدَكَ - (مسلم کتاب الفضائل)

“मेरे हौज़ पर कुछ ऐसे लोग भी आयेंगे जो मेरे साथी रहे हैं। मैं जब इन्हें देख लूँगा और वह मेरे पास लाये जाएँगे तो इन्हें मेरे पास से हटा दिया जायेगा। मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये मेरे साथी हैं, ये मेरे साथी हैं। लेकिन मुझ से कहा जायेगा कि आप को नहीं मालूम कि आप के बाद इन्होंने क्या किया।” (मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

इस तरह बहुतेरी हदीसों में जो हौज़ के बारे में वारिद हुई हैं इस बात की पुष्टि करती हैं कि आप के इस हौज़ पर आप की उम्मत हाज़िर होगी। उस से तृप्त होने का अवसर उन ही लोगों को दिया जायेगा जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुखलिस (सच्चे) अनुयायी होंगे और जिन्होंने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तरीक़े (सुन्नत) में कोई परिवर्तन नहीं किया होगा।

4. अर्थात् इस अमूल्य उपहार से पुरस्कृत किये जाने पर तुम अपने रब का शुक्र अदा करो और उस की शुक्र गुजारी (कृतज्ञता) का तरीक़ा नमाज़ और कुर्बानी है। गोया यह इबादतें शुक्र का बेहतरीन मजहर (द्योतक) हैं। और खुदा से निकटता प्राप्त करने का माध्यम भी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ से जो लगाव था उस का अन्दाज़ा इस बात से होगा कि आप रात को उठ कर देर तक नमाज़ में लीन रहते यहाँ तक कि आप के पाँव में वरम पड़ जाते। कुछ सहाबा ने इस की ओर ध्यान दिलाया तो आप ने फ़रमाया क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुजार बन्दा न बन जाऊँ (बुखारी, मुस्लिम) इसी तरह कुरबानी के आदेश का पालन भी आप बड़े चाव से करते रहे। मदीने में ईदुलअज़हा (बकरईद) के मौक़े पर कुर्बानी करना आप

का नियम रहा और अपने अन्तिम हज्ज के मौक़े पर तो आप ने अपने हाथ से ६३ ऊँट ज़बह (कुर्बान) किये।

Text (मूल) में लफ़्ज़ “वन्हर” وَأَنْحَرُ इस्तेमाल हुआ है जो असल में ऊँट की कुरबानी के लिए बोला जाता है और यहाँ इस से अभिप्रेत इब्राहीम की मिल्लत की ओर इशारा करना है जिस में ऊँट की कुर्बानी एक चिन्ह (शिआर) के तौर पर थी इस के विरुद्ध यहूद ऊँट की कुर्बानी को वैद्य (जायज़) नहीं समझते थे। इस शिआर (रिति अथवा चिन्ह) को ज़िन्दा करने का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया। लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि ऊँट की ही कुर्बानी अनिवार्य है, इस के बग़ैर कुर्बानी नहीं होगी। बल्कि जैसा कि आप के क़ौल और अमल से साबित है कि कुर्बानी दूसरे जानवरों की भी की जा सकती है इस लिए यहाँ हुक्म का असल मन्शा कुर्बानी पर ज़ोर देना है चाहे वह उन जानवरों में से किसी जानवर की हो, जिन की कुर्बानी इस्लामी शरीअत के मुताबिक (शास्त्रानुसार) जायज़ है।

हदीस में “नहर” का लफ़्ज़ गाय की कुर्बानी के लिए भी इस्तेमाल हुआ है।

عَنْ جَابِرٍ قَالَ نَحَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَامَ الْحَدِيثِ
الْبَقَرَةَ عَنْ سَبْعَةٍ وَالْبَدَنَةَ عَنْ سَبْعَةٍ. (ترمذی ابواب الحج)

“जाबिर कहते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हुदैबिय: के साल कुर्बानी की। गाय सात व्यक्तियों की तरफ़ से और ऊँट सात व्यक्तियों की तरफ़ से”।

नमाज़ और कुरबानी का जो हुक्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया है वह आप के माध्यम से पूरी उम्मत के लिए है। जिस तरह यह उम्मत कौसर के उपहार में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीक है, कि क्रियामत के दिन कौसर के हौज़ से फ़ैज़ (लाभ) हासिल करेगी उसी तरह वह नमाज़ और कुर्बानी के हुक्म में भी जो आप को दिया गया है, आप की शरीक और भागीदार है। मौक़े के लिहाज़ से इस हुक्म का यह पहलू भी यहाँ स्पष्ट हो रहा है कि सूरह माऊन में मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) की जिस नमाज़ को बेहक़ीक़त करार

दिया गया है इस के मुकाबले में तुम्हारी नमाज़ ख़ालिस अल्लाह के लिए होनी चाहिए जैसा कि दूसरी जगह ज़्यादा साफ़ तरीक़े से फ़रमाया गया है।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ. (الانعام - १६२)

“कहो, मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह रब्बुलआलमीन के लिए है जिस का कोई शरीक (Partner) नहीं।” (अल्-अनआम - १६२)

5. यह मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) की उन गुस्ताखियों के जवाब में है जो आप की शान में वह करते थे। वह अपमानित करने वाले अपशब्दों के साथ आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरुद्ध प्रोपेगेन्डा करते थे कि आप का सम्बन्ध शिर्क और बुतपरस्ती के विरोध के कारण क़ौम से कट गया है। कुरैश को दुनिया में जो शक्ति और प्रभुत्व एवं सम्मान और वर्चस्वता प्राप्त है उस से आप बिल्कुल महरूम हो गए हैं और अब आप की हैसियत एक बे यार और मददगार व्यक्ति की हो कर रह गई है। इस के जवाब में फ़रमाया गया कि आप को तो अल्लाह तआला ने ख़ैर कसीर (Good in Abundance) से पुरस्कृत किया अलबत्ता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोधी हर तरह के ख़ैर (भलाई) से महरूम (वंचित) हैं और हमेशा के लिए उन के वास्ते महरूमी लिख दी गयी है।

यह वास्तव में एक भविष्यवाणी (पेशीयनगोई) थी जो बिल्कुल सही साबित हुई। रसूल के दुश्मन इस तरह अपमानित एवं तिरस्कृत और तबाह एवं बर्बाद हुए कि उन का नाम और निशान बिल्कुल मिट गया और अल्लाह के रसूल को ऐसा सम्मान एवं बुलन्दी प्राप्त हुई कि करोड़ों अरबों लोग आप पर दरूद और सलाम भेजते हैं और क्रियामत तक भेजते रहेंगे। स्पष्ट रहे कि इस पेशीयनगोई का सम्बन्ध सिर्फ़ उस दौर के रसूल के दुश्मनों के लिए नहीं था बल्कि हर दौर में पैदा होने वाले रसूल के दुश्मनों से है। जो भी आप की शान में गुस्ताखी करेगा या आप का विरोध करेगा उस के लिए ख़ैर (भलाई) से महरूमी निश्चित है और वह ज़लील (तिरस्कृत) हो कर रहेगा।

सूरह अल्-काफ़िरून

१०९. अल्-काफिरून

नाम : पहली आयत में अल्-काफिरून (काफिरों) का लफ्ज आया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल्-काफिरून” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि यह मक्का के आखरी दौर का अवतरण है।

केन्द्रीय विषय :- ग़ैरुल्लाह अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी की भी परस्तिश से बेजारी (विमुखता) और काफिरों के दीन से बिल्कुल बेतअल्लुकी (पृथक्ता) का इज़हार और एलान है।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत दी गई है कि काफिरों को सम्बोधित कर के दो टोक अल्फाज़ में एलान कर दो।

आयत २ और ३ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

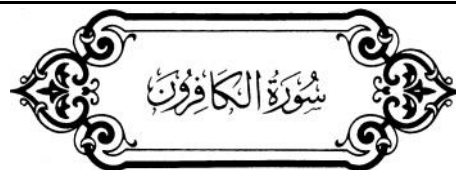
ज़बानी यह एलान कर दिया गया है कि परस्तिश के मामले में मेरा दृष्टिकोण क्या है और तुम्हारा क्या ।

आयत ४ और ५ में यह एलान कि परस्तिश (पूजा) के मामले में किसी तरह की उदारता दिखाने या किसी भी समझौते के फारमूले को कुबूल करने का सवाल पैदा नहीं होता।

आयत ६ में काफिरों के दीन (धर्म) से मुक्त होने का इज़हार है।

हदीस :- हदीस से साबित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ज़्र की नमाज़ से पहले की दो रकअतों में एवं अपने आखरी हज्ज के मौक़े पर तवाफ़ की दो रकअतों में **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** “सूरह काफिरून” और **“سُورَةُ الْاِخْلَاسِ”** पढ़ी थी। (मुस्लिम किताबुस्सलातुल मुसाफ़िरीन अबू हुरैरा की रिवायत से, और किताबुलहज्ज जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत से)

१०९. सूरह अल-काफ़िरून



आयतें : ६

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कह दो ¹ ऐ काफ़िरो !² (इन्कार करने वालो)।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝١

2. मैं उन की परस्तिश नहीं करता जिनकी परस्तिश तुम करते हो,³

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢

3. और न तुम उस की परस्तिश करते हो जिस की परस्तिश मैं करता हूँ।⁴

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝٣

4. और न मैं उन की परस्तिश करने वाला हूँ जिन की परस्तिश तुम ने की,⁵

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ۝٤

5. और न तुम उस की परस्तिश करने वाले हो जिस की परस्तिश मैं करता हूँ।⁶

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝٥

6. तुम्हारे लिए तुम्हारा “दीन” और मेरे लिए मेरा “दीन”।⁷

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝٦

1. सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

2. सम्बोधित वह लोग हैं जिन पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हक़ (सत्य) अच्छी तरह खुल कर सामने आ चुका था और इस के बावजूद वह कुफ़्र पर जमे रहे।

काफ़िर का शाब्दिक अर्थ इन्कार करने वाले के हैं और कुआन की परिभाषा में कुफ़्र, ईमान का संमुख शब्द है। और काफ़िर से मुराद वह व्यक्ति है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाए हुए “दीन” को कुबूल करने से इन्कार कर दे। इस दीन की मौलिक शिक्षा (बुनियादी तालीम) यह है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य, उपास्य) नहीं। इस लिए इन्सान को चाहिए कि सिर्फ़ उस की इबादत (पूजा, उपासना, बन्दागी, आज्ञापालन) करे और उस की इबादत में किसी को शरीक न करे। जो व्यक्ति ग़ैरुल्लाह अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी की इबादत करता है चाहे वह बुत परस्ती की शकल में हो या भूमि पूजा के रूप में और चाहे वह देवी देवताओं को मदद के लिए पुकारता हो या किसी फ़र्जी (मनगढ़न्त) खुदाओं के भजन गाता हो, खुला हुआ शिर्क है, और जो धर्म भी इस शिर्क की आज्ञा देता है वह मुश्रिकाना (बहुदेववादी) धर्म है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस लिए पैग़म्बर बना कर भेजे गए थे कि इस शिर्क की जड़ काट दें और इन्सान को एक अल्लाह का परस्तार (उपासक) बनने का निमंत्रण दें।

यह दअवत (निमंत्रण) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दलीलों और तर्क समेत प्रस्तुत की और समझाने बुझाने का बेहतर से बेहतर तरीक़ा अपनाया। यह दअवती जद्दोज़हद एक मुद्दत तक जारी रही यहाँ तक कि हक़ (सत्य) अच्छी तरह स्पष्ट हो गया और अल्लाह की हुज्जत (तर्क) उस के बन्दों पर क़ायम हो गयी अर्थात् अब हठधर्मी के सिवा बचाव का कोई रास्ता नहीं रह गया। दअवत के इस मरहले (चरण) में दाखिल (प्रवेश) होने के बाद जो लोग कुफ़्र पर अड़ गए और रसूल के विरोध और दुश्मनी पर उतर आये उन से “ऐ काफ़िरो!” कह कर सम्बोधन किया गया जो बिल्कुल उचित था। लेकिन इस से अभिप्रेत विरोधियों को बुरा भला कहना नहीं था बल्कि उन के सत्य को झुठलाने का खुल कर प्रदर्शन करना था ताकि स्पष्ट हो जाए की खुदा की हुज्जत (तर्क) उन पर क़ायम हो चुकी है और उन के कुफ़्र (झुठलाने) के बदले में अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) उन पर टूटने वाला है। यह बात यद्यपि मक्के के काफ़िरों पर उचित बैठती है और वही इस के प्रथम सम्बोधित (FirstAddressee) थे लेकिन उसूलों तौर पर यह बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो मक्का के काफ़िरों जैसी हठधर्मी अपनाएँ। और कहने का सार यह है कि क्रियामत तक पैदा होने वाले काफ़िरों पर अल्लाह की हुज्जत बराबर क़ायम होती रहे। एवं इस के द्वारा मुसलमानों

को भी यह सबक देना अभिप्रेत है कि काफ़िरों की राह अलग और ईमान वालों की राह अलग है और दोनों के बीच ऐसी बड़ी खाई है कि वह कुछ लो और कुछ दो के उसूल पर हरगिज़ मामला नहीं कर सकते।

3. मुराद बुत हैं जिन की पूजा मक्का के मुश्रिकीन करते थे एवं वह तमाम दूसरी हस्तियाँ भी जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर परस्थि श किया करते थे।

परस्थि श के सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का हुक्म दूसरी सूरतों में भी दिया गया है। जैसे सूरह यूनूस में फ़रमाया :-

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ
الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِنِ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي
يَتَوَقَّعُكُمْ. (يونس- १०३)

“कहो ऐ लोगों। अगर तुम मेरे दीन के मामले में शक में हो तो सुन लो कि मैं उन की परस्थि श नहीं करता जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर परस्थि श करते हो, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की परस्थि श करता हूँ जो तुम्हारी रूह (प्राण) क़ब्ज़ करता है।” (सूरह यूनूस आयत १०४)

मक्का के मुश्रिकीन खुदा को मानते थे और उस की परस्थि श से भी उन्हें इन्कार नहीं था लेकिन वह यह बात मानने के लिए तैयार नहीं थे कि बुतों को छोड़ कर एक खुदा की परस्थि श की जाए। वह अगर खुदा की परस्थि श करते थे तो वह शिर्क के साथ होती थी। इस लिए उन पर स्पष्ट किया गया कि न यह खुदा की परस्थि श है और न ही तुम खुदा के परस्तार हो। खुदा की परस्थि श के साथ कोई और परस्थि श जमा नहीं हो सकती इस लिए अगर तुम्हारा गुमान (अनुमान) यह है कि तुम भी खुदा के परस्तार (मुक्त, उपासक) हो तो यह तुम्हारा भुलावा है, इस का हक़ीक़त से कोई तअल्लुक नहीं।

5. मुश्रिकीन चाहते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के बुतों की परस्थि श करें ताकि समझौते की कोई सूरत पैदा हो। सूरह जुमर में उन की इस माँग का जवाब बड़े सख़्त अन्दाज़ में दिया गया है। फ़रमाया :-

قُلْ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُنِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ط (الزمر- १३)

“कहो ऐ जाहिलो! फिर क्या तुम मुझ से मुतालबा (Demand) करते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की परस्थि श करूँ?” (अज ज़ूमर : ६४)

और यहाँ भी इन्हें बहुत सख़्त निराशाजनक जवाब दिया गया है ताकि वह इस सिलसिले में समझौते की कोई उम्मीद न रखें।

आयत २ और आयत ४ में पुनरावृत्ति (Repetition) नहीं है बल्कि इस लिहाज से फ़र्क है कि आयत २ में हाल (वर्तमान) से सम्बन्धित आप ने अपना दृष्टिकोण साफ़ तौर पर प्रस्तुत कर दिया और आयत ५ में आइन्दा (भविष्य) के लिए अपने दृष्टिकोण और इरादों का इज़हार है। मतलब यह है कि न मैं तुम्हारे माबूदों (उपस्थितों) की परस्तिश करता हूँ और न मुझ से आगे के लिए यह आशा की जा सकती है कि इस मामले में कोई नमी या लचक पैदा करूँगा। मैं निश्चित रूप से और हमेशा के लिए तुम्हारे माबूदों (पूज्यों, उपास्यों) से अपनी बेजारी (विमुखता) का एलान करता हूँ।

6. अर्थात् तुम्हारी हठधर्मि के कारण तुम से यह आशा नहीं की जा सकती कि तुम अपने माबूदों को छोड़ कर मेरे माबूद की इबादत करने वाले बन जाओगे।

इस का मतलब यह नहीं कि इन काफ़िरों में से आइन्दा किसी के भी ईमान लाने की कोई संभावना बाक़ी ही नहीं रही, क्यों कि इन में ऐसे भी थे जो बाद में इस्लाम की आगोश में आ गये, बल्कि मतलब यह है कि चूँकि तुम्हारे अन्दर मेरे माबूद की परस्तिश के लिए कोई आमादगी (उत्सुकता) नहीं पायी जाती और तुम अपने बुतों ही के पुजारी बन के रहना चाहते हो इस लिए मैं तुम से मुक्त होने, तुम से पृथक् (अलग) होने का ऐलान करता हूँ जब तक कि तुम अपने इस काफ़िराना (इन्कार के) और मुश्रिकाना रवैया से बाज न आ जाओ।

7. अर्थात् जब परस्तिश के मामले में जो खुदा से तअल्लुक (जुड़ने) की असल बुनियाद है, जब मेरे और तुम्हारे बीच कोई सहयोग नहीं है तो दोनों का दीन एक किस तरह हो सकता है एवं समझौता और उदारता का सवाल पैदा ही कहाँ होता है। अगर तुम मेरी दअवत कुबूल करना नहीं चाहते तो तुम अपनी बात पर जमे रहो और मैं अपने दृष्टिकोण पर जमा हूँ यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना फैसला सादिर फ़रमाये (उतारे)। यह उसी तरह की बात है जैसी सूरह यूनुस में फ़रमायी गई है :-

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ

بَرِيْنُونَ مِمَّا عَمِلُوا وَأَنَا بَرِيْءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ. (यूस-४१)

“और अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। मैं जो कुछ करता हूँ उस से तुम बरी हो और तुम जो कुछ करते हो उस से मैं बरी हूँ।” (यूनुस : ४१)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बड़ी बेबाक़ी के साथ अपनी क्रौम से बरी होने का एलान किया था जिस को कुर्आन ने ईमान वालों के लिए बेहतर नमूना करार दिया है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْ إِبْرَاهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ -
إِذْ قَالَ الْقَوْمُ مِنْهُمْ إِنَّا نَبْرَأُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا
حَتَّى تُوْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَهُ. (अल्-अन्ब-२)

“तुम्हारे लिए इब्राहीम और उस के साथियों में एक अच्छा नमूना है। जब उन्होंने ने अपनी क्रौम से कहा हम तुम से और जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो उन से बिल्कुल बरी हैं हम ने तुम से कुफ़्र किया और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए बैर और नफ़रत हो गयी जब तक तुम एक अकेले अल्लाह पर ईमान न ले आओ।”

(अल्-मुमतहिन :- ४)

अर्थात् यह आयत काफ़िरों के रवैया से बेजारी (विमुखता) और उन के दीन से सम्बन्ध न होने का एलान है इस लिए इस को उदारता के भावार्थ में लेना और उस से तर्क वितर्क करते हुए मुश्रिकाना धर्म के लिए दिल में नर्म जगह बनाना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे काले को सफ़ेद समझ लेना या रात को दिन साबित करने की कोशिश करना।

आजकल धार्मिक उदारता के नाम पर वहदत-ए-अदयान अर्थात् “सारे धर्म समान हैं उन में सत्य और असत्य का कोई फ़र्क नहीं” के सिद्धान्त को बड़े मनमोहक अन्दाज़ में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस का प्रचार करने वाले चाहते हैं कि खुदा को बुतों की पंक्ति में बिठाएँ **اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ** और शिर्क एवं तौहीद (बहुदेववाद एवं एकेश्वरवाद) का माजून (मिश्रण) तैयार करें। यह लोग अपना शौक तो पूरा कर सकते हैं लेकिन सत्य को असत्य के साथ हरगिज़ जमा नहीं कर सकते। जिस तरह दिन और रात दोनों एक ही समय में जमा नहीं हो सकते उसी तरह हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) को जमा करने की कोशिश भी व्यर्थ है। और जहाँ तक कुर्आन का सम्बन्ध है उस की यह सूरह ही इस सिद्धान्त को ग़लत करार देने के लिए काफ़ी है। इस लिए जो लोग इस्लाम और कुफ़्र का मलगूबा (कबाड़) तैयार करना चाहते हैं वह हरगिज़ यह आशा न रखे कि उन्हें कुर्आन का समर्थन प्राप्त हो सकेगा।

११०. अन्-नस्त्र

नाम : पहली आयत में नस्त्र (अल्लाह की मदद) के आने का जिक्र हुआ है जिस की मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अन्-नस्त्र” है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली यह आखिरी सूरह है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ठ ५६१ निसाई के हवाले से) सूरह के मज़मून से भी इस का समर्थन होता है एवं जैसा कि इब्ने अब्बास का बयान है इस सूरह में यह इशारा मौजूद है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुनिया से रुख़्सत होने का वक्त करीब आ गया है। बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत उमर ने इब्ने अब्बास से कहा कि तुम **إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ** के बारे में क्या कहते हो। उन्होंने कहा कि इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बर दी गई है कि जब अल्लाह की मदद और विजय आ गई तो आप का वक्त पूरा हुआ अतः आप अल्लाह की हम्द (वन्दना, प्रशंसा) तस्बीह (गुनगान) और इस्तिफ़ार (क्षमायाचना)

करें। हज़रत उमर ने फ़रमाया मैं भी यही समझता हूँ। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर) मालूम हुआ कि यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वफ़ात का वक्त बिलकुल करीब आ गया था।

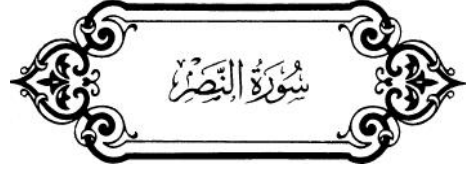
केन्द्रीय विषय :- अल्लाह की मदद और दीन के प्रभुत्व पाने पर अल्लाह के दरबार में उस की कृपा को स्वीकारना अर्थात् हम्द (प्रशंसा) तस्बीह (गुनगान और इस्तिफ़ार (क्षमायाचना) करना।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में अल्लाह की मदद और उस की तरफ़ से प्रकट होने वाली फ़तेह (विजय) फ़तेह मक्का का जिक्र है।

आयत २ में लोगों के सामूहिक रूप में इस्लाम की छत्र छाया में आने का जिक्र है।

आयत ३ में इस फ़ज़ल (दया) के हासिल होने पर खुदा की और अधिक हम्द, तस्बीह और इस्तिफ़ार करने की हिदायत की गयी है।

११०. सूरह अन्-नस्र



आयतें : ३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब अल्लाह की सहायता और विजय आ गयी,¹

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ①

2. और तुम ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं,²

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ②

3. तो तस्बीह (पाकी बयान) करो अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ।³ और उस से मग़फ़िरत (क्षमा) माँगो।⁴ निस्संदेह वह बड़ा ही तौबा कुबूल करने वाला है।⁵

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ③

1. नस् (मदद) से मुराद वह सहायता है जो हक़ (सत्य) को प्रभुत्व मिल जाने की सूरत में जाहिर हुआ अल्लाह तआला ने अपने रसूलों से वादा फ़रमाया है कि वह ज़रूर उन के विरोधियों के मुकाबले में उन की मदद फ़रमायेगा :

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ . (المؤمن-५१)

“निस्संदेह हम अपने रसूलों की और ईमान लाने वालों की इस दुनिया में भी मदद करते हैं और उस दिन भी करेंगे जब कि गवाह खड़े होंगे।” (अल्-मोमिन-५१)

यह मदद पूरी पूरी उस समय प्रकट होती है जब कि हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) की कशमकश आख़री मरहले में प्रवेश कर जाती है और यही वह मदद है जिस का इन्तेज़ार रसूल के साथियों को होता है।

مَتَى نَصْرُ اللَّهِ الْآلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ . (البقرة-२१३)

“कब आएगी अल्लाह की मदद ? यक़ीन जानो! अल्लाह की मदद करीब है।”

और इसी मदद को सूरह फ़तेह में **نَصْرًا عَزِيزًا** (जबरदस्त मदद) से ताबीर (अलंकृत) किया गया है।

और फ़तेह (विजय) से मुराद फ़तेह मक्का (मक्का विजय) है जो एक निर्णायक विजय थी और जिस के बाद मुश्रिकीन का ज़ोर टूट गया और अरब में इस्लाम को पूर्ण विजय एवं प्रभुत्व प्राप्त हुआ ।

मक्का विजय की घटना रमज़ान सन ८ हिजरी (जनवरी सन ६३०ई.) की है जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दस हजार जाँबाज़ साथियों को ले कर मदीने से ख़ाना हो गए थे। मक्के में बिना किसी बड़े प्रतिरोध के दाख़िल हुए और एलान फ़रमाया कि जो व्यक्ति भी हथियार डाल देगा उस को सुरक्षा दी जायेगी । जो लोग इस्लाम दुश्मनी में आगे आगे थे उन को भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आम तौर से माफ़ कर दिया ।

इस मौक़े पर कितने ही लोगों ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम स्वीकार किया । ख़ाना-ए-काबा जो एक बुतों को तोड़ने वाले रसूल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम द्वारा निर्मित था, उस में कुरैश ने ३६० बुत बिठाये थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस गन्दगी से ख़ाना-ए-काबा को पाक किया। बुतों को लकड़ी से गिराते जाते और यह आयत पढ़ते जाते :

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا .

(नबीसरायिल : ८१)

“हक़ आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया, और बातिल मिटने ही के लिए था। (बनी इस्राईल - ८१)

इन बुतों में सब से बड़ा बुत हुबल था। बुत परस्त युद्ध के अवसर पर उसी की जय पुकारते थे लेकिन आज वह खुद ढेर हो गया था। हार का मुँह देखने वालों की वह क्या मदद करता। इस के बाद आप ने इस विजय पर शुक्राने की नमाज़ अदा की और तकबीर की आवाज़ बुलन्द करते हुए यह हकीक़त भरा ऐलान फ़रमाया:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ صَدَقَ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ
وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ . (البودावुक्तब-दियात)

“अल्लाह जिस के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, उस ने अपना वादा सच्चा किया अपने बन्दे की मदद की और तमाम जत्थों को अकेले पराजय दी।” (अबू दाऊद, किताबुदियात)

स्पष्ट रहे कि अरबी में **إِذَا** (इज़ा) आम तौर से मुस्तक़बिल (भविष्य) के लिए आता है लेकिन कभी कभी माज़ी (भूत Past) के लिए भी आता है और यहाँ अनुमानतः एवं हज़रत इब्ने अब्बास का उक्त बयान इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि यह माज़ी (Past भूतकाल) के अर्थ में है। इस लिए हम ने आयत का अनुवाद “जब अल्लाह की सहायता और विजय आ गयी” किया है। जब कि आम तौर पर इस का अनुवाद “जब अल्लाह की सहायता और उस की विजय आये” या “आयेगी” किया जाता है।

2. मक्का विजय का असर कुरैश तक सीमित नहीं रहा बल्कि अरब के विभिन्न क्षेत्रों में जो क़बीले आबाद थे उन पर उस के भारी प्रभाव पड़े। इन क़बीलों के नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) वफ़द (मण्डल Delegation) की शकल में मदीना आना शुरू हुए और सन ९ हिजरी और सन १० हिजरी में कई प्रतिनिधि मण्डलों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम कुबूल करने का एलान कर दिया और सामूहिक रूप से लोग इस्लाम में दाख़िल होने लगे। जिस दिन के लिए कुरैश इक्कीस साल तक रुकावटें पैदा करते रहे वह दो साल के अन्दर अरब के कोने कोने में पहुँच गया। यहाँ तक कि उस पवित्र धरती पर कोई मुश्रिक बाक़ी न रहा। अर्थात् मक्का विजय इस महान क्रान्ति की भूमिका थी।

3. अर्थात् दिन का प्रभुत्व और लोगों के इस्लाम कुबूल करने का यह आत्मविभोर दृश्य जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने देखा अल्लाह की मदद का नतीजा है। इस लिए इस फ़ज़ल (कृपा) के हासिल हो जाने पर ऐ नबी आप को अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और चूँकि आप की नियुक्ति

का उद्देश्य पूरा हो गया है इस लिए आप को खुदा की हम्द और तस्बीह में अधिक मग्न हो जाना चाहिए।

इस से यह महत्वपूर्ण सच्चाई स्पष्ट हो जाती है कि ईमान वालों का वास्तविक लक्ष्य खुदा को पाना है और इस के लिए उसे अपनी आखरी साँस तक संघर्ष करना है। दीन को ग़ालिब करने (प्रभुत्वता दिलाने) की जद्दोजहद के मरहले में भी और इस के पूर्ण होने के बाद भी।

4. अर्थात् तुम्हें खुदा से यह दुआ करना चाहिए कि इस ख़िदमत को अन्जाम देने में जो कोताहियाँ हुई हों और जिम्मेदारियों को पूरा करने में जो भूल चूक हुई हो उसे वह क्षमा करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हिदायत दे कर ईमान वालों की रहनुमाई इस बात की तरफ़ की गई है कि वह किसी भी ख़िदमत के अन्जाम पाने या किसी विजय एवं सफलता के प्राप्त हो जाने पर दुनियादार लोगों की तरह इतराने और गर्व करने के बजाये उसे अल्लाह के फ़ज़ल (कृपा) और उस की तौफ़ीक़ का नतीजा समझे और उस की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पाकी बयान) करें कि प्रशंसा योग्य वही है एवं इस एहसास के साथ कि मालूम नहीं कि इस ख़िदमत के अन्जाम देने में क्या क्या कोताहियाँ एवं त्रुटियाँ हुई होंगी, अपने रब से अत्यन्त विनम्रता के साथ क्षमायाचना करें। ऐसे अवसर पर ईमान वालों का रवैया यही होना चाहिए और इन्हें उन तौर तरीक़ों से बचना चाहिए जो उन के अन्दर एहसासे बन्दगी (दासता बोध) के बजाए एहसासे बरतरी (अंह का आभास) पैदा करने वाले हों।

ऐसी महान विजय और ऐसा ज़बरदस्त ग़लबा (प्रभुत्व) हासिल हो जाने के बाद कुर्आन ने जश्न मनाने का हुक्म नहीं दिया बल्कि अल्लाह की बारगाह में शुक्र और बन्दगी का नज़राना पेश करने का हुक्म दिया जो इस बात का खुला सबूत है कि यह सर्वोच्च शिक्षा अल्लाह की वह्य है और इस को पेश

करने वाली हस्ती पैगम्बरे खुदा ही की हो सकती है।

हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिन में सौ बार इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) पढ़ा करते थे। (मुस्लिम किताबुज्ज़िक्र) एवं बुखारी की हदीस में है कि इस सूरह के नाज़िल होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकू (Bending) और सजदों (Prostrations) में अधिकता से यह पढ़ा करते थे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ
اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي. (بخاری کتاب التَّوْبَةِ)

“पाकी तेरे ही लिए है ऐ अल्लाह हमारे रब। मैं तेरी प्रशंसा के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ, खुदाया ! मेरी मग़िफ़रत फ़रमा (अर्थात् मुझे क्षमा कर)”(बुखारी किताबुतप्सीर)

5. अल्लाह तआला की सिफ़त तौव्बाब (बड़ा ही तौबा कुबूल करने वाला) बयान हुई है जो मन्फ़ी (Negative) और मुस्बत (Positive) दोनों पहलुओं को लिए हुए है। मन्फ़ी (नकारात्मक या Negative) पहलू के लिहाज़ से इस का मतलब यह है कि अगर बन्दा उस से माफ़ी माँगे और तौबा करे तो वह उस को माफ़ कर देता है और उस की तौबा कुबूल कर लेता है और मुस्बत (सकारात्मक या Positive) पहलू के लिहाज़ से इस का मतलब यह है कि बन्दा जब उस की ओर पलटता और झुकता है तो वह बन्दे की तरफ़ अपनी मेहरबानियों के साथ ध्यान देता है। यहाँ इस सिफ़त का ज़िक्र इस मफ़हूम (Sense) में है कि तुम उम्मीद रखो कि वह न केवल तुम्हारी क्षमा की प्रार्थना स्वीकार करेगा बल्कि तुम पर अपनी कृपा दृष्टि भी करेगा और अपनी मेहरबानियों के साथ तुम्हारी ओर ध्यान देता रहेगा।



१११. अल्-लहब्

नाम : आयत ३ में लहब् का लफ़्ज़ आया है जिस का अर्थ “शोला” के हैं। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम “अल-लहब्” है।

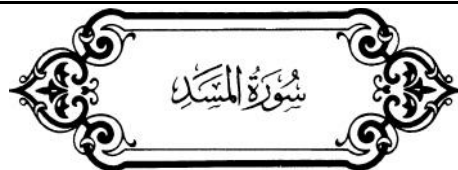
नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आखिरी दौर में नाज़िल हुई होगी। क्योंकि इस में अबू लहब् का नाम ले कर उस का बुरा अन्जाम बयान किया गया है और अम्बिया अलैहिस्सलाम किसी का बुरा अन्जाम उस पर हुज्जत (दलील) क़ायम करने के बाद ही बयान करते हैं। इस लिए यह सूरह, सूरह काफ़िरून के बाद ही नाज़िल हुई होगी जिस में काफ़िरों से बरी रहने का ए़लान किया गया है।

केन्द्रीय विषय :- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदतरीन दुश्मन के बुरे अन्जाम से लोगों को आगाह करना है ताकि क्रियामत तक पैदा होने वाले रसूल के दुश्मन और इस्लाम के विरोधी इस सूरह के आइने में अपना चेहरा देख लें।

आयतों की तरतीब :- आयत १ से ३ में रसूल के दुश्मन अबू लहब् का भयावह अन्जाम बयान किया गया है।

आयत ४ और ५ में उस की बीवी के इबरतनाक अन्जाम का दृश्य पेश किया गया है जो इस दुशमनी में अपने शौहर (पति) के सुर में सुर मिलाती थी।

१११. सूरह अल्-लहब्



आयतें : ५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. टूट गये अबू लहब ¹ के दोनों हाथ ² और वह तबाह हो गया।³

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ①

2. उस का माल और उस की कमाई उस के कुछ काम न आयी।⁴

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ②

3. वह बहुत जल्द शोलों से भड़कती आग में दाखिल होगा।⁵

سَيَصْلَىٰ نَارًا إِذَا تَلَهَّبَ ③

4. और उस की बीवी भी जो ईंधन उठाए हुए होगी।⁶

وَأُمْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ④

5. उस की गर्दन में मज़बूत रस्सी होगी।⁷

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ⑤

1. अबू लहब कुन्नियत (उपाधि) है। असल नाम अब्दुलउज्जा था जिस का अर्थ है उज्जा देवी का बन्दा। चूँकि यह मुश्रिकाना नाम था इस लिए कुर्आन ने इस का जिक्र इस के घृणित नाम से करने के बजाय इस की उपाधि (कुन्नियत) से किया। अबू लहब कुरैश के खानदान, बनी हाशिम का सदस्य, अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था।

जिन कारणों से उस की ज़िन्दगी में उस की किस्मत का फैसला चुकाया गया और उस के अन्जाम से सूचित करने के लिए एक पूरी सूरह नाज़िल की गयी वह संक्षेप में नीचे लिखे जा रहे हैं।

(A) अबू लहब खाना-ए-काबा का संचालक था और खुदा के घर को बुतों का ठिकाना बनाए रखने पर अड़ा था एवं बुत परस्ती में उस की तल्लीनता उस का सब से बड़ा और संगीन जुर्म था।

(B) जो सम्मान और पद उस को प्राप्त था उस ने उस के अन्दर घमण्ड और अहं पैदा कर दिया था और सरकशी (उद्यण्डता) और बगावत का रवैया अपना कर के वह फिरऔन की जगह पर जा बैठा था।

(C) इस्लाम की दअवत के विरोध का आरम्भ इसी ने किया था इस लिए कुफ़्र का नेतृत्व इस का मुकद्दर बन गया।

(D) वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर दुश्मन था और इस दुश्मनी में उस ने तमाम अखलाक़ी हदों को फ़ाँद डाला था यहाँ तक कि खून के रिश्ते को काटने में भी वह सब से आगे निकल गया। इस की खुली मिसाल उस का वह रवैया है जो उस ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामाजिक और आर्थिक बाइकाट करने के सिलसिले में अपनाया। कुरैश के बाइकाट करने पर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अबीताल्लिब की घाटी में पनाह ली तो अबू लहब ने काफ़िर कुरैश का साथ दिया और उसे अपने भतीजे पर उस वक्त भी दया नहीं आयी जब कि वह भूख के दिन गुज़ार रहा था। (सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ ३७२)

(E) वह जीवन भर इस्लाम की राह का काँटा बन रहा और तौहीद (एकेश्वरवाद) की मुखालफ़त में सब से ज़्यादा सक्रिय रहा। अतः जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के आम क़बीलों के सामने अपनी दअवत पेश की तो अबू लहब इस से लोगों को घृणा करने पर उकसाता रहा। रबिआ बिन इबाद का बयान है कि मैं ने जुलमजाज़ के बाज़ार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप कह रहे हैं, लोगों! “ला इलाहा इल्लल्लाह” (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) कहो कामयाबी पाओगे।” और आप के पीछे एक व्यक्ति

कहता जाता था कि यह व्यक्ति झूठा है इस की बात न मानों। मैं ने लोगों से पूछा यह कौन है? उन्होंने ने कहा यह इन का चचा अबू लहब है। (तफ़सीर इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ५१४ अहमद के हवाले से)

(F) इस को अपने खुदाओं पर बड़ा नाज़ था। अतः इस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाइकाट में कुरैश का साथ देते हुए हिन्द बिन उतबा से कहा था “जिस व्यक्ति ने लात और उज्जा (दो देवियों के नाम) को छोड़ दिया है। उस को छोड़ कर क्या मैं ने इन खुदाओं की मदद नहीं की? हिन्द ने कहा” हाँ और अल्लाह तुझे भला बदला दे।” (सीरत इब्ने हिशाम भाग १ पृष्ठ ३७२)

अबू लहब के अन्जाम की यह ख़बर वास्तव में इस बात का इज़हार है कि अगर पैग़म्बर का चचा भी कुफ़्र करे तो वह खुदा की पकड़ से बच नहीं सकता उस के इन्साफ़ का क़ानून निष्पक्ष और वंश एवं कुल के प्रभाव से उच्चतर है।

2. हाथ टूटने से मुराद शरीर के हाथों का तबाह हो जाना भी है जिन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालफ़त में वह उठाया करता था, और उस के ज़ोर का टूट जाना और उस के वैभव का समाप्त हो जाना भी। उस ने अल्लाह के कलिमे को नीचा करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया था मगर वह अपने उद्देश्य में बुरी तरह नाकाम रहा। बद्र की जंग में उस का ज़ोर टूट गया। उस के हिमायती और सहायक बुरी तरह मारे गये और उस की शान और शौकत का ख़ात्मा हो गया। इस तरह वह पेशीयनगोई पूरी हुई जो इस आयत में की गई थी। इब्ने अब्बास की रिवायत है कि जब आयत

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ

(अपने निकटतम सम्बन्धितयों को डराओ) (शुअरा-२१४) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा **يَا صَبَاحَ** (सुबह के खतरे से सावधान!) लोगों ने कहा यह कौन पुकार रहा है? फिर वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास जमा हो गये। आप ने फ़रमाया अगर मैं तुम्हें यह बताऊँ कि इस पहाड़ के पीछे से एक लश्कर तुम पर हमला करने के लिए आ रहा है तो क्या तुम मेरी बात सच मानोगे? लोगों ने कहा हम ने आप को कभी झूठ बोलते नहीं देखा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तो देखो मैं तुम्हें आने वाले बड़े प्रकोप से सावधान करता हूँ। यह सुन कर अबू लहब ने कहा

تَبَا لَكَ مَا جَمَعْنَا إِلَيْهِذَا

(तबाह हो जाए तू क्या तूने हमें इसी लिए इकट्ठा किया था?) इस पर **تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ** “टूट गए अबू लहब के दोनों हाथ और और वह तबाह हुआ” नाज़िल हुई। (बुखारी किताबुतफ़सीर)

इस का मतलब यह नहीं है कि सूरह लहब उसी वक्त नाज़िल हुई क्योंकि कि जैसा कि इस से पहले बताया जा चुका है, किसी के हक़ में अज़ाब का फ़ैसला उसी वक्त सुनाया जाता है जब कि उसे आख़िरी हद तक मोहलत दी जा चुकी हो। और इस के बाद वह अपने कुफ़्र और सरकशी पर अड़ा रहे बल्कि इस का मतलब यह है कि अबू लहब की यही वह हरकतें थी जिन के कारण आख़िर कार वह प्रकोप का भोगी क्रार पाया। और यह सूरह उस की हरकतों का ठीक ठीक जवाब है।

3. बद्र की जंग में उन के पक्ष की पराजय का उसे बहुत सदमा हुआ और इस के बाद वह खुद भी तबाह हुआ। अतः उस की मौत तबाही की सूरत में हुई और आख़िरत का दर्दनाक अज़ाब भी उस के लिए निश्चित हुआ। बद्र की जंग में वह शरीक नहीं हुआ और इस जंग को ख़त्म हुए अभी एक सप्ताह ही हुआ था कि चेचक के रोग से पीड़ित होने के कारण उस की मृत्यु हो गई और रिवायत से मालूम होता है कि उस की लाश तीन दिन तक उस के घर में पड़ी सड़ती रही मगर कोई उस को ठिकाने लगाने वाला न था क्योंकि कुरैश चेचक के रोग को छूत का रोग समझते थे। आख़िरकार उस के लड़कों ने उस की लाश एक दीवार की आड़ में इस तरह दफ़न कर दी कि दूर ही से उस की क़ब्र पर पत्थर फेंकते रहे। (अल्-बिदाय: वन्निहाय: भाग ३ पृष्ठ ३०९)

आज अबू लहब का नाम लेने वाला कोई न रहा अलबत्ता उस पर लानत भेजने के लिए एक पूरी उम्मत मौजूद है जो अपनी नमाज़ों में सूरह लहब पढ़ कर इस रसूल के दुश्मन पर लानत भेजती रहती है। इस तरह कुर्आन की यह पेशीयनगोई (भविष्यवाणी) कि रसूल को ग़ल्बा (प्रभुत्वता) हासिल होगा और रसूल का दुश्मन तबाह होगा, शब्द शब्द पूरी हुई। कुर्आन की सत्यता का यह ऐसा सबूत है जो क्रियामत तक बाक़ी रहेगा।

4. अर्थात् न उस की दौलत खुदा की पकड़ से उसे बचा सकी जिस पर उसे नाज़ (गर्व) था और न वह कर्म ही उस के कुछ काम आ सके जो झूठी धार्मिकता के आधार पर उस ने अन्जाम दिये थे।

कुर्आन में आमाल (कर्मों) के लिए “कसब” (कमाई) का लफ़्ज़ अधिकता के साथ प्रयोग हुआ है। यहाँ भी यह इसी अर्थ में है।

5. यह इस का आख़िरत (परलोक) में होने वाला अन्जाम है जो क्रियामत के दिन उस के सामने आयेगा।

अबू लहब और نَارِ اَدَاتِ لَهَب (भड़कती आग) में बड़ी मुनासिबत (सम्बन्ध) पैदा हो गई है। उस के दिल में द्वेष और

ईर्ष्या की जो आग थी वह क्रियामत के दिन भड़क उठेगी। जज़ा (बदला) वास्तव में इन्सान के कर्मों ही का फ़ल है।

6. अबू लहब की बीवी का नाम उम्मे जमील था। यह अबू सुफ़ियान की बहन थी और चूँकि इस्लाम दुश्मनी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से द्वेष और ईर्ष्या में वह अपने पति की सहायक और विरोधी कार्यकर्माँ में उस की शरीक (Partner) थी इस लिए उस का अन्जाम भी बयान फ़रमाया।

वह जहन्नम में अपने पति के लिए ईंधन ढोने का काम करेगी क्योंकि उस ने दुश्मनी की आग भड़काई थी।

حَمَالَةُ الْحَطَبِ

(ईंधन उठाने वाली) का मतलब सईद बिन जुबैर ने गुनाहों का बोझ उठाने वाली बयान किया है। (फ़तहुलक़दीर लिशशौकानी भाग ५ पृष्ठ ५१२) क्रियामत के दिन मुजरिमों का जो हाल होगा वह कुर्आन में इस तरह बयान किया गया है।

وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ

“वह अपने बोझ अपनी पीठों पर लादे हुए होंगे” (अल्-अन्आम-३१)

7. अर्थात् जहन्नम में उस की गर्दन में मज़बूत रस्सी पड़ी हुई होगी। गोया उस का हाल उस दासी जैसा होगा जो सर पर लकड़ियाँ (ईंधन) उठाये हुए हो और जिस की गर्दन में बटी हुई रस्सी पड़ी हुई हो। क्रियामत के दिन उसे अपमान का जो मज़ा चखना होगा उस की यह तस्वीर है।

सईद बिन मुसैय्यब कहते हैं कि उस की गर्दन में जवाहरात का क़ीमती हार था और वह कहा करती थी कि लात और उज़्ज़ा (बुतो के नाम) की क्रसम मैं इसे मुहम्मद की दुश्मनी में ख़र्च करूँगी, इस लिए क्रियामत के दिन उस के शरीर पर यह हार प्रकोप का कारण होगा। (फ़तहुलक़दीर लिशशौकानी भाग ५ पृष्ठ ५१३) आयत का मतलब यह है कि जिस हार पर उसे घमण्ड है और जिस को वह रसूल के ख़िलाफ़ किये जाने वाले कार्यक्रमों में ख़र्च करना चाहती है वह क्रियामत के दिन वास्तव में “उस के गले का हार” साबित होगा और उस का यह ऐश का सामान उस की रूसवाई का कारण होगा।

अबू लहब की बीवी के इस अन्जाम में औरतों के लिए भी इब्रत (सबक़) है और मर्दों के लिए भी। औरतों के लिए यह इब्रत कि एक औरत कुफ़्र और सरकशी का रवैया अपना कर कितने बुरे अन्जाम को पहुँच जाती है और मर्दों के लिए यह इब्रत कि औरतें किस तरह गुनाह के कामों में मर्दों की सहायक बन कर उन को तबाही की तरफ़ धकेलती रहती हैं।

११२. अल्-इख्लास

नाम : इस सूरह का एक नाम तो पहली आयत “कुल हुवल्लाहु अहद” **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** ही को करार दिया गया है और दूसरा नाम उस के मज़मून की मुनासिबत से “अल्-इख्लास” है क्योंकि यह ख़ालिस तौहीद के बयान पर आधारित है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून एवं शैली से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी क्योंकि इस दौर में छोटे छोटे वाक्यों में दीन की बुनियादी बातों को पेश किया गया है और उन की विस्तृत व्याख्या बाद की सूरतों में की गई है।

आरम्भिक दौर में नाज़िल होने का एक अनुमान हज़रत बिलाल (रज़िअल्लाहु अन्हु) की यह घटना है कि जब उन्हें उमैय्या बिन ख़ल्फ़ कड़ी धूप में लिटा कर उन के सीने पर बड़ा पत्थर रख देता और कहता कि इसी हाल में तुझे मरना होगा सिवाय इस के कि तू मुहम्मद का इन्कार कर के लात और उज़्ज़ा को पूजने लगे। तो इस के जवाब में वह **احد احد** अहद अहद कहते (अल्-बिदाय: वन्निहाय: भाग ३ पृष्ठ ५८) मालूम होता है कि उस वक्त सूरह इख्लास नाज़िल हो चुकी थी और अहद का लफ़्ज़ इसी सूरह का था जो ज़ुबान पर चढ़ गया था।

केन्द्रीय विषय :- तौहीद है और ख़ास तौर से इस का यह पहलू कि अल्लाह तआला की ज़ात (हस्ती) का सही तसव्वुर पेश करना ताकि मुश्रिकाना तसव्वुरात की जड़ कट जाए।

आयतों की तरतीब :- आयत १ और २ में मुस्बत (Positive) पहलू से अल्लाह तआला की सिफ़तें बयान हुई हैं और आयत ३ और ४ में मन्फ़ी (Negative) पहलू से ताकि क़ौमों और मिल्लतों में जिन राहों से शिर्क दाख़िल हुआ है वह बन्द हो जाये।

महत्व और महानता :- सूरह “इख्लास” वास्तव में कुआन

की आख़िरी सूरह है क्योंकि इस के बाद की दो सूरह इसी तौहीद के तसव्वुर से उभरी हैं और इस तौहीद के तसव्वुर एवं पूरे कुआन की हिफ़ाज़त का सामान हैं। कुआन की शुरूआत तौहीद से हुई थी और ख़ात्मा भी तौहीद पर ही हुआ है। इस से तौहीद का महत्व एवं इस सूरह की महानता अच्छी तरह मालूम हो जाती है। अल्लामा फ़राही फ़रमाते हैं: “यद्यपि यह सूरह अपने ज़ाहिरी (बाह्य) अन्दाज़ के लिहाज़ से तमाम सूरतों में ऐसी छोटी है जैसी तमाम बदन में आँख की “पुतली” मगर हिदायत का सारा जगत इसी से रौशन (ज्योतिर्मय) नज़र आता है।

(मज़मूआ तफ़ासीर फ़राही पृष्ठ ५२५)

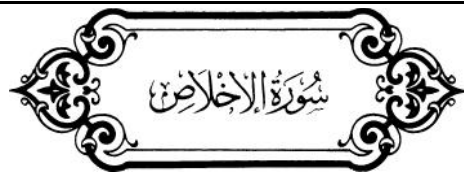
सूरह इख्लास की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) सही हदीसों से साबित है। बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ

“क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है यह सूरह (कुलहुवल्लाह अहद) कुआन के एक तिहाई हिस्से के बराबर है।” (बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल कुआन)

इस की यह फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) कुआन के अर्थ के लिहाज़ से है क्योंकि कुआन में तौहीद का मज़मून इस अधिकता से बयान हुआ है कि गोया उस का एक तिहाई हिस्सा इसी पर आधारित है और चूँकि सूरह इख्लास में इस अहम और फैले हुए मज़मून को चार छोटे वाक्यों में इस तरह समेट दिया गया है। जैसे दरया को कूज़े में (सागर को गागर में) बन्द कर दिया गया हो। इस लिए इसे एक तिहाई के बराबर करार दिया गया है। रही इस की तिलावत की बरकतें तो इस से वही लोग लाभन्वित हो सकते हैं जो ख़ालिस तौहीद पर ईमान रखते हो और अपने अक़ीदे में शिर्क का कोई अंश न आने दें।

११२. सूरह इख्लास



आयतें : ४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कहो ¹ वह ² अल्लाह यकता है।³

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ①

2. अल्लाह वह उच्चतर हस्ती है जो सब का मर्जअ (ठिकाना) और मल्जा (पनाहगाह) है।⁴

اللَّهُ الصَّمَدُ ②

3. न उस की कोई औलाद है ⁵ और न वह किसी की औलाद। ⁶

لَمْ يَلِدْ ۖ وَلَمْ يُولَدْ ③

4. और न कोई उस के बराबर का है।⁷

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ④

1. सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप के वास्ते से हर उस व्यक्ति से जो कुर्आन पर ईमान रखता हो। **قُلْ** कुल” कहने से तात्पर्य इज़हार और एलान है।

2. आयत में सर्वनाम “**هُوَ**” (वह) अरबी व्याकरण के अनुसार “जमीरे शान” है जो किसी बात के महत्व को स्पष्ट करने और उस पर ध्यान को केन्द्रित कराने के लिए वाक्य के आरम्भ में आता है और इस से कलाम में सरलता के साथ ही सुन्दरता पैदा हो जाती है। उदाहरण के तौर पर जैसे कहते हैं **هُوَ الزَّمانُ غَدَارٌ** (वह ज़माना है जो बेवफ़ाई करता है) आयत **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** (कहो वह अल्लाह एकता है) में “**هُوَ**” (वह) की ज़मीर (Pronoun) बयान के महत्व को ज़ाहिर कर रही है कि इसे कान लगा कर सुनो और उस पर अपने ध्यान को केन्द्रित करो।

3. “अल्लाह एकता है” अर्थात् वह अपनी ज़ात (अस्तित्व) और सिफ़ात (गुणों) में बिल्कुल अकेला और बेजोड़ है। वाहिद (एक) के मुक़ाबले में अहद (यकता) का लफ़्ज़ इस बात की पुष्टि करता है कि उस की वहदत (एकता) में कसरत (अधिकता) का कोई पहलू नहीं है और उस की वहदानियत (एक मात्रता) ऐसी संपूर्ण है कि न उस का विश्लेषण किया जा सकता है और न विभाजित। उस का अस्तित्व स्वयं स्थिर और मख़्लूकों (सृष्टियों) से बिल्कुल अलग है। खुदाओं की कोई नस्ल नहीं बल्कि वह एक खुदा है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इन्सान की प्रकृति और उस का स्वभाव खुदा के इस तसव्वुर से भिन्न (वाक़िफ़) है। उस की अंतरात्मा की पुकार भी यही है और उस की बुद्धि भी इसी की गवाही देती है एवं कायनात का ज़र्रा (कण कण) और इस की पूरी व्यवस्था इसी पर दलालत (तर्क) करती है।

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَّهُ آيَةٌ تَذُلُّ عَلَى أَنَّهُ وَاحِدٌ

“हर चीज़ में उस की एक निशानी है जो उस की वहदत पर दलालत करती है।”

उस का “**احد**” (यकता) होना कायनात की सब से बड़ी, सब से अधिक उभरी हुई और सब से ज़्यादा बुनियादी हक़ीक़त है। इस हक़ीक़त को नज़र अन्दाज़ कर के जिन लोगों ने खुदा के बारे में सोचा उन को ऐसी ज़बरदस्त ठोकर लगी कि फिर संभल न सके। इस सिलसिले की बुनियादी ग़लती खुदा (सृष्टा) को मख़्लूक (सृष्टि) पर कल्पना करना है। जब कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ख़ालिक (सृष्टा) और मख़्लूक (सृष्टि) में किसी पहलू से भी समानता एवं मेल संभव नहीं है और न हमारी सीमित एवं तुच्छ बुद्धि इस काबिल हो सकती है कि उस की ज़ात में ग़ौर और चिन्तन करने लगे इस लिए उस के यकता

और बेजोड़ होने के सीधे सादे तसव्वुर को छोड़ कर जितने फ़लसफ़े भी धर्म के ठेकादारों ने खुदा के अस्तित्व के बारे में ईजाद किये हैं वह सब बेहक़ीक़त और एकदम ग़लत करार पाते हैं। ज़ाहिर है जब पहली ईंट ही टेढ़ी रखी गयी तो कितनी ही बुलन्द इमारत क्यों न तामीर की जाए वह टेढ़ी ही होगी।

रहे भौतिकवादी (Materialist) लोग जो खुदा के वजूद ही को स्वीकार नहीं करते तो उन का यह इन्कार मानव प्रकृति एवं स्वभाव के विरुद्ध एलाने-जंग है और जो व्यक्ति अपनी प्रकृति एवं अपने स्वभाव ही से जंग करने पर आमादा हो उस को कोई बात भी दलील से मनवाई नहीं जा सकती। इन्सान अपनी आँखे फोड़ देने के बाद किसी भी चीज़ के वजूद से इन्कार कर सकता है। ऐसे व्यक्ति को कोई चीज़ भी नहीं दिखाई जा सकती।

जहाँ तक नबियों की हिदायत का सम्बन्ध है, बिना किसी अपवाद के तमाम पैगम्बरों ने तौहीद ही की तालीम दी थी। अतः बाइबिल में परिवर्तनों के बावजूद तौहीद का तसव्वुर बुनियादी तौर से मौजूद है। मिसाल के तौर पर तौरात में हैं।

“हे इस्राईल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।” (व्यवस्थाविवरण ६:४)

“जो कोई यहोवा को छोड़ किसी और देवता के लिए बलि करे वह सत्यानाश किया जाए।” (निर्गमन २२:२०)

और ज़बूर (भजन संहिता) में है।

“केवल तू ही परमेश्वर है (भजन संहिता ८६, १०)

लेकिन नबियों की इस बुनियादी तालीम से क्रौमों और मिल्लतों ने मुँह मोड़ा और गुमराही में पड़ गयी। इस मुँह मोड़ने और अपने मन माने रास्ते पर चलने की एक मिसाल तो ईसाई धर्म का त्रीश्वरवाद (तस्लीस का अक़्रीदा या Trinity) है जो बाप, बेटा और रूहुलकुदुस (वह पवित्र रूह जो बीबी मरयम में फूँकी गई) तीन खुदाओं के संग्रह का नाम है और इस की दूसरी मिसाल हमारे मुल्क के बुत परस्तों का त्रिमूर्ति (Trimurti) का अक़्रीदा है जो तीन देवताओं ब्रह्मा, विष्णु, और शिव के संग्रह का नाम है। इन का धार्मिक चिन्ह ॐ (Om) तीन खुदाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

“In later times, Om is the mystic name for the Hindu triad, and represents the union of three gods, viz. a (Vishnu), u (Siva). m (Brahma).”-(A Sanskrit - English Dictionary by Sir Monier Oxford, Page 235).

और वेदों का परिचय कराते हुए प्रोफ़ेसर सी. के. राजा इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं कि भारत में हम तौहीद

(एकेश्वरवाद) के तसव्वुर से हमेशा अनभिज्ञ (Unknown) रहे हैं। वह लिखते हैं।

“The difficulty is that in India we never had a Monotheism till very recent times. If one reads the Mahabharata, it will be found that every divinity is in his turn a Supreme God head. This is exactly what is found in the Vedas too.....and there never came a stage when there was only one God.”

-(The Quintessence of the Rigveda page 11).

4. Text (मूल) में लफ़ज़ “अस्समद” इस्तेमाल हुआ है जिस के अर्थ में बड़ी व्यापकता और बड़ा फैलाव है इस लिए किसी एक लफ़ज़ में इस का अनुवाद कर देना मुश्किल है।

समद का शाब्दिक अर्थ है “वह जिस का इरादा किया जाए। और यह उस सरदार के लिए बोला जाता है जिस से ऊपर कोई दूसरी हस्ती न हो और जिस की तरफ़ लोग अपनी ज़रूरतों और मामलात में पेशी करते हों। इसी तरह समद उस चट्टान को भी कहा जाता है जिस की दुश्मन के हमले के समय पनाह ली जाए एवं उस ठोस चीज़ को भी कहते हैं जिस में खोखलापन न हो।

इन शाब्दिक अर्थों को सामने रखते हुए आयत में अल्लाह तआला के लिए “अस्समद” की जो सिफ़त बयान हुई है उस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला सर्वोपरि है। उस की सरदारी, सल्तनत और सर्वश्रेष्ठता संपूर्ण है, वही लक्ष्य है, वही है जिस के पास पलट कर जाना है, वही पनाहगाह है, वह बेनियाज़ (स्वच्छंद) है। उसे किसी चीज़ की हाज़त नहीं जब कि सब उस के मुहताज़ हैं और वह सब की हाज़तों को पूरा करने वाला है। वह पनाह की चट्टान है, जैसा कि ज़बूर (भजन संहिता) में कहा गया है।

“यहोवा मेरी चट्टान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ाने वाला है।” (भजन संहिता १८:२)

“हे यहोवा मैं तेरा शरणगत हूँ।” (भजन संहिता ७१:१)

उस की समदियत के भावार्थ में यह बात भी शामिल है कि न तो कोई चीज़ उस के अन्दर दाखिल होती है और न कोई चीज़ उस के अन्दर से ख़ारिज होती है इस लिए उस के औलाद होने का सवाल ही पैदा नहीं होता और वह इस बात से पाक है कि इन्सान उस में समा जाए जैसा कि हमारे देश के मुश्रिकों की आस्था है।

5. यहाँ फिर इन्सान ने ठोकर खायी कि ख़ुदा को अपने जैसा समझ कर उस के लिए औलाद बना बैठा हालाँकि यह बात

बौद्धिक रूप से भी ग़लत है और ग्रंथों के अनुसार भी। बौद्धिक रूप से इस लिए ग़लत है कि किसी को ख़ुदा का बेटा मानने की सूरत में यह भी मानना पड़ेगा कि वह ख़ुदा का अंश एवं अंग है। क्योंकि बेटा बाप का अंश होता है। और साथ ही यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि ख़ुदाई (ईश्वरत्व, Godhood) विश्लेषण एवं विभाजन योग्य है और इस से यह भी निश्चित होगा कि उस की कोई पत्नी हो। और किसी की पत्नी उस के अपने ही वंश अपनी ही नस्ल की हो सकती है। अतः मानना पड़ेगा कि ख़ुदा की भी जाति है। ज़ाहिर है इस से ज्यादा घटिया और बेहूदा तसव्वुर ख़ुदा के बारे में और क्या हो सकता है। मगर इस खुली बुद्धि विरोधी कल्पना को धर्म चलाने वालों ने मात्र भावनाओं से प्रभावित हो कर और अतिक्रम (गुलू, Untenable) का शिकार हो कर कुबूल कर लिया। और ख़ुदा के लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ी। ग्रंथों के अनुसार यह बात इस लिए ग़लत है कि ख़ुदा ने बन्दों की हिदायत के लिए जो किताबें भी नाज़िल फ़रमायी उन में तौहीद ही की तालीम दी गई थी। इन किताबों के जो अंश हमारे सामने मौजूद हैं उन में सारा ज़ोर तौहीद पर दिया गया है। रहा बाइबिल का वह हिस्सा जिस में हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा गया है तो पहली बात यह है कि यह बात तौरात, ज़बूर और इन्जील की स्पष्ट और बुनियादी तालीम के खिलाफ़ है। तौरात बाइबिल के संग्रह में सब से पहली और प्राचीन किताब है इस लिए इस की तालीम के खिलाफ़ चारों इन्जीलों के बयान की हैसियत काँट छॉट एवं परिवर्तन की क्रार पाती है। दूसरी बात यह कि चारों इन्जीलों में जहाँ हज़रत मसीह के लिए बेटा का लफ़ज़ इस्तेमाल हुआ वही सामान्य रूप से ख़ुदा के नेक बन्दों के लिए भी ख़ुदा के बेटे के अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं। जैसे

“धन्य हैं वे जो मेल करवाने वाले हैं। क्योंकि वह परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।” (मत्ती ५:९)

ऊपर से ऐसा महसूस होता है कि यह बात अवास्तविक अर्थात् कल्पित (मजाज़ी) अर्थ में कही गई है न कि वास्तविक अर्थ में लेकिन अगर तौहीद (एकेश्वरवाद) की इस तालीम को सामने रखा जाये जो तौरात, ज़बूर और इन्जील के पन्नों में फैली हुई है तो साफ़ मालूम होता है कि अब्द (बन्दा) के शब्द को इब्न (बेटा) से बदल दिया गया है। इसी तरह शब्द रब (परवरदिगार, मालिक) को अब (बाप) का शब्द कर दिया गया है। मत्ती की इन्जील में है:

“सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए।” (मत्ती ६:९)

यह खुली हुई काँट छॉट है जो या तो इन किताबों के सम्पादकों ने की है या इन के अनुवादकों ने, क्योंकि कि इन्जील

ही में स्पष्ट रूप से कहा गया है:

“यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राईल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।” (मरकूस १२:२९, ३०)

खुदा की औलाद गढ़ने में ईसाई अकेले नहीं है बल्कि दूसरी क्रौमें भी इस गुमराही में शरीक हैं। यहूदी हज़रत उज़ैर को अल्लाह का बेटा करार देते हैं और मक्का के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने फ़रिश्तों को खुदा की बेटियाँ ठहराया था। इस से भी दो क्रदम आगे भारत के बुतपरस्त हैं जो न केवल अनगिनत खुदाओं को मानते हैं बल्कि उन की औलाद को भी। जैसे "The Maruts are the sons of Rudra, another great god in the Rigveda." -(The Quintessence of the Rigveda, p. 45).

इन के नज़दीक महद ब्रह्मा वह गर्भाशय है जिस में भगवान बाप की हैसियत से अपना बीज डाल देता है जिस से मख्लूक (सृष्टि) जन्म लेती है। अतः गीता में है:-

“Mahad-Brahma is the womb wherein I cast My Primal seedling whence are born all creatures. Whatever beings are born from any womb Mahad - Brahma is their Primal Mother and I Their Primal Father who inseminate her.”

(Bhagvad Geeta 14 - 3 - 4 - English Transl. by Dilip Kumar Roy p.160).

लेकिन कुर्आन ने खुदा की मारिफ़त (पहचान, सान्निध्य) ऐसे साफ़ सुथरे, वास्तविकता पूर्ण और दिल लगते अन्दाज़ में पेश किया है कि इस की रौशनी के सामने सारा अंधकार ग़ायब हो गया।

6. वह खुदा ही क्या हुआ जिसे किसी ने जन्म दिया हो लेकिन बहुदेववादी धर्मों में खुदाओं के जन्म लेने का तसव्वुर पाया जाता है। मिसाल के तौर पर ऋग्वेद में खुदाओं की पैदाइश का जिक्र मौजूद है :-

“There is a song about the birth of the gods (X-72). The gods are spoken of generally as having been born from the heaven and the earth and in various other ways.” (Quintessence of the Rigveda, page 100).

इसी बहुदेववादी (मुश्रिकाना) कल्पना को यहाँ ग़लत बताया गया है कि जिस तरह अल्लाह की कोई औलाद नहीं उसी तरह उस का कोई बाप भी नहीं है। जन्म लिए हुए खुदा तो फ़र्जी (मनगढ़न्त) खुदा हो सकते हैं। हकीक़ी खुदा तो सब का ख़ालिक (रचयिता) है वह मख्लूक (रचना) क्यों और कैसे हो सकता है वह मात्र अल्लाह ही की हस्ती है जिस से न कोई चीज़ जन्म लेती है और न किसी ने उसे जन्म दिया है ----- किस क्रदर खुदा के शायाने-शान (प्रतिष्ठानुकूल एवं महिमानुकूल) है कुर्आन का यह तौहीद का तसव्वुर।

7. अर्थात् न अल्लाह की ज़ात (अस्तित्व) में उस की बराबरी और उस के जोड़ का कोई है और न उस की सिफ़ात (गुणों) में। सब मख्लूक (सृष्टि) हैं और वह तन्हा ख़ालिक (सृष्टा), सब मुहताज़ हैं और वह अकेला ग़नी और बेनियाज़ (स्वच्छंद), सब बन्दे और गुलाम हैं और वह एक पूज्य, और मालिक। उस के जैसा और उस के हम पल्ला न कभी कोई हुआ है और न होगा।

इस खुली हुई हकीक़त के बावजूद मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) ने खुदा का हमपल्ला ठहराया। इस मामले में भारत के मुश्रिकीन सब से आगे हैं। इन्होंने ने ख़ालिक और मख्लूक दोनों को एक सहअस्तित्व (मख्लूत वजूद) करार दिया। इन की धार्मिक ग्रंथ उपनिषद में शिर्क को एक दर्शन (Philosophy) की हैसियत से पेश किया गया है।

“All that exists, says the Upanishad, is He, He is that All and the All is He.”

(The Upanishads by M.P.Pandit - p.154).

“The Self or Soul of everyone is Brahman.”

-(Upanishads by Swami Sivananda p. 16).

इन की दूसरी धार्मिक पुस्तकों में भी खुदा का तसव्वुर बहुत उलझा हुआ है।

“There is no Personal Supreme God in the religion of Vedas”.

(The Quintessence of the Rigveda, P.7).

“He is in all and all are in Him He descends as the Avatar.”

(The Bhagvad Geeta -A Revelation by D. K. Roy p. 33)

“Lord, I behold in Your body all

gods.” (The Bhagvad Geeta, Ch. XI: 15)

जो लोग इन बहुदेववादी फलसफ़ों में उलझ कर अन्धकार में भटक रहे हैं उन की मुक्ति इस के बग़ैर संभव नहीं है कि वह

पक्षपाती और धार्मिक द्वैष (तअस्सुब) को छोड़ कर कुआन की रौशनी को स्वीकार कर लें।



११३. अल्-फ़लक़

नाम : पहली आयत में लफ़्ज़ फ़लक़ आया है जिस का अर्थ है “सुबह”। इस मुनासीबत से इस सूरह का नाम “अल्-फ़लक़” है। सूरह फ़लक़ और सूरह नास दोनों “इस्तिआज़ः (शरण, पनाह) की सूरतें हैं। इस लिए इन का संयुक्त नाम “मुआव्विज़तैन” (पनाह वाली सूरतें) भी हैं।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि शैतानी शक्तियाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचाने के लिए उठ खड़ी हुई थीं और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोधी ईर्ष्या की आग में जल रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- बन्दों को इस बात की तालीम देना है कि वह हर तरह की मुश्किलों, मुसीबतों और बुराइयों के मुकाबले में अल्लाह ही की पनाह ढूँढ़ें क्योंकि वही अकेला शरण देने वाला और पनाह में लेने वाला है। इस सिलसिले में ऐसी प्रार्थना के शब्द सिखाये गये हैं जो इस्तिआज़ः (पनाह माँगने) के लिए अत्यन्त उचित हैं।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में इस बात की तालीम दी गयी है कि बन्दा पनाह (शरण) के लिए उस हस्ती की तरफ़ मुड़े जिस की रबूबियत के करिश्मे वह रात दिन देख रहा है।

आयत २ से ५ में बताया गया है कि किन चीज़ों के फितनों से पनाह माँगते रहना चाहिए।

फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) :- इस सूरह में एवं इस के बाद वाली सूरह में पनाह माँगने के लिहाज़ से जो उचित और व्यापक वाक्य तथा जो प्रभावपूर्ण दुआ इरशाद हुई है उस की अहमियत और फ़ज़ीलत (महत्व एवं श्रेष्ठता) हदीस में इस तरह बयान हुई है। उक्रबा बिन आमिर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया :

أُنْزِلَتْ عَلَيَّ آيَاتُ لَمْ يَرِ مِثْلُهُنَّ قَطُّ : الْمَعُودَتَيْنِ

“मुझ पर ऐसी आयतें नाज़िल हुई हैं जो बिल्कुल बेमिसाल हैं। अर्थात् मुआव्विज़तैन।” (मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफ़िरीन)

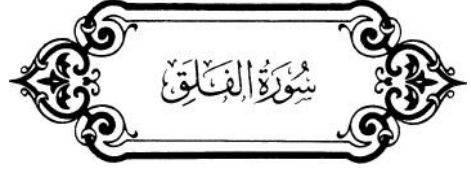
बरकतें :- हदीस में आता है :

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَفَثَ فِي كَفِّهِ بِقُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ وَبِالْمُعَوِّذَتَيْنِ جَمِيعًا يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ وَمَا بَلَغَتْ يَدَاهُ مِنْ جَسَدِهِ. (بخاری کتاب الطب)

“हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हाथों में “कुल हुवल्लाहु अहद” और मुआव्विज़तैन पढ़ कर फूँकते फिर उन को अपने चेहरे और जिस्म पर जहाँ तक कि हाथ पहुँच जाता, फेर लेते।” (बुखारी किताबुत्तिब्ब)

तावीज़ और गन्डों से बचते हुए इन सूरतों की बरकतों से लाभ और रोगों से मुक्ति प्राप्त करने का यह सही और सुन्नत तरीक़ा है। मगर याद रहे कि सूरह का असल मक़सद तौहीद पर जमे रहना, उस के तक्राज़ों को पूरा करना और इस बात का ख़ास तौर से ख़याल रखना है कि अक़ीदे और आस्था में शिर्क की कोई भनक भी न पाई जाए। जो लोग इस महान उद्देश्य को भुला कर अल्लाह के कलाम की सिर्फ़ ज़ाहिरी (बाह्य) बरकतों को प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं उन की मिसाल उस प्यासे व्यक्ति की सी है जो दरया के किनारे बैठ कर अपने हाथ और अपना मुँह तो धो लेता है मगर पानी पीने का कष्ट सहन नहीं करता। ज़ाहिर है उस के इस अमल से हाथ और मुँह तो धुल जाएंगे लेकिन उस की प्यास हरगिज़ न बुझ सकेगी।

११३. सूरह अल्-फ़लक़



आयतें : ५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कहो ¹ मैं पनाह माँगता हूँ ² सुबह के रब की, ³
2. जो कुछ उस ने पैदा किया है उस के शर (बुराई) से, ⁴
3. और अंधेरी रात के शर (फ़ितने) से जब कि वह छा जाये, ⁵
4. और गाँठों में फूँकने वालों के शर (फ़ितने) से। ⁶
5. और ईर्ष्या करने वाले के शर (फितने) से जब कि वह ईर्ष्या करे। ⁷

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝۳

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝۴

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝۵

1. अर्थात् अल्लाह से यह दुआ (प्रार्थना) किया करो और उस की पनाह (शरण) इन कलिमात (वाक्यों) से माँगा करो। सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से हर उस व्यक्ति से जो कुआन पर ईमान लाया हो।

2. पनाह के अर्थ, सुरक्षा, बचाव और शरण के हैं। और पनाह माँगने से मुराद अपनी सुरक्षा के लिए पनाह देने वाली हस्ती से दुआ करना, उस की तरफ पलटना, उस की ओर झुकना उस की स्नेही एवं दयालुता की छत्र छाया ढूँढना और उस के सहारे को मज़बूती के साथ थाम लेना है। अतः यहाँ “अऊजु” (मैं पनाह माँगता हूँ का मतलब यह है कि मैं खुदा को एकमात्र पनाह देने वाला मान कर अपने आप को उस की सुरक्षा में दे देता हूँ, वही हर तरह के शर (बुराई, मुसीबत, फ़ितनों) से बचाने वाला है और मैं उसी से बन्दगी का सम्बन्ध बनाता हूँ।

ध्यान रहे कि किसी को सही मानों में पनाह देने वाला समझना उस को खुदा क्रार देना है, इस लिए अल्लाह के सिवा किसी की पनाह माँगना जैसा कि मुश्रिकीन (बहुदेववादी) देवी देवताओं की पनाह माँगते हैं, खुला शिर्क है।

3. अर्थात् जो रात के अंधाकार का पर्दा चीर कर सुबह प्रकट करता है जैसा कि दूसरी जगह इरशाद हुआ है।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ

“रात के अन्धकार को फाड़ कर सुबह प्रकट करने वाला।” (अल-अन्आम - ९६)

यहाँ अल्लाह की रूबूबियत की सिफ़त के साथ उस की कुदरत के इस करिश्मे का ज़िक्र इन अर्थों में है कि गोया पनाह लेने वाला अपने इस विश्वास और संतोष को व्यक्त कर रहा है, कि जो हस्ती अन्धकार को फ़ाड़ कर सुबह को अस्तित्व में लाती है वह निराशजनक स्थिति में आशा की किरण भी पैदा करेगी और फितनों (शर) की भरमार को छोट कर शान्ति और सुरक्षा की राह भी खोलेगी।

4. इस आयत पर गौर करने से निम्न लिखित बातें पता चलती हैं :

1) सारी चीज़े अल्लाह ही की पैदा की हुई हैं। ख़ालिक (सृष्टा) तन्हा वही है और मालिक भी वही इस लिए कोई चीज़ भी कायनात के पैदा करने वाले से अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकती अतः मख़्लूक (सृष्टि) के शर (फ़ितनों) से बचने के लिए ख़ालिक की पनाह ढूँढना ही सही तरीका है। इस के विरुद्ध मख़्लूक (सृष्टि) के शर (फ़ितनों) से बचाने के लिए मख़्लूक ही की दुहाई देना, चाहे इस मक़सद के लिए किसी देवी देवता को

पुकारे या किसी “ग़ौस” और “वली” को सरासर मूर्खता और एकदम ग़लत है।

2) “जो कुछ उस ने पैदा किया उस के शर से” का मतलब यह नहीं है कि उस की पैदा की हुई हर चीज़ में निश्चित रूप से शर (फ़ितने) का पहलू है बल्कि मतलब यह है कि उस की पैदा की हुई चीज़ों में जो चीज़ें भी अपने अन्दर शर का कोई पहलू रखती हैं उन सब के शर से खुदा की पनाह माँगता हूँ।

3) कोई चीज़ भी स्वयं अपने आप में प्रभाव पूर्ण नहीं है और न कोई शर खुद ब खुद किसी के साथ हो जाता है बल्कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म ही से प्रभाव जमाती है और जिस किसी के साथ कोई शर लग जाता है, उस के हुक्म ही से होता है। इस लिए शर से बचने के लिए उसी से प्रार्थना (दुआ) करना चाहिए। और उसी पर भरोसा करना चाहिए।

4) शर से मुराद महसूस होने वाली आफ़तें और बलाएँ भी हैं और आन्तरिक हानियाँ और गुमराहियाँ भी। पहली चीज़ की मिसाल बीमारियाँ और कष्ट हैं और दूसरी चीज़ की मिसाल गुनाह एवं कुफ़्र और शिर्क है। आयतों के संदर्भ (Context) के अनुसार शर का यह दूसरा पहलू खास तौर से मुराद है और इस का अनुमोदन (ताईद) इस बात से भी होती है कि “मुआव्विज़तैन” ^{مُعَوِّذَتَيْنِ} को कुआन के बिलकुल अन्त में रखा गया है। यह गोया इस बात की ओर संकेत है कि कुआन के द्वारा जिस हिदायत से पुरस्कृत एवं सुसज्जित किया गया है उस की हिफ़ाज़त के सिलसिले में चौकन्ना रहने की ज़रूरत है ताकि फ़ितने को प्रिय रखने वाली ताक़तें प्रभावित न होने पाएँ और भटकाने में कामयाब न हों।

5. पिछली आयत में मख़्लूकों (सृष्टियों) के शर से पनाह माँगने का वर्णन सामान्य रूप से हुआ है। अब कुछ विशेष चीज़ों के शर से पनाह माँगने की हिदायत विशेष रूप से की जा रही है।

रात आती है तो अंधेरा छा जाता है और उस अंधकार में उपद्रवी तत्वों और शैतानी शक्तियों को उभरने का मौक़ा मिलता है। प्रत्यक्ष और शरीरिक आफ़तों के एतिबार से बीमारियाँ रात में बढ़ती हैं और ख़तरनाक जानवर रात में निकलते हैं। मतलब यह कि रात को डर और भय का माहौल रहता है। रही आन्तरिक और नैतिक (अख़लाक़ी) आफ़तें तो रात में अपराध अधिकता के साथ होते हैं। ढेरों षडयंत्र रात ही में किये जाते हैं और शैतान अपने लश्कर के साथ अंधेरे ही में हमलावर होता है इस लिए रात का प्रत्यक्ष अंधकार, आन्तरिक अंधकार का कारण हो सकता है। अतः इस शर की तरफ़ से चौकन्ना रहने और इस से खुदा की पनाह माँगने की तल्कीन की गई है।

ध्यान रहे कि रात से शर को जोड़ने का मतलब यह नहीं

है कि रात में खैर (नेकी, भलाई, शान्ति) का अवतरण नहीं होता या खैर के काम अन्जाम नहीं पाते, बल्कि मतलब यह है कि रात का समय शैतानी ताकतों के लिए शर फैलाने के तअल्लुक से बड़ा अनुकूल होता है।

6. “उक़द” عُقِدَ (गाँठों) से तात्पर्य वह गाँठ है जो इन्सान के शऊर (विवेक) और उस के हवास (चेतना, इन्द्रियों) पर लगा कर उसे गाफ़िल और मदहोश बना देते हैं अतः सहीहैन (दो सही हदीस के उल्लेखकर्ताओं) की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلَى فَاخِةِ رَأْسِ أَحَدِكُمْ ثَلَاثَ عُقَدٍ إِذَا نَامَ. بِكُلِّ عُقْدَةٍ يَضْرِبُ عَلَيْكَ لَيْلًا طَوِيلًا. فَإِذَا اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللَّهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ. وَإِذَا تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عَنْهُ عُقْدَتَانِ. فَإِذَا صَلَّى انْحَلَّتْ الْعُقْدُ فَاصْبَحْ نَشِيطًا طَيِّبَ النَّفْسِ وَالْأَصْبَحَ خَبِيثَ النَّفْسِ كَسَلَانٍ. (مسلم کتاب صلاة المسافرين)

“जब तुम में से कोई व्यक्ति सोता है तो उस के सर के पिछले हिस्से पर शैतान तीन गाँठ लगाता है और हर गाँठ के साथ यह बात भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है। फिर जब वह व्यक्ति जाग उठता है और अल्लाह को याद करता है तो एक गाँठ खुल जाती है और जब वुजू करता है तो दूसरी गाँठ भी खुल जाती है और जब नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी गाँठ भी खुल जाती है। और सुबह को वह बिलकुल ताज़ा दम और पाकीज़ा नफ़्स होता है। दूसरी सूरत में वह सुबह को सुस्त, कसमसाहट और अशुद्धता एवं अपवित्रता की मनोदशा में होता है।” (मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफ़िरीन)

यह शैतान द्वारा इन्सान को ग़फ़लत में डालने की एक मिसाल है जो हदीस में प्रस्तुत की गई है। इस से शैतानी विचारों का अनायास ही मन में उत्पन्न होने, उस की हरकतों और उस के हमलों का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

نَفَثُ “नफ़्थ” का लफ़्ज़ “नफ़्स” نَفْثَاتُ “नफ़्थासात” से है जिस का अर्थ है “फूँकना” हदीस में शैतानी क्रिया के उत्पन्न होने को शैतान के “नफ़्स” نَفَثُ से ताबीर किया गया है :

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ مِنْ نَفْثِهِ وَنَفْثِهِ وَهَمْزِهِ.

“मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शैतान के नफ़्थ उस के नफ़्स और उस के हमज़ से।”

इस हदीस के रावी (उल्लेखकर्ता) इब्ने मुरः ने इन तीनों अल्फ़ाज़ की व्याख्या इस तरह की है कि शैतान के नफ़्थ से

मुराद घमण्ड, नफ़्स से मुराद शेर (दोहा) बड़ाई, और हमज़ से मुराद जुनून (पागलपन) है। (अबू दाऊद, किताबुस्सलात भाग २ पृष्ठ ७५०)

इस में “नफ़्स” को शेर जो कहा गया है वह दरअसल शैतानी विचारों एवं क्रियाओं की अनायास उत्पत्ति ही की एक शकल है उस की दूसरी शकल मंत्र मोहनी और जादू भी है।

“नफ़्थासात” نَفْثَاتُ का लफ़्ज़ स्त्रीलिंग का बहुवचन है और अतिशयोक्ति के छंद पर है। यह नुफ़ूस (आत्माओं) की सिफ़त (विशेषण) है इस लिए अरबी व्याकरण के अनुसार स्त्रीलिंग है। अर्थात् वह नुफ़ूस (आत्माएँ) जो फूँकने के आदी हैं। इस से तात्पर्य शैतानी आत्माएँ (नुफ़ूस) हैं जो अपनी उत्प्रेरणा द्वारा अनायास इन्सान के विवेक (शऊर) और उस की चेतना एवं इन्द्रियों को प्रभावित कर देती हैं। ऊपर हदीस में शैतान के गाँठ बाँधने का जो ज़िक्र हुआ है उस में भी यह बात बयान हुई है कि वह हर गाँठ के साथ यह भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है। यह वास्तव में शैतान का इस गाँठ में नफ़्स (फूँकना) ही है।

इन हदीसों की रौशनी में आयत का मतलब यह है कि शैतान अपनी उत्प्रेरणा (Inspiration) द्वारा उस की चेतना विवेक और इन्द्रियों को प्रभावित कर के उसे ग़फ़लत, अचेतना, मदहोशी और मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार बनाते हैं और बुरी एवं गुमराह करने वाली बातें सुझा देते हैं। उन के इस शर (फितने) से खुदा की पनाह माँगी गई है। यह शैतानी उत्प्रेरणा शायरी के रूप में भी हो सकती है और जादू के रूप में भी। लच्छेदार बातों की शकल में भी हो सकती है। और गाने की शकल में भी। इस लिए कोई कारण नहीं कि इस को किसी एक ही रूप में सीमित समझा जाए। सिफ़ली अमल (Black Magic या वशीकरण) करने वालों के यहाँ तो गन्डों में फूँक मारने का तरीक़ा पहले ही से चला आ रहा है। जादू और टोने टोटके करने वाले शैतानों की मदद से यह दुष्ट कर्म अन्जाम देते हैं और लोगों के लिए गुमराही का सामान करते हैं और आजकल हिपनाटिज़्म (Hypnotism) के द्वारा भी इन्सान की चेतना उस के विवेक और उस की इन्द्रियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। यह सब शैतानी दुष्कर्म की विभिन्न सूरतें हैं। इस तरह की तमाम तकलीफ़ो और मुसीबतों से बचने का सही तरीक़ा यही है कि अल्लाह की पनाह ली जाए और इस बात पर दृढ़ विश्वास रखा जाए कि उस की आज्ञा के बिना कोई चीज़ चोट और क्षति नहीं पहुँचा सकती।

आम तौर से मुफ़स्सरीन (टीकाकार) इस आयत के अन्तर्गत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू की रिवायत नक़ल करते हैं जिस का सारांश यह है कि मदीना में एक यहूदी ने

या एक मुनाफ़िक़ जो यहूद का हलीफ़ (सहप्रतिज्ञ, मित्र) था और जिस का नाम लबीद बिन आसिम था, आप की कंधी के बालों में जादू कर के इस को एक कुँए के अन्दर पत्थर के नीचे दबा दिया था। इस जादू के प्रभाव से आप बीमार हुए और यह दशा हुई कि किसी काम के प्रति यह समझते कि कर लिया है लेकिन नहीं किया होता। कुछ रिवायतों (उल्लेखों) के अनुसार ६ माह तक आप पर इस का असर रहा। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य द्वारा सूचित किया गया और मुआव्विज़तैन अर्थात् कुल अरज़ुबिरब्बिल फ़लक़ एवं कुल अरज़ुबिरब्बित्रास पढ़ने की हिदायत हुई जिस से आप अच्छे हो गए।

यह रिवायत बुख़ारी मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में नक़ल हुई है किन्तु कुछ कारणवश यह स्वीकार योग्य नहीं :-

पहली बात यह कि यह रिवायत कुर्आन से टकराती है, क्योंकि कि कुर्आन ने कुफ़्फ़ार के इस इल्ज़ाम को ग़लत बताया है कि नबी जादू से पीड़ित हैं।

يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا

“ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जो जादू से पीड़ित है”। (बनी इस्राईल : ४७)

अर्थात् कुर्आन जिस बात को ग़लत बता रहा है यह रिवायत उसी को सही साबित कर रही है। इस का जवाब इस रिवायत पर यक़ीन करने वाले उलेमा (विद्वान) यह देते हैं कि नबी पर जादू का असर हो सकता है जिस तरह हज़रत मूसा को जादूगरों की रस्सियों और लाठियों के बारे में ख़्याल हुआ था कि वह साँप की तरह दौड़ रही हैं, (सूरह ताहा: ६६) रहा कुफ़्फ़ार का इल्ज़ाम कि नबी एक जादू से पीड़ित व्यक्ति हैं तो वह इस अर्थ में था कि किसी जादूगर ने आप को पागल बना दिया है जिस को कुर्आन ने ग़लत बताया। एवं वह कहते हैं कि “जादू का असर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अस्तित्व पर हुआ था उन की नुबुव्वत इस से बिल्कुल अप्रभावित रही।” लेकिन यह जवाब मात्र एक धोखा है क्योंकि रिवायत में जादू का यह असर बयान किया गया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी काम के प्रति यह समझते कि कर लिया लेकिन नहीं किया होता। अर्थात् जादू का असर मआज़ल्लाह आप के ज़ेहन पर हुआ था। और वह भी कई माह तक बाक़ी रहा एवं आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस की ख़बर उस समय हुई जब कि अल्लाह की वह्य ने आप को सूचित किया जब कि हज़रत मूसा का जादूगरों की रस्सियों और लाठियों को साँप के रूप में देखना क्षणिक था और उन को यह मालूम था कि ये रस्सियाँ और लाठियाँ हक़ीक़त में साँप नहीं हैं बल्कि साँप के रूप में दिखाई दे रही हैं। इस लिए इस के देखने से उन को धोखा

नहीं हुआ। फिर यह कोई बीमारी नहीं थी जिस में हज़रत मूसा मुब्तिला हुए हों इस लिए रिवायत में बयान की गई जादू की घटनाओं को हज़रत मूसा की घटना जैसा समझना अतर्क संगत है।

दूसरी बात यह कि इस घटना को मान लेने से अम्बिया की इस्मत (नबियों की पवित्रता) पर दोष आता है क्योंकि कि रिवायत में जादू का असर मात्र शरीर पर नहीं बल्कि मस्तिष्क पर भी बताया गया है। स्पष्ट है यह बात नबी के श्रेष्ठतम पद के बिल्कुल विपरीत है। इस लिए यह दलील व्यर्थ है कि यदि आप ज़ख्मी हो सकते थे और बीमार हो सकते थे तो आप पर जादू का असर भी हो सकता था।

عصمتِ انبياء “नबियों की इस्मत” अर्थात् नबियों की मासूमियत उन की पवित्रता का मसला सभी के नज़दीक माननीय है और कुर्आन एवं सुन्नत से यही साबित होता है। अतः ऐसी रिवायत जो नबी के श्रेष्ठतम पद के विपरीत हो वह हरगिज़ विश्वस्नीय नहीं हो सकती चाहे वह बुख़ारी की रिवायत हो या मुस्लिम की।

तीसरी बात यह कि जहाँ तक रिवायत के सिलसिले का मामला है इस में एक रावी (उल्लेखकर्ता) हश्शाम हैं जो यद्यपि विश्वासपात्र हैं किन्तु अल्लामा इब्ने हज़र ने तहज़ीबुतहज़ीब में उन के बारे में एक बात यह भी नक़ल की है कि वह इराक़ जाने के बाद अधिकता के साथ अपने वालिद से रिवायत (उल्लेख) करने लगे थे जिस पर इराक़ वालों ने अप्रसन्नता व्यक्त की थी एवं यह कि मालिक ने इन की उन हदीसों पर जो वह इराक़ वालों के माध्यम से बयान करते थे, नकारते थे। वह तीन बार कूफ़ा आए थे। पहली बार वह इस तरह रिवायत करते :-

حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ سَمِعْتُ عَائِشَةَ

“मेरे वालिद ने मूझ से बयान किया कि उन्होंने ने हज़रत आइशा (रजि.) को फ़रमाते हुए सुना” और दूसरी बार आए तो इस तरह रिवायत करने लगे :-

اخبرني ابي عن عائشه

“मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी की हज़रत आइशा (रजि.) से रिवायत है।” और तीसरी बार आए तो इन अल्फ़ाज़ में रिवायत करने लगे। **ابی عن عائشه** “मेरे वालिद ने आइशा से रिवायत की है” (तहज़ीबुतहज़ीब भाग ११ पृष्ठ ५०) इस से अन्दाज़ा होता है कि हश्शाम यद्यपि विश्वस्नीय उल्लेखकर्ता (सिक: रावी) थे किन्तु उल्लेख करने में कुछ असावधानी भी उन से होने लगी थी। ऐसी सूरत में उन की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू वाली रिवायत को जो एक बहुत बड़े मसले

में है, उन की असावधानी क्यों न समझा जाए?

चौथी बात यह कि रिवायत के सिलसिले (क्रम) में एक रावी सुफ्रियान बिन उयैन: हैं जो यह स्वीकार करते हैं कि मैं ने इसे इब्ने जुरैज से पहली बार सुना। इस पर मौलाना अमीन अहसन साहब की यह अलोचना बिल्कुल उचित है कि :-

“गोया इस वाक़िअ: ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल (अल्लाह से जा मिलने) के सौ साल बाद शोहरत पायी। इस से पहले इस का इल्म सिर्फ़ बाज़ (कुछ) अफ़राद तक महदूद रहा। हर शख्स समझ सकता है कि “अलइयाज़ बिल्लाह” अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ६ माह तक मसहूर (जादू से पीड़ित) रहे होते तो यह वाक़िअ: इतना ग़ैर मामूली (असाधारण) था कि सद्र अव्वल (पहले दौर) ही में इस का चर्चा होता और यह रिवायत एक मुतवातिर (क्रमबद्ध) रिवायत की हैसियत से हम तक पहुँचती।” (तदब्बुरे कुआन भाग ९ पृष्ठ ६६६)

बात लम्बी न हो जाए इस लिए हम इन चन्द कारणों के बयान को काफ़ी समझते हुए बस करते हैं अल्बत्ता यहाँ उन मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के बयानात के कुछ इत्किबासात (उदाहरण) नक़ल करेंगे जिन्होंने ने पूरे ज़ोर के साथ जादू वाली रिवायत को रद्द कर दिया है।

मशहूर मुफ़स्सिर अल्लामा अबू बक्र जस्सास अपनी तफ़्सीर “अहकामुल कुआन” में फ़रमाते हैं :-

“और लोगों ने जादू के अमल से भी ज़्यादा बड़ी और हौलनाक बात जायज़ करार दी है। अतः उन का ख़याल है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया था और इस का असर भी आप पर हुआ था। यहाँ तक कि आप ने फ़रमाया था कि मुझे ऐसा ख़याल होता है कि मैं कोई बात कह रहा हूँ और कर रहा हूँ जब कि मैं ने न वह बात कही होती है और न की होती है। और एक यहूदी औरत ने आप पर खज़ूर के छिलके के अन्दर कंधी और बालों में जादू कर दिया था यहाँ तक कि आप के पास जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप को ख़बर दी कि उस औरत ने खज़ूर के छिलके के अन्दर जादू कर दिया है और वह कुँए के पत्थर के नीचे है तो आप ने उस को निकलवाया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से उस का असर समाप्त हो गया। हालाँकि अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बन्धित काफ़िरों के दावे को झुटलाते हुए फ़रमाया है।

وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَبْعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْجُورًا

“और ज़ालिम कहते हैं कि तुम एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू कर दिया गया है।” इस तरह की

हदीसों दरहक़ीक़त मुलहिदों (नास्तिकों) की गढ़ी हुई हैं। (अहकामुल कुआन भाग १ पृष्ठ ५५)

सैयद कुत्ब अपनी तफ़्सीर “फ़ी ज़िलालिल कुआन” में फ़रमाते हैं :-

“लेकिन यह रिवायतें अमल और तबलीग़ के मामले में वास्तव में इस्मते नबी (नबी की पवित्रता) के खिलाफ़ हैं। और इस पर विश्वास कर लेने के साथ कि आप का हर काम और हर क़ौल सुन्नत और शरीअत है यह दुरुस्त नहीं करार पाती। एवं ये रिवायतें कुआन के उस बयान से भी टकराती हैं जिस में रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जादू ग्रस्त होने का खण्डन किया गया है और मुश्रिकीन के इस ग़लत दावे को झूट करार दिया गया है। इस आधार पर ये रिवायतें खयालों में जगह नहीं पा सकतीं। एवं एक्का दुक्का ख़बर को अक़ीदे के मसले में कुबूल नहीं किया जा सकता। और अक़ीदे के मामले में हदीसों को कुबूल करने के लिए तवातुर (क्रम एवं निरंतरता) शर्त है जब कि ये रिवायतें मुतवातिर (क्रमबद्ध अथवा निरंतर) नहीं हैं। इस के अलावा इन दोनों सूरतों का अवतरण बेहतर क़ौल (वरीय कथन) के अनुसार मक्का में हुआ था।” (फ़ी ज़िलालिल कुआन भाग ६ पृष्ठ ४००८)

और मौलाना अमीन अहसन इस्लाही लिखते हैं :-

“अगरचे दावा यह किया जाता है कि इस जादू का कोई असर आप के फ़राइज़े नुबुव्वत (नुबुव्वत के कर्तव्यों) पर नहीं पड़ा लेकिन साथ ही निहायत सादा लौही (बड़े भोलेपन) से यह एतिराफ़ भी कर लिया गया है कि इस का असर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह पड़ा कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम के मुताल्लिक़ ख़याल फ़रमाते कि कर लिया है लेकिन नहीं किया होता----- मेरे नज़दीक़ इस शाने नुज़ूल को रद्द करने के लिए यह दलील काफ़ी है कि यह उस मुसल्लमः (संपूर्ण, सुरक्षित एवं स्वीकृत) अक़ीदे के बिल्कुल मनाफ़ी (विपरीत) है जो कुआन ने अम्बिया अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ हमें तालीम किया है। इस्मत हज़राते अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की उन ख़ुसूसियात में से है जो किसी वक्त भी उन से मुन्फ़क़ (जुदा) नहीं हो सकती। इस इस्मत को इस अम्र (बात अथवा काम) से कोई नुक्सान नहीं पहुँचता कि नबी के दन्दाने मुबारक शहीद हो गए या वह ज़ख्मी हो गया या वह क़त्ल कर दिया गया। इन में से कोई चीज़ भी उस की नुबुव्वत में क़ादेह (रोड़ा, विपरीत) नहीं है कि इस को आप इस अम्र की दलील बनाएँ, कि जब नबी इन चीज़ों में मुब्तिला हो सकता है तो मसहूर (जादूग्रस्त) भी हो सकता है। यहाँ तक कि उस को करदा और नाकरदा, दीदा और नादीदा (करने और न करने, देखने और न देखने) में कोई इम्तियाज़ (फ़र्क़) ही बाक़ी नहीं रह जाता।

अल्लाह तआला ने इस तरह के शैतानी तसरूफ़ात (उथल पुथल) से अपने नबियों को महफूज़ रखा है। और उन की यह महफूज़ियत ही नबी के हर क़ौल व फेल (कथनी और करनी) को सनद बनाती है। पूरा कुआन अम्बिया की इस्मत पर गवाह है और हर मुसलमान पर वाज़िब है कि वह उन की इस्मत पर ईमान रखे।” (तदब्बुरे कुआन भाग ८ पृष्ठ ६६५-६६६)

इन मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के उक्त बयानों से जादू की घटना और रिवायत की हक़ीकत स्पष्ट हो जाती है। लेकिन अश्चर्य है कि लोगों को जितनी दिलचस्पी एक रिवायत को सही कर दिखाने से है उतनी दिलचस्पी उन्हें इस बात से नहीं कि इस का इस्मते-अम्बिया (नबियों की पवित्रता) पर क्या असर पड़ता है। यह रिवायत परस्ती नहीं तो और क्या है?

6. हसद (ईर्ष्या) का मतलब यह है कि अगर अल्लाह तआला ने किसी व्यक्ति को अपनी किसी नेमत या फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) से नवाज़ा है तो दूसरा व्यक्ति उस पर जलने लगे और इस की इच्छा रखे कि वह उस से छिन जाए। “और हासिद (ईर्ष्या करने वाला) जब हसद (ईर्ष्या) करे” का मतलब यह है कि हासिद जब हासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) कार्रवाई करने लगे और ईर्ष्या के जोश में कोई क्रदम उठा बैठे ऐसे मौक़े पर उस के शर (फितने) उस की यातनाओं और उस की पीड़ा से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगना चाहिए हासिद (ईर्ष्या करने वाले) का लफ़्ज़ यद्यपि सब पर लागू होता है किन्तु यह भी एक उभरी हुई हक़ीक़त है कि हसद (ईर्ष्या) की शुरूआत शैतान ही से हुई है जब कि अल्लाह तआला ने आदम को पैदा कर के ज़मीन की ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) का ताज उस के सर पर रखा था। इसी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के आधार पर शैतान इन्सान का दुश्मन बन गया है और चाहता है कि इन्सान भटक जाए।

कुआन में यहूदियों के हसद का भी ख़ास तौर से ज़िक्र हुआ है।

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ

كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ - (البقره - १०९)

“बहुत से अहले किताब यह चाहते हैं कि वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुम्हें कुफ़र की तरफ़ पल्टा ले जाएँ, मात्र अपने नफ़्स की हसद के कारण” (अल-बक्रा १०९) मक्का के काफ़िरों को भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस आधार पर हसद

(ईर्ष्या) था कि मक्का और ताइफ़ के सरदारों को छोड़ कर आप को क्यों नुबुव्वत के लिए चुना गया।

वह कहते थे :-

لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ مِّنَ الْقُرَيْتَيْنِ عَظِيمٍ (الزّurf : ३१)

“यह कुआन दोनों शहरों के (धनवानों) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं नाज़िल किया गया?” (अज़ ज़ुख़फ़- ३१)

यह ईर्ष्या ही की आग थी जिस ने इन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुश्मन बना दिया था। और वह नहीं चाहते थे कि ईमान लाने वालों पर उन के ख़ब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल हो।

مَا يَوْدُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ
أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ - (البقره : १०५)

“जिन लोगों ने कुफ़र (इन्कार) किया चाहे वह अहले किताब हों या मुश्रिक, नहीं चाहते कि तुम्हारे ख़ब की तरफ़ से तुम पर कोई ख़ैर (भलाई) नाज़िल हो।” (अल-बक्रा: १०५)

कुल मिला कर आयत का मनशा यह है कि एक मोमिन को जब कभी किसी हासिद (ईर्ष्या करने वाले) से मामला पेश आए तो वह उस के फ़ितनों से बचने के लिए ख़ुदा की पनाह माँगे। इस तरह वह अपने गुस्से को भी क़ाबू में रख सकेगा। और ख़ुदा की मदद का भी योग्य अधिकारी होगा।

कुआन की समाप्ति पर हासिद के शर (फितनों) से पनाह माँगने की जो हिदायत दी गई है उस से एक अहम बात की तरफ़ इशारा निकलता है और वह यह है कि ईमान लाने वाले ख़ूब समझ लें इस हिदायत की किताब को पा कर उन्हें बड़ी नेमत और बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है। इस पर उन के दुश्मनों का उन्हें ईर्ष्यालु दृष्टि (हासिदाना निगाहों) से देखना और तौहीद से, जो हिदायत की असल बुनियाद है, उन्हें फेरने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना हरगिज़ आश्चर्यजनक नहीं, अतः उन्हें चाहिए कि अपने हासिदों (ईर्ष्या करने वालों) की शरारतों और उन के षडयंत्रों की तरफ़ से चौकत्रे रहें और उन के फितनों (शर) से बचने के लिए अल्लाह का सहारा लें।

सूरह
अन्-नास

११४. अन्-नास

नाम : इस सूरह में पाँच बार “अन्नास” النَّاس (इन्सान) का लफ़्ज़ आया है। इस मुनासिबत से इस का नाम النَّاس “अन्-नास” है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि कुर्आन के ख़िलाफ़ इन्सान और जिन्न समूह के शैतानों ने लोगों के दिलों में शंका एवं संदेह उत्पन्न करने का आन्दोलन शुरू कर दिया था।

केन्द्रीय विषय :- सूरह फ़लक की तरह इस का केन्द्रीय विषय भी इस्तिआज़ा (पनाह माँगना) ही है। अलबत्ता इस में वस्वसा (भ्रम) पैदा करने एवं उस में लिप्त करने को सब से बड़ा शर (फ़ितना) क्रार दे कर उस से पनाह माँगने की शिक्षा दी गयी है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में पनाह देने वाले की सिफ़तें (गुण) बयान की गई हैं।

आयत ४ में जिस के शर से पनाह माँगी गयी है उस के एक ख़तरनाक एवं शातिर दुश्मन होने से सचेत किया गया है।

आयत ५ में बताया गया है कि उस के हमलों का असल निशाना इन्सान का दिल होता है।

आयत ६ में ख़बरदार किया गया है कि यह दुश्मन जिस तरह जिन्नों में से होता है उसी तरह इन्सानों में से भी होता है।

अहमिय्यत :- क्रमानुसार यह कुर्आन की आख़िरी सूरह है और एक पहलू से वह तौहीद की मुहाफ़िज़ (रक्षक) है तो दूसरे

पहलू से पूरे कुर्आन की। तौहीद की रक्षक इस तरह है कि इस में तौहीद के असल दुश्मन शैतान की शातिराना चालों से होशियार रहने और उस के शर (फ़ितनों) से बचने के लिए एक मात्र ख़ुदा का सहारा लेने और उस की पनाह माँगने की तल्कीन की गई है। रहा इस सूरह का पूरे कुर्आन के लिए रक्षक और पास्वान होना तो जैसा कि कुर्आन में फ़रमाया गया है:

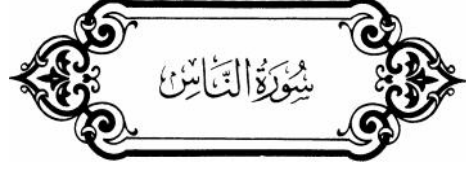
لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ
تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ-

“बातिल (असत्य) न इस के आगे से आ सकता है और न इस के पीछे से। यह उस हस्ती की ओर से अवतरित हुआ है जो हिकमत और कमालात के गुणों से परिपूर्ण है। (हाम्मीम-अस्सज्दा : ४२)

مُعَوِّذَتَيْن “मुऔव्विज़तैन” को अन्त में रख कर शैतान के प्रविष्टि की सारी राहें बन्द कर दी हैं। इस लिए अल्लाह के कलाम में शैतानी कलाम के हिल मिल जाने और बातिल (असत्य) के गड्ड मड्ड हो जाने की कोई संभावना नहीं रही। दूसरे शब्दों में यह सूरह इस बात की ज़मानत है कि यह किताब शैतान और इस प्रवृत्ति के इन्सानों की दखल अन्दाज़ियों से क्रियामत तक के लिए सुरक्षित रहेगी। इस में किसी तरह की मिलावट, या परिवर्तन संभव नहीं है। वह हमेशा के लिए अपने असली रूप में बाक़ी रहने वाली किताब है।

११४. सूरह अन्-नास

आयतें : ६



अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कहो ¹ मैं पनाह माँगता हूँ इनसानों के रब की,²

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱

2. इन्सानो के बादशाह की,³

مَلِكِ النَّاسِ ۝۲

3. इन्सानों के माबूद (पूज्य, उपास्य)की,⁴

إِلَهِ النَّاسِ ۝۳

4. वस्वसा डालने वाले ख़न्नास (छिपने वाले) के शर (फ़ितने) से,⁵

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۴

5. जो लोगों के सीनों (दिलों) में वस्वसे डालता है,⁶

الَّذِي يُوسِّسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝۵

6. जो जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी।⁷

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝۶

1. इस के प्रथम सम्बोधित (Addressee) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और लफ़्ज़ “कुल ۞ (कहो) से सूरह की शुरुआत इस बात का सबूत है कि यह अल्लाह का कलाम है, और अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जिन अलफ़ाज़ में पैग़ाम पहुँचाने का आदेश दिया था ठीक ठीक उन्हीं अलफ़ाज़ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने लोगों तक पहुँचा दिया। इन में से कोई लफ़्ज़ भी यहाँ तक कि “कुल” ۞ (कहो) का लफ़्ज़ भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अलग नहीं फ़रमाया। यह कुर्आन के शब्द शब्द अल्लाह की वह्य होने का खुला सबूत है।

2. इन्सानों का रब अर्थात् तमाम लोगों का परवरदिगार और वास्तविक मालिक। आयत का मतलब यह है कि जो ख़ुदा इन्सानों का रब है वही पनाह देने वाला भी है। उस के सिवा कोई पनाह देने वाला नहीं है। इस लिए मैं पनाह के लिए उसी की ओर पलटता हूँ और उसी की तरफ़ झुकता हूँ।

ज़बूर (भजन संहिता) में भी इस से मिलता जुलता मज़मून है :-

“हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणगत हूँ। मैं ने परमेश्वर से कहा, कि तू ही मेरा प्रभु है, तेरे सिवाए मेरी भलाई कहीं नहीं।” (भजन संहिता १६:१,२)

ध्यान रहे कि “أَعُوذُ” का शाब्दिक अर्थ पनाह लेने के हैं जिस से इस बात का पता चलता है कि बन्दा ख़ुदा से न सिर्फ़ पनाह माँगता है बल्कि व्यवहारिक रूप से उस ने स्वयं को उसी की हिफ़ाज़त में दे दिया है और उसी का सहारा ले लिया है, लेकिन चूँकि मुऔव्विज़तैन प्रार्थना की सूरतें हैं, और उर्दू मुहावरे में ऐसे मौक़े पर पनाह माँगना बोला जाता है। इस लिए हम ने लफ़्ज़ “أَعُوذُ” का अनुवाद “मैं” पनाह माँगता हूँ” किया है।

3. अर्थात् चूँकि ख़ुदा इन्सानों का वास्तविक बादशाह है इस लिए वह बन्दों की हिफ़ाज़त पर पूरी तरह सक्षम (क्रादिर) है इस लिए मैं उसी सर्वोच्च सत्ताधिकारी का सहारा लेता हूँ।

इस से स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला की सर्वोच्च सत्ता जिस तरह धरती और आकाश पर स्थापित है उसी तरह पूरे इन्सानी समूह पर भी स्थापित है। इन्सानी समूहों में से कोई समूह ऐसा नहीं जिस पर उस की सत्ता (बादशाहत) स्थापित न हो। इस लिए किसी समूह का स्वयं को उस की बादशाहत से आज़ाद समझ लेना एक ऐसी बात है जो सच्चाई के विरुद्ध है। इस से वास्तविकता तो नहीं बदलती अलबत्ता इन्सान का आचारण ग़लत हो कर रह जाता है। अर्थात् वह अपने कार्य क्षेत्र में उदंड (सरकश) बन कर रह जाता है।

4. अर्थात् वास्तव में तमाम इन्सानों का माबूद (पूज्य)

उपास्य) अल्लाह तआला ही है और यह उस के रब और बादशाह होने का तक्राज़ा भी है। यह और बात है कि लोगों ने इस वास्तविकता से मुँह मोड़ कर के अल्लाह के सिवा किसी और को माबूद बना लिया हो। इबादत (पूजा एवं उपासना) की मुस्तहिक तन्हा अल्लाह ही की हस्ती है और इस कायनात में माबूद अर्थात् इबादत के योग्य होना तन्हा उसी की सिफ़त है और वही है जिस की इबादत आसमानों में भी की जाती है और ज़मीन में भी, इस लिए इन्सानों का माबूद भी उस के सिवा कोई नहीं।

अल्लाह तआला को रब (स्वामी) “मालिक” (बादशाह) और इलाह (माबूद) मान कर जब बन्दा उस से पनाह की प्रार्थना करता है तो वह उसे कुबूल फ़रमाता है। दूसरे शब्दों में पनाह की प्रार्थना की स्वीकृति (कुबूलियत) के लिए तौहीद लाज़मी शर्त है।

5. वस्वसा का अर्थ बुरी बात और बुरे ख़्याल के हैं जो इस तरह से किसी के दिल में डाला जाए कि उसे आभास तक न हो। और वस्वसा का अर्थ है वस्वसाअन्दाज़ी करने वाला। यह शैतान की सिफ़त है और उस की दूसरी सिफ़त ख़नास है जो ख़ूनूस से है और जिस के अर्थ छिपने, गायब हो जाने और पीछे हटने के हैं। एवं इस का एक अर्थ सिकुड़ने के भी हैं।

शैतान जब इन्सान को किसी गुनाह पर आमादा करना चाहता है तो वह गुनाह के काम बड़े सुन्दर रूप में प्रस्तुत करता है और अच्छे परिणाम की आशा दिलाता है। यही चीज़ वस्वसे की सूरत में इन्सान के दिल में दाख़िल होती है और जब वह उस के असर से प्रभावित हो जाता है और उसे स्वीकार करता है तो यह ख़याल परिपक्व (पुख़्ता) हो कर इरादा और आचरण का रूप धारण कर लेता है। सब से पहली वस्वसाअन्दाज़ी शैतान ने आदम और हव्वा पर की थी।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَينَ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ وَقَا سَمُهُمَا إِنِّي لَكُمَا لِمَنَ النَّصِيحِينَ. (الاعراف: २०, २१)

“फ़िर शैतान ने उन पर वस्वसाअन्दाज़ी की ताकि उन के गुप्तांग जो उन से पोशीदा (गुप्त) रखी गई थी उन के सामने खोल दे! और कहा कि तुम्हारे रब ने तुम को इस वृक्ष से इस लिए रोका है कि तुम कहीं फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें अनन्त जीवन न प्राप्त हो जाए। उस ने क्रसम खा कर कहा कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाला (शुभचिन्तक) हूँ।” (अल्-अअराफ़ २०, २१)

यह शैतान की वस्वसे में डालने की बिलकुल खुली मिसाल है कि किस तरह शैतान शुभचिन्तक बन कर आता है और गुनाह

की ओर कैसा फ़रेब दे कर आकर्षित करता है। आदम और हव्वा के सामने यद्यपि शैतान प्रकट हो गया था, लेकिन दुनिया में उस की, वस्वसे में लिप्त करने की प्रक्रिया छिपे दुश्मन के हमले की तरह होती है इस लिए आदमी को इस की वस्वसाअन्दाजी का पता नहीं चलता। अलबत्ता अपने दिल में वह बुरे खयाल एवं बुरे विचार महसूस करने लगता है। लेकिन इन विचारों को स्वीकार करना या न करना इन्सान के अपने निर्णय एवं निश्चय पर आश्रित होता है। अगर वह पूरे होश में और अपने दुश्मन की ओर से चौकन्ना हो तो शैतानी वस्वसों का कोई असर कुबूल नहीं करता और अगर ग़ाफ़िल (अचेत) हो तो असर कुबूल करता है। और इन्सान का दिल इसी सूरत में सचेत रहता है जब कि उस में खुदा की याद बस गई हो। अल्लाह का ज़िक्र (चर्चा) इन्सान के बचाव का सब से बड़ा हथियार है। इस हथियार को इस्तेमाल कर के दिल में पैदा होने वाले वस्वसों से जब वह खुदा की पनाह माँगता है तो वस्वसे बेअसर (प्रभावहीन) हो कर रह जाते हैं और शैतान को नाकाम लौटना पड़ता है। आयत का मंशा शैतान की उन छिपी कार्रवाईयों से है जो वह इन्सान के विरुद्ध करता है, सचेत एवं सावधान करना है ताकि इन्सान अपने दुश्मन की तरफ़ से चौकन्ना रहे और अपने बचाव (रक्षा) का सामान करे।

यह तो आयत का आम (सामान्य) मफ़हूम (अर्थ) है। रहा संदर्भ के परिवेश में खुसूसी (विशेष) पहलू, तो यहाँ खास तौर से इस बात की ओर इशारा अभिप्रेत है कि ईमान लाने वालों को कुर्आन के रूप में जो हिदायत प्रदान हुई है उस के लिए सब से बड़ा खतरा अगर कोई है तो वह शैतान की वस्वसाअन्दाजी ही है। अर्थात् वह ऐसी बातें दिल में डाल सकता है जो कुर्आनी मामले में संदेह पैदा करने वाली और हिदायत के मार्ग से दूर कर देने वाली हों। विशेष रूप से तौहीद का अक़ीदा जो दीन की बुनियाद और कुर्आन की असल रुह है। शैतान की शरारती चालें उस के विरुद्ध हो सकती हैं। इस लिए इस दुश्मान की शातिराना चालों से होशियार रहने और अपने दीन और अक़ीदे कि हिफ़ाज़त का सामान करने की ज़रूरत है।

6. दिलों में वस्वसे डालना उर्दू मुहावरे के लिहाज़ से है वरना असल में लफ़्ज़ “सुदूर” इस्तेमाल हुआ है जो सदर का बहुवचन (Plural) है और जिस का अर्थ सीना है। शैतान की वस्वसाअन्दाजी करने का स्थान इन्सान का अन्दरून अर्थात् उस का सीना है। सीना दिल के लिए डयोढ़ी की हैसियत रखता है जहाँ से वस्वसे दिल में दाख़िल होते हैं। अल्लामा इब्ने कैथियम ने इस की बड़ी अच्छी व्याख्या की है।

“यह Point (बात) ग़ौर करने के क़ाबिल है कि अल्लाह

तआला ने *يُؤَسُّوسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ* “जो इन्सानों के सीनों में वस्वसे डालता है”। फ़रमाया और यह नहीं फ़रमाया कि उन के दिलों में वस्वसे डालता है। क्यों कि सीना दिल का चौखट और उस का घर है जहाँ से वारदात दाख़िल हो कर सीने में जमा होते हैं इस के बाद दिल में दाख़िल होते हैं। अतः सीना दिल के लिए डयोढ़ी का स्थान रखता है और तमाम संकल्प और निश्चय दिल से निकल कर सीने में आते हैं और फिर वहाँ से इन का वितरण (Distribution) उस के लश्करों पर की जाती है। (तफ़्सीर अलमुअव्विज़तैन इब्ने कैथियम- पृष्ठ ६६)

अर्थात् वस्वसे दिल में सीधे प्रवेश नहीं करते बल्कि सीना के माध्यम से प्रवेश करते हैं गोया शैतान के तीर सीने में घुँप जाते हैं और उन का ज़हरीला असर दिल पर उसी समय होता है जब कि दिल अचेतना के ख़राटे ले रहा हो। वरना अगर दिल अल्लाह के ज़िक्र से जागृत हो तो वह बचाव (Defence) कर लेता है। और उस के प्रभाव से सुरक्षित रहता है।

7. अर्थात् वस्वसाअन्दाजी करने वाला शैतान मात्र इब्लीस ही नहीं है बल्कि ज़िन्नो और इन्सानों में ऐसे बहुत सारे शैतान मौजूद हैं जो यह काम करते रहते हैं।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطَانِ الْإِنْسِ وَالْجِنَّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا۔ (النعام : ११२)

“और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और ज़िन्नो में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया है जो फ़रेब देने के लिए एक दूसरे के दिल में लुभावनी बातें डालते हैं” (अल्-अन्आम : ११२)

जहाँ तक ज़िन्नो के शैतानों की वस्वसाअन्दाजी की बात है, उन का छिप कर हमलावर होना बिलकुल स्पष्ट है। रहे इन्सानों के शैतान तो वह भी जब वस्वसा अन्दाजी करते हैं तो अपने वास्तविक शैतान होने की हैसियत को छिपा कर ही करते हैं। अतः वह इन्सान के शुभचिन्तक बन कर प्रकट होते हैं क्यों कि वह जानते हैं कि उन का कोई विचार और उन का कोई सुझाव किसी के लिए उसी समय मानने योग्य हो सकता है जब कि एक उपदेशक और एक शुभचिन्तक की हैसियत से वह सामने आएँ। अगर वह अपना असली रूप अर्थात् उपद्रवी (शरपसन्द) की हैसियत से सामने आएँ तो कोई व्यक्ति भी उन की ओर ध्यान देने के लिए तैयार न होगा।

यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि शर (फ़ितना) फ़ैलाने के बारे में असल काम ज़िन्न व शैतानों का है जिन का सरदार इब्लीस है। रहे इन्सानी समूह के शैतान तो वह इन ही के अधीन हैं।

शब्द सूचि
(Index)

शब्द सूचि (Index)

(पृष्ठ नं.)

अल्लाह

- एक मात्र पूज्य 140, 141, 188, 189, 1091, 1092,
- की मदद 2, 3
- प्रभुत्वशाली है 2, 10, 30, 42, 48, 114, 130, 140, 150, 162, 226, 246, 254, 288, 356, 416, 428, 466, 478, 622, 636, 658, 668, 670, 698, 699, 702, 746,
- दयावान (रहमत वाला) 2, 4, 48, 108, 114, 166, 276, 316, 347, 356, 410, 430, 475, 488, 498
- की आयतों को झुठलाने का अंजाम 8, 9
- की तस्बीह 10, 11
- की प्रशंसा 10, 11, 424, 712
- वाहीद और कहहार 246, 247
- का ज़िन्दा को मुर्दा से निकालना 10, 11
- हिकमत वाला (तत्त्वदर्शी) 26, 30, 42, 60, 254, 332, 416, 424, 428, 466, 479, 492, 526, 874, 877, 910
- का रोज़ी को तंग और कुशादा करना 16, 17
- आसमान और ज़मीन की समस्त वस्तुओं का मालिक 244, 344, 880
- अत्यंत सूक्ष्मदर्शी 38, 752, 753
- बाख़बर 38, 39, 44, 150, 360, 498, 624, 644, 714, 750, 1048, 1050,
- प्रशंसा 42, 43, 44, 114, 222, 223, 424, 940, 1094, 1095
- बेनियाज़ 42, 258
- सुनने और देखने वाला 42, 43, 150, 292, 306, 328, 360, 488, 512, 644, 940, 1028
- बुलन्द और बरतर 42, 43, 124, 290, 291, 344, 784, 785, 1102, 1103
- के लिए आज्ञा पालन को ख़ालिस करना 44, 45
- की अवज्ञा से बचने की ताकीद 38
- दानशील 236
- राजसिंहासन (अर्श) पर बुलन्द 48, 49
- के सिवा कोई काम बनाने वाला नहीं 346, 360
- का कामों की तदबीर करना 48, 49
- माफ़ करने वाला 108, 276, 288, 289, 328, 332, 344, 356, 422, 474, 488, 498, 636, 644
- बख़्शने वाला 114, 150, 644, 676, 702, 741, 746, 796, 820, 994
- ख़ूबीयों वाला 114, 332, 360, 361
- बेहतरीन रोज़ी देने वाला 76, 132, 133, 532, 700
- सृष्टा 140, 272, 274, 278, 306, 346, 374, 398, 998, 999, 1024
- मनुष्य को दोबारा पैदा करने पर क़ादिर 184, 185
- ही रब है 144, 262, 306, 307, 308, 402, 422, 932, 933, 956, 957, 958, 1001, 1012, 1038, 1040, 1044, 1048, 1068
- ही की बादशाही है 144, 145, 622, 668, 670, 698, 712, 746
- के सिवा सब बे इख़्तियार 144, 145
- के सिवा कोई पुकार सुनने वाला नहीं 146, 147
- क़द्रदान (गुनग्राहक) 150, 151, 716
- ग़ैब का जानने वाला 154
- हलीम और ग़फ़ूर 154, 155
- के हाथों की तावील करना सही नहीं 185
- की तरफ़ लौटाये जायेंगे 184, 185, 966, 967
- रब्बुल इज़ज़त 222, 223
- का बेटा होने की ग़लत धारणा 254, 255, 274, 398, 399, 1102
- शासक 230, 258, 368, 408, 422, 474
- के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं 254, 259, 288, 316, 317, 424, 442, 668, 670, 698
- की नाशुक्की 259
- का हमसर ठहराने का मतलब 259
- ज्ञान वाला 48, 60, 114, 172, 288, 416, 488, 498, 492, 498

--- दिलों के भेद जानने वाला	356	--- सरगोशियों को सुनता है	648
--- तौबा कुबूल करने वाला	288, 356, 1094, 1096	--- कुदूस	668, 670
--- सज़ा देने वाला	288, 292, 332, 658	--- सरासर सलामती	668, 670
----- फ़ज़ल वाला	288, 289, 640, 698	--- अमन देने वाला	668, 670
--- अर्श (राज़ सिंहासन) का मालिक	290, 398, 908, 909	--- हिफ़ाज़त करने वाला	668, 670
--- शक्तिशाली	292, 356, 532, 636, 654	--- ज़ब्बार (ज़बरदस्त)	668, 671
--- की आयतों में किसी दलील के बग़ैर झगड़ना	288, 299, 306	--- बड़ाई वाला	668, 671
--- ज़िन्दगी और मौत देने वाला	308	--- पाक है उन चीज़ों से जिन को लोग उस का शरीक ठहराते हैं	668, 671
रहमान	316, 380, 398, 512, 588, 668, 754, 880	--- पैदा करने वाला	668, 671
--- की योजना	318, 958, 959	--- आविष्कार करने वाला	668, 671
--- को अपना रब कहने का मतलब	325	--- को भूल जाने का मतलब	669
--- की आयतों में टेढ़ निकालने का अर्थ	330	--- ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला	716
--- जुल्म करनेवाला नहीं	336, 508, 509	--- बड़ा ही बरकत वाला	751
--- ही को क्रियामत की घड़ी का ज्ञान है	339	--- के आसमान में होने का मतलब	751
--- वह्य के माध्यम से कलाम करता है	370	--- पूरबों एवं पश्चिमों का रब	188, 189, 788, 814
--- आसमान व ज़मीन के लश्क़ों का मालिक	466	--- उसी का हो रहना	814, 851
--- इन्सान की शह रग से भी अधिक करीब	504, 505	--- अल्लाह का दर्शन क्रियामत के दिन	842, 843,
--- और उस के रसूल से आगे बढ़ने की मनाही	488, 489	--- के समक्ष झुकना	868, 869
--- से बिन देखे डरना	512, 513	--- के नाम का ज़िक्र करना	856, 857, 956, 959
--- के साथ पूज्य न ठहराओ	532	--- की बड़ाई बयान करना	824, 825
--- इल्म और हिकमत वाला	528, 622, 668, 672, 698, 700, 732, 856	--- मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर	846, 847
--- बलिष्ठ है	532, 534	--- की कुदरत	871, 877, 886, 899, 910, 950
--- मोहसिन	542	--- की रूबूबियत	871, 874, 877, 886, 885, 957
--- रहीम	508, 624, 642, 668, 682, 716, 820	--- की महानता और प्रताप	944, 945
--- शब्द रहमान की व्याख्या	589	--- का राज्य और शासन सत्ता	184, 909, 940, 995, 1021
--- के कमालात	598, 593	--- का यकता होना	1102, 1103
--- जलाल और बुजुर्गी वाला	602, 603	--- इन्सानों का रब	1116, 1117
--- रब्बुल आलमीन	614, 908, 922, 923	--- इन्सानों का बादशाह	1116, 1117
--- सारी चीज़ें अल्लाह की तस्बीह करती हैं	622, 658, 668, 686, 698, 712	--- इन्सानों का पूज्य	1102, 1104
--- ज़िन्दा करने और मारनेवाला	622	--- किसी की औलाद नहीं	1102, 1105
--- ममतामयी	624, 662	--- की बराबरी का नहीं	1102, 1105
--- सब देखता है	622, 674, 712	--- आश्रय पनाह की चट्टान	1102, 1104
--- अव्वल और आख़िर, ज़ाहिर और बातिन	622	--- समद	1104
--- हर चीज़ पर सामर्थ्यवान	622, 712, 720, 740, 746, 752	--- पनाह देने वाला	1108, 1109
--- साक्षी (शाहिद)	644	--- सुबह का रब	1108, 1109
		--- के हाथ में सारे अधिकार	881, 882
		--- सर्वोच्च रब	956, 957, 1002

--- का करीम होना	1002	--- तख्वीर की घटना	76, 77
--- जबरदस्त	1026	--- को संबोधित कर के अहकाम	76, 78
--- मुहब्बत करने वाला	944, 945	--- अहले-बैत में शामिल	81, 82
--- के नाम	856	--- से परदे के पीछे से माँगना	100, 101
--- की मअरिफ़त	957	अनुपालन (देखिए इताअत)	
--- का फ़रिश्तों के संग आना	974, 976	अब्रहा	1069, 1070
--- अहकमुल हाकिमीन	1018, 1022	अबू जहल	1029
--- हिसाब लेने वाला	966, 967	अबू तालिब	1008
--- की हुज्जत	1091	अबू लहब	1098, 1099, 1100
--- के वफ़ादार बन्दे	893	अब्दुलमुत्तलिब	1008, 1069, 1076, 1099
--- के समक्ष खड़े होने से डरना	888, 889	अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम	897
--- के समक्ष जवाबदेही की कल्पना	893	अभागा (बदबख़्त)	944, 1002, 1003, 1004
अल्लाह का घर (देखिए बैतुल्लाह)		अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिलमुन्कर	38, 39
अल्लाह का डर	750, 751, 1038, 1040	अय्यूब (अलैहिस्सलाम)	240, 241
अल्लाह का ज़िफ़		--- का तकलीफ़ों में मुत्तिला होना	240, 241
--- अधिकता के साथ करने वाला	80, 83	--- के आरोग्य के लिए ठंडे पानी का स्रोत	240, 241
--- अल्लाह को अधिकता के साथ याद करने की हिदायत	86, 700	--- पर अल्लाह की बख़्शिशा	240, 241
--- के प्रभाव अन्तर्मन पर	91	--- के लिए क्रसम को पूरा करने में ख़ास रियायत	240, 241
--- उस की तरफ़ से दिल सख़्त	264, 265	--- रुजू करने वाले	240, 241
--- उस से बेपरवाह होने का नतीजा	384, 386	--- की बीमारी (रोग) के बारे में विचित्र कथाएँ	241
--- अल्लाह की अदालत	377, 880, 881, 906, 908, 922, 923, 925, 945	अयामुल्लाह से मुराद	419
--- अल्लाह की मदद	1095	अर्श- इलाही (अल्लाह का राज सिंहासन)	945
--- अल्लाह की रज़ा	978, 979, 1038, 1040	क्रियामत के दिन आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे	766, 767
अल्लाह की राह में ख़र्च (देखिए इन्फ़ाक़)		अल-यसअ (अलैहिस्सलाम)	244
अल्लाह की सीमाएँ (देखिए हुदुदे-इलाह)		अस्मा-ए-हुस्ना	
--- अंतर्निक्ष	909, 933, 949	--- के बारे में कमज़ोर हदीस	671
अक़ीदा		अस्हाबुल उख़्दूद (खंदक वाले)	940, 941
--- और इबादत का मामला ज्ञान पर आधारित होना चाहिए न कि अन्दाज़ों पर	381	अस्हाबुल क्रियः (बस्ती वाले का क्रिसा)	166, 167, 170, 171
--- त्रीश्वरवाद का अक़ीदा	1103	अहज़ाब की जंग	64, 65, 66, 67, 68, 69, 72, 73, 74
--- आवागमन का अक़ीदा	1040	अहले किताब	1038, 1039, 1040
अज़ाब		--- में लड़ाई झगड़ा	1038, 1040
--- देख लेने के बाद ईमान लाना लाभदायक नहीं	312, 313	--- अतिशयोक्ति का शिकार	1103
--- लूत की जाति पर	528, 529, 582, 583, 774, 775	--- यहूदियों का उज़ैर को ख़ुदा का बेटा बताना	1104
--- नूह की जाति पर	530, 531, 563, 566, 569	--- ईसाईयों का मसीह को ख़ुदा का बेटा ठहराना	1104, 1105
--- फ़िरऔनियों पर	582		
अज़्वाज मुतहहरात	60, 61, 97, 98	आ	
		आद	298, 299, 436, 504, 970, 972
		--- का ठिकाना अहकाफ़	436, 437

--- का अन्जाम	504, 505, 562, 576, 658, 659	इन्सान	
आमना	1008	--- की पैदाइश मिट्टी से	10, 11, 48, 51, 142, 592, 593
आमाल-नामा (क्रम पत्र)	921, 922, 923, 924, 927	--- कमजोर हालत में पैदा किया गया	26, 27
--- आसार (सब कुछ लिखित रूप में)	64, 65	--- की नस्ल का सिलसिला	48, 49
--- तैयार करने वाले	914, 915	--- में रुह का फूँका जाना	50, 51
--- की बोलती फ़िल्म	916, 917	--- के अमानत का भार उठाने का मतलब	111
--- रेकार्ड आफ़िस में सुरक्षित	924, 926	--- में रंगों की भिन्नता	150, 151
--- बाएँ हाथ में	776, 777, 932, 934, 935	--- ज़मीन पर ख़लीफ़ा	154
--- दाएँ हाथ में	776, 777, 932, 934	--- कुर्आन में इन्सान को अल्लाह का ख़लीफ़ा कहीं नहीं कहा गया	155
आयात		--- अल्लाह की सृजन शक्ति का शाहकार	249
--- का इन्कार करने वाले	876, 877	--- की पैदाइश तीन अंधकारों के बीच	258, 259
आला का अर्थ	590	--- की पैदाइश के मरहले	308, 309
आसमान	876, 878, 888, 892, 893, 906, 940, 948, 966	--- मानव समूह का एकात्व तथा जातियाँ और क़बीले	495, 498
--- आसमानों और ज़मीन की पैदाइश उद्देश्यपूर्ण	2, 48, 49, 622	--- श्रेष्ठता का आधार	496, 498
--- सात आसमान बनाए	318, 732, 733, 746, 796, 872, 873	--- मनुष्य और मनुष्य के बीच रंग, वंश, जाति और देश के आधार पर विभाजन	499
--- आसमानों और ज़मीन का तत्व पदार्थ	319	--- ऊँच नीच की ग़लत धारणा	499
--- की विशालता	530, 531	--- की पैदाइश का मक़सद	530, 531 850, 851
--- को बुलन्द किया	588, 589	--- के लिए वही है जिस की उस ने कोशिश की	562, 563, 998, 999
--- आसमान और ज़मीन की सीमाओं से निकल न जा सकने का मतलब	597	--- को बोलना सिखाया	588, 589
--- आसमानों और ज़मीन की संरचना सत्य के उद्देश्य के लिए	712, 713	--- बेसब्रा पैदा किया गया है	786, 787
--- विज्ञान की पहुँच पहले आसमान तक भी नहीं	747	--- अपने ऊपर हुज्जत	842, 843
--- सरकश शैतानों से सुरक्षित	188, 189	--- को क्या यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?	846, 847
--- की रचना	872, 888, 889, 890	--- कोई उल्लेखनीय चीज़ न था	850, 851
--- का फटना	914, 932, 933	--- की पैदाइश तुच्छ पानी से	846, 847, 850, 851, 864, 865
--- क्या विज्ञान के अनुसार आसमान का अस्तित्व नहीं	933	--- का मशक़क़त की हालत में पैदा होना	982, 983
--- की क़सम खाने का मतलब	941, 991	--- का स्वभाव	1049
--- की ख़ाल खींच ली जाएगी	904	--- मशक़क़तों और तक़लीफ़ों में मनुष्य की महानता का राज़	982, 983
--- मात्र आखों की सीमा नहीं	933	--- को बेहतरीन साख़्त पर पैदा करने का मतलब	1018, 1020
--- वैज्ञानिक कायनात को मापने में असमर्थ	933	--- की गिरावट की मिसाल	1020, 1021
(इ)		--- की उद्दंडता	1024, 1026
इंजील बरनाबास		--- की ज़िन्दगी के लिए ईश्वर की योजना	958, 959
--- विशसनीय नहीं	686, 688	--- को नेकी और बदी की समझ	992
--- में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्यवाणियाँ	689	--- की पैदाइश	896, 897, 914, 915, 948,
इन्शाअल्लाह न कहने का नतीजा	762, 763		

956, 1026	---	की तरफ़ से बहुदेववाद का विरोध	202, 203
--- का अपने ख की तरफ़ धीरे धीरे जाना	932, 933	--- का तारों पर नज़र डालना	202, 203
--- के सफ़र की आख़िरी मन्ज़िल	934	--- की बुत शिकनी	202, 203
--- आकस्मिक घटना नहीं	957	--- दहकती आग में सलामत रहे	202
--- का पस्ती के आख़िरी गढ़े में गिरना	1018, 1021	--- का बेटे को ज़बह करने का ख़्वाब	206, 207
--- का शिखर को पहुँचना	984, 985	--- कार्य क्षमता और दृष्टि रखने वाले	240, 245
--- की कोशिश	998, 999	--- आख़िरत के लिए ख़ास	244, 245
--- घाटे में	1060	--- की बहुदेववाद से बेज़ारी	528, 529
इच्छाओं को आराध्य बनाना	420, 421	--- के पास फ़रिशतों का मेहमान बन कर आना	528, 529
इताअत		---	
--- अल्लाह की और उस के रसूल की करने की ताकीद	458, 459, 650, 652, 714	--- ने अपना कहना पूरा किया	562, 563
इद्त		--- के सहीफ़े	562, 563
--- शुमार करने की ताकीद	720, 721	--- की नस्ल में नुबुव्वत और किताब	636, 637
--- के दौरान बीवी को घर से न निकालना	720, 723	--- और उन के साथियों में बेहतरीन नमूना	676, 677
--- उन औरतों की इद्त जिन्हें मासिक धर्म न आ रहा हो या आना बन्द हो चुका हो	726, 727	--- की अपनी जाति से अलग होने का एलान	1092
--- गर्भवती की इद्त	726, 727	इब्लीस	124, 125, 248, 249
--- में रिहाइश और ख़र्च	726, 728	इरम	970, 972
--- में औरतों को तंग न करो	726, 728	इल्य़ास (अलैहिस्सलाम)	214, 215
--- तीसरी बार तलाक़ देने की सूरत में भी रहने का ठिकाना और ख़र्च देना होगा	729	इलाह का अर्थ	670
--- फ़ातिमा बिनत कैस की हदीस हज़रत उमर ने स्वीकार नहीं की	729	इल्म (ज्ञान)	1026
इनाबत	512, 513	--- से तात्पर्य	115, 260
इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च)	150, 151, 176, 177, 364, 365, 460, 461	--- रखने वाले ही अल्लाह से डरते हैं	150, 151
--- पर उभारना	708, 710, 716, 622, 623	--- रखने वाले और जो इल्म नहीं रखते, एक जैसे नहीं	258, 260
--- क़र्ज़े-हसन	624	---	
इबादत (अल्लाह की)	1012, 1014, 1038, 1040, 1074, 1075, 1090	--- क़लम के द्वारा	1024, 1026
--- और इताअत का अन्तर	179, 180, 533, 534	--- क़लम का महत्व	1026
--- दीन को ख़ालिस करते हुए	254, 255	--- इल्म की हक़ीक़त	1026
--- रात की घड़ियों में	258, 259, 524, 525	--- इल्लिय्यीन	926, 927
--- अल्लाह ही के लिए	280, 281	--- इस्तिफ़ार (क्षमा याचना)	1094, 1095
--- अल्लाह की इबादत से उदंडता करने वाले	306, 307	--- की हिदायत	306, 307, 452, 454, 820, 822
--- का मतलब	533	---	
--- में लग जाना	1014	--- नबी सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम का इस्तिफ़ार	454
--- का स्थान	1014	--- अरूणोदय के समय में	524, 525
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)	960, 961, 1020, 1092	इस्माईल (अलैहिस्सलाम)	983, 1076
--- का शुद्ध मन	202, 203	--- ही ज़बह किये गए थे न कि इस्हाक़	206, 207
		--- कुर्बानी की असल जगह	268
		--- नेक बन्दे	244, 245
		इस्लाम	
		--- स्वाभाविक एवं प्राकृतिक धर्म	12, 13
		--- दीन-इस्लाम में विभेद के बीज बोना	12, 13
		--- दीन-क़ैथियम	20, 22

--- के लिए सीना का खुल जाना	264, 265	ईसा इब्ने मरयम	392, 393, 636, 637
--- और ईमान का अन्तर	498, 499	--- क्रियामत की दलील	392, 393
--- मात्र दिखावे का इस्लाम	500	--- की दअवत रब की बन्दगी की दअवत थी	392, 393
--- की सामाजिक व्यवस्था खराबियों से पाक	499	--- को इन्जील	636, 637
--- की तरफ़ दअवत	692, 693	--- अपने बाद के रसूल की खुशखबरी देने वाले	686, 687
--- को सारे दीनों पर ग़ालिब करना	692	--- के हवारी	692, 694, 695
--- सत्य धर्म	807	--- के अनुयायी अंत में ग़ालिब हुए	692, 693
--- पैदाइश से अंत तक का दीन	899	--- का सबक़	1010, 1020
--- को अफ़्रीम कहने वाले	929	--- के बयानात	1080, 1081
--- का ग़लबा	1096	--- का उलमा को झंझोड़ना	1080
इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम)	210, 211	ईसाले सवाब	
--- कार्य क्षमता और दृष्टि रखने वाले	240, 242	--- एक ग़लत तरीक़े का प्रचलन	337
--- आख़िरत के लिए ख़ालिस	240, 242	--- का तरीक़ा साबित नहीं	337, 338
--- विद्वान सुपुत्र	244, 245	--- हज्ज (दूसरे की खातिर) करना एक ख़ास रियायत है	338
(ई)		--- का तरीक़ा सहाबा में प्रचलित न था	338
ईमान	466	--- दुआ का उदाहरण ईसाले सवाब के लिए सही नहीं	338
--- वही मान्य है जो दिल में हो	498, 499	--- के सिलसिले की रिवायतें	338
--- लाने की दअवत	622, 623	--- इबादत के मामलों में अन्दाज़ा व्यक्त करना तथा इज़हार जायज़ नहीं	338
ईमान वाले	928, 986, 1062, 1060, 1096	--- की रस्म और बिदअतें	338, 563
--- की सहायता	24, 25	--- का दावा बिना दलील	563
--- के गुण	80, 364, 365, 372	---- के पक्ष में प्रस्तुत की जाने वाली हदीसों का मतलब	564, 565
--- को फ़ैसले का हक़ नहीं रहता जब की अल्लाह और उस का रसूल किसी मामले में फ़ैसला कर दे	80, 83	--- कुर्आन ख़वानी की रस्म	565
--- को कष्ट देना	104, 105	(उ)	
--- के लिए क्षमा	142	उक़द (ग्रहें)	
--- के लिए इनाम	316, 317	--- ग्रहों से तात्पर्य	1110
--- ईमान पर दृढ़ता से जमने वालों पर फ़रिशतों का अवतरण	324, 325	--- शैतान का ग्रह लगाना	1110
--- की बुराइयाँ दूर कर दी जाती हैं	446, 447	उतबा	897
--- ईमान पर जमना	430	उहंङता (सरकशी)	878, 888, 892, 993, 995, 1024, 1026, 1027, 1029
--- की बातिनी खुसुसियत	493	उपनिषद	1105
--- के लिए न समाप्त होने वाला बदला	936, 937	उबैई बिन कअब	1037
--- मर्दों और औरतों पर जुल्म	940, 941	उमैय्या बिन ख़लफ़	897
--- का नेक अन्जाम	964	उम्मी	
--- ईमान के साथ अच्छे कर्म	1061	--- उम्मियों में रसूल	698, 699
--- का असल लक्ष्य	1096	उम्मुल किताब	374, 375
ईर्ष्या	1112, 1113	उम्मे-जमील (अबू लहब की पत्नी)	1098, 1100
--- का मतलब		--- को हम्मा लतल हतब कहने का मतलब	1100
--- शैतान की ईर्ष्या	1113	--- की गर्दन में जवाहरात का हार	1100
--- यहूदियों की ईर्ष्या	1113	--- की गर्दन में आग की मज़बूत रस्सी	1100
--- मक्का के काफ़िरों की ईर्ष्या	1113		

--- के अन्जाम से इबरत	1100	336, 419, 420, 525, 526
(ऊ)		
ऊँट	966, 967	--- कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा 146, 147
--- ऊँटनी	994, 995	--- सुकर्मियों और कुकर्मियों का अन्जाम समान नहीं हो सकता 236, 237, 764, 765
ऊपरी जगत (आलमे-बाला)	877	--- शरीर के अंगों का गवाही देना 322, 323
(ए)		
एहराम		--- पर हवाओं के साक्ष्य 520, 521, 560, 561
--- में बाल मुँडवाना और कतरवाना	482, 483	--- का विश्वास पैदा करने वाली चीजें 779
एहसान		--- पर भर्त्सना करने वाली आत्मा की गवाही 838, 839
--- अधिक प्राप्त करने के उद्देश्य से न करना	824, 825	--- से बचने के लिए कायनात की वैज्ञानिक व्याख्या 916
--- निःस्वार्थ हो कर सच्चे मन से करना	826	--- तयशुदा बात 953
(ऐ)		
--- ऐका वाले	230, 504	--- की कल्पना 1020
ऐटामिक उर्जा	1049	--- बदले के बारे में हिन्दु मत और बौद्धमता की धारणा 873
ऐब निकालना	1065	--- का इन्कार 914, 1078, 1079
(क)		
कन्जूसी	998, 999, 1000, 1003	--- के निश्चित रूप से सामने आने पर इतिहास की गवाही 973
--- की भर्त्सना	632, 634	--- पर विश्वास रखने की दअवत 1020
क्रत्ले-औलाद	904, 906	--- पर ऐतिहासिक स्थलों से तर्क प्रस्तुति 1021
--- के तरीके	683	--- भावनाएँ, इरादे, नीयतें देखी जाएंगी 1050
--- फैमिली प्लानिंग	906	क्रसम 90, 998, 1006, 1048, 1060
क्रब्र	898, 1048	--- गवाही के अर्थ में 521
--- के अज़ाब की हक़ीक़त	303, 304, 459	--- खाने का मतलब 909
--- में दफ़न करना प्राकृतिक नियम है	899	कहनी और करनी में अन्तर्विरोध 686, 687
--- क्रब्रें उखेड़ दी जाएंगी	914, 915	कहानत 909, 911
क्रब्र परस्ती	255	काफ़िर 880, 900, 901, 920, 936, 944, 952, 953, 966, 1090, 1091
--- क्रब्र परस्तों के अक़ीदे का खण्डन	24, 25	--- अल्लाह के समक्ष किस हाल में खड़े होंगे 130, 131
--- मुर्दे नहीं सुनते	24, 25	--- काफ़िरों की पराजय की भविष्यवाणी 230, 231
--- औलिया और पीरों को मदद के लिए पुकारना	429	--- का अन्जाम 294, 295, 310, 311, 324, 325, 368, 369, 508, 509
कर्म	916	--- जहन्नमी 288, 289
--- का रेकार्ड	880, 881, 906, 913, 916, 1045	--- को क्षमा नहीं किया जाएगा 324, 325
--- का पार्सल	915	--- काफ़िरों का जहन्नम में अपने पेशवाओं और लीडरों पर लानत भेजना 325
--- क्रियामत के दिन व्यवहारिक जीवन का दृश्य प्रस्तुत किया जाना	1044, 1045	--- अगर यह संभावना न होती कि लोग एक ही तरीके पर चल पड़ेंगे तो काफ़िरों को सोने से माला माल कर दिया जाता 384, 385, 386
--- ज़िन्दगी की बोलती फ़िल्म	881	--- के सब कर्म नष्ट कर दिए जाएंगे 446
--- अच्छे कर्म	915	--- काफ़िरों की खसलतें 508, 509
--- अच्छे कर्मों की हक़ीक़त	1061	--- काफ़िरों के लिए तबाही 532, 534
कर्म पत्र (देखिए आमालनामा)		--- के लिए दुखदायिनी यातना 648, 649
कर्म फल (इनाम और दण्ड)	272, 273, 280, 292,	--- के लिए जहन्नम 746, 850, 851

--- क्रियामत के दिन सज्दा न कर सकेंगे	766, 767	--- के दिन उठाए जाएंगे	714, 715, 750, 751
क्रारून	294	--- इकट्ठा करने का दिन	714, 715
कायनात		--- घाटे का दिन	774, 775
--- के बारे में अनीश्वरवादियों की इस सोच का खण्डन कि वह बिना सृष्टा के अस्तित्व में आई है।	141	--- सच हो कर रहने वाली	774, 775
--- की पैदाइश बामक्रसद	254, 255, 410, 411, 420, 428	--- के दिन पेशी	776, 777
--- की योजना	320	--- के दिन मुर्दे कब्रों से तेजी के साथ निकलेंगे	790, 791
--- निर्धारित अवाधिक के लिए	428	--- के दिन को पीछे छोड़ना	856, 857
--- की सृष्टि	999	--- घटित होने वाला	860, 861
किताब का वारिस किन लोगों को बनाया गया	150	--- फैसले का दिन	864, 865, 868
किदार	995	--- के दिन सब को जमा किया जाएगा	864, 865
किरामन कातिबीन (फ़रिश्ते)	914, 916, 917, 921	--- एक बड़ी ख़बर	872, 873, 888, 911
क्रियामत	838, 839, 881, 882, 883, 886, 893, 905, 909, 910, 915, 922, 923, 974, 976, 1045	--- के बारे में मतभेद करने वाले	871, 872
--- के दिन मुजरिम निराश होंगे	8, 9	--- का नज़्शा	871, 873, 881
--- की घड़ी का हुक्म	44, 45, 104, 336, 338, 398, 883, 892, 893	--- बदले के दिन	877, 878, 881, 914
--- के दिन विवादित बातों का फैसला	56, 57	--- कायनात का सब से बड़ा हंगामा	893, 895
--- की घड़ी निकट	104, 106, 354, 355	--- वादे का दिन	940, 941
--- निश्चित रूप से आएगी	114, 115	--- से ख़बरदार करना	895
--- के दिन मुर्दों को जिला उठाया जाएगा	142, 143, 144, 184, 185,	--- का पहला झटका	886, 905, 906
--- का वादा	176, 177, 424, 790	--- के दिन समय व स्थान के पैमाने बदल जाएंगे	909
--- का सूर	178, 179, 280, 281, 504, 505, 776, 777, 824	--- कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़	900
--- बहुत बड़ी ख़बर	246, 247	--- के दिन आसमान का फट जाना	871
--- के दिन घाटे में रहने वाले	262, 263	--- छा जाने वाली आफ़त	964, 965
--- के दिन अल्लाह के समक्ष मुक़दमा	268, 269, 292, 293	--- ज़बरदस्त ज़लज़ला	976, 1043, 1045
--- के दिन हसरत	278, 279	--- मैदाने-हश्र	923
--- के अहवाल	280, 281, 292, 422, 423	--- दोबारा उठाया जाना	874
--- यक़ीनी	306	--- के दिन मौजूदा सोसाइटी का ढाँचा चकना चूर	906
--- का धुँआ	402, 403	--- के दिन भेद खुल जाएंगे	1050
--- के दिन हर ग़िरोह घुटनों के बल गिरा होगा	422, 423	--- खड़खड़ाने वाली आफ़त	1052, 1053
--- हश्र की आवाज़	516, 517	--- के दिन लोगों का अलग अलग निकलना	1053
--- की निशानियाँ जाहीर हो चुकी हैं	452, 453	--- का इन्कार करने वालों की आशंकाएँ	886
--- की हौलनाकी	538, 539, 572, 606, 607, 676, 677, 785, 818, 838, 839, 874, 877, 886, 895, 901, 906, 913	--- के दिन ज़वाबदेही	1056, 1057
		--- दुनिया की समाप्ति और विज्ञान	873
		--- नये जगत की कल्पना अंधविश्वास नहीं	873
		--- के दिन अपराधियों का हाल	1100
		क्रियामें लैल (रातों को उठ कर इबादत)	
		--- का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म	814, 815, 856, 857
		--- रात को उठना नफ़्स को दबाने वाला	814, 815
		--- में रियायत का हुक्म	820, 821
		कुकर्मी	914, 919, 924
		कुफ़्र	966, 967, 1038, 1040

--- का वबाल	20, 154	अन्दर और बाहर ज़ाहिर होंगी	340, 341, 342
--- करने वालों के लिए सख्त अज़ाब	142, 143	--- मौजूदा खोजों और वैज्ञानिक अनुसंधान एवं आविष्कार से	
--- से तात्पर्य	1039, 1040, 1041	कुर्आन की सत्यता और अधिक स्पष्ट हो रही है	342
कुरैश	1073, 1074, 1075	--- इश्वीय तुला	355
--- ने अब्रह्म का मुक़ाबला क्यों नहीं किया	1069	--- को रूह कहा गया है	370, 371
--- को सफ़र से लगाव	1074, 1075	--- नूर है	370, 372
--- को अमन और शान्ति	1074, 1075	--- रौशन किताब	374, 375, 402
--- का वंश क्रम	1076	--- बुलन्द मर्तबा	374
कुर्आन (किताबे इलाही)	896, 910, 936, 944, 945	--- का अवतरण मुबारक रात में	402, 403, 1032, 1033,
--- में समझाया बुझाया गया है	26	--- का एक फ़रमान	402, 403
--- हिकमत भरी (तत्त्वपूर्ण) किताब	30, 31, 162, 374	--- नसीहत हासिल करने के लिए आसान बना दिया गया है	412, 413, 580, 581
--- हिदायत और रहमत	30, 31		
--- रब्बुल आलमीन की तरफ़ से	48, 49, 254, 255, 274, 366, 367, 332, 354, 416, 428, 780, 781	--- पर चिंतन न करना	456, 457
--- में शक पैदा करने वाली रिवायतें	58	--- कुर्आन मजीद	502, 503
--- शाज़ (कोई कोई) क्रिअतों का हुक्म	59	--- के द्वारा याददेहानी	516, 526
--- में मनगढ़न्त होने का काफ़िरों का इल्ज़ाम	134	--- को अर्थ और भावार्थ के साथ प्रस्तुत करना	517
--- की तिलावत करने वाले	48, 49	--- का विरोधियों को चैलेन्ज कि इस जैसा कलाम लाएँ	542, 543
--- हक़ है	150, 151, 254, 255	--- के मायने और मतलब को समझने की कोशिश न करना	577
--- रिसालत का स्पष्ट सबूत	163	--- ज़िक्र (नसीहत) को हिफ़ज़ के भावार्थ में लेना	578
--- याददेहानी से भरा हुआ	226, 227, 240	--- रहमान ने सिखाया	588, 589
--- मुबारक किताब	236, 238	--- इज़्जत वाला	614, 615
--- में चिन्तन मनन ज़रूरी	236, 237	--- “इस को नहीं छूते मगर पाकीज़ा” का मतलब	616
--- दुनिया वालों के लिए याददेहानी	250, 251, 818, 819, 908, 911	--- को बग़ैर वुजू छूने का मसला	616, 617
--- के अच्छे अर्थों का अनुसरण करना	264, 265	--- के प्रभाव	668, 670
--- बेहतरीन कलाम	264, 265	--- किसी शायर, काहिन का कलाम नहीं	780, 781
--- की तासीर	264, 265	--- दुनिया वालों के लिए नसीहत	770, 771, 830
--- अरबी कुर्आन	268, 269, 316, 317	--- नसीहत है	780, 834, 856
--- का अध्ययन किस तरह करना चाहिए	319	--- का अवतरण जिन्न और इन्सान दोनों के लिए	804
--- को सुनने से मना करने वाले	324, 325	--- को तरतील के साथ पढ़ने का हुक्म और उस का मतलब	814, 815
--- ज़बरदस्त किताब	332, 333	--- का मोज़ा होना इस की शिक्षा से प्रकट है	826
--- असत्य न इस के सामने से आ सकता है और न पीछे से	332, 333	--- बड़ी निशानियों में से	831
--- हिदायत ईमान लाने वालों के लिए	332, 333	--- ख़बरदार करने वाला	825, 826
--- शिफ़ा ईमान लाने वालों के लिए	332, 333	--- को जमा करा देना अल्लाह के ज़िम्मे	842, 843
--- अरबी उचितत भाषा	333	--- मुस्हफ़ की तरतीब अल्लाह की तरफ़ से है	843
--- की सच्चाई की निशानियाँ बहुत जल्द स्वयं आदमी के		--- अवतरण क्रम से संकलन मात्र ख़ियाली बात है	843
		--- का अवतरण एक क्रम से होता रहा	856

--- जमा कुर्आन और खुलफ़ा-ए-राशिदीन	843	ख़ैबर विजय	1080
--- अल्लाह की आख़िरी किताब	867	ख़ैर (भलाई) से रोकने वाला	758, 760
--- के बाद इन्कार करने वाले किस कलाम पर ईमान लाएंगे	868, 869	(ग)	
--- अवतरण की शुरुआत	1025, 1033, 1036	गर्भ की कम से कम अवधि	435
--- पढ़ने का हुक्म	1024, 1025, 1026	गाना	31
--- पढ़ने का फल	1029	गाफ़िल कर देने वाला कलाम	30, 31
--- के अवतरण के मौक़े पर सख़्त पहरा	1035	ग़ारतगरी	1049, 1050
--- ऊँचे पाये का	898, 899	ग़ारे हिरा (हिरा की गुफ़ा)	1023, 1025
--- शैतान की दख़लंदाजियों से पाक	899, 910	ग़ाली देना फ़िस्क्र है	495
--- शब्द शब्द अल्लाह का कलाम	910, 1025	गीता	1105
--- कि हिफ़ाज़त का सामान	958, 959	गीबत	492, 494
--- सलामती का पैग़ाम	1035	--- एक घृणित कार्य	496
--- मुस्हफ़ उस्मानी	1042	--- की परिभाषा	496
--- की भविष्यवाणी	1099, 1100	--- किसी की बुराई का ज़िक्र अनिवार्य या शरअी ज़रूरत पर	496
--- की मुहाफ़िज़ सूरतें	1115	--- करने वालों की आख़िरत में सज़ा	496, 497
कुर्बानी	1084, 1087	--- गुनाहों की बख़्शिश	276, 277
--- के जानवर	478, 1087	गुमराह करने वाले लीडर और पेशवा	
कुर्बे-इलाही (अल्लाह की समीप्यता)	1028, 1029	--- उन का अन्जाम	130, 131
क़ैदी को ख़ाना खिलाना	850, 852	--- उन के पहलों (पूर्वजों) का अन्जाम	132, 133
क्रौमों के विनाश से पाठ	512, 513	गुलाम	
कौसर	1084, 1085, 1086	--- आज़ाद करना बहुत बड़ी नेकी	986, 987
क्षमा याचना (देखिए इस्तिफ़ार)	1094, 1096	--- ग़ैर मुस्लिम से संबन्ध	680, 681, 683
--- क्षितिज का आदेश	306, 307, 452, 453, 820, 821	ग़ौस	
(ख)		--- का अर्थ	799
खंदक वाले (देखिए अस्हाबुल उख़्दूद)		--- का लक़ब बुजुर्गों को देना शिर्क है	799
खज़ूर का वृक्ष		--- अल्लाह के सिवा कोई नहीं	799
--- गुच्छे तह दर तह	504, 505	(घ)	
ख़ताकार	1029	घाटी	986, 987
ख़दीजा	1009	घोड़े	1048, 1049
ख़न्नास	1116	(च)	
ख़बर (सूचना व समाचार)		चाँद	936, 937, 990, 991
--- फ़ासिक की ख़बर को जाँचे परखे बग़ैर स्वीकार न करना	488, 490	--- का फट जाना	572, 573
--- रिवायतें कुबूल करने में सावधानी	490	--- को नूर बनाया	796
--- बिदअतियों की रिवायतें कुबूल न करना	490	--- बेनूर हो जाएगा	838, 839
ख़सारा (घाटा)	1061	--- चाँद के दो टुकड़े होने की घटना	572, 573
ख़िलाफ़त, मलूकियत से भिन्न	235	चाल में संतुलन	38, 39
ख़ुदपसंदी	26	चुग़लख़ोर	758, 760
ख़ुदा परस्ती	1080	(ज)	

जकात	1038, 1039	--- में नवयौवन लड़कियाँ	880
--- माल को बढ़ाने वाली	20, 21	--- का पुरबहार वातावरण	829
--- सद्के का अन्न	21	--- में खुदा की शान के जलवे	929
--- देने वाले	30	--- में शानदार तख्त	928
--- का हुक्म	80, 81, 820	जबान और रंग का विभेद	10,11
--- न देना काफ़िरों का काम है	316, 317	जबूर	
--- ज़क्रूम का पेड़	410, 411, 612	--- का एक हवाला	593
जड़ पदार्थ (जमादात)		जमाना	1060, 1061
--- के बारे में यह समझना सही नहीं की उन में एहसास नहीं	319	--- “जमाना मैं हूँ” का मतलब	423
जन्नत	540, 541, 624, 714, 732, 740, 776, 777, 789	--- गुजरे हुए ज़माने से इन्सान की तबाही पर तर्क	1061
--- में ईमान वाले प्रफुल्ल होंगे	8, 9	जमा हुआ खून	1026
--- में बहती हुई शराब के जाम	196, 197	जहन्नम	538, 618, 624, 625, 714, 778, 786, 787, 876, 878, 892, 904, 918, 919, 926, 940, 959, 1038, 1056, 1066
--- नेमत भरे बाग़	30, 32	--- को जिन्नों और इन्सानों से भर दिया जाएगा	50, 51, 806
--- की नेमतें	55, 178, 179, 196, 244, 245, 396, 397, 410, 411, 598, 599, 600, 601, 608, 609, 610, 611, 692, 693, 892, 904, 940, 964, 965, 978, 979	--- में मौत नहीं आएगी	154, 155
--- में सोने के कंगन और मोती पहनाए जाऐंगे	150, 151	--- में ज़क्रूम	198, 199
--- में रेशम का लिबास	150	--- में गर्म पानी	197, 198, 244, 876
--- वालों पर अल्लाह की तरफ़ से सलाम	178, 179	--- सरकशों का ठिकाना	244, 245
--- में नीची निगाहों वाली औरतों	196, 197	--- में जाने वाले लीडरों और अनुयायियों में तक्रार	244, 245, 302, 303
--- में बाला खाने	264	--- में आग की तहें	162, 263
--- की ज़मीन के वारिस	284, 285	--- में कड़ी सज़ाएँ	410, 411
--- में ईमान वालों को हर वह चीज़ मिलेगी वे जो चाहेंगे	324, 325	--- काफ़िरों का ठिकाना	332, 396, 397
--- की तलब मनुष्य के स्वभाव में मौजूद है	329	--- का भर जाना	508, 509
--- का परिचय	449	--- का ईंधन इन्सान और पत्थर	740, 741
--- मुफ़्त मिलने की चीज़ नहीं	435	--- पर कठोर फ़रिशते	740, 741
--- की विशेषताएँ	452, 453	--- बुरा ठिकाना	740, 746
--- मुत्तकियों के लिए क़रीब लाई जाएगी	508, 509	--- में गुनाह को मान लेना	750, 751
--- जन्नतुलमावा	554, 555	--- सक्र	828, 829
--- की विशालता	632, 633, 634	--- पर उन्नीस फ़रिशते मुकर्रर	830, 832
--- में परस्पर बात चीत	830, 832	--- में ले जाने वाली चीज़े	830, 832
--- की एक झलक	854, 855, 856, 857, 854,	--- की चिंगारियाँ	866, 867, 904, 939, 956
--- की शराब	854, 855, 876, 928, 929	--- की गहराई	1053
--- का माहौल और सोसाइटी	881, 965	--- का वजूद	1057
--- की ज़िन्दगी	967	--- भड़कती आग	932, 936, 964, 999, 1052, 1064
		--- ज्ञात-पात, ऊँच नीच की धारणा	499
		--- जादू	1111
		--- टोने टोटके	1111

--- हिप्राटिज्म	1110	--- की घटना	645
--- सिफली अमल	1110	--- जुप्त और ताक (सम तथा विषम)	970, 971
--- जादू और नबी की मासूमियत	1111	जुमुआ (जुमा)	
जाहिली हमिय्यत (जिहालत भरी मर्यादा)	482, 483	--- की नमाज़	700, 701
ज़िन्दगी		--- की शुरूआत	701
--- आजमाइश के लिए	746, 747	--- की नमाज़ के लिए तादाद और शहर की क़ैद नहीं	701
जिन्न		--- की अज़ान के बाद ख़रीदना, बेचना मना	700, 701
--- हज़रत सुलैमान के लिए वशीभूत	116, 117, 119, 120	--- के अहक़ाम सब्त की तरह सख़्त नहीं	702
--- की इबादत करने वाले	132, 133	ज़ुल क़िफ़ल (अलैहिस्सलाम)	244
--- का रिश्ता अल्लाह से जोड़ना	220, 221	ज़ूनुवास	941
--- किन बातों के ज़बाबदेह हैं?	440	ज़ैतून	900, 1018, 1019, 1020
--- की पैदाइश का मक़सद	530, 531	ज़ैद बिन नफ़ील	1008
--- की पैदाइश आग से	592, 593	ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा)	
--- की एक जमाअत का कुर्आन सुनना और ईमान लाना	438, 439, 802, 803	--- को ज़ैद का तलाक़ देना	86
--- का बयान	802, 803	--- का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकाह	86
--- के बारे में बे सिर पैर की रिवायतें	803	--- के निकाह के बारे में बेहूदा क्रिस्से	88
--- आसेब ग्रस्त होने की धारणा मात्र अंधविश्वास है	803	जोड़ा जोड़ा होना	
--- जिन्नों के बारे में ग़लत धारणाएँ	803	--- आख़िरत पर तर्क है	530, 531
--- ग़ैब नहीं जानते	804	जोड़े की संरचना	872
--- की पनाह माँगना शिर्क है	805	--- बनस्पति में	173
--- की उड़ान आसमानों में	805	--- उन चीज़ों में जो मनुष्य के ज्ञान में नहीं हैं	172, 173
जिब्रील	881, 908, 909, 910, 911, 1025	ज्योतिष	909
जिहाद			
--- लड़ाई में काफ़िरों की गर्दन मारने का हुक्म	446, 447		
--- जंगी क़ैदीयों को रिहा करना	446, 447		
--- का हुक्म सुन कर मुनाफ़िक़ों पर ग़शी छा जाना	457		
--- अल्लाह की राह में शहीद होने वालों को जन्नत की			
ख़ुशख़बरी	446, 459		
--- में कमज़ोर न पड़ना	460, 461		
--- माज़ूरों के लिए रुख़्सत	474, 475		
--- माले-ग़नीमत का वादा	474, 475, 478, 479		
--- शत्रुओं की आबादी पर हमला करते समय वहाँ मौजूद			
मुसलमानों को बचाने की कोशिश करना	479		
--- पंक्तिबद्ध हो कर लड़ना	686, 687		
--- अपनी जान और माल के साथ	692, 693		
--- मुनाफ़िक़ों से	740, 741		
ज़िहार का हुक्म	60, 61		
--- पत्नी को माँ कहने से वह माँ नहीं हो जाती	644, 645		
--- का क़फ़ारा	644, 645, 646		

(ट)

टङ्गों के नीचे का पायजामा पहनने की मनाही 39

(तजस्सुस) टोह में रहना

--- इस की मनाही 292, 293

--- हुकूमत अपराध का सुराग लगा सकती है 496

(ठ)

ठीक बात करने का निर्देश 108, 109

(त)

तक्रदीर

--- हर चीज़ तक्रदीर (योजना) के साथ पैदा की गई है 584, 585

तक्रलीद (अन्थानुकरण)

--- बाप और दादा की पैरवी 380

--- अल्लाह के तर्क के मुक़ाबले में तक्रलीद 381

तक्रवा (ईश-भय, परहेज़गारी) 1003

--- अल्लाह से डरते रहो 716, 721, 723

--- अल्लाह से डरने वालों के लिए राह निकलेगी 720, 723

तलाक़

- निकाह के बाद, हाथ लगाने से पहले 92, 93
 --- इकट्ठी तीन तलाक़ें, तीन तलाक़ों के हुक्म में नहीं 646
 --- इद्दत के लिए देने का हुक्म 720, 721
 --- का सही तरीका 721
 --- तीन पाकी में तीन तलाक़ें कुआन और सुन्नत से साबित नहीं 721
 --- रोक लेने या जुदा करने पर गवाह बनाने का हुक्म 720, 723
 --- तलाक़ शुदा के लिए दूध पिलाने का मुआवज़ा 726
 --- के मामले में मौजूदा मुसलमानों का ग़लत रवैया 730

तवक्कुल

- अल्लाह पर 92, 650, 651, 714

तस्खीर का अर्थ 40**तस्बीह** 956, 957, 1094, 1096

- से तात्पर्य 91

- सुबह और शाम करने की हिदायत 86, 91

- करने का आदेश 306, 307, 470, 471, 512, 513

- नमाज़ के बाद तस्बीह 513

- की फ़ज़ीलत हदीस में 513

तस्वीरें 118, 119, 120**तहारत (पाकीज़गी)**

- कपड़े पाक रखना 824, 825

- पीकीज़गी के भाव से अनभिज्ञ लोग 825

ताग़ूत

- की इबादत से परहेज़ 262, 263

- का अर्थ 263

तानाज़नी (कटाक्ष)

- करने वाला 758, 760, 1064, 1065

- कार्टून, व्यंग्य, कटाक्ष, तीर और नशतर 105

- पगड़ी उछालना 1065

तुब्बअ 408, 409, 504**तुवा** 888, 889**तौबा**

- ख़ालिस तौबा 740, 741

तौरात 686, 687

- के भारवाहकों की मिसाल 698, 699

तौहीद 1040, 1070, 1101, 1102

- के तर्क और निशानियाँ 34, 35, 42,

43, 44, 45, 56, 57, 172,

176, 177, 184, 185, 750, 752

- पर तर्क 374, 375

- सभी रसूलों की शिक्षा तौहीद की शिक्षा थी 388, 389

(द)**दरिया**

- मीठा और खारा 144, 145

दरूद

- की फ़ज़ीलत 100

- की फ़ज़ीलत में कमज़ोर और गढ़ी हुई हदीसों 103

दहरिया 423**दाऊद (अलैहिस्सलाम)**

- के साथ पहाड़ और परिन्दे तस्बीह करते थे 116, 117

- के लिए लोहा नर्म 116, 117

- ज़िरहे (कवच) बनाते थे 116, 117

- शक्तिशाली 230, 231

- अल्लाह की तरफ़ रुजू करने वाले 230, 231

- के पास एक मुक़दमा वालों का अचानक पहुँच जाना 232, 233

- का कुसूर माफ़ कर दिया गया 232, 233

- की तरफ़ मन्सूब इस्त्राईली क्रिस्से का खण्डन 234, 235

- के लिए तर्क़ुब का मक़ाम 232, 233

- ज़मीन का ख़लीफ़ा 234, 235

दाएँ हाथ वाले 606, 607, 610, 618, 619**दअवते-इस्लामी**

- को पेश करने का ग़लत तरीका 22

- की राह में रुकावटें, आजकल की खुदा बेज़ार हुकूमतें भी खड़ी कर रही हैं 295

- की प्रमुखता 348

- अपने रब की कुबूल कर लो 368

- के काम में रुकावटें खड़ी करना 446

- कुआन के द्वारा नसीहत 516, 517

- नबियों की दअवत में इन्ज़ार (डरावे) का पहलू 795

- के तरीके 795, 796

- पैग़म्बर का दअवत को पेश करना 897

- की शुरुआत 1007

- एक हकीमाना काम 903, 948, 959

- इन्कार करने वालों को सोचने विचारने का न्योता 966

- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सफ़ा पर्वत से दअवत 1099

- दिन** 872, 874, 888, 892, 893, 990,

	991, 999, 1006, 1007	--- के नक़द फ़ायदे	961
दिल		--- अंधेर नगरी नहीं	975
--- दिल पर जंग चढ़ जाना	927		
--- दिलों पर मोहर	26		
दीन	1090, 1091	(घ)	
--- अल्लाह ही के लिए	254, 255, 262	धन वितरण में अंतर की मसलहत	384
--- का अर्थ	255, 1040	धर्म ग्रंथ	17
--- के इज़हार का मतलब	482, 483	--- धार्मिक तरीक़े अपनी ओर से प्रचलित करने वाले	356, 357
--- को क़ायम रखने की हिदायत	346, 347	धार्मिक लोगों की मुक़द्दस किताबें क्या आसमानी हैं? 429	
--- में विभेद उत्पन्न करने की भर्त्सना	254, 355	(न)	
--- इक़ामते दीन का भावार्थ	348, 349,	नज़र लग जाना	
	350, 351, 352	--- हदीस “अल-अैनुन हक्क़” का सही भावार्थ	771,
--- इक़ामते-दीन फ़रीज़ा है न कि लक्ष्य	349		772
--- में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं	516, 517	--- नज़र लगने की जाहिली धारणा	772
--- क्या इक़ामते दीन का यह मतलब कि इस्लामी जीवन		--- रोग मुक्त होने के लिए दुआ-ए-मस्नूना	772
व्यवस्था स्थापित करो सही है?	350	--- नज़्र और नियाज़	255
--- इक़ामते-दीन के बारे में नबियों का तरीक़ा	350	--- नज़्र पूरी करने की ताकीद	850, 851
--- की दअवत	354, 355	नज़्रान	941
--- की समझ और सीख न रखने वाले मुसलमान	500	नफ़्स	
--- के मामले में समझौता नहीं	759	--- को दुरुस्त बनाने का मतलब	990, 991
--- सच्चा दीन	1038, 1039	--- का तज़्किया	990, 992, 1003
--- नबी का दीन	1080	--- मुत्मिन्नह का मतलब	978, 979
--- में काट छॉट करने वाले	1079	--- की वास्तविक उठान	992
दीन में नई बातें प्रचलित करना (देखिए बिदअत)		नफ़फ़ासात	
दुआ		--- का मतलब	1110
--- अल्लाह को पुकारने का हुक्म	308, 309	--- शैतान के नफ़फ़ास से तात्पर्य	1110
--- सवारी पर सवार होते समय की दुआ	376, 377	नबी	
--- मन की पवित्रता के लिए	993	--- का अर्थ	61
दुनिया	960, 1002, 1000, 1006, 1007	--- ज्ञान और दृढ़ता के अधार पर किसी को नबी बताया जा	
--- की ज़िन्दगी के बारे में स्तरीय ज्ञान	11	सकता है	147
--- क्रियामत के दिन यह एहसास कि दुनिया की ज़िन्दगी बहुत		--- नबियों से प्रतिज्ञा	64, 65
ही अल्प थी	26, 27	--- नबियों का मज़ाक़ उड़ाना	374, 375
--- की आफ़तें मौजूदा ज़माने में	55	--- नबी के मासूम होने का मतलब	467, 468
--- की ज़िन्दगी को सब कुछ समझने वाले	422, 423	--- आप की आवाज़ पर आवाज़ बुलन्द करने की मनाही	488, 489
--- की ज़िन्दगी खेल तमाशा नहीं	460, 461,	--- आप से उस तरह नहीं बोलना चाहिए जिस तरह दूसरे लोगों	
--- की हक़ीक़त	632, 633	से बोला जाता है	488, 489
--- की मुहब्बत	842, 844, 856, 857	--- आप के सामने आवाज़ को नीचा रखना	488, 489
--- परिक्षा स्थल	1061	--- आप को घर से बाहर से पुकारना मूर्खता की बात है	488,
--- की व्यवस्था	1007		489
--- के मुकाबले में आखिरत	961	--- साबित बिन क्रैस की घटना	489
--- सदाबहार नहीं	905		

--- क़ब्र के बाहर से आप को पुकारना	745	--- की दअवत के तरीक़े	795
नमाज़ 960, 1024, 1038, 1040, 1084, 1087		--- की दुआ	798, 799
--- क़ायम करने का हुक्म	16, 17, 38, 39, 80	--- की नाव	177
--- क़ायम करने वाले	30, 146, 147, 150, 151	नेक लोग	
--- क़ायम करने का मतलब	151	--- के गुण	850, 851, 852
--- तैयारी के साथ अदा करो	650, 820, 821	--- का सिला	854, 855
--- तरबियत करती है	886, 887	--- नेकी और बदी का ज्ञान	992
--- की हिफ़ाज़त करना	786, 787	नेमतें 880, 898, 900, 901, 1056, 1058	
--- न पढ़ना काफ़िरों का तरीक़ा	830, 832, 846, 847	--- का नाजायज़ इस्तेमाल	1049, 1050
--- सच्ची नमाज़	1079, 1080	--- का इज़हार	1006
--- रस्मी नमाज़	1080	नसीहत	896, 960, 967
--- दिखावे की नमाज़	1078, 1079, 1080	--- करते रहो	532, 533
--- सच्ची और रस्मी नमाज़ का अन्तर	961		
--- नमाज़ योगा नहीं	961	(प)	
--- अल्लाह की याद	961	पत्रकारिता की गिरावट	494, 495
--- से ग़ाफ़िल	1078, 1080	पनाह माँगना	
इस के अलावा देखिए “सलात”		--- का अर्थ	1109
नाप तौल में कमी करने वाले	922, 923	--- मख़्लूक के शर से	1108, 1109
नाशुक्रा (कृतघ्न)	254, 255	--- अन्धेरी रात के शर से	1108, 1109
निकाह में कुफ़ू (बराबरी) का मसला	498, 499	--- ग्रहों में फूँकने वाले के शर से	1108, 1110
निशानियाँ 274, 275, 312, 313, 328, 330, 360		--- ईर्ष्या करने वाले के शर से	1108, 1113
--- तौहीद की	271, 274, 275, 312, 313, 328, 329	--- वस्वसा डालने वाले के शर से	1117
--- कुआँन की सत्यता बहुत जल्द कायनात में और स्वयं आदमी में जाहिर होगी	340, 341	--- ख़त्रास के शर से	1117
--- ज़मीन में जाहिर	524, 525	परिन्दे	1068, 1070, 1071
--- नफ़्स में	524, 526	--- का पत्थर बरसाना	1071
नींद	872, 873	परिवार जन	
--- की हालत मौत जैसी	274, 275	--- अपने परिवार जनों को आग से बचाने की ताकीद	740, 741
नूह (अलैहिस्सलाम)	200, 201, 276	पर्दे के आदेश	
--- का ज़िक़्रे-जमील बाक़ी	200, 201	--- तबर्ज़	80, 81
--- की नस्ल बाक़ी	200, 201	--- औरतों को अपने ऊपर चादर डालने का हुक्म	104, 105
--- की जाति	288, 289, 298	--- चेहरे और हाथ की छूट	105
--- की जाति में नुबुव्वत और किताब	636, 637	--- की मसलहत	105, 106
--- की पत्नी की मिसाल	740, 741	पहल कर के आगे पढ़ने वाले	606, 607
--- तूफ़ान और नूह की नाव	745, 775	पहाड़	
--- की दअवत	794, 795	--- पहाड़ों को पैदा करने की हिकमत	34
--- पहले रसूल	795	--- विभिन्न रंगों के पहाड़	146, 148
--- की दअवत में इन्ज़ार (डरावे) का पहलू	795	--- ज़मीन की मेखें	872
		--- का चलाया जाना	876, 877, 904, 905, 1053
		--- ज़मीने की गर्दिश में संतुलन पैदा करने का कारण	874

पाकीज़गी

--- अपनाना	146, 147
--- अपनाने का मतलब	888, 889
--- हासिल करना	896

पुनर्जन्म

--- अंधविश्वास की बात	521

पूर्वजों का अंधानुकरण (देखिए बाप दादा की अंधी तकलीद)

पृथ्वी (जमीन)	874, 889, 893, 898, 905, 964, 967, 990
--- का फैलाव	550, 551, 886, 932, 1045
--- को बिछाया	588, 590, 596, 892, 893, 932, 933
--- सात ज़मीनें	732, 733
--- को अधीनस्थ बनाया	750, 751
--- ज़िन्दा और मुर्दा इन्सानों को समेट रखने वाली	864, 865
--- की बनावट	874
--- की नेमतें	893
--- की तत्वपूर्ण सुव्यवस्थित व्यवस्था	
--- का क्रियामत के दिन का रूप	878, 906, 933
--- का मुर्दे को उगलना	932, 933, 1044, 1045
--- का अपना वृत्तांत सुनाना	1044, 1045
--- का फट जाना	950
--- भूमि पूजा	1045
पैगम्बर पर सलाम	222, 223

प्रायश्चित (देखिए तौबा)**(फ)**

फ़ज़्र	970, 971, 1032
फ़रिश्ते	880, 881, 899, 906, 914, 916, 974, 976, 1028, 1032, 1033, 1034
--- मौत का फ़रिश्ता	50, 51
--- फ़रिश्तों का रहमत भेजना	92
--- फ़रिश्तों से क्रियामत के दिन सवाल	132, 133
--- पैग़ाम पहुँचाने वाले	140, 141
--- पर वाले	140, 141
--- पंक्तिबद्ध खड़े होने वाले	188, 189
--- डाँटने धुत्कारने वाले	188, 189
--- अल्लाह के ज़िक्र की तिलावत करने वाले	188, 189
--- फ़रिश्तों के अल्लाह की बेटियाँ होने का खण्डन	216, 217
--- फ़रिश्तों का बयान	220, 221

--- का आदम को सज्दा करना	248, 249
--- अर्श के आस पास तस्बीह में लीन	284, 285, 288, 289
--- अर्श को उठाते हुए	288, 289
--- की दुआ ईमान वालों के लिए	288, 344, 345
--- ईमान वालों के साथी	324, 326
--- रात दिन तस्बीह करते रहते हैं	328, 330, 344
--- के बारे में यह ग़लत धारणा कि वे लड़कियाँ हैं	376, 377
--- बात को समझ लेने वाले	504, 505
--- का काफ़िरों की जान निकालने में सख़्ती करना	458, 459
--- प्रत्येक व्यक्ति की बातों का रिकार्ड करते हैं	504, 505
--- की सिफ़ारिश	554, 556
--- को औरतों के नाम से याद करना	558, 559
--- चढ़ते हैं अल्लाह की तरफ़ एक दिन में जिस की माप पचास हज़ार वर्ष है	784, 785

फ़साद

--- जल और थल में	20, 21
--- फ़ासिक (उल्लंघन कारी)	668, 669, 686, 687
--- से तात्पर्य	490

फ़िरऔन

	294, 295, 298, 299, 388, 408, 504, 888, 889, 890, 944, 970, 972
--- के दरबार का मर्दे-मोमिन जो अपने ईमान को छिपाये हुए था	294, 295, 296, 299

--- को सुबह शाम आग के सामने पेश किया जाता है	302, 303

--- का अन्जाम	388, 389, 530, 531
--- का रसूल को झुठलाना और उस का बुरा अन्जाम	406, 408
--- की पत्नी की मिसाल और उस की दुआ	742, 743
--- को सत्य की दअवत	888
--- का सर्वोच्च ख होने का दावा	889
फ़िलस्तीन	1075

(ब)

बच्चों की शिक्षा दीनी समझ पैदा करने वाली	741
बदकार गुनहगार	918, 919, 924
बदले का दिन	44, 45
बद्देयानती	923
बदबज़	994, 1002, 1003

बनी इस्राईल	889, 961	--- हर बिदअत गुमराही है	638, 639
--- किताब के वारिस	304, 305	--- बिदअतें मस्जिदों में	808
--- को फिरऔन से मुक्ति	408, 409, 418	बुत परस्ती	
--- को दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत	418, 419	--- लात व उज़्ज़ा और मनात के बुत	554, 556
बदगुमानी से बचना	492, 494	--- त्रिमूर्ति	556, 1103
बुराई को भलाई से दूर करना	328, 329	--- भारत के बहुदेववादियों के बुत	556
बारिश से मुर्दा ज़मीन का अन्जाम	328, 330, 502, 503	--- नूह की जाति के बुत	796, 797
बनी नज़ीर का अन्जाम	658, 659	--- की शुरुआत नूह की जाति से हुई	799
बरज़ख (यमलोक)	921, 924, 927	--- बुतों की ग़ंदगी से दूर रहना	824, 825
बस्ती वालो का क्रिस्सा (देखिए अस्हाबुल करयः)		--- भारत के बुत परस्त	1105
बहुदेववाद (देखिए शिर्क)		--- ओम	1103
--- बहुदेववादी	1038, 1039	ब्रह्मा	
--- को चैलेंज	766, 767	--- बुद्धि द्वारा सोच विचार की दअवत	151
--- का अन्जाम	871, 883	बुरूज	940, 941
--- मक्का के बहुदेववादियों के विचार	873, 877, 878, 1091, 1092, 1105	बेनियाज़ी	998, 999
--- के लिए सिफ़ारिश नहीं	881	बैअत	
--- अपनी दुनिया बनाने में मस्त	883	--- कौन सी बैअत शरीअत से सिद्ध है	471
--- मक्का के बहुदेववादियों की नमाज़	1079, 1080	--- मुरीद बनाने की बैअत बिद्अत है	471, 683
--- भारत के बहुदेववादी	1105	--- बैअते-रिज़्वान	474, 475, 476
--- का अक्कीदा	1103, 1104	बैतुल मुक़द्दस	1019
--- मक्का के बहुदेववादियों की बुत परस्ती	1091	बैतुल्लाह	1071, 1075
--- बहुदेववादी धर्म में खुदा के जन्म लेने की धारणा	1105	--- पर अब्रह्म का सैन्यक्रमण	1072
बाईबल		--- का रब	1074
--- में आसमान के बिखरने का ज़िक्र	915		
--- सूरज के अन्धकार हो जाने का ज़िक्र	915	(भ)	
--- में ऐकेश्वरवाद की शिक्षा	961, 1104, 1105	भलाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना (देखिए अग्र बिलमार्फ़ व नहि अनिल मुन्कर)	
--- में इंजीर और ज़ैतून का ज़िक्र	1019	भ्रुण लिंग का ज्ञान	45
--- में धन अथवा लक्ष्मी पूजा की भर्त्सना	1066	(म)	
--- में दिखावटी नेकियों की भर्त्सना	1080	मक्का	982, 983, 1018, 1020
--- जबूर में खुदा को पनाह की चट्टान कहा गया है	1104	--- की वादी	478, 479
--- चारों इन्जील में मसीह को खुदा का बेटा कहा गया है उस की हक़ीक़त	1104, 1105	--- मक्का विजय	1095, 1096
--- तौरात सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ	1104	मजलिस के आदाब	
--- बाएँ हाथ वाले	606, 607, 610, 611	--- कुशादगी पैदा करने का हुक्म	650, 651
--- बाग़ वालों का क्रिस्सा	762, 763, 764, 765	मज़्लूम	
--- बाप दादा का अंधानुकरण	38, 40, 164	--- को बदला लेने का हक़ है	364, 365
बिदअत		--- रक्षा का अधिकार है	364, 366
--- ईसाले-सवाब की	337	मदायन स्वालेह	972
--- को रद्द करना	347	मन्हूस (अशुभ) दिनों से तात्पर्य	323
		--- मला-ए-आला	188, 189, 246, 247
		--- शैतान मला-ए-आला की बातें नहीं सुन सकते	188,

	189	--- को खाना न खिलाना	834, 835
मरयम बिनत इमरान		--- की मदद	987, 1079
--- की मिसाल	742, 743	मीज़ान (तराज़ू)	1052, 1053, 1054
--- ने अपने स्तित्व की रक्षा की	742	--- न्याय तुला	588, 589, 636, 637
--- आज्ञाकारी थीं	742, 743	--- वज़न में कमी न करना	588, 589
मवालात के सम्बन्ध		मिरास (जायदाद)	974, 975
--- अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी रखने वालों से न रखे जाएँ	654, 655, 674, 675, 682, 683	मुऔव्जिज़तैन	1107, 1115
मवेशी	892, 893	मुकरिनीन	
--- मवेशी की आठ क्रिस्में	258, 259	--- मुकर्रब (अल्लाह का निकटस्थ) बनाने वाली चीज़	132, 133
मस्जिदें		--- का सिला	618, 619
--- अल्लाह के लिए	806, 807	--- मुकर्रब बन्दे	928
--- मस्जिदों में बिदअतें	808	मुत्तक़ी (अल्लाह का निकटस्थ डर रखने वाले)	880, 881
मस्जिदें हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद)		--- के लिए बेहतरीन ठिकाना	244
--- काफ़िरों का मुसलमानों को मस्जिदे हराम से रोकना	478, 479	--- के लिए इनाम आदि	410, 412, 413
--- में दाख़िल होने की खुशख़बरी	482, 483	--- से तात्पर्य	525
माऊन	1080	--- का सिला	524, 525, 540, 541, 764, 765, 866, 867
माता पिता		मुतबन्ना (मुँहबोला बेटा)	60, 61, 62
--- के साथ अच्छा बर्ताव	34, 36, 434, 435	--- की छोड़ी हुई पत्नी से निकाह जायज़	86, 87
माल दौलत		--- के सिलसिले में सेक्यूलर हुकूमतों की क़ानून साज़ी	62
--- में माँगने वालों और महरूमों का हक़	524, 525, 786, 787	मुनाफ़ि़क़ (पाकण्डी लोग)	
--- फ़ै का हुक्म	662, 663	--- का हाल	459, 666, 667
दौलत का बहाव मालदारों की तरफ़ नहीं होना चाहिए	662, 663	--- को सज़ा	466, 468
--- माल और औलाद आज़माइश हैं	716, 717	--- ज़बान से वह कहते हैं जो दिल में नहीं	470, 471
--- सेंट सेंट कर रखना	786, 787	--- नूर से महरूम रहेंगे	624, 625
--- का खर्च करना	1002, 1003	--- ऐसी जाति से दोस्ती जिस पर अल्लाह का प्रकोप हुआ	650, 651
--- का घमंड	1065, 1066	--- झूठी क्रसमें खाना	650, 651
--- पूँजीपतियों का फ़रेब में पड़ जाना	1066	--- झूठा कालिमा पढ़ते हैं	704, 705
--- से मुहब्बत	975, 1048, 1049, 1080	--- चर्ब ज़बान	705
--- धन अथवा लक्ष्मी पूजा	975, 1066	--- डील डोल वाले	705
--- उड़ाना	982, 983	--- को अल्लाह माफ़ नहीं करेगा	704, 705
--- अधिक प्राप्त करने की इच्छा	1056, 1057	--- उन के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्षमा प्रार्थना भी लाभदायक नहीं हो सकती	704, 705, 706
--- मेयारे-ज़िन्दगी	1057	--- अब्दुल्लाह बिन उबैई की उत्तेजक बातें	709
--- पूँजी की गुलामी	1066	मुत्किरीन (इन्कार करने वाले)	949, 967, 1053
मिस्कीन	974, 986, 987	मुबारक रात	402, 403
--- को खाना खिलाने पर न उभारना जुर्म है	778	--- से तात्पर्य पंद्रहवीं शाबान नहीं	403
--- को खाना खिलाने पर उभारना	975, 1079		

--- शबे-बर्अत की फ़ज़ीलत न कुर्आन से साबित है न हदीस	372	---	की रिसालत का इन्कार कुफ़्र है और कुफ़्र के साथ ईमान अमान्य	446, 447, 470, 471
से	403	---	जंगी क़ैदियों को गुलाम बनाने का मसला	448
मुर्दे सुनते नहीं	24, 25	---	आप और इल्म ग़ैब	431, 811
मुल्लाइयत व रूढ़िवादिता	929	---	आप को खुली विजय	466, 467
मुश्किलों के साथ आसानी	1012, 1014	---	आप के अगले पिछले कुसूर माफ़	466, 467
मुश्रिकीन (देखिए बहुदेववादी)		---	आप के लिए ज़बरदस्त सहायता	466, 467
मुसीबत		---	आप का आदर सम्मान	470, 471
--- कब नाज़िल होती है	932, 633	---	के हाथ पर बैअत अल्लाह के हाथ पर बैअत है	470, 471
--- पर सब्र	632, 634	---	आप का ख़्वाब सच्चा ख़्वाब था	482, 483
--- अल्लाह की मर्ज़ी से ही आती है	634	---	आप की नियुक्ति सत्य धर्म के साथ	482
मुस्लिम		---	के साथी काफ़िरों पर सख़्त और आपस में रहमदिल	482, 483
--- सब से पहले मुस्लिम	262, 263	---	आप के साथियों के गुण तौरात और इंजील में	482, 483
--- अपने मुस्लिम होने का एलान करना	328, 329	---	ने बड़ी बड़ी निशानियाँ देखी	554, 555
--- मुसलमानों से मतभेद	521	---	ने जिब्रील को उन के असली रूप में देखा	554, 555
--- मौजूदा दौर के मुसलमानों का हाल	629	---	क्या आपने अपने रब को देखा था	555
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)	910	---	पर अल्लाह की आयतों का अवतरण	624
--- मोमिनों के लिए उन के प्राणों से अधिक के हक़दार	64, 65	---	के अनुपालन का हुक्म	662, 663
--- में बेहतरीन नमूना	72, 73	---	का औरतों से बैअत लेना	682, 683
--- आखिरी नबी	86, 87, 90	---	के बारे में हज़रत ईसा की भविष्यवाणी	686, 687, 688
--- शाहिद, मुबश्शिर, नज़ीर, दाअी और रौशन चिराग़	92, 93, 470, 818, 819	---	तहरीम की घटना	736, 737
--- के लिए कौन सी औरतें जायज़ थीं	96, 97, 98	---	क्या आप ने अपने ऊपर शहद को हराम कर लिया था	737
--- के घर में आज़ा लिए बग़ैर दाख़िल न होना	100, 101	---	राज़ की बात जो आप ने अपनी किसी धर्मपत्नी से कह दी थी	736, 738
--- पर दरूद सलाम भेजने की हिदायत	100, 102	---	दीवाने नहीं	758, 759, 908, 910
--- सलाम में अय्युहन्नबी कहने का मतलब	802	---	अख़्लाक़ के शिखर पर	758, 759
--- को कष्ट देने का गुनाह	100, 102	---	चादर में लिपटने वाले	814, 815, 824, 825
--- खुशख़बरी देने वाले	130, 146	---	की वंशावली	1076
--- की रिसालत सारे विश्व के लिए	130	---	को कौसर प्रदान किया जाना	1084
--- की निःस्वार्थ सेवा	134, 135	---	नियुक्ति से पहले	1008, 1009
--- को शायरी नहीं सिखाई	182, 183	---	नुबुव्वत का सम्मान	1013
--- की तरफ़ वहा	246, 247, 550, 551	---	का दुश्मन ख़ैर से वंचित	1084, 1087
--- बनावट करने वालों में से नहीं	250, 251	---	की ज़िम्मेदारी	1009, 1013
--- आप को भी मौत आनी है	268, 269	---	पर अल्लाह के एहसान	1008, 1009
--- आप बर्ज़ख़ में ज़िन्दा हैं	270	---	को खुशख़बरी और तसल्ली	1007, 1013, 1014
--- आप को हाज़िर और नाज़िर समझना ग़लत है	270			
--- आप को स्तिग़फ़ार की हिदायत	306, 307			
--- एक बशर	376			
--- आप पर वह्य किस तरह आती थी	370, 371			
--- आप नुबुव्वत से पहले किताब से अपरिचित थे	370,			

--- नबी नियुक्त होने के पहले तौहीद पर क़ायम	1008, 1009	--- आपस में भाई भाई	492, 493, 494
--- की आजमाइश	1007	--- उन के दो गिरोह अगर लड़ पड़े तो सुलह करना	492, 493
--- का त्योरी चढ़ाना	1009	--- उन के बीच इन्साफ़ करना	492, 493
--- का यतिमों और कमज़ोरों के साथ रवैया	1009	--- एक दूसरे का मज़ाक न उड़ाएँ	492, 494
--- का आत्म संतोष	1012, 1013	--- लान तान न करें	492, 494
--- का ज़िक्र बुलन्द	1012, 1013	--- बुरे लक़ब (ख़राब उपाधि) से न पुकारें	492, 494
--- की इबादत में तल्लीनता	1014	--- टोह में न लगें	492, 494
--- की राह की मुश्किलें	1007	--- हक़ीक़त में कौन हैं	498, 500
--- के लिए इनाम और सम्मान	1007	--- मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों का नूर	624, 625, 628, 740, 741
--- यतीम पैदा हुए थे	1008		
--- की दअवत	1091, 1092	मौत	
--- की बहुदेववादियों से अलग होने का एलान	1099	--- की बेहोशी सत्य ले कर आती है	504, 505
--- का अज़ाब से ख़बरदार करना	1100	--- के वक्त की तमन्ना	708, 709
--- का दुनिया से रुख़सत हो जाने का इशारा सूरह नस्र में	1093	--- के समय की हालत	842, 844
--- आप पर जादू का असर नहीं हुआ था	1111	--- के बाद का जीवन	871, 873, 885, 886, 889, 899, 906, 910, 937, 940, 945, 949, 950, 1020, 1033, 1045
--- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू वाली रिवायत कुर्आन के ख़िलाफ़	1112	--- बारिश से मुर्दा ज़मीन का ज़िन्दा होना	376, 377
--- जादू और इस्ते अंबिया	1110, 1112	--- पर काफ़िरों को आश्चर्य	502, 503
मुहसिनीन (एहसान करने वाले)		--- के बारे में शक	502, 503
--- से तात्पर्य	31	--- क्रियामत का दिन निकल खड़े होने का दिन	516, 517
मुहास्सिर की घाटी	1069	--- पर तर्क	899
मुहाजिर औरतें			
मूसा (अलैहिस्सलाम)	884, 888, 889, 960, 961, 1019	(य)	
--- को किताब	54, 210	यतीम	969, 975, 986, 987, 1006, 1079
--- को कष्ट	108, 109, 686, 687	--- को धक्के देना	1078, 1079
--- के बारे में अस्वीकार्य रिवायत	109	यमन	1069, 1075
--- स्पष्ट तर्क (हुज्जत) के साथ	294, 295	यमलोक देखिए बर्ज़ख़	
--- को किताब प्रदान की गई थी परन्तु उस में विभेद किया गया	332, 333, 334	यहूदी	
--- को हिदायत प्रदान करना	302	याकूब (अलहिस्सलाम)	
--- पर फ़िरऔन के ऐतिराज	388, 389, 390, 391	--- कार्य क्षमता और सूझ बूझ रखने वाले	240, 241
--- के सहीफ़े	562, 563	--- आख़िरत के लिए ख़ालिस	244, 245
मेराज़	1085	याददेहानी	264, 265
मोज़ज़ा (चमत्कार)		यूनुस (अलैहिस्सलाम)	
--- ऊँटनी का मोज़ज़ा	995	--- को मछली का निगलना	216, 217
--- लाठी का साँप बन जाना	1007	--- की तस्बीह की बदौलत मुक्ति	216, 217
मोती और मरजान	145, 592, 593, 594	--- को एक लाख से अधिक लोगों की तरफ़ भेजा गया	216
मोमिन (ईमानवाले)		--- की क्रौम ईमान लाई	216, 217
		--- मछली वाले	766, 767
		यूसूफ़ (अलैहिस्सलाम)	298
		योगा	993

(र)			
रफ़-ए-ज़िक्र	1013	--- की हिकमत	34, 35
रसूल		--- की अपने बेटे को नसीहत	34, 35
--- कुर्आन ने कुछ रसूलों का ज़िक्र किया और कुछ का नहीं	310, 311	लूत (अलैहिस्सलाम)	214, 215
--- रसूल पर शायर या दीवाना होने का आरोप	182, 183, 532	--- के भाई	504
--- रसूल को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा गया	636, 637	--- की ज़ाति पर अज़ाब	528, 529
--- रसूल अपने पद पर रहते हुए अपनी तरफ़ से कोई बात	781	--- की पत्नी की मिसाल	740, 741
अल्लाह की तरफ़ मंसूब नहीं कर सकता	781	लौहे-महफ़ूज	944, 945
--- के आगे और पीछे मुहाफ़िज़ होते हैं	810, 811	(व)	
--- को झुठलाना	994	वअदीद (डरावा, चेतावनी)	940, 942
रात	872, 888, 890, 908, 910, 936, 937, 971, 990, 991, 999, 1006, 1014	--- से डरने वाले	516, 517
--- की क्रसम	908, 991	--- का सामने आना	504, 505
--- दस रातें	970, 971	--- का दिन	508, 509
रातों को उठकर इबादत में लगना (देखिए क्रियामें-लैल)		--- से ख़बरदार कर दिया गया था	508, 509
रिज़्क (रोज़ी)		वलीद बिन उक्बा के बारे में एक रिवायत का खण्डन	490
--- में कमी बेशी	276, 277, 346, 347	वशीभूत करने से तात्पर्य (देखिए तस्खीर का अर्थ)	
--- बाहुल्यता के साथ रिज़्क न देने की मसलहत	360, 361	वस्वसा	
--- में कुशादगी और तंगी ख़ुदा की योजना के अनुकूल	132, 133	--- का अर्थ	505, 1117
रूह	880, 881, 1032	--- शैतान का सीनों में वस्वसा डालना	1118
--- से तात्पर्य	1034	वहदते-अदयान (सर्व धर्म संभाव)	1092
रोज़ा	80	वहदतुल वजूद की गुमराही मुसलमानों में तसव्वुफ़ के रास्ते से आई	377
रोमी		वह्य	538, 539
--- रोमियों के परास्त होने और फिर विजयी होने की घटना	2, 3, 4	--- एक गुप्त साधन	345
--- रोमियों के विजयी होने के बारे में कुर्आन की भविष्यवाणी	2, 4	--- के रूप में अल्लाह का कलाम करना	370, 371
(ल)		--- का ज़िक्र तौरात ज़बूर और इन्जील में	371, 375
लह्व		वहाबी का लक्रब देना	494
--- गाने बजाने और उस के उपकरण आदि	702	वास्ता और वसीला	
--- शतरंज, कैरम	702	--- ग़ैरुल्लाह की इबादत ताकि वे अल्लाह से करीब कर दें	254, 255
लह्वल हदीस (खेल वस्तु)	31	विज्ञान के आविष्कार	4
लबीद बिन आसिम	387	विभक्त अक्षर (देखिए हुरूफ़े-मुक्तआत)	3
लालच (हिर्स)	1057	वीर्य	
लुक्रमान		--- स्त्री पुरुष के मिश्रित वीर्य से इन्सान की पैदाइश का मतलब	851
		--- रीढ़ और पस्लियों के बीच से निकलने का मतलब	949
		वेद	41, 1103, 1105
		--- में ख़ुदाओं की पैदाइश का ज़िक्र	1105
		वैल का अर्थ	865
		(श)	
		शबे-क्रद्र	1032, 1033, 1034, 1035

शर (बुराई) से तात्पर्य	1109	--- का महत्व	366
शहर सद्र (पूर्वा परितोष)	1013	--- तानाशाही की विरोधी	366
शरीअत	992	--- नमाज़ का लाभांश	366
--- के जवाबदेह सब लोग	317	शैतान	908, 911
--- शरीअतों की भिन्नता	348	--- फ़रेबी	38, 40
--- इस्लाम एक साफ़ शरीअत	420, 421	--- की इबादत और उस का मतलब	178, 179
--- पर तरीक़त की वृद्धि की आवश्यकता नहीं	992	--- की उकसाहट से पनाह माँगना	328, 329
--- पर रियाअतों की वृद्धि की आवश्यकता नहीं	993	--- का इस बात से इन्कार कि उस ने गुमराह नहीं किया था	508, 509
--- मुराक़बों की ज़रूरत नहीं	992	--- की पार्टि	654, 655
शहादत		--- के लिए मार शहाब साक्रिब	746, 747
--- गवाही अल्लाह के लिए	720, 721	शैतानी ख़ियाल का आना	1108, 1110
--- शहादतों को अदा करना	788, 789	--- ख़त्रास	1116, 1118
शहाब साक्रिब (चमकता शोला)		--- की वस्वसा अन्दाज़ियाँ	1117, 1118
शिक़	876	--- इन्सानों और ज़िन्नों में शैतान	1118
--- शरीक़ (साझी) सिफ़ारशी नहीं	8, 9	--- इब्लीस शैतानों का सरदार	1118
--- की नामाकूलियत	13		
--- का शरीक़ (साझीदार) ठहराना	12, 13	(स)	
--- वलियों का अमल दख़ल कायनात में मानना	17	संयास	
--- का खण्डन	20, 21, 130, 131, 154, 155, 260, 281, 300, 301, 346, 347, 376, 377, 428, 429	--- एक बिदअत	636, 638
बहुत बड़ा ज़ुल्म	34, 35	--- का मतलब	638
--- के मामले में माँ बाप का दबाव कुबुल न किया जाए	34, 35	--- संसार त्याग और तपस्या का उद्देश्य	638
--- अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारना ग़लत	42, 43	--- मंदिरों में देवदासियाँ	638
--- बहुदेववादियों के पूज्य इनकी पुकार से बेख़बर	428, 429	--- ख़ानकाहियत	638
--- बहुदेववादियों की सज़ा	508, 509	सच्चाई	80, 83
--- बुत परस्ती ग़लत	1075, 1090	सिज्जील	1068, 1070
--- विभिन्न धर्मों के फलसफ़े	1103, 1104, 1105	सज्दा	936, 937, 1028, 1029
--- ग़ैरुल्लाह की पनाह माँगना	1109	--- ताज़ीमी	249, 1076
--- खुदा के बारे में बेक्रार की कल्पना	1104	--- न सूरज को करो न चाँद को बल्कि केवल अल्लाह को	328, 329
--- खुदा के लिए औलाद निर्धारित करना हर तरह से ग़लत	1104	--- इस्लाम की तकमीली शरीअत में बुजुर्गों के लिए सज्दा	
--- सृष्टा और सृष्टि एक ही हैं ?	1105	ताज़ीमी बजा लाने की भी इजाज़त नहीं	330
शुक्र (कृतज्ञता)	44, 581	--- का निशान	48, 483
शक्र गुज़ार (कृतज्ञ)	280, 281	सदक्रा देने वाले स्त्री पुरुष	628
शुक्राणु		सबा	
--- रीढ़ और पस्लियों के बीच से निकलने का मतलब	949	--- एक जाति का नाम	121
शूरा (परस्पर परामर्श)	259	--- के बाग़	118, 121
--- शूरा का तरीक़ा	366	--- को न शुक्र की सज़ा	118, 122
		--- बन्द का सैलाब	118, 122, 125
		सन्न	20, 38, 39, 44, 45, 80, 81, 814, 824, 825, 986, 987, 1060, 1062
		--- करने वाले	262, 263, 328, 329

--- की ताकीद	306, 310, 442	--- अल्लाह के नियम में जकड़े हुए	909
--- बहादुरी का काम	364, 365	--- चिंतन का निमंत्रण देते हैं	909
--- का बदला	854, 855	--- का बेनूर हो जाना	904
समुद्र		--- का गिरना	
--- बहाए जाएंगे	914, 915	--- दमकता सितारा	948, 949
भड़का दिए जाएंगे	904, 906	--- की क्रसम	908
--- में आग लग जाना	905	सिदरतुलमुन्तहा	554, 555
समूह	298, 324, 325, 504, 944, 970, 990, 995	सिफारिश	124, 126, 274, 275
--- का अन्जाम	530, 531, 580, 581, 774, 775	--- उसी सूरत में जब अल्लाह आज्ञा दे	
--- का ज़माना	972	--- की ग़लत धारणा	127
--- की सरकशी और अन्जाम	945	--- का ग़लत अक़ीदा	275, 293, 398, 399
--- का ठिकाना	969, 972	--- काफ़िरों के लिए बेसूद	834, 835
सरगोशी		--- की सही धारणा	881
--- गुनाह की बातें करना मना	648, 649	सीना	889, 1018, 1020
सर्व धर्म संभाव (देखिए वहदते-अदयान)		सुलह हुदैबिया (हुदैबिया संधि)	
सलसबील		--- क्यों और कैसे?	463, 464
--- जन्नत का एक स्रोत	854, 855	--- मक्का विजय की भूमिका	467
सलात (नमाज़)	364	--- का मतलब यह नहीं कि मुसलमान दबे रहने की पालीसी अपनाएँ	467
--- की पाबन्दी	364	--- जंग के रोके जाने की मसलहत	479
--- इक्रामत सलात एक व्यापक परिभाषा	365	--- निकटतम विजय	482, 483
--- फज़ की नमाज़	513	सुबह	910, 1048, 1049
--- अस्त्र की नमाज़	513	--- की क्रसम	908
--- इशा की नमाज़	513	सुलेमान (अलैहिस्सलाम)	
--- इस के अतिरिक्त देखिए शीर्षक नमाज़		--- के लिए हवा वशीभूत	116, 240, 241
सहाबा किराम		--- के लिए तांबे का स्रोत	116, 117
--- को बुरा भला कहने वाले	476, 664	--- के लिए जिन वशीभूत	116, 117, 240, 241
--- तक्रवा वाले	482, 483	--- के लिए जिन्न इमारतें तस्वीरें और लगन बनाने की सेवा अन्जाम दिया करते थे	118, 119, 120
--- का गुणग्राहक होना चाहिए	664	--- की मौत का क्रिस्ता	118, 120
--- उन से शत्रुता नहीं	664	--- दाऊद के बेटे	236
सहायता और विजय	692, 693	--- अल्लाह की तरफ़ रुजू करने वाले	236, 237
सहीफ़े	960, 961, 1038, 1039	--- के प्रशिक्षित तेज़ रफ़्तार घोड़े और उन से अल्लाह के लिए मुहब्बत	236, 237, 238
--- सब से प्राचीन सहीफ़ा	961	--- की कुर्सी पर एक धड़	236, 237
--- मूसा का सहीफ़ा	961	--- के लिए बेमिसाल सल्लनत	236, 239
साइल (माँगने वाला)	1006	--- के लिए निकटस्थ स्थान	240
सारा	529	सूद	
सिज्जीन	922, 923	--- की क़बाहत	20, 21
सितारे	909, 915, 941, 949	सूर	876, 877, 900, 901
--- सितारों के डूबने से एकेश्वरवाद और दण्ड व बदले पर तर्क	614, 615	सूरज	
--- सितारों और वृक्षों का सज्दा करना	588, 589		

--- और चाँद का हिसाब से होना	588	हवाज़न से संग्राम	475
--- को रौशन चिराग बनाया	796, 876, 877	हथ्र	508, 509
--- और चाँद इकट्ठे कर दिए जाएंगे	838, 840	हसद	
--- देवता नहीं	905	--- का मतलब	1113
--- लपेट दिया जाएगा	904, 905	--- शैतान का हसद	1113
--- जहन्नम का नमूना	1054	--- यहूदियों का हसद	1113
--- के बारे में आधुनिक खोज और मालूमात	905	--- मक्का के काफ़िरों का हसद	1113
--- का तापमान और उस का क्षेत्रफल	875	हातिब का क्रिस्सा	675
--- अंततः अंधकार हो जाएगा, विज्ञान का मानना है	905	हाथी वाले	1068, 1069, 1070, 1071
सूरज और चाँद गर्दिश में	42, 43	हानि (घाटा) (देखिए खसारा)	
सूरह क़ाफ़ का महत्व	501	हामान	294
सूरह यासीन की फ़ज़ीलत के बारे में रिवायतें	161	हारून (अलैहिस्सलाम)	210, 211
स्वालेह (अलैहिस्सलाम)	995	हावियः	1052, 1054
(ह)		हिकमत से मुराद	35
हक्र अदा करने की ताकीद	1060, 1061	हिजरत	260
--- मुसाफ़िर, मिस्कीन और नातेदारों का हक्र	16, 18	हिदायत	1002, 1003, 1028
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियाँ		--- नबियों की हिदायत	1103
(देखिए अज़्वाजे मुतहहरात)		--- में वृद्धि	452, 453
हदीद (लोहा)	636, 637	हिदायत पाये लोग	30, 31
--- उतारने का मतलब	637	हिन्दु वाद	377
हदीस		हिसाब किताब (देखिए कर्म फल)	
--- सही हदीसों ही हुज्जत हैं, कमज़ोर हदीसों नहीं	664	हीले (बहाने)	
--- फ़ातिमा बिनत-क़ैस की उस हदीस को कि जिस औरत को तीसरी तलाक़ दी गई हो न रिहाइश है औ न खर्च, हज़रत उमर और हज़रत आइशा ने स्वीकार नहीं किया	728, 729	--- शरअी हीलों के लिए कोई औचित्य नहीं	242
हमदर्दी	986, 987, 1079	हुतमः	1064, 1066
हम्द (अल्लाह की प्रशंसा)		हुदूदे इलाही	
--- अल्लाह के लिए	284, 285	--- का उल्लंघन करने वाले	720, 721
हवाएँ	883, 884, 885, 886	हुदैबियः संधि (देखिए सुलह हुदैबियः)	
--- खुशख़बरी देने वाली	24, 25	हुबल	1095
--- बादलों को उठाने वाली	24, 25, 142	हुरूफ़े-मुक़त्तात	
--- गर्द उड़ाने वाली	520, 521	--- का चमत्कारिक पक्ष	227
		--- की व्याख्या	289, 503
		हूद (अलैहिस्सलाम)	
		हूरें	600, 601, 602, 603, 608, 609

زیر اہتمام: محمد صدیق قریشی

Pixel Arts

Mobail : 9820790615

Printed at : Fatima Printers

Tilak Nagar , Saki Naka Mumbai 400070

इदारा दअवतुल कुर्आनि की हिन्दी प्राकाशन



तफ़सीर;
शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिन्दी अनुवाद ;
मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द १

(पारा १ से पारा १० तक) सूरह फातिहा ता सूरह तौबा

३००/-

जिल्द २

(पारा ११ से पारा २० तक) सूरह यूनस ता सूरह अंकबूत

३५०/-

जिल्द ३

(पारा २१ से पारा ३० तक) सूरह रूम ता सूरह नास

४८०/-

मौजूअ और जर्इफ़ हदीसों का चलन

९/-

क्या कुरआन को समझ कर पढ़ना जरूरी नहीं ?

१०/-

तलाक़ कब और कैसे ?

६/-

सुनो अपने रब (पालनहार की)

१०/-

पारा अम्म

१२०/-

निम्नलिखित पुस्तकों के उर्दू, मराठी, गुजराती, तथा अंग्रेज़ी के अनुवाद भी उपलब्ध हैं

इदारा दअवतुल कुर्आनि

५९-मुहम्मद अली रोड, मुम्बई-४००००३ फोन ; 23465005

Email. dawatulquran@rediffmail.com

IDARA DAWATUL QURAN

English Publications



Tafseer Dawatul Qur'an

by

Maulana Shams Pirzada (Rh.)

Eng. Trans. by

Abdul Karim Shaikh



* Vol .I. S. Al-fatiha to S. Taubah (Para 1 to 10)	270/-
* Vol .II. S.Yunus to S.Ankaboot (Para 11 to 20)	285/-
* Vol.III. S.Room to S.An-nas (Para 21 to 30)	460/-
Jawahirul Hadith	60/-
Tanveerul Hadith	60/-
Talaq When & How?	8/-
Is it not necessary to read Qur'an with understanding?	10/-
The Prevalence of concocted and weak Hadith	7/-
Listen to Your Lord (under print)	10/-
Triple Talaq In the light of Qur'an & Sunnah	10/-
What a Corrupt Society is this !	8/-
English Parah Amm	70/-

Urdu, Marathi, Gujrati and Hindi versions of above Books are also available.

Idara Dawatul Qur'an

59, Muhammad Ali Road Mumbai- 400 003

Phone: 23465005

Email. dawatulquran@rediffmail.com

ادارہ دعوت القرآن کی اردو کتابیں

”تفسیر دعوت القرآن“ تالیف: مولانا شمس پیرزادہ

جلد اول سورہ فاتحہ تا سورہ عنکبوت پارہ ۱ تا ۲۰	750/-	جلد دوم سورہ روم تا سورہ ناس پارہ ۲۱ تا ۳۰	450/-
ترجمہ قرآن مجید (دعوت القرآن کا اردو ترجمہ مع عربی متن)	300/-	پارہ عم علیحدہ ۱۶ x ۳۶ x ۲۳ صفحات ۲۸۸	70/-
تفسیر سورہ فاتحہ	8/-		

اس تفسیر کے مراٹھی، گجراتی، ہندی اور انگریزی تراجم بھی دستیاب ہیں۔

دیگر اردو کتابیں

☆ تنویر الحدیث	80/-	☆ جواہر الحدیث	60/-
☆ ابھرتے معاشرتی مسائل	25/-	☆ شادی کے شرعی اور غیر شرعی طریقے	14/-
☆ طلاق کب اور کیسے؟	4/-	☆ اکٹھی تین طلاقیں	10/-
☆ یہ کیسا گاڑ ہے؟	7/-	☆ یہ کیسی دینداری ہے؟	16/-
☆ کیا قرآن کو سمجھ کر پڑھنا ضروری نہیں؟	6/-	☆ قرآن کا انداز بیان	4/-
☆ موضوع اور ضعیف حدیثوں کا چلن	9/-	☆ حجیت حدیث اور -----	7/-
☆ سنو اپنے رب کی	10/-	☆ رویت ہلال کا مسئلہ	8/-

مولانا ریاض احمد کی تالیفات

☆ اتحاد ملت ضرورت اہمیت اور طریقہ	25/-	☆ محمد ﷺ مشن اور کردار	6/-
☆ اولاد کی تربیت	6/-	☆ بدعت، مبالغہ اور تشدد کا مقام (اللہ رسول۔۔۔۔۔)	14/-
☆ فضائل اعمال میں ضعیف احادیث پر عمل کا شرعی حکم	12/-	☆ بدعت کے حق میں مولانا نعمانیؒ کے دلائل کا جائزہ	12/-
☆ دین اسلام میں بدعت اور اجتہاد کا حقیقی محل	15/-	☆ فضائل اعمال (تبلیغی نصاب) ایک جائزہ	16/-
☆ مسنونہ اذکار و نوافل میں بدعت کی پہچان	12/-	☆ مطالعہ قرآن کی ضرورت و اہمیت	12/-
☆ اسوۂ رسول اور تزکیہ نفس	100/-	☆ جادو عقیدہ و عمل کا امتحان	20/-
☆ فقہ الزکوٰۃ تالیف: ڈاکٹر یوسف القرضاوی اردو ترجمہ و تلخیص: شمس پیرزادہ	180/-		
☆ عربی، وجوب تطبیق الشریعۃ الاسلامیۃ فی کل زمان و مکان	2/-		

چند کتابوں کے مراٹھی، گجراتی، ہندی اور انگریزی تراجم بھی دستیاب ہیں۔

ادارہ دعوت القرآن

۵۹۔ محمد علی روڈ ممبئی ۴۰۰۰۰۳ ☆ فون: ۲۳۴۶۵۰۰۵

Email: dawatulquran@rediffmail.com